हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० १६ सं० १-२-३-४ } प्रयाग { सितम्बर-अक्तूबर-नवम्बर
दिसम्बर १८९५ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार

पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) ——०•०—— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १=)
नमूने की कापी का =)॥

१-४-९६

हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १६ संख्या १-२-३-४ } प्रयाग { सितम्बर-अक्तूबर-नवम्बर-दिसम्बर सन् १८६५ ई०

हमारा नया साल ।

ईश्वरवाद्ने जिनके चित्त मे स्थान नहीं पाया उनकी तो बातही निराली है किन्तु वे जो इस दृश्यमान जगत् को उस अलख अगोचर सर्व पर सर्वातीत सर्वेश्वर की लीला वैभव के अन्तर्गत् मानते हैं वे मुक्त-कण्ठ हो स्वीकार करेंगे कि यह उसी करुणा वरुणालय दीनोद्धारक दीन जन पालक दया सागर की कृपा का लेश है कि आज हम इस ऊन एक ऊन दोके ऊपर सून वाली संख्या मे प्रवेश कर रहे हैं-यद्यपि १९ की संख्या दीर्घ जीवियों की दीर्घायु की गिनती मे अति तुच्छ है कोठी मे मूठी भी नहीं है समय की अनादि अनन्त धारा के प्रवाह मे १९ वर्ष के जीवन की बिसातही क्या, जिस धारा के प्रवाह मे पड़ लोमश मार्कण्डेय आदि अजर अमर को भी अपने को चिरजीवी मानने का घमण्ड न रहा तब हम लोगों की क्या, जो प्रति क्षण अहर्निश काल कैातुकी की कराल डाढ़ के कलेवा बने धरे हैं, किन्तु हिन्दी जिस्के सहारे से हमारा जीवन है उसे जब इस तरह हीन दीन दशा मे प्राप्त देखते हैं तो अवश्य हमे भी वृद्धजावालि बनने का घमण्ड होता है और यही कहने का मन होता है कि अपने सहयोगियों मे हम सबों मे पुराने हैं-गिनती मे तो पुराने हैं किन्तु बागदेवी की आराधना मे कहीं से किसी अंश मे किसी तरह की कोर कसर न रख अपने पाठकों को नित्य नये बनकर मिलते हैं-जिनका जी बहलाना हमारा मुख्य उद्देश्य है और पढ़ते २ पद २ मे हर्ष विस्मय पूर्ण हो उनकी दन्तावली का विकाश हमारे परिश्रम की सफलता है-

इस स्थल पर महाकवि दण्डी की यह उक्ति हमे बहुतही युक्ति युक्त मालूम होती है ॥

किं कविस्तस्यकाव्येन किंकाण्डेन धनुष्मताम् ।
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः ॥

दण्डी के इस लेख की सार्थकता और पढ़ने वालों की दन्तावली का विकाश तभी हो सक्ता है जब लेखक की सरस लेखनी सार गर्भित लेख लिखना जानती हो—हमे अपने लेख के द्वारा धन की आकाँक्षा नहीं है न हम अपने पत्रका "सरकुलेशन" पाठकों की संख्या बढ़ी हुई चाहते हैं न खून लगाय शहीदों मे दाखिल होने की भांत हम नाम चाहते हैं कि बड़े२ लिक्खाड़ों मे हमारी भी गिनती हो हम अपने चुने गिने थोड़े से पढ़ने वालों से सन्तुष्ट हैं—हां पढ़ने वाले अवश्य ऐसे हों जो हमारी लेखनी कि चाह रखते हों अर्थात् ऐसे न हों कि "भैंस के आगे बीन बाजै भैंस खड़ी पगुराय" "ये गाँहक करबीन के तुम लीन्ही करबीन" खैर यह तो सब अपने मुह मियां मिट्ठू वाली बात हुई एक बड़ी भारी कसर हमारे मे यह है कि हम ठीक समय पर अपने चाहने वालों से नहीं मिलते बहुत चाहा कि इस असाध्य रोग को किसी तरह हटावैं पर क्या करैं जिस ढंग से हम चल रहे हैं वह ढंगही कुछ ऐसा है कि हमे नियत समय पर नहीं आने देता-रद्दी भरा नहीं चाहते टटके से टटका नया लेख होना चाहिये जिस्के लिये समय और दिमाग मे कूबत दोनो दरकार है सो समय बहुत सा कुटुम्ब पालन निमित्त नोन तेल लकड़ी की फिकिर मे नष्ट हो जाता है दिमाग पर कुछ तो उमर के तक़ाज़े ने अपना दखल जमा लिया कुछ नई २ बातों के सोचते २ ऐसा घिस गया है और ऐसा स्तब्ध और कुण्ठित हो गया है कि शूक्ष्म विषयों में धसने के लिये खराद और सान पर चढ़ने के लिये बेफिकरी और निश्चिन्तता चाहता है—अस्तु मस्तिष्क कितनाही कुण्ठित हो गया है तौ भी पाठकों को रिझाने से फिर भी समर्थ हैं-मसल है

"कितनीही दिल्ली सूनी होगई तौ भी सवा लाख सवार निकल सक्ते हैं" लेखनी गठीले से गठीला मज़मून गढ़ने मे कभी विकल नहीं होती किन्तु कलदार के गढ़ने मे इस्की कोई कला नहीं लहती जिस्के बिना कोई काम ही नहीं सिद्ध हो सक्ता विशेष कर ब्रिटिश सिंह के इस कड़े शासन में तो जो कुछ कहो सब कलदार ही है ॥

"भज कलदारं भज कलदारं भजकलदारं मूढ़मते" । "मादर पिदर बिरादर जो कुछ कहो सो ज़र है" ॥ यह उसी कलदार का प्रभाव है जो हमे चिरकाल से ठीक समय पर आप लोगों से नहीं मिलने देता और हमे आप से मिलने का कुछ ऐसा नसूर पड़ गया है कि अनेक तरह की संकीर्णता झेलते हैं पर वर्ष मे पांच सात बार मिलते हैं सही, प्रण तो यही है कि यावज्जीव मिलते रहैं किन्तु भविष्य के लिये जब एक निमेष का भी विश्वास नहीं तब जीवन पर्यन्त हम इसी तरह ढुलकते चले जांयगे यह कौन कह सक्ता है—दूसरी बात एक यह भी है कि हम से किसी का कुछ स्वार्थ निकलताही नहीं नीति है "स्वारथ लाय करैं सब प्रीती । सुर मुनि जन की याही रीती" ॥ न हमसे खुशामद चुना चुनी और मिथ्या प्रशंसा की जाती है—लोक रंजन पाण्डित्य भी एक बड़ी भारी विद्या और महा विशिष्ट साएन्स है जिन्हे इस हुनर में फ़ज़ीलत की पगड़ी हासिल है वे क्या नहीं कर सक्ते हमे सो भी नहीं आता तब कोरी कलम की कारीगरी से कौन रीझै—

संसार सुख का सार है हम इसे दुःख का आगार कर रहे हैं

संसार सुखका सार और स्वार्थ तथा परमार्थ साधन का पवित्र मन्दिर है पर हम इसे अपने कुलक्षणो से दुःखके प्रवाह का स्रोत यावत् सन्ताप और क्लेश का अपवित्र आलय कर रहे हैं—पौरुषेय गुण शून्य हम अपने अकर्मण्य बेदान्तियों को क्या कहैं जो संसार को दुःखरूप मिथ्या और नश्वर मानते हैं, यह प्रत्यक्ष है कि यह हमारेही अविचार अविवेक शान्ति असन्तोष मोहान्ध बुद्धि आदि दुर्गुणों का कारण है कि स्वर्ण मन्दिर संसार को हम हहाय के उजाड़ खंडहर कर रहे हैं जहां

अमृत का कुण्ड भरा है उसे हम हालाहल विष से भरे देते हैं, बड़े विद्वान हुये यावज्जीव शास्त्र और फिलासोफी को रट २ पचमरे जितना रट डाला उस्के एक वाक्य पर भी जो विवेक और विचार को काम मे लाते तो अपने अस्तव्यस्त कामों से जो अनेक दुःख सहते हैं और अपनी समझ और काम को दोष न दे संसार को दुःख का आगार मान बैठे हैं यह भ्रम मिटजाता, यदि विवेक और विचार को मन मे जगह देते तो जो दुःखमय बोध होता है वही अनन्त सुख का हेतु होता, "हाथ कंगन को आरसी क्या" जिस काम को हम विचार और विवेक पूर्वक करते हैं उसमे पूरे कृत कार्य होते हैं और कदाचित् दैवात् कभी को न भी कृत कार्य हुये तो पीछे से पछताव नहीं रह जाता, यही बात असन्तोष मे पाई जाती है हज़ार कमाया लाख कमाया सन्तोष नहीं होता रात दिन चिन्ता मे व्यग्र रहते हैं रात को नींद नहीं आती, दिन में खान पान नहीं सोहाता रूपये के मुकाबिले बेटे को बाप से न बाप को बेटे से कोई मुहब्बत है, स्त्री जो अपनी अर्द्धांगिनी है उस्से भी प्रेम नहीं है तो भाई बन्धु गोती नाती लोग कुटुम्ब कहां रहे, मनुष्य जन्म की सफलता और यावत् सुख का सारांश उन्हे तभी मालूम पड़ता है जिस समय रुपयों की गंजिया खोल गिनने लगते हैं, तोले दो तोले मलाई पचा लेना जिनके लिये कठिन काम है जिस्का सेर दो सेर का वज़न हम ऐसे भुक्खड़ों की क्षुधासागर के किस कोने मे समा गया कुछ मालूम भी नहीं पड़ता, दस की हुण्डी बावन मिती की कल भुगतान देने को है २५ फलाने असामी के नीचे दबा है मियाद बीतती है असामी दिवालिया हो रहा है कलही नालिश नहीं करते तो रकम डूबती है रात की नींद दिन की भूख गवांय बैठे अहर्निश चिन्ता के सागर में डूबे हैं नीयत दुरुस्त नहीं कोई की कैसी रकम हो निगल बैठने के लिये बहाना ढूंढ रहे हैं, यही करते २ एक दिन मुहबाय रहगये सुख क्या वस्तु है न जाना वही ३ गंडे रोज़ का मज़दूर दिन भर मेहनत के उपरान्त रूखा सूखा अन्न खाय टांग पसार रात को सुख से सोता है चिन्ता और फिकिर किस्का नाम है जानताही नहीं सच है॥

दिवसस्याष्टमे भागे शाकं पचति स्वगृहे ।
अनृणी चाप्रवासी च सवारिचर मोदते ॥

अस्तु इस तरह बड़ी कृपणता और कदर्यता से रुपया जोड़ सिधार गये सन्तान उनके ऐसे कुलकुठार जन्मे कि वर्षही दो वर्ष मे ऐयाशी शराब खारी आदि अनेक दुर्गुणों मे फूंक तापा, यही सब सोच समझ किसी ने लिखा है "आये दुःखं व्यपे दुःखं कथमर्थाः सुखावहा" जिस्की आमदनी मे दुःख जिस्के खर्च हो जाने मे दुःख तो धन सुख पहुचाने वाला क्योंकर हो सक्ता है—आवेश में आय लिख तो डाला पर इतना न सोचा कि विवेक पूर्वक धनका आय तथा व्यय हो तो कहां दुःख रह जाय—कोई ऐसे हैं कि औलाद के लिये तरस रहे हैं न जानिये कितनी मान मनौती माने हुये हैं पूजा पाठ जप तप सब कर थके पुत्र का सुख न देखा धन धान्य राज पाट जिस्के बिना फीका मालूम होता है जीवन व्यर्थ मानते हैं, कोई ऐसे हैं कि औलाद से घर भरा है जिस्की यहां तक कसरत है कि ऊबे हुये हैं जिन्दगी के दिन पूरे कर रहे हैं—आंवा का आंवा गन्दा होग या एक भी ऐसे न हुये कि इस बूढ़े को सुख पहुंचाते एक २ दिन भारी हो रहा है सवेरे से उठ इसी फिकिर मे लगता है कहां से लावैं कि इन्हे पालैं—७० वर्ष का हुआ पर आराम और सुख उस्के लिये सपने के ख्याल हो गये कुटुम्ब पालन के बोझ से पिसा वार २ कांखता है खिजलाता है समय का दोष देता है संसार को नरक का भोग मानता है पर अपनी भूल को एक वार नहीं सोचता कि सृष्टि पैदा तो कर दिया और उसको किसी ढंग की करने का कभी ख्याल न किया, अपने आप अपना भरण पोषण की योग्यता उस्मे बिना पैदा किये व्याह कर घर बसाता गया—बे समझी का कुसूर तो तुमने किया दण्ड अब उस्का दूसरा कौन भुगते, कुआं की भाग है किस्से कहैं देश का देश इस बुराई मे पड़ा झंख रहा है पर किसी के मनमे यह नहीं आता कि यह महा कुरीति है इसे छोड़ दें अपनी भूल को नहीं पछता-

ते संसार को अथाह दुःख का सागर और अपने को उसमे डूबे हुये मानते हैं ॥

काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य इन छहों के चक्कर मे पड़े हुये हम तुम सब ने अनेकानेक क्लेश झेलते हुये संसार को दुःखमय तो निश्चय कर रक्खा है किन्तु अपनी ओर एक बार नहीं देखते कि यह सब हमाराही कुसूर है—हम जो अपने को सुधार डालैं तो यह संसार जो ज़हर सा कडुआ बोध होता है दाख रस सा मधुर हो जाय—क्या समाजनीति क्या धर्मनीति क्या राजनीति जिधर देखो उधर हमारी ही बड़ी भारी त्रुटि पाई जाती है जिस्से हमारी समाज हमारा धर्म हमारे राजनैतिक सम्बन्धो सब काम सर्बथा अस्तव्यस्त हो रहे हैं—यद्यपि समाज और धर्म सम्बन्धी अनेक बन्धन ऐसे दृढ़ हैं कि उनसे कोई देश और कोई जाति नहीं बची किन्तु हिन्दू जाति के समान इस नागपाश से कोई ऐसा जकड़ा नहीं है कि ज़रा भी हम इधर उधर हील डोल नहीं सक्ते-आप सर्ब गुण संपन्न महा महिम बड़े विद्वान् हो अन्धी समाज जिस्मे आप चल फिर रहे हैं आदर के योग्य न समझे गये आप निरे निकम्मे और राह की ठिकरी के बराबर बेकदर हो—अधिकतर समाज मे दोही पूजे जाते हैं एक वे जिनके पास धन है नीचे से नीचा काम करता हो रुपये वाला हो तो वही महत्तर समझा जायगा—बहुधा और लोग समाज के उस्को अपने लिये नमूना करेंगे—दूसरे वे जो कपट और बनावट का लबादा ओढ़े हुये हैं—तुम्हारे भीतरी कुचरित्र तथा बाहरी कितने बर्ताव देख जी कुढ़ता है घिन उपजती है यही जी चाहता है कि इस दुरात्मा का मुंह न देखैं किन्तु चलन के अनुसार उस्से मिलना पड़ता है केवल राम रमौवल मात्र निवाहैं सो नहीं बरन सब तरह की घिष्ट पिष्ट उस्के साथ बिना रक्खे एक२ समाज के इतने खण्ड और ऐसी संकुचित हो गई है कि आप निभ नहीं सक्ते—यह एक अनोखी बात हमी लोगों मे देखी जाती है कि हाड़ की उत्तमता सब के ऊपर मान ली गई है जिस्के मुकाबिले विद्या गुण और लियाकत की

कोई कदर नहीं है-और जाति में लियाकत के मुकाबिले हाड़ की उत्तमता पर इतना ज़ोर नहीं दिया जाता "डूयक आफ वेलिंगटन" की पैदाइश का हाल किसी से छिपा नहीं है किन्तु अपनी योग्यता से इतना बढ़े कि डूयक कर दिये गये-षटकुल अढ़ाई घर चार घर तीन और तेरह आदि कुलीनों के घराने इसी योग्यताही की बुनियाद पर रक्खे गये थे अब हमारी बिगड़ी समाज मे छः अढाई तीन तेरह इत्यादि समाज मे बुराई के बढ़ाने के द्वार हुये-आप षटकुल और अढाई घर मे हैं इसलिये आपको माफ जो चाहिए सो कर डालिये समाज आपको परम पवित्र मानती रहैगी-अब वह समय न रहा कि हम कुलीन हैं इसलिये कुलीनता की लाज रखने को हमे फूंकर कर पांव रखना मुनासिब है-अब आप चाहो समझ गये हों कि यह संसार हमे दुःखमय क्यों बोध होता है-संशोधन के क्रम पर इस ढंग को आप छोड़ा नहीं चाहते तब क्योंकर हो सक्ता है कि जो दुःखमय है वह सुख रूप होजाय अन्त में किसी बुद्धिमान् की यह भविष्य बाणी अवश्य चरितार्थ होनेवाली है

सदवंशाःप्रलयं सर्वे गमिष्यन्ति दुराशयाः।

बुद्धिमानो का सिद्धान्त है

सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः।
अर्द्धेन कुरुते कार्यं सर्वनाशो हिदुः सहः॥

खान पान की व्यर्थ की छिलावट इतना अधिक हमारी समाज मे बढ़ी हुई है कि इस समय उस्का निवाहना महा दुष्कर हो रहा है इसलिये ऐसा मालूम होता है कि अंगरेज़ी शिक्षा के प्रभाव से कुछ दिनो में हिन्दूपन का जो कुछ अभास मात्र बचा है वह भी न रह जाय गा-नई सभ्यता के अनुसार खुदा बक्श ब्रह्मचारी के पवित्र होटलों में शुद्ध भोजनों की प्रथा प्रचलित होती जाती है खरबूज़े को देख खरबूज़ा रंग पकड़ता है बल्कि यों कहिये यह फेशन में दाखिल है कुली-

नो को अपनी कुलीनता का अभिमान बढ़ रहाही है तब क्या इधर पेड़ा भी छीलते जाइये उधर नई तालीम के जोम में भरे हुए आप के नौजवान आपकी आंख बरकाय इधर उधर होटलों में भी मुह मारते रहें—आप के सामने समाज में प्रगट करने को कण्ठी या रूद्राक्ष भस्म और त्रिपुण्ड रमाय दो घंटे तक पूजा भी करते जांय उधर सभ्य समाज मे दाखिल हो शाम्पेन और विह्स्की पर भी तोड़ करैं—हमारी क्षुद्रबुद्धि में ऐसा आता है कि ऐसी दशा में कदचित् ऐसा होने से समाज के न बिगड़ने की अधिक आशा हो सक्ती है कि एक२ समूह के लोग अपने२ समूह में सह भोजन की प्रथा निकाल दें जैसा ब्राह्मण मात्र का सह भोजन होने लगे ऐसाही क्षत्री और वैश्यों का भी—कच्ची तथा पक्की चाहो किसी जाति का ब्राह्मण हो भोजन करलेने मे कभी आगा पीछा न करै—दक्षिणी ब्राह्मणों में जैसा प्रचलित है कि महाराष्ट्र तैलंग द्राविड़ सब एक साथ भोजन करते हैं—हमारे यहां आठ कनौजिये नौ चूल्हे प्रसिद्ध हैं जो केवल दंभ और ईर्षा की बुनियाद पर है धर्म का कहीं लेश इसमे नहीं है, धर्म शास्त्र के अनेक ग्रन्थ ढूंढ डारे कच्ची पक्की तथा सखरी निखरी के भेद मे क्या मूल है कोई एक बचन भी इस तरह का न मिला, सखरी निखरी की प्रथा निरी आधुनिक और निर्मूल है समाज को नित्य२ नीचे गिराने को महा दाम्भिक अदूर दर्शी ईर्षी स्वार्थी लोगों की चलाई हुई है, जिससे लाभ कोई नहीं है आपसकी ईर्षा द्रोह अलबत्ता बढ़ती जाती है और एक२ समाज के इतने टुकड़े होगये हैं कि हिन्दूओं मे जातीयता "नेशनालिटी" कभी आवेहीगी नहीं, यह तो हम जानते हैं कि आप के चित्त में हमारे इस लेख का कुछ असर न होगा क्योंकि जो जागता है उसको जगाने से क्या आप स्वयं सब जाने बैठे हैं तब हम आप को क्या चितावैं किन्तु हां संसार को आप दुःख रूप मान बैठे हैं तो अब अपने सिद्धान्त को नहीं बदला चाहते—खान पान के व्यर्थ के तितिम्बे को कम करने में कितना आराम और सुख है सब लोग इसे स्वीकार करेंगे किन्तु इतना साहस और इतनी

हिम्मत किसी में नहीं है कि अग्रसर हो इसे करके दिखावे और दूसरों के लिये उदाहरण हो अंगरेज़ी तालीम के ज़माने में आप की ऐसी २ बेबुनियाद बेहूदा बातें अब देर तक चलनेवाली नहीं है जिसे आप आचार विचार के नाम से पुकार बड़ा घमण्ड कर रहे हैं कि हम मनुष्य मात्र में परम पुनीत और सर्वश्रेष्ट हैं वही एक ऐसा कोढ़ है कि हिन्दू जाति और हिन्दू समाज को नित्य नीचे को गिराता गया और गिराता जायगा–मसल है "उंचे दाना कुनद् कुनद् नादान वले खराबिये बिसियार" जो बुद्धिमान् करते हैं उसी को निर्बुद्धी भी पीछे से करने लगते हैं पर बड़ी खराबी और दुर्गति सहने के उपरान्त–यह निश्चय है कि समाज को जीर्ण और छिन्न भिन्न करने वाले खान पान के अनेक ढकोसले अब नहीं चल सक्ते–नई उमंग के नूतन सभ्यता मे प्रवेश पाये हुये हमारे या आप के सन्तान सब एकाकयी कर डालेंगे मुसल्मान पारसी अगरेज़ हिन्दू खुला खुली एक साथ बैठ खाद्य अखाद्य सब कुछ खांयगे जिस बात को अभी छिपाय के कर रहे हैं उस्को प्रत्यक्ष मे करने मे ज़रा भी न शरमांयगे-प्राचीन महत्तम ऋषियों की चलाई प्रथा जिसे आप ने निरा ढकोसला कर डाला सर्वथा निर्मूल हो जायगी-यह सब आप गवांरा करेंगे और यह आप को पसन्द न आवेगा कि हिन्दू मात्र या उनमे की एक२ जाति ईर्षा द्रोह और मन्द बुद्धि को अलग कर भ्रातृस्नेह की डोरी मे खिच एक साथ खांय पियें और अपने देश या जाति की तरक्की मे दत्तचित्त हो यथेष्ट हित साधन करें–बटलोही के चावल की टटोल की भांत दो एक बात हमने आप की भ्रष्ट समाज की यहां दिखलाया जिस्से चित्त घिनाय यही कहने का मन होता है कि संसार केवल दुःख रूप है–काहे को हम समाज के अनेक इस तरह के कोढ़ जो अनेक दुःख और क्लेश दे रहे हैं उसे दूर हटाय अनन्त सुख सन्दोह का हेतु उसे करेंगे–अस्तु अब इस लेख को राडों के चरखे की तरह कहां तक ओटते चले जांय सारांश यह कि संसार सुख सन्दोह का परमोत्कृष्ट मन्दिर है हम

अपने कुढंग और कुचरित्र से अपवित्र कर अपने जीवन को दुःख पूर्णकर रहे हैं॥

मंगबो भलो न बाप से जो बिधि राखै टेक।

कहने को तो कह डाला पर यह न सोचा कि न मांगने का सिद्धान्त कहां तक सच और कहां तक बर्ताव मे हम उसे ला सक्ते हैं बिचार कर देखो तो संसार में एक मिनिट बिना मांगे काम नहीं चल सक्ता और कोई ऐसा नहीं है जिसे यह व्याधि न धरे हो-जन्म लेतेही बालक मांगना शुरू कर देता है कें कें कर रोना क्या है मानो मा से दूध मांगता है बल्कि पैदा होतेही कें कें न करै तो बुरा समझा जाता है और जान का खटका रहता है-उपरान्त मा की गोद में सोने का सुख मांगता है ज्यों२ बड़ा होता है खेलने के लिये खिलौना मांगता है भोजन के लिये मिठाइयां मांगता है अच्छे२ वस्त्र मांगता है-गुरू के यहां गया विद्या मांगता है-पढ़ लिख तैयार हुये नौकरी मांगते हैं नई जवानी के आलम मे दाखिल हो किसी ललना ललाम का प्रेम मांगते हैं-उस्की लुनाई पर मोहित हो अधरामृत के पान का स्वाद मांगते हैं-अधरामृत के दान का इनकार करै तो मियां बीबी दोनो लड़ने लगते हैं-पति अपनी पत्नी से पतिव्रत मांगता है जिस्मे उस्के लावण्य को कोई कुठार न डाले पत्नी भी पति से एक पत्निव्रत मांगती है न पाने से रोती है खिझलाती है अपने बश मे उसे रखने के लिये अनेक तरह के टुटका, टनमन, मंत्र, यंत्र, जादू, टोना, मारण, मोहन, उच्चाटन, बशीकरण, काम मे लाती है-इत्यादि इस मांगने का अन्त नहीं है-पिता पुत्र से पितृ भक्ति मांगता है-गुरू गुरुभक्ति मांगता है-ब्राह्मण प्रणाम मांगता है-सूरमा क्षत्री युद्ध मांगता है-रोज़गारी अपने रोज़गार मे मुनाफा मांगता है-सूदखोर महाजन सूद मांगता है न पाने से ब्याज का ब्रियाज जोड़ता हुआ नालिश कर सर्कार से उस्की ज़ायदात नीलाम करा लेना मांगता है। सेवक अपनी सेवकाई का बेतन मांगता है-दिलो जान से मालिक

की टहल मे प्रवृत रह इनाम मांगता है स्वामी की कृपा दृष्टि मांगता है—मज़दूर अपनी मज़दूरी के पैसे मांगता है—सौदा वेचने वाला दाम मांगता है दल्लाल दल्लाली मे खरीदार की लिपड़ी बर्तावा कर लेना मांगता है—सर्कारी ओहदेदार सलाम मांगते हैं—पादरी साहब दूसरों को इसाई कर उनका ईमान लेना मांगते हैं—लंकाशायर के जुलाहे हिन्दुस्तान के रोज़गारियों का रुधिर मांगते हैं—पण्डित लोग सभा मे तीतिर बटेर की लड़ाई के समान थोड़ी देर तक चांव२ के उपरान्त दक्षिणा मांगते हैं बड़े अमीर राजा बाबू मसनद नशीन होकर टहलुये से पानदान मांगते हैं पीकदान मांगते हैं गुणी जन सन्मान मांगते हैं विलाइत के लोग हिन्दुस्तान की प्रजा का वलिदान मांगते हैं और प्रजा गवर्नमेन्ट से इनसाफ मांगती है—लोग किसी का कुछ काम कर एहसान मांगते हैं—माशूक अपने आशिक की जान मांगता है—जीते जी तो मांगतेही रहते हैं मरने पर भी पितर की गणना मे हो पितृ भक्त पुत्र से पितर लोग पिण्डदान मांगते हैं मुसल्मान हुये तो अपने किसी यगाने से कबर पर चिराग जलाना मांगते हैं—इत्यादि कहां तक गिनावें इस मांगने का छोर नहीं है क्या मनुष्य क्या देवता क्या पितर क्या राक्षस मांगने से कोई खाली नहीं है ॥

प्राचीन प्रसिद्ध स्थानों का विवरण ।

हमारा संस्कृत साहित्य जैसा और सब बातों मे और२ भाषाओं के साहित्य से निराले ढंग का है वैसाही भूगोल भी इसमे सर्बथा निराला है इससे हमे कुछ प्रयोजन नहीं कि हमारे यहां के लोगों को भूगोल के सम्बन्ध में कहां तक प्रवेश था और उस समय इस भूमण्डल को जैसा उन्होने समझ रक्खा था वह कहां तक सच था किन्तु हम यहां पर देश नगर पर्वत नदी इत्यादि के बोधक उन शब्दों का विवरण किया चाहते

हैं जो पुराणों मे धर्म शास्त्रो मे और कालिदास आदि प्रसिद्ध कवियों के ग्रन्थों में पाये जाते हैं ॥

पंचाल ।

मनु के मत से पंचाल और कन्नौज एकही देश है-पर महा भारत के अनुसार यह दक्षिणी दोआब अर्थात् गंगा यमुना के बीच का प्रदेश है-आदि पर्व के लेख से जाना जाता है कि द्रुपद राजा के समय यह दो हिस्सों मे बंट गया था दक्षिण पंचाल की राजधानी माकन्दी थी उत्तर पंचाल की अहिक्षेत्र या अहिच्छत्र थी-यूनान देश का टालमी नामक इतिहास बेत्ता जिसने हिन्दुस्तान का प्राचीन इतिहास लिखा है इसी अहिच्छत्र को आदिसत्रस [Adisattrus] कहता है महा भारत मे लिखा है द्रोणाचार्य द्रुपद को जीत समस्त पंचाल अपने आधीन कर लिया पर पीछे से गंगा के उत्तर का भाग अपने आधीन रक्खा जिस्की राजधानी माकन्दी थी और गंगा के दक्षिण चर्मण्वती चम्बल नद तक सब देश द्रुपद को दे डाला-फर्रुखाबाद शहर के एक मील पश्चिम कुछ थोड़ी सी पुरानी टूटी फूटी सूरतें पाई जाती हैं जिसे वहां के लोग कहते हैं यह वही अखाड़ा है जहां द्रोणाचार्य ने पाण्डवों को वाण विद्या सिखलाया था-इससे भी मालूम होता है कि यह स्थान उत्तर पंचाल ही में था-पंचाल और मत्स्य देश जिस्का बिवरण हम आगे लिखैं गे दोनो की डांड़ा मेंड़ी थी-पंचाल और मत्स्य दोनो पुराणों मे प्रसिद्ध देश हैं और ये दोनो देश पीछे से हस्तिनापुर के राज्य में मिला लिये गये तब से यह कुरू पंचाल के नाम से कहलाने लगा अर्थात् पंचाल का वह भाग जो कौरवों के आधीन था जो अब दोआबे का उत्तरी हिस्सा है ॥

मत्स्य या विराट।

कोई२ कहते हैं मत्स्य या विराट गुजरात मे है-बंग देशी निश्चय करते हैं कि दिनाजपुर रंगपुर और कूचबिहार यही तीनों के बीच मत्स्य देश था किन्तु मनु ने लिखा है कि मत्स्य शूरसेन आदि पवित्र देश और प्राचीन आर्यों के रहने के स्थान थे और कूचबिहार दीनाजपुर आदि स्थान बंगदेश मे है और इधर के स्मृतिकारों ने अंग बंग कलिंग आदि देश अपवित्र देशों मे माना है॥

अंग बंग कलिंगेषु सौराष्ट्र मगधेषुच।
तीर्थ यात्रां बिना गत्वा पुनः संस्कार मर्हति॥

तब कूचबिहार आदि मत्स्य देश मे क्योंकर हो सक्ता है बरन मत्स्य देश में जैपुर का राज्य अलबत्ता आसक्ता है-विराट नाम का एक छोटा सा कस्बा ४० मील जैपूर से उत्तर अब तक विद्यमान् है धवलपूर के पश्चिम सब मत्स्य या विराट देश है-पाण्डवों ने वर्ष दिन तक गुप्त निवास मे यमुना के किनारे२ शूरसेन देश मे होते हुये दशार्ण को पार कर विराट के राज्य में प्रवेश किया जहां उनके गुप्त निवास के बहुधा चिन्ह अब तक पाये जाते हैं-मनु ने पवित्र देशों की गणना मे इन देशों को रक्खा है-तद्यथा॥

सरस्वती दृशद्वत्यो र्देव नद्यो र्यदन्तरम्।
तंदेव निर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते॥
कुरुक्षेत्रंच मत्स्याश्च पांचाला शूरसेनकाः।
एष ब्रह्मर्षि देशोवै ब्रह्मावर्ता दनन्तरम्॥
हिमव द्विन्ध्ययो र्मध्यं यत्प्राग् विनशना दपि।
प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः॥

कूचबिहार इत्यादि कई स्थान जिनके बीच बंग देशी मत्स्य देश

मानते हैं वे सब मनु की बान्धी सीमा के बाहर हैं इस लिये वंगदेशियों की यह कल्पना सर्वथा अयुक्त और मनु के लेख के विरुद्ध है-वंग देशी बहुधा इस बात को सिद्ध करने की चेष्टा कर रहे हैं कि प्रसिद्ध२ देश तथा नगर और कालिदास श्री हर्ष आदि कवि सब वंग देशही मे हुये हैं ॥

शूरसेन।

यह देश कहां तक प्राचीन है और संस्कृत के साहित्य मे किस अनादि काल से इसे स्थान दिया गया यह मनु के लेख से सिद्ध है-१८ प्रकार की प्राकृती भाषा जो बहुधा नाटकों मे पाई जाती हैं साहित्य दर्पणकार ने जिनका कुछ थोड़ा बिवरण अपने ग्रन्थ में लिखा है उनसे शूरसेनी भाषा सबों मे मधुर है और अब भी वृज भाषा हिन्दी भाषा के अवान्तर भेद मे सब से मधुर और सोहावनी समझी जाती है-यद्यपि हस्तिनापुर सूरसेन से बहुत दूर न था और हस्तिनापुर उस समय के चक्रवर्ती राजाओं की राजधानी थी पर भाषा हस्तिनापुर की आदर्श या प्रमाण Standard मे न रख शूरसेनी भाषा महाराष्ट्री आदि भाषाओं के समान १८ तरह की प्रचलित प्राकृती मे एक समझी गई और भाषा किसी स्थान की प्रमाण मे तभी ली जाती है जब वह देश सभ्यता आदि मे बहुत आगे निकल गया हो-इससे सिद्ध होता है कि शूरसेन देश प्राचीन समय में पवित्रता सभ्यता और भाषा आदि के सम्बन्ध मे और२ देशों के आगे बढ़ा था ॥

प्राकृतियों मे भी शूरसेनी संस्कृत के तुल्य मानी गई है साहित्य-दर्पणकार लिखते हैं ॥

पुरुषाणा मनीचानां संस्कृतंस्या त्कृतात्मनाम् ।
शौरसेनी प्रयोक्तव्या तादृशीनांच योषिताम् ॥

१८ तरह की प्राकृती का यह प्रयोजन है कि नाटकों मे जो जैसा

पात्र हो उस्के लिये वैसी बोली रक्खी गई है-पुरुषों की बोली और पुरुषों मे वे जो उत्तम और श्रेष्ट हों उनकी बोली संस्कृत होगी उसी तरह स्त्रियों मे श्रेष्ठ पात्र की भाषा शूरसेनी होगी जैसा अभिज्ञान शाकुन्तल मे शकुन्तला प्रियम्वदा इत्यादि और उत्तर चरित्र मे जानकी मैत्रेयी इत्यादि की भाषा शूरसेनी है और भी ॥

चेटीना मप्य नीचाना मपिस्या त्शूरसेनिका ।

दासी जो नीच जाति की न हों उनकी भाषा भी शूरसेनी होगी रत्नावली नाटिका मे कई जगह ऐसी भाषा आगई है कई एक आर्या इसी भाषा की हैं जैसा "दुल्लभजणा नुरागेवो लज्जा गुव्वी परवश अप्पा" इत्यादि जुदी२ तरह की प्राकृती का उदाहरण मृच्छकटिक और मुद्राराक्षसमे बहुत अच्छा पाया जाता है-कंस की राजधानी यहीं थी शूरसेन कृष्ण के दादा थे उन्ही के नाम से उस देश का नाम भी जहां तक उनका राज्य था शूरसेन कहलाया-एरियन एक यूनान का लेखक कहता है कि मेगास्थनीज़ जो सिकन्दर के साथ यहां आया था शूरसेन के दो नगरों का उसने नाम लिखा है मेथोरस अर्थात् मथुरा और क्लिसोबोरस अर्थात् कालिकावर्त या कालीदह जहां अब वृन्दावन बसा हुआ है ॥

मद्र।

यह देश हिमालय के दक्षिण ओर है राजा शल्य यहीं के राजा थे शल्य और करण के सम्वाद से करण ने महा भारत मे मद्र देश की बड़ी निन्दा लिखी है किसी२ का अनुमान है कि अब जो भूटान देश कहलाता है वह मद्रही है-माद्री पाण्डु की द्वितीय पत्नी जो नकुल और सहदेव की मा थी मद्र देश के राजा की कन्या थी ॥

अंङ्ग ।

यह देश गंगा के दहिने किनारे है इसकी राजधानी चम्पा थी जो अब भागलपुर के नाम से प्रसिद्ध है कोई२ अङ्ग देश उड़ैसा को कहते हैं पर वह ठीक नहीं है उड़ैसा का नाम उत्कल है ॥

कलिङ्ग ।

यह देश उड़ैसा के दक्षिण गोदावरी और समुद्र के संगम तक बराबर चला गया जिसे अब कारोमण्डल कहते हैं नार्दरन सरकार भी यहीं है राजमहेन्द्री भी इसी में है अन्ध्र देश या तिलंगाना या तैलंग देश की कलिंग देश से डांड़ा मेंड़ी है-रघु के दिग्विजय मे कालिदास ने लिखा है॥

सतीर्त्वा कपिशां सैन्यै र्बद्धद्विरदसेतुभिः ।
उत्कला दर्शित पथः कलिंगाभिमुखं ययौ ।

हाथियों का पुल बांध कपिशा नदी जो सुह्म देश मे है पार कर उत्कल के लोगों से रहनुमा हो राजा रघु कलिंग की ओर बढ़े अंग बंग कलिङ्ग उत्कल सुह्म ये सब देश मिले२ हैं ॥

अन्ध्र।

यह वही है जिसे अब तिलंगाना कहते हैं गोदावरी के मुहाने इसी मे हैं। घाट पर्बत इसकी पश्चिम की सीमा है-कृष्णा और गोदावरी नदियां उत्तर और दक्षिण की सरहदें हैं--जिस समय मुसलमानो ने दक्षिण मे हमला किया है उस समय ये अन्ध्र देशवाले सम्पूर्ण दक्षिण मे अपना प्रभुत्व स्थापित किये थे-पलटन के सिपाहियों का तिलंगा पहिनाव तैलंग से बना है पहले पहल अंगरेज़ी फौज़ इन्ही तैलगों की भरती की गई थी भाषा भी तैलंग यहां की प्रसिद्ध है ॥

सुह्म।

यह वङ्ग देश के पश्चिम अर्थात् बंगाल का पश्चिमी हिस्सा है कपिशा या कोसी नदी के दहिने किनारे पर इस्की राजधानी ताम्रलिप्त या दामलिप्त ताम्रलिप्ती या तमालिनी थी जो अब तामलूक कहलाता है-यह मेदनीपुर के ज़िला मे चौथी शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक बड़ा प्रसिद्ध बन्दर था दशकुमार चरित और कथा सरित्सागर मे कई जगह इस्का नाम आया है-कालिदास ने भी सुह्म देश को लिखा है:-आत्मा संरक्षितः सुह्मैः वृत्ति माश्रित्य वैतसीम् ॥

उत्कल।

यह देश उड़ीसा है यहां के ब्राह्मण प्रसिद्ध हैं-"सारस्वताः कान्यकुब्जाः गौडामैथिल उत्कलाः"-भाषा भी यहां की प्रसिद्ध है-कुतुबुद्दीन ऐबक के समय तक यह स्वच्छन्द राज्य था-अब यह बंगाल मे शामिल कर लिया गया है ॥

बंग।

बंगाल का पूर्बी हिस्सा-कालिदास ने यहां के लोगों को नाविक अर्थात् नौका चलाने मे चतुर लिखा है:-वंगानुधृत्य तरसा नेता नौसाधनो द्यतान् ॥

अब इस समय ढांका आदि कई ज़िले इसी मे हैं यहां के लोग नाव चलाने मे अब भी बड़े चतुर हैं ॥

गौड़ या पुंड्र।

यह बंगाल के उत्तर है-राजधानी गौड़ थी अब तक जिस्की टूटी फूटी इमारतें गंगा के तट पर पाई जाती हैं गौड़ ब्राह्मणों की बुनियाद कदाचित् यही गौड़ देश है-महाप्रभू कृष्ण चैतन्य सनातन गोस्वामी

प्रभृति गौड़ संप्रदाय के गोसाइयों की भी उत्पत्ति यहीं से है—दीनाज़पुर, राजशाही, रंगपुर, नदिया, बीरभूमि, बर्द्वान्, मिदिनीपुर, रामगढ़ ये सब ज़िले पुण्ड् या गौड़ देश के हैं॥

द्राविड़।

मंद्राज से आरंभ कर दक्षिण की ओर कारोमण्डल का किनारा जो गोदावरी के दक्षिण है, खास कर वह हिस्सा जो कृष्णा और पोलर नदी के बीच है—इस्की प्राचीन राजधानी वेगवती नदी पर कांची या कंजिवरम् है जो मन्द्राज से नैऋत्य कोण की ओर है—यहां वरदराज विष्णु का बड़ा पुराना मन्दिर है और वेही इस देश के उपास्य देवता हैं—कांची दो हिस्सों मे बंटी है विष्णुकांची और शिवकांची दक्षिण की ओर बिष्णुकांची है उत्तर की ओर शिवकांची और सप्त पुरियों से एक बड़ा तीर्थ है—किसी समय मे बड़ा शहर था अब उजाड़ है एक मन्दिर विष्णु का और एक शिव का बड़ा लम्बा चौड़ा है और बड़ा ऊंचा बना है जिसे देख मालूम होता है कि प्राचीन आर्य बास्तु निर्माण विद्या इनजिनियरिंग मे कहां तक कुशल थे॥

चोल या कर्णाट।

कारोमण्डल किनारे का दक्षिण भाग काबेरी नदी के किनारे मैसूर का दक्खिनी हिस्सा॥

केरल।

पृथ्वी का वह भाग जो काबेरी नदी के उत्तर और पश्चिम घाट पर्बत तथा समुद्र के बीच है—नेत्रवती सरस्वती और काली नदी जिस्की कालिदास ने रघुबंश मे मुरला इस नाम से लिखा है यहां की खास नदियां हैं:—

भयोत्सृष्ट विभूषाणां तेन केरलयोषिताम् ।
अलकेषु चमूरेणु श्चूर्ण प्रतिनिधीकृतः ॥
मुरला मारुतोद्धूत मगमत्कैतकंरजः ।
तद्योधवारवाणाना मयत्नपटवाससम् ॥

अब इस देश को कनारा कहते हैं कावेरी के उसपार मालाबार का किनारा इसी देश मे है—कनरी भाषा यहां बोली जाती है ॥

पांड्य ।

चोल देश के दक्षिण पश्चिम दक्षिण की परमावधि रामेश्वर मलय पर्वत और ताम्रपर्णी नदी इसी देश मे है :—

दिशि मन्दायते तेजो दक्षिणस्यां रवेरपि ।
तस्यामेव रघोः पाण्ड्याः प्रतापं न विसेहिरे ॥
ताम्रपर्णी समेतस्य मुक्तासारं महोदधेः ।
ते निपत्य ददुस्तस्मै यशः स्वमिव संचितम् ॥

नीगापाटम् या नागपत्तन जिस्का इशारा कालिदास ने रघुबंश के छठयें सर्ग मे दिया है यहीं है ॥

महेन्द्र पर्वत ।

कुलाचल के सात पर्वतों मे एक जिस्की शृंखला गंजाम को महानदी के प्रवाह से खिंचे देशों से जुदा करती है—महानदी और गोदावरी के बीच पूर्वी घाट पर्वत का भाग सब महेन्द्र पर्वत है ॥

मलय और दर्दुर ।

यह भी हिन्दुस्तान के सात कुलाचल पर्वतों से एक है—घाट पर्वत का वह दक्षिणी हिस्सा जो मैसूर के दक्षिण औत्रिवांकूडू या ट्रावनकोर

राज्य की पूरब की सरहद्द है—कावेरी नदी इसी पर्बत से निकल चारो ओर इसे आवेष्ठित किये है—इलाइची, मिर्च, चन्दन, सुपारी और नारियल यहां बहुतात से उपजते हैं "एलालता चन्दन लिंगितासु" इत्यादि इस्के वर्णन मे कालिदास भवभूति और जयदेव प्रभृति कबियों ने बहुत कुछ प्रशंसा मलयाचल की लिखा है—पासही इस्के दूसरा पर्वत दर्दुर है कालिदास ने रघुवंश के चौथे सर्ग मे मलय और दर्दुर इन दोनों को दक्षिण दिशा का कुच लिखा है:-

स निविश्य यथा कामं तटेष्वालीन चन्दने ।
स्तनाविव दिशस्तस्याः शैलौ मलयदर्दुरौ ।

दर्दुर घाट पर्बत का वह हिस्सा है जो मैसूर की दक्षिण पूरब की सरहद्द है ॥

सह्याद्रि ।

यह भी कुलाचल के सात पर्बतों में एक है पश्चिमी घाट पर्बत के विस्तार का उतना भाग जितना मलय के उत्तर नीलगिर के साथ जा मिला है—पूना से जो रेल बम्बई को जा मिली है वह सह्याद्रि पर्बत को काटती हुई गई है छोटे बड़े २० के ऊपर धुंधके मिलते हैं जिनके भीतर हो रेल जाती है दोनो ओर का दृश्य देखने लायक है—९ कोस की लम्बाई मे २० के ऊपर "टनेल" धुंधके मिलते हैं जिनके बनाने मे कई करोड़ रुपये लगे हैं—महाराष्ट्र या मराठा देश इसी सह्याद्रि की प्रान्त भूमि है—शिवाजी इन्ही पर्बतों की गुफाओं मे छिप औरंगज़ेब की फौज को लूटा करता था औरंगज़ेब शिवाजी से तंग आय उसे पहाड़ी चूहा कहा करता था ॥

कुन्तल ।

चोलदेश के उत्तर हैदराबाद की रियासत का दक्षिणी पश्चिमी हिस्सा—पुराणों मे कुन्तल देश का बहुधा नाम आया है ॥

सौराष्ट्र या आनर्त।

गुजरात देश का वह भाग जो काठियावार कहलाता है-सौराष्ट्र के माने हैं अच्छा राज्य और आनर्त के माने हैं वह देश जो नैऋत्य कोण की ओर है-द्वारिका यादवों की राजधानी यहीं थी रैवतक पर्वत भी जिस्का माघकवि ने बड़ा विस्तृत वर्णन किया है जो अब गिरनार के नाम से जूनागढ़ के पास है यहीं है-द्वारिका के उपरान्त यहां की राजधानी वल्लभी हुई जिस्की टूटी फूटी इमारतें भावनगर से १० मील वायव्य कोण को अब भी पाई जाती है समुद्र तट पर प्रभास एक छोटी सी झील है-सौराष्ट्र देश की स्त्रियों के सौन्दर्य की बड़ी प्रशंसा कवियों ने की है॥

अश्मक।

ट्रावनकोर या त्रिवांकोडूका पुराना नाम यह देश मन्दराज हाथे मे एक स्वच्छन्द राज्य है॥

अवन्ती।

कालिदास ने मेघदूत मे इस्का दूसरा नाम विशाला लिखा है "श्री विशाला विशाला" अब यह सिप्रा नदी के किनारे उज्जैन के नाम से प्रसिद्ध है और विक्रमादित्य की राजधानी थी नर्मदा के उत्तर मालवा का पश्चिमी हिस्सा सब अवन्ती या आवन्त्य देश है-महाकालेश्वर महादेव और विशाला का वर्णन मेघदूत के कई श्लोकों मे कालिदास ने बड़ी धूम धाम के साथ किया है-महाभारत के समय यह देश दक्षिण की ओर विस्तार मे नर्मदा तक था और पश्चिम की ओर माही नदी तक था-आवन्त्य देश के उत्तर एक दूसरा छोटा सा राज्य था जिस्की राजधानी चर्मरावती या चम्बल पर दशपुर थी जो अब ढोलपुर या धवलपुर के नाम से प्रसिद्ध है-प्रयाग काशी पटना मिरज़ा-

पुर के शहर और इन शहरों के देहात में एक जाति के ब्राह्मण रहते हैं जो अपने को मालवीय कहकर प्रसिद्ध किये हैं और कहते हैं कि हम वेही मालवीय या आवन्त्य हैं जो कृष्ण के गुरू सन्दीपिन थे ॥

काश्यं सन्दीपिनं नाम अवन्तिपुरवासिनम् ।

और यह भी कहते हैं कि कालिदास बारह मिहर इत्यादि कवि और ज्योतिर्विद् सब मालवी ही थे, पर यह सब उनका दीर्घवाद घमण्ड और शेखी है-वास्तव में ये न जानिये कब के देश च्युत हैं-इन प्रान्तों के बहुत से सरयूपारी ब्राह्मणों की भांत पतित और गलांक हो गये हैं विशेष कर खत्रियों के साथ से इनकी चाल ढाल रंग ढंग रीत रसम देख इन्हे ब्राह्मण कहते जी संकुचाता है-ब्रह्मवीर्य तो ये अवश्य हैं-किन्तु पंच गौड़ और पंचद्राविड़ हाल के कल्पित ब्राह्मणों के दश भेद में ये पंचद्राबिडों में हैं या पंच गौड़ में हैं इसका कुछ पता नहीं लगता-जो हो खत्रियों के दास या चेले इनके आचरण और चरित्र देख अपने को मालवीय कहते और मालवीय उपाधि धारी अपना परिचय देते शरम आती है ॥

कक्ष ।

काठियावर से लगा हुआ प्रायद्वीप अब कच्छ या भुज्ज के नाम से प्रसिद्ध है-यहां पृथ्वी निपट बंजली और रेगस्तानी है घोड़े यहां के प्रसिद्ध हैं ॥

दशार्ण ।

दशार्णा नाम की एक नदी भी है जो दशार्ण देश में होकर बही है जो मालवा के पूरब का हिस्सा है "दशार्णोदेशः नदीच दशार्णा" ऐसा भट्टो जी दीक्षित ने सिद्धान्त कौमदी में लिखा है, इसकी राजधानी विदिशा थी जो अब वेत्रवती या वेतवा पर भिलसा के नाम से प्रसिद्ध है, कालिदास ने मेघदूत में और बाणभट्ट ने कादम्बरी में विदिशा का बहुत अच्छा वर्णन किया है-कोई २ छत्तीसगढ़ को दशार्ण कहते हैं ॥

मेकल ।

विन्ध्य पर्वत का वह भाग जहां अमरकण्टक है जहां से नर्मदा निकली है अमरसिंह ने भी अमर कोश मे नर्मदा के नाम से इसे लिखा है देवातु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥

लाट ।

नर्मदा की पश्चिम बराह बरोच, और अहमदाबाद सब इसी देश मे है-खान देश और गुजरात का एक हिस्सा-इसी के पास पुलिन्द देश है-एक प्रकार का अनुप्रास शब्दालंकार जो लाटानुप्रास कहलाता है इस लाट शब्द से बना है-इस देश के लोगों को यह अनुप्रास बहुत प्रिय है इसलिये यह लाटानुप्रास कहलाया जिस्का लक्षण साहित्य दर्पण मे इस तरह पर है, यथा:-

शब्दार्थयोः पौनरुक्त्यं भेदेतात्पर्यमात्रतः ।

तात्पर्यमात्र मे भेद होने पर जो शब्द अर्थ दोनो की पुनरुक्ति वह लाटानुप्रास है-

यस्यन सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य ।
यस्यच सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य ॥

जिस्के समीप दयिता नहीं है उस्को विरह ताप के कारण चन्द्रमा दवाग्नि सा सन्ताप बढ़ाने वाला मालूम होता है-पास दयिता हो तो दवाग्नि भी चन्द्रमा के समान उसे ठंढक देती है-यहां शब्द और अर्थ सब एकही हैं दोबार कहे गये हैं किन्तु तात्पर्य मे अन्तर हो गया है-लाटानुप्रास बड़ा उत्तम अनुप्रास है इससे सिद्ध होता है यहां के लोग बड़े काव्य रसिक हो गये हैं ॥

विदर्भ।

यह देश अब बिरार के नाम से प्रसिद्ध है पुराने समय मे विदर्भ का राज्य कुन्तल देश के उत्तर बिस्तार मे कृष्णा से नर्मदा तक था--महाराष्ट्र देश भी प्राचीन समय मे यही कहलाता था कुण्डिनपुर इसकी राजधानी थी विदर्भ बिगड़ कर अब बिडर हो गया है, वर्द्धा नदी इसे दो हिस्सों में बिभक्त करती है उत्तरी हिस्से की राजधानी अमरावती और दक्षिणी हिस्से की प्रतिष्टान थी-यह प्रतिष्ठान उस्से अलग है जो प्रयाग के समीप पुरूरवा की राजधानी थी कथा सरित्सागर मे जिस प्रतिष्ठान की चरचा है वह यही है-नैषध तथा नलचम्पू मे नल दमयन्ती के कथानक के प्रसंग मे बिदर्भ और कुण्डिनपुर का विस्तृत वर्णन किया गया है॥

गोमन्त।

कोंकण देश का एक भाग ठीक उसी जगह मे था जहां अब गोआ है॥

धुरन्धर।

महा भारत के करण पर्ब मे यूगन्धर नामक एक नगर का वर्णन है यदि वही यह है तो यह पंजाब मे था॥

भोज

इस नाम के कई देश हैं एक वह है जो विन्ध्य पर्वत पर है-बिहार का पश्चिमी हिस्सा भी भोजपुर है यहां के कद्दावर ज्वान बैसवारे के राजपूतों से किसी अंश मे कम नहीं हैं, भोजपुरिये कोता अकिल सरनाम हैं, बोली इन लोगों की बड़ी गंवार अश्लीलभद्दी प्रसिद्ध है-ग़ाजीपुर, बलिया, डुमराव और छपरा के पासतक सब भोजपुर है-एक नर्मदा के तट पर कृष्ण का शाला रुक्मी का बसाया भोजकट या भोजकोट नाम का नगर था॥

एक चक्रा

आरा का ज़िला-महाभारत मे बकासुर के उपाख्यान मे एक चक्रा का नाम दिया गया है बकासुर के अधिकार मे यह था॥

एक चक्रा।

आरा का ज़िला महाभारत मे बकासुर के उपाख्यान मे एक चक्रा का नाम दिया गया है बकासुर के अधिकार मे यह था॥

मगध।

बिहार का दक्षिणी हिस्सा—इस्की पुरानी राजधानी गिरिव्रज या राजगृह थी जो विपुलगिरि, रत्नगिरि, उदयगिरि, शोणगिरि, वैभार या व्याहारगिरि इन ५ पहाड़ियों पर बसी थी—पीछे से बौद्धों ने जब अपना पूरा अधिकार यहां जमालिया तब मगध कीकट कहलाने लगा जो महा अपुण्य भूमि पुराणों मे मानीगई है—जिस्का कारण कदाचित् यही समझा जाता है कि बौद्धों का अधिकार होने से यज्ञादिक यहां बन्द होगये तब ब्राह्मणों ने इसे अपवित्र देश लिख दिया जरासिन्ध आदि राजाओं के समय राजगृह इस्की राजधानी थी पीछे पाटलिपुत्र या पटना हुई कथा सरित्सागर मे पाटलिपुत्र की उत्पत्ति एक कथानक के साथ की गई है॥

विदेह।

मगध देश से ईशान कोण के सब देश विदेह हैं—मगध के समान विदेह अपवित्र नहीं है प्रत्युत पंचाल आदि के समान पवित्र देश है और जनक के समय विद्या के लिये काशी के समान था वरन प्रसिद्ध२ ब्रह्मर्षियों ने विदेह या जनक से आकर ब्रह्म विद्या सीखी थी—मधुबनी के उत्तर और नैपाल के दक्षिण मिथिला या जनकपुर इस्की राजधानी थी प्राचीन समय मे नैपाल के अतिरिक्त सीतामढ़ी, सीताकुण्ड तिरहुत का उत्तरी हिस्सा और चम्पारण्य के वायव्य कोण का सब देश विदेह मे था अब वह सब देश तिरहुत के नाम से प्रसिद्ध है जिस्का शुद्ध संस्कृत नाम तिरोहित है—तिरोहित के माने छिपजाने के हैं—एक समय किसी कारण यहां के ब्राह्मणों को गौतम जी ने शाप दिया था

कि तुम से वेद तिरोहित हो जाय तब से यह तिरोहित कहलाने लगा पीछे ब्राह्मणों ने गैातम जी की बहुत प्रार्थना की तब गैातम ने इनके लिये न्याय शास्त्र बनाया और कहा तुम इसी को पढ़ा करो जिस्मे मूर्ख न रहो और वेद से तिरोहित होने के कारण यहां के ब्राह्मणों ने तंत्र बनाये और वेद के स्थान मे तंत्र को अपना धर्म ग्रन्थ माना—इसी से तंत्र की कल्पना बहुत हाल की वरन पुराणों के भी पीछे की है ॥

कोशल ।

बाल्मीकि रामायण के अनुसार सरयू या घाघर के दोनों किनारे पर यह देश था—यह दो हिस्सों मे बटा हुआ था, उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल—अयोध्या के उत्तर गोंडा बहराइच आदि ज़िले सब उत्तर कोशल में है कालिदास ने रघुबंश मे भी लिखा है ॥

पितुरनन्तरमुत्तरकोशलान्समधिगम्यसमाधिजितेन्द्रयः ।
दशरथः प्रशशास महारथो यमवता मवतां च धुरिस्थितः ।।

महा भारत मे उत्तर और दक्षिण कोशल के सिवाय पूरब और पश्चिम कोशल भी लिखा है—वायु पुराण और पद्म पुराण के पाताल खण्ड मे लिखा है कि रामचंद्र के पुत्र कुश कुशस्थली या कुशावती मे जो विन्ध्य पर्बत की चोटी पर थी राज्य करते थे—कुश का अयोध्या मे लौट आना बतलाने को रघुवंश मे भी इस तरह का लेख पाया जाता है सगर आदि राजाओं से रामचंद्र तक अयोध्या कोसल की राजधानी रही उपरान्त यह उजड़ गई थी तब कुश ने अपने नाम की नगरी कुशस्थली या कुशावती बसाया और वहां राज्य करने लगे—लव गंगा तट पर श्रावस्ती नगरी मे उत्तर कोशल के राजा हुये—तब से उत्तर और दक्षिण दो हिस्सों मे कोशल का राज्य बंट गया—पुराणों मे ७ ऐसी जगह हैं जिनका कोशल नाम पाया जाता है—छत्तीसगढ़ ज़िले मे

रतनपुर के पास गड़ा हुआ एक तांबे का पत्र मिला है जिसमे लिखा है कि कोसलेश्वर पृथ्वी देव मल हरि मण्डल के शासन कर्ता सम्वत् ९१५ मे मन्दिर बनवाये तालाव खुदवाये-इससे जाना जाता है कि गंगा के दक्षिण पार तक कोशल राज की सीमा थी टालमी ने भी कोन्त कोशल नाम का एक स्थान अपनी पुस्तक मे लिखा है यह भी सात कोसल मे एक रहा होगा ॥

काशि कोशल ।

यह देश वायु पुराण के मत से मध्यप्रदेश मे और रामायण के मत से पूरब की ओर है परन्तु नाम से जाना जाता है कि बनारस और अयोध्या के बीच का कोई देश है ॥

कौशाम्बी ।

इलाहाबाद से ३० मील पश्चिम पपोसा के नाम से प्रसिद्ध अब एक छोटा सा ग्राम मात्र है जैनियों का एक प्रसिद्ध तीर्थ है प्राचीन समय मे वत्सराज की राजधानी कौशाम्बी थी जिस्का ज़िकिर कथा सरित्सागर और रत्नावली नाटिका में पाया जाता है ॥

चेदि ।

यहां के रहने वाले चैद्य कहलाते थे भागवत मे शिशुपाल को चेदिका राजा लिखा है जो अब चन्देली के नाम से प्रसिद्ध है-चन्देली बुन्देलखण्ड का एक शहर है और दुपट्टा, साड़ी तथा पगड़ी के लिये प्रसिद्ध है-कोई २ चेदिका राज्य दशार्ण के अन्तर्गत मानते हैं-कोई २ छत्तीसगढ़ के ज़िले मे चेदि मानते हैं-चन्देले क्षत्रियों की बुनियाद भी यही चेदि या चन्देली है-कोई २ नागपुर के पास चंदेल को चेदी कहते हैं ॥

करुष ।

वायु पुराण और मत्स्य पुराण के अनुसार विन्ध्य पर्बत पर यह देश था भागवत मे दन्तवक्र को यहां का राजा लिखा है-अनुमान होता है चेदि और करुष दोनों पासही पास थे ॥

माल ।

इस्का दूसरा नाम मालावर्त है-वायु और मत्स्य पुराण के अनुसार यह भारत वर्ष के बीचोबीच मे था कर्नल विलफोर्ड मेदिनीपुर के अन्तर्गत और विलसन साहब छत्तीसगढ़ की प्रान्त भूमि को माल मानते हैं ॥

त्रिगर्त ।

सतलज और सरस्वती दो नदियों के बीच का देश जिस्का अधिक अंश रेगिस्तानी जंगल है लुधियाना और पटियाला इसी मे है महा भारत मे त्रिगर्त का वर्णन कई जगह है ॥

जालन्धर ।

दोआबा जो शतद्रू या सतलज और विपाशा या व्याशा नदी के बीच है यहां का मुख्य नगर भी अब इसी नाम का है ॥

केकय ।

सिन्धु देश के समीप विपाशा नदी के पश्चिम का देश-केकयी यहीं के राजा की कन्या थी ॥

वाहिक या वाहीक ।

शतद्रू सतलज से सिन्धु नदी तक फैला हुआ भूभाग-कोई २ इसी को बाल्हीक देश कहते हैं पर यह उनका भ्रम है-बाल्हीक बलख देश है जो बुखारा के पास है घोड़े यहां के प्रसिद्ध हैं ॥

सिन्धुसौवीर पंजाब का वह हिस्सा जो सिन्धु देश से मिला हुआ है-गान्धार जिसे अब कन्दहार कहते हैं-पंचनद-पंजाब अर्थात् वह देश जो ५ नदियां झीलं रावी चिनाब व्यास सतलज के बीच है ॥

काम्बोज ।

कम्बोज देश के रहने वाले काम्बोज हैं यह देश लद्दाक तक फैला हुआ गिलगिट से बलख को हिन्दूकुश पहाड़ के द्वारा अलग करता हुआ घोड़े और लम्बे२ रोयें वाले जानवरों के लिये प्रसिद्ध है कालिदास ने रघु के दिग्विजय के प्रसंग मे यहां के ऊंचे अखरोट के पेड़ों की प्रशंसा की है :-

काम्बोजाः समरे सोढुँ तस्य वीर्य मनीश्वराः ।
गजालान परिक्लिष्टै रक्षोटैः सार्धमानता ॥

पारसीक या बनायु-फारस या पारस देश-यहां के घोड़े अच्छे होते हैं अमर मे घोड़ों के नाम मे "पारसीका बनायुजा" लिखा है ॥

मल्लराष्ट्र ।

इस्का दूसरा नाम वल्लीराष्ट्र है-भीमसेन के दिग्विजय के समय हिमालय के नीचे पूर्व की ओर एक मल्लभूमि की कथा लिखी है-परंतु जान पड़ता है कि एरियान ने उत्तर पश्चिम की ओर जो मल्लि लिखा है यह वही होगा-कोई२ कहते हैं यह महाराष्ट्र का दूसरा नाम है ॥

शक ।

हिन्दूकुश पहाड़ से सिन्धु नदी के तट तक-यह अब सीथिया के नाम से प्रसिद्ध है विक्रमादित्य का नाम शकारि भी है विक्रम ने शक जाति के लोगों को युद्ध मे पराजय किया था ॥

माहिष्मती ।

हैहय वंशी राजाओं की राजधानी-पुराणों में इसे दक्षिण में लिखा है महाभारत के उद्योग पर्व मे एक माहिष्मती का नाम आया है बहुत लोगों का विश्वास है कि यह नर्मदा के तट पर है कोई२ इसे माही नदी के तीरवर्ती देश की राजधानी मानते हैं ॥

साशिव ।

इस्का दूसरा नाम ऋषीक है यह देश उत्तर दिशा मे अर्जुन के दिग्विजय में लिखा गया है जिसे जीत अर्जुन यहां से ८ घोड़े लाये थे ॥

बाटधान ।

वायु पुराण के अनुसार उत्तर की ओर है किन्तु नकुल के दिग्विजय प्रसंग में इसे पश्चिम में लिखा है यह काश्मीर के नैऋत्य कोण में है ॥

आभीर ।

पुराणों के अनुसार उत्तर मे है किन्तु भारत और रामायण के अनुसार पश्चिम में है ॥

पल्हव-भारत वर्ष और फारस के बीच का देश सेरुभूत सिन्धु देश का दूसरा नाम-माहेय-माही नदी के पास का देश-दर्वि-अभीर देश के निकट था अर्जुन के दिग्विजय मे इस्का नाम आया है-सुदामा इस नाम का एक पर्वत रामायण के अयोध्या काण्ड में इस्का नाम आया है जो पंजाब या वाहीक देश में है-वातायन-रामायण के अनुसार यह देश बनायु या फारस हैं-रोमा-कदाचित् रोम का राज्य था-मूषिक यह देश कोचीन और ट्रावनकोर है ॥

हस्तिनापुर ।

दिल्ली से ३० कोस ईशान कोण की गंगा तट पर भरत के पुत्र

हस्ती का बसाया हुआ नगर अब उजाड़ एक छोटा सा कस्बा है—इन्द्रप्रस्थ यमुना के तीर हस्तिनापुर के दक्षिण या हरिप्रस्थ या शक्रप्रस्थ भी इसी का नाम है—प्रभास द्वारिका के पास है—कुरुक्षेत्र—पानीपत के पास—प्रमिला—मेवाड़ या उदैपुर का राज्य—बिन्ध्यचूलक—बिन्ध्यपर्बत के दक्षिण का देश ॥

निषध ।

कमाऊं का एक हिस्सा इस्की राजधानी अलकनन्दा पर अलका नाम की थी—किसी २ का मत है कि बिरार से या नलोपाख्यान के नवें अध्याय मे राजा नल ने दमयन्ती को निषध देश का जो मार्ग बतलाया है सो विन्ध्य पर्बत और पयस्विनी नदी के निकट है निषध सात वर्ष पर्बत में भी एक है ॥

वारणावत ।

इलाहाबाद से २० मील पूर्ब की ओर तहसीली हंडिया में लच्छागिर नाम का एक ग्राम गंगा के बांये किनारे पर है—उसी को लाक्षागृह या बारणावत कहते हैं—यहां पर के उजाड़ टीले बारणावत में कौरवों ने पाण्डवों को लाख के घर मे जला देने की जो दुरभिसन्धि की थी उस्की साक्षी दे रहे हैं खोदने से यहां जली राख निकलती है ॥

प्रतिष्ठान ।

चन्द्रबंशी पुरुरवा राजा की राजधानी अब झूंसी इस नाम से प्रसिद्ध इलाहाबाद के सामने गंगा तट पर एक गांव है—अब यहां के उजाड़ टीलों पर फकीरों के रहने योग्य कई एक गुफायें बनी हैं—इसी के सामने गंगा के दहिने किनारे पर सोमेश्वर महादेव के मन्दिर के पास राजा ऐल की पुरानी राजधानी अड़ैल या अरइल गांव है वहां से

आध मील दक्षिण ग्रोरख नाम का एक स्थान महा प्रभु की बैठक के नाम से प्रसिद्ध बल्लभाचार्य के रहने का स्थान है-बल्लभाचार्य का जन्म सम्बत् १५३५ में हुआ है-जान पड़ता है प्रयाग की बस्ती उस समय वहीं थी अकबर ने जब किला बनाया तो अड़ेल को उजाड़ इलाहाबाद बसाया-जो हो झूंसी और अरैल दोनो स्थान प्रयाग की यात्रा करने वालों को देखने योग्य हैं ॥

यवन देश-यूनान-दरद वह देश है जहां से सिन्धु नदी निकली है-खसीर-खासिया पहाड़ जो असाम में है-गिरिगह्वर काबुल से रशिया तक सब देश-आत्रेय दिनाजपुर से आत्रेयी नदी के तटस्थ देश-हूण इन्डो-शीथिया जो पंजाब का एक भाग है इत्यादि अभी और बहुत से देश और बाकी हैं उनका बिवरण फिर लिखैं गे ॥

नदियों का बिवरण।

सरस्वती थानेश्वर के उत्तर पश्चिम दूसरा नाम इस्का कागार या गागार है ॥

बाहुदा-महाभारत में एक जगह इस्का नाम आया है कि यह हिमालय से निकली है वन पर्ब की तीर्थ यात्रा के प्रसंग से इस नाम की दो नदियां लिखी हैं जान पड़ता है उस्में से एक सरस्वती के निकट और दूसरी उस्से पूर्ब की ओर है-हेमचंद्र सूरि ने अपने कोश मे इस्का नाम आर्जुनी और सेत्र बाहिनी लिखा है महानद की एक प्रधान सहायक नदी का नाम धवली या धोली है हेमचन्द्र ने जो नाम लिखा है उस्का अर्थ भी आर्जुनी अर्थात् श्वेतवर्ण वाली नदी है "बलक्षो धवलोऽर्जुनः" इस तरह का सादृश्य देख कर्नेल विलफोर्ड साहब अनु-मान करते हैं कि बाहुदा और महानद एकही है-महानद मालदा से कुछ नीचे उत्तर की ओर गंगा से मिल गई है-यह महानदी वह नहीं है जो कटक से हो बंगाल की खाड़ी मे गिरती है ॥

दृषद्वती—मनु ने दृषद्वती और सरस्वती दो नदियों के बीच के देश को ब्रह्मावर्त लिखा है ॥

सरस्वती दृषद्वत्यो र्देवनद्यो र्यदन्तरम् ।
तं देव निर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते ॥

विलसन साहब अनुमान करते हैं कि यह दृषद्वती यमुना के पश्चिम थी—महाभारत के तीर्थ यात्रा पर्व मे लिखा है :-

दक्षिणेन सरस्वत्या दृषद्वत्युत्तरेण च ।
ये वसन्ति कुरुक्षेत्रे ते वसन्ति त्रिविष्टये ॥

इससे जान पड़ता है यह नदी कुरुक्षेत्र की दक्षिण सीमा थी—उक्त पर्व से यह भी जाना जाता है कि कुरुक्षेत्र मे बहने वाली कौशिकी नदी जहां दृषद्वती से मिली है वह भी एक प्राचीन तीर्थ स्थान है—कर्नल विलफोर्ड के मत से सरस्वती और दृषद्वती दोनो हिमालय से निकल एक मे मिल गईं और उनका नाम कागार पड़ा और नैऋत्य कोण की ओर बहती हुई मरु भूमि में लय हो गईं ॥

चन्द्रभागा—वर्तमान नाम चिनाब—

विपाशा—अब व्यासा के नाम से प्रसिद्ध है—

इरावती—रावी—

वितस्ता—झेलम—

पयस्विनी—विष्णु पुराण के मत से ऋक्ष पर्वत से निकली है परन्तु वायु और कूर्म पुराण के अनुसार विन्ध्य या सतपुरा पहाड़ से निकली है महाभारत मे लिखा है जहां से कृष्णा नदी निकली है वहीं से यह भी निकली है—दूसरे स्थल मे लिखा है यह दण्डकारण्य की सीमा में बहती है इससे इसका उत्पत्ति स्थान और गोदावरी का उत्पत्ति स्थान एकही है जान पड़ता है यह विदर्भ देश के बीच हो बही है युधिष्ठिर इसमे

स्नान के उपरान्त वैदूर्य पर्वत और नर्मदा को गये थे-एक पयस्विनी नाम की अति क्षुद्र नदी चित्रकूट के पास मन्दाकिनी मे मिली है-चित्रकूट की यात्रा करने वाले इन दोनो के सङ्गम मे पिण्डदान करते हैं ॥

देविका वा देवा-वर्तमान घाघरा-

वेदस्मृता औ वेदवती-दोनो पारियात्र पर्वत से निकलती हैं यह दोनो सोन नदी मे कहीं पर मिली हैं ॥

त्रिदिवा-कूर्म पुराण के मत से पारियात्र और वायु पुराण के मत से महेन्द्रगिरि से निकली है-

इक्षुमालिनी-वायु पुराण के मत से महेन्द्र पर्वत से निकली है ॥

धौतपापा-हिमालय से निकलती है ॥

शरावती-वर्तमान वाण गंगा ॥

भीमा या भीमरथी-औरंगाबाद के ज़िले मे है ॥

वीणा-तापी या ताप्ती ॥

सदानीरा-वायु और मत्स्य पुराण के मत से पारियात्र पर्वत से निकली है ॥

विश्वामित्रा-वैदूर्य या बिन्ध्य के दक्षिण से निकली है ॥

तुङ्गवेणा-तुंगभद्रा हैदराबाद के राज्य की उत्तर सीमा पर वह कृष्णा नदी मे मिलती है ॥

विदिशा-मालवा की बेस नदी भिलसा के पास बेतवा मे मिली है ॥

सुवाणा-रामगंगा जो बरैली के पास है ॥

पिच्छला-सोन नदी अमरकण्टक से निकल पूर्व के ओर बह कर पटना के पास गंगा मे मिली है ॥

दुर्गा-मंत्रशिला या अन्तःशिला-दोनो विन्ध्य पर्वत से निकलती हैं ॥

तमसा-टोंस मेजा और करछना स्टेशन के बीच इलाहाबाद से २०

मील पूरब रेल का पुल इसपर बना है बरसात मे बड़े वेग से बहती है और आस पास के गावें को बहा ले जाती है ॥

बरुणा और अस्सी–काशी का नाम बाराणसी इसी से है कि बरुणा और अस्सी के बीच मे बसी है ॥

ब्रह्माणी–कटक के ज़िले मे बह वैतरणी नदी में मिली है ॥

पूर्णाशा–पारियात्र पर्बत से निकली है–दूसरा नाम वर्णाशा है ॥

मन्दाकिनी–इस नाम की दो नदी हैं एक चित्रकूट के पास दूसरी वायु पुराण के अनुसार ऋक्ष पर्वत से निकलती है ॥

वैतरणी–कटक से कुछ दूर आगे समुद्र मे जा मिली है महाभारत मे इसे कलिंग देश की नदी लिखा है ॥

पुनः पुनः–पुनपुना गया के पास है पुण्या भी इस्का नाम है–फल्गू गया मे यह नदी है ॥

करतोया–दिनाजपुर और रंगपुर के ज़िलों में यह नदी बही है–उस प्रान्त का बड़ा तीर्थ है–माघ मे इस्का स्नान किया जाता है–इस्का नांघना शास्त्र मे वर्जित है–गंडकी में पैरने से करतोया के नांघने से कर्मनाशा के जल स्पर्श से और पुण्य के काम को कहने से पुण्य नष्ट हो जाता है ॥

गण्डकी बाहु तरणात्करतोया विलंघनात् ।
कर्मनाशा जलस्पर्शा त्पुण्यक्षरति कीर्तनात् ॥

सुपर्णा–बिहार के ज़िले की एक नदी ॥

शुक्तिमती–सुवर्ण रेखा या स्वर्ण रेखा–मत्स्य पुराण के मत से बिहार मे है ऋक्ष पर्बत से निकलती है ॥

लौहित्य–ब्रह्मपुत्र नद का दूसरा नाम ॥

वेत्रवती–अब इसे बेतवा कहते हैं ॥

चर्मण्वती–चम्बल जो इटावा के पास यमुना में मिली है ॥

अभी और पुण्य नदियों का विवरण और प्रधान २ पर्वतों का विवरण फिर लिखेंगे—हरि मंगल मिश्र ।

हिन्दुस्तान और अंगरेज़ी शिक्षा ।

मनुष्य प्रायः जैसे समाज मे रहता है वैसाही होता है जिन लोगों के बीच वह रहता है जिनके साथ उसे बर्तना पड़ता है उसी तरह का रंग ढंग हो जाता है–फिर भी संभव है कि एकही समाज के दो मनुष्य भिन्न २ प्रकृति के हों यद्यपि उन दोनों की प्रकृति तो भिन्न है पर उनके विचार की शैली एकही होती है और यह शैली जुदे २ देश के लोगों मे जुदी २ तरह की है–जैसा दिल बहलाव के लिये बनाई गई किसी अंगरेज़ी जहाज़ को देख किसी जापानी ने पूछा क्या यह जहाज़ लड़ाई का है–जहाज़ के मालिक ने उत्तर दिया नहीं—फिर उस जापानी ने पूछा तो क्या रोज़गार का है अंगरेज़ ने कहा नहीं—जापानी अचरज में आय कहने लगा तो इन दो कामों के अतिरिक्त संसार में जहाज़ से और क्या कार्य हो सक्ता है–अंगरेज़ ने उसे कितनाही समझाया कि यह जहाज़ दिल बहलाव के लिये है पर वह जापानी कुछ भी न समझ सका—जापानी का यह उदाहरण किसी जंगली मनुष्य के समान नहीं है जो किसी बात को न समझा सके बरन जापानी इन दिनों सभ्यता की सीमा को पहुंचे हुए हैं–इसी तरह पर हवाई द्वीप के मनुष्यों ने उसी जहाज़ के स्वामी से पूछा क्या तुह्मारा जहाज़ आदमियों का चुरानेवाला है अंगरेज़ ने कहा नहीं—तब क्या यहां की वस्तु दूसरी जगह ले जा कर बेचने के लिये है इसके जवाब में भी उसने नाहीं किया इस बात पर वे लोग अचंभे मे आये और यह न समझ सके कि दिल बहलाने को भी जहाज़ें होती हैं–किन्तु वे लोग अक्सर गुलाम बनाय बेचे जाते थे इसी ख्याल से चुराने का प्रश्न किया इससे सिद्ध हुआ कि भिन्न २ देश के लोगों के बिचार की

प्रणाली भिन्न २ होती है ॥

यही दशा इन दिनो हम लोगों की हो रही है अंगरेज़ी शासन मे रह अंगरेज़ों के ढंग की शिक्षा पाय मगन हो अपना अहो भाग्य मान रहे हैं और जो कुछ हमारे शासन कर्ता अच्छा समझते हैं हम भी उसी को अच्छा मानने लगते हैं अपनी विचार शक्ति को स्थान नहीं देते—कम या ज़ियादह जितना हम अंगरेज़ों से अंगरेज़ी शिक्षा पाये हुये लोगों के साथ मिलते जुलते हैं उनके साथ ब्यौहार रखते हैं उतनाही न्यून वा अधिक उनकी सोहबत या उनकी शिक्षा का वैसा असर हम पर देखने में आता है—गौरांग प्रधान देश देखने की यह इच्छा करता है समाज मे प्रचलित नियमों को हानि कारक समझ रोकता है—समाजिक नियम तथा धर्म सम्बन्धी नियमों को अपनी अभिलषित बातों का प्रतिबन्धक समझ उन्हे तोड़ना चाहता है-दूसरों को तोड़ने के लिये उसकाता है देश की कुछ वास्तविक भलाई के लिये नहीं क्योंकि देश की वास्तविक भलाई तभी संभव है जब हम अपनी निज की कुछ हानि उठायें अनेक तरह का क्लेश सहैं बरन इसके लिये कि जो उसको देहाराम सुख चैन आमोद प्रमोद भोग विलास के साथ ज़िन्दगी कटने का ज़रिया या वसीला है उसे वह सर्व साधारण को सबों की भलाई और उन्नति साधन का द्वार या उपाय मानने के लिये अपने साथ दो एक को चेला मूड़ या बिना मूड़े ऊपर कहे हुये धर्म सम्बन्धी या समाज सम्बन्धी नियमो को तोड़ अपनी लालसा पूरा करता है-हमारे नये सुशिक्षित विलाइत जाते हैं काहे के लिये स्वदेशानुराग से नहीं, अपने लोगों की भलाई की इच्छा से नहीं, या उनकी कुछ भलाई सोचने के लिये नहीं, बरन बेरिस्टर होने के लिये-सिविल सरविस या सिविल सर्जन का इमतिहान पास करने के लिये—एक गौरांग लेडी गले बाँध पूरे जेंटिलमेन बन जाने के लिये-तथा उस देश को देखने के निमित्त जिसने इतनी तरक्की की है—उस शहर के देखने को जिस्मे वेस्ट मिनि-स्टर अबी हौस आफ कामन्स, हौस आफ लार्ड, क्रिस्टल पेलस, टेम्स नदी

के नीचे का पुल, जिस्मे रातो दिन गेस की रोशनी हुआ करती है-ये लोग वहां जाकर सचमूच पूरे जेन्टिलमेन हो जाते हैं-विलाइत के साहबोन अंगरेज़ तो कभी को हमारा हित और कल्याण भी सोचते हैं पर ये रातो दिन यही बिचारते रहते हैं कि कुल हिन्दुस्तान को अपने नक्कूटे पन्थ मे लाय उन्हे एक बार विलाइत भेज दें जिसमें कदाचित् वहां के सिविलिनेशन की हवा लगने से इन अन्धों की आंख खुल जाय विलाइत में वर्ष दो वर्ष का रहना उन पर ऐसा असर पैदा करता है कि हिन्दुस्तान का जन्म और हमेशा का यहां का रहना इन्हे भूल जाता है और बे बात की बात बैठे२ सोचा करते हैं कि किस तरह कुल हिन्दुस्तान एक बारगी बदल जाय और उसे न बदलते देख इनके मन में कलक पैदा होती है और होते२ उनको इतना अकिल का अजीरन हो जाता है कि अपना हिन्दुस्तानी होना इन्हे महा अभाग मालूम पड़ता है विलाइत से लैाट ये वहां से सीख क्या आते हैं? शराब पीना और मंहगे से मंहगे होटलों में खाना, कोट पतलून और हैट पहिनना शहर की गन्दी हवा से बचने को बंगलो मे रहना इत्यादि-हम समझते हैं हिन्दुस्तानी बस्ती की मैली और गंदी हवा बह कर ज़रूर इनके बंगलो में घुस कर इनके स्वास्थ्य को बिगाड़ती होगी-क्या करैं बहुत दूर होने के कारण लाचार हैं नहीं तो सहारा के जंगल मे या सैबीरिया के उजाड़ जंगली हिस्सों मे अपना बंगला बनवाने की राय कायम करते जिसमें बेचारों की तनदुरुस्ती तो बनी रहे "एक तनदुरुस्ती हज़ार न्यामत" ॥

ध्यान देने की बात है ये हमारे शुभचिन्तक हैं हम इसे क्योंकर मान लें जब ये हमें अपने से नीच और छोटा मानते हैं हमें अपने सिद्धान्तों के विरोधी मानते हैं हमसे घिनाते हैं तब क्योंकर विस्वास हो कि इन से हमारी कुछ भलाई होगी--मज़हब तो इन लोगों का कोई हई नहीं कभी किसी को कोई मज़हब के पाबन्द होने की श्रद्धा भी चर्राई तो क्रिस्तान हो गये और इनको इसाई मज़हब जेब देता भी

है क्योंकि दूसरा मज़हब न इन्हे पसंद आ सक्ता है न अनेक तरह के धर्म सम्बन्धी संयम इनसे निभ सक्ते हैं-सब से बड़ी बात तो यह है कि जिनकी समाज में ये कान पूछ कटाय दाखिल हुआ चाहते हैं वेभी तो क्रिश्चन हैं-किसी ने सोचा कि बाप दादे कर कुछ नाम निशान बनाये रहैं तो ब्रह्म समाजी या आर्य समाजी हो गये कोई२ थियो-सोफी मे दम भरने लगे पर इन सब ऊपर कहे हुये धर्म में श्रद्धा और बिश्वास हो सो नहीं केवल बनावट और नुमाइश अथवा किसी खास मज़हब की पाबन्दी को भी देश और काल के अनुसार फेशन समझ-अस्तु मज़हब तो इनका कोई नहीं रहता किन्तु चन्दा दै दै विद्या की वृद्धि अलबत्ता चाहते हैं तो गवर्नमेंट इस्के विरुद्ध मे है-इस्मे सन्देह नहीं ५० बर्ष पहिले की अपेक्षा हिन्दुस्तान अब तरक्की पर है धर्म की ओर बिश्वास तो लोगों का कम होता जाता है किन्तु और२ विषयों में यहां के लोग अब कुछ उभड़ चले हैं पर अपनापन खो बहाया और नहीं चाहते कि इनमे किसी बात से हिन्दुस्तानी होने की झलक भी रह जाय-अपने रूप की हानि इनमें बड़ा दोष है दूसरी बात आत्मत्याग का न होना है Self Sacrefice आत्मत्याग की बासना होती तो ये अपने को हिन्दुस्तानी कहते न शरमाते या हिन्दुस्तान की हर एक बात इनको घिन का बाइस न होती और तब इनका बिलाइत जाना भी हम लोगों को न अखरता और ये भी वहां जाय कुछ कर आते पर केवल पढ़ लेने से क्या हो सक्ता है जब तक आत्मदमन चित्त मे जगह न करे-आत्मदमन के बदले अंगरेज़ी शिक्षा और अंगरेज़ी शासन इनमें भोग लिप्सा और तराश खराश को रोज़२ बढ़ाता जाता है और हिन्दुस्तान अपनी पहिली सिधाई और सादापन को छोड़ता जाता है रुपया निकलता जाता है वज़ेदारी तराश खराश बढ़ती जाती है और न जानिये किस हद्द तक बढ़ कर पुरानी इमारत की तरह जीर्ण भारत को सब भांत बिना विदीर्ण किये न रहैगी-एक दूसरी बात

और इनमें पाई जाती है कि अपनापन इन्हो ने अपने पास से यहां तक खो बहाया कि अपनी बुद्धि या बिचार शक्ति को बिल्कुल काम में न लाय जो कुछ बिदेशी लोग कहैं उसे सत्य मान लेते हैं-वही योग विद्या जिसे पहिले हम लोग झूठ और तत्व रहित समझते थे आज बिलाइत की एक स्त्री एनीविसेंट के अनुमोदन से अब उसे सच मानने लगे हैं-पहिले हमारी अकिल कहां चरने चली गई थी और हमें क्यों बिश्वास नहीं होता था कि हमारे पुरषों की निकाली हुई योग विद्या सच है जिसकी प्रशंसा में डाक्टर राजेन्द्र लाल मित्र ने पातंजल दर्शन के योग सूत्र की भूमिका में लिखा है कि योग के सिद्ध होने पर मनुष्य असंभव बातें सहज मे कर लेता है-क्षण भर मे यहां से बिलाइत पहुंच सक्ता है शनैश्चर वृहस्पति आदि ग्रह और ताराओं में पहुंच जाना उसके लिये सहज हो जाता है-जो बात हज़ारों बर्ष मे होने लायक है उसे योगी एक क्षण में कर डालता है-यह विद्या जिसे हम लोगों ने भुला दिया और ऐसा भुला दिया कि झूठ मानने लगे सिद्ध होने पर आधुनिक सभ्यता की सर्वोत्कृष्ट ईजाद तारबर्की इसके मुकाबिले क्या तुच्छ नहीं है? हम यह नहीं कहते कि तारबर्की इत्यादि नई ईजादें तुच्छ और कुछ हई नहीं अवश्य उनके द्वारा हमें बहुत लाभ पहुंचा है किन्तु योग की सिद्धियों के आगे ये ईजादें किस हकीकत मे हैं-इसमें सन्देह नहीं हिन्दू लोग सभ्यता और विद्या के उस छोर तक पहुंच गये थे जिसके लिये इन दिनों यूरप वाले परिश्रम कर रहे हैं और आध्यात्मिक विषयों मे तो इन आर्यों ने अद्भुत शक्ति प्राप्त कर ली थी जिसे ख्याल कर आश्चर्य होता है योग के द्वारा अपने आत्मा को ईश्वर मे लय कर ईश्वरही हो जाते थे और बहुधा ईश्वर के समान सर्व सामर्थिमान् हो गये थे-पर इस हद्द तक सब लोग नहीं पहुंचे थे-केवल हमारे माननीय ऋषि विश्वामित्र ऐसे दो चार इस दरजे तक पहुंचे थे ये महानुभाव ऋषियों ने जिस बात को हमारे हित की समझा उसे धर्म या अवश्य कर्तव्य कर्म मे छोड़ दिया-चाहो जैसी दशा मे हो ऋषि प्रणीत

उन नियमो का पालन अवश्य करता रहै और इन्ही ऋषि प्रणीत नियमों की टट्टी के आड़ मे इधर हाल के स्वार्थी लोभी ब्राह्मणों ने जैसा चाहा वैसा मनमानी गढ़न्त कर ली और हमें सब तरह जकड़ बन्द कर छोड़ दिया—जायगा कहां आखिर रहैगा तो हमारे ही आधीन चाहे जैसी दशा मे हो हमारा टैक्स न देगा तो कुड़की कराय लोटिया थाली तक नीलाम करा लेंगे—अफसोस हमारे खयाल अब कहां तक बिगड़ गये कि जिसे हमारे पूर्वज ऋषि हित की समझ हमारे धर्म और कर्तव्य कर्म मे लिख गये हम अपनी बेअकिली से बिना निर्णय किये कि इसमे कितना ऋषि प्रणीत है और कितना धूर्तों की कल्पना है सब धान बारह पसेरी के रहन पर हिन्दू धर्म के परमोत्तम वसूलों को वाहियात खुराफात कह उसे छोड़ते चले जाते हैं—संसार मे कोई ऐसा मज़हब नहीं है जिसके सिद्धान्त हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों के साथ तुलना मे ठहर सकें किन्तु अफसोस ब्राह्मणों ने लोभ पर वश हो उन सिद्धान्तों को न जानिये कहां छिपा दिया केवल उन्ही बातों को ऊपर रक्खा जिसमे उन्हे भरपूर दक्षिणा मिल सक्ती है—तुम हिन्दुओं की छुआ छूत पर घिनाते हो चौका देके खाना रोज़ नहाके कपड़ा उतार के भोजन को बेअकिली कहते हो, तुमको स्वयं तो इतनी बुद्धि हुई नहीं कि इसके तात्पर्य समझ सको पण्डित लोग निरे पोथी के बेठन ठहरे इस योग्य नहीं हैं कि इस सब का क्या प्रयोजन तुम्हे समझा सकें—विलाइत के तुम्हारे दादा गुरू क्रिस्तान महर्षि मोक्षमूलर ने जब कहा कि हिन्दुओं के चैाका देकर नहा के कपड़ा उतार के खाने से बड़ा साएन्स छिपा हुआ है—तब निर्लज्ज होकर तुम भी कहने लगे हां हां ठीक है हमने भी सनीटरी प्रइमर में ऐसाही पढ़ा है कि ये सब बातें तनदुरुस्ती और स्वास्थ्य की बड़ी उपकारक हैं—हम कहते हैं तुम्हारे पुरखे कौनसा सनिटरी प्रइमर पढ़े थे जो इस सब के प्रयोजन को समझे थे—

हिन्दू ज्योतिषी कहते हैं मंगल ग्रह भूमि का पुत्र है नई रोशनी

के जोश मे भरे हुये सुनते ही चिढ़ उठे और कहने लगे पृथ्वी तो हवा पानी मिट्टी आदि कई जुदे २ तत्वों का (Combination) मेल है और वे जान चीज़ है इसे क्या लड़का होगा-पर जब इन के प्रोफेसरों ने कह सुनाया कि ग्लासगो अबज़रवेटरी वाले कहते हैं कि मंगल मे भी पृथ्वी के समान वृक्ष हैं और बहुत सी और बातों मे पृथ्वी के साथ मंगल का ऐसा मेल है कि जिस्से प्रगट होता है कि लाखों वर्ष पहिले मंगल ग्रह पृथ्वी ही का एक हिस्सा था भचक्र के परिवर्तन से मंगल पृथ्वी से जुदा हो अलग एक दूसरा ग्रह हो गया-तब तो इन की आंख खुली और कहने लगे ओ हो इन पुराने खूसटों की बात तो सच निकली-उनके पास टेलिसकोप दुरबीन न थी वे मंगल को कैसे देख सके जो ऐसे२ सिद्धान्त पुष्ट कर गये कि मंगल पृथ्वी का सुत है-यह हमारे नवशिक्षितों को नहीं मालूम है कि पहिले के आर्यों ने बांस की दुरबीन बनाय ग्रहों की ऐसी२ सूक्ष्म बातें प्रगट की जिसे इन दिनों के सुसभ्य यूरोप वालों ने बड़े२ यंत्र और सूक्ष्म दर्शक दुरबीनों के द्वारा देख कर तब जाना-किन्तु उनकी पुरानी और नीचे दरजे की सभ्यता थी इसलिये त्याग के योग्य है इस समय के लोगों की नूतन सभ्यता है इसलिये यह ऊंचे दरजे की सभ्यता है और सब तरह ग्राह्य और माननीय है ॥

मधुमंगल मिश्र-

कलि महाराज की महा विभूति ।

हर फन मैला हमारे पंच महाराज को बड़े दिन के रोज़ यह सनक सवार हुई कि आज इंगलिश क्वार्टर की चल कर सैर करें-बड़े तड़के तोपों के धमाधम की आवाज़ सुन अपने गुरू भरभंड दास को साथ ले चली तो दिये और वहां पहुंच कुछ अजूबही रंग ढंग देखा-हर एक बंगलों की सजावट देख पंच महाराज के जी में आया कि कवियों ने झख मारने को पुरन्दर के पुर का बहुत कुछ वर्णन किया है-अलका

और नन्दन बन की शोभा इसके सामने सौ हिस्सों मे एक हिस्सा भी नहीं है-शहर के नामी गिरामी रईस और अमीरों की नये२ फैशन की फिटिन और ब्रूहम साहब लोगों के बंगलों पर ठटाठट्ठ देख मन में बड़ी टूट आई और कहने लगे-धत्तेरी बदनसीबी की रांड़ तुझे कोई दूसरा नहीं मिलता था जो तूने हमी को आय सताया नहीं तो हम भी आज ऐसेही फिटिन जोत साहब लोगों से मिलने न आते दुमदार सितारों की तरह हमारे मे भी बड़प्पन की दुम लगी होती-खैर हर एक बंगले सजावट से झकाझक तो थेही किन्तु मिस्टर भरभण्ड दास के गिरजा घर मे सब से अधिक सजावट थी और बड़ी भीड़ जमा थी-उसी भीड़ मे ये दोनो गुरू चेला भी जा डटे बीचोबीच बंगले के व्यास गद्दी की तरह एक ऊंची चैाकी बिछी थी उसपर एक टेबिल रक्खा था जिस पर शाम्पेन हिस्की आदि कीमती शराब और दूसरे पेयद्रव्य सोडा लवेंडर इत्यादि बोतलों में सजे हुए धरे थे-एक उमदा नफीस गिलास भी रक्खा हुआ था टेबिल के चारो ओर कुरसियां बिछी थीं इतने मे एक किसी गैारांग महाशय की इन गुरू चेलों पर नज़र पड़ी और बड़े आदर और ताज़ीम के साथ इन से हाथ मिलाय प्रार्थना की-इस जमात में सिवा आप के और दूसरा कैान है जो सभापति के आसन पर सुशोभित हो और अपने मुखारविन्द की वक्तृता से हमारे कर्ण कुहरों को पवित्र करै-इसलिये हम प्रपोज़ करते हैं कि पंच महाराज आज सभापति के आसन पर सुशोभित हो अपनी वक्तृता से हम सबों को कृतार्थ करैं-पहिले तो पंच जी बहुत सिटपिटाये किन्तु सबों का बहुत कुछ आग्रह देख सभापति की कुरसी पर जा डटे और चिल्लाय२ इस तरह पर लेक्चर देना शुरू किया-सुनो भाई आज हम आप लोगों को इस अवसर पर महाराज कलिराज की महा विभूति का कुछ संक्षिप्त वर्णन सुनाया चाहते हैं आप लोग सावधान और एकाग्र चित्त हो श्रवण करो "श्रोतारः सावधानास्त्वया कथा शृण्वन्तु" द्वापर के अन्त मे

कृष्ण महाराज ने गीता में अपनी महा विभूति का वर्णन अर्जुन से किया था अब कलियुग आ गया इसलिये आज हम आप लोगों को कलिराज की महा विभूति का वर्णन जैसा खीष्ट गीता में किया गया है सुनाते हैं और इस भांत कहने लगे ॥

एक बार इसी शुभ दिन कलिराज अपनी सब सेना समेत एक ऊंचे पर्वत पर जा पधारे और कन्द्रासा मुंह खोल अपने चेलों को अपने स्वरूप का इस तरह परिचय देने लगे—आज हम आप लोगों को अपना पूरा पत देते हैं कि हम कौन हैं और किस्मे क्या हैं-अनेक तरह की चमक दमक और नफासत मे फेशन हमारा रूप है—भाषाओं मे गिट-पिट की भाषा हमी हैं—अक्षरों में ए, बी, सी, डी, हमारा रूप है-अस्त्रों में हम पिस्तौल हैं-धर्मोपदेशकों में पादरी साहब हमी हैं-देवाङ्गनाओं में हम इंगलिश लेडी हैं-काले आदमियों में दोगले के रानी हमी हैं—वेगगामियों में हम स्टीम इंजिन हैं-नदियों में याईन हमारा रूप है—नगरों में हम यूरुशलीम हैं—सुगन्धि द्रव्यों में हम लवेंडर हैं फूलों में वाटरलिली हमारा रूप है—महीनों में हम एप्रिल फूल हैं—घोड़ों में लाट साहब की सवारी का घोड़ा हमी हैं-गदहों में हम धोबी का गदहा हैं-कुत्तों में स्पेनियल हमी हैं प्रबंधकों में हम लंका शायर के जुलाहे हैं—सभाओं में पार्लियामेंट, कमिश्नरों में म्यूनीसिपल कमिश्नर, मेजिसटरेटों में आनरेरी मेजिसटरेट, कचहरियों में खफीफा, ज्वरों में डंगू ज्वर, बिमारियों में हैज़ा हमी हैं-पोशाकों में पन्तलून भांत २ की टोपियों में हैट, किस्म२ के खाद्य व्यंजनों मे बिस्कुट, पेय पदार्थों में सोडावाटर हमी हैं—टिक्कसों में इनकंटैक्स, रोज़गारियों में विलाइत के सौदागर, बनियों में माड़वारी, ब्राह्मणों में तीर्थ के पंडे, ज्ञानियों में अहं ब्रह्मास्मि मानने वाले वेदान्ती हिंदुस्तान को जल्द गारत करने वाली अनेक कुरीतों में बाल्य बिबाह हमाराही रूप है-कहां तक गिनावें जिसमें ज़रा भी अस्त व्यस्त सिवाय बिगाड़ने के बनाने के कोई लक्षण न पाओ वह सब हमाराही रूप है-यह कह कलिराज सब सेना समेत वहां से अन्तर्ध्यान

हो गये-पंच महाराज अपने श्रोताओं से बोले महाराज कलियुग की महा बिभूति को संक्षेप से हम ने तुम से कह सुनाया जो कोई इसको एक बार भी ध्यान दे सुनैगा वह नरक की कड़ी यातना से कभी छुटकारा न पाय चिर काल तक आधि ब्याधि दुःख शोक में पचता हुआ अन्त में कलिराज की सेना का कप्तान बनने का अधिकारी होगा-इसके उपरान्त चारो ओर से ताली पिटने लगी हुट हुट हुर्रे का शब्द सब ओर गुंज गया सब लोग पंच महाराज की पूजा करने लगे-डाली पर डाली आने लगी पंच जी भी गठरी मुठरी बांध बड़े प्रसन्न हो सब के पहले वहां से चल दिये घर आय पंचनी के आगे सब माल धर दिया पंचनी भी खुश हो पुर्सी उछल ताली पीट२ नाचने लगी और पंच को कमासुत समझ तब से उनकी चौगुनी सेवा टहल मे तत्पर हुई-

पंच का सगा भाई एक उजड्ड ।

पुरन्ध्रीणां चित्तं कुसुक सुकुमारंहि भवति-भवभूतिः ।

महा कवि भवभूति ने ऊपर के इस वाक्य को बहुत जांच के लिखा है स्त्रियों के कोमल चित्त में संसार की प्रति दिन की घटनायें जैसा असर पैदा करती हैं वैसा पुरुषों के कट्टर कलेजे मे कहां-बड़ी२ बिषम घटनाओं से भी जिनका जी पिघलाना या पसीजना जानताही नहीं-कवि ने ललनाओं के चित्त की उपमा फूल के साथ दी है फूल जैसा थोड़ा भी घाम या गरमी पाय कुह्मला जाता है वैसाही स्त्रियों का चित्त अणु मात्र क्लेश और बिषम घटना मे बिहबल हो जाता है-सच है दया और सहानुभूति का एक मात्र अवलम्ब येही होती हैं दया और सहानुभूति का भाव बिधाता ने मानो इन्हीं के लिये सृजा है-स्वार्थ लोलुप बल बीर्य मदोद्धत पौरुषेय गुण की दुराग्रही नर जाति को ईश्वर ने पहले सृजा किन्तु प्रेम विश्वास सरलता दया आदि विशिष्ट गुण जो उस जगत्कर्ता की सृष्टि चलाने की प्रधान शक्तियां हैं

यथोचित इसमे न पाय ललनाओं को लज्जा-सिधाई भोलापन दया सहन स्त्रियों मे स्वभाविक है-पुरुषों में पहले तो ये गुण होतेही नहीं हुये भी तो बनावट से खाली न होंगे-पुरुषों मे इन गुणों का होना वैसाही असाधारण बात है जैसा स्त्रियों में प्राबल्य धैर्य निर्भयता नि-ठुराई का होना है इन्ही सब बातों को सोच समझ कवि ने ऊपर के इस वाक्य को कहा और यह उनकी उक्ति उत्तर चरित्र मे स्त्रियों की प्रशंसा मे कही गई है न कि निन्दा पक्ष में ॥

दान का अनूठा क्रम ।

हमारे एकान्त प्रेमी सुजन शिरोमणि निष्कारण दान शील अलवर निवासी पं० राम चन्द्र शर्मा ने अपनी कन्या के बिबाहोत्सव मे भरत-पुर निवासी भट्ट श्री मधुसूदन राजीव लोचन तथा दूसरे २ सज्जनों के अनुमोदन से धर्म सभा और समाचार पत्रों के सहायार्थ कुछ रुपये एकत्र कर वितरण किया है-श्री युत पं० राम दास जी ने इसके समर्थन मे बड़ी अपूर्व युक्ति दी और धर्म सभा के उपदेशक पं० उदय राम जी ने यह सिद्ध कर दिया कि हम लोगों के बिबाहोत्सव में अनेक तरह के अपव्यय होते हैं तब कुछ धन सत्कर्म में भी लगना चाहिये-श्री मान् महाराज कृष्णगढ़ाधीश के प्रधान पण्डित व्यास श्री ब्रज बल्लभ जीने अपनी ओजस्विनी वक्तृता द्वारा ऐसे उचित व्यय की आवश्यकता पुष्ट की तब २०) पं० राम चन्द्र शर्मा ने २०) उनके सम्बन्धी श्री कृष्ण सहाय तथा जय गोपाल जी ने दिये २०) पं० शिव दयालु और कई एक सज्जनों ने दिये-इस एकत्रित रुपयों में १८) धर्म सभा के सहायार्थ दिये गये बाकी रुपयों में २२) हिन्दी प्रदीप के सहायार्थ वितरण किये गये जो धन बच रहा वह कई दूसरे पत्रों की सहायता के लिये दिया गया-उक्त महाशयों के इस दान के क्रम को हम अनूठा इसलिये कहते हैं कि यह क्रम सर्वथा नया है अर्थात् पोथियों में ऐसे दान का कहीं पर

विधान नहीं है-दूसरे यह द्रव्य ऐसे स्थान में दिया गया जहां इसकी बड़ीही आवश्यकता है-बड़े २ धनी लोग जितना असंख्य धन अपव्यय में खर्च करते हैं उस्का शतांश भी इस तरह के धर्म कार्य में लगावें तो विद्या वृद्धि में कितनी सहायता मिले और हम लोग भी यह कभी न कहैं कि "गुण न हिरानो गुण गांहक हिराने हैं" फिर इस तरह के धर्म में लोगों की रुचि तो तब होती जो हिन्दी के शुभ दिन आने की कोई आशा होती-अस्तु पं० राम चन्द्र जी को इस्का अनेक धन्यवाद है ॥

संस्कृत लोकोक्ति — भाषानुवाद सहित ।

बाबू बलदेव प्रसाद वकील फैज़ाबाद की प्रार्थनानुसार मैंने इस ग्रन्थ को चिर काल के परिश्रम में तैयार कर उक्त बाबू साहब के व्यय से छपवाया है-पढ़े लिखे सभ्य लोगों की बोल चाल में बहुत से ऐसे वाक्य या जुमले श्लोक तथा श्लोकों के एक खण्ड काम में लाये जाते हैं जिनका पृथक् संग्रह बहुतही आवश्यक है-यह बात पहले पहल बाबू बलदेव प्रसाद के ध्यान में आई और उन्होने अकारादि क्रम पर कुछ इस तरह के खण्डों का संग्रह कराय मेरे पास भेज दिया मैंने उसे बहुत अधिक विस्तृत कर उन्ही बाबू साहब के व्यय से छपवाय इस पुस्तक को तैयार किया है-अपने काम की अपने मुह से अधिक प्रशंसा शोभा नहीं देती इसलिये मेरे परम मित्र अलवर निवासी पं० रामचन्द्र जी ने एक अपने कृपा पत्र मे जैसा इसकी समालोचना की है उसे मैं यहां पर प्रकाश करता हूं :—

स्वस्ति श्री सदखिल गुण विभूषित विद्वद्वर्य श्री बाल कृष्ण शर्मसु अलवरतो रामचन्द्र कृता प्रणतयः सन्तु शमुभ यत्र अपरंच-आप के संग्रह को देख असीम आनन्द हुआ कारण यह कि प्रथम तो आपने ऐसे श्लोक वा चरण एकत्र किये हैं जो बार्तालाप के समय तथा लेख में प्रायः काम आते हैं बड़े विद्वानो से लेकर मूर्खों तक की बोल चाल

में ये पाये जाते हैं-दूसरे आप ने अकारादि क्रम से इनको संगठित किया यह बहुतही उचित किया-तीसरे उनके भाषा अर्थ लिख देने से केवल भाषा मात्र जानने वालों को भी महा कवियों की सूक्ति का आनन्द आपने अनुभव गोचर करा दिया-अंगरेज़ी मे तो ऐसी पुस्तक मिलती है जिनमे आवश्यकीय वाक्यादि का संग्रह है परंच संस्कृत तथा हिन्दी में ऐसी रचना प्रथम आपही को सूझी-यद्यपि सुभाषितावली प्रभृति बड़े२ संग्रह संस्कृत में विद्यमान हैं किन्तु उनमे एक२ प्रकरण के श्लोक एकत्र किये गये हैं-एवम् केवल भाषा जाननेवालों का उनमे प्रवेश नहीं है-

इस संग्रह से समाचार पत्रों की भाषा तथा लेख बहुत सुन्दर हो जायंगे क्योंकि लेख मात्र में प्रमाण वा उधृत वाक्य Quotations की अपेक्षा होती है-उस समय लेखक यदि प्रमाण वाक्य ढूंढना चाहे तो अपनी इच्छा के अनुकूल इस संग्रह को छोड़ और कहां पा सक्ता है-कदाचित् कोई ऐसी शंका करै कि विद्वानों को ऐसे श्लोक कण्ठस्थ होते हैं वेही सब इस संग्रह में एकत्र कर दिये हैं इससे क्या उपकार हुआ? तो उनको स्मरण रहै कि भारत वर्ष के हिन्दी समाचार पत्र में कितने विद्वानों के लेख मुद्रित होते हैं जिन पण्डित वा शास्त्रियों को ये श्लोक उपस्थित हैं-वे भाषा के लेख लिख कर अपने में लांछन लगाना कब पसन्द करते हैं? पत्रों में तो उनही हिन्दी रसिकों के लेख आते हैं जो यत्किंचित् संस्कृत लिख पढ़ सक्ते हैं-मैं कह सक्ता हूं कि इस संग्रह द्वारा संस्कृत महा कवियों के श्लोकरूपी रत्नो का नमूना संस्कृत ज्ञान हीन उन दीनो को भी आप ने दिखला दिया जिनको प्रकारान्तर से यह आनन्द कभी प्राप्त नहीं हुआ था-आप निश्चय जानिये इस्को पढ़ कर बहुत लोगों को यह अभिलाष हुआ कि हम संस्कृत पढ़ें और अपनी सन्तति को पढ़ावैं क्योंकि संस्कृत भाषा में कैसे२ उत्तम काव्य हैं इस्का चमत्कार उनको पूर्णरूपेण आपके संग्रह के देखनेही से हुआ है-

संस्कृत पठन पाठन मे रुचि होना यह देश का परम सैभाग्य है इस कारण इस संग्रह द्वारा आप देश हितैषी मात्र के धन्यवाद पात्र हैं इसमे कोई सन्देह नहीं कहीं२ अशुद्धि रह गई है आशा है अब के मुद्रण से ठीक हो जायगी—मि० माघ शु० ४ सम्वत् १९५२ ॥

मूल्य इस पुस्तक का डाकव्यय सहित १=) है ॥=) मूल्य गलती से छप गया है—पुस्तक मिलने का पता मुझे लिखने से मिल सक्ती है या फैज़ाबाद मे बाबू बलदेव प्रसाद वकील को लिखने से मिलैगी ॥

रेखा गणित—पांचवां अध्याय।

श्री मान् राय शूद्र सहांय ज़मीदार बखरा ज़िले मुज़फरपुर प्रणीत—रेखा गणित की और अध्यायों का अनुबाद तो हिन्दी में हो चुका है किन्तु पांचवें अध्याय का अब तक नहीं हुआ था—श्री मान् उक्त राय साहब के द्वारा हिन्दी के भण्डार की वृद्धि अवश्य इस पुस्तक से हुई—इस अनुबाद की भाषा बड़ी उत्तम है तथा अक्षर जिसमे यह पुस्तक छपी है बहुतही स्वच्छ टाईप के हैं बांकीपूर खड्ग बिलास प्रेस में बाबू साहब प्रसाद के प्रबन्ध से छपी है मूल्य डाकव्यय सहित ॥।) है ॥

पचदशी।

पं० पीताम्बर जी पुरुषोत्तम जी विरचिता तत्व प्रकाशिका भाषा व्याख्या सहिता मुम्बई मे छप रही है आगे से ग्राहक होने वाले को १०) में पूरा ग्रन्थ मिलैगा—साले महंमदात्मज शरीफ महम्मद के एहतिमाम में छपती है ॥

भाग्य की परख—पहले के आगे से २ अध्याय।

अब हम अपने पढ़ने वालों को कुछ थोड़ा परिचय उस घराने का दिया चाहते हैं जिसमें मदन लाल का जन्म है—मदन लाल के पिता

धनेश राय इस गांव के बड़े नामी मनुष्य थे भोग बिलाश में धन खरचने के उपरान्त जो कुछ बचता उसे इकट्ठा करते जाते और अपने मरने के दिनों तक में बहुत माया जोड़ लिया था-इसने अपने लड़कों के शील स्वभाव को अच्छी तरह परख लिया था और मन में स्थिर कर लिया था कि अपने दानपत्र "वसीयत" में किस्को गांव सौंपै और किस्को नगदी दे जांय-इस कहावत के अनुसार "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" बड़े लड़के मदन लाल की ओर बहुत कुछ इस्की झुकावट थी-मदन लाल को लड़कपनेही से रोज़गार करने का बड़ा शौक था कई एक बड़े २ शहरों में इसने कंपनी खोली निज परिश्रम और व्यय से व्यौपार में बहुत कुछ लाभ इस्को हो चुका था-रुपयों के बढ़ाने और कायम रखने की पूरी योग्यता इस्में पाय बाप ने भी नगदी सब इसी को सौंपा जिसे पाय यह बड़ाही प्रसन्न हुआ और व्यौपार की ओर इस्का चौगुना उत्साह बढ़ा यहां तक कि इस समय के प्रसिद्ध और नामी रोज़गारियों में यह सबों का मुखिया समझा जाने लगा॥

धनेश राय के दूसरे लड़के का नाम श्रीपति लाल था उस्की भी प्रत्यक्ष में रोजगार की ओर झुकावट थी किन्तु देश२घूम हर एक चीज़ों के देखने की इस्को बहुतही लालसा थी और अपने हिस्से से जहाज़ के रोज़गार पर इस्का ध्यान गया पैतृक धन जो कुछ इस्को मिला उससे कलकत्ते में जाय जहाज़ तैयार कर लंका की ओर व्योपार करने को चल दिया किन्तु जब से गया किसी को कुछ पता न रहा कि यह कहां है और क्या कर रहा है-घरवालों को पूरा विश्वास हो गया कि यह समुद्र में कहीं डूब गया॥

सिवाय दो लड़कों के धनेश राय के दो लड़कियां भी थीं जिनका नाम सरला और बिमला था इन दोनो का पास पास एकही गांव में इसने बड़ी धूम धाम से ब्याह किया और खूब दहेज दिया-इस तरह

परलोक बासी धनेश राय के दो लड़के और दोही लड़कियां थी और अपनी गद्दी पर यह मदन लाल को बैठा गया जिस्को अब हम इस बड़े गांव का अधिकारी पाते हैं जो हमारे इस उपन्यास की रूपवती नायिका का बाप है ॥

मदन लाल को बाप की गद्दी पर बैठे बहुत दिन हो गये थे अपने भाई और बहिनों से जन्म भर मे केवल दो चार चिट्ठी पत्री के मेल के सिवा और किसी तरह का सरोकार आपस मे किसी को किसी से न रहा— मदन लाल अपने कामो मे ऐसा फसा था कि उस्को इतना समय नहीं था कि इतनी दूर की सफर कर अपने भाई से कलकत्ते में जा मिलता— हमारे पाठकों को याद रहे कि इस समय यह अब का कलकत्ता नहीं है कि रेल के कारण खाओ यहां और अचवो वहां जाकर—अब रहीं दो बहिनें उनको अपनी नातेदारी जनाने की कोई फिकिर न थी न उनको यह घमण्ड था कि हमारे भाई बड़े नामी गिरामी ज़मीदार और रोज़गारी हैं-यही कारण है कि मदन लाल सब से फिरंट रहे और धनेश राय के परिवार के जितने लोग थे सब एक दूसरे से अलग थे और किसी को एक दूसरे के मरने जीने तक की कुछ खबर न थी—इस तरह पर थोड़ा सा वृत्तान्त मदन लाल के घराने का दे हम अब अपने किस्से के सिलसिले को उठाते हैं ॥

इस रोगी को ऐश्वर्य महल मे आये एक महीना बीत गया इस्को बड़ी कड़ी बीमारी थी किन्तु अब वह चंगा होने लगा और इस्का चंगा होना अधिकतर मायावती की सेवा टहल का कारण था—पर यह रोगी इस दयावन्त लड़की को धन्यवाद देना तो एक ओर रहा बरन अपने चिड़चिड़े कड़े बदमिजाज़ का पूरा परिचय दे मानो इस बात को सिद्ध कर दिया कि किसी के किये उपकार का बदला चुकाने या किये उपकार का धन्यवाद देने मे भी यह कहां तक निपट अनारी है—इस बुड्ढे को बीमारी की हालत मे जो कुछ इच्छा होती उसे यह

लड़की तुरन्त पूरा कर देती ज़रा भी देर होती तो अत्यन्त उदास बड़ी रुखाई से पेश आता था—मायावती इस्की बदमिज़ाजी और अकृतज्ञता पर खीझ उठती थी सही पर अपनी भीतरी मनशा बुड्ढे को नहीं प्रगट होने देती थी और इस्की सेवा टहल मे वैसही बिनीत नम्र मृदु और शालीन बनी रही ॥

इस रोगी का नाम आशा राम था इस्में संदेह नहीं स्वभाव का तो यह कड़ा था पर चरित्र का शुद्ध और धर्मात्मा था—कड़ाई और बदमिज़ाजी के कारण कुछ थोड़ीसी ऐसी बातें इसमें थीं कि यदि किसी दूसरे आदमी से इस्का सरोकार हो जाता जैसा मदन लाल और उसकी लड़की मायावती से हो गया था तो वह तुरंतही इस्से अपना पिण्ड छुड़ाता—बीमारी के पहले सप्ताह में यह प्रलाप ज्वर में पीड़ित था और उसी प्रलाप में बहुतसी खेद जनक असंगत बातें जो यह किये था बक उठता था और कभी २ अत्यन्त व्यग्र और दोचित्ता हो उन असंगत बातों के लिये यह अपने को धिक्कारने लगता था—मायावती प्रलाप की असंगत बातें पलंग के पास बैठी जब सुनती तो डर जाती थी—पहले तो यह इसके प्रलाप और ज्वर के दूर करने की बहुतसी तदबीरें की जब कम न हुआ तो इस ने अपने बाप मदन लाल से जा कहा और मदन लाल खुद आप मायावती के एवज़ वहाँ रहने लगा—यह जब इस रोगी के आत्मदोष की अनेक बातें सुनता तो भयभीत हो अचरज में आता और यह सब केवल प्रलाप न था बल्कि बीती हुई घटनाओं का ठीक २ स्मरण और कथन था—किन्तु वैद्यराज ने इसका यही निदान सिद्ध किया कि एक तो यह बूढ़ा है दूसरे ज्वर का प्रकोप है उसी ज्वर की तेज़ी में यह आंय बांय बक रहा है—जब कभी इस्का प्रलाप और ज्वर कम होता तो तकिया के नीचे हाथ छोड़ उस किताब को देख लेता कि है या नहीं—एक बार तीव्र ज्वर के सन्ताप में हांफने इसके इधर उधर करवट लेने और हाथ पांव पटकने से वह कि-

ताय तकिया के नीचे थोड़ा खसक आई और उसे न पाय यह बड़ी निठुराई और रुखाई से मायावती का अपमान कर बोला यह काम इसी का है–यह पहली दफा था कि यह बालिका क्रोध में भर तिउरी चढ़ाय इस बूढ़े को बड़ी अवज्ञा के साथ देखने लगी और मुख से तो कुछ न कहा पर आंख मे आंसू भर आये पीछे किताब को उसी तकिया के नीचे पाय यह बहुतही शरमाया और पछताने लगा ॥

ज्योंही ज्वर ने इसे छोड़ा और चंगा होने लगा कि इस्की इच्छा हुई मै अब एासही विन्ध्य क्षेत्र मे जा रहूं और इसी के लिये उसने विन्ध्यवासिनी के पुजेरी को बुला भेजा और पुजेरी जब आया तो मायावती को इसने वहां से हटा दिया और घंटों तक उससे बात चीत करता रहा–दो एक दिन के उपरान्त इस्की तबियत कुछ और अच्छी होने लगी इस कारण विन्ध्य क्षेत्र का जाना उसने मुलतवी रक्खा पर वह पुजेरी सप्ताह मे कई बार इस्के पास फेरा करता और जब यह आता तो इन दोनो की घड़ियों तक गुप्त बात चीत हुआ करती और दोनो मिल क्या सलाह करते किसी को मालूम नहीं होता था–इस बुड्ढे की प्राकृतिक रुखाई साधारण बोल चाल से जान लेना सहज न था–कोई कैसाही रूखी तबियत का और बदमिज़ाज़ हो एक साथ बहुत दिनो तक रहने से कुछ न कुछ जी मिली जाता है और वह मनुष्य चाहे किसी बाहरी आदमी के साथ रुखाई और कड़ाई करे किन्तु जिस्से एगानगी हो जाती है उस्के साथ मुलाइमीयत का बर्ताव हो ही आता है–यह बुड्ढा चिरचिरा और बदमिजाज़ तो था किन्तु इस लड़की की सेवा टहल से इसपर बहुतही प्रसन्न था और जी से इस्का एहसान मानता था–एक दिन यह बैठा हुआ मायावती के साथ और बहुत सी इधर उधर की बात करने के उपरान्त अपना हाल कहने लगा–मैं बहुत दिनो तक कलकत्ते मे रहा मुझे देश देखने की बड़ी लालसा बढ़ी इसलिये मैं वहां से चल कई शहरों मे घूमता हुआ यहां

आ पहुंचा यहां मुझे अपस्मार रोग ने ऐसा सताया कि मैं मृतक प्रायः हो गया मुझे कुछ याद नहीं कि मै यहां किस तरह आया और मेरे चंगा होने के लिये क्या२ उपाय की गई-यहां पर इतना सूचित करा देना आवश्यक जान पडता है कि ऐश्वर्य महल मे आने के थोड़े दिन बाद एक छोटी सी सन्दूक भी जिस्मे पहनने के थोड़े कपड़े और कागद का एक पुलिन्दा था उस्के पास दिखाई देने लगी-यहां आये उसे एक महीने के ऊपर हो गया था और अब यह बिलकुल चंगा हो गया-मायावती और मदन लाल दोनो के चित्त में कुछ खटक तो हो गई कि यह किसी बुरे काम का अपराधी है किसी खास जुर्म में फस न जाय इसलिये भागा है तो भी बीमार समझ इस पर दया आई और सब तरह का तरद्दुद अपने ऊपर ओढ़ इसे टिकाया और चंगा किया किन्तु अब मदन लाल के मन में आया कि अब इसका यहां से चला जाना उत्तम होगा-बूढ़ा इसके मन की यह बात जान बोला मैं आप की दान शीलता का बड़ा उपकृत हूं और अब दूसरे महीने में मैं आप को बोझ न हूंगा किन्तु अपना भार मैं अपने ऊपर लेता हूं शरीर में पूरी तरह बल आ जाय तब मैं यहां से यात्रा करूं-इस पर मदन लाल सोचने लगा और हां या नाहीं कुछ उत्तर न दिया-तब यह फिर बोला-मैं आप के मन की बात जान गया आप समझते होंगे मैं कोई बड़ा अपराधी हूं निःसन्देह मैं अपराधी हूं किन्तु मेरा अपराध उस तरह का नहीं है जिस्से मेरे टिकाने से तुम पर किसी तरह का क्लेश आ पड़े-मैने किसी का बध नहीं किया, चोरी नहीं की, अपने किसी परोसी को दुख नहीं दिया, झूठी गवाही नहीं दिया, न मैने किसी स्त्री का सतीत्व भंग किया, जो कुछ अपराध मैंने किया अपने ही लिये किया और वह मेरे और घट२ व्यापी उस परमात्मा के बीच तै होगा यदि हमारा विश्वास आप को न हो तो विन्ध्य वासिनी के उस पुजेरी से मेरा विशेष वृत्तान्त पूछ लो वह सब सच्चा हाल मेरा तुम से कह देगा ॥

इसपर मदन लाल बोला बहुत अच्छा मेरी इस झोपड़ी को तुम अपनाही घर समझो जितने दिन जी चाहे आप सुख से यहां रहैं-आशा राम ने इस्का उसे अनेक धन्यवाद दिया और अलग एक निराले कमरे मे वहां रहने लगा॥

एक दिन मदन लाल मायावती के साथ अपनी पाईं बाग मे टहलता हुआ बोला मैंने अपने पाहुन की उस दिन की बात का कुछ मतलब न समझा-इस बात का तो मुझे निःसन्देह बड़ा हर्ष है कि उसने अपने मनकी बात मुझ से खुल के कहा और आदमी को संसार में बदनाम और अंगुल्या निर्देश के योग्य करने को जितने पाप हैं सब गिना गया अब और कौनसा पाप बच रहा जिस्का दोषी हम उसे समझैं-मायावती बोली कदाचित् उस्का अपराध कुछ इस तरह का है कि वह कोई ओछा काम कर बैठा है या किसी से कुछ प्रण कर उसे पूरा न कर सका या किसी की आज्ञा का उल्लंघन किया हो-(सामने असतबल मे रमण लाल को देख) ओ हो रमण लाल घुड़साल के एक२ टट्टुओं को क्या ही एक नये अन्दाज़ से निरख२ सईसों को घुड़साल की सफाई के लिये शिक्षा दे रहा है निःसन्देह ऐसे चतुर और आज्ञाकारी लड़के बहुत कम देखे जाते हैं-क्यों मायावती तुम रमण लाल को कैसा समझती हो॥

मायावती अपने मन मे बड़ी देर तक सोचती रही कि पिता जी आज हम से ऐसा सवाल क्यों पूछते हैं-बोली पिता जी मैं उसे अच्छा न समझती तो उस्के साथ ऐसा बर्ताव मैं न रखती जैसा रख रही हूं॥

मदन लाल बोला यह कभी मत सोचो रमण लाल केवल १८ वर्ष का बालक है निश्चय मैं अपने को बड़ा भाग्यमान समझता हूं कि मैं उस्के प्रतिपालन योग्य हूं यह बड़ाही सुशील बालक है बेटी हमारे बाद तुम दोनो बड़ी प्रसन्नता पूर्वक रहोगे-मदन लाल की ये बातें सुन इसने अपने सरसिज नेत्रों को उस्की ओर से हटाय लाज ने भर

सिर नीचा कर लिया ॥

मदन लाल फिर बोला बेटी तुम को इस लड़के से अवश्य सुख मिलैगा—हमारी बहिन बिमला और सरला, जो अब इस असार संसार से कूच कर गईं ईश्वर उनके आत्मा का कल्याण करे ऐसे को व्याही गई थीं कि सुख से अपना जीवन पार न कर सकी इसमे सन्देह नहीं स्त्रियों का सुख दुख उसी के आधीन है जिसने हाथ पकड़ा है—मैं कह सक्ता हूं रमण लाल यदि अधिक न कमाय गा तो तुम्हारी निज की पूंजी मे वह कभी हाथ न डाले गा—मायावती चलते२ थोड़ा ठिठक गई और अपने पिता की ये बातें सुन रमण लाल को उसने अपने को समर्पण कर दिया और इस फिकिर में हुई कि रमण लाल को परखना चाहिये कि उस्का प्रेम भी हमारी ओर है या नहीं ॥

३ अध्याय ।

अब आशा राम ऐसा चंगा हो गया कि नित्य मदन लाल माया-वती और रमण लाल के साथ पतित पावनी श्री गंगा में स्नान और विन्ध्य वासिनी के दर्शन को जाने लगा मायावती इस बुड्ढे के पास बहुत दिनों तक रही बड़े२ तिहवारों के बीत जाने पर भी यह सदा वही मैला कुचैला कपड़ा पहने इसे देखता रहा—एक दिन जब इसने इसे साफ सुथरे कपड़े पहने देखा तो एक ऐसी सूरत बनाय अचरज से इस्की ओर ताकने लगा कि यह बालिका शर्मा गई—कपड़े कोई बड़े दाम के न थे किन्तु यह उन्हे ऐसे अन्दाज़ और शऊर के साथ पहने थी कि यह इस्के एक२ अंग की शोभा को सैागुना बढ़ा रहे थे सच है

किमिवहिमधुराणां मण्डनंनाकृतीनाम् ।

मायावती का वेश भूषा देख आशा राम भीतर से तो बड़ा प्रसन्न

हुआ किन्तु ऊपर से कुछ ऐसा मुह बनाया मानो यह सब उसे बिल्कुल न सपन्द है ॥

एक दिन मदन लाल और रमण लाल कहीं बाहर गये थे मायावती घर केकामो से छुट्टी पाय दोपहर के समय कमरे की खिड़की पर बैठी बाग की शोभा निरखती हुई कसीदा काढ़ रही थी इसी समय आशा राम काले रंग की एक छोटी सी सन्दूक हाथ मे लिये वहां आया एक कुरसी पर बैठ गया और मायावती से कहने लगा आज तुम वैसा साफ और सुन्दर कपड़ा नहीं पहने हो जैसा उस दिन पहना था—यह बोली उस दिन मेरे पिता जी की साल गिरह थी हम सबों को बड़ी प्रसन्नता का वह दिन था—आशा राम बड़े धीमे स्वर से फिर बोला—बेटी तुमने मेरे लिये बड़ा क्लेश सहा मैं तुम्हारा बड़ा उपकृत हूं जो कुछ दया तुमने मुझ पर की उसे मैं कभी न भूलूंगा—लो यह मैं तुम्हारे लिये लाया हूं इतना कह सन्दूक की कील दबा दिया और सन्दूक का पल्ला उठ गया पल्ला के खुलतेही आंख मे चकाचौंधी आगई जिसे देख मायावती बड़ी प्रसन्न हुई और बनाने वाले की तारीफ करने लगी—उसमे एक जड़ाऊ हार था बीच से जिस्के मछली का सिर बना था पोख-राज नीलम और हीरे जड़े हुये पिच्चीकारी के काम का वह हार था—एक जोड़ा करनफूल जो ठीक मायावती के कानो के लायक था एक जोड़ हीरे की अंगूठी और एक जोड़ जड़ाऊ चूरियां थीं—मायावती इन गहनो की चमक से अत्यन्त मोहित होगई—बेटी इन्हे मेरे प्यार का चिन्ह समझ ग्रहण करो ॥

मायावती बोली आशा राम जी मैं इतने भारी पुरस्कार के योग्य नहीं हूं मैने आप की सेवा टहल मे इतना परिश्रम नहीं किया जिस्का बदला आप इतने बहु मूल्य आभूषणों के द्वारा चुकावैं—यह बोला मायावती तुम इसे स्वीकार करने मे बिल्कुल आगा पीछा मत करो यह तुम्हारी और मेरे प्यार का एक छोटासा चिन्ह है तुम ने जो कुछ

मेरे साथ किया उस्के बदले मे मैं तुझे यह देता हूं इस बात को जी में लाना हलकई और छिछोरपन है—यह लड़की बड़ी देर तक सन्देह मे पड़ी रही कि इस सन्दूक को लूं या न लूं अन्त में बड़ी देर के बाद इस्के मुह से निकली तो गया नहीं मैं इसे न लूंगी ये सब बड़े दाम के गहने परम सुन्दरी शहर की रहनेवाली बड़े घर की बेटी बहू के योग्य हैं मैं तो गांव की रहनेवाली एक छोटे से ज़िमीदार की कन्या हूं मेरे योग्य ये बहु मूल्य आभूषण नहीं हैं—यहां गांव में खेतिहरों के बीच इन गहनो को पहिन मैं किसे दिखाऊंगी—हमारे पाठकों को स्मरण रहे कि यह हमारी नायिका नगर की रूपगर्विता नायिकाओं में सौन्दर्य मे किसी से कम न थी बरन भांत२ के गहने और कपड़ों से जो अपना सुन्दरापा बढ़ाना चाहती हैं उन पर यह हंसती थी—इसे इस बात का घमण्ड था कि गहने कपड़े सुन्दरापा बढ़ाने को वैसेही हैं जैसा बिन पूंजी का व्योहार—रूप के बनिज में यह अपने को सबों से चढ़ी बढ़ी माने हुई थी किन्तु शालीनता के कारण अपने मन के भाव को छिपाती हुई फिर बोली—आशा राम जी मैं समझती हूं इन गहनों के लेने से इनकार करने पर आप मुझसे नाराज़ न होंगे—दूसरे यह कि मैं अपने पिता जी के आधीन हूं—उन से बिना पूंछे और उनकी आज्ञा बिना पाये कैसे ले सक्ती हूं—कुलवन्तियों का गौरव और उनकी स्थिति तथा रहन सहन संसार की चलन के अनुसार कुछ ऐसा नाज़ुक है कि अणु मात्र चंचलता और स्वच्छन्दाचार से उस्मे धब्बा लग जाते देर नहीं होती—आशा राम को कुछ क्रोध तो आया किन्तु आभूषणों के अस्वीकार का उचित बहाना जान कुछ न बोला सन्दूक उससे लौटाय वहां से चल दिया और मायावती के गांभीर्य और शालीनता की उसे भरपूर परख हो गई—शेष ॥

महा कवि दामोदर गुप्त ।

इस महा कवि का कोई नाम भी न जानता होगा सम्पादक

काव्य माला को धन्यवाद है जिनकी कृपा से ऐसे२ उत्तम कवि की सूक्ति का सुधा पान हमे प्राप्त हुआ—क्षेमेन्द्र दामोदर प्रभृति की उत्तम रचना अब तक हमलोगें की दृष्टि पथ से सर्वथा अन्तर्हित रही—स्वर्गवासी जैपुरस्थ पं० दुर्गा प्रसाद जी ने काव्यमाला से उन२ कवियों की रचना का प्रकाश कर ऐसे२ उत्तम काव्यों का उद्धार किया है—ऐसे सुयोग्य गौरवास्पद विद्वान् इस समय भारत वर्ष मे बहुत कम हैं केवल पेट पूजने वाले स्वार्थ लोलुप काशी इत्यादि स्थानो के पण्डितों का क्रम देख यही कहा जा सक्ता है कि निरी घुणाक्षर न्याय से ऐसे लोग हमारी पतित समाज मे पैदा हो गये—अस्तु इस कवि ने अपने को गुप्त लिखा है इस्से प्रगट होता है यह जाति के वैश्य थे और काश्मीर मण्डल के नरपति महाराज जयापीड़ के प्रधान मंत्री थे—यद्यपि जयापीड़ स्वयं पण्डित था जिस्की विद्वत्ता की प्रशंसा मे राज तरंगिणी नामक इतिहास ग्रन्थ में यह श्लोक दिया गया है ॥

क्षीराभिधाच्छब्दविद्योपाध्यायात्संभृतश्रुतः ।
बुधैः सहययौ वृद्धिं सजयापीड़ पण्डितः ॥

तथापि इसने सब पण्डितों के बीच से दामोदर ही को अपना प्रधान मंत्री किया ॥

सदामोदर गुप्ताख्यं कुट्टनी मत कारिणम् ।
कविं कविं बलिर्विधुर्यधीसचिवं व्यध्यात् ॥

इस्से दामोदर गुप्त की सर्वोत्कर्षता मे अब कोई सन्देह न रहा—दामोदर गुप्त के सम कालीन और जयापीड़ की सभा के आभूषण कवि और पण्डितों का नाम राजतरंगिणी के एक श्लोक मे इस तरह पर संग्रहीत है ॥

मनोरथः शंखदत्तश्चटकः सन्धिमांस्तथा ।

बभूवुः कवयस्तस्य वामनाद्यश्च मंत्रिणः ॥

जयापीड़ ईस्वी सन् ७५५ से ७८६ तक राज करता रहा वही समय इस कवि का माना जा सक्ता है–सिवा कुट्टनी मत के और कोई ग्रन्थ दामोदर गुप्त का नहीं देखने मे आता सो भी समाप्त नहीं है बरन ९२७ आर्या काव्यमाला मे इस ग्रन्थ की छपी हैं–लोग हसैंगे कि बुढ़ौती मे इसे कुट्टनी मत पढ़ने का शौक चर्राया है किन्तु क्या किया जाय कुछ ऐसी सरस और मनोहर कविता इस ग्रन्थ की है कि बार२ इसे पढ़ने पर भी तृप्ति नहीं होती–दूसरे यह कि कुट्टनी मत पढ़ने से अच्छी तरह मालूम होता है कि कश्मीरी कहां तक विषयासक्त कुचरित्र काम लोलुप और दुराचारी थे–सिवा इस्के उनकी रहन सहन रीत बर्ताव चाल चलन उस समय कैसी थी इस्का पूरा पता भी कवि के लेख से लग जाता है–लालित्य और प्रसाद गुण में यह कवि कालिदास और दण्डी से किसी अंश मे कम नहीं है–"दण्डिनः पद लालित्यम्" वही कह सक्ता है जिसने दामोदर गुप्त के काव्य को नहीं पढ़ा–इस्की कविता पुरानी और प्रमाणिक यहां तक है कि मम्मट भट्ट ने काव्य प्रकाश में कुट्टनी मत के श्लोक को अलंकारों के उदाहरण में दिया है–और गुण दोष निरूपण मे अपने पहिले के कवियों में कोई नहीं बचे जिनके लेख में कुछ न कुछ दोष न निकाला हो पर दामोदर के काव्य में कहीं पर दोष नहीं निकाला प्रत्युत परमोत्तम समझ उदाहरण मे अलबत्ता उठाया है–एक श्लोक इस्का अनुप्रास अलंकार के उदाहरण मे इस तरह पर है ॥

अपसारय घनसारं कुरु हारं दूर एव किं कमलैः ।
अलमल मालि मृडालै रिति रुदति दिवानिशं वाला ॥

मुसल्मानो के राज्य के पहिले से भी काश्मीर मे यवन और पश्चिम के मोगल और तुरुक इत्यादि जाति के लोगों से घिष्ट पिष्ट बहुत दिनों

से थी इसे दामोदर ने कुट्टनी मत में कई ठौर दिखलाया है तातार के लोगों को तुरुक और मुगलों की गन्धर्व लिखा है काशी के वर्णन मे "तुरुष्क सेनेव बहुल गन्धर्बा" ऐसा पद दिया गया है-कुट्टनी मत में कथानक का आरंभ इस तरह पर किया है—पहिले काशी का वर्णन बड़ी उत्कृष्ट कविता मे कर वहां की मालती नाम की एक वेश्या एक दिन अपने कोठे पर बैठी किसी को गाते हुये यह आर्या सुना ॥

यौवन सौन्दर्य मदं दूरेणापास्य वारवनिताभिः ।
यत्नेन वेदितव्याः कामुकहृदयार्जनोपायाः ॥

वेश्याओं को तरुणाई में अपने सौन्दर्य के अभिमान को दूर हटाय कामी के मन को काबू में कर लेने की उपाय यत्न पूर्बक जानना चाहिये—बस यही आर्या इस ग्रन्थ की मानो भूमिका है इसी को प्रसंग में रख कामियों को वेश्यायें किस२ ढंग से लुभाती हैं और सर्वस्व उनका छीन उन्हे क्रीत दास कर लेती हैं इन्ही सब बातों का वर्णन वेश्यासक्त पुरुषों की जीट उड़ाते बड़ी धूम धाम की कविता में दामोदर गुप्त ने किया है-मालती ने बिकराला नाम की वृद्ध कुट्टनी से कामियों को बस करने की उपाय पूछा है और बिकराला ने बड़े आडम्बर के साथ उसे कहा है-प्रसंग से काव्य के जितने अंग हैं क्रम२ नवो रस के द्वारा तथा जितनी तरह की नायिका विदग्धा ज्ञात यौवना अज्ञात यौवना आदि और धीर ललित प्रशान्त आदि जितने तरह के नायक काव्य में वर्णन किये जाते हैं सबों का स्वरूप इसमे कवि ने दिखलाया है—जैसा हास्य रस को बिकराला के स्वरूप बर्णन में बहुत अच्छा लिखा है तद्यथा—

अथविरलोन्नतदशनां निम्नहनुं स्थूलचिपिटनासाग्राम् ।
कतिपयपाण्डुरचिकुरां प्रकटित शिरा सन्ततायत ग्रीवाम् ॥

सितधौत वसन युगलां विविधौषधि मणिसनाथ गल सूत्राम् ।
तन्वीमंगुलिमूले तपनीयमयीं च वालिकां दधतीम् ॥
गणिकागण परिकरितां कामिजनोपायन प्रसक्त दृशम् ।
वेत्रासनोपसीनां विलोकयामास विकरालाम् ॥

इत्यादि-विशेष क्या लिखें काव्य रसिक संस्कृतज्ञ को इसमे अनोखा रस मिलता है और वेश्या लंपटों के चरित्र का भरपूर परिचय हो जाता है-उदाहरण के लिये थोड़े से श्लोक लम्पटों के चरित्र के यहां पर उध्धृत करते हैं जिसे मालती ने बिकराला की इस विषय मे बुद्धि वैभव की प्रशंसा मे कहा है -

उपसंहृतान्यकर्मा धनवर्मा नर्मदांघ्रि युगलस्य ।
सकलसमर्पितसंपद्यदुपेतःपादपीठत्वम् ॥
यदुपगतोनयदन्तःसागरदत्तस्यमध्यमःपुत्रः ।
प्रीणाति मदनसेनां विधाय पितृमन्दिरं रिक्तम् ॥
यल्लीलार्पितचरणौ मंजर्या भट्टपुत्रनरसिंहः ।
परितोषं व्रजति परं मृदु मृद्नन्पाणियुग्मेन ॥
यन्निःशेषितविभवो दीक्षितभवदेवपुत्रशुभदेवः ।
निर्भत्सितोऽपिनोज्झति केशवसेनागृहद्वारम् ॥
अन्या अपिकामिजनं साधारणयोषितोयदाक्रम्य ।
विदधति कर्पटशेषं विलसितमेतत्तवोपदेशानाम् ॥

यद्यपि क्षेमेन्द्र ने भी समय मात्रिका मे इसी तरह का वर्णन किया है पर इसके समान अद्भुत और मन का आकर्षण करने वाला वह नहीं है-एक जगह जारिणी स्त्रियों का स्वरूप और उनके वेश भूषा

की रचना का क्रम बड़ी मनोहर कविता में दर्साया है ॥

यासां जघनावरणं परकौतुकवृद्धये नतुत्रपया ।
उज्वलवेशारचना कामिजनाकृष्टये नतुस्थितये ॥
रागोधरे न चेतसि सरलत्वं भुजलतासु नप्रकृतौ ।
कुचभारेषुसमुन्नति राचरणे नाभिनन्दिते सद्भिः ॥
जघनस्थलेषु गौरव माकृष्टधनेषु नाकुलीनेषु ।
अलसत्वं गमनविधौ नोमानववंचनाभियोगेषु ॥

इत्यादि-कहां तक लिखें हमारे पढ़ने वालों को कवि की प्रौढ़ और उत्कर्ष कविता की टटोल इतनेही से अच्छी तरह हो सक्ती है-लाचारी है निरी भाषा जानने वालों को इस्का स्वाद नहीं मिल सक्ता थोड़े से श्लोक पुरन्दर ने वेश्या लम्पट अपने मित्र सुन्दर को उसी राह पर लाने को पत्र द्वारा लिखे हैं उसे भी यहां हम उध्रित करते हैं जिस्से मालूम हो सक्ता है कि कैसा अनोखा तर्ज़ इस कवि के लेख का है ॥

विफलं शास्त्रज्ञानं गुरुगृहसेवापिनोपकाराय ।
नियतवशीकृतमनसो न्यायं पन्थानमुत्सृजतः ॥

होनहार के वश मे पड़ उचित मार्ग से भटके हुये को शास्त्र का ज्ञान विफल है गुरु के घर में वास कर चिरकाल तक विद्याभ्यास के लिये भी परिश्रम उसको कुछ उपकार का नहीं है-

जीवन्नेवमृतोसौ यस्य जनो बीक्ष्य बदनमन्योन्यम् ।
कृतमुखभंगो दूरात्करोति निर्देशमंगुल्या ॥

वह जीवतेही मृतक तुल्य है जिसको लोग देख आपस में मुह बिगाड़ उस्को अंगुल्या निर्देश "अंगुश्तनुमाई" करते हैं ॥

सुलभातस्यविभूतिस्तस्य गुणायान्ति जगति बिस्तारम् ।
बहुमनुते तं सुजनो तस्मै स्पृहयन्ति बान्धवाःसततम् ॥
नासादयति स एकः सत्सेवितमार्गतःपरिस्खलनम् ।
मण्डयतिचान्ववायं सनिवासः शर्म्मणामशेषाणाम् ॥
सभवति बिनयाधारो युक्तायुक्ते बिवेकिता तस्य ।
वृद्धोपदेशवाचः श्रवणोदर पूरणं सदातस्य ॥

धन सम्पत्ति उस्को सुलभ है जगत में उसी के गुणों का बिस्तार होता है–अच्छे लोगों के बीच वही आदर पाता है–बन्धु भाई सब बड़प्पन में उसी के गुणों का हिस्का करते हैं जो भले लोगों से चले हुये रास्तों से भटका हुआ नहीं है-अपने जन्म से बंश को सुशोभित उसी ने किया है संसार के जितने सुख हैं कोई ऐसे नहीं हैं जो उसे अप्राप्य हैं–बिनय का आधार भी वही हो सक्ता है उचित अनुचित का बिबेक भी उसी को है–बड़े बूढ़ों के उपदेश भी उसी पर अपना असर पहुंचा सक्ते हैं ॥

अजित प्रकाश पंचांग ।

खेतड़ी नरेश श्रीमान् अजित सिंह बहादुर की आज्ञा से ज्योतिविंद् पं० छड़मल शर्मा बिरचित–यह पंचांग दृग् गणितैक्य के हिसाब से बनाया गया और बड़ा शुद्ध है–इतना शुद्ध तिथि पत्र अब तक नहीं मुद्रित हुआ और बड़ेही स्वच्छ और शुद्ध टइप में छपा है–इसके छापने का अधिकार राजस्थान यंत्रालय के स्वामी के आधीन किया गया है–सिवा तिथि बार और नक्षत्र के ज्योतिष की बहुतसी ऐसी बातें इस्में दी गई हैं जो अब तक किसी दूसरे पत्र में नहीं देखी जातीं–महाराज खेतड़ी नरेश को इस्का अनेक धन्यबाद है जिनके प्रोत्साहन से यह पंचांग बनाया गया है–अजमेर में संपादक राजस्थान समाचार के पास यह पंचांग मिलैगा ॥

हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि० १६ सं० ५-६-७-८ } प्रयाग { जनवरी-फरवरी-मार्च अप्रैल १८९६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥≡)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १=)
नमूने की कापी का ≡)॥

१-७-९६

हिन्दीप्रदीप॥

जिल्द १६ संख्या ५-६-७-८	प्रयाग	जनवरी-फरवरी-मार्च-अप्रेल सन् १८९६ ई०

भारत की वर्त्तमान आरतदशा क्यों आई॥

भारत ने अपनी स्वतंत्रता क्यों खोया और बिदेशियों ने यहां के राज्य शासन को कैसे अपने हाथ में कर लिया इसे सोच मन में सन्देह होता है कि हम लोग जीवधारी सचेतन हैं या निश्चेतन जड़ पदार्थों में हैं—साधारण बुद्धि और विवेक युक्त मनुष्य कोटि में रहके भी इतने दिनों से पराधीन हैं इस्का क्या कारण है? हम लोग इस बात के बड़े अभिमानी हैं कि हम आर्यजाति के हैं आर्य के माने श्रेष्ठ हैं पृथ्वीतल पर जितने भिन्न२ जाति के लोग हैं आर्य सबों में श्रेष्ठ हैं—विद्या बुद्धि आचार और सभ्यता में अपने बराबर किसी को नहीं मानते तब पराधीन क्यों हैं? इत्यादि बिबिध शंकाओं के समाधान में हमारा इस पराधीन दशा में पड़े रहने का एक मात्र कारण यही है कि हम को किसी बात में कभी असन्तोष होता ही नहीं—सन्तोष को यहां तक पकड़ रक्खा है कि "कोउ नृप होहि हमें का हानी। चेरी छोड़ न होउब रानी" इत्यादि न जानिये कितनी कहावतें इस्के सम्बन्ध में चल पड़ी हैं—कोई२ कहते हैं यहां के लोग निर्बल और डरपोक हैं इसी से पराधीन हैं पर ऐसा कहने वाले मालूम होता है दूरन्देशी को काम में नहीं लाये पुराने इतिहासों में समय२ इन का साहस और युद्धोत्साह

देख यह किसी तरह नहीं कहा जा सक्ता कि हिन्दुस्तानी निर्बल और डरपोक होते हैं ॥

राजकर्मचारी हम लोगों को कृतघ्न और राजभक्ति विमुख कहते हैं और हम लोग भी उन से यथावत् सन्तुष्ट नहीं हैं-इसी लिये देशी सम्बाद पत्रों का मुह बन्द कर देने का बहुधा प्रयत्न किया जाता है Arm's act शस्त्र निग्रह कानून प्रचलित कर रक्खा है हिन्दुस्तान को अपने अधिकार में लाय हमारा कितना उपकार किया इस्को समय २ प्रगट कर हमें कृतज्ञता के बन्धन में बँधे रहने का उपदेश देते हैं-किन्तु क्या हम वास्तव में सन्तुष्ट और सुखी हैं ? जिन२ वस्तुओं का अभाव हम को है वह सब क्या पूरा होता जाता है ? और जाति और देश की तरह क्या हम सभ्यता की सीढ़ी पर चढ़ रहे हैं ? जैसा जानवर सुख वा दुख को थोड़े ही समय में भूल जाते हैं अथवा आगे को अपनी दशा को सुधारने की चेष्टा नहीं करते भूख प्यास लगने पर जो कुछ मिलता है खा पी सन्तुष्ट रहते हैं हम लोग भी वैसे ही हैं-हम विदेशी शासन से शासित हैं इस बात को हम तभी मालूम करते हैं जब संकट की दशा में आ पड़ते हैं और संकट में पड़ यदि हम अपनी वर्त्तमान हीनदशा को सोचें तो क्यों नित्य२ नीचे को गिरते जांय-जो वर्त्तमान हीनदशा में अपने को दुखी और असन्तुष्ट मानते हैं वे ही उन्नति की भी चेष्टा कर सक्ते हैं पर असन्तोष क्या वस्तु है सो हम जानते ही नहीं-अपना पूरा हक्क पाने की जगह आधा या चौथाई भी पा जाने से अच्छी तरह सन्तुष्ट रहते हैं-गवर्नमेंट ने जिस चातुरी से हिन्दुस्तान को अपने आधीन कर लिया और जिस हिकमत अमली से वह इस्का शासन कर रही है उसे हम जानने की इच्छा रखते तो क्या पांव की धूल बने रहते-राजकर्मचारी कहते हैं भारतवासियों के हित के लिये हम इस्का शासन करते हैं-हिन्दुस्तानी अपनी रक्षा अपने आप नहीं कर सक्ते इसमें किमपि सन्देह नहीं है-अंगरेज़ यदि यहां का प्र-

धिकार छोड़ कर चले जांय तो हिन्दुस्तान स्वाधीन हो जाय यह भरोसा कभी न करना चाहिये—जैसी फूट हम लोगों में है और जैसी अजेरित दशा हमारे देश तथा हमारे समाज की है उससे अनुमान किया जाता है कि एक दिन भी हम लोगों का सुख से कटना दुर्घट है—विलाइत वालों ने जो हम को दासत्व की अवस्था में रख छोड़ा है हमारा शिल्प वाणिज्य सब हम से छीन विलाइत के अपने भाइयों का हर तरह पर पेट भर रहे हैं हमारी दांतों पसीने की मेहनत का फल मुल्क की पैदावरी का सुख बलपूर्वक आप उठा रहे हैं सो सब हमारे ही कुलक्षणों से—मसल है "जिस्की लाठी उस्की भैंस" हमारे में कोई लक्षण होता तो लाठी और भैंस दोनों हमारी ही न होती॥

हमारे राजपुरुष मुख से जैसा कहते हैं वैसा ही आचरण से भी प्रकट कर दिखाते और भारत का वास्तविक हित साधन करते तो हम कृतज्ञता के बन्धन से इतना अपने को जकड़े हुये मानते कि उनके एह-सान से कभी अनृणी न होते और जिस छल बल कल से इन्हों ने इस देश को लिया उसे भूल जाते-लार्ड रिपन महोदय ने थोड़ी ही सी कृपा इस पर की आज तक उन का गुणानुवाद गाते हैं—वर्त्तमान लफ्टि-नेंट गवर्नर सर हेनरी मेगडानेल ने अभी कोई बात करके नहीं देखाया किन्तु इरादे उन के भलाई करने के मालूम होते हैं हम लोग इतने ही में निहाल होगये और उन की तारीफ पर तारीफ छाप रहे हैं—अस्तु जो हम लोग अपने शासन कर्त्ता की पालिसी को समझ सके और सन्तोष का आदर न कर अन्धे गूंगे न हो गये होते और सर्वतो भावे न त्वं गतिस्त्वं मतिः के सहारे अपने को इतना नीचे न गिरा देते तो देश ऐसी शोचनीय दशा में न आया होता—शिक्षा के प्रभाव से थोड़े लोगों के नेत्र खुले हैं सही पर समूह का समूह जब ना समझी की दशा में पड़ा है तो थोड़े से समझदारों का किया क्या हो सक्ता है—विला-इत के लोग जैसा चतुर थे वैसे ही भारत की रत्नगर्भावसुन्धरा उन्हें कामधेनु मिली—

मेरौस्थिते दोग्धरि दोहदक्षे भास्वन्ति रत्नानि महौ-
षधीश्च पृथूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्रीम्।

गाढ़ी नींद में सोये हुये हमें कुछ मालूम नहीं कि जिस देश में हम रहते हैं वहां की पृथ्वी में क्या २ है और उसमें क्या गुण है—हमारे शासन कर्त्ताओं ने तिल २ पृथ्वी जांच डाला जहां से कुछ सार खींचते बना खींच लिया जिस्के लेने में अपनी हानि समझा उसे पड़ा रहने दिया—हिन्दुस्तान में लोहे के खान की कमी नहीं है पर रेल इत्यादि के बनाने में जितना लोहा खर्च होता है सब विलाइत से आता है और विलाइत के कर्मचारी उस्से असंख्य लाभ उठाते हैं—एक लोहे की बदौ-लत इंगलैण्ड माला माल हो रहा है किन्तु इन सब बातों की चिन्ता कभी एक मिनिट के लिये भी हमारे चित्त में नहीं धसती-कन्या १० वर्ष की होगई बर का सुविधा कहीं न लगा इस्की चिन्ता में अलबत्ता खान पान छुट जाता है—पहिले यहां का शिल्प और कारीगरी दूर दूर देश तक फैली हुई थी बाहर का सौदागर एक बार भी यहां आता था तो पुश्तहा पुश्त की रोटी यहां से कमा ले जाता था ५० वर्ष पहिले यहां के जुलाहे धनवन्त थे अब भूखो मर रहे हैं-जो फाइदा यहां के लोग उठाते थे वही अब मेनचेस्टर वाले उठा रहे हैं-विलाइती कपड़े तथा यावत् विलाइती चीज़ें सब यहां आने लगीं नये २ कानून के द्वारा यहां के कपड़ों का विलाइत जाना बंन्द होगया और इतना विलाइती कपड़ा यहां आता है कि १५ करोड़ रुपया प्रतिवर्ष केवल कपड़े के मध्ये वि-लाइत जाता है—चावल गेहूं तीसी तूल नील आदि कच्चे बाने १५ करोड़ के लगभग यहां से विलाइत जाते हैं जिस्के बदले उतने ही का कपड़ा और लोहा लक्कड़ यहां आता है—यदि विलाइती चीज़ें यहां न आवें तो हरसाल १५ करोड़ रुपया देश में रह जाय-पर देशी कपड़े मंहगे और नफासत से खाली हैं इस लिये नापसन्द हैं परिणाम जिस्का यही होता है कि इतने रुपये का नुक़सान प्रति वर्ष मुल्क को सहना पड़ता

है–इसमें सन्देह नहीं हम लोग स्वभाव ही से निश्चेष्ट हैं हाथ पांव हिलाने से और चेष्टा करने से जो दुःख दूर हो सक्ता है उसे अवश्य-भावी मान बैठे हैं उसका क्या कारण है सो नहीं सोंचते-महा कुदशा में पड़कर भी कभी छिन भर के लिये जी में टूट न मान वर्त्तमान पराधीन दशा को सुख की सीमा माने हुये हैं-तरक्की की जितनी रास्ता हैं उन्में कभी धर्म आड़े आता है कभी समाज उस रास्ते की ओर जाने से हमें रोकती है-सैकड़ों वर्ष से पराधीन रहते२ हमारी समाज का चलन हमारा धर्म हमें वही सिखाता है जिसमें किसी तरह स्वच्छन्द न हो सकें–राजकीय विषयों में हम पराधीन हैं आज़ादगी को दखल नहीं दे सक्ते धर्म और सामाजिक बातों में यदि हम स्वच्छन्द होने की चेष्टा करें तो उसे कौन रोक सक्ता है पर–

"स्वल्पस्नायु वशावशेषमलिनं निर्मांसमप्यस्थिगोः।
श्वालब्धं परितोषमेति नतु तत्तस्य क्षुधा शान्तये ॥"

भर्त्तृहर के इस श्लोक के अनुसार वर्त्तते हुये हम इसी में अपने को सुखी माने बैठे हैं तो लाचारी है हमारे अरण्य रुदन को कौन सुनता है॥

भट्टनारायण

विक्रमी संवत् की नवीं शताब्दी में यह कवि पंचाल या कान्यकुब्ज देश में पैदा हुये इन के पिता का नाम भट्ट रामेश्वर था वेद और षट् दर्शन में भट्ट नारायण को एक असाधारण व्युत्पत्ति थी वृत्ति और भाष्यसहित आश्वालायन सूत्र कण्ठाग्र था–इसी समय गौड़ देश बंगाल में समर विजयी आदि शूर राज्य करते थे–डाकृर राजेन्द्रलाल मित्र जिस ने भारत के पुराने इतिहासों को बहुत अच्छी तरह अभ्यास किया है लिखते हैं कि आदि शूर अम्बष्ट जाति के क्षत्रियों के सेनवंश में जन्मे थे–

वास्तव में इस्का नाम बीरसेन था किन्तु सेनवंशीय क्षत्रियों का यह पहिला राजा था इसलिये इस्का यौगिक नाम आदि शूर हुआ-एक समय आदि शूर को यज्ञ करने की इच्छा हुई वंगदेश के ब्राह्मणों को वेदविमुख देख और वेदोक्त कर्मकाण्ड में अयोग्य पाय कन्नौज के राजा बीरसिंह को वेद और वेदोक्त क्रिया कलाप में कुशल ५ ब्राह्मणों के लिये लिखा और एक अपने दूत को ऐसे ब्राह्मणों को वहां से ले आने को भेजा-कन्नौज उस समय पांचाल देश की राजधानी थी कन्नौज का दूसरा नाम गाधिपुर भी है-आदि शूर की प्रार्थना के अनुसार गाधिपुर के राजा बीरसिंह ने वेदपारग शुद्धाचार अनेक शास्त्रों में प्रवीण काश्यप वात्स्य शाण्डिल्य सावर्ण भारद्वाज इन पांच गोत्र के ब्राह्मणों को भेजा उनमें प्रथम शाण्डिल्यगोत्री वेणीसंहार के कर्त्ता भट्ट नारायण थे-यह अपने साथ मकरन्द घोष नाम के भृत्य को लाये थे वंगाल के घोष जाति के कायस्थ सब इसी मकरन्द के वंश में उत्पन्न हैं और बीरेन्द्र श्रेणी तथा राढ़ीय श्रेणी के वहां के शाण्डिल्य गोत्री ब्राह्मण सब भट्ट नारायण के वंश में हैं-दूसरे काश्यपगोत्री दक्षनाम के ब्राह्मण दशरथ वसु नामक भृत्य के साथ आये वंगाल के काश्यपगोत्री ब्राह्मण सब इन्हीं के वंश के हैं-और वसु नामक उपाधि के कायस्थ सब दशरथ वसु के वंश में हैं-तीसरे सावर्णगोत्री वेदगर्भ नाम के ब्राह्मण दशरथ गुह भृत्य को अपने साथ लाये सावर्णगोत्री ब्राह्मण और गुह जाति के कायस्थ सब इन्ही दोनों के वंश में हैं-चौथे वत्सगोत्री छान्दड़ नाम के ब्राह्मण पुरुषोत्तम दत्त भृत्य के साथ आये वत्सगोत्री वंगदेशी ब्राह्मण और दत्त जाति के कायस्थ इन्ही दोनों के वंश में हैं-पांचवें भारद्वाजगोत्री श्रीहर्ष कालिदास भृत्य को अपने साथ लाये भारद्वाजगोत्री वहां के ब्राह्मण और मित्रजाति के कायस्थ सब इन्हीं दोनों के वंश में हैं-वंगदेशी इसी श्री हर्ष को नैषध के कर्त्ता कहते हैं किन्तु यह वही श्रीहर्ष नहीं हैं-वही श्रीहर्ष होते तो मम्मठ भट्ट काव्यप्रकाश में वेणीसंहार के बहुत श्लोक उदाहरण में दिये हैं नैषध के श्लोक भी अवश्य देते इससे मालूम होता

है कि नैषध वाले श्रीहर्ष भट्ट नारायण के समकालीन न थे-इन ५ ब्राह्मणों के आने के पहिले वैदिक आचार त्रिमुख सप्तशत संख्यक ब्राह्मण सपरिवार वहां रहते थे अब भी बंगाल मे सप्तशती नामक ब्राह्मण पाये जाते हैं पर ये वहां कुलीन ब्राह्मणों में नहीं समझते जाते-इन पांचों ब्राह्मणो के यज्ञ कराने से आदि शूर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और राढ नामक देश में वटग्राम कंकग्राम कामकुटी ब्रह्मपुरी हरिकुटी ये ५ गांव इन्हें वृत्ति में दे वहां टिकाय लिया-ये ५ ब्राह्मण जो कन्नौज से आये और उनके कुनबेवाले सह भोजन मे उन्हे अपने साथ शरीक न किया तब वे वहां से लौट आये और यहीं विवाह कर गौड़ देश के निवासी होगये-यह सुन उन की पूर्व विवाहिता पत्नी कन्नौज से वहां आईं उन्हें आदि शूर ने गौड़ देश के पास हो करतोया नदी के किनारे पर बारेन्द्र प्रदेश में टिकाय दिया उन के वंश में जो हुये वे बारेन्द्र श्रेणी के कहलाये-इस तरह पर राढीय और वारेन्द्र दो श्रेणी बंगाल के ब्राह्मणों की हुईं-उदयनाचार्य ने बारेन्द्र श्रेणी वालों की देवीवर नामक किसी घटक ने राढीयश्रेणी वालों की और पुरन्दर ने कायस्थों की कुलीनता स्थापित की-तभी से बंगाल के ब्राह्मण और वहां के कायस्थों में कुलीनता की प्रथा निकली है-भट्ट नारायण वृद्धावस्था में काशी सेवन के लिये काशी में आबसे और वहां बहुत से शिष्यों को विद्या पढ़ाय तैयार किया उन्हीं शिष्यों के अनुरोध से प्रयोगरत्न नाम का धर्मशास्त्र का एक ग्रन्थ रचा जो धर्मशास्त्र का बड़ा उत्तम ग्रन्थ अब तक प्रचलित है-काव्यरचना में भट्ट नारायण का एक वेणीसंहार केवल देखने में आता है पर वीररस प्रधान यह नाटक रचना में बड़ा उत्कृष्ट दृश्य काव्य है-दशरूप नामक ग्रन्थ जिस्में १० प्रकार के दृश्य काव्यों का विवरण विस्तार के साथ किया गया है और साहित्य दर्पण में भी जितने उदाहरण वेणीसंहार और काश्मीर निवासी श्रीहर्ष देव कृत रत्नावली नाटिका के दिये गये हैं उतने किसी नाटक के नहीं हैं-इस्से विदित है कि ये दोनो ग्रन्थ नाटक रचना के भरत मुनि प्रणीत जितने नियम और अङ्ग हैं सब से पूर्ण हैं-ऐसा मालूम होता है वेणीसंहार और रत्नावली के कर्ताओं ने

भरतमुनिकृत नाट्यशास्त्र को आगे रख अपने२ नाटकों को रचा है यही कारण है कि जितना ये दोनों नाटक नाट्यशास्त्र के उत्तम उदाहरण हैं उतना दूसरे कोई नहीं हैं-बीररसप्रधान वेणीसंहार के धीरोदात्त महाराज युधिष्ठिर मुख्य नायक हैं भीमसेन अर्जुन आदि उन के सहायक नायक हैं-द्रौपदी मुख्य नायिका हैं-निज भुज बल के अभिमान में चूर दुर्योधन प्रति नायक है दुःशासन शकुनी और करण आदि उसके सहायक हैं-दुर्योधन की स्त्री भानुमती प्रति नायिका है-धृतराष्ट्र के सामने सभा में दुर्योधन के कहने से दुःशासन ने जब बाल पकड़ घसीटा तब द्रौपदी ने प्रतिज्ञा किया जब तक सौ भाई सहित दुर्योधन जीता है मैं अपने बालों को न गुहेंगी-राजा विराट के यहां गुप्तनिवास के उपरान्त १२ बर्ष के बनवास से लौटे हुये पाण्डवों के संग्राम के लिये उद्योग से आरंभ कर कौरवों का नाश कर भीमसेन से द्रौपदी के केशों के गुथने तक की महाभारत की कथा इस्में नाटक के द्वारा दिखलाई गई है-इस्में शृङ्गाररस बहुत कम है और अच्छे२ उपदेश बहुत से निकलते हैं इस लिये सुकुमार मति वाले छात्रों के पढ़ने योग्य यह नाटक है-युधिष्ठिर की शान्ति भीमसेन और द्रौपदी का क्रोधित होने के लिये उन को भड़काना इस नाटक और किरात काव्य का एकसा है-भुज बल गर्वित क्रोध में भरे बीरों के सिंहनाद में उत्कट समास और मूर्द्धन्य बर्ण वाले शब्दों के प्रयोग से इस्की कविता गौड़ी रीति की है-काव्यादर्श में दण्डी ने गौड़ी वैदर्भी पांचाली काव्य की तीन रीतियों में गौड़ी रीति का लक्षण यही दिया है कि जिस कविता में बड़े२ समास हों टवर्ग आदि मूर्द्धन्य बर्ण विशेष प्रयोग किये जांय वह गौड़ी रीति का काव्य है जैसा इस श्लोक में है-

"चंचद्भुज भ्रमित चण्ड गदाभिघात संचूर्णितो
रूपयुगलस्य सुयोधनस्य स्त्यानावनद्ध घनशोणित
शोणपाणिरुत्तंसयिष्यति कचांस्तवदेविभीमः"

इस्में भीमसेन का असम साहस औद्धत्य और असीम पराक्रम—युधिष्ठिर की धर्म भीरुता अपकीर्त्ति से डरना सोच विचार के काम करना अर्जुन और सहदेव में असीम पराक्रम संग्रामचातुरी भ्रातृभक्ति—द्रौपदी में क्षत्रियों की स्त्रियों में जैसा तेज और साहस होना चाहिये—दुर्योधन में विना विचारे काम करना अभिमान कुटिलता—कर्ण में प्रभुशक्ति वीरत्व और अपने मित्र दुर्योधन की चित्तवृत्ति के अनुरूप वर्त्ताव—अश्वत्थामा में अनन्य साधारण पराक्रम संग्राम से मुंह न मोड़ना युद्धचातुरी पितृभक्ति आदि कवि ने बहुत अच्छी तरह दरसाया है—यद्यपि इस्का अनुवाद भाषा में भी हो चुका है किन्तु संस्कृत कविता का रस उस्में कहां से आ सक्ता है—इस्का अनुवाद कई लोगों ने किया है पर हमारे गुरुवर प्रातः स्मरणीय श्रीमान् पं०—गदाधर जी का सबों में उत्तम है इस अनुवाद में संस्कृत नाटक की बहुत कुछ छटा आ जाती है और उक्त पण्डित जी ने बड़ी योग्यता के साथ इस्का अनुवाद किया है—सिवाय वेणीसंहार के भट्ट नारायण का और कोई काव्य नहीं देखा जाता है संस्कृत साहित्य का अमूल्य रत्न हम उसे अवश्य कहेंगे ॥

कविराज राजशेखर।

राजशेखर यायावर जाति के क्षत्रियों के कुल में उत्पन्न रघुवंशी महाराज महेन्द्रपाल के गुरू थे इनकी मा का नाम सत्यवती था—संस्कृत के पूर्ण पण्डित तो थे ही सिवाय संस्कृत के कई तरह की प्राकृती जानते थे—कर्पूरमञ्जरी नाम का सट्टक इन्हों ने केवल प्राकृती भाषा में रचा है जिस्से प्रगट होता है कि प्राकृती भाषा में राजशेखर को पूर्ण परिचय था—किसी भाषा को केवल लिख लेना पढ़ लेना मात्र साधारण बात है पर उस भाषा में ग्रन्थ रचना तभी बन पड़ती है जब उस्में पूर्ण अधिकार हो ॥

सट्टक एक प्रकार का नाटक है जिस्में अद्भुत रस विशेष दिखालाया जाय और केवल प्राकृती भाषा में हो—कर्पूरमञ्जरी के अतिरिक्त और कोई सट्टक अब तक नहीं देखने में आया—दस अंक में बालरामायण बाल भारत और चार अंक में विद्धशालभञ्जिका नाटिका भी राजशेखर की रचना है—बालरामायण में कवि ने अपना परिचय इस तरह पर दिया है ॥

"पातुं श्रोत्ररसायनं रचयितुं वाचः सतां सम्मता ।
व्युत्पत्तिं परमामवाप्तुमवधिं लब्धुं रसः स्रोतसः ।
भोक्तुं स्वादुफलं च जीविततरो यद्यस्ति ते कौतुकं,
तद्भ्रातः शृणु राजशेखरकवेः सूक्तिः सुधास्यन्दनाः ॥

ऐसी बात सुनी चाहते हो जो रस की खान है ऐसी बाणी की रचना करने का मन हो जो सज्जनों को सम्मत है—शास्त्रों में उत्कृष्ट व्युत्पत्ति चाहते हो रस के स्रोतकी अवधि तक पहुंचा चाहते हो मनुष्य के जीवनरूप वृक्ष का फल चखने का कौतुक हो तो हे भाई अमृत बरसाने वाली राजशेखर की सूक्ति सुनो—

"आपन्नार्तिहरः पराक्रमधनः सौजन्यवारां निधि-
स्त्यागी सत्यसुधाप्रवाहशशभृत्कान्तः कवीनां गुरुः ।
वर्ण्यं वा गुणरत्नरोहणगिरेः किन्तस्य साक्षादसौ,
देवो यस्य महेन्द्रपालनृपतिः शिष्योरघुग्रामणीः ॥"

राजशेखर केरल अर्थात् कावेरी और समुद्र के बीच के देशके राजा और श्री स्वामी शंकराचार्य के समकालीन थे—माधवाचार्य जिन्हों ने शंकर दिग्विजय में स्वामी शंकराचार्य का पूरा जीवन वृत्तान्त बड़ी योग्यता के साथ लिखा है राजशेखर का कुछ हाल इस तरह पर दिया है—शंकराचार्य से मिलने की आज्ञा पाने को राजशेखर ने अपने मन्त्री को उनके पास भेज उनके दर्शन की प्रार्थना की और आज्ञा पाय दस सहस्र सुवर्ण मुद्रा और अपने बनाये तीनों नाटक भेट में रख उनसे

मिले—शंकरस्वामी इनके तीनों नाटक सुन बड़े प्रसन्न हुये और राजशेखर उनसे मनमाफिक बर पाय घर लौटे॥

जयदेवकृत प्रसन्नराघव नाटक और भवभूतिकृत बीरचरित्र नाटक से राजशेखर कृत बालरामायण नाटक की शैली मिलती है—बीररस इसमें प्रधान रक्खा गया है पर बीच२ शृङ्गार और करुणा आदि रस भी इसमें दरसाया गया है किन्तु कविता के अंश में जयदेव का प्रसन्नराघव नाटक उत्कृष्ट है—जैसी सरस कविता प्रसन्नराघव की है वैसी राजशेखर की कोई रचना सरस नहीं है—इनकी कविता माघ के ढंग की है जिसमें कठिन से कठिन शब्दों का प्रयोग बड़े आडम्बर के साथ किया गया है किन्तु अर्थ चातुरी बहुत कम निकलती है वैसही राजशेखर ने भी क्लिष्ट कल्पना के लिये बहुत सिर पचाया है पर इनके शब्दों में रस बहुत कम है—कई जगह भवभूति का अनुकरण इन्हों ने किया है पर भवभूति की रचना का गाम्भीर्य्य कहीं छू भी नहीं गया—बालरामायण तथा विद्धशालभञ्जिका की कविता इतनी रूखी है कि जी ऊब जाता है—विद्धशालभञ्जिका रत्नावली नाटिका का अनुकरण है किसी२ पद्य में रत्नावली की कुछ छटा आ गई है जिसे उदाहरण के लिये हम नीचे लिखते हैं—

"तद्वक्त्रं यदि मुद्रिता शशिकला तच्चेत्स्मितं का सुधा,
सा दृष्टिर्यदि हारितं कुवलयैस्ताश्चेद्गिरो धिङ्‌मधु।
सा चेत्कान्तिरतन्त्रमेव कनकं किंवा बहुब्रूमहे,
यत्सत्यं पुनरुक्त वस्तुविरसः सर्गक्रमोवेधसः॥

इसी के समान Parallel यह श्लोक है—

अस्याश्चेद्गतिसौ कुमार्यमधुना हंसस्य गर्वैरलं,
संलापो यदि धार्यतां परभृतैर्वाचं यमत्वव्रतम्।
अंगानामकोठरता यदि दृषत्प्रायैव सामालती,
कान्तिश्चेत्कमला किमत्र बहुना काषायमालम्ब्यताम्॥

यह पद्य महानाटक का है नहीं मालूम राजशेखर ने इसका अनुकरण किया है या नीचे वाले श्लोक के रचयिता ही ने राजशेखर का अनुकरण किया है—भवभूति का अनुकरण इस श्लोक में है ॥

स्थितिः पुण्येरण्ये सह परिचयो हन्त हरिणैः,
फलैर्मेध्यावृत्तिः प्रतिनदि च तल्पानि दृषदः।
इतीयं सामग्री फलति हि विरक्त्यैस्पृहयतां,
वनं वा गेहं वा सदृशमुपशान्तस्य मनसः ॥

इस तरह पर अपने पहिले के कवियों का राजशेखर ने बहुत जगह अनुकरण किया है—यह शंकराचार्य के समकालीन थे और शंकराचार्य का समय विक्रमादित्य के संवत् की सातवीं शताब्दी का मध्य भाग निश्चय किया गया है—शंकर ७३१ के सम्वत् में उत्पन्न हुये और ३२ वर्ष की अवस्था में सुरधाम सिधार गये—वही समय राजशेखर का भी निश्चय किया जा सक्ता है—बालरामायण के एक श्लोक में भवभूति का इन्हों ने नाम दिया है जैसा—

"वभूव वल्मीकिभवः कविः पुरा ततः प्रपेदे भुविभर्तृमेंढुताम्।
स्थितः पुनर्यो भवभूति रेखया स वर्त्तते सम्प्रति राजशेखरः" ॥

और भवभूति का समय विक्रमाब्द की सातवीं शताब्दी का आरम्भ निश्चय किया जाता है इससे मालूम होता है कि राजशेखर भवभूति के थोड़ा ही उपरान्त हुये हैं या ये दोनों एकही समय में रहे हों—प्रौढवाद में राजशेखर भवभूति के आगे बढ़ गये—मसल है एक तो तितलौकी दूजे चढ़ी नीम एक तो यह राजा थे दूसरे कवित्वशक्ति की प्रतिभा सम्पन्न थे तब इनके प्रौढ़वाद का भला क्या कहना किन्तु दोनों की लेखशक्ति से विदित होता है कि भवभूति में कवित्व की प्राकृतिक प्रतिभा थी राजशेखर ने जो कुछ लिखा वह केवल प्रतिभा के बल नहीं वरंच गढन्त भी

क्रिया-गढ़न्त और स्वाभाविक प्रतिभा मे क्या अन्तर है इस्की पहचान विदग्ध कविता रसिक के लिये बहुत कठिन काम नहीं है-अस्तु राजशेखर का पाण्डित्य अवश्य प्रशंसा के योग्य है और इनकी रचना संस्कृत के साहित्य का परमोत्तम अंग है॥

दिल बहलाव के जुदे २ तरीके।

जब आदमी को कुछ काम नहीं रहता तो दिल बहलाने को कोई न कोई ऐसा एक काम निकाल लेता है जिस्में समय उसको बोझ न मालूम हो और यह कहने को न रहे कि वक़्त काटे नहीं कटता॥

इस दिल बहलाव के जुदे २ तरीके हैं जिन्में थोड़े से यहां पर दिखाये जाते हैं—कितने सब काम काज से छुटकारा पाय दिल बहलाने को बाहर निकलते हैं—सदर बाज़ार के एक छोर से दूसरे तक दो चार चक्कर किये कभी इस कोठे पर ताका कभी उस अटारी पर इशारेबाज़ी हुई दिल बहल गया घर लौट आये-कितनों का दिल बहलाव हुक्केबाज़ी है सब काम से फुरसत पाय किसी बैठक में आ बैठे हाहा ठीठी करते जाते हैं और चिलिम पर चिलिम उड़ाते जाते हैं—हाहा ठीठी धौल धक्कड़ का मौका न मिला तो बे जड़ बे बुनियाद जी उबियाऊ कोई दास्तान छेड़ बैठे घण्टों तक उसी में समय बिताय घर की राह ली दिल बहल गया-कितने चले जाते हैं रास्ते में कोई दोस्त मिल गये दो २ कच्ची पक्की औंड़ी बौंड़ी इन्हों ने उसे कह सुनाया उसने इन्हें कहा अपनी २ राह ली सब थकावट दूर होगई मन बहल गया--कर्कशा अपढ़ स्त्रियों का दिल-बहलाव लड़ाई है घर गृहस्थी के सब काम पिसौनी कुटौनी से छुट्टी पाय जब तक दांत न किर्र लें और आपस में झोंटी झोटा न कर लें तब तक कभी न अघायँ जी ऊबता रहे चित्त में उदासी छाये रहै मानो उस दिन उन्हें उपवास हुआ—चुगल चबाई इली धूर्तों का दिल बहलाव निन्दा और चवाव है दो चार पुराने समय के खबीस इकट्ठे हो तमाखू पिय २

घूकते जाते हैं और सौ वर्ष का पुराना कोई ज़िक्रिर छेड़ बैठे बहुधा जात बिरादरी के सम्बन्ध की कोई बात अवश्य होगी नाक चढ़ाय२ मुहब-गार२ किसी भले मानुष के गुण में दोष उद्घाटन करते दो चार कच्ची पक्की कह सुन लिया मन बहल गया—कोई२ ऐसे मनहूस भी हैं कि फुर-सत के वक़्त किसी अँधेरी कोठरी में हाथ पर हाथ रक्खे पहरों तक चुप-चाप बैठे रहनेही से दिलबहलाव हो जाता है—बाज़२ नौसिखिये नई रोशनी वाले जिनका किया धरा आज तक कुछ नहीं हुआ मुल्क की तरक्की के ख़फ़्त में आय आज इस सभा में जाय हड़ाकू मचाया कल उस क्लब में जा टांय२ कर आये दिल बहलाव हो गया—इन्हीं में कोई२ धाऊघप्प गुरूघण्टाल किसी क्लब या समाज के सेक्रेटरी या खज़ानची बन बैठे और सैकड़ों रुपया वसूल कर डकारने लगे भांड़ों की नकल सवारी की सवारी ज़नाना साथ आमदनी की आमदनी दिलबहलाव मुफ़्त में—सच पूछो तो इनका दिल बहलाव सब से अच्छा हमें ऐसा दिल बहलाव मिलता तो सिवाय दिलबहलाने के कोई काम करने के डांड़े न जाते—धन्य हमारी समाज धन्य हमारे लोगों की तबियत की झुकावट जिनके बीच ऐसे२ उमदा से उमदा दिलबहलाव मौजूद हैं—इसी दिलबहलाव का एक क्रम नीचे के श्लोक में भी दिया गया है—

"काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन तु मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा॥"

सच है विद्यारसिक पढ़े लिखे विद्वानों का क्रम अपढ़ साधारण लोगों से जैसा और सब बातों में निराला है वैसा ही दिलबहलाव भी अनोखे ढंग का होना ही चाहिये—सामान्य मनुष्यों का दिलबहलाव विषयवासना का एक अंग रहता है वही विद्वानों का दिलबहलाव विद्यासम्बन्धी बुद्धि का बढ़ाने वाला और शुद्ध सात्विक क्रम का होता है—इसी से ऊपर कहे श्लोक में लिखा गया है कि बुद्धिमानों का काल काव्यशास्त्र के पढ़ने पढ़ाने के आनन्द में बीतता है मूर्खों का समय दुर्व्यसन और सोने में नष्ट होता

है—अति दुरूह कठिन विषय जिन्में मस्तिक को विशेष परिश्रम पड़ता है चिरकाल तक उस्में अभ्यास के उपरान्त बहुधा जब तबियत उस ओर से उखड़ जाती है तब वैसे विषय जिन्में बुद्धि को अधिक परिश्रम नहीं है और सुकुमार कोमल बुद्धि वालों के पढ़ने योग्य है जैसा काव्यनाटक उपन्यास नावेल्स किस्से कहानी इतिहास भूगोल इत्यादि के पढ़ने से देर तक दिमाग़ को काम में लाने से जो उस्पर बोझ आ जाता है वह हलका होकर दोचन्द उस दुरूह विषय की ओर धंसता है—नैयायिक वैयाकरण और गणितज्ञ "मेथिमेटिशन" का दिल बहलाव गादाधरी जागदीशी और दीक्षित की फक्किकाओं के हल करने से जैसा होता है वैसा किसी दूसरी बात से नहीं होता—कहावत चल पड़ी है वैयाकरण अर्द्धमात्रा के लाघव में पुत्रजन्म के आनन्द का उत्सव मानते हैं॥

"अर्द्धमात्रालाघवेन वैयाकरणाः पुत्रोत्सवंमन्यन्ते"

इस्के यही प्रयोजन हैं कि जिस विषय का मनन करो वह मन में बैठ जाय तो मन प्रसन्न हो जाता है और इतनी खुशी होती है मानो लड़का पैदा हुआ—इसी तरह "युक्लैदिस" बीजगणित या कोई दूसरे हिसाब के सवाल हल हो जाने पर गणित करने वाले के चित्त में जो सुख होता है उस्के आगे विषयवासना के निकृष्ट कोटि वाले आमोद प्रमोद किस हकीकत में हैं—इसी तरह सभ्यसमाज का भी दिलबहलाव इधर उधर बे काम घूमने के बदले अपने समान उदार प्रकृति वालों के साथ संलाप है जिनकी आपस की बात चीत उत्तम उपदेश से पूर्ण रहती है इसी से किसी ने कहा है॥

सदा सन्तोभिगन्तव्यो यद्यप्युपदिशन्ति नो।
या हि स्वैरकथास्तेषामुपदेशा भवन्ति ताः॥

सुसभ्य सत्पुरुष यद्यपि कुछ उपदेश न करें तो भी उनके पास जाना उत्तम है जो आपस की उनकी बातचीत है वही उपदेश होती हैं—

कृपणता की मूर्त्ति हमारे सेठ जी का दिलबहलाव रुपये की गंजिया है हुण्डी पुर्जों के भुगतान से छुट्टी पाय जब कुछ काम न रहा गंजिया खोल बैठे दो चार हज़ार रुपया गिनडाला दिलबहल गया—शराबी तथा जुवारी का दिलबहलाव शगल है पक्के जुवारी को जिस दिन हज़ार पांचसौ जीत हार न हो ले जी ऊबता रहता है—जिनके जीवन का सर्वस्व केवल द्यूत है—

द्रव्यं लब्धं द्यूतेनैव दारा मित्रं द्यूतेनैव ।
दत्तं भुक्तं द्यूतेनैव सर्वं नष्टं द्यूतेनैव ॥

जुवारी जुवा को बिना सिंहासन का राज्य मानता है—

"न गणयति पराभवं कुतश्चित् हरति ददाति च नित्यमर्थजातम् ।
नृपतिरिव निकाममायदर्शी विभववता समुपास्यते जनेन ॥"

ऐसा ही शराबी जब तक पीते२ बेहोश हो चहबच्चे में न गिरै उसका दिल न बहलैगा—हमारा दिलबहलाव उमदे से उमदा टटका रसीला मज़मून है जिस दिन कोई नई बात सूझ गई दस मिनिट में खर्रे का खर्रा लिखडाला उस दिन चित्त बड़ा प्रसन्न रहा नहीं बैठे२ सिर पर हाथ रक्खे पहरों सोचते रहते हैं अन्त को उद्विग्न खिन्न चित्त निरस्त हो बैठते हैं—ऐसा ही अपने रसिक ग्राहकों को दो एक दिन के लिये दिलबहलाव हम होते हैं जिस दिन हम उन से जा मिलते हैं वे अपना सुदिन मानते होंगे इत्यादि२ दिलबहलाव के जुदे२ तरीके यहां दिखाये गये ॥

भाग्य की परख ।

[पहिले के आगे से ॥

चौथा अध्याय ।

आषाढ़ का प्रारम्भ है गरमी का अन्त है चारो ओर से लोग पानी२ पुकार रहे हैं—कोश बनाने वालों ने जल का जीवन नाम क्यों रक्खा इसका भेद इस समय की पानी की पुकार से खुलता है—जब कि चर अचर

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का जीवन केवल पानी के आधीन हो जाता है—चार महीने की तपी पृथ्वी निःसत्व नीरस उदासीन भाव धारण किये मानो उस वियोगिनी नायिका का अनुकरण कर रही है जिसने पति के वियोग में विरह ताप सन्तप्त हो सब शृङ्गार उतार डाला हो—वनस्पति जेठ की लू में झुलसने की व्यथा को प्रगट करते प्रचण्ड वायु के वेग से सब ओर मानो हाहाकार मचाये हुये हैं—आकाश में कहीं २ बादल के दो एक टुकड़े देख लोग ऐसा ललक उठते हैं जैसा बहुत दिनों का गड़ा खज़ाना पाय जी ललक उठै—सूर्य की पैनी तीखी क़िरनें अंग २ को बेधे डालती हैं न दिन चैन न रात नींद—ठंढक सिकुड़ २ साहब लोगों के बंगले और धनियों के खसखानों में थरमेंटीडोट के ओट में जा छिपी—ऐसे समय में भी मदनलाल की पाईं बाग में बसन्त की बहार आ रही थी—क्यारियों को सींच माली लोग चले गये थे सांझ का समय था चिड़िये अपने बसेरे के पेड़ के चारो ओर चहचहा रहीं थीं—मायावती अकेली इस बाग में टहल रही थी और एक ऐसी मुद्रा बनाये हुई थी जिस्से मालूम होता था कि यह कोई बड़े गम्भीर विचार में मग्न है—घूमने के परिश्रम के कारण जो उस्के गुलाबी चेहरे पर पसीने के कण हो आये थे सो कमल के फूल की पखुरियों पर जल बिन्दु से शोभा दे रहे थे—या यों कहिये ये पसीने के कण न थे वरन लवंग लता में अनबेधे मोती फरे हुये थे—टहलने के उपरान्त एक सायेदार पेड़ के नीचे आय बैठ गई सिर से साड़ी हटा दिया कुर्ती का बटन खोल हाथ पसार दिया जिस्में ठंढी बयार उस्के शिथिल अंगों को ठंढक पहुंचाय चलने के परिश्रम को दूर कर दे—उस्के हाथ में बड़ा सा सुफ़ैद गुलाब का एक फूल था जिस्की ओर देखती हुई धीमे स्वर से कहने लगी—सच है कुदरत के काम पर बनावट और हाथ की कारीगरी प्रबल नहीं हो सक्ती—प्रकृति ने एक २ पखुरियों में जैसी सुघराई दरसाया है वह देखते ही बनता है—इतने में पीछे से एक आवाज़ आई—"मायावती यह फूल मुझे दे डालो" मायावती इस आवाज़ को पहचान तो गई तौ भी चारो ओर ताकने लगी

और मनमें कहा यह शब्द तो उसी का है जिस्का ध्यान मुझे प्रति क्षण लगा रहता है—रमणलाल उस्के सन्मुख आय फिर बोला प्यारी इस फूल की प्राकृतिक शोभा रेशम के लच्छे से कोमल तुम्हारे काले केशकलाप में गुथने से खुलैगी—इतना कह फूल उस्के हाथ से लेने को आगे बढ़ा और मायावती सिर नीचा कर थोड़ा पीछे हटी—रमणलाल फिर बोला मालूम होता है फूल मांगना तुम्हें पसन्द नहीं आया मदनलाल ऐसे उदार और शाह खर्च की बेटी में इस तरह की कृपणता अचरज पैदा करती है अस्तु इस्के देने से तुम्हे इनकार है तो मुझ से चूक हुई माफ़ करो इतना कह चल दिया—मायावती के सब चोचले और अठखेलियां जाते रहे सन्नाहटे में आगई और सोचने लगी मुझ से भूल हुई जो मैंने रमणलाल को नाराज़ कर दिया—इस्के मन में इस समय अद्भुत यन्त्रणा उत्पन्न हुई यहां तक कि उस्से न रहा गया और बाग के फाटक की ओर उस्को ढूंढने के लिये चल पड़ी—रमणलाल तो न मिला पर अति सुन्दर २५ वर्ष की उमर का एक युवा पुरुष देख पड़ा इसे देख यह कुछ शरमासी गई और ऐसा क्षोभ में आई कि वह फूल उस्के हाथ से गिर पड़ा कहां गिरा और कब गिरा यह सब इसे कुछ मालूम न हुआ—यह युवा पुरुष बोला मायावती तुम मुझको काहे को पहचानती होगी क्योंकि आज तुम से मैं बहुत दिन पर मिला हूं जब तुमको मैं यहां छोड़ चला गया तब तुम बहुतही छोटी ५ या ६ बर्ष की रही हो—मायावती बोली मै तुम्हें क्योंकर भूल सक्ती हूं तुम मेरे मौसेरे भाई दुर्जनसिंह हो—दुर्जनसिंह ने कहा मुझे तुम अपना ही समझो और हमारे साथ तुम वही भाव रक्खो जैसा लड़कपन में था—मैं अभी चला आता हूं घरमें पहुंच सुना कि तुम बागीचे की सैर को गई हो इस्से तुम से मिलने को मैं सीधा यहीं चला आया—मायावती ने फिर कहा क्या तुम से पिता जी से भेट नहीं हुई—अभी कहां' क्या वह यहीं हैं चलो हम को उन से मिलाओ यह कह दोनों वहां से चले कि सामने मदनलाल आता हुआ देख पड़ा—हम पहले लिख आये हैं मायावती के चित्त में एक अद्भुत यन्त्रणा उत्पन्न हुई

अब इस समय यह उस्की यन्त्रणा कहां तक बढ़ी इस्का अनुभव केवल कुलांगनाही कर सक्ती हैं—जिनके आंख का पानी ढरक गया है उन्हें क्या—मायावती मारे लज्जा के पृथ्वी में मानो गड़ सी गई इस्के चेहरे पर मुरझाये हुये गुलाब के समान झांई छागई ज्यों २ मदनलाल इस्की ओर बढ़ता चला आता था त्यों २ गैरत और उदासी इस्पर अपना दखल जमाती ही गई यहां तक कि यह इस समय आपे में न रही इस मुग्ध दशा में एक कदम आगे बढ़ना इस्को दुष्कर हो गया—

इधर रमणलाल एक वृक्ष के नीचे खड़ा हुआ यह सब देख आह की सांसें भर अपने को धिक्कारने लगा—सच है क्या समझ यह मुझे अपना कृपापात्र करे चमकीले साफ सुथरे कपड़ों के मुकाबिले हमारे चिथरे कपड़ों की कदर कहां हो सक्ती है—इस २ तरह के खयाल उस्के मन में ऐसा उमड़ आये कि आंख से आंसू टपकने लगा मानो गुलाब के फूल में मोती फले हों ॥

अब यहां पर प्रसङ्ग प्राप्त दुर्जनसिंह का भी कुछ परिचय देना आवश्यक है—आठ वर्ष बीत गये कि यह एक दफे मदनलाल के यहां आया था तब इस्के ढंग कुछ निराले ही थे—चेहरे मोहरे का बड़ा खूबसूरत था और उस समय जब इस्की लड़काई थी बड़ा होनहार मालूम होता था पर अब यह दुबला पतला लंबे कद का डाढ़ी मूछ आजाने से बिल्कुल बदल गया था यहां तक कि मदनलाल इसे देख पहलें न पहचान सका—स्वभाव में सीधापन मिलनसारी अब इस्में लड़कपन से भी अधिक आ-गई थी शील संकोच उदार भाव का यह एक नमूना था—हां कुछ थोड़ा सा घमण्ड तो अवश्य इस्में था पर इतना नहीं कि इस्के यार दोस्त उसे लख सकैं और घमण्ड में आय यह उनसे घिनाने लगा हो—आठ वर्ष के देशाटन में सब तरह के लोगों से मिलने झुलने और हर तरह की सोहबत में रहने से चतुराई और चालाकी में पूरा उस्ताद होगया था बस इतने ही से हमारे पढ़नें वालों को इस्के गुप्त चरित्र का इशारा

अच्छी तरह मन में आ सक्ता है—आठ वर्ष की सफर में कलकत्ता दिल्ली लाहोर सब छान आया था और उन २ शहरों के आवारा कुचाल कुचरित्र ऐयाशों में जहां गया वहां यह उन २ जमातों में नम्बर वन रहा—रसिकता खुशदिली शाह खर्ची में सरनाम हुआ बरन खरांची में बड़े २ फ़िज़ूल खर्चियों का सिर नीचा कर दिया—छक्केबाज़ औवल दरजे का था अपने बाप की कमाई में बालिग होने के पहले ही कई बार हाथ लगा चुका था। कईबार कई तोड़े गायब कर दिये इधर तीन वर्ष से बपौती मिरियास का खुद मुखतार मालिक बन गया था और तीनही वर्ष में सब उड़ाय मुफलिस हो जाने से अब इस्को मदनलाल का दरवाज़ा झांकना पड़ा—पर फ़िज़ूल खर्ची कम न हुई मसल है "लखरी जल गई ऐंठन न गई"—मदनलाल ने इसे अपना भानजा समझ खिलापन की भांत कुटुम्बी गृहस्थों की तरह रहने को कई बार लिखा किन्तु लिखने से क्या होता है सिखापन भी उसी पर असर पैदा करता है जिसमें होनहारी के अंकुर हों चिकने घड़े पर बूंद पड़ी ढरक गई—मदनलाल इस्का सब हाल जानता था तौ भी यह अपनी भलमनसाहत सिधाई और बड़प्पन से इस्के साथ वैसाही प्रीति का वर्ताव करना चाहा जैसे पहिले करता रहा—

सफर से यह पैदल आया यहां तक इस्के पास पूंजी न रह गई कि सवारी करता मदनलाल की कोठी जब एक मील रह गई तब इसने किराये की एक गाड़ी कर ली थी। एक जोड़ कपड़ा जिसे यह पहने था एक सफरी बेग के सिवाय और कुछ इस्के पास न था—यद्यपि मायावती को मदनलाल का सामना दुर्जनसिंह के साथ बड़े लज्जा का कारण हुआ था किन्तु मदनलाल ने इस्का कुछ खयाल न किया थोड़े से शब्दों में उसके आने का कारण पूछ मायावती को आज्ञा दिया बेटी तुम इसे लेजाओ और इसके लिये रसोई बनवाय इसकी खातिरदारी करो—दुर्जनसिंह बड़े तपाक के साथ बोला माना मैं तुमको किसी किस्म की

तकलीफ़ देने नहीं आया मेरे लिये आप लोग कुछ भी तरद्दुद न उठायें जब आप लोग भोजन करेंगे तब मैं भी खालूंगा इस समय मैं भी बाग की ठंढी हवा में आप लोगों के साथ घूमा चाहता हूं—मदन लाल ने अपने सरल स्वभाव से इस्की बातों का कुछ खयाल न कर बोला ऐसा ही हो और देर तक तीनों बाग में टहलते रहे—शेष—

मन की मनही में रही।

धिक् जैसे आये वैसे चले गये मन की मनही में रही जी का एक हौसिला न बर आया—इसी से योगीश्वरों ने निश्चय किया है कि संपूर्ण दुःख का मूल इच्छा है और यह संसार जो दुःख का आगार और निपट असार है सूत का बांधा हाथी सा इसी के सहारे से चल रहा है—तो अब निश्चय हुआ कि इच्छा या मन का मारनाही दुःखमय संसार की जड़ काटना है सो मन की वासना यहां मनही में रही जाती है तुम्हें अधिकार है इसे चाहो सुख समझो चाहो दुःख—मन चाहता था असंख्य रुपया पास होता घर के बाहर पांव न रखते मखमली कोच पर पड़े२ सड़ा करते हां में हां मिलाने वाले मुफ़ख़ोरे घेरे हुये चुटकी बजाया करते वैभव के उन्माद में उन्मत्त जगत् भर को तुच्छ समझते "हम चुनी दीगरे नेस्त" को अपना साकूला कर लेते न बड़े की बड़ाई रखते न छोटे की प्रीति अपने मतलब के दोस्त होते जिस्से अपना मतलब गंठते देखते वह चाहो कैसा ही खोटा और कुटिल होता अपना सिरताज बताते जिस्से अपने निज का स्वार्थ सिद्ध होते न देखते वह साक्षात् बृहस्पति होता तौ भी उस्से घिनाते और कुष्टी के समान उसे बरकाते सो कुछ भी न हुआ जैसे आये वैसे उठ खड़े हुये मन की मनही में रही—चित्त चाहता था लड़के का व्याह रोप आंख का सुख देखते बड़ी लम्बी चौड़ी मोहफ़िल साज संसार भर के अपावन चिकने मुह के ठग दुनियां साज़ मैले मन उजले तन वालों को बुला भेजते जिनकी खातिरदारी के पीछे

हैरान परेशान भला चङ्गा जी सांसत में डालते खेतकी फ्लौंकट मोल लेते सो एक भी न हुआ ईश्वर का कुछ ऐसा करतब कि लड़का बाला कुछ हुआ ही नहीं "आगे नाथ न पीछे पगहा" हुये भी लड़के तो कौड़ी २ को मुहताज दयाराम पर नित्य कड़ाके हुआ किये पेट पालना कठिन हो गया तो व्याह शादी कहां रही, जी का हौसिला एक भी न निकला जैसे आये वैसे कोरे के कोरे चल बसे ॥

जी में हौसिला था कहीं के ऊंचे दरजे के बड़े ओहदेदार सिविलियन करनल या जेनरल होते, दस पांच वर्ष की नौकरी में खूब रुपया जमा कर लेते बड़ी सी बड़ी तनख़ाह पाते, गुलछर्रे उड़ाया करते, अंगरेज़ी बस्ती में रह स्वर्ग के सुख का अनुभव करते, हिन्दुस्तान के रहने वालों को हेच समझते, बड़ी तनख़ाह के अनुसार बड़ी पेनशन हासिल कर अन्त को विलायत सिधार वहां इंडियन नौवाब की उपाधि पाते, सो एक भी न हुआ मन की मनही में रही जैसे आये वैसे चल बसे ॥

जी चाहता था बड़े भारी पण्डित होते पाव भर सुंघनी का नित्य कलेवा करते लम्बी धोती खड्डेदार पगड़ी आधी नाक से लिलार तक लम्बा टीका अपनी वज़ा में दाखिल करते और रुपये को अपना सिद्धान्त अपनी पण्डिताई का सारांश जीवन का सर्वस्व मानते—रुपया मिलता तो धर्म कर्म आचार विचार कुलीनता सब खो बैठते चाहो कितनी ही अप्रतिष्ठा और बदनामी होती हम नापदान में मुंह मारने से बाज़ न आते—पाण्डित्य भी हमारा केवल घोखन्त विद्या मात्र होता शेखर और मनोरमा के पीछे पच मरते देश और काल के अनुसार बर्त्ताव हमारी पण्डिताई का अंग न होता पर क्या कहैं मन की मनही में रही एक बात भी सिद्ध न भई जैसे आये वैसे चल बसे—

मन की उमंग थी हमे कोई योगसिद्धि प्राप्त होती बड़े से बड़े अमीर और राजाओं को योगसिद्धि के द्वारा खींच बुलाते उनके मिज़ाज में जो रजाई और अमीरी की बू सवार है उस्की दवा कर डालते उन का

इस धन देश की भलाई के काम में लगाय असद् व्यय में खरच होने से उसे रोक लेते—वृथा पुष्ट मोटेमल को पैदकर उनसे चक्की पिसवाते—धर्मांकुश विहीन नव शिक्षित नेचरियों को पकड़ २ कलकत्ते के ब्लैक होल में बन्द कर अपना कुढ़ा जी ठंढा करते सो सब एक भी न हुआ आशाही आशा आंख मुंद गई और ऐसा सोये कि फिर न जगे—इत्यादि और बहुत से उदाहरण हमारी ऊंची उमंग और अपूर्ण अभिलाषाओं के हैं जिनमें थोड़े से यहां आप लोगों को कह सुनाया औरों को भी ऐसही समझ लीजिये ॥

खोटी कमाई का फल ।

समझदार को अन्धी समाज की पैरवी—दरिद्र दशा में कन्या का जन्म, मुफलिस कलांच को बड़ा कुटुम्ब—हिन्दी अखबार की एडीटरी—रोज़गारियों को चुंगी और लइसेंस—नादेहन्द ग्राहकों को हमारा बार २ का तकाज़ा—विरक्त बीत राग को गृहस्थ का साथ—हम लोगों में आपस की ना इत्तिफाकी का बीज बोने वाला सबों का एक साथ सह भोजन के परहेज़ की जड़ चौका—पढे लिखे का कुन्देनातराश के साथ बसो बास—रूपवान् को कुरूपा भार्या—निर्द्धनी को शाहखर्ची—नित्य के रोगी को डाकूरी चिकित्सा—द्रव्याढ्य को कृपणता—बूढ़े को आशिकतनी—बुद्धिमान् को निर्द्धनता—पेट की अग्नि में झुलसते हुये भुक्खड़ को मान हानि का खयाल । इत्यादि—

नई गढन्त के नये २ अर्थ ।

कलियुग के देवता—बिलाइत की स्वर्गभूमि के निवासी निग्रहानुग्रह समर्थ श्वेताङ्ग ॥

अजीब जानवर—हमारे देश पुराने ढंग के पण्डित ।

सस्ते से सस्ता रोज़गार—हिन्दी पत्रों की एडीटरी ।

आंख रह ते भी अन्धे—जिन्हों ने फैंस्सीफेयर में मेमोंका ताण्डव नृत्य नहीं देखा।

नरकनिवास की नकल—छोटे से मकान में अचार से गंजे हुये एकान्न भोजियों का कुनबा।

भाग्य के सिकन्दर—मेनचेस्टर के जुलाहे।

अभागे—हिन्दुस्तान के रोज़गारी।

नरक—दुर्भिक्ष कर पीड़ित भारत की वसुन्धरा।

हलके से हलका—याचक "तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचकः"

देश के सत्यानाश की सुगम उपाय—बाल्यविवाह।

पवित्र आचार की पहिली सीढ़ी—पुनीत होटलों का भोजन।

सोमपान के बड़े भाई—सोडावाटर—ह्विस्की—शाम्पेन।

नफासत की नाक—विलाइत की कारीगरी।

नई रोशनी की पहचान—सिर पर झौआ—मुह में फलीता पांव में बूट—आंख पर चश्मा।

पवित्र तीर्थ—होटेल—देव नदी—टेम्स या याडेन।

पापिष्टनराधम—निकिञ्चन मुफलिस।

गुरुर्गुरु उपदेष्टा—घरवाली।

अवश्य कर्त्तव्य—खुशामद—सर्वथा अकर्त्तव्य—देश का हित।

जंगली भाषा—संस्कृत या हिन्दी—स्वर्गीय भाषा अरबी पारसी या उर्दू – दर्शन फिज़िकल साएन्स।

धर्मग्रन्थ—अंगरेज़ी की किताबें नोवेल्स।

भूरसीदक्षिणा—अर्दली के चपरासियों को इनाम।

चारवरण—अंगरेज़, मुसल्मान, पारसी, हिन्दू।

ब्राह्मण—पादरी साहब—शूद्र—हिन्दू।

पुण्यवान्—दरबार में कुरसी पाने वाला।

कुलीन—रुपये वाला "यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः"।

सत्कर्म—जिस्से साहब लोग प्रसन्न हों, दान—लेडी डफरिन फण्ड में चन्दा, जघन्य, इम । इत्यादि ॥

हिन्दी की पुकार ॥

प्रभुवर श्रीमान् ऐंटोनी मेगडानेल साहब बहादुर को न्यायशील और सर्व प्रजाहितैषी समझ दीन हीन हिन्दी भी न्याय के लिये एक बार फिर पुकार मचाने के साहस करने में सन्नद्ध हुई है और यह इस्की अन्तिम पुकार है क्योंकि यदि ऐसे न्यायशील के अधिकार में इस्के दिन न बहुरे तो निश्चय फिर कभी न बहुरेंगे—प्रजा की भलाई के अनेक प्रश्नों में सब से भारी प्रश्न देश भाषा तथा देशी अक्षरों का है जिस्के द्वारा प्रजा के बीच विद्या का फैलाव बड़ी सुगमता के साथ हो सक्ता है—बड़े खेद की बात है कि इस विषय में उक्त न्यायशील प्रभुवर को उस्के लिये प्रमाण देना पड़े जिस्का छिन भर भी विचार करने से मन में कोई सन्देह नहीं रह जाता कि यह कहां तक सत्य और उपयुक्त है—यद्यपि बड़े२ विचारवान् बुद्धिमानों ने यह निश्चय करा दिया है कि इस देश की भाषा हिन्दी है उर्दू नहीं है तो भी उर्दू के पक्षपाती अपनी गीत गाये ही जाते हैं—अतःनिराश्रय सब भांत सहायहीन हिन्दी सविनय अपने प्रभुवर से प्रार्थना करती है कि हमारा पक्षपात रहित विचार किया जाय कि इस देश की भाषा वही हिन्दी या नागरी है जो अनादि काल से लोगों के व्यवहार में चली आती है और बोली तथा लिखी जाती है—चन्द कवि का पृथ्वीराज रायसा जो कुछ दिन हुये एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता के द्वारा छप चुका है इसी हिन्दी भाषा और इन्हीं देवनागरी अक्षरों में छपा है इस्से सिद्ध होता है कि पृथ्वीराज के समय से अर्थात् मुसल्मानों के इस देश में आने के पहिले से हिन्दी यहां प्रधान थी और अब भी ब्राह्मण से ले चमार पासी तक इसी हिन्दी को बोलते और लिखते हैं जो

बोलने तथा लिखने में अत्यन्त सीधी सरल और सरस हैं—यद्यपि कचहरियों में एक कुटिल और रूखी भाषा राज काज में गरज रही है जिस्से विद्या और उत्तम गुणों का देश से उच्छेद हो गया उत्कोच प्रिय अमलों को अदालती कागजों में एक श्रेणी में जाल बनाने और का और लिखने का सुबीता हो रहा है तो भी क्या राजा क्या रंक क्या पण्डित क्या मूर्ख सब हिन्दी ही बोलते हैं—गांव के लोग जब वकील मुख़ारों के पास जाते हैं तो पहले अपना हाल हिन्दी में कह सुनाते हैं फिर जब उसी भाषा में अरबी फारसी की गढ़न्त गढ़ी जाती है तब वे दीनहीन दिहाती बेचारे उस्के समझने में असमर्थ हो जाते हैं—इस्में सन्देह नहीं, हिन्दी को पढ़ा अनपढ़ा सब समझ लेता है उर्दू को केवल अरबी फारसी पढ़े जान सक्ते हैं—इसी बिचार से गवर्नमेंट भी जो बात सबों के जताने की होती है उस्को हिन्दीही में छपाय इश्तिहार करती है—छोटे लड़के जब फारसी की किताबें पढ़ने लगते हैं तो उन्हें फारसी शब्दों का अर्थ इन्हीं हिन्दी शब्दों में बतलाया जाता है इसी लिये लड़कों को खालिकबारी घोखाई जाती है जिस्को बहुत दिन हुये खुसरू सुलतान ने फारसी शब्दों का अर्थ हिन्दी में लिखा है—क्या शहर क्या गांव सब ठौर मुसल्मानों के घर की स्त्रियां भी हिन्दी भाषा की गीत गाती हैं—धर्मसम्बन्धी गीतों में नबी पैगम्बर रसूल का नाम छोड़ और सब शब्द हिन्दी के रहते हैं और दूसरी प्रकार की गीतों में केवल हिन्दी के रसीले शब्द भरे रहते हैं—हिन्दी के समझने और उर्दू के न समझने का प्रमाण इसी से प्रगट है—

इस पश्चिमोत्तर और अवध में अनुमान साढ़े चार करोड़ मनुष्य रहते हैं उन्में ५९ लाख के अनुमान मुसल्मान हैं बाकी हिन्दू हैं जिनकी मातृभाषा किसी न किसी रूप में हिन्दी है—रहे मुसल्मान सो गांव के रहने वाले जितने मुसल्मान हैं सब हिन्दी ही बोलते हैं कोई ऐसा नहीं है जो हिन्दी को न बोल सके या समझ सक्के—दस मुसल्मान में ९ शुद्ध हिन्दी बोलते हैं कारण यह कि हिन्दी देश भाषा है और उर्दू गढ़न्त वाली किताबी भाषा है जिस्के सीखने के लिये बहुत समय चाहिये—अब साधा-

रख लोगों को इतना विभव और अवकाश कहां कि इतने दिनों तक भाषा सीखा करें इसलिये उनकी शिक्षा "प्रइमरी इज्यूकेशन" उसी भाषा के द्वारा होना चाहिये जिसे वह लड़काई से सुनने और बोलने लगते हैं- सुगम और सरल होने के सिवाय जो माधुर्य और लालित्य हिन्दी में है वह उर्दू में आना दुर्लभ है-गोस्वामी तुलसीदास जी ने तरह २ के छन्दों में रामायण, विनयपत्रिका, गीतावली इत्यादि ग्रन्थ इसी भाषा में रचे हैं कैसे २ गूढ़ और अनूठे आशयों को सहज में दर्शाया है उससे भी बढ़ कर सूरदास के सवालाख विष्णुपद ऐसे हैं कि जिन्हें सुन भक्ति के उद्गार से पुलकावली हो आती है-सच है रामायण और सूरसागर हिंदी में न रचा जाता भक्तमाल के कवित्त न बनते तो वैष्णव मत इतना कभी न फैलता- कबीर, दादू, मीराबाई, कुम्भनदास, क्षीरस्वामी, प्रभृति अष्ट छापवाले वैष्णवों ने अपने मत को इसी भाषा के सहारे भारतखण्ड में बड़ी धूम धाम के साथ फैलाया-कुछ आश्चर्य नहीं जिस भाषा के सहारे बिना सेना और ऐश्वर्य के निरे भिक्षुक और विरक्तों ने अपना मत और उपासना की बातें जैसा चाहा वैसा चलाय दिया तो अखण्ड प्रतापवती गवर्नमेंट इसी हिंदी भाषा के सहारे सर्वसाधारण की शिक्षा का संकल्प करे तो देश में मूर्खता फिर कैसे रह सक्ती है-इस अवसर पर यह कहना बहुत उचित है कि गवर्नमेंट ने जब कि इस देश को सब भांत निष्कण्टक कर दिया तो मूर्खता पिशाची के दूर बहाने का यह सुगम उपाय क्यों नहीं अंगीकार करती-यूरोप देश की विद्यारूपी बारूद को देवनागराक्षर रूप तोपों में भर मूर्खता पिशाची को जड़ पेड़ से उखाड़ सक्ती है क्योंकि भीतर बाहर हर गली कूचों में झोपड़ियों से लगाकर शाही महलों तक सब ठौर इन देवनागराक्षरों की घुस पैठ बड़ी सुगम है-

हिंदी के सहज और रोचक होने से आल्हा ऊदल की लड़ाई का कड़खा जब ढोल बजाय के गाया जाता है तब सुनने वालों की भीड़ इतनी जमा हो जाती है कि जगह नहीं मिलती-यही हाल पादरी

साहबों के बाज़ में देखी जाती है उनका बाज़ हिंदी में होने से बड़ी भीड़ इकट्ठी हो जाती है और उनकी पुस्तकें हाथों हाथ बिक जाती हैं—पर हमारी सर्कार विद्यारूपी अमृतकुण्ड को अरबी फारसी के कठिन शब्द रूप बज्र कपाट से ऐसा बंद कर रक्खा है जिस्से सर्वसाधारण प्रजा मूर्ख और निरक्षर होती जाती है—गवर्नमेंट इस बात का बिल्कुल खयाल न कर थोड़े से अरबी फारसी के पक्षपातियों के कहने से संदेह में पड़ी है कि कदाचित् हिन्दुस्तानियों की भाषा सिवाय हिंदी के कुछ और ही है—हिंदी भाषा हिन्दुस्तानियों का तीनों काल में साथ नहीं छोड़ सक्ती यदि ब्रिटिश गवर्नमेंट अपनी कीर्ति के झंडे को चिरस्थायी किया चाहती है तो इस बात पर ध्यान दे और सच्चे विचार से यहां की भाषा हिंदी मान जिस्में सर्वसाधारण की शिक्षा " मास एज्युकेशन " अच्छी तरह हो इसलिये अपनी प्रभुता और आज्ञा के बल हिंदी ही भाषा में सबों को शिक्षा दे और इस देश की प्रजा का सुख स्थापन कर मूर्खता का देश से उच्छेद करै—और भी जहां देवनागरी अक्षरों में ८ दिन में बालकों को लिखना पढ़ना आ जाता है वहां उर्दू अक्षरों को बरसों में लिख पढ़ सके—उर्दू अक्षरों की तारीफ़ यहां तक है कि दस २ पांच २ बरस यत्न करने पर भी लोग दूसरों का लिखा अक्षर बड़ी कठिनाई से लिख पढ़ सके हैं और कभी २ अपनाही लिखा घंटों में अटक २ पढ़ते हैं और कुछ का कुछ पढ़ा जाता है—फिर साधारण शिक्षा उसी भाषा के द्वारा ठीक २ दी जा सक्ती है जिस्में उन लोगें की जिनके बालकों को शिक्षा दी जाती है प्रीति हो—उर्दू भाषा में कई करोड़ प्रजा की प्रीति का होना तो दूर रहा एक तरह पर उससे चिढ़ है—मुसल्मान बादशाहों के समय से अब तक ऊंची २ नौकरी की लालच दिये जाने पर भी थोड़े लोगें को छोड़ देश के अधिक लोगें ने उर्दू में प्रीति न की—सिवाय उन मुसल्मानों के जो कचहरियों में नौकर हैं मुसल्मान भी प्रायः अपना बही खाता हिंदी ही में रखते हैं—मंद्राज, बम्बई, बंगाल, विहार में देशी भाषा की उन्नति के कारण कैसा अधिक विद्या का प्रचार है और जातीय उन्नति के कितने

चिन्ह वहां देख पड़ते हैं—स्त्रीशिक्षा विद्यावृद्धि का मूल है और स्त्रियां कभी उर्दू के सीखने में प्रीति करेंगी इस्का विचारना ही व्यर्थ है—इस्का प्रमाण भी है सर विलियम म्यूर ने स्त्री शक्षा की पुस्तकें उर्दू हिंदी दोनों में बनवाई पर हिंदी पुस्तकें उर्दू पुस्तकों की अपेक्षा बहुत अधिक बिकीं—इन सब बातों का निवेदन कर हिंदी बार२ अपने प्रभुवर से प्रार्थना करती है कि साधारण शिक्षा तथा प्राथमिक शिक्षा "प्रइमरी इज्युकेशन" में मुझे स्थान मिलै और अदालतों में हिंदी अक्षरों के प्रचार से प्रजा अनेक प्रकार के अन्याय और जाल फ़रेब से बचै—गवर्नमेण्ट यदि न्याय पर दृष्टि दे तो हिंदी का प्रचार करे और इस्की उन्नति में जो२ बाधक हों उसे तुरंत दूर हटावे जिस्से असंख्य प्रजा मूर्खता के घनान्धकार से छूट विद्या का प्रकाश पाय मानसिक शारीरिक और धर्मसम्बन्धी उन्नति के द्वारा अनंत काल तक श्रीमान् पश्चिमोत्तर और अवध देशाधिपति सर एण्टोनी मेगडानेल साहब बहादुर को स्मरण करती रहे—प्रतापशाली उक्त श्रीमान् की न्याय की ओर विशेष दृष्टि है इसलिये हिंदी तथा हिंदी के भक्त हम सब लोगों ने अच्छा अवसर पाय न्याय के लिये पुकार मचाने का साहस किया है—हमें निश्चय है हमारी यह प्रार्थना हमारे प्रतिपक्षियों को बड़ेही सरदर्द का बाइस होगी—उक्त श्रीमान् यदि न्याय किया चाहेंगे तो वे लोग बड़े बाधक होंगे किन्तु उनकी बातों का खयाल न कर शुद्ध न्याय की ओर झुकना केवल श्रीमान्ही ऐसे सुयोग्य विद्यारसिक से सम्भव हो सक्ता है—किमधिकम्—

संस्कृत के प्राचीन कवि और ग्रन्थकारों का संक्षिप्त इतिहास।

कय्यट।

पतञ्जलि के महाभाष्य पर भाष्यप्रदीप नामक तिलककार इनके पिता का नाम जय्यट था काव्यप्रकाश के कर्त्ता मम्मटभट्ट इनके भाई थे—काश्मीर

का स्थान सदा से रहा इसमें कोई सन्देह नहीं—धन्य है वह पृथ्वी जहां ऐसे उद्भट पण्डितों ने जन्म ग्रहण कर देश के सौभाग्य को शतगुण बढ़ाया—यह काश्मीर के पामपुर नामक ग्राम में पैदा हुये—जन्मावस्था ही से बड़े दरिद्र थे किन्तु व्याकरण के पठन पाठन में ऐसे व्युत्पन्न हो गये कि विद्यार्थियों को भाष्य की कठिन से कठिन पङ्क्ति कण्ठाग्र पढ़ाते थे और कभी पुस्तक नहीं देखते थे—कात्यायन या वररुचि जिन्हों ने पाणिनि के सूत्र पर वार्तिक बनाया है जहां पर भाष्य में कुण्डलिका बना रक्खा था जिस्के तात्पर्य यह थे कि इतना भाग भाष्य का नहीं लगता उसे भी कय्यट ने साफ किया और कात्यायन के बहुत से वार्तिकों का प्रत्याख्यान कर दिया—कय्यट के भाष्यप्रदीप देखने से मालूम होता है कि हकीकत में बहुत से वार्तिक कात्यायन ने व्यर्थ बनाया—भाष्य उन्हें खुला नहीं इसलिये पाणिनि की त्रुटि पूरी करने को उन्हों ने अपनी समझ से नये२ वार्तिक गढ़े—एकबार दक्षिण के एक पण्डित कृष्णंभट्ट नाम के कय्यट से मिलने को आये और देखा तो यह रसरी बट रहे थे और भाष्य विद्यार्थियों को कण्ठ पढ़ा रहे थे भाष्य की उन पङ्क्तियों को जो कुण्डलिका के भीतर थी और किसी को साफ नहीं होती थी उसे भी बतलाते थे—कृष्णंभट्ट इनके अद्भुत पाण्डित्य और परम दरिद्र दशा पर बड़े आश्चर्यित हुये और वहां के राजा से जाकर यह हाल कहा—राजा ने बहुतसा अन्न और एक ग्राम छात्रवृत्ति की भांत इनकी जीविका नियत कर दिया और सनद लिख दिया—कृष्णं भट्ट जब सनद समेत कय्यट से आ मिले तो इन्हों ने उस छात्रवृत्ति के लेने से दो कारणों से इनकार किया एक तो यह कि विना परिश्रम यह वृत्ति दी जाती है दूसरे यह राजा का धान्य है—अब के ब्राह्मण एक२ पैसे के लिये सिर फोड़ते हैं जनेऊ तोड़ कुआं में गिरते हैं और राजा की कौन कहे महा अंत्यज धोबी चमार मोची तक का दान नहीं छोड़ते—कुछ दिन के उपरान्त कय्यट देशाटन के लिये निकले काशी में पहुंच सभा में वहां के पण्डितों को परास्त किया और पण्डितों की प्रार्थनानुसार अपना बनाया हुआ भाष्य का तिलक उनके बीच प्रचार

पाने को दे दिया—इससे सिद्ध हुआ कि भाष्यप्रदीप ग्रन्थ के आकार में काशी में संग्रह किया गया काश्मीर में नहीं—पहले इस के कय्यट ने अपना बनाया तिलक अलग २ खर्रों में फुटकर टिप्पणी की भांत लिख रक्खा था—कय्यट का समय विक्रमाब्द की आठवीं शताब्दी मालूम होती है क्योंकि पामपुर को जहां कय्यट पैदा हुये काश्मीराधिपति अजितापीड़ ने बसाया था और अजितापीड़ विक्रम के आठवें शताब्द में हुये हैं—पुराने पण्डितों में सायण माधव जिन्हों ने वेदभाष्य किया है अपने ग्रन्थ में कय्यट का प्रमाण देते हैं—डाकृर केलहार्न कय्यट को ईसवी सन् की तेरहवीं शताब्दी में कहते हैं पर यह ठीक नहीं है विलाइत वालों की सदा यही नीयत रहती है कि यहाँ के प्राचीनता की हर एक बातों को जहां तक हो सके नवीन सिद्ध करें—देवीशतक नाम का एक चित्र काव्य भी कय्यट का बनाया काश्मीर में पाया जाता है—सुभाषितावली में कय्यट के थोड़े से श्लोक किसी राजा की प्रशंसा के दिये गये हैं इससे निश्चय होता है पीछे से किसी राजद्वार से भी इन का कुछ सम्बन्ध होगया था और वे श्लोक ये हैं—

सत्यमाचक्ष्व किं नाथ तवैतदद्भुतविचेष्टितम्।
श्रुतः सुखकरो दृष्टो मनो मोहावहोसि यत्।

शूरोसि नूनमुदितः पुरतो यदारान्नारीजनस्य हृदयाम्बुरुहः प्रबोधम्।
धत्से निशाततरबाण उदग्रधन्वा कामःपदातिरिति तावकएष हन्ति॥
रत्नाकरोसिनतुजातुभवान्समुद्रो,नोगोत्राभिच्चविबुधानवसिप्रयत्नात्।
नित्यं वृषेण चरसीहनकृत्तिवासाः सर्वप्रजापतिरपंकजमध्यवर्त्ती॥

सुबन्धु ॥

वासवदत्ता आख्यायिका के कर्ता सुबंधु बड़े अभिमानी कवि हुये हैं—वासवदत्ता नाम का छोटा सा ग्रन्थ के अतिरिक्त और कोई काव्य विद्या

सुबंधु रचित नहीं देखा गया सो भी अत्यन्त क्लिष्ट कल्पना पूर्ण और गद्य रचना है वासवदत्ता के किस्से का "प्लाट" बन्दिश किसी तरह रोचक नहीं है काठिन्यता सुबंधु के शब्दों में इतनी भरी हुई है कि एक २ शब्दों के दो २ तीन २ अर्थ निकलते हैं—इसी क्लिष्ट कल्पना के कारण किसी कवि ने कहा है—

कवीनामगलद्दर्पो नूनं वासवदत्तया ।
शक्त्येव पाण्डुपुत्राणां गतया कर्णगोचरम्" ॥

और भी बाणभट्ट के श्रीहर्ष चरित्र में यह श्लोक है—

सुबन्धुर्बाणभट्टश्च कविराज इति त्रयः ।
वक्रोक्तिनिपुणा ह्येते चतुर्थो विद्यते न वा ॥

ऊपर के श्लोक में सुबंधु बाणभट्ट और राघव पाण्डवीय के कर्त्ता कविराज का नाम साथ ही पढ़ा गया है इस्से मालूम होता है सुबंधु बाण के समकालीन थे पर सुबंधु ने बासवदत्ता में विक्रम के नाम बहुत विलाप किया है इस्से निश्चय होता है यह विक्रम के समय हुये हैं पर यह कौन से विक्रमादित्य थे सो मालूम नहीं श्लोक यह है—

"सारसवत्ता विहता नवका विलसन्ति चरति नो कंकः ।
हंसीव कीर्त्तिशेषं गतवति भुवि वीरविक्रमादित्ये ॥

तिलककार ने इस्का कई अर्थ किया है—यदि बाण का समय सुबंधु का माना जाय तो बाण विक्रमादित्य की छठवी शताब्दी के अन्त में और सातवीं शताब्दी के आदि में हुये हैं वही समय सुबंधु का भी निश्चय किया जा सक्ता है—किसी २ का मत है कि सुबंधु बाणभट्ट के मामा थे जो हो कविता सुबंधु की उत्तम पर क्लिष्ट होने से अरोचक अवश्य है—कवि ने अभिमान के वश जैसी प्रौढ़ोक्ति किया है वैसी कविता इनकी नहीं है—

वासवदत्ता के तिलककार कृष्णराम के पुत्र त्रिपाठी शिवराम पण्डित ने दर्पण नाम की टीका इसकी बनाय सुबन्धु के काव्य को बहुत सरल करदिया हम सुबन्धु को इतना धन्यवाद न देंगे जितना टीकाकार शिवराम पण्डित को—

"सुबन्धुवर्गबोधाय सुबन्धुकवि सत्कृतेः।
"रम्या व्याख्यादर्पणाख्या शिवरामेण तन्यते॥"

सिवाय दर्पण के शिवराम ने दण्डी के दशकुमारचरित्र का भी तिलक बनाया है उणादि सूत्र की व्याख्या आदि औरभी कई ग्रन्थ शिवराम त्रिपाठी रचित हैं—किस समय में यह हुये नही मालूम होता किंतु जैसी वासवदत्ता की व्याख्या इन्हों ने किया है उससे प्रगट होता है कि बड़े व्यापक पण्डित थे व्याकरण और काव्य में अच्छा परिश्रम किये थे—

कविराज॥

राघव पाण्डवीय नाम का १३ सर्ग में अद्भुत काव्य कविराज ने रचा है—एक ही श्लोक में बराबर १३ सर्ग तक रामायण और भारत की कथा का निर्वाह किया है और ऐसे २ शब्दों का प्रयोग अपनी कविता में किया है जिनके बराबर दो २ अर्थ हैं—ग्रन्थ के आरम्भ में इन्हों ने यह श्लोक दिया है—

"पदमेकमपि श्लिष्टं वक्तुं भूयान्परिश्रमः।
कथा द्वयैकनिर्वोढुः किन्धरापतितोधिकम्॥
श्रीमद्रामायणं गंगा भारतं सागरो महान्।
तत्संयोजनकार्यज्ञः कविराजो भगीरथः॥"

धाराधिप भोजराज की सभा के ५०० पण्डितों में प्रधान पण्डितों के

बीच कविराज का नाम भी दिया गया है—इन्हीं ने अपने काव्य में भोजराज के चचा मुंजराज का ज़िक्रि भी किया है॥

"श्रीविद्या शोभिनो यस्य श्रीमुंजादियतीभिदा।
धारापति रसावासीदयं तावद्धरापतिः॥"

श्री और विद्या से सुशोभित हमारे राजा कामदेव और धाराधिपति मुंजराज से इतना ही फरक है कि मुंजराज भी श्री और विद्या से सुशोभित हो केवल धरापति हैं और ये धरापति हैं—कामदेव कादम्ब वंश में उत्पन्न थे और उन्हीं की सभा के कविराज प्रधान पण्डित थे—कामदेव कोशिया पहाड़ी की पर्वतस्थली के राजा थे जो बंगाल में है इससे मालूम होता है कविराज बंगाली थे—

अस्ति कादम्बसन्तान सन्तानकनवांकुरः।
कामदेवक्षमादेवः कामधेनुर्जनेश्वरः॥

इत्यादि बहुत से श्लोक अपने राजा की प्रशंसा के ग्रन्थ के प्रारम्भ में दिये हैं—मुंज तथा भोज ईस्वी सन् की आठवीं शताब्दी में हुये हैं वही समय कविराज का भी निश्चय किया जा सक्ता है—भट्टनारायण के जीवनचरित्र में जो ५ ब्राह्मणों को कन्नौज से बुलवाना लिखा गया है उसे कविराज ने इसी कादम्ब वंशी कामदेव की तरफ इशारा किया है॥

"आनेतामध्यदेशात्प्रवचनविदुषां सोमपां ब्राह्मणानाम्।"

जयन्तीपुर कामदेव की राजधानी थी—

"जेताभूमेर्जयन्तीपुरपुरमथनश्रीपदाम्भोजभृंगः"॥

अंग देश कुंतल देश कामरूप इन सब देशों को कामदेव ने जीत कर अपने अधिकार में किया बल्कि कांची और मथुरा तक के राजा को अपना करद कर डाला इसे भी कविराज ने एक श्लोक में संग्रह किया है—

"सुबन्धुर्बाणभट्टश्च कविराजइति त्रयः"

इस्में सुबंधु और बाण के साथ कविराज का नाम क्यों संग्रह किया गया इस्का कुछ भेद नहीं खुलता—बंगाल के आधुनिक पण्डित प्रेमचन्द्र तर्क वागीश ने कपाट विपाटिका नाम की टीका बनाय कविराजकृत राघव पाण्डवीय को अत्यंत सुगम कर दिया—

अर्थान्ग्रहीतुमिह काव्यपुरे प्रविश्ययुष्माकमस्ति यदि चेतसि सत्यमिच्छा। काठिन्यदुर्द्धरकपाट विपाटिकां मे टीकां तदा प्रथमेव करे कुरुध्वम्॥

सिवाय इस्के प्रेमचन्द्र ने और भी बहुत से नैषध आदि काव्य और नाटकों का तिलक बनाया है—काशी के निरे स्वार्थ लोलुप पण्डितों की अपेक्षा प्रेमचन्द्र ने बहुत कुछ उपकार किया है और बड़े उत्कृष्ट पण्डित हुये इधर हाल में इनके समान काशी में कोई पण्डित नहीं हुआ—सुना है वृद्धावस्था में जब यह काशी सेवन को आये तब काव्यप्रकाश जो अत्यंत क्लिष्ट ग्रन्थ साहित्य का है कण्ठ पढ़ाते थे और काशी के अधिकारी प्रसिद्ध पण्डित भी जाकर इनके शिष्य बने और न्याय के ग्रन्थ तथा काव्यप्रकाश इनसे पढ़ा॥

आर्यभट्ट।

आर्यभट्ट का जन्म ३८६ संवत् का निश्चय किया गया है—खगोलविद्या और गणित तथा फलित ज्योतिष के व्यास, वशिष्ठ, पराशर, गर्ग, भृगु, आदि १८ ज्योतिष के आचार्य ऋषियों के बीच माने गये हैं जिनका ठीक२ पता लगाना कि ये सब कब हुये और कौन२सा ग्रन्थ किस२ विषय पर कब लिखा सर्वथा असम्भव है—इन ऋषियों के बनाये ग्रन्थ आर्ष समझे जाते हैं और

आर्ष ग्रन्थ की आड़ लेकर इस समय के ब्राह्मण और पण्डितों ने प्रत्येक विषय में मनमानी गढ़ंत कर खातिरख्वाह अपना मतलब साध रहे हैं—और भी जिन ऋषियों के ग्रन्थ प्रत्यक्ष प्रचलित हुआ और उनके मूलग्रन्थों में प्रक्षिप्त भी न कर सके उनको वृद्धपराशर वृद्धमनु वृद्धगर्ग इत्यादि नाम से नई २ गढ़ंत किया—ग्रन्थों में जहां कहीं ऋषियों के नाम के आगे वृद्ध शब्द हो वह सब कल्पित और निर्मूल हैं—किंतु मनुष्यों में जो आप्त और आर्ष नहीं हो सके आर्यभट्ट सब से पहले हैं—आर्यभट्टीय तन्त्र नाम का ग्रन्थ इनका बनाया हुआ है गणित और खगोल को बड़े विस्तार के साथ लिखा है—पाटीगणित बीजगणित रेखागणित आदि गणित के प्रत्येक विषयों का विशद वर्णन इसमें है—आर्यभट्ट ने अपनी धुरी पर पृथ्वी का घूमना भी सिद्ध किया है किंतु टीकाकारों ने आंख में धूर झोकने की भांत आर्यभट के लेख का अर्थ पलटा है जिसमें पुराणों में जो पृथ्वी को अचला और स्थिरा लिखा गया है वह झूठा न हो—आर्यभट के सम्बन्ध में भी बृहदार्यभट्ट तंत्र नाम का ग्रन्थ प्रसिद्ध है पर सर्वथा आधुनिक है—लल्ल नाम के सुप्रसिद्ध गणितज्ञ आर्यभट के शिष्य थे लल्ल ने अपने गुरु आर्यभट के ग्रन्थ पर बहुत अच्छा त्रिस्कन्धात्मक तिलक बनाया है जिसमें इन्हों ने अपने गुरु के लिखे सिद्धांतों को खूब साफ किया है ॥

आचार्यार्यभटोदितं सुविषमं व्योमौकसां
कर्म यच्छिष्याणामभिधीयते तदधुनाललेनधीबृद्धिदम्"

आर्यभट के और २ शिष्य प्रशिष्य प्रभा कर विजय नंदि आदि भी हुये हैं—

लल्लकृत गणित गोलाध्यायात्मक ग्रन्थ छप भी गया है—लल्ल के बनाये फलित के ग्रन्थ भी हैं मुहूर्त्तचिंतामणि की पीयूषधारा नाम टीका में कई जगह लल्ल का प्रमाण दिया है " यदाह लल्लः " ऐसा कह लल्ल के श्लोक लिख दिये हैं—

"त्रिस्कन्धविद्याकुशलैकमल्लो लल्लोपि यत्राप्रतिमो बभूव"

आर्यभट्ट कवि भी बहुत अच्छे थे—जिनकी कविता का एक उदाहरण सुभाषितावली में दिया गया है—

"एकत्र नास्य रतिरित्यवधूयमानः,
कोपादिवश्वसनकम्पविघूर्णितायाः।
रक्तच्छदं मधुसुगन्धि सरोरुहिण्या,
भृंगश्चुचुम्ब कमलाननमादरेण ॥

उक्त कविता का गम्भीर भाव आर्यभट्ट की प्रतिभा का प्रकाशक परमोत्तम उदाहरण है ॥

भर्तृहरि ॥

वैराग्य शृङ्गार और नीति नाम के तीन शतक भर्तृहरि रचित सर्वत्र प्रचलित हैं नीति और वैराग्य शतक के एक २ श्लोक बहुमूल्य हैं जिनमें नये से नये अनोखे खयाल भरे हुये हैं—सामयिक बातों पर हर समय कहने लायक हैं—इनके कहे हुये वाक्यों पर अमल करे तो पूर्ण नीतिज्ञ और पूरा विरक्त होने पर फिर कोई सन्देह न रहे—एकादश स्कन्ध भागवत भगवद्गीता और वैराग्यशतक को बिना समझे जो विरक्त हुआ है वह कच्चा ज्ञानी है—ऐसाही शृङ्गारशतक भी अपने ढंग का निराला है—भर्तृहरि के परतो पर जगन्नाथ पण्डितराज ने भामिनीविलास को तीन खण्डों में रचा है पर भर्तृहरि के पाण्डित्य को नहीं पहुंचे—वाक्य प्रदीप नामक व्याकरण का एक ग्रन्थ भी इन का बनाया है जिसमें भाष्य के आशयों को इन्हों ने कारिकाबद्ध किया है इस्से मालूम होता है भर्तृहरि पूर्ण वैयाकरण थे—भर्तृहरि विक्रमी सम्वत् की छठवीं शताब्दी के अन्त में हुये हैं—लोग इनको विक्रम का बड़ा भाई कहते हैं पर यह कौन विक्रम हैं इस्का कुछ निश्चय नहीं है—यह वही हैं जिनका कड़खा गाया जाता है—"यां चिन्तयामि सततं" इस श्लोक में भर्तृहरि का वैराग्य ग्रहण

करने का मूल भी मिलता है भर्तृहरि को अमर मानते हैं और अनेक तरह २ के क़िस्से भर्तृहरि के सम्बन्ध में प्रचलित हैं—पर उससे हमें क्या प्रयोजन संस्कृत के बड़े उत्तम कवि और उत्कृष्ट विद्वान् थे—

विश्वास ॥

विश्वास के वृक्ष का अंकुर सरल और विमल चित्त के आलबाल में जमता है और धर्मांकुशरूप जल से सिंच हरा भरा और प्रफुल्लित हो यह लोक और परलोक सम्बन्धी मीठे और स्वादिष्ट फलों से लद संसार में मनुष्य के जीवन को सार्थक करता है—सुमार्ग पर चलने कुमार्ग से बचने और जगत् के प्रबन्ध की उत्तमता के लिये विश्वास एक मात्र सहारा है—अदृष्ट और परलोक में विश्वास से जो कुछ भलाई होती है उसकी व्यवस्था कौन जाने बिन देखी बात का ठीका कौन ले और कौन लोगों के साथ सिर प्रचावे—प्रायः दार्शनिक और कुतर्की विश्वास की प्रणाली को एक खेल खेलौना समझते हैं और विश्वास करने वालों पर हँसते हैं पर जिन सत्पुरुषों की अकुटिल सरल बुद्धि में पूर्वापर का विचार और स्वच्छ रीति पर संसार चक्र की धुरी के चलने का खयाल है वे विश्वास को तुच्छ कभी न समझेंगे—चाहो दार्शनिक होने के कारण विश्वास पर विशेष श्रद्धा न रखते हों पर जगत् के प्रबन्ध की रक्षा के लिये वे यही कहेंगे कि जहां तक प्रजा का विश्वास धर्मपथ और उपासनाकाण्ड में दृढ़ रहे तहां तक अच्छा—हज़ारों लाखों ऐसे मनुष्य हैं खासकर हिन्दुस्तान में जो सर्वथा विद्यागुण शून्य हैं पर धर्म और ईश्वर तथा परलोक में विश्वास के कारण अनेक पापकर्म से बचते हैं और अप्रयत्न दशा या अज्ञान अवस्था में किसी पापाचरण पर कैसा कुछ पश्चात्ताप और अफ़सोस करते हैं—इसी लिये धर्मशास्त्रप्रणेता या नीतिप्रवर्त्तकों ने विश्वास की जड़ को और पुष्ट किया है बल्कि गीता में तो यहां तक लिख दिया है कि—

"योषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् ।
जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोक आचरेत्" ॥

जो किसी मत या सम्प्रदाय का दृढ़ विश्वासी होता है और अपने धर्मग्रन्थों को ठीक समझता है पर दूसरे के धर्म में डाह और तअस्सुब नहीं रखता वह अनुचित कामों से बहुत डरता है और दूसरे लोग उस्की कही हुई बातों का बड़ा भरोसा रखते हैं—इसी से पुराने राजा लोग अच्छे धर्मशील तपस्वी विद्वानों को ढूंढ २ कर यथोचित न्याय करने के लिये धर्मासन पर नियत करते थे और उन्हीं को प्राड्विपाक बनाते थे—अंगरेज़ी राज्य के आरंभ में भी बहुत दिनों तक ऐसाही था कि अच्छे कुलीन सुपात्र अपने धर्म पर पूर्ण विश्वासी दयावान् बड़े २ पद पर नियत हो यहां आते थे और उन्हीं को इन्साफ की गद्दी दी जाती थी तथा और भी ऐसे २ ओहदे दिये जाते थे जो प्रजा की भलाई का प्रधान अंग समझा जाता था और न्याय में दूध का दूध और पानी का पानी का अलग २ बिलगाव कर देते थे—उन हाकिमों को यहां की प्रजा भी हिन्दू अपना धर्मराज और मुसल्मान आदिल और जांपनाह समझती थी—तात्पर्य यह कि राजा में जो प्रजारंजन का एक विशेष गुण होना चाहिये वह उनमें था—दूर क्यों जाइये श्रीमान् लार्डरिपन ने जो निष्पक्ष प्रजा के हित में बहुत कुछ ध्यान दिया इस्का कारण भी यही था कि श्रीमान् कैथोलिक सम्प्रदाय के ईसाई थे धर्मिष्ट ईश्वरनिष्ट और भक्तजन थे—जो मनुष्य अपने मत और संप्रदाय के अनुकूल होगा वह अवश्य सब जीवों पर दया-दृष्टि रक्खेगा परलोक और ईश्वर की भय मन में रख पापकर्म करने से हिचकेगा और जो मनुष्य अपने यहां की धर्मप्रणाली छोड़ बैठेगा वह स्वच्छन्द बिचरेगा इधर उधर चक्कर लगावेगा—यह लोक और परलोक की भय से शून्य होगा चाहे वह सकल विद्या पारंगत क्यों न हो—तात्पर्य यह कि जिसने धर्म की मर्याद को फूकतापा वह इन्साफ की गरदन पर छूरी फेरते काहे को हिचकैगा तथा प्रजा की लाभ हानि अपने स्वार्थ के मुकाबिले कब देखेगा—सिविलियनों की मण्डली की रखली बहुधा इस तरह की होती है लामज़हबी तो इन दिनों विलाइत का फेशन हो गया है

अनीश्वरवादी और नेचरी खिलकत का उनका होनाही हिन्दुस्तानियों के साथ विषमभाव तथा हमारे साथ कुटिल बर्ताव की बुनियाद है—क्योंकि जब ईश्वर न रहा न पुण्य पाप कोई वस्तु है न परलोक या पुनर्जन्म है तब फिर क्या चारवाक का मत हई है ॥

"ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्"

यावज्जीवेत्सुखं जीवेन्नास्ति मृत्योरगोचरः ।
भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥

"Eat drink be merry this is the golden rule"

मरने के पीछे जब कुछ हई नहीं तब क्यों भांत २ की परहेज़गारी और संयम में हलाकान हो ज़िन्दगी का मज़ा न लूटैं—विलाइत का नेचरवाद नौशिक्षितों में बेतरह ज़ोर पकड़ रहा देखैं इसका क्या परिणाम होता है—

इन अविश्वासियों के फिरके में एक "मोरालिष्ट" होते हैं अर्थात् समाज में दूषित चरित्र न कहलाये जांय इसलिये हमारी "कानशेन्स" विचारशक्ति क्या कम है—हम शकल साएन्स और फिलासोफी चाटे बैठे हैं तमाम इल्म और हिकमत हमारी मूठी में है वह कब काम आवेगा जो हम भी साधारण लोगों की भांत मज़हब और धर्म पर विश्वास रख अनेक तरह के बेहूदा "असंप्शन" अनुमान मान बैठैं कि बिहिश्त और दोज़ख अलग २ बने हुये हैं बिहिश्त में अल्ला मियां राज करते हैं जिन की चितवन में ऐसा असर है कि पुण्यात्मा को वह चितवन अमृतरूप और चिरस्थायी मुक्ति पद प्रदान करती है—वही पापात्मा गुनहगार की ओर जहां आंख उठा के देखा कि वह जहन्नुम की आग में जल भुन खाक हो गया इत्यादि—

इन्हीं अविश्वासी नेचरियों की दुर्गन्धि सूंघ २ हमारे हिन्दुस्तानी बिगड़ रहे हैं बल्कि नेचरवाद में अपने गुरुवों के भी आगे बढ़े जाते हैं

औवल दरजे की तालीम पाय नास्तिकता और नेचरबाद में गुरुघंटाल हुये मनों साबुन खर्च कर डाला चेहरा सफेद न कर सके क्या करें लाचार हैं—ताहं साहबाना भेख बनाया अंगरेज़ी टोपी भी पहनने लगे पर जिसने देखा उसने तंबूर्चों ओढ़ और कुछ न समझा कुत्तों को भूत का खयाल हुआ देख भूकने लगे—हम गवर्नमेंट को विनीतभाव पूर्वक चिताते हैं कि ऐसों को जो सर्वथा ईश्वर पर विश्वास की ओर से हाथ धो बैठे हैं चाहो वे अंगरेज़ हों या हिन्दुस्तानी न्याय के ऊंचे२ ओहदों पर नियत करने में सावधान रहे—ऐसों को न्याय के बड़े ओहदे देना मानों भेड़ियों को बकरियों के ऊपर रखा कर देना है—अनेक आधिव्याधि दुर्भिक्ष मरण जो हिन्दुस्तान की पृथ्वी को अपना घर बनाये हुये हैं इस्का कारण हमारी मन्दबुद्धि में यही आता है कि गवर्नमेंट बिल्कुल इस बात पर ज़ोर नहीं देती कि अपने कर्मचारियों में ऐसे२ लोगों को शरीक न होने दे जिन की बुरी नीयत बुरे आचरण का फल प्रजा बज्रपातइव भोग रही है—

हमारे एक मित्र ने कुछ फुटकर कविता भेजा है जिसे हम यहां पर उनके अनुरोध से प्रकाश करते हैं—

झूलाना छन्द ॥

रद देखे लाल विहारी के अनवेधे मोती सनक गये ।
क्या षट् दस कला छपाकर की हो दो दो किरचैं तड़क गये ॥
मुसक्याते हुये लखा जब से रसभीने दाड़िम दरक गये ।
शरमिन्दह कली चमेली की तड़िता के सीने तड़क गये ॥
हम खूब तरह से जाने हैं तुझे जैसा आनन्द कन्द किया ।
गुणशील रूप अरु तेज पुंज सब तेरेहि भीतर बन्द किया ॥
तुझ हुस्न अदा की बाकी लै फिर विधि ने यही प्रबन्ध किया ।
चम्पा कदली सोन जुही नरगिस चांनी कर चपला चन्द किया ॥
जिय आनिंदया पिय प्यारे सुनो मत दूरहि ते तरसइबो करो ।
बिन देखे तिहारे तपैं नित प्रान न बातन में बहिलइबो करो ॥

कमलाकर की बिनती इतनी भला रोज़ न जो तुम आइवो करो।
पिय दूजके चन्दसी सूरत तो दिन तीस पै तो दिखलाइवो करो॥
डरन मरन विधि विनय यह, भूत मिलैं निज वास।
प्रिय हित वापी मुकुर मग, बीजन अँगन अकास॥

उस्तादों के जंचे हुये कौल॥

अनहोनी—इस सभ्यता के ज़माने में हिन्दूधर्म की तरक्की—

गांठ का गवाना—मूरख को उपदेश—"मूरख को समुझाइबो ज्ञान गांठ को जाय—

तालीम की ज़ियादती का नतीजा—पढ़े लिखे बे रोज़गार बकसरत—

सभ्यता की शोभा—शराबख़ारी—ला मज़हबी—

धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का—अधकचड़े अंगरेज़ी खां—

बदन का कांटा—मतसरी ऐंग्लो इण्डियन की नज़र में हिन्दुस्तान के सुशिक्षित नवयुवक—

न दीन के न दुनियां के—इलाहाबाद के दो एक म्युनिसिपल कमिश्नर—

देश या जाति की तरक्की शिल्प वाणिज्य तथा विद्यावृद्धि सब साथ२ चलती हैं॥

जब कोई देश या जाति अपनी स्वाधीन दशा में है जब कि देश के लोगों के परिश्रम का फल भरपूर मिलता रहता है—अर्थात् केवल देश की बनी सब चीज़ें काम में लाई जाती हैं और क्रयविक्रय से जो रुपया पैदा होता है वह विदेशियों की चिउँटिया ढोअन से बच देश के लोगों को धनी और मालदार किये रहता है—और राज काज का सब काम देश के लोगों के हाथ में रहता है—उस समय सर्वसाधारण का मन स्वस्थ निरुद्वेग और प्रमुदित रह उनके मानसिक व्यापार के द्वारा परिणत कार्य विद्यावृद्धि विज्ञान

की उन्नति शिल्प कौशल सब पूरी तरह होते रहते हैं—पुराने यूनानी प्राचीन आर्य इस्के उदाहरण हैं—हिन्दुस्तान के पुराने प्रसिद्ध दार्शनिक कपिल कणाद, गौतम, बुद्ध, जिन, शङ्कर प्रभृति और यूनान के नामी गिरामी हकीम अफलातूं अरस्तू इत्यादि ऐसेही समय में हुये हैं जब उनका देश सब भांत स्वच्छन्द और निरुद्वेग रहा—संस्कृत या ग्रीक भाषा का इस तरह परिष्कृत और वृहत् इस्का सुबूत है—यूनान देश के अस्त होने पर वही सब बात रोम देश और रोमन् जाति वालों में आगई उस समय रूमियों की लाटिनी भाषा रूम की सभ्यता उनका विज्ञान आदि जगत् भर में सर्वश्रेष्ठ समझे गये—सिसिरो प्रभृति बड़े२ वाग्मियों ने यूनान के डिमास्थनीज़ प्रभृति प्रसिद्ध वक्ताओं को अपनी वाग्मिता के आगे दबा दिया—उपरान्त अरब वालों के अभ्युदय समय अरबी भाषा में विद्या का वही श्रोत आ गिरा जो पहिले संस्कृत और यूनानी भाषा में था—यूरोप की प्राचीन असभ्य जाति जो इन दिनों फ्रान्स, इङ्गलैण्ड, जर्मनी, आसट्रिया आदि देशों में बसी हुई संसार भर को शिक्षा देने को सन्नद्ध है पहिले रोम के सीज़र्स के अधिकार में रह सहस्त्रों वर्ष तक पाद दलित होती रही—उपरान्त पोप लोगों के कड़े शासन से अपने को मुक्त कर इस पद को पहुंची है कि हमें हर तरह पर मात करते हुये हम आर्यवंशियों को असभ्य अर्द्धशिक्षित सभ्यता में सब के पीछे हटे हुये मान हमारी हर एक बातों को केवल विडम्बना मात्र सिद्ध करते हुये अपने को गुरुगुंरु और सर्वश्रेष्ठ कहती है—उनमें जो इतनी तरक्की है सो इसी लिये कि ये सब भांत स्वच्छन्द स्वयंप्रभु स्वस्थ और अनुद्विग्न हैं हम पेट के लिये भी तरस रहे हैं—नोन तेल लकड़ी की चिन्ता से एक क्षण भी नहीं छुटे रहते तो तरक्की और विद्यावृद्धि कहाँ रही—सच है—

"घृतलवणतैलतन्दुलतक्रेन्धन चिन्तया सततम्।
नश्यति विपुलमतेरपि बुद्धि पुरुषस्यः मन्दविभवस्य॥"

जिस क्रम पर हम शासित हो रहे हैं जितना२ बोझ समाजसम्बन्धी धर्मसम्बन्धी राजकीयसम्बन्धी हमारे गरदन पर धरा हुआ है उतना उन के ऊपर कहां है जो हमें बिराते हुये ऐसा बड़बोल बोल रहे हैं—सिवाय इसके मझधार में डूब रहे हैं त्रिकाल में यह आशा नहीं है कि हम कभी इन बोझों से हलके होंगे—इतने पर भी स्वाभाविक सहनशीलता तितिक्षा धारण किये निरावलम्ब कुछ करी तो रहे हैं—धीरे २ आगे बढ़ने का हौसिला बहुत करते हैं पर वही उठे और वहीं बिलाय गये निष्किञ्चन धनहीन के मनोरथ के समान हमारी दशा है—

उत्थायन्ते विलीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः।
बालवैधव्यदग्धानां कुलस्त्रीणां कुचाविव ॥"

सच मानिये जैसी अनुद्विग्नता और स्वस्थता इन्हें है उसकी चौथाई या अष्टमांश भी हमें होती तो हम न जानिये क्या कर डालते पाददलित होते हुये निर्जीव क्षार सदृश हो रहे हैं—इतने पर जिधर को झुक पड़ते हैं कुछ न कुछ करी तो डालते हैं कई एक शताब्दी से जो उन्नति के शिखर पर चढ़े हुये हैं और बराबर चढ़ते जाते हैं उनके साथ टांग अड़ाये हुये हैं—आर्य ग्रीक तथा रोमन लोगों की स्वाधीनता गये कितने दिन होगये और तब से आज तक यह आर्य जाति कितनी२ दुर्गति और विडम्बना सह रही है इन्में जो वास्तविक उन्नति शिल्प विज्ञान का सर्वथा लोप होगया तो कौनसी बड़े अचरज की बात है—उलटी धारा बहने लगी पूर्व समय समस्त विद्या विज्ञान शिल्प और सभ्यता का स्रोत जो यहां से बह कर उस समय के यूरोप की असभ्य जातियों में गया वही अब यूरोप की स्वतंत्र जातियों से प्रवाहित हो यहां आ रहा है—जिस जाति ने समस्त जगतीतल पर निजकर्तृत्व स्थापन कर रक्खा है अब उनकी फुर्ती लोकोत्तर बुद्धि उक्ति युक्ति स्फूर्ति तेजस्विता Spirit and Zeal विद्या शिल्प और विज्ञान की वृद्धि में समधिक आदरवान् हो रही है—आर्यों की बुद्धि का सर्वस्व कोई ग्रन्थ किसी विषय के नहीं बचे जिसका उल्था यूरोप की

भाषाओं में नहीं होगया और बलपूर्वक उस श्रोत को जो पूरब से पश्चिम की ओर बह रहा था उलटाय दिया अर्थात् उसे पश्चिम से पूरब की ओर अब बहा रहे हैं—हमारे में पदाघात सहते२ स्वतन्त्रता का अङ्कुर भी न रहा जो सतेजस्कता स्फूर्ति लोकोत्तर प्रतिभा का प्रधान कारण है—अब भी हमारे इन्हीं आर्य सन्तानों में न जानिये कितने विक्रम, भोज, कालिदास, भवभूति, भारवि, श्रीहर्ष, शेक्सपियर, मिलटन निकल सक्ते हैं पहिले की सी क्षमता और बुद्धि कहीं गई नहीं किन्तु हमारी दशा निचोड़े हुए वस्त्र की सी आगई है। बसन्त की मधुमत्त कोकिला फूली हुई आम की बौर पर बैठ जैसा गान करैगी वैसा पिंजरे में बन्द रह। कवि शिरोमणि गोल्डस्मिथ का यह लेख हमारे प्रति ऐसा सुघटित होता है मानों उन्हों ने भारत की भविष्यद्दशा का खयाल कर लिखा हो—

" Chil Penury repressed their noble rage,
And froze the general current of the soril. "

इस समय हमारा देश जैसी क्षीण दशा में आगया है और जैसा महाकष्ट से हम लोग अपना निर्वाह कर रहे हैं वैसा हमारे शत्रु को भी न हो—इस समय पढ़ लिख सिवाय नौकरी के दूसरी उपाय निर्वाह की रही नहीं गई सो नौकरी भी पहले तो मिलना अति कठिन है मिल जाने पर मर्मान्तिक यंत्रणा भुगतना उससे भी महा विकराल है—बड़े२ ओहदे जिन्में भरपूर स्वतंत्रता और आराम है चुन२ कर उन्हीं के लिये रख लिये गये हैं जो पहलेही से स्वतंत्रता के पूर्ण कृपापात्र रहे आये हैं—छोटी तनखाह की नौकरी जिस्से केवल उदरमात्र बड़ी क्लेश कल्पना से किसी तरह पल सक्ता है हमारे लिये है—मसल है "पेट करै कांव२ मांग मांगै टिकुली" जहां पेट पलना दुशवार हो रहा है वहां मुल्क की तरक्की और विद्यावृद्धि को क्या झीखना—कृतविद्य सुशिक्षितों के साथ प्रतियोगिता देख ईर्षी अनेक बड़े२ कर्मचारियों को जी में खटक हो गई है कि जहां तक होसके देशी लोगों को उत्तमशिक्षा न दी जाय इसी लिये

स्कूल और कालिजों में फीस बहुत अधिक बढ़ा दी गई कोर्स की किताबों का दाम हद्द से ज़ियादह कर दिया गया इम्तिहानों में सख़्ती होने लगी इस दशा में विद्यावृद्धि की अब कौन आशा रह गई—औसत की आमदनी के मध्यम श्रेणी वाले तो अपने लड़कों को पढ़ाय नहीं सक्ते रहे ऊंचे दरजे के धनी सम्पन्न जन वे चाहैं अपने लड़कों को पढ़ावैं तो पढ़ा सक्ते हैं सो वे पढ़ाया नहीं चाहते क्योंकि वे समझते हैं कि हमको पढ़ाने की ज़रूरत क्या जब विद्या का फल केवल चाकरी है—पढ़ाया भी तो उनके सुशिक्षित होने से कोई फल नहीं है सुशिक्षा के जो गुण सो उनमें एक भी नहीं आते हां वे सब दुर्गुण जिस्के लिये सुशिक्षित मण्डली बदनाम हो रही है अलबत्ता आ जाते हैं—दूसरे यह कि धनियों को देश की दुर्गति की चोट है भी तो नहीं और उनके सुशिक्षित होने पर बहुधा वह बात उन्में नहीं आती जैसी मध्यमश्रेणी वालों में देश और जाति के साथ सहानुभूति की आती है—इसी से हम कहते हैं विद्यावृद्धि देश की स्वस्थ दशा के आधीन है—जीविका का तो यह हाल है और बाल्य-विवाह की कृपा से सृष्टि नित्त २ बढ़ती जाती है इस अवस्था में हमारी मन्दबुद्धि में यही आता है कि हम लोगों की सृष्टि कम होना चाहिये हमें निश्चय है इस बात पर लोग हमें हसैंगे पर कहते हैं हम तत्व—परभाग्योपजीवी निर्जीव निःसत्व दासवृत्ति वालों की इतनी अधिकाई से लाभ क्या—जो वस्तु बहुत होजाती है वह कम कीमत और सस्ती बिकती है जिस्की कमी रहती है उस्की कदर होती है और बड़े दाम पर आती है—हिन्दुस्तानी बे कदर इसी से और भी हैं कि ये बहुत हैं और इतने अधिक हैं कि अपने को अच्छी तरह पाल नहीं सक्ते—एक आदमी के घेंटा से आठ या दस सन्तान कभी अच्छे न होंगे जितना दो या एक कुल उजागर अंकागत सत्ववृत्ति सिंह सदृश तेजस्वी पराक्रमी और पुरुषार्थी होगा—विरुद्ध इस्के हम को अपने औलाद बढ़ाने की यहां तक चिन्ता है कि इस साल जैसा विवाह हुआ है और २ वर्षों में बहुत कम हुआ होगा १०

घर का एक पुरवा है तो उस्में भी तीन या चार घर में कुछ न कुछ विवाह शादी का उपक्रम अवश्य रहा और शहरों में तो कुछ कहनाही नहीं शादियों की धूम थी—पण्डितों ने जो कह दिया कि दो वर्ष लग्न नहीं है तो लोग घबड़ा गये हाय अब तो लड़की लड़के कुंआरेही रहे—इसलिये देश में दुर्भिक्ष चारो ओर छाया हुआ है घर२ भवानी खोलियानी हैं कोई घर ऐसेही बचे होंगे जिस्में से दो एक बालक को शीतला पिशाची ने चट न किया हो तौभी लोग औलाद को व्याहने से न चूके—सच मानो देश में अनेक आधिव्याधि दुःख क्लेश सब इसी महापापकर्म का फल है बालक की स्वच्छन्दतापहारक महामोहन मन्त्र का अनुष्ठान विवाहरूप पातित्यकृत्य देश को नीचे गिराने की बड़ी भारी उपाय है—इन इन स्वार्थी ब्राह्मणों को क्या कहैं जिनके कट्टर कलेजे में ज़रा रहम न आया देश की दुर्भिक्ष दशा पर बिल्कुल ध्यान न दे मन मानता अपना पेट भरा और आगामी दो वर्ष के लिये भरपूर कमा लिया—और २ सुसभ्य देशों में जहां समझदार कौम बशती है विवाह शादी उस वर्ष उस मोसिम में होता है जब सब तरह का आराम और आशाइस रहती है यहां सितारों की गर्दिश का हिसाब लिया जाता है जो पण्डित और स्वार्थी ब्राह्मणों के हाथ में रख दिया गया है वे जब जैसा चाहते हैं वैसा अबूझ प्रजा को अपने ढंग पर ढुलका देते हैं—दूसरे साल नया पत्रा चलने पर ये ही ब्राह्मण फिर लग्न निकाल देंगे और यजमानों से खातिरखाह पुजावैंगे ॥

हम भी ऐसे बेहया लिखने वाले हैं कि बाल्यविवाह की बुराई पर न जानिये कितना लिख लिख चुके कोई अंक खाली नहीं जाता जिस्में दो एक लेख इस कुरीत पर खोंचा देने की भाँत न लिखते हों किन्तु यह बुराई इतनी बद्धमूल हो रही है कि कभी किसी की दृष्टि इस ओर पड़तीही नहीं—पर हमने बरसों तक मनन कर यह दृढ़ निश्चय कर रक्खा है कि देश का उद्धार केवल इस कुरीत को उठा देनेही से होगा कितनाही विद्या देश में बढ़ै शिल्प और विज्ञान की धारा बह निकले कानग्रेस वाले हज़ार वर्ष तक कानग्रेस

करते रहैं जब तक बाल्यविवाह प्रचलित रहैगा कुछ भी न होगा—केवल बाल्यविवाह के उठा देने से भी इतना उपकार नहीं होगा जितना इस्से कि बाप को अपने लड़के को व्याहने का कोई अधिकारही न रहै व्याह करना लड़का लड़की की इच्छा पर रख दिया जाय—ऐसा होने से कितने ऐसे देख में निकल आवैंगे जो व्याह कर गले में फाँसी नहीं दिया चाहते—स्वतन्त्र जीवन क्या वस्तु है हम तो भूलही गये और उस भुला देनें का बीज यही हुआ कि लड़के के ब्याह का दारमदार केवल बाप पर रख दिया गया—बूढ़े बाप बहुधा तो दहेज के खयाल से, कभी अपने औलाद का घर बसाय पांव में बेड़ी छोड़ देने की इच्छा से, कोई आँख का सुख देने की इच्छा से, कोई २ अपना विभवोन्माद दिखलाने के इरादे से लड़की लड़के का विवाह रोप खड़े होते हैं—बहुधा इस तरह के खयाल यहां के धनी और समर्थों को दरकार होते हैं पर भुक्खड़ों की जिन्हें लड़के का व्याह अच्छी खासी तिजारत हैं सिर्फ दहेज की लालच है जो पांचही वर्ष में लड़के को व्याह देने की प्रेरणा करती है—कनौजियों में और सभ्यता की सीढ़ी पर चढ़ने का दावा करने वाले बंगालियों में भी सैकड़ों लड़कियाँ बिना व्याही बैठी रह जाती हैं—जिन को उतनी समाई न रही कि पूरा दहेज दे सकें उन की कन्या बिन व्याही बैठी रहती है—कहाँ तक गिनावैं लड़कों के ब्याह पर बाप की सर्वतोमुखी प्रभुता असंख्य बुराइयों की जड़ है अपने प्रिय पुत्र की भविष्य भलाई और उन्नति का उन्मूलक कुठार है—अस्तु इस नीरस फीके दुःख रोने को कहाँ तक रोते रहैं अभी बहुत कुछ वक्तव्य है—हमें निश्चय है इस बद्धमूल कुसंस्कार पर हमारे कहने का कुछ भी असर न होगा पर हम एक न एक कल्पना इस विषय पर करतेही चले जाँयगे न कुछ असर हो लाचारी है—

हमारी अपूर्ण अभिलाषायें ॥

कालो न यातो वयमेव याताः, भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः ।

काल ने हमे कलेवा कर लिया पर वह खुद जैसा का तैसा टटका बना रहा—हम भुगत गये पर संसार के भोग सब भुगतने को पड़ेही रहे—सच है सौवर्ष की पूरी आयुष्य क्या बरन हज़ार और लाख वर्ष की हमारी उमर होजाय तौभी यह हवस बनी रही आवैगी थोड़ा और होता तो अच्छा था—खाया पिया लिया दिया जो कुछ किया अघाने किसी से नहीं पर्याप्तता किसी से न हुई थोड़ी कसर बनीही रही "आशावधिं को गतः" सब भांत रँजे पुंजे हैं कमती किसी बात की नहीं है लड़के हैं लड़कियां हैं बहू बेटियों से घर भरा है आप भी लबेगोर हैं पांव पसारे बैठे हैं मौत बाल पकड़ पटका चाहती है पर इतना हौसिला बाकी रह गया कि सुनक के एक लड़का होजाता सोने की सीढ़ी चढ़ लेते तो अच्छा होता—परोता न हुआ आप चल बसे नसीबबरी में इतनी कसर बाकी ही रही—कौड़ी २ को मुहताज थे ईश्वर की कृपा हुई रकम हाथ आगई व्यौपर किया उसमें भी मुनाफा हुआ लेन देन करने लगे व्याज का छियाज जोड़ते२ हज़ारों की पूंजी पल्ले पड़ गई हज़ार से लाख हुये दस लाख हुये बीस लाख हुयें ५० हुये ६० हुये लौलगी थी करोड़पती होंगे इतने में अन्तक ने आय चूंदी पकड़ धर पटका मुह बाय रह गये कोट्याधीश न होसके हौसिला पूरा न हुआ। सच है—

"निःस्वो षष्टिशतं शती दशशतं लक्षं सहस्राधिपो,
लक्षेशः क्षितिराजतां क्षितिपतिश्चक्रेशतां वाञ्छति।
चक्रेशः सुरराजतां सुरपतिर्ब्राह्मं पदं वाञ्छति,
ब्रह्माविष्णुहरिः शिवपदं तृष्णापदं वधिं को गतः॥"

जगद्विजयी सिकन्दर मुल्क पर मुल्क फतह करता हुआ पञ्जाब तक आपहुंचा यहां बीमार होगया और उसे लौटना पड़ा बीमारी की हालत में प्राणान्त के समय उसने कहा क्या कहें कूंच का डंका बजने में बड़ी जल्द हुई हफ्तयकलीम में हिन्दुस्तान फतह करने को रही गया—१५ रुपये के

साधारण क्लर्क नकलनवीस हुये थे बढ़ते२ मुनसरिम हुये, मुनसिफ हुये, सदरअमीन हुये, सेशनजज हुये, इतने में मौत आय धरचापा हाईकोर्ट के जज न किये गये हौसिला बाकी रहा—इत्यादि २ ऐसे अनेक उदाहरण हमारी क्षणभंगुर आशा के हैं विना शान्ति चित्त में आये सुख नहीं और सुख केवल परमात्मा के निर्भय पद का आसरा पकड़ने से मिलता है—नाम संकीर्त्तन जिस्की पहिली सीढ़ी है । तद्यथा—

जय जय जय जगत्पते—जगदीश विभो—अनाथ नाथ जगन्नाथ—विविध वृन्दारक वृन्द वन्दनीय पादारविन्द द्वन्द्व—द्वन्द्व निर्मुक्त—योगीन्द्र हृदय मन्दिराविष्कृत निरञ्जन ज्योति—ज्योतिः स्वरूप नीरदरूप—स्वविमल यशः पटल परिपूरित भुवन कुहर—सुकृति मनमानस विहारि राजहंस—कंस वंश विध्वंसन—अनवधिभवाब्धिमज्जनजननमरणदुःखदुःखितं कलिकालव्यालहतं मां रक्षरक्ष । कुरुकुरुकरुणां करुणावरुणालय अनुग्रहाणमाम् ॥

नमो वाङ्‌मनसातीत महिम्ने परमेष्ठिने ।
त्रिगुणाष्टगुणानन्तगुणनिर्गुणमूर्त्तये ॥
संसारैक निमित्ताय संसारैकविरोधिने ।
नमः संसाररूपाय निःसंसाराय शम्भवे ॥
आसन्नाय सुदूराय गुप्ताय प्रकटात्मने ।
सुलभायाति दुर्गाय नमश्चित्राय शंभवे ॥
नमः स्वतंत्र चिच्छक्ति मुद्रितस्वविभूतये ।
अव्यक्तव्यक्तरूपाय कस्मै चिन्मात्र मूर्तये ॥
भवबीजांकुरजलदा रागाद्यः क्षयमुपागता यस्य ।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा हरोजिनो वा नमस्तस्मै ॥

हमारी मीरास ॥

विलाइत के लोग हिन्दुस्तान की मिट्टी तक ढोये लिये जाते हैं फिर भी कितनी बातें यहाँ की यहीं रही जाती हैं इसलिये हम उन्हें अपनी मीरास कहैंगे—जैसा औरतों में "पाकदामनी" सतीत्व—फलित ज्योतिष—धर्मभीरुता—पुराने महाजनों में शाख—बुड्ढों में कम अकली—हट्टे कट्टे सबल मुसखडों को देने में धर्मबुद्धि—आपस की फूट—खैरख़ाही—बोदापन—थोड़ेही में सन्तोष—लकीर पर फकीर—पस्त हिम्मती—तात्कालिक थोड़े से फाइदे के आगे होनहार बड़े लाभ की उपेक्षा—मुहर लुटै कोइले पर छाप—बद्धमूल बाल्यविवाह आदि कुरीतें—सहनशीलता—परमार्थ के पीछे इस लोक को बिगाड़ पीछे पछताना—"द्विविधा में दोऊ गये माया मिली न राम"—

भिन्नरुचिर्हि लोकः ॥

दुःख से बचना और सुख की प्राप्ति का लक्ष्य इस संसार में सब कसी को रहता है पर सुख के प्राप्ति की रुचि लोगों में भिन्न २ तरह की होती है कोई बहुत से लड़के वाले नाती पोतों से घर भरे रहने को सुख मानते हैं—बाहर सब तरह की झौंझट सह अनेक तरद्दुद झेल घर आये लड़के बाबा २ कह सब ओर से उठ धाये कोई गोद में चढ़ना चाहता है कोई पांव में लिपटता है कोई कन्धे पर सवार होता है धूर में सने हुये आय लिपट गये सब तरद्दुद जाता रहा सुख सन्दोह में मग्न हो गये सच है—

"दिगम्बरं गतव्रीडं जटिलं धूलि धूसरम् ।
भाग्यहीना न पश्यन्ति गंगाधरमिवार्भकम्"

कितने बागबगीचों में चुन २ यार यार दोस्तों के साथ आहार विहार आमोद प्रमोद में सब तरह की वे तकल्लुफी को सुख का सर्वस्व समझते हैं—कोई "ज़मी पर जहां तक जगह पाइये—इमारत बनाते चले

हुये" इस वसूल पर अमल कर सतखण्डा पक्का संगीन महल बनवानेही को सुख की सीमा माने हुये हैं—नीचे से ऊपर तक आरास्ता महल में जिस समय बैठते हैं उस समय इन्द्रासन भी उन्हें फीका जचता है—व्यभिचारी गणिका लोलुप कचलपटों को वेश्याही सुख का सारांश हैं। सर्वस्व खोय बहाया टके२ को मुहताज होगये खपरा लेकर भीख मांगने लगे किन्तु लत न छूटी बाप दादा की कमाई पूंजी जो कुछ पास रही समर्पित कर आये झिड़की और डाठ डपट सब सहते हैं क्रीतदास की तरह प्रणयिनी की चरणसेवा नहीं छोड़ते जिस्के पादताड़न में जिनको अहोभाग्य सुख की पराकाष्ठा है—इसी तरह नशेबाज़ को नशे का सरूर और तरंग यावत् सुख का उदय है— "घर के लेखे मरगये आप नसे के बीच" जुवारी को जुवा सुख की सीमा है—चटोरे को सब सुख जिह्वा के अग्रभाग में आय टिकता है हज़ारों लाखों का धन चाटडाला सोने का घर मिट्टी में मिला दिया पर चाटने की बासना न मिटी—चटोरे को जो सुख चाटने में है संसार के किसी पदार्थ में नहीं मिलता बन्धु भाई स्त्री पुत्र सब मुह ताकते रहे आप दोना लाय चाट बैठे—खेतिहर खेती को यावत् सुख का मूल मानता है दिन रात की मेहनत का फल खेती कहीं लग गई और निर्विघ्न उतर आई अनाज काट माड़ घर में लाय रक्खा उस समय वह मन मगन लखपती को भी माल नहीं समझता—गुप्त व्यभिचारिणी या व्यभिचारी को त्वरितक्षण चौर्य सुरत में जो सुख है वह कदाचित् ब्रह्मानन्द में भी न होगा—

"सुखशय्या ताम्बूलं विश्रब्धाश्लेषचुम्बनादीनि गणयन्ति न लक्षांशं त्वरितक्षण चौर्यसुरतस्य"

हम ऐसे पुस्तक पिशाचों को ब्रह्मानन्द का सहोदर केवल अक्षर है उत्तम से उत्तम नये२ ग्रन्थ पढ़ने को मिलते रहें खाली नोन रोटी खाने को मिले और मोटा झोंटा वस्त्र पहनने को तो ऐसे लोग मानसी भोजन से दस बड़े राजा को भी तुच्छ समझैं और सच२ हमारे सुख का कणमात्र

भी दिन रात की चिन्ता में व्यग्र राजा महाराजाओं को कहां, तब हम क्यों उन्हें कुछ माल समझैं–

" त्वं राजावयमप्युपासितकविः प्रज्ञाभिमानोन्नताः,
ख्यातस्त्वं विभवैर्यशांसिकवयो दिक्षु प्रतन्वन्ति नः।
इत्थं मानद नातिदूरमुभयोरप्यावयोरन्तरं,
यद्यस्मासु पराङ्मुखोऽसि वयमप्येकान्ततो निस्पृहः ॥

भक्तों को अपने सेव्य प्रभु की नवधाभक्ति स्मरण कीर्त्तन पादवन्दन सब सुख का निचोड़ है। अकुटिल सरल चित्त में जिस समय भक्ति के उद्गार से रोम२ में पुलकावली हो आती है उस समय आनन्द के समुद्र में डूब सच्चे भक्तजन अपने को भी भूल जाते हैं जिनकी दर्शनीय मुखच्छवि देखते पाप कटता है–इत्यादि इस भिन्न रुचि के अनेक उदाहरण पाये जाते हैं और ये सब भिन्न रुचि वाले अपने२ रूपक का अभिनय करते हुये संसार को एक अद्भुत नाट्यशाला बना रहे हैं–

श्रीवेंकटेश्वरसमाचार।

कलकत्ता और बाम्बे का हर एक बातों में जोड़ है बाम्बे में एक यह त्रुटि रही कि वहां हिन्दी का कोई पौधा अब तक नहीं लगाया गया था और कलकत्ता में बहुत दिनों से बंगवासी प्रतिसप्ताह प्रगट हो नागरीरसिक चातकों को नीरदरूप हो प्रमुदित कर रहा था–अब बाम्बे में भी यह पत्र नागरी महापादप का अंकुर हो आरोपित किया गया है–जिस उठान से उठा है वैसही चला गया तो यह प्रथमश्रेणी का पत्र होगा एक बात इसके सम्बन्ध में विशेष लक्ष्य के योग्य है कि बंगवासी के समान यह कानग्रेस का विरोधी नहीं है अपित्व इसके लेख से विदित होता है कि यह कानग्रेस का बड़ा पक्षपाती है–भिन्न२ प्रान्तों के साधारण समाचार और इधर उधर की गपशप के अतिरिक्त आर्टिकिल इसमें अब तक

ऐसे चटकीले नहीं निकले जिस्पर गुण दोष विवेचकों का ध्यान जाता और लेख का चटकीला होनाही पत्र की जान है—इस्के प्रवर्त्तकों को चाहिये या तो किसी उत्कट लेखनी वाले लेखक को इस्का सम्पादक करैं या अधिक द्रव्य व्यय कर हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखकों से लेख लिखवाय मुद्रित किया करैं जो बम्बई के सुसम्पन्न लोगों के लिये कुछ बहुत दुष्कर नहीं है—महीने में एक लेख तो ऐसा रहै जो पढ़ने वालों के चित्त को हठात् अपनी ओर खीच ले—अस्तु प्रारम्भ में जिस उठान से उठना चाहिये उस्में किसी तरह की त्रुटि इस्में नहीं पाई जाती सिवाय इस्के कि लेख चटकीले हों तब सम्भव है यह पत्र चिरस्थायी दीर्घायु हो—पत्र के प्रवर्त्तकों को हम यहाँ पर इतना और सूचित किये देते हैं कि मुफ़्तखोरों से सावधान रहैं और इस बात पर न फूल उठैं कि ग्राहक संख्या बहुत बढ़ी हुई है तीन चौथाई उस्में से ऐसे निकलैंगे जो पीछे से निबुआ नोन चटा दैंगे उनका बन्दोबस्त पहलेसे ही कर रक्खैं—ऐसों को यातो समझ कर पत्र दें या अग्रिम मूल्य के बिना पत्र न भेजा करैं—यहाँ यही पापर बेलते धौले आये केश तब यह उचित मालूम होता है कि इस तरह के अदिष्टी मूंज़ियों के चंगुल से बचने को अपने सहयोगी को पहलेही से चौकस कर रक्खैं ।

खरबूज़ा को देख खरबूज़ा रंग पकड़ता है ॥

गये नम्बर में पत्र के सहायार्थ अलवर निवासी श्रीमान् पं–रामचन्द्र वितरित २२) मुद्रा का धन्यवाद हमने छापा था कदाचित् उसी को उदाहरण मान लखनऊ निवासी पं–केशवराम विष्णुलाल पंड्या ने इसबार ५) मुद्रा सहायार्थ दिये हैं–पंड्या जी को इस निष्कारण कृपा के प्रकाश का अनेक धन्यवाद है—सर्व साधारण में पत्र के सहायार्थ कुछ देना यदि धर्म समझा जाने लगे तो निरे अपाहिज बेहने धुने का लेने वाले बछिया पुजावन बाम्हनों से हम किसी तरह कम न रहैं पर जहां दाम मिलना कठिन हो जाता है तो सहायार्थ वितरण की कौन आशा ॥

ज़मीने चमन गुल खिलाती है क्या क्या।
बदलता है रंग आसमां कैसे कैसे ॥

ज़माना हमेशा एक वज़न पर नहीं कायम रहता—कल कुछ था आज कुछ है कल फिर कुछ औरकातौर हो जायगा—कल जिसे हम बहुत बुरा काम समझते थे जिस्का करना वेद, समाज तथा धर्म के विरुद्ध था आज उस्के लिये हाथ मल पछता रहे हैं और चित्त से चाहते हैं किसी तरह उस्का प्रचार हो—एक वह समय था जब कि जाति पांति का अलग२ होना धर्म का प्रधान अंग था बल्कि हिन्दुस्तान परम पुनीत देश और आर्य जाति सबों में श्रेष्ठ इसी लिये कहलाई कि यहां चातुर्वर्ण विवेक है और यहां के लोग बड़े आचार विचारवान् समझे जाते थे—होते २ अब वही आचार विचार की लिलावट मूर्खता की पहचान और सभ्यसमाज में घिनके लायक होगई—"अत्याचारस्तु मूर्खता" सच तो यों है इस समय जाति पाँति के झगड़ेही पर देश की फ़ज़ीहत और सत्यानाश का दारम-दार आ लगा है—लोग विलायत जाने के लिये फड़क रहे हैं आचारप्रव-र्तक पुराने ऋषियों को सराप दे रहे हैं और दिन गिन रहे हैं किसी तरह पुरानी अक़िल वाले बुड्ढों की आंख मुंदे हम खुलखेलैं कैद से छुट-कारा पावैं अपने मन की कर गुज़रैं ॥

एक वह समय था कि अक़बर ने भलर चाहा कि विधवाविवाह प्रचलित हो टोडरमल आदि कई एक अक़बर के मुसाहिब जो अक़िल और पेशबीनी के नमूने होगये इस बात के जारी करने को मुस्तैद भी थे पर लल्लू जगधर ने ऐसा एक पचड़ निकाल दिया कि करी कराई सब बात नष्ट होगई—इस लिये समाज में लल्लू की इतनी प्रतिष्ठा हुई कि खत्री उनके नाम से बिकते हैं और ललुआने मेहरे सबों में उज्ज्वल समझे जाते हैं—अब इस समय लल्लू के नाम लोग झीखते हैं सैकड़ों बाल रंडायें वैधव्य कर्षित हो उनके नाम पर उंगिलियाँ फोड़ती हैं—अब इस समय देख पड़ते तो क्या

की तिल २ मास काट गीध और कौओं की ज़ियाफ़त के काम में आती और हम भी गिन के पाँच ऐसी ठनकाते कि चाँद टोया करते—वही अब इस समय कोई साल खाली नहीं आता कि अखबारोंमें दो एक विधवा-विवाह न छपते हों कितने लोग इस यत्न में लगे हुये हैं कि इसे किसी न किसीतरह जारी कर दें—

एक वह समय था कि ब्राह्मण हिन्दुस्तान के सर्वस्व समझे जाते थे मनु ने ब्राह्मणों के सम्बन्ध में लिखा है॥

सर्वं स्वं ब्राह्मणो भुंक्ते स्वं वस्ते स्वं ददाति च।
ब्राह्मणस्य प्रसादेन भुञ्जतेहीतरे जनाः॥"

ब्राह्मण अपना ही खाता है अपनाही पहनता है अपना दूसरे को दे देता है ब्राह्मण ही के प्रसाद से और लोग खाते पीते हैं—एक समय में सकल गुण गौरव पूर्ण भारतवर्ष की बुद्धितत्व का सर्वस्व ब्राह्मण अपने मूठी में किये थे प्रजा को काठ की पुतली बनाय जैसा चाहते थे वैसा नाच नचाते थे विद्या और तपस्या दोनों से भरेपुरे हो देवताओं को भी अपने आगे कुछ माल न समझते थे अब इस तरह पर बिगड़ गये हैं कि इनमें न विद्या रह गई न तपस्या—जैसे जघन्य और सब के उतार ये हैं वैसा दूसरा वर्ण न रह गया जैसी क्लेशित दशा में ये हैं वैसा यहाँ की प्रजा में कोई भी नहीं है और कोई ऐसा निकृष्ट काम न बच रहा जिसे ये न करते हों॥

एक वह वक़्त था कि यहाँ की दस्तकारी संसार भर में प्रसिद्ध थी संसार भर को हिन्दुस्तान आराम और आशाइसों की चीज़ें मुहैया करता था—यहां के वणिक और रोजगारी मालामाल थे हिन्दुस्तान का बना कपड़ा विलाइत में तुहफ़ा समझा जाता था वही अब विलाइत की कारीगरी हिंदुस्तान की नस २ में पैठ गई है यहां के दस्तकार परकटे पखेरू के समान हाथ पर हाथ रक्खे बैठे हुये पेट के लिये तरस रहे हैं—ब्रिटेन का क्षुद्र टापू जो एक समय किसी गिनती में न था अब अपने

शिल्प और विज्ञान की बदौलत सब का सिरमौर बन रहा है—एक समय ऐसा था कि अन्न यहां मनों के भाव बिकता था अब वही भाव में भूसा और तृण बिक रहा है—इत्यादि कितने नमूने इस महापरिवर्त्तन के देखने में आते हैं और आगे देखैं और क्या २ प्रगट होता है—छोटी २ बातें जो नित्य नये २ तर्ज़ की नमूद होती जाती हैं उन्हें सबों को लिखने लगैं तो यह विषय बहुत बढ़ जाय और पिष्ट पेषण की तरह गाई गीत का फिर २ के गाना हो जाय इसलिये मौन रहना ही कल्याण है—आस्तिकों की पदवी का अवलम्बन कर उस बड़े मालिक की मरज़ी जान तर्क वितर्क को अवकाश देना ही व्यर्थ है जिस्का भेद फरिश्ते और कामिलों को भी नहीं मिला तब हमारी क्षुद्र बुद्धि कूरी भरै भरी ढरकावै वाली उस्की पालिसी के पार कहां से जा सकी है—

हिन्दुस्तान पालिटिक्स में क्यों प्रबल न रहा ॥

कुछ तो यहां की धरती और जल वायु इस प्रकार का है कि सिवाय परमार्थ और परलोक सम्बन्धी विचार के इस लोक के उपकार साधन की जो २ बातें रहीं उधर इन का ध्यान ही नहीं गया—दूसरे यहाँ के प्रसिद्ध और विख्यात जन जो महापुरुष कहलाये वे हमारी पोलिटिकल पटुता पर शस्त्राघातही करते गये—पहिले तो पुराने ऋषियों ही में बहुत कम ऐसे हुये हैं जिनकी झुकावट इस ओर हुई—वेद के मंत्रों में बहुत कम ऐसे मंत्र हैं जिनका भावार्थ केवल राजकीय विषय है—अध्याय को अध्याय उलट डालिये दो एक मंत्र ऐसे मिलैंगे जिनमे क्षत्रियत्व वीरता जातीयता क्योंकर बढ़ै उस्के बढ़ाने की क्या उपाय काम मे लाना चाहिये इस्की मीमांसा की गई हो—

"आब्रह्मन् ब्राह्मणो" "इमन्देवा असपत्नं"

इस तरह के संहिता भर में दो ही चार मंत्र हैं जिनमे जातीयता

देश की उन्नति बीरत्व क्षत्रियत्व जातीय गौरव आदि पालिटिक्स के प्रधान अंगों का कुछ विवरण है सो भी आशीर्वाद के ढंग पर है–वैदिक ऋषियों से जो स्मृतिकार हुये हैं उनमे याज्ञवल्क्य उशना बृहस्पति पराशर इत्यादि केवल पाँच सात ऋषि हैं जिन्हों ने राजकीय विषयों पर कुछ ध्यान दिया है–सो भी निरा पोलिटिकल बातों पर लिखा हो सो नहीं बरन धर्म सम्बन्धी विषयों का एक अंग इसे रक्खा है–कौम का पालिटिक्स सम्बन्धी विषयों में प्रौढ़ प्रबल और ज़ोरावर होने की यह बड़ी पहिचान है कि जब जिस देश या जाति के लोग राजकीय विषयों में प्रबल होते हैं तब अपने पास की दूसरी जाति या देश पर अवश्य आक्रमण करते हैं–हाल में जापान का चीन पर हमला करना इस्का दृष्टान्त है रामचन्द्र के समय पालिटिक्स यहां की सांगोपांग थी तब तो रामचन्द्र ने लंका पर चढ़ाई करने का साहस किया–अस्तु फिर भी महाभारत के समय तक देश में मुल्क की बेहतरी का जोश पूरी तरह पर कायम रहा भारतवर्ष के हरएक प्रान्त में रणबांकुरे बीरता मुल्की तरक्की के जोश में भरे हुये क्षत्री और बड़े २ राजा विद्यमान थे–यद्यपि आपस में बहुधा मेल तो न रखते थे पर स्वच्छन्दता प्रिय और अनेक उदार गुण सुसंपन्न सब थे–मुल्क किसी अजनबी के हाथ में न जाने पावे इस बात की चोट सबों के जी में थी–पालिटिक्स क्या है, अपने स्वत्व की रक्षा क्योंकर हो, किसी विदेशी के मुकाबिले अपना मान भंग न होने पावे, इत्यादि राजकीय विषयों में लोग अच्छी तरह निपुण थे–इसी समय यवनासुर यहां आया जिसे यहां के बीर क्षत्रियों ने ऐसा मार गिराया मानों बहुत दिनों के भूखे शेर को अचानक शिकार मिलजाय–न जानिये क्या परमात्मा की इच्छा कि ऐसे समय सर्वनाश के बीज स्वार्थ परता और खुदगर्ज़ी के राह दिखलाने वाले परस्पर की विभिन्नता और विरोध की बुनियाद डालने वाले कृष्ण पैदा होगये—पुराण रचने वालों ने इन्हें स्वयं प्रभु विष्णु भगवान् के पूर्ण अवतार माना है गीता के ज्ञान के प्रवर्तक और न जानिये क्या २ खुराफात लिख रक्खा है–

इसे उनको ईश्वर और परम पुरुष नारायण कहने में कोई उजर नहीं है किन्तु देश की दुर्गति और आर्य जाति का अधः पात क्यों हुआ ऐसी २ बातों का जोश जब सवार होता है तो क्रोध और दुःख के आवेग में श्री कृष्ण महाराज की ईश्वरता पर कुछ कहने का मन होता है—जरासन्ध शाल्व करण सरीखे वीर विक्रान्त क्षत्री औदार्य और वीरता में कृष्ण की अपेक्षा बहुत अधिक थे इन सबों का नाश जो कृष्ण ने अपनी कुटिल पालिसी के द्वारा कराय पृथ्वी का भार कम किया इससे कौन सा उपकार हुआ ? क्या इन दिनों से उस समय की हिन्दुस्तान की आबादी अधिक थी ? अब इस देश की जन संख्या जैसी बढ़ी हुई है उस हिसाब से यदि दस कृष्ण अब पैदा हों तो पृथ्वी का बोझ कम हो अथवा पृथ्वी का बोझ कम करने में यदि कुछ उपकार है तो बाल्य विवाह क्यों न रोक दिया जाय कृष्ण से कुटिल पालिसी के महा पुरुष के जन्म की क्या आवश्यकता है—परस्पर की ईर्षा और स्वार्थसाधन जो कदाचित् पहिले यहां के लोगों को नहीं आता था कृष्ण महाराज ने अपने उदाहरण से लोगों को सिखला दिया—कृष्ण ने देश का विध्वंस कर केवल अपना मतलब गांठा जरासन्ध से सोमवंशी वीर और कुलीन क्षत्रियों के रहते शापित यदुवंश में उत्पन्न इन्हें कौन पूछता जो इस तरह के कौटिल्य को काम में न लाते और न इनका महत्व बढ़ता—रेवड़ी के लिये मसजिद ढहाया—पालिटिक्स में परम प्रवीण कृष्ण महाराज अवश्य थे—जर्मनी के प्रिन्स बिस्मार्क सरीखे किस गिनती में इनके सामने हैं—किन्तु यही इनकी बुद्धि शुद्ध देश के उपकार के मूल पर होती तो भारतीय प्रजा का बल वीर्य कभी कम न होता बल्कि जातीयता का अंकुर इतना दृढ़ रहता कि कभी उखाड़े न उखड़ता—

महाभारत के संग्राम के उपरान्त भारत का पुनरुज्जीवन बौद्धों के समय फिर होने लगा—क्या अचरज कृष्ण का उदाहरण लोगों को पसन्द न आया हो और वैदिक धर्मावलम्बियों से लोगों को घृणा हुई हो ऐसे समय लोगों में हमदर्दी और सहानुभूति पैदा करने के लिये बुद्धदेव ने

भारत की पोलिटिकल प्रबलता फिर से नये ढंग से स्थापित किया हो–विद्रोह की बुनियाद राजाओं में यज्ञ की प्रथा अनिष्ट कारी समझ हिंसा का खन्डन किया दया के बहाने आपस का मेल स्थापित किया जिस्का परिणाम यह हुआ कि सम्पूर्ण भारत नव नवति कोटीश्वरनन्द और अशोक के समय एक सूत्र में बंध गया और देश के सौभाग्य वृद्धि की जितनी बातें होनी चाहियें सबों की तरक्की की गई–साहित्य कला शिल्प के अनेक ग्रन्थ इस समय बनाये गये काश्मीर से कन्याकुमारी तक जैसा स्वास्थ्य इस समय रहा वैसा कभी इस देश में नहीं हुआ–हां वैदिक धर्म पर कमज़ोरी आने से ब्राह्मणों का ज़ोर बिल्कुल घट गया–

एक बात यहां पर और लक्ष्य करने के योग्य है कि इन बौद्धों को मज़हबी तअस्सुब ब्राह्मणों की आपेक्षा बहुत कम था क्योंकि ग्रन्थ जो इस समय बने वे वैदिक धर्मावलम्बियों के बनाये अधिक थे–बौद्ध और वैदिक धर्मावलम्बियों का हेल मेल वैसाही इस समय में था जैसा इन दिनों हिन्दू और मुसल्मान यहां मिले झुले हैं–हमने पहले लिखा है बौद्ध राजा होने से ब्राह्मणों का ज़ोर घट गया यही कारण बौद्धों का मुल्क से खारिज होने का हुआ–इसी से हम कहते हैं ब्राह्मण हिन्दुस्तान में बड़ी चीज़ हैं अफसोस इस समय दक्षिणा ने इन्हें सर्वथा निस्तेज कर डाला है–और ऐसा निस्तेज जघन्य और गतांक हो गये कि अब इन के उभड़ने की कोई आशा न रही–अस्तु इन्ही ब्राह्मणों के बीच शंकराचार्य पैदा हो गये अद्भुत विद्या तो जो कुछ शंकर स्वामी में थी वह विदित ही है "पालिटिक्स" राजनीति का एच पेच समझने में एकता रहे–इन्होंने विद्या और कुटिल नीति के बल उस समय के राजाओं को अपने वशंवद कर लिया उन्हें फिर वैदिक धर्मावलम्बी कर बौद्धों को देश से ऐसा उच्छिन्न किया कि उनका बीज भी यहां न रहने पाया–बौद्धों के भाई जैनी भी उस समय बहुत बढ़ गये थे बल्कि हम इन जैनियों को बुद्धही के मत की एक शाख कहेंगे–बौद्धों की देश में दुर्गति देख जैनी लोग डर गये अपने जैन मत के सिद्धान्तों को दबा रक्खा वेद मत

की भी कोई २ बात मानने लगे और ब्राह्मणों से द्रोह बुद्धि कम कर दिया इस कारण बचे रहे और अब तक गुजरात और दक्षिण में बहुत अधिक पाये जाते हैं—पर वही विगड़े हुये शुद्ध जैनी बहुत कम हैं—बौद्ध और हिन्दू कहां तक मिल झुल गये थे इस्का पता मृच्छकटिक नाटक से अच्छी तरह लगता है—उस नाटक में जितने नीच पात्र हैं सब बौद्ध हैं चारुदत्त जो उसमें मुख्य नायक है वह वैदिक धर्म को भी मानता था और बौद्ध मन्दिर में भी जाता था—भवभूति के समय तक बौद्ध यहां थे मालती को माधव से मिलाने वाली एक बौद्ध भिक्षुकी को मालती माधवनाटक में भवभूति ने लिखा है शंकर ने बौद्धों को तो देश से निकालने में कृतकार्य हुये पर पालिटिक्स की जड़ उखाड़ डाला—संसार मिथ्या है और "अहं-ब्रह्मास्मि" ऐसा फैला दिया कि परस्पर का प्रेम और भक्ति कहीं नाम को भी न रही—संसार मिथ्या है शंकर की इस अनर्गल शिक्षा ने देश को जर्जरित और कमज़ोर करी डाला था इसी समय मुसल्मानों के सख्त कदम यहां आया और हिन्दू राजाओं को अपने आधीन करना उन्हें सहज हुआ और भारत का यहां तक दलन किया कि देश क्षार में मिल गया—न जानिये क्या परमात्मा की लीला है कि कुछ कहा नहीं जाता—आर्य सन्तान को तो इस देश का एक चक्र राज्य होनाही न था तो उसी समय अंगरेज़ या योरुप की कोई कौम यहां अपना साम्राज्य उसी समय स्थापित करती तो कदाचित् आर्य जाति और भारत देश इस तरह की अस्तंगत दशा को न पहुंचता जैसा अब पहुंचा है—

इतना ही शंकर के समय फिर भी सतेजस्कता स्वत्वाभिमान और सरगरमी लोगों में कायम रही—उपरान्त रामानुज और बल्लभ जन्म ले ऐसा छुआ छूत का दंभ और दास्य भाव फैलाया कि यहां के लोग किसी काम ही के न रहे—जिनके मज़हब की तालीम का लब्बलुआब दास्य भाव है उनमें प्रभुशक्ति जोश सरगरमी कहां से आ सक्ती है—एक बात अलबत्ता रामानुज और बल्लभ से अच्छी बन पड़ी कि शंकर ने जो संसार का मिथ्यात्व

प्रतिपादन किया था और प्रेम की जड़ उखाड़ फेंक दिया था उसे इन लोगों ने संभाल रक्खा पर जोश और उत्तेजना जो इनके मत की शिक्षा न थी इसलिये वह प्रेम भक्ति में परिणत हो सेव्य सेवक भाव को पुष्ट किया—और दास के दास बने रहे उत्तेजना बिलकुल कम हो गई मजहबी जोश को बढ़ाया राजकीय सम्बन्धी मुल्की जोश कहीं नाम को भी न रहा—जिसे देख घिन होती है और क्रोध आता है कि यह लोक को बिगाड़ परलोक सुधार के क्या होगा—मत सम्बन्धी कोई बात हो उस्पर देश का देश टूट पड़ैगा राजकीय हानि कैसी ही उद्यत और प्रबल हो किसी को जोश न आवैगा—इसी समय कृष्ण चैतन्य महाप्रभु बंगाल में और गुरु नानक पंजाब मे हुये कृष्ण चैतन्य ने प्रेम को अत्यन्त पुष्ट किया और खान पान के ढकोसले को कम किया जिस्का परिणाम बंगाल में देखा जाता है कि बंगाली इस समय मुल्की जोश में सब के आगे हैं—पंजाब में नानक शाह ने खान पान का विचार उठाय एकता के डोरे में जो सबों को बांधा उस्का परिणाम यह हुआ कि गुरु गोविन्द के समय पंजाबी उभड़ उठे और मुसल्मानों से पंजाब छीन ही तो लिया—रामानुजी या वल्लभ संप्रदाय वाले भी ब्राह्मणों के वैसाही विरुद्ध हैं जैसा बौद्ध और जैन थे किन्तु ब्राह्मणों में सतेजस्कता और उत्तेजना न रहने का यह पक्का सबूत है कि बौद्धों के समय इन्हों ने शंकराचार्य को उठाय खड़ा किया और अब स्वयं बहुत से ब्राह्मण चक्रांकित कंठीबांध दासोस्मि की पद्धति में शामिल ब्राह्मण से शूद्र हो गये—यह क्या कि कंठी बांधे हुये या चक्रांकित शूद्र भी अच्छा और चतुर्वेदी ब्राह्मण चक्रांकित न हो तप्त-मुन्द्रा न लिये हो कंठी न बधे हो तो वह किसी काम का नहीं—चक्रांकित या कण्ठीबन्ध शूद्र के हाथ का पानी पियैंगे भोजन करैंगे ब्राह्मण कैसाही शुद्ध हो और ब्रह्मकर्म में निष्ट हो उस्का छुआ पानी भी न पियैंगे—इस्से बढ़ कर और क्या ब्राह्मण का अपमान होगा—इतना अलबत्ता कहैंगे कि रामानुज वल्लभ चैतन्य प्रभृति भी सब ब्राह्मण ही थे—जैसा अंगरेज़ी

शिक्षा ने हम लोगों के हृदय को अब खोला है और मुल्की जोश का अंकुर पैदा कर रही है वैसाही एक सहस्त्र वर्ष पहिले जब रामानुज वल्लभ आदि नहीं प्रगट हुये थे हम लोगों को तालीम का मज़ा चिखाया जाता तो देश से पालिटिक्स का नशा कभी कम न होता—इधर हाल में स्वामी दयानन्द अलवत्ता ऐसे हुये थे जिनके मत का मूल केवल पालिटिक्स थी पर अफसोस की अल्पायु हो गये इसमे सन्देह नहीं स्वामी दयानन्द कुछ दिन और जीते होते तो बहुत लोगों के नेत्र खुल जाते—मैं दयानन्दी नहीं हूं किन्तु जिसमे जो गुण हों उसे क्यों न कहें—महाकवि श्री हर्ष ने अपने नैषध चरित्र में ऐसा ही कहा भी है कि जिसमे जो गुण हो उसे न कहना मानो मुख में जिह्वा का जन्म व्यर्थ है और सच्चे गुणविवेचक को चित्त में ऐसा शूल पैदा करता है जैसा वाण के चुभ जाने से हो सक्ता है॥

वाग्जन्म वैफल्य मसह्य शल्यं गुणाधिकेवस्तुनिमौनिताचेत्
खलत्व मल्पीयसिजल्पितेपि तदस्तुवन्दि भ्रम भूमितैव॥

इस तरह पर वेद के समय से आज तक पालिटिक्स हिन्दुस्तान की जिस तरह पर बिगड़ती गई कह सुनाया इसमे जिस किसी को जहां पर कुछ मत विरुद्ध हुआ होवे माफ करैंगे यद्यपि सिद्धान्त है "सत्येनास्ति भयंक्कचित्" फिर भी किसी का जी दुखाने से लाभ क्या—

संस्कृत लोकोक्ति॥

श्रीयुत पं०—बालकृष्ण भट्ट जी का लेख ऐसा नहीं है कि जिसने हिन्दीप्रदीप के पाठक और हिन्दी के रसिकों के चित्त को नित नई उक्तियुक्ति पूरित आशयों से आकर्षित न किया हो—इनकी अद्भुत कुशाग्र बुद्धि ऐसी है कि जिस कठिन से कठिन विषय को ये उठाते हैं उसको अपने लेख द्वारा सरल कर दिखा देते हैं और लेख का चमत्कार कम नहीं होने पाता—

संस्कृत लोकोक्ति नाम का ग्रन्थ जिसे फैज़ाबाद निवासी श्री मान् बाबू बलदेव प्रसाद वकील हाईकोर्ट की द्रव्य संबन्धी सहायता पाय भाषानुवाद सहित इन्होंने मुद्रित किया है इस्से सर्व साधारण का बड़ाही उपकार हुआ जो संस्कृत से थोड़ा भी परिचय रखते हैं उनको भट्टजी के किये अनुवाद से पूर्वापर के बोध में बड़ी सहायता मिलैगी—अब इसमे संस्कृत के साहित्य की प्रायः सब लोकोक्ति आगईं—बड़े परिश्रम से इन्होंने वर्ण क्रम पूर्वक जो इसे कर दिया यह और भी उत्तम हुआ क्योंकि इस्से जिस लोकोक्ति को जब चाहो निकल सक्ती है—समाचार पत्र के संपादकों को विशेष उपयोगी है—इन सब परमोपयोगी गुणों को देख हम यह कह सक्ते हैं कि एक प्रति इस अनुपम ग्रन्थ की प्रायः सबों हिन्दी भाषा रसिकों को रखनी चाहिये और संपादकों को तो अवश्य रखनाही चाहिये—

कैलाशनाथ शुक्ल
प्राइवेट सिक्रेटरी स्वर्गवासी महाराजा
सर दिग्विजय सिंह बहादुर बलरामपुराधीश—बनारस

इति०

ओ३म्

गङ्गाजलामृतपवित्रसाबुनकार्यालय ॥

विदित हो कि इस कार्यालय में स्वच्छ साबुन निर्मित किया जाता है, उन वस्तुओं का योग जिनसे हमारे देशवासियों को धर्मभ्रष्ट होने का सन्देह है किंचित् नहीं होता और वह धर्माधर्मविचार की चीजें जो अंगरेजी कारखानों के काम में लाई जाती हैं यहां बिल्कुल छुई भी नहीं जातीं, उनकी जगह सुगन्धित देशी तैल नारियल और इतर आदि से बनाया जाता है ॥

इस लिये हम निवेदन कर आशा करते हैं कि हमारे देशके शुभेच्छुक भारतवर्षीय राजा महाराजा रईस सेठ साहूकार जमीदार आदि सब सज्जन महाशयों को चाहिये कि उक्त कार्यालय को उचित सहायता देकर बाधित और उपकृत करें ॥

(१) चन्दन का साबुन—अत्यन्त, सुगन्धित मगज़ को तरावट, आंखों को प्रकाश देता है।

(२) कैवड़े का साबुन—मगज़ की पुष्टकरता और सेहुंओं का नाशक है।

(३) गुलाब का साबुन—आंखों के धुन्ध और जाले के वास्ते अति गुणदायक है।

(४) इलायची का साबुन—आंखों के वास्ते और बदन की बीमारियों को अत्यन्त गुणदायक है।

(५) हिना का साबुन—जो बीमारी रोमांच के बन्द होने से होती हैं उनके वास्ते गुणदायक है।

(६) काफूर का साबुन—दिमाग़ को ताक़त देता, दिल को खुश रखता है।

(७) खस का साबुन—मग़ज़ की खुश्की के खोने के वास्ते अति लाभदायक है।

(८) कारबोलिक—फोड़े, फु[illegible]सी, जख़म और खुजली, मुंह की झांई और दाद इन सब को दूर करता है।

(९) दद्रुघ्न—दाद, खाज, पामा आदि को गुणकारी है।

अध्यक्ष—परमानन्द बाबा नारायण दास जी के पुत्र
अहियापुर—प्रयाग

हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट है आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि० १६ सं० ६-१० { प्रयाग } मई-जून १८९६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १=)
नमूने की कापी का =)॥

१—९—९६

हिन्दीप्रदीप

जिल्द १९ संख्या ९-१०	प्रयाग	मई-जून सन् १८९६ ई०

हमारी आध्यात्मिक उन्नति ।

एक समय ऐसा था जब हम आध्यात्मिक उन्नति में बहुत आगे बढ़े थे रोम, ग्रीस, मिसिर आदि भारत के सम कक्ष प्राचीन देश सभ्यता के और २ अंश में भारत की समता करने लायक चाहो रहे हों किन्तु आध्यात्मिक उन्नति उन देशों में कहीं नाम मात्र को भी न थी—जिस समय वेदों का शिरो भाग दश उपनिषद् रचे गये वह एक ऐसा समय था कि जहां देखो वहीं वेदों की श्रुतियों का कोलाहल सुनाई पड़ता था—पतित पावनी भागीरथी श्री गङ्गा के तट पर जाइये तो प्रबल धारा से यही कर्ण गोचर होता था "सर्वं खल्विदं ब्रह्म नेहनानास्ति किंचन" वट वृक्ष के नीचे जाइये तो उसके पत्तों की खड़ २ ध्वनि में भी सत् चित् आनन्द गूंज रहा था—पीपल वृक्ष के तले लम्बे २ ताड़ खजूर नारियल आदि वृक्ष जिनकी जन्म भूमि यह देश है उनके तले जाइये तो वहां भी वही ध्वनि सुनाई देती थी इत्यादि—वही अब हमारी आध्यात्मिक उन्नति में कहां तक कमी हो गई कि अब हमारे ढंग देख यह कोई नहीं कह सक्ता कि यहां वाले कभी किसी तरह की आध्यात्मिक उन्नति में कुछ कर गये हैं—जब तक हम आध्यात्मिक उन्नति में पूर्ण थे तब तक काष्ट पत्थल और पेड़ पालो की पूजा हम लोगों में प्रचलित नहीं हुई थी—वरन हमारी आराधना का क्रम केवल मनन चि-

ज्ञान और ध्यान तथा धारणा थी—उस समय सर्व भूतानुकंपा पर दार पर द्रव्य पर द्रोह पराङ् मुख आदि उदार गुण यहां आबाल वृद्ध बनिता मात्र में प्रकाशमान था—पाप और अधर्म तथा अविश्वास कहीं लेशमात्र को न था—न उस समय तक कौम में किसी तरह की कमज़ोरी आई थी—राजा परीक्षित का किस्सा और वृष के शरीर मे धर्म का रूपक हमारी आध्यात्मिक उन्नति के ह्रास की साक्षी है—सच है तब तक प्रतिमा-पूजन आदि उप धर्म तथा धर्म का आभास यहाँ नहीं प्रचलित हुआ था—ज्यों २ आध्यात्मिक उन्नति की असलीयत कम होती गई त्यों २ नकल और गुड़ियों के खेल मे हम फसते गये—यद्यपि इन खेल खिलौनों का प्रयोजन भी वही आध्यात्मिक विषय था और बुद्धिमानो ने इसी-लिये इसे प्रचलित किया कि पहिले प्रतिमा पर अपना ध्यान स्थिर कर तब मन मे उसके अखण्ड वैभव को स्थिर करैं—किन्तु इन प्रतिमाओं के इतने भेद निकाले गये और यहां तक लोग जन्म पर्यन्त बाहरी पचड़ों मे उलझे रह जाते हैं कि आभ्यन्तर मे ज़रा भी उनके बाह्य का असर नहीं पहुंचता—जिस किसी को प्रतिमा के द्वारा सिद्धि प्राप्त हुई है और भक्त भावना से ज्ञान और आध्यात्मिक उन्नति की ओर उनका चित्त रूजू हुआ वे वही हैं जिनका पूर्वाभ्यास अध्यात्म विषय मे बहुत अधिक था थोड़ी ही कसर रह गई थी वह उनकी इस जन्म मे पूर्ण हो गई और सिद्धि तथा महत्व को पहुंच गये—जैसा गीता मे भगवान् ने कहा है॥

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
नहि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति॥
प्राप्य पुरायकृतांल्लोकानुषित्वा शाश्वतीसमाः।
शुचीनां श्रीमतांगेहे योगभ्रष्टो भिजायते।
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्।

एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ॥
तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्बदेहिकं।
यततेच ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥

भगवान कहते हैं आध्यात्मिक विषय मे उन्नति करने वाले का विनाश नही होता मरने के उपरान्त पुण्यात्माओं के लोक मे बहुत दिनो तक वास कर पवित्र कुल मे जन्म ले फिर सत्कर्म करता है और अन्त को ईश्वर को पा जाता है—कबीर नानिहक इत्यादि ऐसेही थे—जिनको पूर्वाभ्यास बिल्कुल नहीं है उन को प्रतिमा तथा और२ बाहिरी धर्म सम्बन्धी विटंबनायें सब२ विटम्बना मात्र हैं या रोज़गार हो गई हैं—रोज़गार में भी जिनका चल निकला उनको तो खैर सब अच्छाही अच्छा है नहीं तो यह उन का दंभ यहां तक बुराई पैदा करता है जिस्का नमूना हमारी हर एक बातों मे देखने मे आ रहा है—बड़े धर्म धुरन्धर हैं बाहिरी आचार बिचार मे दंभ की साक्षात् मूर्ति हैं पर उस आचार बिचार का उनके चित्त पर या आध्यात्मिक बातों पर कुछ असर पहुंचा हो कभी नहीं—कसौटी के वक्त सहजही उघर पड़ते हैं तब हम कैसे कहैं बाहरी आचार बिचार आध्यात्मिक उन्नति का सहायकहै—आचार प्रवर्तक ऋषियों ने चित्त की शुद्धि और इन्द्रियों का दमन मूल मे रख भांत२ के आचार चलाये अब वह केवल दंभ मूलक रह गया चित्त की शुद्धि या दमन के लिये उपकारी हो सो कहीं बहुत कम देखा जाता है—अस्तु आध्यात्मिक उन्नति मुल्क की तरक्की का बहुत बड़ा अंग है और हमारी इस गिरी दशा में अपने को सुधारने के लिये बहुत आवश्यक है ॥

हाईकोर्ट यहां रहै या लखनऊ जाय।

लार्ड केनिंग के समय इलाहाबाद पश्चिमोत्तर की राजधानी बहुत

सोच विचार के की गई है बल्कि यहाँ की अंगरेज़ी बस्ती का नाम इसी से लार्ड केनिंग के नाम से केनिंगटन पड़ा—बहुत सा ख़र्च कर गवर्नमेंट हौस बनाया गया हाईकोर्ट सेक्रेटेरियट बोर्ड आफ रिवेन्यू अकौंटेंट ट्रेज़री आदि के दफ़तरों के लिये कई लाख रूपया ख़र्च कर चार आलीशान कोठियाँ बनाई गईं युनिवरसिटी यहां क़ायम की गई—लार्ड केनिंग के समय से अब तक तीस या पैंतीस वर्ष इलाहाबाद को बनाते ही बीत गया इतने दिनों के उपरान्त अब यह इस लायक हुआ है कि राजधानी कहा जाय—इंगलिश क्वार्टर इस्का ऐसा है कि कुशादगी और सफ़ाई में कलकत्ता और बम्बई से भी चढ़ा बढ़ा है—कलकत्ता बम्बई मन्दराज में हाईकोर्ट वहीं है जो उन २ प्रान्तों की राजधानी समझा गया है—और हाईकोर्ट का रहनाही राजधानी की रौनक है हाईकोर्ट चली गई तो फिर यह राजधानी काहे को रही—अवध के तअल्लुक़ेदारों की ख़ातिरदारी से रीझ अक़सर लाट साहब योंही लखनऊ में बहुधा रहते हैं जब हाईकोर्ट भी यहां से चली गई तो इलाहाबाद को पश्चिमोत्तर की राजधानी कहना गवर्नमेंट का उपहास कराना है—दूसरी बात यह कि तब इलाहाबाद युनिवरसिटी विधवा हो जायगी लाट साहब जो इस्के चैनसलर हैं काम की बहुतात से मीटिंग में बहुत कम आते हैं वाइस चैनसलर बहुधा इस्का सब काम करते हैं और वाइस चैन्सलर हाईकोर्ट के प्रधान जज्ज या बेरिस्टर अब तक होते आये हैं और आगे भी प्रायः इन्हीं लोगों में कोई होंगे जैसा कलकत्ता बम्बई और मन्दराज में देखा जाता है कि वहां हाईकोर्ट के जज्ज और बेरिस्टरों ही में कोई इस पद पर किया जाता है जब हाईकोर्ट लखनऊ गई तो यह आशा करना व्यर्थ है कि हाईकोर्ट के लोग अपना२ काम छोड़ यहां की युनिवरसिटी के लिये आया करेंगे—इस दशा में शिक्षा विभाग के थोड़े से लोग अपने मन की कर गुज़रेंगे—योंहीं हमारे यहां का शिक्षा विभाग प्रशंसा के योग्य नहीं है तब तो हम लोगों की शिकायत का मौक़ा बहुत अधिक बढ़ जायगा—लखनऊ में हाईकोर्ट की इमारत बनाने

का जो ख़र्चा होगा वह भी प्रजाके माथे पड़ेगा—इन सब बातों के होते भी लखनऊ रौनक में कुछ भी न बढ़ैगा—वहां अब भी पुराने नौव्वाब इतने अधिक हैं जिनका वसीक़ा लखनऊ ऐसे उजड़े शहर के सहारा पहुंच ने के बहुत है—न्यूटन महाशय ने आकर्षण शक्ति के सिद्धान्त को प्रगट कर यही निश्चय किया है कि बड़ी चीज़ सदा छोटी को आकर्षण करती है न कि छोटी चीज़ बड़ी को किन्तु अवध के ४०० तअल्लुक़ेदारों की खुशामद और हाकिमों की खातिरदारी में इतना भारी गुण आ गया है कि न्यूटन के सिद्धान्त को उलट दिया चाहती है—पर याद रहे यह वही लखनऊ है जो सन् ५७ के बड़े बल्वे में करीब साल भर तक उधम मचाये रहा—न ईश्वर करै बुरा दिन कभी फिर आवै नहीं तौ लखनऊ एक ऐसा शहर है कि जहां नवाबी सल्तनत की याद अब तक ताज़ी है और इस कारण और शहरों की बनिस्बत वहाँ उपद्रव होने का ज़्यादा डर है हाईकोर्ट को वहां स्थापन कर इसको गवर्नमेंट की राजधानी बनाना शायद सब नीति निपुण लोगों की राय में अच्छी पालिसी न होगी—प्रयाग के किले के समान कोई ऐसा स्थान लखनऊ मे नहीं है और यही सब सोच बिचार प्रयाग को मध्य समझ गवर्नमेंट ने इसे इन प्रान्तों की राजधानी नियत किया—तअल्लुकेदारों का ऐसाही हठ है कि अवध पश्चिमोत्तर में न मिलाया जाय तो वहां अपनी निज की जुडिशल कमिश्नर की कोर्ट हई है अवध वाले अपनी डेढ़ चावल की खिचरी पकाते रहैं गवर्नमेंट को इतना बड़ा अन्याय और हाईकोर्ट के उठाने में कई लाख का खर्च बरदाश्त करने को क्यों बाधित कर रहे हैं—क्या राजधानी किसी स्थान की रोज़ २ बदलती रहती है यदि ऐसाही है तो महम्मद तोगलक को दिल्ली से दौलताबाद को राजधानी बनाने के लिये हम नाहक नाम रखते हैं—हाईकोर्ट को यहां से लखनऊ बदल देना मानो लखनऊ

को राजधानी स्थापित करना है—लखनऊ सदा से एक कोने में पड़ा हुआ अवध मात्र की राजधानी रहा पश्चिमोत्तर से इस्का कभी सरोकार नहीं रहा वैसाही अब भी रहना चाहिये—हाईकोर्ट को यहाँ से वहाँ उठा कर लेजाने में कितने लोगों को तरद्दुद और बड़ी भारी हानि सहना पड़ेगा मानो एक दूसरी नई दुनिया कायम करना पड़ेगा—केवल तअल्लुकेदारों को खुश करने के लिये ३० वर्ष में जो इमारत बनकर तैयार हुई है उसे ढहाय एक नई कायम करना कौनसी बुद्धिमानी और न्याय है—ये तअल्लुकेदार प्रजा के हित के काम में सर्कार के सहमत कब हुये हैं सर अलफ्रेड लायल के समय अवधरेंट एक्ट् में येही तअल्लुकेदार हैं जो सब के सब एक मुह हो उस ऐक्ट् के पास होने में विरुद्ध रहे—लायलही साहब ऐसे रहे जिन्हों ने शेर के मुह से छीन प्रजा का हक्क ज़मीदारों के मुकाबिले बचा रक्खा—हाईकोर्ट की तबदीली में हम कोई बात पक्की बुनियाद और गवर्नमेंट के बड़े फाइदे की नहीं देखते सिवाय तअल्लुकेदारों की खुशी के—अवध की जुडिशली यहां उठ आने से कोई बड़ी हानि नहीं है और बहुत कम लोगों को किसी तरह का तरद्दुद आ पड़ेगा—लखनऊ की आब हवा भी इलाहाबाद की अपेक्षा अच्छी नहीं है जैसा कि सर्कारी रिपोर्टों से प्रगट है। न इस तरह की कुशादगी अंगरेज़ी बस्ती और कन्टुन्मेंट के लिये वहां है तब इलाहाबाद को उजाड़ लखनऊ यहां से बेहतर क्यों समझा जायगा—लखनऊ के एक बैरिस्टर लिंकन साहब लिखते हैं कि मुसल्मानों से अगर पूछा जाय तो वे एक स्वर से लखनऊ के लिये राय देंगे इस में कोई शक नहीं पश्चिमोत्तर देश और अवध में दिल्ली आगरा टूट जाने से लखनऊ अब मुसल्मानों का प्रधान केन्द्र हो गया है—शायद जितने मुसल्मान रईस मौलवी और मुल्ला लखनऊ में हैं उतने हिन्दोस्तान के दूसरे शहर में नहोंगें किन्तु राजनीतिज्ञ पुरुष इसको लखनऊ के प्रतिकूल एक गम्भीर प्रमाण मानेंगे नकि उसके अनुकूल ॥

खटका ।

पहले तो पढ़ने वाले ही इस खटके का नाम सुन अपने जी में खटका करेंगे कि यह क्या खटके की बात सुना रहा है—पाठक यह बात ऐसी ही है ब्रह्मा की सृष्टि में कोई मनुष्य एक पल के लिये भी इस खटके भटके से खाली नहीं रहता—अचक माया धरी हुई है आगे को उस माया का भोग बिलास करने वाला कोई नहीं है बहुत सा टोटका टन मन मंत्र यंत्र के बाद घर वाली के कुछ आगम प्रगट हुआ भी तो गर्भस्राव का खटका लगा रहता है—धरती पर आये ईश्वर ने बड़ी कृपा की पत्थर पर दूब जमी तो नित उठ एक न एक बीमारी का खटका लगा रहता है और बड़े हुये तो अपने साथियों से खेलते हुये हारने जीतने का खटका रहता है—स्कूल में मास्टर साहब सक्षात् यमराज के अवतार घर में बाप मा की घुड़की और झिड़की का खटका—बरसवें दिन परीक्षा और दरजा चढ़ाये जाने का खटका—कुछ याद नहीं है बिना इमतिहान दिये बनता नहीं—फेल हुए तो अपने साथियों से आंख नीची होती है साल भर तक किताब के साथ लिपटे रहे हिस्टरी याद है तो मेथामेटिक्स का खटका है—इशारे बाज़ी और अपने पास वाले से पूंछ आछ लिखते तो वहां इमतिहान के कमरे से गार्ड लोगों की सख़्त मिजाजी का खटका है—खैर किसी तरह इमतिहान दे देवाय फारिग हुए तो अब दो एक नम्बर कम रह ने का खटका रहा—मुमतहिन साहब का मिज़ाज दुरुस्त रहने को रोज़ देवता पित्तर मनाया करते हैं और बड़े हुए जवानी का जोश सवार हुआ शरीर की एक२ रगें फड़क रही हैं ऐसे समय सब से ज़ियादह खटका आँख का रहता है जिस्का किसी ओर लग जाना बहुतही सहज है अच्छा किसी ने कहा है—

आया इश्क लपेट मे लागी चश्म चपेट ।
वोही आया खलक मे और भरैया पेट ॥

नज़र ऐसी बुरी बला है कि सौ मे निन्नानबे इसके रोगी होंगे खैर आंख के रोग से बचे तो अब जीविका की चिन्ता सवार हुई-सार्टिफिकेट लै सब ओर घूम आये पंखा कुली तक की जगह न मिली-हज़ार२ मुशकिलों से कहीं कोई जगह मिली भी तो डाकृर साहब से हेल्थ सार्टिफिकेट का खटका—क्या जाने डाकृर साहब की घन चक्कर अकिल मे उस समय क्या सवार हो जाय-परदेश मे नौकरी हुई तो घरवालों की सही सलामती का खटका—घर पर हुये तो काम की ज़ियादती से एरियर न पड़ा रह जाने का खटका प्रतिष्ठा और पद्धति बनाये रहने का खटका-ईश्वर सानुकूल हुये और सब निभता गया तो बदली का खटका रहा—हाकिम बाला से दुष्टों की शिकायत का खटका-तखफीफ़ मे आजाने का खटका-गुड सरविश का खटका-स्वाती की बुंद सा पेनशन का दिन ताक रहे हैं ६ वर्ष बाकी है अब ५ ही रहे अब केवल छही महीने रहे अन्ततो गत्वा आधे या तिहाई पर पेनशन हुई-ऐसे बूढ़े बैल को कौन बांध कर भुस दे यह सरकारही का घर है कि ऐसों को भी बेड़ा पार होता जाता है-निदान पेनशन हुई तो घर मे बैठे २ मन नहीं लगता आस पास की रियासतों मे टटोलने लगे तेली के बैल को घूमने से काम-इधर लड़के पढ़ लिख तैयार हुये उन्हे किसी काम मे लगा देने का खटका सवार हुआ—उनको नौकरी मिलने के लिये बंगले२ फिदवी खाकसार करते फिरे-प्रारब्ध और वसीला अच्छा हुआ उन्हे भी कहीं नौकरी मिल गई अस्तु नौकरी पेशेवालों का खटका तो सटक गया अब उनको लिखते हैं जो रोज़गार की तरफ झुके हुये हैं ॥

सत्तर आदमी की मूड़ी फूच और अनेक तरह की बेईमानी कर असंख्य धन इकट्ठा किया तो सही पर दिवाला पिटने का खटका न गया-पहिया चल निकली है काम चलता जाता है रातो दिन दिसावरों की

चिट्ठियां लिखते २ कमर झुक गई आंख झन्त हो गई पर तौ भी पूंजी मूल धन में पायदारी न आई–हिस्सेदार हरदम मूड़ी कूचने को मुस्तैद रहते हैं भाई को सीधा सादा गबरू दास पाय बातों मे पिरोहे रहे तौ भी गला न छुटा भतीजे ऐसे कट्टर और निर्दयी जनमे कि पावैं तो चचा साहब का हाड़ मास तक चबा जांय–चचा को भी इन भतीजों का हरदम खटका बनाही रहता है पावैं तो उन्हे निर्मूल कर डालैं–कितनो को के० सी० एस० आई० राय बहादुर बनने का खटका रहता है कौंसिल की मेंम्बरी के लिये दिलो जान से कोशिश कर रहे हैं–कलक्टर कमिश्नर आदि हाकिमों की खुशामद करते२ उनके बंगलों की चौखट पर माथा और नाक रगड़ते२ नाक घिस गई पर जब काम पड़ा तो उनका निरादंभ और स्वार्थ परता देख लोंगों ने उन्हे न चुना–हमी चुनें जाँय इसलिये बहुत हट पटाने पर अन्त को सब ओर से महरूम और निराश हो अपना सा मुह लिये बैठ रहे–जुआ खेलने गये बड़ा भारी दांव लगा दिया यहां तक कि एकही दांव में या तो दस हज़ार आते हैं या कौड़ी के तीन २ होते हैं दांव का खटका लग रहा है पौ आवै या छक्का–इसी तरह रोज़गारियों को चुङ्गी और टैक्स का खटका–गवर्नमेंट को रूस के आने का खटका–संपादकों को राज विरुद्ध लेख का खटका–गवर्नमेंट को शासन प्रणाली मे उमदा से उमदा राय देते रहैं सर्कार का राज्य अटल होने के लिये अपने लेख द्वारा प्रजा मे राज भक्ति स्थापित करने की सदा चेष्टा करते रहैं इसका कोई धन्यवाद या इनाम नहीं–कर्मचारियों के निन्दित काम और अत्याचार से खिन्न हो जोश मे आय कभी कोई बात किसी संपादक ने लिख डाला बस उसके जी की आ लगी मुकद्दमा कायम हो गया ईश्वरही सहायक हो तो छुटकारा हो इत्यादि संसार के यावत् मनुष्य एक क्षण भी तरद्दुद से खाली नहीं दिन रात खटके के झटके में पड़ भटके हुये हैं जिस्से शान्ति को चित्त मे अवकाशही नहीं मिलता–बलटोही मे एक चावल टटोलने की भांत थोड़े से

उदाहरण खटकों के यहां दिखलाये गये—अजी जीते जी तो खटके से कोई खाली रहताही नहीं मरने पर भी फिर जन्म लेने का खटका लगा रहता है—धर्मा धर्म साथ ले यमराज के पाहुने हुये अपने किये हुये पाप या पुण्य के अनुसार स्वर्ग सुख या नारकी यातना भोग फिर जनमे फिर मरे इस तरह पर जन्म मरण की इस अनादि धारा में पड़ भवसागर की चंचल और तरल तरंगों में गोता खाते हुये ऐसेही कोई भाग्यवान मुकती होंगे जो परमात्मा के निर्वाण पद के अधिकारी हो सदा के लिये खटके से मुक्त हो जाते हैं ॥

हमारे आर्य ऋषियों में ऋषित्व क्या था ।

हम जब अपने पुराने ऋषियों मे उनके असीम तेज बल और पराक्रम पर दृष्टि फैलाते हैं तो अनेक तर्क वितर्क मन मे उठते हैं कि उनमे ऋषित्व की क्या बात थी जिस्से वे ऋषि कहलाये—अस्तु विचारिये तो न जानिये कितनी बातें ऋषिपने की उन्में थीं पर सब के ऊपर सदाचार और चरित्र पालन तथा दिमागी कूवत कायम रखने की कोशिश थी हम लोगों मे अब इस समय इन दोनो में एक भी बाकी नहीं है—सच तो यों है कि जितने सत्कर्म किये जाते हैं उन सबों के अनुष्ठान का यही प्रयोजन रहता है जिस्से मस्तिष्क न बिगड़ने पावे और बुद्धि तथा ज्ञान शक्ति सूक्ष्म विचारों मे धसने से न हटै उस्मे मन्दता या कुण्ठता न होने पावे—बुद्धि को गोठिल होने से बचाये रखना उनको यहां तक अभीष्ट था कि गायत्री जो उन का मूल मंत्र है और द्विज मात्र की निधि के समान सुरक्षित और प्यारी है और ब्राह्मणों की तो सर्वस्व है उस्मे वरेण्य परमात्मा से यही प्रार्थना किया है कि "धियो योनः प्रचोदयात्" जो हमारी बुद्धि को कर्म मे प्रेरणा करता है—जिस्के तात्पर्य यह हुए कि बुद्धि का विमल रहना ही सांसारिक

तथा पारलौकिक कामों के बनने और सुधरने का मूल कारण है बुद्धि जब शुद्ध है तब सदाचार तथा चरित्र पालन भी बन पड़ेगा—इसलिये ऋषित्व का पहिला प्रधान कारण चरित्र की जड़ भी वही दिमागी ताकत अर्थात् बुद्धि का पैनी होना है—इसलिये उन्होंने अपना भोजन सात्विक और बुद्धि बर्द्धक पदार्थ नियत किये कर्म की ओर झुकावट शुद्ध सतोगुणी रक्खा जितनी दुर्बासनायें जो बुद्धि को बिगाड़ने वाली हैं सभों से अपने को बचाया—तपोवन और कुटियों में रहना स्वीकार किया जिसमें निकृष्ट कोटि वालों के दुःसंग और दुर्वायु से बचे रहैंगे तब तो बुद्धि में मान्द्य और कुण्ठता न होने पावेगी—हम लोग इन दिनों जो २ उन महात्माओं ने बरकाया उन्हें अदबदाय के करते हैं तब कैसे संभव है कि हमारे मस्तिष्क की शक्ति जैसी की तैसी उन ऋषियों की सी पैनी बनी रहै—सोहबत का बुद्धि पर बड़ा असर होता है इसी लिये ऋषि मण्डली घनी बस्ती से दूर रह रजोगुणी लोगों का संग बचाते थे—हम लोग इन दिनों खासकर भीख के सहारे जीने वाले ब्राह्मण भीख की लालच से उन रजोगुणी धनी अमीरों की सेवाही नहीं करते बरन अनेक दोष दूषित उन धनियो के चरित्र को अपने लिये नमूना किये हुये हैं—उन्हें सब भांत अपने से श्रेष्ट मान जैसा कुछ दूषित क्रम उनका है उससे घिनाना तो एक ओर रहा बरन वैसी चाल चलने में बड़ी प्रतिष्ठा मानते हैं—तब क्योंकर मस्तिष्क की सूक्ष्म दर्शिता उन ऋषियों कीसी हो सकती है जिनके वंश में ये पैदा हो उनके नाम को कलंकित कर रहे हैं—हमारे ब्राह्मणों में कोई २ आवनूस के कुन्दे ऐसे भी हैं जिन्होंने केवल खान पान की छिलावट को ऋषियों के आचरण की प्रधान पद्धति मान रक्खा है—"आहारात् सत्व शुद्धिः" पतंजल के योग सूत्र का एक टुकड़ा कहीं से सुन रक्खा है बस यावत् धर्म कर्म पवित्रता और शुद्ध आचरण की बुनियाद केवल खान पान की छिलावट है—अस्तु खान पान में पवित्रता कोई बुरी बात नहीं है और पवित्र भोजन अवश्य बुद्धि बर्द्धक

भी है किन्तु जिनका जीवन सब भांत दूषित है और अनेक कलंको के बोझ से लदा हुआ है वे केवल इस छिलावट से जो निरी मूर्खता मूलक है अपने को सर्व श्रेष्ट और परम पवित्र मानै यह निःसन्देह हंसने के लायक है "आहारात्सत्वशुद्धिः" इसका प्रयोजन यह है कि हम ऐसा भोजन करैं जो बल का बढ़ाने वाला तो हो किन्तु निरामिष भोजन हो कृमि या विष्टा इत्यादि मलिन वस्तु से दूषित न हो पर्युषित बासी या सड़ा गला न हो और किसी का जूठा न हो–भगवद्गीता में सात्विकी भोजन इस प्रकार का लिखा है–

"आयुः सत्वबलारोग्य सुख प्रीति विवर्द्धनाः।
रस्यास्निग्धास्थिराहृद्या आहारा सात्विकप्रियाः"॥

आयुष्य, उत्साह, बल, आरोग्य, सुख अर्थात् चित्त की प्रसन्नता पैदा करने वाला, रुचि बढ़ाने वाला, रसवन्त अर्थात् स्वादिष्ट हो, स्नेह युक्त हो, देर तक शरीर में तृप्ति बनाये रहे, हृद्य अर्थात् जिस्के देखने ही से हृदय को सुख मिलै, ऐसा आहार सात्विक है और वही बुद्धि को भी बढ़ावैगा, और बुद्धि में सात्विक भाव का उदय कर सकता है–उन्में जो सब भांत अदूषित चरित्र और पवित्र चाल चलन के हैं न कि उन की बुद्धि में जो "सत्तर चूहे खाय बीबी हज्ज को चलीं" "वृद्धा वेश्या तपस्विनी" आदि कहावतों के नमूने हैं–जो सब तरह की बुराइयों में पगे हैं भोजन में अलबत्ता बड़ी चौकसी रखते हैं उनके प्रति महात्मा ईसा का यह उपदेश हमें बहुत उत्तम मालूम होता है कि जो मुह के भीतर जाता है वह आदमी को नापाक नहीं करता बरन जो मुह के बाहर निकलता है बुरे खयाल कठोर वचन गाली इत्यादि वही मनुष्य को अपवित्र करता है–जो दियानतदारी चुगली चवाव पर स्त्री गमन आदि महा नष्ट कर्मों से बचा है और खान पान की छिलावट पर जो केवल मूर्खता

और दंभ मूलक है बहुत ध्यान नहीं देता वह अवश्य उस्से अच्छा और प्रशंसनीय है जो केवल खाने ही में धर्म मान बैठा है ॥

सब से अधिक बुद्धि को पैनी करने वाली वीर्य रक्षा है जिस्का सत्यानाश बाल्य बिवाह के कारण १४ वर्ष की उमर से यहां आरंभ हो जाता है ऋषि लोग २४ वर्ष कम से कम १२ वर्ष ब्रह्मचर्य के उपरान्त तब बिवाह करते थे जिस्का फल यह होता था कि उनके तेजः पुंज और रोब के सामने बड़े २ राजा माहाराजाओं की हिम्मत मुह खोलने की नहीं होती थी—ऋषियों को वीर्य रक्षा के प्रभाव से बुद्धि का पैनी होना तो कोई बड़ी बात ही न थी चिरजीवी सदा नीरोग और दृढ़ संकल्प होते थे—अब इस समय के लोग बाल्य अवस्था से वीर्य का ह्रास आरंभ कर देते हैं तब दिमाग में कूवत और पैनी बुद्धि कहां से हो सक्ती है—ऋषियों की चरचा दूर रहे बिलाइत के लोगों को देखो खान पान आचार विचार इत्यादि कोई बात इन की ऐसी नहीं है जो मस्तिष्क को प्रबल करै केवल वीर्य रक्षा मात्र ऐसी भारी बरकत इन्हे प्राप्त है जिस्से इन की दैवी बुद्धी हम लोगों को दंग कर रही है—यूरोप के लोगों में भी यदि बाल्य बिवाह प्रचलित रहता तो ये कभी इस लायक न होते कि ऐसी २ बिद्यायें ईजाद कर मानुषी सृष्टि में सर्वोपरि होते—अब से बड़ी बात बुद्धि को तीव्र करने वाली बेफिकरी और आज़ादी है हम दोनों के लिये तरस रहे हैं—बेफिकरी तो हमे अब इस जन्म अंगरेज़ी राज्य में काहे को कभी होगी—आज़ादगी का भी वही हाल है कि हमारा धर्म कर्म हमारी सामाजिक रीत रसम बर्ताव रहन सहन कोई ऐसे नहीं हैं जो एक पल भर के लिये भी हमे आज़ाद होने के लिये प्रोत्साहित करैं ॥

ऋषि और बेद के समय की पुरानी पद्धति यहां एक नहीं है बाल्य बिवाह, दंभ मूलक खान पान की छिलावट, बेद के समय के ऋषियों में कहां रही

ये तो निरे ऊट पटांग न इधर के हैं न उधर के इन का जड़ पेड़ से उच्छिन्न होना ही देश का सौभाग्य है—दूसरी वस्तु दिमाग की कूवत कम करने वाली मादक द्रव्य है मादक द्रव्यों में सब से अधिक भाँग है जो हमारे ब्राह्मणों को जन्म घूंटी के समान हो रही है जो बाल अवस्था ही से इसका साधन आरंभ कर देते हैं—उधर चौदही वर्ष से वीर्य का ह्रास होने लगा इधर भंगा का साधन आरंभ हुआ दक्षिणा मिलेहीगी तब कौन सी बला घेरी है जो बुद्धि को पैनी रखने की चेष्टा करैं—ब्राह्मणों में भांग है तो और २ लोगों में दूसरे २ मादक द्रव्यों की अधिकाई पाई जाती है इस दशा में क्योंकर मस्तिष्क ठीक रह सक्ता है—सुगन्धि दुर्गन्धि का भी बड़ा असर दिमाग पर होता है एकान्न भोजन की बुरी प्रथा के कारण दरजनो आदमी एकही छोटे से घर में अचार से गंजे रहते हैं तब दुर्गन्धि क्यों न बढ़ैगी—कितनी ही सफाई रक्खो इतने आदमी एक साथ संकीर्ण स्थान में रहैंगे तो कभी हो ही नहीं सक्ता कि दुर्गन्धि न बढ़ै और दुर्गन्धि का बुद्धि पर बड़ा और बहुत जल्द असर होता है—हम आर्य बनने का अभिमान करते हैं वेद के मानने वाले और वैदिक ऋषियों की पद्धति पर चलने वाले अपने को मानते हैं पर सच पूछो तो अब हमारे में एक बात भी ऋषियों की नहीं है न वेदोक्त कोई बात हम कर रहे हैं—न जानिये कहां की ऊट पटांग बातें हमारे में आगई हैं जिस्का परिणाम जो कुछ है वह प्रत्यक्ष है ऋषियों की पद्धति पर चलने वाले अपने को कह ऋषियों के नाम को कलंकित कर रहे हैं॥ स—दे—प्र—

चित्र दर्शन ।

एक दिन मैं अपने पुस्तकालय में बैठा पुस्तकों को उलट पुलट रहा था अचानक एक ऐसी पुस्तक हाथ आगई जिस्में बहुत से चित्र थे और

उन चित्रों को अलग २ ध्यान पूर्वक देखने के ख्याल से पहले जो चित्र मैंने खोला वह ऐसे एक महापुरुष का था जिस्के दर्शन मात्र से अद्भुत शान्ति को चित्त में अवकाश मिला—यह चित्र ऐसे का मालूम होता था जिस्का वयक्रम ५० और ५५ के भीतर था—मियाना कद् न बहुत लंबा न निरा नाटा हृष्ट पुष्टांग गेहुंआ रंग चिकने काले केशकलाप में बीच २ दो एक सुफ़ेद बाल ऐसे चमक रहे थे जैसा अंधेरी रात में नीले आकाश के बीच ठौर २ तारे चमकते हों—चेहरा गोल था जिस्पर कुछ सिकुड़न मालूम होती थी यह सिकुड़न अवस्था के कारण हो सो नहीं बरन जैसा अल्प वित्त वाले गृहस्थ को अनेक चिन्ता और झौंझट से बहुधा शरीर में सिकुड़न और झुर्रियां पड़ जाती हैं—भाल पट्ट कुछ ऊंचा और चौड़ा मानो लिखनें की तख़्ती हो—कमान सी गोलार्द्धाकार दोनों भौं के बीच चोट का एक दाग तिलक बिन्दु सा सोहता था—यह चोट शायद बहुत छोटी उमर में लगी थी—दोनों आंखें अत्यन्त छोटी जुगनू सी चमकती थी—उस्में दहिनी आंख में शायद ही कुछ प्रकाश हो केवल नाम मात्र को जुग जुगा रही थी—नासिका सीधी थी अग्र भाग उस्का कुछ ऊंचा था दोनो ओठ कुछ मोटे थे बत्तीसी पान की बीड़ी से काली पड़ गई थी—वृषभस्कन्ध गृहस्थी का भार वहन करते २ वृषभ के नाम की सार्थकता प्रगट कर रहे थे—वक्षस्थल चौड़ा और उतार चढ़ावदार—त्रिवली के बीच कुंआ सा गहरा नाभिगर्त भाग्यवानी का चिन्ह प्रगट कर रहा था—सिर पर चाँददार गोल टोपी दिये थे मलमल का साधारण सा कुर्ता पहिने हुये थे कन्धे पर दुपट्टा पड़ा था—दहिने हाथ की तर्जनी में सुवर्ण की एक मुद्रिका पहने थे चिकनी छोटी सी एक छड़ी लिये थे लंबी धोती और पैर में अंगरेज़ी बूट चमक रहा था—इनके प्रसन्न मुख पर प्रासन्नता सहन शीलता गंभीरता और धैर्य बरस रहा था—मुख कमल पर ऐसा तेज झलकता था जिस्की उपमा तीक्ष्णांशु से नहीं जो अपनी तेजःपुंज मयी खरतर किरनों से दाह पैदा करते

हुये अत्यन्त निठुराई से रस मात्र को प्राप्त कर लेतेहैं—बरन बिमल चन्द्र बिम्ब सदृश अपने प्रफुल्लेन्दु मुख की ठंढ़ी किरनी से देखने वाले के नेत्र को ठंढक पहुंचाते कौरव कुल के विकाश सदृश चित्त में असीम गौरव उपजा रहा था—जो कुछ हो इन का शान्त भाव देख धर्मराज के पुत्र युधिष्ठिर की मूर्ति का खयाल मन में आया कदाचित् इस अनिष्ट समय में जब कि कलिकाल व्याल नें डसने से किसी को नहीं छोड़ा यह युधिष्ठिर ही हो अवतरे हों॥

अब हम को यह फिकिर हुई कि किसी भाँत यह जानना तो चाहिये ये महापुरुष कौन हैं—इसी चिन्ता में इष्ट देव का स्मरण कर सो गये और निद्रा में भी पड़े २ यही सोच रहे थे कि हमारा मनोरथ क्यों कर पूर्ण हो और निराश हो गये थे इतने में एक कृष्णा मुखी मेरे सन्मुख आई और कहने लगी बेटा तुम बहुत अच्छा सोच रहे हो जिनके बारे में तुम सोच रहे हो ये बड़े बिचित्र पुरुष हैं और तुम्हारे अत्यन्त समीपी हैं—भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के कृपा पात्र हैं—इनकी जीवनी के बहुत लोग उत्सुक हैं—काशी की नागरी प्रचारिणी सभा के कई एक मेम्बर भी इनका वृत्तान्त जानने की इच्छा प्रगट कर रहे हैं—तुम इस प्रयत्न में कृत कार्य्य होगे जहां तक जल्दी हो सके लिखना आरंभ करो तुम्हे सब आप से सूझता चला जायगा—इसे देख मै हक्का बक्का हो गया घिघ्घी बंध गई चाहता था कि इससे पूछूं तू कौन है पर इतने में यह अन्तर्ध्यान हो गई—नींद खुल गई खुशी की हड़बड़ी में उठ कर बैठ गया और विचारने लगा कि यह कौन थी इतने में ऐसा मालूम हुआ कि कोई कान में कह रहा है मै लेखनी की अधिष्ठात्री देवी हूं—उपरान्त स्वप्न प्राप्त आदेश के अनुसार जो मै लिखने बैठा तो चित्र लिखित पुरुष के सम्बन्ध की सब बातें मुझे सूझने लगीं॥

विक्रमी सम्बत् १९०१ अषाढ़ कृष्ण द्वितीया रबिबार तीसरी जून को मध्यान्होत्तर वृष के सूर्य के २७ अंश गत होने पर इनका जन्म हुआ—

इनके अदूषित शुद्ध चरित्र पर विचार करने से मन में आया कि उस अनोखे नटनागर सब गुन आगर का यह कैसा लीला ताण्डव है कि सब भांत कलुषित चरित्र वालों के बीच ऐसी निकम्मी अपावन समाज में ऐसों को उसने जन्माया—बड़ी देर तक सोचते रहे कि इसमे क्या भेद है अन्त को मन में आया कि घिनौने आचरण वालों के बीच रह कर भी उनकी छूत से बचा रहे यही तो मनुष्य के उत्तम गुणों की कसौटी है—कुमार काव्य में महा कवि कालि दास का वाक्य भी है " विकार हेतौ सति विक्रियन्ते येषांन चेतांसि तएव धीराः " चित्त में विकार पैदा करने का हेतु होते हुये भी जिस्के मन में विकार न हो वही धीर है—अनेक क्लेश उठाता हुआ भी फूंक२ पांव रखता रहे तभी तो मनुष्य की प्रशंसा है—घी ढरक जाने पर हमे रूखी ही भावती है ऐसा कहने वाले तो बहुत हैं—चित्र लिखित के सम्बन्ध में इस्से भी बढ़ कर विलक्षण बात देखी गई—समाज और समीप वर्तियों की नीची बुद्धि और नीचे ख्यालों की कौन कहै इनके सगे सहोदर इन्हे ऐसे मिले जिन्के कुढंगे बर्ताव से इन्हे सदैव घिन रही और जिस्के कारण ये अन्त तक उद्वेजित और असन्तुष्ट रहे और ऐसे२ दुख सहे कि उन को लिखने लगैं तो लेखनी भी करुणा रस में डूब पढ़ने वालों को अपना साथी बना ले—दो भाइयों में जेठे तो हैं किन्तु स्वार्थ साधन और पालिसी में अपने भाई से सदा छोटे ही रहे ॥

एक डंठरी के दो गुलाब एक अपनी मीठी शान्त शील शीतल मन्द-सुगन्धि युक्त सुयश की महक से महर २ करता इने गिने दो चार बिरले सौरभ लोभी मधुप से सम्मानित रहा और येन केन कष्ट से अपना जीवन पार किया—बिरले मधुप को इस्की चाह इस लिये हुई कि संसार बाटिका का ढंग ही कुछ इस तरह का है कि यहां कदर वही पाता है जो दूर से देखने में चमक दमक में कम न हो पास जाने से सुयश

की सुगन्धि चाहो हो या न हो—उस ढंठरी का दूसरा गुलाब इस वाटिका के बहुत ही उपयुक्त है इसी लिये इस्की अत्यन्त नीरस कर्कश रूखी तीखी महक भी "जैसी रूह वैसे फरिश्ते" वाली कहावत के अनुसार लोगों को भाई—बुद्धि तत्व का विकाश तो इस्मे नाम को भी नहीं है पर व्यौपार की कुशलता इस्मे ऐसी है कि कदाचित् बड़े२ नामी रोज़गारियों में इस्के समकक्ष ढूंढने से भी मिलैं या न मिलैं—मसल है— "जिस्के हाथ लोई उस्का सब कोई"—यही कारण है कि लोगों को इस्की तलख मिज़ाजी भी बरदाश्त करना पड़ता है—यहां पर इतना और भी खयाल करने लायक है कि अभी तक जो कुछ इसने किया अपने ही लिये किया व्यौपार में लक्ष्मी बसती हैं तब कुबेर की संपत्ति पास हो जाना कौन दुर्घट है—यह संपत्ति बन्धु भाई लोग कुटुम्ब किसी दूसरे के काम आई हो सो नहीं बरन इस्की ओछी बुद्धि और अपने निज के स्वार्थ पर दृष्टि सर्बस्व निगल बैठने की पालिसी को पुष्ट करती गई—सुतराम् इस ढंठरी के दोनो गुलाब सिंह वृत्ति वाले अवश्य हुए एक बुद्धि तत्व के बिकाश में सिंह हुआ दूसरा संसारिक व्यौहार धनोपार्जन इत्यादि में—अन्तर इन दोनों में केवल यह रहा कि एक के बुद्धि तत्व का बिकाश सदा देशोपकार अपनी हानि सह कर भी दूसरे को कुछ फाइदा पहुचाने की ओर था दूसरे की बड़ी संपत्ति भी इस्के बिरुद्ध थी—अत्यन्त सिधाई नरनाइ और सन्नाई से भी कभी को बड़ा दोष होता है "कतौं सिधाइहु से बड़ दोषू"—इसी से नीति जानने वालों ने कहा है समय २ आदमी को सब ढंग इखतियार करना चाहिये—बेतरह सिधाई बोदापन है जो इस नीति के बिरुद्ध चलने वाले हैं वे इस दुनिया के काम के नहीं है बल्कि इस दुनिया में रह पीछे पछताते हैं—हमारे पितृ चरण का जीवन इस्का बहुत ठीक नमूना है—दूसरी बात यह कि यह समय किसी के विश्वास का नहीं

है विश्वास बड़ी बुरी चीज़ है विश्वास किया और मारा गया—मन होता है प्रदीप के एक कोने में इस्की नोटिस छपा दें कि कोई किसी का विश्वास न करै नहीं तो वही हाल होगा जैसा हमारे इस चित्र लिखित पूज्य पाद्का हुआ—नहीं मालूम विश्वास घातकों को ईश्वर नरक की किस आंच में झुलसाता है—इन के एक बड़े विश्वासी जिनका इनको बड़ा भरोसा था और वह भी इन्हें सर्व श्रेष्ट मानते रहे उन से इन को ऐसा धोखा हुआ कि जन्म भर का करा धरा सब नस्ट हो गया बल्कि आजन्म वह दाग न मिटा—इन के सहोदर ने भी इन की सिधाई और विश्वास पर रहने ही का फाइदा उठाया अथवा अपनी कुटिल पालिसी को काम में लाय यह सिखापन दिआ कि तुम नीति के विरुद्ध चले उसी की सज़ा तुम्हें दी जाती है अब भी चेतो एक दिन चेतना पड़ेगा जितनी देर कर रहे हो उतनी ही अपनी हानि करते जाते हो और अनीति को जगह दे रहे हो॥

"होनहार बीरवान के होत चीकने पात" लड़कपन से विद्या और सत्संग की ओर इनकी विशेष रुचि रही बाल्य अवस्था के बहुत से खेल इन्हो ने खेला ही नहीं—बहुत तरह के खेल जिनमे पड़ लड़के यावज्जीव के लिये बिगड़ जाते हैं और आवारा हो जाते हैं उनकी ओर इन की झुकावट भई ही नहीं—लड़काई में कबूतर उड़ाने का अलबत्ता शौक था जहाँ कहीं कबूतर पले रहेते थे वहां बहुधा जाया करते और उन को उड़ते देख बड़े प्रसन्न होते थे—नई उमर से ही चित्त में शान्ति रही कहा भी है—

"नवे बयसि यः शान्तः स शान्त इति कथ्यते।
धातुषु क्षीयमाणेषु शमः कस्य न जायते"॥

चढ़ती हुई नई उमर में जिस्को शान्ति है वही शान्त कहा

आता है शरीर के भीतर की धातुओं के नित्य२ घटने पर बुढ़ापे में शान्ति किसे नहीं आती–जब तक जवान रहे कोई कुलक्षण न बचे बुढ़ापा आजाने से इन्द्रियों की ताकत घट जानेपर माला फेरने लगे चित्त से बासना एक भी नहीं गई किन्तु लाचार हैं ताकत न रही कि उन२ बिषय बासनाओं को काम मे लाते–पुराण श्रवण मे बड़ी रुचि रही नगर मे जहां कहीं कथा होती अवश्य सुनने जाते और यथा स्थित उसे याद रखते थे बल्कि प्रत्येक वक्ताओं के कहने के तर्ज़ को यथावत् नकल कर लेते थे–धारणा शक्ति इतनी प्रबल थी कि जिसे दो चार बार सुन लिया वह जन्म पर्यन्त मानों चित्त में स्थिर रही १५ वर्ष की उमर में एक काण्ड अमर और अव्ययान्त सिद्धान्त कौमुदी कण्ठाग्र हो गई थी–पिता केवल जनम मात्र के हेतु हुये लालन पालन का सब सुख इन्हे ननिहाल में मिला पढ़ने लिखने में विशेष रुचि और सत्संग की ओर झुकावट इनको वहीं से हुई–मा इनकी चित्त की उदार धर्मशील और स्वभाव की बड़ी गंभीर कोमल और दया-शील थीं–अनुचित बातपर थोड़ा क्रोध तो आ जाता था पर उस क्रोध के आवेश में किसी को कभी हानि पहुंचाया हो सो नहीं बरन उस क्रोध का असर उनके शरीर ही पर रह जाता था–कदाचित् तात चरण ने क्रोध और खरापन मौरास की भांत उन्ही से पाया हो–अधिक पढ़ी लिखी न थीं केवल अक्षराभ्यास मात्र था इन दिनों की भांत उस समय स्त्री शिक्षा का प्रचार बिल्कुल तब न था अक्षराभ्यास अपने भाइयों को पढ़ते देख हो गया था–विष्णु और शिव के कई एक संस्कृत के स्तोत्र उन्हें कण्ठ थे नित्य उनका पाठ करती थीं–पाक इत्यादि गृहस्थी के काम में बड़ी निपुण थीं–अधिक ब्रत और संयम करते २ अत्यन्त निर्बल हो गई थीं संग्रहणी के रोग में ६ महीने पीड़ित रह ३२ वर्ष की उमर १९१८ के सम्वत् में सुरधाम सिधार गईं–मा का न रहना इनके भावी जीवन में बड़ी हानि कारक हुआ–

"मातासमं नास्ति शरीरपोषणम्"
"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"

इत्यादि जननी के प्रसंसा वाक्यों में कहां तक सचावट है इस्का पूरा अनुभव इन को ज़िन्दगी में बराबर होता गया—जिस अभागे को वात्सल्य की मूर्ति माता नहीं है जिसने लड़कपन में माका सुख नहीं उठाया वह क्या जान सक्ता है कि वात्सल्य रस क्या वस्तु है प्रेम और स्नेह जो इस्का प्रधान अंग है मनुष्य के जीवन में उस्की क्यों आवश्यकता है—कदाचित् मा जीती होतीं तो उनसे इनकी पट जाती वह ऐसे स्वच्छ जी की थीं कि इनका सरल चित्त उनसे मिला रहता वह कृत्या इतना ज़ोर न पकड़ती जिस्से उद्वेजित हो इनको अलग रहना पड़ा और पीछे से बड़ी हानि सहना पड़ा—

सहोदर तथा तत्पत्नी दोनों ने इनको इतना क्लेश दिया और इतना इनका अपमान किया कि उसे लेखनी वद्ध कर दिखावैं तो पढ़ने वाले चकित हो उठैं—इनके दुःख की गाथा सुन पत्थर भी पसीज उठै—"अपि ग्रावारोदत्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्" तब सचेतन का क्या कहना—एक इनके पितृव्य ईश्वर सदा उनका कल्याण करै सदैव इनके अनुकूल रहे और बाकी बन्धुजन जिन्हे बन्धु कहते शरम होती है कोई कभी काम न आये बरन क्लेशही देते रहे—लौकिकी गाथा भाई ऐसा मित्र नहीं भाई ऐसा शत्रु भी नहीं बहुतही ठीक है—जिन भाग्यवानों को भाई मित्र रूप हैं उनको स्वर्गसुख भी तुच्छ है इनके से अभागे को भाई सौ शत्रु के एक शत्रु हुये जन्म पर्यन्त दुःखही देते रहे—अब इस समय इनकी जीवनी में एक ऐसी गांठ आ पड़ी है जिस्के सुरझे बिना इनका भूत वा भावी जीवन के संबन्ध में आगे बढ़ने से लेखनी आगा पीछा कर रही है—वह कृष्णा मुखी जिसने स्वप्न में प्रगट हो मुझे इस काम में प्रवृत्त होने को

प्रेरणा किया था प्रत्यक्ष हो कहने लगी बस अब ठहरो ज़बान बन्द करो जब तक मैं फिर तुम्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा न करूं—इतना कह वह लोप हो गई लेखनी मेरे हाथ से गिर पड़ी किं कर्त्तव्यता मूढ़ हो घबड़ा सा गया— बहुत चाहा कि आगे बढ़ूं किन्तु सर्वथा असमर्थ रहा—अस्तु इनकी जीवनी का शेष वृत्तान्त इसी अंक मे प्रगट करने से मैं भी संकुचित हो गया पर अपने पढ़ने वालों को इतना अलबत्ता सूचित किये देता हूं कि ये हमारे संपादक महाशय हैं जिनको संपादकीय कृत्य अत्यन्त प्रिय है और अनेक संकीर्णता और क्लेश सहते हुये भी प्रदीप को बुझने से रोके हुये हैं—जो इन के चरित्र का उजागर और पढ़ने वाले के चित्त के ध्वान्ततिमिर का ध्वंस करने वाला है जिसे जिसने कभी एकबार भी पढ़ा होगा इनकी लेख चातुरी को अच्छी तरह समझ गया होगा—म—दे—प्र—

संस्कृत के पुराने कवि और ग्रन्थकार।

महा कवि जयदेव॥

जयदेव का जीवन चरित्र बहुत लोग लिख चुके हैं—हाल में स्वर्गवासी बाबू हरिश्चन्द्र ने भी अपनी हरिश्चन्द्र चन्द्रिका में बड़ा रोचक जीवन चरित्र जयदेव का लिखा है— आज हम भी कोकिल कण्ठ जयदेव के सम्बन्ध में कुछ लिखते हैं—पहले तो यह कि जयदेव की गीत गोविन्द वैष्णव मात्र को आधार है कृष्णोपासक वैष्णव पुण्य पाठ की भांत गीत गोबिन्द का पाठ करते हैं—सूरदास जी ने सूरसागर इतना बड़ा ग्रन्थ सवा लाख पद का जयदेव ही के सहारे से बनाया—शृङ्गार रस जयदेव ने गीत गोबिन्द में और करुणा को भवभूति ने उत्तर चरित्र में जैसा दर्शाया है कि उन रसों का रूप खड़ा कर दिया है वैसा किसी कवि से नहीं बन पड़ा कोई अंग शृङ्गार का नहीं बच रहा जिसे जयदेव जी ने गीतगोबिन्द मे नहीं प्रगट कर दिखाया—सिवाय कवि त्वश.क्ति के जयदेव गाना बहुत अच्छा जान

थे गीत गोबिन्द में कोई राग नहीं बचा जिस्में इस्की अष्ट पदी या षट् पदी न गाई जाती हो साधारण गवैये उन्हे नहीं गा सकते इसी से जयदेव को कोकिल कण्ठ की उपाधि बहुत ही उपयुक्त है-गीत गोबिन्द गान की उपयोगी है इसी से जयदेव की कविता का विशेष विस्तार हुआ-एकान्त शून्यस्थल में जहां कोई विनोद सामग्री न हो जयदेव की कविता गाय २ पढ़ने लगो मन प्रफुल्लित हो जाता है-वैष्णव मण्डली रसिक समाज भक्ति और प्रेम विना जयदेव की कविता के सब फीका है-

साध्वी माध्वीक चिन्ता न भवति भवतः शर्करे कर्करासि।
द्राक्षे द्रक्ष्यन्ति केत्वा ममृत मृतमसि क्षीर नीरं रसस्ते॥
माकन्द क्रन्द कान्ताधर धरणितलं गच्छ यच्छन्ति यावद।
भावं शृंगार सारस्वत मिह जयदेवस्य विष्वग्वचांसि॥

ऊपर का श्लोक जयदेव के महा प्रौढोक्ति का हैं जिस्में इन्होंने दाखरस मिश्री दूध अमृत कान्ताधर सब के स्वाद "को अपनी कविता के आगे फीका ठहराया है पर यह निरी प्रौढोक्ति और अभिमान का वाक्य नहीं है गीत गोविन्द की कविता है भी ऐसीही कि काव्य रसिक को दाख और मिश्री की मिठास फीकी जंचती है-अंगूर और मिश्री अधिक खाने से मुह बझ जाता है तब उस्की मिठास नहीं सोहाती है गीतगोविन्द की कविता की ऐसी मिठास है कि कितना ही इसे पढ़ो जी नहीं ऊबता जैबार पढ़ो तैबार नया स्वाद इस्से मिलता है-काव्यरसास्वाद चातुरी धुरीण वैकुण्ठ वासी बाबू हरिश्चन्द्र लिखते हैं-"जहां गीत गोविन्द है वहीं वैष्णव मण्डली है, वहीं रसिक समाज है वहीं वृन्दावन है, वहीं प्रेम सरोवर है, वहीं भाव समुद्र है, वहीं गो लोक है, और वहीं प्रत्यक्ष

अस्मानन्द है" किसी २ की यह भी उपज है कि जयदेव राजा मुचकुन्द जन्मे जिनकी चरचा भागवत दशमस्कन्ध के उत्तरार्द्ध में की गई है ॥

"जन्मन्य नंतरे राजन् सर्व भूत सुहृत्तमः।
भूत्वा द्विजवरस्त्वंवै मामुपेष्यसिकेवलम्" ॥

यदि ऐसा है तो भागवत का आधुनिक होना सर्वथा सिद्ध होता है और जयदेव उपरान्त लिखा गया—एक लेख जो हाल में गया में में पाया गया है उसमें जयदेव को विक्रमी संवत् के ११७३ में लिखा है बंगाल के वीर भूमि ज़िले में अजयनद के उत्तर किन्दु विल्व केंदुली ग्राम में इनका जन्म हुआ जैसा जयदेव जी स्वयं लिखते हैं "किन्दु विल्व समुद्र संभव रोहिणी रमणेन"—जयदेव ने अपनी कविता के अधिकारी ऐसों को लिखा है ॥

"यदि हरिस्मरणे सरसं मनो यदि विलास कलासुकुतूहलम्।
मधुर कोमल कान्त पदावलीं शृणु तदा जयदेव सरस्वतीम्" ॥

यदि हरिस्मरण में रसीली तबियत हो और विलास कला में कुतूहल हो तो मधुर कोमल और मन को हर लेने वाली जयदेव की बुद्धि की प्रकाशक कविता को श्रवण करै—केन्दुली ग्राम जहां का जयदेव जी का जन्म है और उनकी समाधि बनी है वैष्णवों का एक तीर्थ है प्रति वर्ष यहां एक मेला भी होता है—अजयनद जिसपर केंदुली ग्राम है भागल पुर के वर्द्धमान और बीरभूमि के जिलों मे बह कर कटवा के पास भागीरथी में मिली है—श्रीमान् बाबू हरिश्चन्द्र का मत है कि कन्नौज के आये ५ ब्राह्मणों के वंश में जयदेव उत्पन्न हुये किन्तु हमारा मत है कि जयदेव कान्यकुब्ज ब्राह्मण न थे बरन गौड़ जाति थे गौड़िये गोसाईं इसके बड़े अभिमानी हैं कि जयदेव वृन्दावन चम्पूकार कवि कर्णपूर आदि प्रसिद्ध विद्वान सब गौड़ जाति के थे—इनके पिता का

नाम भोजदेव और मा का रामा देवी था—बहुत लोगों का मत है कि बंगाल के अन्तिम राजा लक्ष्मणसेन की सभा के जयदेव भी एक प्रसिद्ध पण्डित हैं जैसा इस श्लोक से प्रगट है ॥

गोवर्द्धनश्च शरणो जयदेव उमापतिः ।
कविराजश्च रत्नानि समितौ लक्ष्मणस्यच ॥

कहते हैं यह श्लोक एक पत्थर पर खुदा हुआ महाराज लक्ष्मणसेन के द्वार पर लगा हुआ था—जो हो यह समय संस्कृत कविता का बंगाल में बड़े उत्कर्ष का था और ऊपर के श्लोक में कहे हुये प्रसिद्ध कवि सब बंगाली ही थे—लक्ष्मणसेन के पिता बल्लालसेन संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रन्थकार थे दान सागर वेदार्थ स्मृति संग्रह इत्यादि कई ग्रन्थ उन्ही की प्रेरणा से बने—कुवलयानन्द में—

"बल्लालक्षोणिपालस्त्वदहितनगरे संचरन्ती किराती ।
रत्नान्यादाय कीर्णान्युरुतरखादिरांगारशंकाकुलाक्षी ॥
क्षिप्त्वा श्रीखण्डखण्डं तदुपरिमुकुलीभूतनेत्रा धमन्ती ।
श्वासोमादप्रसक्तैर्मधुकरपटलैर्धूमशंकां करोति ॥

यह श्लोक विषमा लंकार के उदाहरण में दिया गया है भ्रम को मूल में रख विषमा लंकार इस्से निकलता है ॥

कहते हैं गौड़ नाम का नगर जो अब भागलपुर के ज़िले में उजाड़ पड़ा है बल्लालसेन ही ने बसाया था पीछे से गौड़ का नाम लक्ष्मणावती या लखनौती पड़ा—बंगाल के ब्राह्मण और कायस्थों में बनरजी चटरजी और घोस बोस इत्यादि कुलीनो की प्रथा भी बल्लालसेन की

स्थापित है–हलायुध पण्डित जो भट्टनारायण के पौत्र या प्रपौत्र थे और जिन्हों ने ब्राह्मण सर्वस्व नाम का ग्रन्थ बनाया लक्ष्मणसेन की सभा के प्रधान पण्डित या दानाध्यक्ष थे–ब्राह्मण सर्वस्व एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमे हलायुध ने जितने जाति के ब्राह्मण हैं सभोंमें एक न एक दोष निकाला है–बंगाल के प्राचीन इतिहास से विदित होता है कि लक्ष्मणसेन बंगाल का अन्तिम राजा हुआ और जिस समय बखतियार खिलजी ने हमला किया यह ८० वर्ष का हो गया था उदारता और न्याय के लिये प्रसिद्ध था—इस्की राजधानी नदिया थी पर गौड़ या लखनौती में बहुधा रहा करता था—मुसलमानों ने जब हमला किया तो ब्राह्मणों ने कहा कि उनके शास्त्र में लिखा है कि अब हिन्दुओं का राज्य न रहेगा इसलिये कहीं दूर के देश में भाग चलो—जब बखतियार थोड़ी सी सेना ले इस्की महल में घुस आया उस समय यह भोजन पर बैठा हुआ था मुसल्मानों का घुस आना सुन बहुत अचरज में आया और घबड़ा गया–महल के पीछे के द्वार से एक किश्ती पर सवार हो जगन्नाथपुरी को भाग गया–किन्तु इतिहास वाला इस लक्ष्मणसेन को वैद्य खानदान का राजा लिखता है इस्से निश्चय नहीं होता कि यह वही लक्ष्मणसेन हैं या कोई दूसरे–जयदेव का नाम चन्द कवि ने भी अपने पृथ्वीराज राहिसा में कवियों की गणना में लिखा है तो निश्चय होता है कि जयदेव चन्द कवि के पहिले या समकालीन थे चन्द के समय तक जयदेव की कविता का अच्छी तरह प्रचार हो गया था–इस्से मालूम होता है कि जयदेव सौ सवा सौ वर्ष पहिले चन्द कवि के हुये हैं तब जयदेव अवश्य लक्ष्मणसेन के पहिले हुये हैं–जयदेव ने अपने समकालीन कवियों की गणना एक श्लोक में इस तरह पर किया है—

वाचः पल्लवत्युमापतिधरः सन्दर्भ शुद्धिं गिरां।
जानीते जयदेव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूह द्रुते॥
शृङ्गारोत्तर सत्प्रमेय रचनै राचार्य गोवर्द्धनः।
स्पर्द्धी कोपिन विश्रुतः श्रुति धरो धोयी कविक्ष्मापतिः

उमापतिधर नामा कवि वाणी का बिस्तार करना मात्र जानते हैं अपने लेख में कविता का गुण लाना नहीं जानते॥

"पल्लव ग्राहि पांडित्यं क्रेय क्रीतं च मैथुनम्।
भोजनंच पराधीनं तिस्रः पुसां बिडम्बना"॥

तस्मात् उमापति धर की पण्डिताई में पल्लव ग्राहि होना महा दोष है—शरण नामा कवि क्लिष्ट काव्य को जल्द बनाने के लिये प्रशंसनीय अपने को मानते हैं अर्थात् उन का लेख प्रसाद गुण शून्य है—गोवर्द्धनाचार्य केवल शृंगार रस प्रधान कविता रचने में आचार्य हैं अपने बराबर किसी को नहीं मानते अर्थात् सिवाय शृंगार रस के बीर आदि दूसरे रस की कविता लिखना जानते ही नहीं—धोयी नामा कवि श्रुतिधर होने ही से अपने को सब कवियों के राजा माने बैठे हैं—धोयी का पाण्डित्य इतना ही है कि किसी दूसरे का बनाया काव्य एक बार सुन याद कर लेते हैं—काव्य के समस्त उत्तम गुण भूषित कविता करना केवल जयदेव जानते हैं—इस श्लोक का दूसरा अर्थ यह भी हो सक्ता है कि इस्मे जयदेव जी ने अपनी नम्रता दिखलाया है—जयदेव अपने मन में कहते हैं कि क्या मेरा काव्य काव्य के समस्त सद्गुण भूषित उमापति धर इत्यादि कवियों के मुकाबिले कभी हो सक्ता है—उमापति वाणी का जैसा बिस्तार कर दिखाते

हैं वैसा मुझ से नहीं बनता—शरण क्लिष्ट काव्य को भी कैसा जल्द बना डालते हैं—शृङ्गार रस प्रधान रचना जैसी उनकी सप्तशती में देखी जाती है उस के समान मुझ से कहां बन पड़ती है—धोयी को देखिये कि कवि तो हुई हैं श्रुतिधर भी हैं अर्थात् एक बार सुन लेनेही से उन्हें याद हो जाता है—मुझ में तो इन गुणो में एक भी नहीं हैं ॥

इन कवियों में उमापति धर और शरण के कोई ग्रन्थ देखने में नहीं आते गोवर्द्धनाचार्य ने सप्तशती नामक शृंगार रस प्रधान ७०० आर्या का एक ग्रन्थ बनाया है उसी के परतो पर भाषा के कवि विहारी ने विहारी सतसई रचा—गोवर्द्धन का जीवन चरित्र हम सोलहवी जिल्द के अंक ५ में लिख चुके हैं—धोयी कवि के सम्बन्ध में यह कथानक प्रचलित है कि धोयी बड़े अभिमानी थे और पुराने कवि व्यास और बाल्मीकि की निन्दा किया करते थे कि पुराने कवियों में काव्य रचने के कोई उत्कृष्ट गुण न थे प्रत्युत उनका काव्य पुनरुक्ति दोष दूषित होता था—यह बात व्यास जी को न सोहाई और एक बूढ़े ब्राह्मण के रूप में इनसे आय मिले और पुराने कवियों की प्रशंसा करने लगे—धोयी को यह अच्छा न लगा मुह बनाय कहने लगे उनका काव्य किस काम का होता था निरा चकार भर देते थे—"द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च" बूढ़े ने कहा तो तुम क्या उनसे उमदा काव्य रच सक्ते हो? अच्छा कहो तो "इक्षुदण्ड कलानाथं भारतं चापि वर्णय" दो चरण कह बुड्ढा चुप रहा—धोयी तत्काल बोल उठे "इति धोयी कविब्रूंते प्रतिपर्व रसायनम्" इक्षु दण्ड ऊख कला नाथ चन्द्रमा और भारत इन तीनों का वर्ण करो तो—धोयी कवि कहते हैं ये तीनों प्रत्येक पर्व में रसायन रस की खाने हैं पर्व के माने गाठ के हैं ऊख की गाठ २ में रस भरा रहता है—पर्व तिथि को भी कहते हैं द्वितीया तृतीया सब तिथियाँ उत्तरोत्तर चान्दनी के रस

में बढ़ती जाती हैं—पर्व महा भारत के एक २ हिस्से को भी कहते हैं एक २ पर्व में रोचक कथाओं का रस भरा हुआ है—बूढ़ा इस उत्तर और धोयी की आशु कविता पर आश्चर्यित हुआ और आधुनिक कवियों की कवित्वशक्ति को मान गया—धोयी के फुटकर श्लोक और भी सुभाषितावली में पाये जाते हैं— तद्यथा

दलानिवासः परिहृत्यपाटला प्रकाशते पुष्पवतीत्वचात्मनः।
तथापि भृंगो न जहाति तां प्रियां करागिणामालि बिवेकसंपदः
तापापहे सहृदये रुचिरे प्रबुद्धे मित्रानुराग निरते धृत सद्गुणौघे।
स्वांगप्रदानपरितोषितषट्पदेस्मिन्नुयुक्तंतवेहकमलेकमलेस्थितिर्यत्

जयदेव बिष्णु स्वामी संप्रदाय के वैष्णव थे और पुरुषोत्तम क्षेत्र श्री जगन्नाथ पुरी में बहुधा रहा करते थे—वैकुंठवासी बाबू हरिश्चन्द्र ने श्री जयदेव जी का बहुत ही सबिस्तर और मनोरंजक जीवन चरित्र लिखा है—क्षत्रिय पत्रिका संपादक बाबू रामदीन सिंह ने हरिश्चन्द्र कला में हरिश्चन्द्र के समस्त लेखों का संग्रह कर कई जिल्दों में अलग २ छपवाया है उन्ही जिल्दों में इतिहास समुच्चक नामक द्वितीय खण्ड हरिश्चन्द्र कला का है जिस्मे और २ महा पुरुषों के जीवन चरित्र के साथ जयदेव जी का भी वृत्तान्त है—मूल्य उस्का ३) है हिन्दी रसिक जयदेव का जीवन चरित्र उस्मे सविस्तर पा सक्ते हैं—हरिश्चन्द्र ने जयदेव के सम्बन्ध में अनेक आख्यायिकायें लिखी हैं दक्षिण के राजाओं के दरबार में गीत गोविन्द बड़े प्रेम के साथ गाई जाती है हिन्दी की कविता में इस्का अनुबाद भी उक्त बाबू साहब ने छन्दो बद्ध किया है—एक अनुबाद सर विलियम जोन्स ने भी अंगरेज़ी पोइटरियों में किया है लाटिनी भाषा और जर्मन भाषा में भी इस्का उलथा हुआ है—कौण्डिन्य गोत्री-

त्पन्न विदर्भ निवासी एक दूसरे जयदेव और हुये हैं जिनका बनाया प्रसन्न राघव नाटक सीता बिहार काव्य न्याय का ग्रन्थ पक्षधरी और अलंकारों की कारिका चन्द्रालोक है जिसका तिलक कुवलयानन्द है-इस दूसरे जयदेव की जीवनी हम पहिले के अंकों में दे चुके हैं॥

सर्कारी दफ़तरों में भरती होने के लिये विद्या सम्बन्धी योग्यता।

हाल के गवर्नमेंट गज़ट में जो रिज़ोल्यूशन इसके बारे में छपे हैं उन को पढ़ प्रजा का कल्याण चाहने वालों के मन में बड़ी प्रसन्नता हुई-उस रिज़ोल्यूशन के लिये सर ऐंटोनी मेगडानेल को हम अन्तःकरण से धन्यवाद देते हैं-इस देश में विद्या की उन्नति न होने का बहुत कुछ दोष सर्कार के कन्धे पर है-पहले तो इस देश की भाषा का अनादर कर विदेशी अक्षरों में राज काज का सब भार रख सर्कार ने विद्या की उन्नति में टटिया लगा रक्खा है उपरान्त यह एक निकृष्ट नियम कर दिया कि केवल मिडिल की परीक्षा देकर सर्वज्ञ हो सकेगा और सब तरह की सर्कारी नौकरी पाने का अधिकारी बन बैठेगा-मिडिल के परीक्षा की सार्टीफ़िकेट जैसी बीसों वर्ष से अनमोल थी वह अब न रही-लोग समझते थे कि लड़के को किसी तरह मिडिल पास करा दिया कि वह लियाकत का पुतला हो गया उस्को और आगे पढ़ाने की ज़रूरत नहीं-थोड़े तनखाह की नौकरी पर किसी तरह भरती एक बार हो जाना चाहिये बढ़ते २ कुछ दिनों में मुनसरमी तहसीलदारी डिपुटी कलेक्टरी पाजाना कुछ मुशकिल नहीं है-इसमें सन्देह नहीं काम करते २ दस या पन्द्रह वर्ष में ऐसे लोग अपने ओहदे मुनसरमी तहसीलदारी आदि के काम में भरपूर पटु और कुशल हो जाते हैं

पर वही अपने काम मात्र में विद्या अधिक न होने से सूक्ष्मदर्शिता नहीं आती अल्पज्ञ को ऐसे भारी ओहदों पर नियत करने से अनेक हानि की संभावना की जा सकती है–अब उन्हीं छोटी २ नौकरियों के लिये इन्ट्रेन्स की परीक्षा में उत्तीर्ण होने का नियम कर देने से विद्या वृद्धि की अधिक संभावना की जाती है–मिडिल की अपेक्षा इन्ट्रेन्स तक पढ़ने से लड़कों में बहुत कुछ माद्दा और ज्ञान शक्ति में वृद्धि हो जाती है और जिस काम में तत्पर होगा उसे बहुत अच्छी तरह कर गुज़रेगा–

महाकविकल्हण।

राजतरंगिणी के कर्त्ता यह कवि काश्मीर के राजा जयसिंह के समय में हुये हैं जयसिंह ईस्वी सन ११२९ से ११५० तक राज्य करते थे–राजतरंगिणी में कल्हण कवि ने अपने समय तक जितने राजा काश्मीर में हुये उनका विस्तृत वृत्तान्त लिखा है सम्वत् शाका युक्त राजाओं का वृत्तान्त जानने के लिये यदि कोई ग्रन्थ संस्कृत में है तो यही राजतरंगिणी है जिससे पुराना वृत्तान्त इतिहासों में जानने के लिये बड़ी सहायता मिलती है–यद्यपि राजतरंगिणी में केवल काश्मीर के राजाओं का हाल दिया गया है किन्तु बीच २ और २ देश के लोगों का भी लगाव उसके साथ बहुधा आगया है इस लिये राजतरंगिणी भारतवर्ष भर के इतिहास मात्र के लिये बड़ी उपकारक है॥

पुस्तक प्राप्ति।

राजा बीर बल का जीवन चरित्र

मुन्शी देबी प्रसाद कायस्थ मुन्सिफ राज जोधपुर कृत–जिसे उक्त

मुन्शी जी ने अनेक इतहासों से संग्रह कर बनाया—यह पुस्तक बहुत ही उत्तम और पढ़ने में बड़ी रोचक है राजा बीर बल योंही हास्य रस के लिये प्रसिद्ध हैं जब उन का चरित्र सिल सिले वार और उत्तम भाषा में लिखा गया तब उस्का क्या कहना—यह पुस्तक पढ़ने में मनोरंजक होने के अतिरिक्त अनेक अच्छे२ उपदेश और राजकीय प्रबन्ध चातुरी से भरी हुई है—प्रथम खण्ड और द्वितीय खण्ड का मूल्य ॥) पुस्तक ग्रन्थकार को लिखने से मिलैगी ॥

हरिदास।

बाबू बालमुकुन्द गुप्त संकलित—हरिदास एक महात्मा पंजाब देश मे महाराज रणजीतसिंह के समय में हुये हैं हठयोग में बड़े प्रबीण थे महीने भर की समाधि लगाते थे—अनेक साहब लोगों ने इनकी परीक्षा किया और हर तरह पर ठीक पाया यही सब बिस्तृत हाल इस पुस्तक में दिया गया है—इस पुस्तक के पढ़ने से योगी जन अपने योग बल से कैसा२ कौतुक कर सकते हैं यह सब भली भांत मालूम हो जाता है भाषा इस्की बाबू बालमुकुन्द की है तो कहां तक मनोरंजक न होगी—हिन्दी रसिकों के लिये बड़ी उत्तम पुस्तक है, पर दाम ऐसी छोटी सी पुस्तक का १) बहुत है—कोल्हू टोला स्ट्रीट बंगवासी मेशीनप्रेस में छपी है—पुस्तक कलकत्ता में ग्रन्थकार को लिखने से मिल सक्ती है ॥

हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि० १६ सं० ११-१२ } प्रयाग { जूलाई-अगस्त १८६६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहांय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकाल और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १=)
नमूने की कापी का =)॥

१-१२-९६

हिन्दीप्रदीप

जिल्द १९ | प्रयाग | जूलाई-अगस्त
संख्या ११-१२ | | सन् १८९६ ई०

मुसल्मान और हिन्दू सरकारी नौकर।

सरजान स्ट्रेची के समय से सर्कारी नौकरी में मुसल्मानों के साथ हर एक बात में बराबर से रियायत की गई जिस्का परिणाम यह हुआ कि आबादी के हिसाब से मुसल्मानों का नम्बर सर्कारी नौकरी में हिन्दुओं की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गया—यद्यपि सर अलफ्रेड लायल के समय यह तरफदारी किसी कदर कम हो गई थी और हिन्दुओं के साथ न्याय करने की इच्छा की गई जिस्के कई एक उदाहरण लायल साहब ने अपने हुकूमत के ५ वर्ष में दिखलाये—किन्तु उन के जाने और सर आकलैंड कालविन के आने के साथही मुसल्मानों की तरफदारी की बुरी हवा फिर ज़ोर शोर से बहने लगी और सर चार्ल्स क्रास्थवेट के समय तक बेतरह ज़ोर से बही—इस समय सर्कारी नौकरी में मुसल्मानों की तादात बहुत चढ़ी बढ़ी रही और अब तक वैसही है—हम लोग यह नहीं चाहते कि आज या कभी कोई हाकिम आला हमारे साथ वैसी तरफदारी करै जैसी कि मुसल्मानों के साथ की गई है—न हम उन लोगों की तरह उन की पालिसी का अनुसरण इस प्रयोजन से किया चाहते हैं—कि सीधे सादे अंगरेज़ हाकिमों को अपनी बनावटी

राज भक्ति और शराफत के निस्वत गलत खयाल पैदा करें—जैसा काङ्ग्रेस के विषय मे भीतर से तो चाहते हैं कि इस तरह के राजकीय संबन्धी अन्दोलन कुछ न कुछ होते रहैं पर ऊपर से बड़े राज़ भक्त और हाकिमो के परम आज्ञाकारी बनते हैं—हम केवल इतनाही चाहते हैं कि सब जाति और फिरके की प्रजा के साथ बराबर से न्याय और उचित बर्ताव किया जाय और यह न सिर्फ इस लिये कि इन्साफ यही है बल्कि इस लिये कि उत्तम कोटि की राजनीति भी हमे यही शिक्षा दे रही है—यदि सर्कार राज्य का उत्तम प्रबन्ध किया चाहती है कि प्रजा सुखी रहे और उनके साथ उचित न्याय किया जाय तो यह आवश्यक है कि हिन्दू और मुसल्मान इन दोनो जातियों के लोगों की संख्या सर्कारी नौकरी में उनकी आबादी के हिसाब से नियत की जाय—खासकर उस हालत में जब दोनो में सर्कारी नौकरी के लायक और ईमानदार आदमियों की संख्या भरपूर मिलसक्ती है—कोई वजह नहीं है जब कि हिन्दुओं में पढ़े लिखे ईमानदार आदमी इफरात के साथ मिलसक्ते हैं तब उन के हक्क का कुछ ख्याल न कर मुसल्मान उन की मुनासिब तादात से ज़ियादह भरती किये जांय—हमे निश्चय है यदि सर्कार इसके सम्बन्ध में न्याय करने की कोशिश किया चाहेगी तो हमारे अलीगढ़ के पुराने दोस्त और उन के चेले तथा अनुयायी ज़रूर हल्ला मचाने लगेंगे कि इस तरह की काररवाइयां सलतनत ब्रिटेनिया पर ज़वाल ले आने के लिये हो सक्ती हैं—किन्तु सरऐन्टोनी मेगडानेल यदि न्याय किया चाहेंगे तो इस तरह के उन के चिल्लाने को निरी गीदड़ भपकी मानेंगे सैकड़ोंबार के गाये हुये उनके सियापे को निरी गाई गीत समझ अपने कर्तव्य कर्म से न चूकेंगे और जो त्रुटि अपने पूर्वज अधिकारियों से इसके संबन्ध में हो चुकी है उस्की मरम्मत कर गरीब सीधे

हिन्दुओं की योग्यता और ईमानदारी की यथोचित क़द्र कर सर्कारी नौकरी में हिन्दुओं को उनकी आबादी के हिसाब से कर देंगे ॥

कान्ग्रेस की बरकत ।

ऐसा मालूम होता है सर्व नियामक जगदीश्वर भी कान्ग्रेस का पक्षपाती है हम बराबर देखते आते हैं जहां२ कन्ग्रेस होता है वहां२ सुभिक्ष बना रहता है—जिस साल पंजाब में कान्ग्रेस हुआ था उस साल कान्ग्रेस के समाप्त होतेही पंजाब भर में इतना पानी बरसा कि कई दिनो तक झड़ी लगी रही जिस्का परिणाम यह हुआ कि पंजाब में इतना अन्न पैदा हुआ कि कई साल की अतिवृष्टि अनावृष्टि के कारण खेती का विघात होने से कुल हिन्दुस्तान को पंजाब संभाले हुये था— पार साल पूना के पासही मध्यप्रदेश भर में महा दुर्भिक्ष था किन्तु पूना का प्रान्त दुर्भिक्ष की पीड़ा से बचा रहा—इस साल आधा हिन्दुस्तान महा दुर्भिक्ष से पीड़ित हो रहा है किंतु बंगाल में सुवृष्टि है थोड़ी महर्घता तो रहैगी पर अकाल की पीड़ा से बंगाल मुक्त रहैगा क्योंकि कान्ग्रेस इस साल वहीं होने वाला है—दुर्भिक्ष पीड़ित प्रान्त के निवासियों को चाहिये कि जब यह प्रत्यक्ष है कि कन्ग्रेस महायज्ञ देश के लिये बड़ी बरकत है तब इस्की तन मन धन से सहायता करें और आगामी कानग्रेस को अपने प्रान्त में ले जाने कि कोशिश करें जिस्में कदाचित कान्ग्रेसही के होने से उनकी दुर्भिक्ष जनित पीड़ा शान्त हो और कई साल से अतिवृष्टि अनावृष्टि का जो उपद्रव उन२ प्रान्तों में फैल रहा है सो दूर हो ॥

कालेजों मे फीस बढ़ाने का नतीजा।

फीस डेवढ़ी दूनी करने से परिणाम यह हुआ कि न केवल म्योर्से-ट्रूल कालिज मे पढ़ने वालों की संख्या बहुतही कम होगई बरन सुनने में आता है पश्चिमोत्तर और अवध के सब सर्कारी कालेजों मे विद्यार्थी घटगये–मसल है "जोई रोगी भावा सोई बैद्य बतावा" जो बात मंजूर थी कि तालीम यहां की घटै वही हुई और वही लोग पढ़ लिख सकें जो सम्पन्न और धनी हैं–मध्यम श्रेणी वाले विद्या के लाभ से सब भांत वांचित रहें जिनकी उत्तम शिक्षा का लाभ दूर रहै इंट्रेन्स तक लड़कों को पढ़ाना दुष्कर होगया है—हिसाब करने से इंट्रेंस तक एक लड़के को पढ़ाने मे हज़ार बारह सौ रुपया खर्च होता है इतना भी मध्यम श्रेणी वालों की औकात के बाहर है–हम कई बार लिख चुके हैं कि देश का कुछ उपकार केवल मध्यम श्रेणी वालों को उत्तम शिक्षा से है सम्पन्न धनी लोग पढ़ कर भी अपनी प्रतिष्ठा कायम रखने और ऊंचा पद पाने के लिये इतना व्यग्र रहते हैं कि जिसके मुकाबिले देश का बिगड़ना या बनना उनकी समझ मे कुछ भी नही है–यह बिलायत नही है जहां केवल संपन्न धनी जन उत्तम शिक्षा प्राप्त कर सके हैं हिन्दुस्तान मे धनवान् श्रेणी वाले अपना समय ऐश आराम आमोद प्रमोद मे काटा चाहते हैं इल्म की तहसील के पीछे व्यर्थ अपने शरीर और मस्तिष्क को दुख नहीं दिया चाहते–अभी तक हमारे देश के साधारण लोगों मे यही समाया हुआ है कि विद्या केवल रुपया पैदा करने के लिये पढ़ी जाती है खास कर अंगरेजी और फारसी–समाज या परमार्थ संबन्धी कोई उपकार इससे है या हमारे "मारल्स" इससे सुधरते हैं यह कितनाही समझाओ

किसी के समझ में नहीं आता—हमारे देश के धनियों मे सिवाय अमीरी के समाज या आलस्य का सुधार जो उत्तम शिक्षा का सब से अधिक उत्तम फल है अपेक्षित हुई नहीं तब वे विद्या क्यों पढ़ैं—पूर्वोक्त सब बातें केवल मध्यम श्रेणी वालों के द्वारा होना संभव है जिनके लिये उत्तम शिक्षा की रोक फीस इत्यादि के द्वारा की गई है इसी से हम ने कहा "जैसहि रोगी भावा वैसहि वैद्य बतावा" गवर्नमेंट कदाचित् यह खयाल कर यदि देश से उत्तम शिक्षा को कम किया चाहती हो कि सर्कारी नौकरी के बड़े२ पद तथा वकालत इत्यादि के लिये काफी नम्बर पढ़े लिखे लोगों का होगया है अब और अधिक लोगों की ज़रूरत नही है—पर यह अनुभव के विरुद्ध सा मालूम होता है क्यों कि जब सौ को पूर्ण और उत्तम शिक्षा दी जाती है तब तीन तिहाई उनसे ऐसे रहते हैं जिनमे उत्तम शिक्षा बहुत कम प्रति फलित होती है केवल चतुर्थांश ऐसे निकलते हैं जिनमे सुशिक्षा और बुद्धि की प्रकर्षता का पूर्ण प्रकाश देखा जाता है—सर्कारी नौकरी मे ऐसेही सुयोग्य लायक लोगों की आवश्यकता है और अत्युत्कृष्ट बुद्धि शाली तो उस चौथाई में भी कोई एकही दो देख पड़ते हैं—यह तभी हो सक्ता है जब मध्यम श्रेणी के लोगों मे उत्तम शिक्षा का फैलाव गवर्नमेंट खुले जी से किया चाहेगी—बंगाल बंबई मन्दराज के समान तालीम का फैलाव अभी इन प्रान्तो मे नही हुआ बंगाल इत्यादि मे बिना गवर्नमेंट की सहायता के भी उत्तम शिक्षा मे अन्तर नहीं पड़ सक्ता यहां अभी सर्कार की भरपूर मदत के बिना उत्तम शिक्षा का विस्तार हो ही नही सक्ता—इस लिये हम फिर एक बार सर्कार से सविनय प्रार्थना करने का साहस करते हैं कि उत्तम शिक्षा के प्रचार के लिये कालेजों की फीस कम कर दी जाय जिससे मध्यम श्रेणी वाले भी उत्तम शिक्षा का लाभ उठा सकैं और गवर्नमेंट के उदार शासन के फल भागी हों—खैर उत्तम शिक्षा के लिये हमारे

वास्ते इतनी कठिनाई कर दी गई है सो साधारण शिक्षा हमारे वास्ते आसान कर दी जाती सो भी तो नहीं है—फीस और किताबों का दाम इतना बढ़ा दिया गया है कि इनट्रेंस तक पढ़ाने मे एक हज़ार के ऊपर खर्च बैठ जाता है तब उत्तम तथा साधारण सब तरह की शिक्षा से हम निरास होते जाते हैं और शिक्षाही केवल अंगरेजी राज्य की बड़ी भारी बरकत थी—सर्बस्व अपहरण होने पर हमे बड़ा दिलासा था कि इस्के द्वारा हमारा फिर कभी दिन बहुर आवेगा सो उस्की ओर से नैराश्य हमारे बड़ेही अभाग्य हैं यदि गवर्नमेंट हमारी इन प्रार्थनाओं पर ध्यान देती तो अहोभाग्य थे ॥

वर्तमान् महादुर्भिक्ष।

वर्तमान् महा दुर्भिक्ष क्यों पड़ा क्या इस्के कारण हैं और कैसे इस्का निवारण हो इत्यादि बातों पर ध्यान देने से यही मन में आता है कि यह हमारेही करमों का फल है—जहां हम सब ओर से कसे हुये हैं किसी ओर हाथ पाँव नहीं फैला सक्ते वहां दैव ने भी यही चाहा कि इन को अभी भरपूर दण्ड नहीं मिला इतने पर भी ये लोग बेहया ज़िन्दगी से जीतेही हैं तो अब इन को कोढ़ में खाज पैदा करदें—समझदार के लिये ज़रा इशारा काफी होता है किसी अंश में कहीं पर कुछ भूल चूक बन पड़ने पर उस भूल की सज़ा पाय फिर वह वहीं से सुधरने लगता है और आगे को उस भूल के डांडे नहीं जाता जो उस्की क्लेश और और दुःख का बाइस हुई हैं—यहां शताब्दी पर शताब्दी बीत गई और बीतती जाती हैं पर हम नित्य नीचे को गिरने और झुकने के सिवाय ऊपर को गरदन उठातेही नहीं—हज़ार वर्ष के ऊपर हुआ

मुसल्मानों के यहां आने के पहले से हमारी दुर्गतिही होती गई पर हमारा कभी एक दिन भी न इस बात पर ध्यान न गया कि देश में जातीयता और सहानुभूति बढ़ाने को क्या उपाय की जाय जिस्मे हमारी बढ़ती हुई दुर्गति का रोक हो—अस्तु मुरदे को क्या कफन भारी होता है इन बुरे दिनों को भी किसी तरह झेल डालेंगे पर जैसी दैव की इच्छा है कि अब भी ये सुधरैं कोढ़ साफ कर आगे को कदम बढ़ाने के लिये सीधी राह पर आय कुछ तरक्की करैं सो न होगा—हम जो हैं वही रहैंगे एक नहीं हज़ार ऐसी आफतें आया करैं हम अपने कु-कुसंस्कारों को न बदलैंगे न जानवर से आदमी बनैंगे बरन जो आज पाव भर बिगड़े हैं तो कल सेर भर बिगड़ने का हौंसिला बाधैंगे—बिधिनियोग दैव की इच्छा क्या है इसे कौन जान सकाहै कि हिन्दुस्तान को एकबारगी रसातल मग्न न कर मुर्गबिस्मिल की भाँत भोगायर धीरे२ क्यों मारता है—पहले तो हिन्दुस्तान शैतान की आंतसा कुछ ऐसा लंबा चौड़ा है कि यहां प्रति वर्ष इस्के किसी न किसी प्रान्त में अवर्षण और अकाल बनाही रहता है—जब रेल न थी तब जिस हिस्से में अकाल होता था वहीं के लोग उस्का सुख दुःख भोग लेते थे अब रेल हो जाने से जहाँ अच्छी बरसात हुई है और सुकाल रहना चाहिये वहां का अन्न भी उसी दुर्भिक्ष पीड़ित प्रान्त में खिंच जाता है इस लिये देश भर में एक सी मंहगी सदैव बनी रहती है—सो दैव ने इस साल ऐसे दुर्भिक्ष को हम लोगों के बीच भेजा जिसने पहले से पेशावर तक, अवध, राजपुताना, मध्यप्रदेश, बहुत सा हिस्सा मन्दराज बम्बई और बंगाल का भी आक्रमण कर रक्खा है—पृथ्वी जो नौदुलही सी सब ओर हरी भरी जल मग्न जलाशयों से सुहावनी मालूम होती थी वह अब रंडापे का दुःख झेलती हुई बेवा की भाँत रंज और गम के आलम में

भरी हुई उदास मालूम होती है–नदियाँ नव युवती की कटि भाग की भांत पतली पड़ गईं–ताल तलैयाँ सूख कर परपट मैदान होगईं–खेत सब खेतिहरों को अपने साथ लिये उस बेवा के मातम में साथ दे रहे हैं आसमान में बादल सपने के खयाल हो गये ॥

पन्दरह या बीस वर्ष के उपरान्त इस तरह के अवर्षण और दुर्भिक्ष की तो मानो पारी सी बन्ध गई है–१८ या १९ वर्ष पहले सन् ७६ और ७७ में इस तरह का दुर्भिक्ष पड़ चुका था इतने दिनो बाद अब फिर मानो उसकी बारी आई है किंतु इस साल का दुर्भिक्ष करालता में पहले वाले से बढ़ा हुआ है–बहुधा इस तरह के दुर्भिक्ष एक या दो वर्ष पहले सुकाल होने के उपरान्त होते थे तब अन्न का संचय रहने से अकाल का क्लेश लोगों को कम अखरता था–इस बार एक्सपोर्ट की कृपा से सालों पहले से गेहूं यहाँ का बिलाइत दो गया जिस्से संचित अन्न अब यहां रही नहीं जाता बल्कि दो वर्ष पहले से अतिवृष्टि अनावृष्टि ने अन्न की पूरी पैदावरी को भी रोक रक्खा–बड़ी आशा थी कि दो वर्ष से अकाल और मंहगी है इस वर्ष खूब गल्ला पैदा होगा कृषकों का सब दुख दूर हो जायगा–कौन जानता था कि ईश्वर का ऐसा प्रबल प्रकोप है कि परसी थाली आगे से छीन ली जायगी यदि भादों का झूरा न पड़ता तो इतना अन्न पैदा होता कि दो वर्ष की कसर मिटजाती पर प्रजा की खोटी कमाई और राजा की नीयत पर रूठ दैवने न चाहा कि हम सुख और आराम से दिन काटैं गुड़ दिखा कर ढेला मारा ॥

जब देश में भरपूर धन था बहुत से द्वार जीवन पार करने के खुले थे, केवल खेती और ज़मीन की पैदावरी एक मात्र सहारा न था, देश की बनी चीज़ें काम में लाई जाती थीं, विलाइत ने हर एक बात में पंजा नहीं फैला रक्खा था, बात२ में टैक्स और चुंगी कि इतनी भर

मार न थी व्यौपार यहाँ का बहुत अच्छी दशा में था गवर्नमेंट ने सब कुछ अपने हाथ में नहीं कर लिया था बिलाइत में रुपया ढो जाने के इतने द्वार न थे उस समय ऐसे२ अकाल लोगों को नहीं अखरते थे—अस्तु इस अकाल की पीड़ा से हम सबों को बचाने को अब गवर्नमेंट का क्या कर्तव्य है—पहिली बात गल्ले की रफ्तनी बिल्कुल बन्द कर दीजाय और आगे से गेहूं यहां का बिलाइत न जाया करे—जब तक दुर्भिक्ष है तब तक गल्ले की चुंगी छोड़ दीजाय मालगुज़ारी माफ कर दीजाय या घटा दीजाय—जब यह निश्चय है कि खेतीही यहाँ का प्रधान व्यवसाय है और उसी पर न जानिये के करोड़ आदमियों का जीवन है तब उस्की तरक्की की उपाय सोचना तो गवर्नमेंट का पहिला काम है—यहीं की धरती है कि प्रति वर्ष कई करोड़ का धन उगल देती है जिसे अंगरेज़ी हिकमत भी ज़रब न पहुंचा सकी—हिकमत ने यहां की दस्तकारी इत्यादि को बेकदर कर खाक में मिला दिया पर खेती में किसी तरह का खतरा न पैदा कर सकी—जैसा सर्कार हिकमत को और२ बातों में लड़ाये हुये है वैसाही यूरोप और अमेरिका की तरह हिन्दुस्तान में भी कृषिविद्या का स्कूल क्यों न खोला जाय—ब्रह्मा के परदादा के समय में भी जो तरीका हल चलाने का रहा वही अब भी जारी है उसमे ज़रा भी अदल बदल न की गई—पढ़े लिखे लोगों का ध्यान भी इधर नहीं जाता—ये वेही खेतिहर हैं जो हम को जिलाते हैं पर गवार और दिहकानी कह सभ्य समाज वाले जिन से घिनाते हैं और अपने से अत्यन्त निकृष्ट जिन्हे मानते हैं—बड़ा२ क्लेश उठाय ये बेचारे यदि अन्न न पैदा करैं तो इन की सभ्यता की हिमाकत सब धरी रह जाय—हमारे पढ़े लिखे लोग डिगरी पासकर नौकरी के लिये द२ मारे फिरते हैं और कृत कार्य नहीं होते—खेती को स्वच्छन्द व्यवसाय

समझ क्यों न अपनी बुद्धि का प्रकाश इस ओर लगावें—अफसोस की बात है कि खेती जो जीवन की मुख्य उपाय है यह इन भुक्खड़ और अज्ञ किसानो के हाथ में रख दीगई है—अमेरिका में खेती की तरक्की इसी से है कि वहां के किसान लियाकत तथा धन में यहां के ताल्लुकेदारों को मोल लेले सक्ते हैं—खेती हमारे देश की बहुत गिरी दशा में है खेतिहर जितना परिश्रम करते हैं उतना फल उस्का उन्हे नहीं मिलता इस्का यही कारण है कि खेती के औज़ार इत्यादि और खाद तथा आबपाशी का क्रम अमेरिका के खेतिहरों की अपेक्षा यहां बहुत घटा हुआ है—अमेरिका के किसानों को इतनी मेहनत नहीं करना पड़ता जैसा यहाँ के खेतिहर करते हैं और फाइदा इन से वे लोग बहुत अधिक थोड़ेही परिश्रम में उठाते हैं ॥

बड़े२ शहरों मे अंधे लूले लंगड़े कंगले अपाहिजों के लिये लंगरखाने और दिहातों मे ठौर२ रिलीफ वर्क्स गवर्नमेंट ने खोल दिया है बस इतनेही से समझ लिया कि दुर्भिक्ष पीड़ा मे कमी हो जायगी "अलि प्रसन्नो दमड़ीं ददाति" लूले लंगड़े अपाहिज तथा कंगलों को तो और२ भी सहाड़े हैं शहर मे बहुतेरे धर्मशील मुट्ठी बांटा करते हैं जिस्से उन्हे अपना पेट भरने मे कसर नहीं रह जाती—उनको अकाल की पीड़ा से बचाने की सर्कार ने कौनसी उपाय सोचा है जो किसी से कभी मांगते नहीं जिन मध्यम श्रेणी वालों को मांगना मर जाने के बराबर है—उन के लिये अच्छी उपाय यही होगी कि सर्कार अन्न खरीद बाज़ार भाव से डेहुड़ा सवाई सस्ता उनके हांथ बेंचै—अभी तो रिलीफ फण्ड का न जानिये कितना रुपया सर्कार के पास जमा है वही इसमे लगादे नहीं तो २०० रुपये से अधिक तनखाहवालों से रुपया सैकड़ा महीने में जब तक अकाल है काट लिया करैं और उसे दुर्भिक्ष

पीडितों की पीड़ा दूर करने के लिये खरच करैं—इत्यादि गवर्नमेंट के कर्तव्य दुर्भिक्ष की पीड़ा निराकरण के हैं जिसे सर्कार चाहे तो कोई दुष्कर काम नहीं है—हम आशा करते हैं हमारे मेगडानेल साहब प्रजा को दुर्भिक्ष की पीड़ा से बचाने की भरपूर फिकिर करैंगे—जैसा सुनने में आया है कि उक्त लाट साहब को इस्का बहुत खयाल है तो निश्चय हमारे ये बुरे दिन सहज में कट जांयगे जिस्का उक्त प्रजा पालक साहब को अनेक धन्यबाद है ॥

आनन्द बर्द्धन।

यह कवि नाम के जैसे आनन्द बर्द्धन थे वैसाही इनकी कविता भी पढ़नेवाले को आनन्द की बढ़ाने वाली है—काश्मीराधिपति अवन्ति बर्मा के समय आनन्द वर्द्धन हुये हैं राजतरंगिणी के देखने से मालूम होता है कि अवन्ति बर्मा ईस्वी सन् ८५५ से ८८४ तक राज्य करते थे—बुहलर साहब लिखते हैं कि कल्हण कवि ने अपनी राजतरंगिणी में उक्त कवि को अवन्ति वर्मा की सभा के भूषण और प्रधान पण्डित लिखा है—इन के मुख्य ग्रन्थ ध्वन्यालोक, काव्यालोक, सहृदयालोक हैं—ध्वन्यालोक काव्यमाला में छप भी चुका है जिसमे ध्वनि का निरूपण किया गया है—आनन्द बर्द्धन ने ध्वनि को काव्य का प्रधान अंग माना है—भोजदेव ने सरस्वती कण्ठाभरण में, मम्मट भट्ट ने काव्य प्रकाश में, विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण में, अप्पदीक्षित ने कुवलयानन्द में, मुक्त कण्ठ हो आनन्द वर्द्धन के इस सिद्धान्त को कि "ध्वनि काव्य का जीवन है" स्वीकार किया है और येही ४ अलंकार और ध्वनि तथा लक्षणा व्यंजना आदि निरूपण के जो काव्य के प्रधान अंगों में हैं विवरण के मुख्य ग्रन्थ हैं—सूक्ति मुक्तावली में आनन्द वर्द्धन की प्रसंसा का यह श्लोक दिया गया है—

"ध्वनिनातिगभीरेण काव्यतत्वनिवेशिना।
आनन्दबर्द्धनः कस्य नासीदानन्दवर्द्धनः" ॥

काव्यों में अलंकार और ध्वनि आदि के निरूपण का ध्वन्यालोक पहिला ग्रन्थ है अलंकार शास्त्र पर जितने ग्रन्थकार हुये सबों ने आनन्द वर्द्धन का अनुसरण किया है—आनन्द वर्द्धन के कुछ थोड़े से उदाहरण यहां पर दिये जाते हैं जिस्से इनकी कवित्व शक्ति का परिचय अच्छी तरह हो सक्ता है ॥

भक्तेर्द्वेषो जड़ेप्रीतिः सर्वदा गुरुलंघनम् ।
मुखे कटुकता नित्यं धनिनां ज्वरिणामिव ॥
प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्तिवाणीषु महाकवीनाम् ।
यत्तत्प्रसिद्धावयवातिरिक्तमाभातिलावण्यमिवांगनासु ॥
त्वयि जनार्दन भक्तिरचंचला यदि भवेदफल प्रवणाममम ।
अभिलषाम्यपवर्गपराङ्मुखःपुनरपीह शरीरपरिग्रहम् ॥
जयकृष्ण महावाहो संसार निदाघतापघन समय ।
नन्दकजलधरधाराशमितासुरदर्पदावाग्ने ॥
केलिकुरुष्वपरिभुंक्ष्वसरोरुहाणिगाहस्वशैलतटनिर्झरिणीपयांसि ।
भावानुरक्तकारिणीकरलालितांगमातंगमुंचमृगराजरणाभिलापम् ॥
उद्यन्त्यमूनिसुबहूनिमहामहांसिचन्द्रोप्यलंभुवनमण्डलमण्डनाय ।
सूर्यादृतेनतदुदेतिनचास्तमेतियेनोदितेनदिनमस्तमितेनरात्रिः ॥

भट्ट उद्भट ।

कल्हण ने राज तरंगिणी में काश्मीर नरेश जयापीड़ की सभा के प्रधान पण्डित भट्ट उद्भट को लिखा है—जयापीड़ सन ईस्वी ७७९ से

८१३ तक राज्य करता रहा—वही समय उद्भट का भी है—आनन्द बर्द्धन अपने ग्रन्थ मे उद्भट का प्रमाण देते हैं इस लिये यह निश्चय होता है कि यह कवि आनन्द वर्द्धन के पहिले हुये—अलंकार शास्त्र पर उद्भट का प्रमाण और२ ग्रन्थकारों ने भी लिखा है—कोई२ वाग्भटालंकार इसी कवि का बनाया मानते हैं पर यह ठीक नहीं मालूम होता बा-गभटालंकार के कर्ता जैनमतावलम्बी थे भट्ट उद्भट वैदिक संप्रदाय के शुद्ध ब्राह्मण थे—उनकी कविता के उदाहरण ये हैं ॥

अयंबन्धुः परोवेतिगणना लघुचेतसाम् ।
पुंसामुदारचित्तानां बसुधैव कुटुम्बकम् ॥
किमिहबहुभिरुक्तैर्युक्तिशून्यैःप्रलापैर्द्वयमिहपुरुषाणांसर्वदासेवनीयम्
अभिनवमदलेखालालसंसुन्दरीणांस्तनभरपारिखिन्नंयौवनंवावनंवा
किं कौमुदीशशिकलाः सकला विचूर्ण्य सँयोज्य
चामृतरसेन पुनःप्रयत्नात् । कामस्य घोरहरहुङ्कृतिदग्धमूर्तेः
संजीवनौषधिरियँ विहिता विधात्रा ॥

मम्मट्ट भट्ट ।

काव्य प्रकाश के प्रसिद्ध कर्ता—किसी२ का मत है मम्मट कैयट के भाई थे पर इस्का कहीं प्रमाण नहीं मिलता—काव्य प्रकाश मम्मट का बड़ा आकार ग्रन्थ है जिस्से पण्डितों की पण्डिताई की कसौटी हो जाती है—मम्मट ने शब्दव्यापार विचार नामक एक ग्रन्थ व्याकरण का भी रचा है—काव्य प्रकाश के पढ़ने से विदित होता है कि मम्मट बड़े व्यापक पण्डित थे—लक्षणा, व्यंजना, अभिधा शब्द की इन तीन शक्तियों के निरूपण में इन्हों ने मीमांसा और न्याय का पूर्ण पाण्डित्य प्रकाश किया है—काव्य प्रकाश के १० उल्लास में दो उल्लास गुण दोष निरूपण

के हैं जिस्मे इन्हों ने अपने समय तक जितने काव्य बने थे सबों के गुण दोष निरूपण किये हैं—दोष निरूपण में कालिदास भारवि माघ सबों के काव्यों का दोष निरूपण किया है और उत्तम से उत्तम काव्य को दूषित कर दिया है—पर श्रीहर्ष के नैषध में से कोई श्लोक कहीं गुण या दोष के निरूपण में नहीं दिया—किम्बदन्ती है कि मम्मट काश्मीर के रहने वाले थे और श्रीहर्ष से इन का कोई रिश्ता भी था जब श्रीहर्ष ने नैषध बनाया तो इन के अर्पण कर कहा कि आप ने सबों के काव्यों में दोष निकाला है मेरा काव्य ऐसा उत्तम बना है कि उस्मे आपको दोष न मिलैगा यह बात चीत होती ही थी कि मम्मट की दृष्टि अचानक इस श्लोक पर जापड़ी ॥

तव वर्त्मनि वर्ततां शिवं पुनरस्तुत्वरितं समागमः
अपिसाधय साधयेप्सितं स्मरणीयः समये वयं वयः

राजा नल हंस को दूत बनाय दमयन्ती के पास यह कह भेजते हैं तुम्हारी रास्ता में तुम्हारा कल्याण हो जल्दी फिर हम से आय मिलना हमारे मनोरथ के साधने की फिकिर रखना और काम सिद्ध हो जाने पर हमे याद रखना—इस श्लोक में "वर्त्मनि" सप्तमी को निकाल कर वर्त्ततां के साथ लगा दो तो यह अर्थ होगा तुम्हारे रास्ते में शिव अर्थात् कल्याण "निवर्त्तताम्" न हो—इस तरह के दूषण और कई एक निकाल कर कहा बस अब रहने दीजिये और अधिक कलई अपनी कविता कि न खोलाईये—श्रीहर्ष शर्माय गये मम्मट के मुकाबिले अपनी कवित्वशक्ति का सब अभिमान दूर बहाया—काव्य प्रकाश का तिलक बहुत लोगों ने किया है पर कमलाकर का तिलक सब से पीछे बना जिस्मे कमलाकर ने और२ तिलककारों का मत लिख उन का खंडन

किया है-श्रीहर्ष का समय मम्मट का माना जाय तो श्रीहर्ष ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दी के बीच में हुये हैं वही समय मम्मट का भी है-रस और अलंकार निरूपण के बहुत से ग्रन्थ जुदे२ समय में बने पर मम्मट के काव्य प्रकाश से बढ़ कर कोई ग्रन्थ नहीं बना-साहित्य दर्पण अलबत्ता काव्य प्रकाश के ढंग का एक ग्रन्थ है ॥

सुनीतितत्वशिक्षा क्यों आवश्यक है।

जैसा प्रकृति के नियमों के बिरुद्ध चलने से बिरुद्ध खानपान आदि से जल बायु कृत अनेक शारीरिक रोग पैदा होते हैं जो देर तक शरीर को क्लेश पहुंचाते हैं—वैसाही सुनीति तत्वशिक्षा "मारलता" सम्बन्धी नियमो के तोड़ने से भी रोग होते हैं पर यह रोग उस तरह का नहीं हैं जो शरीर को क्लेश दे या बाहरी निदानों से उस्की पहचान की जासके-देर तक शबनम में बैठे रहिये प्रकृति के नियम आप को न छोड़ेंगे ज़रूर सरदी हो जायगी कई दिनों तक नाक बहा करेगी और बिरुद्ध आचरण करते रहो ज्वर आजायगा सरदर्द पैदा हो जायगा अठवारों पड़े२ खटिया सेवते रहोगे-वैसाही सुनीति बिरुद्ध चलने से "मारलता" आप को न छोड़ेंगे-कितनों को हौसिला रहता है बुढ़ापे तक जवानी की ताकत न घटै इस लिये तरह२ के कुशते भांत२ के रस पौष्टिक औषधियां सेवन करते हैं खूबसूरती बढ़ाने को खिजाव लगाते हैं पियर्स सोप गोलडेन आइल काम में लाते हैं सेरीं लवेंडर तरह२ के इत्र मला करते हैं जिस्मे सौन्दर्य और फेशन में कहीं से किसी तरह की त्रुटि न होने पावे-किन्तु इस्का कहीं ज़िकिर भी न सुना कि सुनीतितत्व सम्बन्धी सौन्दर्य Moral beanty सुनीति के नियमो पर चलने का बल Moral strength क्या है उस्को कैसे अपने में लावैं या उसे कैसे बढ़ावैं-जैसा सौन्दर्य और शारीरिक बल बढ़ाने की चिन्ता में लोग व्य-

य रहते हैं वैसा यह कहीं सुनने में आया कि हम में डाह मात्सर्य पैशून्य जाल फरेब बेइमानी लालच द्रोह बुद्धि किस अन्दाज़ से है जितना अब है उसमे से कुछ कम हो सक्ता है और कितने दिनों की मेहनत में किस कदर कम हो सकेगा—हम समझते हैं जिस बात पर अपने पढ़ने वालों का ध्यान हम लाया चाहते हैं उस्मे ऐसेही कोई बिरले बड़े बुद्धिमान धनी मानी या प्रभुता वाले होंगे जिनको अपने "मारल्स" सुनीति तत्व के सुधारने और बढ़ाने की कभी को कुछ चिन्ता हुई होगी—सच तो यों है कि वास्तविक सुख बिना इस्पर खयाल किये हो ही नहीं सक्ता—हमारे मारल्स बिगड़े रहैं और उस दशा में वास्तविक सुख की आशा वैसाही असंभव है जैसा बालू से तेल का निकालाना असंभव है—वैभव प्रभुता या संसार की वे बातें जो इज्ज़त और मरतबा बढ़ाने वाली मान ली गई हैं जिन के लिये हड्डी के एक टुकड़े के वास्ते कुत्ते की भांत हम ललचा रहे हैं वे सब उस्को अति तुच्छ हैं जो अपने "मारल्स" का बड़ा पक्का है—जो आनन्द इसमे मिलता है वह उस सुख के समान नहीं है जैसा बिषय बासना के सुख का क्रम देखा जाता है क्योंकि बिषय बासना के सुख उस्के लिये हौंसिला रखने वाले की पहुंच के भीतर हैं पर सुनीति तत्व सम्बन्धी अलौकिक सुख हमारी पहुंच के बाहर हैं—लाखों इस सुख के शिखर तक चढ़ने का हौंसिला करते हैं पर कोई एकही दो इस्की चोटी तक पहुंचता है—सुनीति तत्व के सिद्धान्तों पर लक्ष्य किये और प्रतिक्षण अपने दैनिक जीवन में उस्का पालन करते हुये बुद्धि के आंकुस से प्रेरित हो मनुष्य इस आनन्द का अनुभव कर सक्ता है पर इन लोहे के चनो का चबाना सर्व साधारण के लिये सहज नहीं है किन्तु इस्के अधिकारी वेही हो सक्ते हैं जिन को उनकी झोपड़ीही महल है—जिनकी आभ्यन्तरिक शान्ति

की दशा का बड़ी२ बादशाहत भी मूल्य में कम है—जो अपने सिद्धान्तों के बड़े पक्के हैं उन से एक बार किसी ने पूछा—साहब आप को दुनिया में औकात बसरी का क्या सहाड़ा है? जवाब दिया अक़िल, आप लोग विषय वासना लंपट हो दुनियावी सुख की गुलामी के पीछे दौड़ रहे हो मैं उसी को अपना गुलाम किये हुये हूं—तब यह पूछना ही व्यर्थ है कि आप को अपनी प्राणयात्रा "औकात बसरी" का क्या सहाड़ा है सच है—

आशायाः खलुयेदासास्ते दासा जगतामपि।
आशादासी कृतं येन तेन दासी कृतं जगत्॥
अशीमहि वयं भिक्षा आशा वासो वसीमहि।
शयीमहि महीपृष्ठे कुर्बीमहि किमीश्वरैः॥

सुकरात, अफलातूं, अरस्तू, तथा अक्षपाद, कणाद, गौतम सरीखे दार्शनिक बुद्धिमानों के पास जो रत्न था और जिस सुख के घनानन्द का अनुभव उन्हे था वह उसे कहाँ जो धन संपत्ति तथा संसारिक विषय वासना की ज़हरीली चिन्ता से अहर्निश पूर्ण रहता है॥

काम और नाम दोनो साथ२ चलते हैं॥

नाम के कायम रखने को आदमी न जानिये क्या२ काम करता है—लोग कुआं खुदाते हैं—बावली बनवाते हैं—बाग लगाते हैं—मोहफिल सजाते हैं—क्षेत्र और सदाबर्त चलाते हैं—नामही के लिये लोग लाखों लुटाते हैं—स्कूल पाठशाला तथा अस्पताल कायम करते हैं—इस तरह पर काम और नाम दोनो का बराबर साथ निभता चला जाता है—सच कहो तो इस असार संसार में जन्म पाय ऐसाही काम कर चले जिस्से नाम बना रहे जिन का नाम बना रहता है वे मानों सदा जीते ही

रहते हैं—जिस काम से नाम न हुआ वह काम ही व्यर्थ है—काम भी दो तरह के होते हैं नेक और बद्—नेक काम से आदमी नेक नाम होता है प्रातः स्मरणीय होता पुण्य श्लोक कहलाता है—बद् काम से बद्नाम होता है उस्का नाम लेते लोग घिनाते हैं—गालियां देते हैं—नाक और भौं सिकोड़ने लगते हैं—

कथापि खलु पापानामलमश्रेयसेयतः,

पुण्य श्लोकयथा

पुण्यश्लोको नलोराजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः ।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः ॥
कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्यच ।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं पाप नाशनम् ॥

इत्यादि नेकनामी के अनेक उदाहरण हैं केवल अपने२ कामही से लोग नेकनाम होगये—रणजीत सिंह शिवा जी प्रभृति शूर बीर, विद्या सागर सरीखे देश हितैषी, लार्ड रिपन से शासन कर्ता, शेक्सपियर मिल-टन कालिदास आदि कवि सब अपने२ कामही से हम लोगों के बीच मानो जी रहे हैं और आचन्द्रतारक जीते रहेंगे—काम के ज़रिये नाम कायम रखने के तरीकों मे किसी ठठोल ने एक यह तरीका भी लिखा है ॥

घटं भिन्द्यात्पटं छिन्द्या द्गर्दभारोहणं चरेत् ।
येन केन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत् ॥

घड़े फोड़ डाले कपड़े फाड़ डाले गदहे पर सवार हो कर चले किसी न किसी तरह मनुष्य नाम हासिल करै—कितने हलाकू, चंगेज़

नादिर से जगत शत्रु ऐसे भी होगये हैं जिनके काम की चर्चा सुन गर्भवती के गर्भ गिर पड़ते हैं—कितने नाम के लिये मर मिटते हैं जग मे मुह उजला रहे बात न जाय कोई नाम न रक्खे एक की जगह चाहे दस लुटे पर ऐसा काम न बन पड़े कि सब लोग हसैं—नाम रखते हैं—नाम करते हैं—नाम धरते हैं—नाम धराते हैं—नाम पड़ता है—नाम चलता है इत्यदि अनेक मुहाबिरे नाम के हमारी रोज़मर्रे की बात चीत मे कहे सुने जाते हैं पर इन सबों मे नाम का कामही की तरफ इशारा रहता है—ईश्वर न करै बुरे कामो के लिये किसी का नाम निकल पड़ै दूसरा भी कोई बुरा काम करै तौभी "नरक पड़ै को चन्दू चाचा" समाज मे उसी कि तरफ सबों की ओर से अंगुश्तनुमाई की जायगी जो बुरे कामो के लिये प्रसिद्ध हो चुका है—पुलिस भी उसी को तके रहेंगी मेजिसटरेट साहब खुद उस्की खोज मे रहैंगे—योंही भले काम के लिये नाम निकल गया तो चाहो दूसरा भी कोई वैसाही काम करै किन्तु देसी परदेसियों मे नाम उसी का लिया जायगा "कटै सिपाही नाम सरदार का" "नामी शाह कमा खाय, नामी चोर मारा जाय" जो बात बिना उस तरह के काम के होती हैं वह बराय नाम को कही जाती हैं जैसा इसाई मत के मानने वालों मे ईसा पर बिश्वास बराय नाम को है—इन दिनो के सभ्यों मे सच्ची सभ्यता बराय नाम को है—मेनचेस्टर के बने कपड़ों के आगे देशी कपड़ों की कदर बराय नाम को है—इस समय के ब्राह्मणों में द्विवेदी त्रिवेदी चतुर्वेदी आदि उपाधि बराय नाम है "पढ़े लिखे ओनवा नही नाम महम्मद फाज़िल" चार वेद की कौन कहे चार अक्षर से भी भेट नहीं है कोरे लखठदास पर कहलाने को द्विवेदी त्रिवेदी चतुर्वेदी—इसी तरह इस साल वर्षा और खेती मे उपज बराय नाम को है—दिवालदार रोज़गारियों मे इमानदारी बराय नाम है—अंगरेज़ और हिन्दुस्तानियों के मुकाबिले हाकिमों को इनसाफ़ बराय नाम

है—कितनो का नाम दाम के कारन नाम के लायक कोई काम उन से न भी बन पड़ा हो तौभी दाम ऐसी चीज़ है कि उनका नाम लेना कैसा वरन खुशामद करना पड़ता है—ऊपर की वर्षा समान गोधन दास तिनकौड़ी मल चिथरू दास के नामो से कौन सी खूबसूरती है—इत्तिफाक से ऐसों के पास बहुत सा रुपया जुड़ गया न आप पेट भर खाता है न दूसरों को खाते पहनते देख सक्ता है न उस रुपये से यह लोक पर लोक का कोई काम निकलता है—समाज मे यहां तक मनहूस समझा गया है कि सबेरे भूल से कहीं नाम ज़बान पर आजाय तो दिन का दिन नष्ट जाय ऐसों से सरोकार केवल दामही के कारन लोग रखते हैं और हाज़त रफा करने की भांत उस्के पास जाना पड़ता है इत्यादि काम और नाम का बिवरण पढ़ने वालों के चित्त विनोदार्थ यहां पर लिखा गया—अन्त मे इतना और विशेष वक्तव्य है कि काम और नाम दोनो का साथ दाम पल्ले रहने से अच्छा निभ सक्ता है अर्थात् दाम वाला चाहे तो अपने कामो से नाम पैदा करना उस्के लिये जैसा सहज है वैसा औरों के लिये नहीं है ॥

सुथरेसाही।

सुथरा जात का खत्री और गुरू नान्हक के चेलों मे एक था और कमालत मे भी अपने गुरू से किसी बात मे कम न था—सुथरा ठठोली के लिये प्रसिद्ध है—एक बार सुथरा एक चिड़िया अपनी मूठी में बन्द कर गुरू नान्हक से आ पूछा गुरू मेरी मूठी मे यह चिड़िया बतलाइये जीती है या मरी—बाबा नान्हक ने सोचा यदि कहता हूं यह चिड़िया मरी है तो झट उड़ा देगा मैं झूंठा पड़ूंगा—जो कहता हूं चिड़िया जीती है तो सुथरा मूठी ही से उसे दबा देगा चिड़िया मर जायगी जीव हत्या होगी मैं भी झूठा पड़ूंगा—बोले अरे भाई इस चि-

ड़िये की मौत और ज़िन्दगी तेरे हाथ है—इत्यादि बहुत से किस्से सुथरे के सम्बन्ध मे प्रचलित हैं—खैर सुथरा एक पहुंचा हुआ फकीर और हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध सत्पुरुष महात्माओं मे हो गया है—सुथरे मे जो कुछ कमालत और सिद्धि थी वह सब उसी के साथ गई जैसा यहां का दस्तूर है कि किसी महानुभाव की गद्दी पुजती है और उस्के बंश वाले या चेले अपने बुजुर्ग या गुरू का नाम टट्टी की भांत आड़ मे रख दुनिया भर की आवारगी अपने मे रखकर भी पेट पालते हैं और खातिर खाह गुलछर्रे उड़ाते हैं—इसी क्रम के अनुसार इनदिनो के आवारा लोग जिन्हो ने लड़काई से सिवाय आवारगी के और कुछ नहीं सीखा सुथरेसाही बन दुकान२ मांगते फिरते हैं—इस वर्ष यहां दशहरा और रामदल के मेलों मे कुछ लोग सुथरे की नकल का स्वांग बने थे—कहने को तो नकल थी पर असिल को मात किये थे—कुछ बानी इन लोगों ने मेले मे कही थी उसे यहां हम प्रकाश करते हैं—

आठ घड़ी चौसठ पहर मुख पै बरसत नूर।
सब के बाबे नान्हिक शाह हैं भण्डारे भरपूर॥
पड़ा अकाल काल दुनिया मे हुआ हिन्दुस्तान चकना चूर।
रोवैं किसान कान धर हाथन अब का फकैं धूर॥
जमीदारहू दर दर भंखैं हाय नसाना दोनो तूर।
गली ब्रदर की अब बन आई कहत निशाना लाग भरपूर॥
लाट गवंडरहू नहि सुनते बसि शिमला बड़ दूर।
दीन पुकारत आरत सुर से राखहु हमे हजूर॥
रोजी रिज़क सो पहिलै छिनगै खेती एक गरूर।

बिन बर्षा सो खेतिहु नाहीं तो अब मरब जरूर ॥
देश उधारक रहे न कोऊ कहलाते जो सूर ।
भावी प्रबल रही कुछ ऐसी बच गये कायर कूर ॥
जिनके पाप प्रजा सब भोगत उठत हिये यह हूल ।

बोध मनो योग और युक्ति ।

किसी वस्तु के देखने सुनने छूने चखने व सूघने से जो एक प्रकार का ज्ञान होता है उसे बोध Feeling or Sensation कहते हैं परन्तु यथार्थ में केवल बोध से ज्ञान नहीं होता—प्रकृतज्ञान Perception बोध और साधारण ज्ञान दोनो मिल के होता है और वह प्रकृत ज्ञान बोध तुम्हे कितनाही हो बिना मनो योग के नहीं होता अतएव केवल बोध मे मन अस्थिर रहता है और ज्ञान जो मनो योग के द्वारा होता है उसमे स्थिर रहता है—जैसा घड़ी जो आठो पहर बजा करती है उसे कभी हम सुनते हैं कभी नहीं सुनते पास धरी हुई घड़ी का शब्द सुनने का कारण वही अमनोयोग है जिसके बजने का बोध तो सभी अवस्था मे हुआ करता है पर उसके शब्द का ज्ञान अर्थात् घड़ी मे कै बजा इसका ज्ञान हमे तभी होता है जब हम दत्तावधान हो मन का संयोग उसके बजने में करते हैं ॥

यह थोड़ा सा वर्णन दार्शनिक बोध का यहां किया गया अब लोक मे बोध और प्रकृत ज्ञान Perception किस प्रकार होता है और क्या उसका परिणाम है सो देखाते हैं—पहिले हमने देखा कि यह बालक बड़ा सुन्दर और हसमुख है देखतेही उसकी प्रशंसा करने लगे चाहो यह प्रशंसा मनही मन हो या प्रगट मे हो—प्रशंसा करते२ उस बालक पर स्नेह का

भाव उत्पन्न हुआ तो यहां बालक को पहले देखने को हम बोध Sensation कहेंगे और उस्पर जो स्नेह का होना सो मानोप्रकृत ज्ञान Perception कहलाया–सौन्दर्य प्रेम का प्रधान कारण ठहरा परन्तु उस प्रेम मे यदि किसी कारण भय आदि का संसर्ग न आगया हो तो–सिंह मनोहर जन्तु है सही पर फाड़ने वाले सिंह पर कौन प्रेम करेगा–बोध मनुष्य मात्र में होता है परंतु युक्ति सिद्ध बोध उपकारी है और युक्ति बिरुद्ध बोध सिवा अपकारी होने के अतिरिक्त उपकारी होही नहीं सक्ता–अभिलाषिता पाणिगृहीती युवती पर प्रेम अनिष्टकारी नहीं है क्योंकि दाम्पत्य प्रेम भावी सुख का प्रधान कारण है–किसी अन्य स्त्री पर प्रेम करना अनिष्टकारी है इसलिये युक्ति बिरुद्ध कहलावेगा–सदैव भयभीत रहना अपकारी है किन्तु किसी२ समय भयभीत होना उपकारी भी होता है–क्रोध महा अनिष्टकारी है किन्तु समय से क्रोध भी उपकारी होता है महा भारत का वाक्य है "तस्मान्नात्युत्सृजेत्तेजो न चनित्यंमृदुर्भवेत् । काले काले तु संप्राप्ते मृदुस्तीक्ष्णोपि वा भवेत् ॥ वैदिक समय के लोग यहां बोध के बड़े अनुयायी थे जो वस्तु उनहे सुन्दर और तेजोमय देख पड़ी उस्पर बहुत कुछ दत्त चित्त हो जाते थे उस्के सौन्दर्य से आकर्षित हो जैसा सूर्य चन्द्रमा उषा बिद्युत आदि को ईश्वर की बड़ी भारी शक्ति मान देवताओं में गिना–कारण इस्का यही है कि वे कोमल और सरल चित्त थे अब के लोगों के समान बांके तिरछे और मन के मैले न थे–उस समय डाह और ईर्षा का बहुत कम प्रचार था जैसा अब है वैसा तब न था कि कोई किसी का ऐश्वर्य नहीं देख सक्ता–प्रजा को किसी तरह की पीड़ा का नाम भी न था पैदावरी का छठवा हिस्सा केवल राजा को देते थे अब इस समय सब मिल तृतीयांश सम्पूर्ण उपज का राजा निगल लेता है चतुर्थांश मे भी जो बच रहता है समय२ दुर्भिक्ष

आदि दैवी उपद्रव के कारणसुख और स्वास्थ्य प्रजा के लिये दुर्लभ है— पुराने ऋषि मुनि अपने बोध और मनोयोग के उपरांत जो बिचारते थे उसमे द्वेष बुद्धि और पक्षपात का दखल नहीं होने पाता था इसी लिये वे आप्त कहलाये और उनके बिचार या खयाल सर्वथा सत्य होते थे मिथ्या का कहीं उसमे लेश भी नथा—बहुत से यूरोप खण्ड निवासी साधारण ज्ञान Common Sense के पक्षपाती हैं वे कहते हैं किसी बस्तु के बिचार मे बहुत सा तर्क बितर्क ब्यर्थ है केवल साधारण ज्ञान के द्वारा कार्य करना चाहिये—उन लोगों का यह भी मत है कि साधारण ज्ञान बिना बिचार के उत्पन्न होता है अर्थात् ऐसा ज्ञान मन का एक स्वभाविक धर्म है—हमारे देश में उसे साधारण ज्ञान न कह, समझना, जी में बैठना, मालूम पड़ना इत्यादि शब्दों का प्रयोग उसके लिये करते हैं— साधारण ज्ञान सदा सत्य नहीं होता कितने ऐसे बिषय हैं जिनको युक्ति साधारण ज्ञान के भीतर नही आती और जिसका बिचार करने को हमारा साधारण ज्ञान समर्थभी नहीं है—बहुधा द्वेष बुद्धि ईर्ष्या इत्यादि के कारण मिथ्या होता है इसलिये जिसे समझना कहेंगे उसमे आधा साधारण ज्ञान रहता है और आधा द्वेष आदि के कारण मिथ्या बोध है—उत्कृष्ट बोध साधारण ज्ञान और सर्वोत्कृष्ट युक्ति तीनो से उनका समझना रहित होता है—भारत के कुदिन तभी से आये जब से लोगों मे ऐसी समझ का प्रचार हुआ—वेद के समय जब ब्राह्मणों का यहां पूरा आधिपत्य रहा ऊपर लिखी हुई तीनो बातें उत्कृष्ट बोध, साधारण ज्ञान, सर्वोत्कृष्ट युक्ति, अच्छी तरह प्रचलित थीं अब केवल समझ शेष रही॥

शेष मे अब हम यह कहा चाहते हैं कि युक्ति और उत्कृष्ट बोध दोनो की चेष्टा हमे करना चाहिए बिना बोध Feeling कोई साधारण कार्य भी नहीं सिद्ध हो सक्ता और बिना युक्ति के सत्यबिचार मन में

नहीं आसक्ता इसलिये अपनी उन्नति चाहनेवाले को दोनो का मनोवाक् काय से सदा सेवन करना चाहिये—परन्तु पहले युक्ति द्वारा सिद्ध कर लें कि यह काम उपकारी है तब अपनी अभिरुचि प्रकाश करें—धीरे२ उस काम के करने में एक प्रकार का बोध पैदा हो जायगा तब उसके करने में उत्साह बढ़ैगा—इसी बोध के बढ़ने से स्वाधीनता प्रिय लूथर ने कैथोलिकों के अत्याचार से समस्त यूरोप को बचा रक्खा और वाशिंगटन ने अमेरिका को स्वच्छन्द कर दिया—यहां के लोग ऐसे बोध शून्य हैं कि किसी निरपराधी दुखी बेचारे पर अत्याचार होते देख मुह फेर लेते हैं हम नहीं जानते ऐसों के जीवन का क्या फल जिन से कुछ उपकार साधन न हुआ—वर्तमान् महा दुर्भिक्ष में कितनों की बन पड़ी है जो कभी अन्न का रोज़गार नहीं किये थे वे भी इस समय रोज़गारी बन बैठे हैं—सर्कार की ओर से बड़ी२ कोशिश पर भी कि अन्न सस्ता बिकै उनके कारण नहीं बिकने पाता इत्यादि बोध शून्यता के अनेक उदाहरण पाये जाते हैं जिसे विशेष पल्लवित करना केवल पिष्ट पेषण मात्र है ॥

सुख क्या है ?

सुख के सम्बन्ध में आधुनिक बेदान्तियों का तो सिद्धान्तही निराला है जिन्हो ने व्यास कृत प्राचीन बेदान्त दर्शन के जो कुछ उत्तम सिद्धान्त थे कि सुख दुख में एकसा रहना सुखमें फूल न उठना दुख में घबड़ा नहीं कीन कर छिपे नास्तिक येबेदान्ती अब मानते हैं कि सुख दुख पाप पुण्य बुरा भला दोनों एक हैं और दोनो बड़े बन्धन हैं—पाप पुण्य दोनो शरीर करता है आत्मा शुद्ध और निर्लेप है इत्यादि—खैर बेदान्तियों के ये कच्चे सिद्धान्तों को अलग रख हम यहां पर आज विचार किया चाहते हैं कि सुख क्या है—लोग कहते हैं इन पर भगवान की कृपा है ये बड़े सुखी हैं—पर इस्का

कोई ठीक निश्चय अब तक न हुआ कि सुख क्या वस्तु है जिसके लिये संसार भर ललचा रहा है—कोई बड़ परवारी और बढ़े हुये कुनबे को सुख की सीमा मानते हैं—कच्चे बच्चे लड़के बालों से घर भरा हो एक इधर रोता है दूसरा उधर पड़ा चिल्ला रहा है सब ओर किच पिच गुल शोर मच रहा है एक बाबा की डाढ़ी खसोटता है दूसरा कान मींजता है तीसरा गोद मे चढ़ा बैठा है चौथा सामने पड़ा मचला रहा है बाबा बेवकूफ मनीमन फुटेहरा से मगन होते जाते हैं और अपने बराबर भाग्यमान और धन्य किसी को नहीं मानते—कोई २ इसी को बड़ा सुख मानते हैं कि अनगिनती रुपया पास हो उलट पुलट बार २ उसे गिना करैं न खांय न खरचैं सांप बने बैठे २ ताकते रहैं—जैसे हो तैसे जमा जुड़ती रहै बात जाय पत जाय लोक मे निन्दा हो कोई कितनाही भला बुरा कहै पर गांठ का पैसा न जाय—तुम उसके रुपये या फाइदे में खलल अन्दाज़ न हुये हो चाहो तुम्हारा सा बदकार कंबखत अपाहिज दूसरा दुनियां के परदे में न पैदा हुआ हो तुम उसके लिये सिर की कलंगी होगे—वही आप संसार के समस्त गुणियों में अग्रगण्य हों अपने सुयश की महक से महर २ करते कुचाल और सद्वृत्त की कसौटी मे कसे हुये हों पर उस खूसट स्वार्थ लंपट के रुपये मे अपना उचित हक्क समझ खलल अन्दाज़ हुये बस आपसा नालायक और बुरा दूसरा कोई उस्की निगाह में न जचैगा—उसके सामने आप का नाम किसी की ज़बान पर आ जाय तो गालियों के सहस्त्रनाम का पाठ प्रारंभ कर देगा—न सिर्फ आप को बरन आप जिनके बीच मे चलते फिरते हैं जो तुम्हें सद्वृत्त समझ तुम्हारी कदर करते हैं उनके लिये भी उसी सहस्त्रनाम का पाठ तैयार है—किसी की समझ मे हुकूमत बड़ा सुख है अपनी हुकूमत के ज़ोर में गरीब दुखियाओं को पीस उनका लहू सुखाय २ न्याय हो चाहो अन्याय अपना सुख और अपने फाइदे मे ज़रा भी कसर न पड़े इत्यादि इस कंबखत के लिये सब सुख हैं ॥

किसी२का मत है कि शरीर का नीरोग रहनाही सुख सन्दोह का उद्गार है इसी मूल पर यह कहावत चल पड़ी है "एक तन्दुरुस्ती हज़ार न्यामत"—ये सब सुख ऐसे हैं जो देर तक रह सक्ते हैं और जिनके लिये हम हज़ार२ तदबीरें और फ़िक्र किया करते हैं फिर भी ये सब तभी होते हैं जब पुर्बिले की कोई अच्छी कमाई हो—और अपने किये नहीं होता जब तक उस बड़े मालिक की मंजूर न हो—अब कुछ थोड़े से क्षुद्र सुखों को यहां पर गिनाते हैं और उन सुखों के भोक्ता किस प्रकार के होते हैं उसे भी उसी के साथ बताते चलैंगे—जैसा शहर के बदमाश और शोहदों को सुख नरम तथा राशी हाकिमों के होने से है—बनियों को महा दुर्भिक्ष परम सुख है हजारों का अन्न खरीदे हुये हैं नित्य पनसेरी लुड़काते२ यह दिन आया कि अन्न ढूंढे नहीं मिलता सेठ जी साहब की गज भर की छाती है मुनाफे का गंजियों रुपया डेकार बैठे—दलालों को सुख आँख का अन्धा गाँठ का पूरा मिल जाने में है—कलहा कर्कसा को सुख लड़ने और दांत किर्रने में है—परद्रोही ईर्षी को दूसरे के नुकसान में है—हमारे वर्तमान लाट साहब सर ऐन्टोनी मेगडानेल साहब को प्रजा की भलाई में सुख है—जिनकी कारखाई से सिविलियन मात्र चिढ़े हैं पर उक्त लाट साहब अपने दृढ़ निश्चय से ज़रा भी न हिल उचित न्याय से नहीं हटा चाहते—पायोनियर को हिन्दुस्तान तथा हिन्दुस्तानियों की ऐब जोई और छिद्रन्वेषण में सुख है—इत्यादि भिन्न२ रुचिवालों को जुदे२ अन्दाज़ के सुख हैं—सच है "भिन्नरुचिर्हि लोकः" कभी२ हमे सुख के भाव को लोगों पर गट होने से रोकना पड़ता है हमारा एक परोसी वैदीवाल मर गया जी से तो इतना खुश हुये मानो कारूं का खज़ाना हाथ लगा पर लोक लाज भरने को चार भाइयों के बीच अपने सुख के भाव को छिपाने को उस मरे हुये के नाम पछताना पड़ता है—"क्या कहैं कूंच कर गये बहु-

त अच्छे थे भाई मौत से किस्का बश है ऐसही मौके पर तो आदमी सब तरह बिबश होजाता है-

सच पूछिये तो चित्त में सुख का भाव पैदा होने की बुनियाद कुछ नहीं है केवल प्राप्य वस्तु के अभाव का मिट जाना ही सुख है-ईश्वर करे सुख में रह कर पीछे से दुखी किसी को न होना पड़े ऐसे को दुखी जीवन से मर जाना उत्तम है-

सुखंहि दुःखान्यनुभूय शोभते घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम् ।
सुखेन यो जाति नरो दरिद्रतां धृतः शरीरेण मृतः सजीवति ॥

जैसा घने अन्धेरे में चले जाते हुये को एकाएक दीपक का उंजेला मिल जाय उसी तरह दुःख भोग तब सुख में आजाना शोभा देता है जो मनुष्य सुख में रह तब दरिद्र हो जाता है वह मानों शरीर धारण किये श्वास ले रहा है पर वास्तव में मरा हुआ है-दुःखैक मात्र सार इस संसार में सुख से जीवन काटने को बहुतों का सुख चाहना पड़ता है-नौकर को अपने मालिक का सुख, रियाया को अपने हाकिम की खुशी-शागिर्द को उस्ताद की खुशी-मा बाप को अपने लड़के बालों का सुख-आशिक तन को अपने दिलदार यार का सुख-शहर के रईसों को मेजसटरेट साहब की खुशनूदी-मातहत क्लर्कों को सर दफ्तर की खुशी-हम को अपने पढ़ने वालों की प्रसन्नता आपेक्षित है-किसी रसीले चुटीले मज़मून पर पढ़ने वालों के दाँत निकल पड़े हमारा परिश्रम सफल हो गया-साध्वी सच्चरित्र स्त्रियों का सुख पति के सुख में है-पादरी साहब की प्रसन्नता जगत भर को क्रिस्तान कर डालने में है-सच्चे देशहितैषियों को देश की भलाई में सुख है-महाराणी भारतेश्वरी का सुख काली गोरी अपनी प्रजा पर समदृष्टि रखने में है-इत्यादि

सुख को सब लोग कोनेअँतरे सब ठौर ढूंढते फिरते हैं किन्तु उस्के पाने में कृत कार्य्य हज़ार में लाख में कहीं एकही दो होते हैं ॥

मानना और मनाना ।

सुख दुख का हम अभी बर्णन कर चुके हैं कि सुख क्या है और क्यों होता है ऐसाही उस्के जो विरुद्ध वह दुःख है—किन्तु इन दोनों सुख और दुःख का अंकुर बीजरूप हो मनुष्य मात्र के चित्त रूपी थावले में बोयाजाता है और यह बीज अँकुराने पर मानना और मनाना इस नाम से प्रचलित होता है—सुख दुख क्या बरन संसार के यावत् कारखाने सब इसी मानने मनाने पर हैं—प्रबल इन्द्रिय जन्यज्ञान से प्रेरित हो हम हर एक बातों को अपने अनुकूल या प्रतिकूल वैसा मान लेते हैं वास्तव में वे सब मान लेने की बात हैं असलीयत उनकी कुछ नहीं है—मानने में भी कितनी बातों को हम मनाये जाते हैं लाचार हो उन्हे उस तरह पर मानना पड़ता है—जैसा अपने स्वामी की आज्ञा हाकिम का हुक्म जीविका पाने की इच्छा से या सज़ा पाने की डर से मानना पड़ता है—कितनी बातों को कर्तव्य कर्म फर्ज़ Duty Baund या धर्म समझ हमे मानना पड़ता है—जैसा स्त्री को अपने पति की, शिष्य को गुरू की, पुत्र को माता पिता की आज्ञा मानना कर्तव्य कर्म मे दाखिल है इसलिये माननाही पड़ता है—कभी२ हमारे मानने में भूल रहती है उसे भ्रम या भ्रान्ति कहते हैं जैसा रसरी में सर्प की भ्रान्ति शुक्ति में रजत की मृगतृष्णा में जल की इत्यादि—बिश्वास भी इसी मानने का दूसरा नाम है कितने ऐसे सरल और सीधे जी के होते हैं कि उन के मन में दूसरे का कहना जल्द आजाता है और उस्पर बिश्वास जम जाता है हमारे देश में ब्राह्मण इस बिस्वास ही का बड़ा फाइदा उठा रहे हैं—यहां की प्रजा को सीधी और अकुटिल समझ नरक और

परलोक की अनेक भय दिखाय जैसा चाहा वैसा उन से मनवाया-विश्वास बहुत कुछ अज्ञता और मूर्खता पर निर्भर रहता है इसलिये हाल के ज़माने के चलांक ब्राह्मणों ने पहले प्रजा को पढ़ने से रोका वेद उन से छिपाया और देश भर को मूर्ख कर डाला तब जैसा चाहा वैसा उन के मन में बिस्वास जमां दिया--ईश्वरीय नियम है जो दूसरे की बुराई चाहेगा उस्की पहले बुराई होगी प्रजा को मूर्ख और अज्ञ कर देने की चेष्टा करते२ आप स्वयं मूर्ख हो गये-अब इस समय जब कि अंगरेज़ी तालीम ने बिस्वास की जड़ को हिला डाला है लोग पढ़२ कर सचेत होते जाते हैं और इन के चंगुल से निकलते जाते हैं पर ये वही मोची के मोची रहा चाहते हैं—कितनाही कहो हज़ार२ फिक्रि करो ये उस अज्ञता के कीचड़ के बाहर न होंगे दक्षिणा के लोभ से उसी में लौंदे पड़े रहेंगे-

मनवाना केवल अज्ञही के लिये सहज नहीं है किंच बहुज्ञ को भी मनवाय देना सहज है किन्तु ये जो अधकचड़े हैं जिन्हे ज्ञानलव दुर्विदग्ध की पदवी दी गई है उन के जी में विश्वास दिलवाना महा दुष्कर है इसी मूल पर भर्तृहर के ये कई एक श्लोक हैं-

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते बिशेषज्ञः।
ज्ञानलव दुर्विदग्धं ब्रह्मापि तंनरं न रंजयाति ॥
लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
पिवेचमृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः ॥
कादचिदीपपर्यटन् शशबिषाणमासादयेन्नतु
प्रतिनिविष्ठ मूर्खजन चित्तमाराधयेत् ॥ इत्यादि

इसी से यह भी कहा गया है कि या तो वे सुखी हैं जो सर्वथा

अज्ञ हैं या वे जो सब भांत पारंगत हैं पर वे जो न तो मूर्ख हैं न सर्वज्ञ हैं अधकचड़े हैं क्लेश उठाते हैं—

यश्चमूढतमो लोके यश्चबुद्धेः परंगतः।
द्वाविमौ सुखमेधेते क्लिश्यत्यन्तरितो जनः॥

पाठक अब आप अपनी कहिये आप किस श्रेणी में नाम लिखाया चाहते हैं—अज्ञ तो आप हैं नहीं ईश्वर करे अज्ञता आप के विरोधियों के हिस्से मे जा पड़े—मै तो यही समझता हूं कि आप बहुज्ञ दूर दर्शी चतुर सयाने हो तो निश्चय मेरी बात का बिस्वास आप को होगा मेरे इस निवेदन को सर्वथा न झूठ मानोगे—मेरा पत्र इस समय बड़ी संकीर्ण दशा में आगया है बर्ष भी पूरा हो गया विशेष सहायता इस इस दुर्भिक्ष के समय नहीं देसक्ते तो अपना२ मूल्य तो कृपा कर भेज मुझे उपकृत और बाधित कीजिये—निश्चय मानिये केवल संकीर्णता है जिस्से मैं प्रति मास ठीक समय पर आप से नहीं मिल सक्ता—आप बुद्धिमानों की कोटि के हैं या उस्से इतर वाली कोटि के इस्मे आप की परख भी भरपूर है॥

यह मानना ही है जिस्से ईश्वर की ईश्वरता कायम है नहीं तो ईश्वरता के अनेक अनर्गल गड़बड़ काम देख जिस्से पग २ में विषम भाव और निर्घृणता प्रगट हो रही है कौन ईस्वर के अस्तित्व में बिस्वास करता—कहां तक कहैं मानलेने पर संसार के यावत् काम आलगे हैं "मानों तो देव नहीं पत्थर" मानना यह अद्भुत ईश्वरीय शक्ति न होती और किसी का कोई बिस्वास न करता तो यह [नानाकीर्ण जगत् जीर्ण अरण्यसा हो जाता—यदि मानना और मनाना यह दोनो बातें संसार से निकाल ली जांय तो इस नस्वर जगत् में कौनसा आनन्द बच रहा जिस्की लालच से सब तरह की झौंझट और अनेक प्र-

कार को ऊंची नीची दशा भोग भाग भी जीने से लोग नहीं ऊबते—सच तो यों है कि मानने का भाव उठा दिया जाय तो यह दुनिया रहने लायक न रह जाय—हमे लोग प्रमाणिक महात्मा बुजुर्ग मानै और उदाहरण में रक्खैं इसी लिये चरित्र संशोधन किया जाता है बुद्धिमान मनुष्य सब तरह का क्लेश सहकर भी चरित्र में दाग नहीं लगने देते—हम नेक नाम रहैं और सब कोई हमे मानै इसी लिये राजा प्रजा पर अन्याय करने से अपने को बचता है, धनवान गरीबों को सहारा देते हैं, सबल निर्बल को बचाता है, गुरू शिष्य को पढ़ाता है ऊंच नीच का मान रखता है इत्यादि—स्वार्थ बश प्रेम तथा द्रोह सभी करते हैं पर निस्स्वार्थ प्रेम का भाव केवल मानने ही के कारण से है—इस तरह पर इस मानने मानाने के भाव को जितना चाहिये पल्लवित कर सक्ते हो हमने केवल दिक् प्रदर्शन मात्र किया है॥

तिलक महोत्सव।

जिस्मे श्रीमान् राजा जय प्रकाश लाल महोदय दीवान राज डुमरांव के ज्येष्ठ पुत्र के तिलक महोत्सव का वर्णन है—उक्त बिद्यानुरागी को धन्यबाद है कि इस तरह की पुस्तकें बहुधा छपाय हिन्दी की तरक्की में दत्त चित्त रहते हैं ॥

हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि० २० सं० १-२-३-४ } प्रयाग { सितम्बर-अक्तूबर-नवंबर दिसम्बर १८९६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १=)
नमूने की कापी का =)॥

१-३-९७

हिन्दीप्रदीप

जिल्द २० संख्या १।२।३।४ } प्रयाग { सितम्बर। अक्तूबर। नवम्बर दिसम्बर सन् १८९९ ई०

हमारा बीसवां वर्ष ॥

ओ हो ! हम क्या बीस वर्ष के होगये, जिस वर्ष हमारा मनहूस क़द्म दुनियां में आया उस साल भी ऐसाही भयंकर अकाल ज़ोर पकड़े था–आज २० वर्ष के उपरान्त फिर उसकी पारी आई है—उस वर्ष की क़हदसाली से इस वर्ष के अकाल में अन्तर केवल इतना है कि उस समय ब्रिटिश सभ्यता का पूर्ण उदय नहीं हुआ था इस लिये वह साल इतना कड़ा नहीं बीता जैसा अब बीत रहा है–सच तो यों है कि उस समय तक उन्नीसवीं शताब्दी की नई २ तरक्कियां नई २ ईजादें अपनी प्राथमिक दशा में थीं जैसा इस समय कुल हिंदुस्तान को आक्रमण कर नस २ का रस खींच रही हैं वैसा उस समय तक इस पूर्णता को नहीं पहुंची थीं–इसी लिये उस समय की अकालजनित भयंकर पीड़ा इतना असह्य नहीं हुई जितना अब होरही है–तम्बूर्चियों का सा भेष धरे बिलायत के लौटेहुओं का तब कहीं ज़िक्र भी न था जैसा अब इस्तिंजे के ढेलों की भांति बेक़दर होरहे हैं—"बाप न मारा पिदड़ी बेटा तीरन्दाज़" बाप को जौ की रोटी खाते २ जन्म बीता बेटा नाक कटाय श-

हीदों में दाख़िल हो साहब बने—छोटी हाज़िरी बड़ी हाज़िरी में पाव रोटी बिस्कुट उबाले अंडे न हों तो साहबाना तर्ज़ न बाक़ी रहे—बाप का जन्म टूटी खड़खड़िये की सवारी में खिराना, बेटा का बिना बग्घी और फिटिन की सवारी के भूमि में पांव नहीं पड़ता—बाप शायद् प्यून थे, बेटा साहब होगये—दोस्त लोग पुरानी आदत के मुताबिक़ मिस्टरके एवज़ बाबू या लाला उन्हें लिखैं या कह डालैं तो तअज्जुब नहीं साहब उनपर हतक़ इज्ज़ती वाला दफ़ा क़ायम करने को मुस्तैद हों—बापका मैली गन्दी झोपड़ियों में दिन कटा, बेटे को नफ़ीस सुथरा बंगला रहने को चाहिये। खुलासा यह कि कहीं पर किसी बात में हिंदुस्तानी बने रहने की झलक भी बाक़ी न रहै क्या करैं क़ुदरती काले रंग से लाचार हैं इस फ़िक्र में अलबत्ता लगेहुये हैं कि कहीं से कोई नई ईजाद का साबुन निकलता तो अच्छा होता कि एक बार बदन में पोत लेनेसे जन्म जन्मान्तर का कोढ़ साफ़ होजाता और देह भरमें श्वित्र की सुफैदी छा जाती—सच कहते हैं भारत के इन्हीं कुपुत्रों की करतूत से देश अकाल दरिद्रता मरी इत्यादि अनेक आधि व्याध पीड़ित होरहा है॥

इस २० वर्ष के समय ने न जानिये क्या २ तमाशे दिखलाये। ख़याल करने की बातहै कि एक ओर नई तालीम, नई सभ्यता, नई रोशनी टीड़ीदल सी देश में टूट पड़ी और इस क़दर ज़ोर पकड़ लिया कि पुराने ख़याल, पुरानी समझ, पुराने ढंग, पुराने तर्ज़ नये लोगोंको घिनका बाइस होगये जो नई सभ्यताकी बीमारीमें मुबतिला हो यही चाहतेहैं कि कैसे एकबारगी उछल कर सभ्यता के शिखर पर चढ़जांय और यूरोप में जो कुछ तरक्क़ी कई शताब्दियोंमें हुई उसे हम अपनी मूठीमें करलें पर तितिक्षा यूरोपके लोगों का सा आत्मदमन, आत्मत्याग न आया—स्वार्थकी दुर्गन्धि उनके देह से दूर न हुई जो मानो इस बात की गवाही है कि देश के

दुर्दशा की चोट इनमें नहींहै–नहीं तो ये इतना आलसुखरत न होते विलायत से लौटकर भी हिंदुस्तानी बनते न शरमाते बरन हमारे पुराने तरीक़ों को अपने फ़ख्र का बाइस मानते और देश के सच्चे उपकार और सच्चे अनुराग में पड़ रुपया खीचनेवाले विलायत के नये २ फेशन को लात मारते और हिंदू-समाज के अगुआ बनते—अब दूसरी छोर को लीजिये। इतना २ धींसा पिट गया देश के कोने अंतरे में इतनी अदल बदल हुई कि इसे अब वही इंडिया कहना जो पृथ्वीराज के समय या अंगरेज़ों के आने के पहिले थी नामुमकिन है—पर हमारे गंदे दिमाग़वालों में ज़रा असर न पहुंचा और इस २० वर्ष के पहिले हमारी समाज जैसी हीन दीन और बिगड़ी हुई थी अब भी यथास्थित वैसीही है–इन पुराने पिशाचों में विलायत के लौटेहुओं के जोड़ के हमारे पंडित लोग हैं जो किसी नई अदल बदल या तरक़्क़ी के दिली दुश्मन हैं—जो इन पण्डितों के चंगुल में फंसेहुए हैं उनको आगे बढ़ना कैसा बरन नई अदलबदल को महा पापकर्म समझ और अधिक संकुचित होजांयगे पर कभी सचेत न होंगे–अपने निकृष्ट आचरणों के कारण अभी न जानिये कितने ऐसे अकाल झेल डालेंगे पर सुधारैंगे नहीं–सर्वनियन्ता जब इनके कुत्सित आचरणों को परम वृद्धिंगत देख नहीं सहसक्ता तब अकाल तथा मरी इत्यादि के द्वारा थोड़ा संक्षेप कर फिर छोड़ देता है और इस प्रतीक्षा में रहता है कि कदाचित् अब भी इन्हें कुछ सूझ पड़ा हो पर इन्हें इसका ज्ञान कहां–हमारी समझ में तो इन पण्डितों को पकड़ २ ज़बरदस्ती तालीम की घूंटी पिलाई जाय और मुफ़्तखोरी की आदत इन से छीनलीजाय तो शायद कुछ उपकार हो–साथ ही विलायत के लौटे हुये भी जलावतन कर दिये जांय और मुल्क में धसने की इनके लिये सख़्त मनाही रहे–दुनियां के परदे में कोई ऐसी क़ौम नहीं है जिसमें

पहिले से अब कुछ न कुछ अदल बदल न हुआ हो परिवर्त्तनविमुखता की बड़ी नियामत केवल हिंदुस्तान ही के लोग मान बैठे हैं—तालीम और नई सभ्यता का इस क़द्र सब ओर मुल्क में प्रवाह देख कर भी इनके चित्त में ज़रा भी असर न हुआ, समाज और धर्मसम्बन्धी बहुत सी व्यर्थ की क़ैद जिससे साफ़ २ हमारा बड़ा भारी नुक्सान है उसे ज़रा भी ढीला नहीं किया चाहते—सभ्य समाज वाले इन्हें हंसते हैं, बात २ में बेवकूफ़ बनाते हैं—बाल्यविवाह इत्यादि जिसे ये मुख्य धर्म मान जारी किये हैं साफ़ २ महा अधर्म और अन्याय है पर ऊंट की पकड़ तो है जिसे पकड़ लिया उसे चाहो जो हो नहीं छोड़ेंगे—परिवर्त्तन के लिये इन्हें ज़रा भी हिलते देखते तो हमें बहुत कुछ आशा होती—प्रत्येक समाज में जो कुछ परिवर्त्तन हुआ भी है तो इनको और अधिक नीचे को गिरने को नकि ऊपर को चढ़ाने के लिये सुधार और संशोधन के ढंग पर—इसमें सबसे अधिक दोष इन्हीं पण्डित और ब्राह्मणों का है जो किसी तरह के परिवर्तन में अपनी सर्वथा हानि देख कभी अपने आश्रित यजमानों को उधर नहीं झुकने देते इसीसे ये स्वार्थपरायण लालची ब्राह्मण हिन्दू समाज के लिये कोढ़रूप होरहे हैं यह हमारा ख़याल किसी तरह ग़लत नहीं है—तीसरी बात हमारी स्त्रियों की हीन दशा है जिन्हें ये ब्राह्मण ऐसा बहकाये हुये हैं कि इनकी मूर्खता का पूरा फ़ायदा उठा रहे हैं—सच कहो तो भारत की जो कभी कुछ भलाई घुणाक्षर न्यायसे होजाती है सो इन्हीं सर्वथा सच्चरित्र भारत महिलाओं के पुण्य से—सभ्यता की सीमा तक पहुंचे हुये देशों के मुक़ाबिले भी भारत को अपनी पवित्र चरित्र ललनाओं का अभिमान करना सर्वथा उचित है—भारत जब अपने पुत्रों का ख़याल करता है तब लज्जा से इसकी गर्दन नीची होती है पर अपनी सुलक्षणा दुहिताओं की ओर जब उसका ध्यान जाता है

तब अभिमान से इसकी गर्दन ऊंची होतीहै किन्तु अफ़सोस ये स्त्रियां धूर्त लालची ब्राह्मणों के चंगुल में हैं—समाज में किसी तरह की अदल बदल अधिकतर स्त्रियोंही की मूर्खता से नहीं होने पाती और जब तक इनकी दशा में परिवर्तन न होगा तब तक समाज में किसी तरह का परिवर्तन असम्भव है—हम देखते हैं तो २० वर्ष पहिले जो कुछ दशा हमारी ललनाओं की रही अबभी यथावस्थित वैसीही है—"क्वचित्दोषो गुणायते" इस न्याय के अनुसार इतनी भलाई अलबत्ता देखते हैं जैसा पुरुषों में नई सभ्यता का ज़हर असर कर गयाहै वैसा हमारी सीधी सादी भोली स्त्रियों में नहीं व्यापा—इन सब बातों से निश्चय होता है कि हमारी हिन्दू समाज दिन २ हर एक बातोंमें हर तरह पर घटती ही जायगी बीच २ ऐसे २ दुर्भिक्ष का दौरा पारी बांध कर होना हमें और भी छिन्नभिन्न दुर्बल और भीतरही भीतर पोला किये डालता है दैव की कुछ ऐसी ही कर्तव्यता है तो लाचारी है "हरेरिच्छाबलीयसी"

नई बात की चाह लोगों में क्यों होतीहै॥

पुराना जाताहै नया उसकी जगह क्यों आताहै इसका ठीक उत्तर चाहो जो हो पर यह कह सक्तेहैं जैसा पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के आगे कोई ऊपर को फेंकीहुई वस्तु ऊपर को निरावलम्ब न ठहर के नीचे गिर पड़ती है वैसा ही प्राचीन का जाना और नवीनका आना भी एक नियम होगया है—प्राचीन के जाने का शोक तो अवश्य होताहै पर साथही उसके स्थान में नवीन के आने का जो हर्ष होताहै वह उस प्राचीन के मिट जाने के विषाद को हटा देता है—इसी सिद्धान्त के अनुकूल मनु महाराज का यह वाक्य है—"सर्वतोजयमन्विच्छेत्पुत्रादिच्छेत्पराभवम्"

मनुष्य सब ठौर से अपनी जीत की चाहना रक्खै किन्तु पुत्र से अपनी हारही चाहे इसीलिये कि पुत्र में नई विच्छित्ति विशेषके आगे हमें कौन पूछेगा--भगवान् विष्णु के छठवें अवतार परशुराम का तेज उनके सातवें अवतार श्रीरामचन्द्रके आगे न ठहर सका इसी कारण कि पुराने से नये का गौरव अधिक होताहै-रामचन्द्र और अर्जुन प्रभृति वीर योद्धाओं ने बड़े २ युद्धों में जयलाभ किया सही पर ये दोनों भी अन्त में अपने पुत्र लव और बभ्रुबाहन से युद्ध में हार गये-इसीके अनुसार अंगरेज़ी के महा कवि पोप की ये दो लाइन हैं ॥

We call our fathers fools, so wise we grow,
Our wiser sons will doubtless think us so.

हम ऐसे अक़लमन्द हुये कि अपने बाप दादा आदि पुरुषों को बेवकूफ़ कहते हैं निस्सन्देह हमारे लड़के जो हमसे विशेष बुद्धिमान होंगे निश्चय हमें भी ऐसाही बेवकूफ़ ख्याल करेंगे—एशिया की सभ्यता और शक्ति घटी । फ़ारस, मिश्रकैलड़िया आदि पुराने देश किसी गिन्ती में न रहे । यूरोप का प्रादुर्भाव हुआ, ग्रीस और रोम ने पुराने इतिहासों में स्थान पाया । बाबिलन, नैनवे आदि पुराने नगर ढै गये एथेन्स स्पार्टा और रूम रौनक़ में बढ़े—कालक्रम अनुसार फ्रांस, जर्मनी और वृटेन इस समय अपने पूर्ण अभ्युदय को पहुंचे हुए हैं—हाले २ कुछ दिनों में इनको भी काल अपना कलेवा बनाय निगल बैठेगा । यूरोप नेस्तनाबूद होगा, आमेरिका उठेगी-समस्त ब्रह्माण्ड का यही नियम है । एकओर सूर्य्यदेव का उदय होता है दूसेरे ओर अस्त होते हैं एक ग्रह डूबता है दूसरे का उदय होता है-भारतवर्ष में भी ठीक इसी तरह काल बीत रहाहै—वैदिक युग गया पौराणिक युग आया, पौराणिक युग गया तंत्रों का प्रचार हुआ । तन्त्रों को भी मिटाय बौद्ध और जैनियों ने ज़ोर पकड़ा-यहांके पुराने रहनेवालों को निकाल आर्य्यों ने अपना राज्य स्थापन

किया, आर्य्यौंका पराजय कर मुग़ल और पठानों ने अपना प्रभुत्व स्थापन किया । फिरंगियों ने मुग़ल और पठानों को भी उन्हीं आर्यों के समकक्ष कर दिया, जिन्हें जीत मुसल्मान मुसल्लमईमान बने थे और आर्यों को गुलाम और काफ़िर कहा—वेद की भाषा को हटाय संस्कृत प्रचलित हुई, लोक और वेद के नाम से जिसके दो भेद हुये जिसकी निर्ख पाणिनि को अपने सूत्रों में "लोकेवेदेच" कह कर अलग २ करना पड़ा—संस्कृत मुर्दा भाषा मान ली गई प्राकृत चली जिसके मागधी अर्द्धमागधी शौरसेनी महाराष्ट्री आदि के नाम से १८ भेद हुये वह भी अठारहों प्रकार की प्राकृती किताबी भाषामात्र रही उसके स्थानमें उर्दू हिन्दी, बंगला, गुजराती, पंजाबी आदिके अनेक भेद अब बोले और लिखे जाते हैं और अब तो इन सबों को हटाय अंगरेज़ी क्रम २ सभ्यता की नाक होरही है ।

न सिर्फ हिन्दुस्तान ही में इस तरह का अदल बदल हुआ वरन समस्त सृष्टिकी यही दशा है । एक प्रकार की शिल्पविद्या अनादृत होतीहै दूसरी उसकी जगह आदर पातीहै—हमारे यहां की पुरानी ६४ कला कहीं नाम को भी न रहीं । यूरोप के नये २ शिल्प चटकीलेपन और नफासत से समाज के मनको आकर्षित कर रहे हैं—पहिले का अग्नि बाण जृम्भकास्त्र, मोहनास्त्र नाममात्र को पोथियों में लिखे पाये जातेहैं अब इस समय गिफर्डगन के सामने सब मात हैं—इसी तरह एक धर्म गया दूसरा आया, एक जाति अस्त हुई दूसरे के नवाभ्युत्थान की पारी आई—सारांश यह कि प्राचीन को मिटाय नवीन का प्रचार सृष्टि का यह एक अखण्ड नियम होगया है—जिस नियम का मूल कारण यहीहै कि लोगों में नई बातकी चाह विशेष रहतीहै और इसी चाहके बढ़ने का नाम तरक्की और उन्नति है—यूरोप इन दिनों नई ईजादों के ज़ोरको

पहुंच रहा है जिसका फल प्रत्यक्ष है कि यूरोप इस समय सभ्यता का शिरोमणि और जगतीतल में सबों का अग्रगण्य है—हमारे हिन्दुस्तानी बाप दादों के नाम सती होरहे हैं, परिवर्त्तन के नाम से चिढ़ते हैं पाप समझते हैं तब कौन आशा है कि ये भी कभी को उभड़ैंगे—बुद्धिमान राजनीतिज्ञों का सिद्धान्त है कि दुनियां दिन २ तरक्की कर रही है—समुद्र की लहर के समान तरक्की की भी तरल तरंग जुदे २ समय जुदे २ मुल्कों में आती जाती रहती हैं—इसमें संदेह नहीं बूढ़े भारत में सबके पहिले तरक्की हुई इसलिये कि देशों के समूह में हिंदुस्तान सबसे पुराना है उन्नति सभ्यता समाज ग्रंथन का बीज सबके पहिले यहीं बोया गया। मिश्र, यूनान, रोम आदि देश जो प्राचीनता में भारतके समकक्ष हैं सबों ने सभ्यता और उन्नति का अंकुर यहींसे ले ले अपनी २ भूमिमें लगाया उस पौधे को सींच २ अति बिशाल वृक्ष किया और यह वृक्ष यहां तक बढ़ा कि पृथ्वी के आधे गोलार्द्ध तक इसकी डालियां फैलीं। रोम का राज्य किसी समय क़रीब २ समग्र यूरोप अर्द्धभाग के लगभग आफ्रिका और एशिया का आक्रमण किये था—ग्रीस और रोम की उस पुरानी उन्नति का कहीं अब लेशमात्र भी उन मुल्कों में बाक़ी नहीं है किन्तु विद्या, कला, सभ्यता विविध विज्ञान और भिन्न प्रकारके दर्शन शास्त्रों में जो २ तरक्कियां भारत, यूनान तथा रोम ने किया था वह भाषान्तर हो अब तक क़ायम हैं—जो बात एक बार ईजाद एक मुल्क में होती है उसका वसूल कहीं नहीं जाता। वृक्षके समान एक भूमिसे उठाय दूसरी में अलबत्ता लगाया जाता है और उस पृथ्वी में नया मालूम होने के वहां बड़ी चाहसे ग्रहण किया जाता है—जैसा वृक्ष के सम्बन्ध में है कि कोई २ वृक्ष किसी २ पृथ्वी में वहां का जल वायु अपने अनुकूल पाय वहां खूबही चमकता है वैसाही विद्या, कला, दर्शन आदि भी देश की

स्थिति और जल बायु की अनुकूलता के अनुसार वहां विस्तार को पाते हैं—अभाग से भारत की स्थिति और यहाँ का जल वायु दर्शन और कविता के अनुकूल हुये यहां दर्शन और कविता की जो कुछ उन्नति हुई वह किसी देश में न की गई—यूरोप की पृथ्वी शिल्प और विज्ञान के अनुकूल हुई वहां के साहसी और उद्यमी लोगों ने इन दोनों में जो कुछ तरक्की किया उसे देख हम सब लोग दंग होते हैं और यूरोप निवासियों को दैवी शक्ति संपन्न मान रहे हैं—पर यह स्मरण रहे कि जो कुछ उन्नति शिल्प विज्ञान में भारत तथा यूनान और रोम ने किया था वह इतनी अल्प थी कि केवल अंकुर या बीज रूप उसे कह सक्ते हैं—अब इस समय शतगुण अधिक पहिले से वहां देखी जाती है तो यह सिद्ध हुआ कि दुनिया दिन२ तरक्की कर रही है और इस तरक्की की बुनियाद सदा नई बात की चाह है—हिन्दू धर्म और रीति नीति अब इस समय घिन के लायक हो रही है सो इसी लिये कि इस्का नयापन बिलकुल खो गया—पुराने समय के ब्राह्मण जिन्हो ने यहां की रीति नीति प्रचलित किया यद्यपि स्वार्थी और लालची थे पर इतनी अक़िल उन्मे थी कि जब कोई रीति नीति या मज़हब के उसूल बिल्कुल पुराने पड़ जाते थे और यह समझते थे कि प्रजा की रुचि इस्पर से हटने लगी जल्द उसे अदल बदल कर नई शकल में प्रचलित कर देते थे—मुहूर्त के बहुत से ग्रन्थ मुहूर्त चिन्तामणि प्रभृति धर्मशास्त्र के अनेक ग्रन्थ निर्णयसिन्धु आदि और बहुत से आधुनिक पुराण इसी बुनियाद पर बने और प्रचलित किये गये—निपट लंठ अब के ब्राह्मणों में इतना शऊर और अक़िल कहां कि इतना सोचैं कि हमारे धर्म के सिद्धान्त और रीति नीति पुरानी पड़ते२ घिनौनी हो गई हैं सभ्य समाज के लोगों को सर्वथा अरोचक हो गई हैं—अब इस में कुछ संशोधन और अदल बदल करैं जिस्से इस्से नयापन आजाय और लोगों को पसन्दीदा हो पर एक

तों उनको अक़िल नहीं है बल्कि मूर्ख होते जाते हैं दूसरे स्वार्थ उनका इस्से बिगड़ता है अपनी थोड़ी सी हानि के पीछे पुराने हिन्दू धर्म को बात२ में दक्षिणा पुजाने के कारण अत्यन्त अश्रद्धेय और हसने के लायक किये देते हैं–कोई२ जो अक़िल भी रखते हैं और समझते हैं कि ऐसे२ बेहूदे मज़हबी वसूल अब इस रोशनी के ज़माने में देर तक चलने वाले नहीं है वे कुछ तो शरारत और कुछ अपनी सामयिक थोड़ी सी हानि देख उस्मे अदल बदल नहीं किया चाहते–स्वामी दयानन्द के देश हितैषिता के सच्चे वसूलों को इसी कारण से न चलने दिया बरन दयानन्द का नाम लेते चिढ़ते हैं–दूसरे यह कि धर्म के चोखे सिद्धान्त तो तलवार की धार हैं न उस्के पात्र सब लोग हो सकते हैं न इस समय की विषय लंपट हमारी वर्तमान बिगड़ी समाज को उस्मे कोई सुख है–आधुनिक ब्राम्हणों की यह भी एक चालाकी है कि जैसी रुचिप्रजा की देखा वैसाही गढंत करडाला और सनातन धर्म की आड़ से उसे चला दिया–हमे इस सनातन धर्म पर भी बड़ी हंसी आती है और कुढ़न होती है कि इस सनातन का कुछ ओर छोर भी है दुनिया की जितनी बुराई और बेहूदगी है सब इस सनातन धर्म से भरी हुई है–हमे तो कुछ ऐसा मालूम होता है कि दंभ और मक्कारी की बुनियाद जब तक सनातन धर्म कायम रहेगा और एक भी इस्के मानने वाले बचे रहेंगे तब तक हिन्दुस्तान की तरक्की न होगी–क्योंकि जिस बात से हम आगे बढ़ सकते हैं और जिस्के प्रचलित होने से हमारी कुछ बेहतरी है वह सब इस सनातन के विरुद्ध है आपस का सह भोजन, पन्द्रह या सोलह वर्ष के उमर की कन्याका बिवाह, एक वरण का दूसरे वरण के साथ यौनिक सम्बन्धविवाह इत्यादि दूसरे देशों मे आना जाना इत्यादि जितनी हमारी भलाई की बातें हैं सबों को सनातन धर्म मना करता है और हमे इस क़दर जकड़े हुये है कि ज़रा भी हिल डोल नहीं सकते तब क्या समझ हम सनातन की खैर मनावें–अस्तु

इस नये और पुराने के विवरण में अप्रासंगिक भी बहुत सा गाय गये सारांश सब का यही है कि हमारी तरक़्क़ी की आशा हमें तभी होगी जब पुरातन और सनातन की ओर से तबियत हट नूतन की क़दर हमारे चित्त में स्थान पावेगी और अपनी हर एक बातों मे नये२ परिवर्तन का प्रचार कर सभ्य देश और सुसभ्य जाति के समूह में गिनती के लायक हम अपने को बनावेंगे और अपने नवाभ्युत्थान से चिरकाल से जो सभ्यता और उन्नति के शिखर पर चढ़े हुये हैं उन्हें शरमावेंगे—जो एक दिन अवश्य होगा इसमें सन्देह नहीं उसके होने मे जितनी देर होरही है उतना ही उमदा मौका हाथ से निकला जाता है—

नई २ लोकोक्ति।

विद्यानुरागी राज कुमार बाबू राम दीन सिंह ने अपने निज व्यय से रावणार्जुनीय नाम एक काव्य काशमीर से मंगाया है इस अद्भुत महा काव्य के कर्ता भौम या भीम कवि हैं व्याकरण का प्रसिद्ध ग्रन्थ काशिका के कर्ता जयादित्य ने काशिका मे रावणार्जुनीय के श्लोक को उदाहरण मे दिया है इससे सिद्ध होता है कि भीम कवि जयादित्य के पहिले हुये हैं और जयादित्य शाकाब्द १५ सौ के अन्त मे और १६ सौ के प्रारंभ मे हुये हैं इस हिसाब से भीम कवि को कम से कम ४०० वर्ष हुये— रावणार्जुनीय भट्टि काव्य के ढंग का काव्य है पाणिनि के सूत्रों के उदाहरण भट्टी की तरह इसमे भी क्रम से दिये गये हैं—रावणार्जुनीय २८ सर्ग मे बहुत ही अद्भुत काव्य है यमक अनुप्रास आदि शब्दालंकार उपमा उत्प्रेक्षा अर्थान्तर न्यास आदि अर्थालंकार इसमे बहुतात से रक्खे गये हैं इससे मालूम होता है यह कवि केवल वैयाकरण न थे किन्तु प्राचीन श्रेणी के कवियों के ढंग के थे—भट्टी की अपेक्षा रावण-

नीय अधिक सरस और प्रसाद गुण विशिष्ट है जो लोकोक्ति नीचे दीजाती हैं उससे पढ़ने वालों को कवि के कवित्व शक्ति की टटोल भरपूर हो जायगी ॥

संपर्कः सहगुणिना महत्व हेतुः ।

गुणवान् के साथ लगाव अपने में बड़प्पन के आने का हेतु है—

क्रोधः सतां सन्नति मात्र हार्यः ।

अच्छे लोगों का क्रोध उनके आगे नम्रता प्रकाश करने से मिट सक्ता है ॥

महत्सु भक्ति र्महते फलाय ।

बड़े लोगों में भक्ति पूर्वक अनुराग का बड़ा फल है ॥

आकृष्यते साधु गुणै र्नकोवा ।

मनुष्य में उत्तम गुण किसके चित्त को नहीं आकर्षण करता ॥

अविचारित शत्रु मित्र भावा गुणवन्ताहि वशीकरोति लोकम् ।

सच्चा गुण शत्रुता या मित्रता के भाव को नहीं देखता—शत्रु हो या मित्र गुण पर सभी लुभाय जाते हैं ॥

भर्तुः प्रसादोहि मुदे ऽबलानाम् ।

पति की प्रसन्नता अबलाओं के हर्ष को अधिक करती है ॥

गुणार्थिनो गुणयतमान् भजन्ते ।

गुण के लोभी गुणवान् को सेवते हैं ॥

सुखं जनस्य प्रिय लाभ मात्रम् ।

प्रिय वस्तु का लाभही मनुष्य को सुख है ॥

अन्धकारं करव्रातः किं रवेर्न निरस्यति ।

सूर्य का प्रकाश क्या अन्धकार के ढेर को नहीं दूर हटा देता ॥

कियन्तं यत्नमाधत्ते जिघांसुः शशकं हरिः।
सिंह खरहे के शिकार के लिये कहां बड़ा यत्न करता है।

न शत्रुरव मन्तव्यो दुर्बलोपि बलीयसा।
बलवान् को दुर्बल शत्रु की भी उपेक्षा करना उचित नहीं है।

प्रियतामेति हि चित्त विन्नकस्य।
मन की बात जानने वाला किसे प्यारा नहीं होता।

क्रियते को नहि दुर्लभेभिलाषः।
दुर्लभ वस्तु के लिये कौन अभिलाषा नहीं करता।

बलवान् बलवत्तरस्य गम्यः।
बलवान् के बल को वही जानता है जो बल में उससे अधिक है।

विज्ञातचेष्टः सुखवंचनीयः।
आदमी के काम का पता लग जाने से कि वह किस इरादे में है तब उसे धोखा देना सहज है।

मोहं विधत्ते विषयप्रसंगः।
विषय वासना के परबस होजाना मनुष्य को गुमराह कर देता है।

नद्वैधचित्ता सुधियो भवन्ति।
बुद्धिमान् द्विविधे में नहीं पड़े रहते।

अन्योन्य विश्वास सुखंहि सख्यम्।
परस्पर का विश्वास ही मैत्री का सुख है।

भंगो जयो वा सदृशेन धन्यः।
अपने बराबर वाले से हार या जीत दोनें प्रशंसनीय है।

प्रायेण लोकः स्वहितानुवर्ती।
बहुधा लोग अपने हितू का पक्ष करते हैं।

मदो विवेकस्य विनाशहेतुः ।

अभिमान विवेक के नाश का हेतु है

प्रियस्य दुःखेन तु कोन दुःखी ।

अपने प्यारे को दुखी देख कौन दुखी नहीं होता ।

विकारहेतावपि निर्विकारं महाकुलत्वं महनीयकीर्तेः ।

विकार का हेतु होते हुये भी मन में विकार का न होना उस प्रसिद्ध पुरुष की महा कुलीनता प्रगट करता है ।

महात्मनां को विपदा न दूयते ।

अच्छे लोगें को विपत्ति में पड़े देख किसे दुख नहीं होता ।

प्रमार्ष्टि वैरं हि महोत्सवागमः ।

किसी बड़े उत्सव के आने पर पहले का बैर भुला दिया जाता है ।

क्वनाम नारी जनता क्वधीरता ।

स्त्रियों में धीरज कहां ।

पतिरहिता परिभूयतेहि नारी ।

पति के न रहने पर बिधवा को सबी दबाते हैं ।

सुतरां रमणीयमेव दुःखं कुरुते चेतसि कामिनां वियोगे ।

कामियों को अपने प्यारे के बियोग में रमणीय पदार्थ भी अत्यन्त दुखदायी होते हैं ।

सहते परतेजांसि तेजस्तेजस्विनां कुतः ॥

तेजस्वियों का तेज दूसरों के तेज को नहीं सह सकता ।

सर्वः स्वार्थपरो जनः ।

अपना मतलब सब गांठते हैं । माघकाव्य में भी ऐसही है—"सर्वः स्वार्थं समीहते" ।

कोवन्धुर्गृहिणी समः ।

अपनी निज स्त्री के सदृश दूसरा बन्धु और कोई नहीं है ।

सपुमान् बलवान् नीत्या यः परान् विजिगीषते ।

जो नीति अर्थात् पालिसी से चलता हुआ शत्रु को जीतना चाहता है वह अवश्य बलवान् है ॥

कीर्तयन्ति गुणास्तेषां प्रपूर्तास्ते मनोरथैः ॥
तेभिगम्या मनुष्याणा मनिन्द्ये ये पथिस्थिताः ॥

जो अनिन्दित मार्ग में चल रहे हैं उनके गुणों को सब लोग जानते हैं । उनके मनोरथ सदा पूर्ण हुआ करते हैं और सब लोग उनसे प्रेम रखते हैं ।

यद्यप्यस्योशना मंत्री योद्धा यद्यपि शक्तिमान् ॥
तथाप्यनेन वोद्धव्यं देशकाल बलाबलम् ॥

दैत्यगुरु शुक्राचार्य जो मंत्री के काम में बड़े निपुण हैं सो उसके मंत्री हों और स्वामिकार्तिक जो देवताओं की सेना के अग्रणी थे सो योधा सिपाही उसकी सेना के हों तौभी शत्रु से युद्ध प्रारंभ करने के पहले देशकाल अपना तथा शत्रु का बल अबल समझ के तब युद्ध करे ।

उपाया राज्य शकटे चत्वारो विनियोजिताः ।
अनड्वाह इवैकेन नीयमानोतिखिद्यते ॥

राज्य रूपी छकड़े में साम दाम दाण्ड भेद चारों उपाय चार बैल के समान काम में लाना चाहिये केवल एक उपाय को काम में लाने वाला उस बैल के समान दुख उठाता है जो चार से ढोने वाले बोझ को अकेला ढोता है ।

सर्वस्यात्ममदोहि नाश हेतुः ।

अपने में अभिमान सब के नाश का कारण है ।

न श्रेयो गुरुभक्ति वर्जितानाम् ।

गुरु भक्ति से रहित का कल्याण नहीं होता ।

नहि कृष्णात्मनि संस्थितिः कृतस्य ।

जो स्याहदिल हैं उनमें किया उपकार स्थान नहीं पाता ।

सोऽयं दातार्थिनं प्राप्य न धनं यो धनायते ।

दानी वही है जो मंगता को आया देख अपने धन से धनवान् नहीं हुआ चाहता । नैषध में श्री हर्ष ने भी ऐसा ही कहा है—" तं धिगस्तु कलयन्नपिवांछामर्थिवागवसरं सहते यः "।

दृश्यतेहि महितं महात्मनां वैभवं परहिताय केवलम् ।

बड़े लोगों का वैभव दूसरों के हित के लिये होता है ।

भ्रात्रीयति नतं शत्रुं मात्रीयति परं स्त्रियम् ।
चीयमानो यशः पुंजैस्स शुक्ली क्रियते दिशः ॥

शत्रु जो हार कर नम्र होजाय उस्के साथ जो भाई का सा बर्त्ताव रखने वाला है और पराई स्त्री के साथ माता का सा भाव रखने वाला जो है उसने मानो अपने यश की चमक से चारों दिशाओं को उंजाली कर रक्खा है ।

कोमित्सति गुणांस्तस्य यो दित्सति सदार्थिने ।

जो सदा अर्थी को धन देने की इच्छा रखता है उस्के गुणों को कौन नाप सक्ता है ।

महर्षिणः सन्ति सुखैक निस्पृहाः ।

महर्षि लोग सुख की ओर से निस्पृह होते हैं ।

नहि शौर्यं गणयत्यरेर्महत्वम्।

वीरता शत्रु के बड़प्पन को कुछ माल नहीं गिनती।

शौर्यंहि नालोचयति स्वशक्तिम्।

वीर लोग अपनी वीरता के जोश में कुछ खयाल नहीं करते कि यह काम हमसे होसकेगा कि हमारी शक्ति के बाहर है।

किंवा प्रीत्यैस्याद्विप्रियेपि प्रियाणाम्।

अपने दिलदार के रूट जाने पर कोई चीज़ सुख नहीं देती।

को वन्धूनिव संप्राप्तान् नित्यमाद्रियतेर्थिनः।

ऐसा कौन होगा जो मंगता को वन्धु के समान आदर देगा जो नित्य मांगा करता है किसी ने कहा भी है "नित्यं प्रसारति करः करोति सूर्योपि सन्तापम्,,।

कृष्ण चैतन्य महाप्रभु।

भारत के एक २ प्रान्त में समय २ ऐसे महानुभाव सदा से होते आये हैं जिन्में सुधार और संशोधन का अंकुर अटल रूप से स्थिर रहा और नीचे को गिरते हुये भारत को बारम्बार करावलम्ब देते आये। उन्हीं महापुरुषों में बंगाल प्रान्त में कृष्ण चैतन्य महाप्रभु एक थे जिनके उपदेश का लाभ तीन चौथाई से अधिक बंगदेश के रहने वाले उठा रहे हैं और वैष्णव धर्म की श्रृंखला में बंग देश मात्र को जिन्हों ने एक कर खानपान की विभिन्नता को भर सक बहुत ही तोड़ा। पंजाब में जो कुछ उपकार नानिहक शाह के द्वारा हुआ वही बंगाल में कृष्ण चैतन्य के कारण हुआ। यह महात्मा विक्रमी संवत् १५४१ में नव द्वीप में जगन्नाथ मिश्र के घर प्रगट हुये इनकी माता का नाम शची देवी था। निम्ब वृक्ष के नीचे उत्पन्न हुये थे इससे इनका नाम पहले निमाई हुआ शरीर इनका उज्वल गौर बरण था इससे गौरांग भी कहलाये। अन्न-

प्रासन के समय विश्वम्भर नाम पड़ा । जिस समय संन्यास ग्रहण किया उस समय से चैतन्य के नाम से विख्यात हुये । बुद्धि के बड़े कुशाग्र थे असामान्य मेधावी होने से बहुत ही थोड़े समय में व्याकरण साहित्य अलंकार पुराण न्याय स्मृति वेदान्त आदि अनेक शास्त्रों में सर्वसाधारण व्युत्पत्ति इनको बहुत जल्द हो गई । शास्त्रों में व्युत्पत्ति लाभ कर निरन्तर पठन पाठन में तत्पर रहे। इस समय इनके जेठे भाई विश्वरूप ने घर गृहस्थी छोड़ अनित्य संसार से उदासीन हो संन्यास ग्रहण कर लिया इस कारण चैतन्य महाप्रभु अत्यन्त खिन्न और दुखी हुये कुछ दिन के उपरान्त तातचरण जगन्नाथ का परंधाम होजाने से अपनी माता शची देवी को केवल यही एक मात्र सहारा हुये। शचीदेवी के प्रयत्न से लक्ष्मी नाम की बल्लभाचार्य की कन्या से इनका विवाह हुआ । कुछ वर्ष के उपरान्त लक्ष्मी का परलोक हो जाने पर चैतन्य ने विष्णुप्रिया नामकी एक दूसरी कन्या से पाणिग्रहण किया । २१ वर्ष के थे जब इन्हों ने शास्त्राभ्यास समाप्त कर अनेक शास्त्र और कलाओं में पारङ्गत हो एक पाठशाला स्थापन किया और शिष्य गण को विद्या वितरण करने लगे। अद्भुत पाण्डित्य और प्रतिभा के कारण इनका नाम दूर २ तक अत्यन्त विख्यात हो गया । दूर २ के प्रसिद्ध पण्डित इनका नाम सुन इनसे शास्त्रार्थ करने को आते थे और बाद में हार लौट जाते थे किन्तु इनके सरल स्वभाव और सज्जनता के व्यौहार से हार कर भी कोई इनसे द्वेष बुद्धि नहीं रखता था क्रम २ ये देशविख्यात दूर तक महान् पण्डित प्रसिद्ध हुये । एक समय चांदनी रात को पतितपावनी श्री गङ्गा जी के तट पर शिष्य वृन्द को साथ लिये शास्त्र की चर्चा कर रहे थे उस समय एक दिग्विजयी पण्डित वहां आय अपने पाण्डित्य के अभिमान में भरा हुआ बोला "क्या हो निमाई तुम क्या बड़े पण्डित हो ?" इन्होंने अति विनीत भाव से उत्तर दिया मैं क्या जानता हूं, आपतो पण्डित

हैं और कवि भी हैं श्री मुख से सुरधुनी श्री गङ्गा का कुछ चरित्र वर्णन कीजिये। दिग्विजयी पण्डित ने तत्क्षण एक नया श्लोक रच इन्हें सुनाया चैतन्य गोस्वामी ने उसके श्लोक में अर्थ और अलंकार के कई एक दोष दिखलाये। वह पण्डित लज्जित हो सिर नीचा कर सरस्वती देवी के कृपा पात्र पुत्र इन्हें कहा और बहुत सी पूजा इनकी कर बिदा हुआ।

चैतन्य अत्यन्त उदार प्रकृति के मनुष्य थे एक दिन एक किसी दूसरे पण्डित के साथ नौका पर चढ़े किसी काम से गङ्गा के उस पार जारहे थे—पण्डित इनके हाथ में गौतम के न्याय सूत्र पर इनके निजका बनाया टीका देख अत्यन्त उदास हुआ—इन्हों ने उससे बात चीत करते और उसे उदास देख जान लिया कि उसने भी एक तिलक बनाया है किन्तु इनका बनाया हुआ तिलक बहुत उत्कृष्ट था और चैतन्य कृत तिलक के रहते कोई उसके तिलक को न पढ़ैगा यह समझ इन्होंने अपने बनाये तिलक को गङ्गा में डुबोय दिया और उस पण्डित की उदासी दूर कर दिया।

चैतन्य पितरों की मुक्ति के लिये गया करने गये थे तहां विष्णु पद पर पिंडदान कर विष्णु भगवान् की स्तुति और पूजा बन्दना से इनके हृदय में ऐसी अत्यन्त भक्ति का उद्रेक हुआ कि उसी समय से इनके हृदय में वैष्णवी दीक्षा प्राप्त करने का अनुराग बढ़ा और इसकी खोज में हुये कि कोई सज्जन महानुभाव मिलैं तो मैं उनसे वैष्णवी दीक्षा ग्रहण करूं—अकस्मात् वहीं ईश्वरीपुरी नाम के एक वैष्णव ब्रह्मचारी से इनका साक्षात्कार हुआ उस साधू से बात चीत में भक्ति का उद्रेक इनके हृदय में और अधिक बढ़ा और उसी ईश्वरीपुरी ब्रह्मचारी से इन्होंने वैष्णव धर्म की दीक्षा लिया। भक्ति रस में मग्न हो इनको केवल हरिनाम हरि का ध्यान और हरि का ज्ञान संसार में सार बोध हुआ—वैष्णव धर्मावलम्बन से नवजीवन प्राप्त कर चैतन्य महाप्रभु निज बास

भूमि नवद्वीप को लौट आये। इस समय हरि स्मरण और हरि ध्यान के अतिरिक्त कोई दूसरी बात इनके मन में नहीं उदित होती थी भक्ति और प्रेम रस में निरन्तर मग्न रहते थे। संसार के सब काम काज छोड़ केवल हरि स्मरण में अहर्निश तत्पर रहने लगे। नदिया की वैष्णव मण्डली के चैतन्य अग्रणी और प्रधान हुये और वहां के वैष्णव भी जब कभी इनको अपनी मण्डली में सुशोभित देखते थे तब प्रेम निर्भर हो अपने को धन्य मानते थे। इनके प्रेमी भक्तों में नित्यानन्द गोस्वामी सब में मुख्य थे चैतन्य के भक्त और प्रेमी सब एक साथ खान पान करते थे जाति विवेक का दुराग्रह सबों ने छोड़ दिया—इस कारण बहुत लोग इनसे बिरोध करने लगे नवद्वीप में बिरोधियों के अधिक होने पर भी वैष्णवों की संख्या नित्य बढ़ती जाती थी। अब इस समय बंगाल की कुल आबादी का पांचवा हिस्सा चैतन्य मतानुयायी है। वृन्दावनदास कृत बंग भाषा में चैतन्यामृत नामक ग्रन्थ में चैतन्य का बिस्तृत वृत्तान्त दिया गया है। जिसके दो खण्ड हैं एक आदिलीला जिसमें जन्म से लेकर संन्यास धारण के पूर्व तक का सब हाल है—दूसरा अन्तलीला जिसमें चैतन्य महाप्रभु के संन्यास धारण के उपरान्त का सब हाल तीर्थ यात्रा इत्यादि का और स्थान स्थान में वैष्णव मत स्थापन का दिया गया है—ब्रह्म संहिता विष्णु पुराण भगवद्गीता और श्रीमद्भागवत चैतन्य संप्रदाय के मुख्य ग्रन्थ हैं सबों में भागवत को कृष्ण चैतन्य ने मुख्य समझा है और भागवत के एक२ शब्द वेदाक्षर तुल्य इस संप्रदाय वालों को माननीय हैं।

चैतन्य के पिता जगन्नाथ मिश्र सिलहट या श्रीहट्ट से आय नदिया में बसे थे—इनके संप्रदाय वाले इनको कृष्ण का अवतार मानते हैं जो कृष्ण भगवान् की उपासना कलियुग के लोगों में फैलाने को अवतरे थे—चैतन्य के प्रधान शिष्य अद्वैतानन्द भी कृष्ण भगवान् के अंशावतार माने

गये और कृष्ण चैतन्य महाप्रभु में तो इनके संप्रदाय वाले पूर्ण शक्ति राधा और पूर्ण शक्तिमान् श्रीकृष्ण दोनों को मिश्रित मानते हैं–२५ बर्ष की अवस्था में केशव भारतीय से संन्यास ग्रहण कर चैतन्य बूढ़ी मा युवती स्त्री तथा और अपने प्रियतम सहचर बन्धुवर्ग सब को त्याग अलग हो पुरी के समीप नीलाचल को चले गये–इनके साथ नित्यानन्द मुकुन्दराम प्रभृति कई एक इनके बन्धुवर्ग तथा शिष्यवर्ग भी थे–वहां पहुंच श्रीजगन्नाथ राय के दर्शन के इतने उत्सुक हुये कि जब जगन्नाथ की मूर्ति का दर्शन किया तो प्रेम में उन्मत्त हो अनुराग के आवेश में श्रीजगन्नाथ के विग्रह को अपने गोद में रख प्रेम के आंसुओं से सींच दिया और प्रेम निर्भर हो देर तक अचेत और मुग्ध रहे–यह देख इनके साथी लोग जब चिर काल हरि नाम की ध्वनि इनके कान के पास करते रहे तब इन्हें होश आई। इस्से प्रगट है कि वेदान्ती इत्यादि दार्शनिकों की अपेक्षा इन भक्त और प्रेमियों का चित्त कहां तक सरल कोमल और भोला होता है–उसी के विरुद्ध शास्त्राभ्यासी दार्शनिकों का विवाद में अनेक ऊहा पोह करते २ चित्त कुटिल हो जाता है तब परमात्मा का साक्षात्कार उनके लिये कितना अति दुर्घट हो जाता है–जिस समय यह नीलाचल में रहते थे उस समय पुरी के राजा के सभापण्डित सार्वभौम के साथ इनकी बड़ी मैत्री हो गई–यह सार्वभौम बड़े तत्वज्ञानी पण्डित थे जिसे अभिमान था कि चैतन्य को तत्वज्ञान नहीं है हम उनसे विशिष्ट पण्डित हैं–सार्वभौम चैतन्य को भागवत सुनाया करते थे "आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रन्था अप्युरुक्रमे। कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थं भूतगुणो हरिः" इस श्लोक की इसने नौतरह की व्याख्या की–चैतन्य महाप्रभु ने इसके उत्तर में उसी श्लोक का आशय १८ तरह पर कहा जिस्में भक्ति रस भरा हुआ था—इसके उपरान्त चैतन्य ने नीलाचल में अपना बासस्थान नियत किया और नित्यानन्द को देश २ में वैष्णव धर्म के प्रचार के लिये भेजा–

जो अपने गुरु गौरांग महाप्रभु की आज्ञानुसार बंगदेश में हरि भक्ति के प्रचार में प्रवृत्त हुये-और चैतन्य काशी वृन्दाबन आदि स्थानों में अपने मत के प्रचार के लिये स्वयं चले-अपने जीवन का बड़ा हिस्सा ब्रजभूमि में कृष्ण भगवान् के ध्यान चिन्तन और स्मरण में बिताय नीलाचल को फिर लौट आये और ४८ वर्ष की उमर में लीला विस्तार कर गये।

चैतन्य का मत है कि केवल भक्ति ही ईश्वर के प्राप्ति का एक मात्र उपाय है नीचे का श्लोक इनके मत का मुख्य सिद्धान्त है :—

हरिर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥

हरि का नाम ही हमारा जीवन है कलियुग में कोई दूसरा उपाय हई नहीं हई नहीं हई नहीं।

इसी लिये चैतन्य निरन्तर हरि नाम संकीर्तन का उपदेश देते थे—जिस समय यह नीलाचल में बास करते थे उस समय वहां के बहुत से उड़िया ब्राह्मणों ने इनको अपने घर में भिक्षा कराने के हठी हुये किन्तु गौरांग ने उन सबों को उत्तर दिया कि सिवाय लक्षपति के मैं किसी के घर भिक्षा नहीं करता—ब्राह्मणों ने तब कहा महाराज ब्राह्मणों में तो उड़ीसा ऐसे निर्द्धन देश में कोई नहीं हैं जो लक्षपति हों चैतन्य ने तब उन्हें समझाया मैं लक्षपति उसे कहता हूं जो एक लाख हरिनाम नित्य जपता हो। रूप और सनातन दो शिष्यों को चैतन्य ने वृन्दावन में अपना मत प्रचार करने को नियत किया—इस मत में चैतन्य अद्वैतानन्द और नित्यानन्द ये ३ प्रभु कहलाये बंगाल के सब वैष्णव इन्हीं तीनों के शिष्य प्रशिष्य हैं वृन्दाबन का गोविन्ददेव का मन्दिर भी इनहीं के आधीन है—इन तीन प्रभुवों के अतिरिक्त चैतन्य संप्रदाय में ६ और हैं जो मुख्य उपदेशक हैं और छहो गोसांई मथुरा और वृन्दाबन में बसे—जहां जिनके

बंश वाले मुख्य २ मन्दिरों के अधिपति या स्वामी अब तक विद्यमान् हैं और इन गोसाँइयों को भी वैसी ही प्रतिष्ठा उनके शिष्य लोग देते हैं जैसी गोकुलस्थ गोसांइयों को बल्लभ कुल वाले देते हैं। चैतन्य और बल्लभीय संप्रदाय वालोँ में परस्पर का कुछ ऐसा विरोध या स्पर्द्धा है जिस्से ये दोनों एक दूसरे के मुकाबिले अपना २ महत्व बढ़ाने की सदा चेष्टा किया करते हैं—उन ६ प्रधान गोसांइयों के नाम ये हैं रूप, सनातन, जीव, रघुनाथ भट्ट, रघुनाथदास, और गोपाल भट्ट। वृन्दाबन में गोबिन्द देव और मदन मोहन के मन्दिर की बुनियाद इन्हीं गोस्वामी रूप और सनातन की डाली हुई है। गोबिन्ददेव के मन्दिर में जो पत्थर पर एक लेख संस्कृत में खुदा हुआ है उस्में १६४७ का सम्बत् दिया हुआ है और पृथुराव के बंशधर मान सिंह देव का बनवाया हुआ यह मन्दिर है—इस्से सिद्ध होता है कि गोस्वामी रूप और सनातन इसी समय के लग भग हुये हैं—बिदग्ध माधव नाम का एक नाटक भी गोस्वामी रूप का बनाया हुआ है। गोस्वामी जीव इन्हीं दोनों के भतीजे थे और वृन्दाबन में राधादामोदर के मन्दिर की नेह गोस्वामी जीव ही ने डाला। गोस्वामी रघुनाथ भट्ट और रघुनाथदास बंगाल के ब्राह्मण थे और ब्रजभूमि ये दोनों भी जा बसे—गोस्वामी गोपाल भट्ट ने श्रीराधारवण जी के मन्दिर की नेह डाली जिनके बंशवाले अब तक उस मन्दिर के अधिकारी हैं—सिवाय इन छहों के और भी बहुत से महात्मा भक्त जन चैतन्य संप्रदाय में हुये हैं और उन सबों को भी गोस्वामी के समान प्रतिष्ठा दी जाती है जिन्में हरिदास सब में प्रसिद्ध हैं बल्कि बंगाल में कहीं २ हरिदास को चैतन्य के बराबर की प्रतिष्ठा दी जाती है। सब मिलाय इस समय चैतन्य संप्रदाय में ६४ महन्त या प्रधान घराने हैं जिनकी जीविका शिष्य करना या मन्दिर है। भक्ति को प्रधान रख खान पान के विवेक को चैतन्य महाप्रभु ने यहां तक तोड़ा कि मुसल्मान भी हरिभक्त को इनहों ने अपने

में मिला लिया—हरिदास जो इनके अत्यन्त प्रेमी थे जाति के मुसल्मान थे हरिनाम जपते २ वैष्णव संप्रदाय के मुखिया या अग्रगण्य हुये। ईश्वर के मिलने का केवल शुद्ध विमल भक्ति ही को मुख्य द्वार रख चैतन्य ने तपस्या ज्ञान वैराग्य योग सब को गौण माना और इस अपने सिद्धान्त के पोषण में भागवत के इन श्लोकों को प्रमाण में रक्खा "यत्कर्मभिर्यत्त-पसा ज्ञान वैराग्यतश्चयत्। (योगेन दान धर्मेण श्रेयोभिरितरैरपि सर्वं-मद्भक्ति योगेन मद्भक्तो लभतेऽञ्जसा। स्वर्गापवर्ग मद्धाम कथं चिद्य दिवाँच्छति)। एकादश स्कन्ध में भगवान् का वाक्य उद्धव के प्रति है। जो बात यज्ञ आदि कर्म से ज्ञान से वैराग्य से योग से दान धर्म या दूसरे २ धर्म सम्बन्धी कामों से प्राप्त हो सक्ती है उसे मेरा सच्चा भक्त भक्ति योग के द्वारा बहुत जल्द पाजाता है। स्वर्ग अपवर्ग अर्थात् मुक्ति या परमेश्वर का बैकुण्ठ जो और तरह पर बड़ी कठिनाई से मनुष्य पा सक्ता है उसकी प्राप्ति भक्ति के द्वारा बहुत सहज है। हमारे मन में भी चैतन्य का यह सिद्धान्त दृढ़ता के साथ स्थान पाता कि सच्ची विमल भक्ति जितने धर्म सम्बन्धी कृत्य हैं सब से बढ़ कर है बल्कि बिना भक्ति शुष्क ज्ञान वैराग्य और तपस्या आदि सब फीके और धोखे की टट्टी हैं इसके पोषण के भागवत और गीता में अनेक श्लोक हैं।

भक्ति एक ऐसी वस्तु है कि यह भगवान् के रिझाने को कुल या जाति पांति नहीं चाहती है इसी बुनियाद पर चैतन्य ने बंगाल से जाति पांति के झगड़े को बहुत दूरतक तोड़ा—बंगभाषा में इसी बुनि-याद पर यह कहावत चल पड़ी है "ईश्वरेर कृपा जाति कुल नाहिमाने—बिदुर घरे कृष्ण करिल भोजन—ऐसाही श्लोक भी है—

शुचिमद्भक्तिदीप्ताग्निर्दग्धदुर्जातिकल्मषः।
श्वपाकोऽपिवुधैः श्लाघ्यो नवेदज्ञोपिनास्तिकः॥

मेरी भक्ति रूप प्रज्वलित अग्नि में जिस्की नीच जाति का कल्मष जलकर जो पवित्र हो गया है ऐसा मेरा भक्त जाति का चांडाल भी वेद पढ़े हुये नास्तिक ब्राह्मण से विशेष प्रशंसा के योग्य है—और भी "नमेभक्तश्चतुर्वेदी मद्भक्तः श्वपचः प्रियः,, कबीर दादू मीरा सदन रइदास आदि अनेक ऐसे लोग हुये हैं जिन्हें इसी भक्ति के मूल पर ईश्वर का साक्षात्कार रहा जिनके हृदय के नेत्र खुले हुये थे और पूर्णता या कमालल को पहुंचे हुये थे—शांडिल्य ऋषि ने भक्ति शास्त्र शांण्डिल्य सूत्र में इस भक्ति के दास्य सख्य आत्म निवेदन इत्यादि भेद से ९ भेद लिखे हैं—जिस्का बिस्तार महाप्रभु श्री बल्लभाचार्य ने सेवा और उपासना के क्रम में बहुत अच्छी तरह पर दिखलाया और यह बात बल्लभाचार्य ही को सूझी कि जो शाण्डिल्य सूत्र में केवल कथन मात्र Theory में था उसे बल्लभ ने Practical कर दिखया—चैतन्य सम्प्रदाय के प्रमाणिकग्रन्थ गोस्वामी रूप के बनाये ये हैं—बिग्ध माधवनाटक, ललित माधव, उज्वल नीलमणि, दानकेलिकौमुदी, गोबिन्द बिरूदावली, ब्रज बिलास वर्णन, लघुभागवत, अष्टा दस लीला खण्ड—सनातन गोस्वामी कृत ग्रन्थ ये हैं हरि भक्ति बिलास रसामृत सिन्धु, भागवतामृत भागवत के दशम स्कन्ध का तिलक, सिद्धान्त सार—जीव गोस्वामी कृत ग्रन्थ ये हैं भागवत सन्दर्भ, भक्ति सिद्धान्त, गोपालचम्पू, उपदेशामृत। गोस्वामी रघुनाथदास कृत ग्रन्थ मनशिक्षा गुण लेश सुखद है—सिवा इस्के रसमय कलिका आदि बंग भाषा के बहुत से ग्रन्थ गोस्वामी रूप और सनातन के बनाये हैं और भी विश्वनाथ चक्रवर्ती कृत चैतन्य चन्द्रोदय नाटक जो छप भी गया है स्तवमाला स्तवामृत लहरी कृष्णकर्णामृत कृष्ण कीर्तन गोविन्ददास विद्यापति कृत आदि अनेक ऐसे ग्रन्थ हैं जिन्में पाण्डित्य और कविता भरी हुई है पर अफसोस छपे नहीं। राधारमणी, युगल भक्त, बिहारी जी, इत्यादि कई एक अलग२ भेद यहां

के वैष्णवों में हो गये हैं पर उनका अन्तर्भाव चैतन्य ही के संप्रदाय में है—सारांश यह कि इधर की शताब्दियों में रामानुजीय माध्व बल्लभीय इत्यादि जुदी २ वैष्णवों की संप्रदाय के प्रचारकों में कृष्ण चैतन्य भी एक हुये और रामानुज माध्व इत्यादि के सदृश महापुरुष हुये जिन्होंने अपने उपदेश के द्वारा बंग देशियों में परस्पर की सहानुभूति प्रेम और एकता बढ़ाने का बहुत कुछ प्रयत्न किया । रामानुज और बल्लभ ने जैसा डूबते हुये भारत को जल्द डुबोने का प्रयत्न अनेक मज़हबी कैद और छुआछूत के विस्तार से किया वैसा चैतन्य ने नहीं किया । चैतन्य की सदा यही चेष्टा रही कि अन्य जाति विधर्मी मुसल्मान तक को अपने धर्म में मिलावैं । हरि स्मरण ध्यान कीर्तन के द्वारा चित्त की शुद्धि, अन्तःकरण की बिमलता को चैतन्य ने प्रधान रक्खा बाहरी आडम्बर खान पान की बिभिन्नता जैसा बल्लभ और रामानुज ने बढ़ाया है और रहा सहा जो कुछ मुल्की जोश प्रजा में बच रहा था उस पर बज्राघात कर दास्य भाव का अत्यन्त विस्तार किया सो चैतन्य न कर काम क्रोध लोभ मोह आदि शत्रुओं को दबाते हुये देशानुराग और जातीयता कौमीयत का बढ़ाने वाला प्रेम और परमात्मा पर अनुराग भक्ति के उपदेश से पुष्ट किया । चैतन्य सरीखे महात्मा इस सभ्यता के ज़माने में पैदा हुये होते तो प्रजा पर उनके उपदेश का असर बहुत कुछ होता और मृतक भारत के पुनरुज्जीवन का एक मात्र अंकुर एकता के सिचने को उनका उपदेश बड़ा उपकारी होता—बल्कि अंगरेज़ी तालीम की नास्तिकता और अविश्वास के दबाने को चैतन्य की साधुता सरल स्वभाव चित्त की सिधाई पैदा करने को नमूना होती ।

हम क्या हैं।

परमात्मा के अनन्त अगाध गुणों के साथ तुलना करने में ईश्वर और मनुष्य के बीच राई और पर्वत का अन्तर कहना तो किसी तरह अयुक्त हुई नहीं बरन ईश्वर में ईश्वरता का निदर्शन करने लगैं तो ईश्वरता का पहिला सब से भारी गुण यही कहा जायगा कि वह सब तरह पर निरपेक्ष और स्वतंत्र Absolute है—न केवल इतनाही बल्कि यह कहा जायगा कि उस्का निरपेक्ष होना या स्वतंत्र होना मनुष्य की बुद्धि के बाहर है अर्थात् किस्की अपेक्षा स्वतंत्र है या किन २ बातों में निरपेक्ष है यह नहीं कहा जासक्ता। जैसा किसी बस्तु को हम कहते हैं यह छोटी है यह बड़ी है छोटी और बड़ी दोनों में अपेक्षा लगी रहती है—एक बस्तु दूसरी से छोटी है या बड़ी है यह तारतम्य वहां नहीं है। जैसा कोई अंक ऐसा है जिस्में ५० शून्य हैं तब हम उसे किस नाम से कहें। अस्तु उस्में से १० शून्य कम कर दें तब भी उस्को कोई नाम नहीं दे सकते इसी तरह बराबर दस दस घटाते जांय और घटाते घटाते ९ या १० शून्य रह जांयगे तब उस्को करोड़ या पद्म किसी नाम से कहेंगे और समझ में भी आवैगा कि इस्की सीमा इतनी है। जब वह निरपेक्ष स्वतंत्र और अनन्त है तब क्षमा दया आदि गुण Morality भी उस्में वैसे ही होंगे। आदमी की तबियत ऐसी कमज़ोर है कि यह बहुत जल्द घबड़ा जाता है और जो उलझाव है उस्से दूर रहा चाहता है इसी लिये लोगों ने अपने लिये Personal God अवतार या अंश की कल्पना उस्में कर ली अर्थात् मनुष्यता की सब बातें उस्में आरोपण कर अपनी रुचि और श्रद्धा के अनुसार उस्का मनन चिन्तन और ध्यान लोग करने लगे। उस्में जो क्षमा दया आदि उत्तम गुण हैं जो सब तरह पर निरपेक्ष अनन्त और अपार हैं उस्के समझने के लिये सीढ़ी या दरजे कायम किये गये जिस्में उस्के गुणों की कुछ झलक हम पासकें। उसी दरजे के अनु-

सार पूर्व काल के प्रसिद्ध महान् पुरुष दार्शनिक या उपदेशक बुद्ध ईसा कृष्ण प्रभृति माने गये । फ़र्ज़करो एक ऐसा पिता है जिस्के ऐसे २ सब भांत योग्य असंख्य लड़के बाले एक से एक अधिक लायक चतुर और कुशाग्रबुद्धि हो गये हैं और हैं भी तो उनके समूह में तुच्छातितुच्छ किसी योग्य नहीं हम क्या हैं । किन्तु गर्वाभिभूत हो हम अपने को जो कुछ माने बैठे हैं वह सब हमारी नामसझी चित्त की दुर्बलता और मूढ़ता हैं सच है "यदा किंचित्किंचिद्बुधजन सकाशादवगतं तदा मूर्खोस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः "। अन्त को लाचार यही कहना पड़ता है कि उस्के निरपेक्ष असीम गुणों के मुकाबिले हम क्या हैं ।

आल्हा छन्द ।

पहिले सुमिरों श्रीकलियुग को, ताके पीछे उनके दास ।
ताके पीछे मनुसलपेटी, जाकर क्रोध खात घर मास ॥
सम्बत् उनइससौ तिरपन मा, पड़ा हिन्द में महा अकाल ।
घर २ फाके होने लागे, दर २ प्रानी फिरैं बेहाल ॥
गेहूं चावल सावां मकरा, सबै अन्न एक भाव बिकाय ।
बिन पैसा सब छाती पीटैं, अब तो हाय रहा नहिं जाय ॥
कोई पात पेड़न का चाबै, कोई माटी कोई घास चबाय ।
कोई बेटवा बिटिया बेचै, अब तो भूख सही नहिं जाय ॥
कोई घर २ भीखौ मांगैं, कोई लूट पाट के खांय ।
बहुत लोग जो अन्न देत हैं, राम निहोरे करैं सवाब ॥
बहुत लोग देते हैं फासी, अरु मलिका से चेहैं खिताब ।
सी एस आई के एस आई, रायबहादुर केर खिताब ॥

जब आये माता के भेजे, हिन्दुस्तान में मुल्की लाट ।
खबर पाय के बड़ २ लोगू, पगड़ी बांध निहारत बाट ॥
मुल्का लाट ने किया कमेटी, लाला बाबू पहुंचे जाय ।
पूछा लाट दया भर उर में, जिन पर ईश्वर होय सहाय ॥
कैसी समय अहै अब तोहरे, सो सब हमका देहु बताय ।
सब उठ बोले हाथ जोर कै, कहा कही कुछ कहा न जाय ॥
हमरे इहां कुकाल है भारी, बिन पानी सब गया नसाय ।
ऐसा काल कबहुं नहिं व्यापा, जो अब तिरपन में रह छाय ॥
लफटिनेंट श्री सर मेगडालन, सदा होय तुम्हरो कल्यान ।
जो नहिं होते ऐसे हाकिम, तो कुछ होत अनर्थ आन ॥
कीन कमेटी लीन्हें चन्दा, घर २ अन्न दीन पहुंचाय ।
भवन एक मुहताजन खातिर, साहब अलग दिया बनवाय ॥
चिरजीवहु तुम सर मेगडानेल, ऐसे समय जो राख्यो प्रान ।
दया के सागर सब गुन आगर, तुम्हरो होय सदा सन्मान ॥
करके मुखिया रायबहादुर, बहुत ठीक जिन किया उपाय ।
लाला बाबू वकील डाक्टर, धन्य २ जो कीन सहाय ॥
अहियापुर में सब से उत्तम, बन्दोबस्त लाला ने कीन ।
रातोदिन मेहनत कर कर के, घर २ जाय रुपैया दीन ॥
आपै जाय पूछ के सबहिन, नाम लिखा भलनइन केर ।
ऐसी मेहनत करी कीना, तनिक न देखा बेर सबेर ॥

दुःख एक अब तौभी बचगा, ताहू का कुछ कहौं हवाल ।
घर २ बम्बा केर सिपाही, नित उठ गाजैं मानौ काल ॥
पनिहारिन का रहै महीना, तापर यह बम्बा जंजाल ।
धरम गवा बम्बा के पानी, सरब जात का दीनिस घाल ॥
चुंगी अलगै गाजै सिर पर, तापर बम्बा केर मसूल ।
मरैं पेटागिन दीन रियाया, कैसे चुकवैं भा यह सूल ॥
करैं खतम हम इस क़िस्से को, ई दुख का नाहिं वारा पार ।
जो कुछ होइहै फिर हम लिखबै, जै जै जै मलिका सरकार ॥

श्री स्वामी रामानुजाचार्य ।

बैष्णवों की ४ संप्रदाय जो कलियुग में प्रवर्तित की गईं उन्में सब से पहिली श्री संप्रदाय के प्रवर्तक श्री रामानुजाचार्य हुये—रामानुज बारहवीं शताब्दी के मध्य में हुये और शेष जी के अवतार माने गये करीब २ मन्दराज हाथे के हिन्दू मात्र इसी संप्रदाय के होते हैं—मन्दराजियों का यह एक फेशन सा हो गया है कि चाहो बैष्णव हों या न हों तिलक रामानुज संप्रदाय का देंगे होटेल में बैठे अंगरेज़ के साथ भोजन करैंगे पर माथे में श्री लगाये होंगे—रामानुज का शेषावतार होने की कथा भार्गव उपपुराण में दी गई है और इन के मुख्य २ शिष्य शंख चक्र आदि विष्णु के आयुध हो औवतरे चार संप्रदाय जो कलियुग में चलीं वे ये हैं–रामानुज माध्व विष्णु स्वामि निंबार्क—"रामानुजं श्रीः स्वीचक्रे मध्वाचार्यं चतुर्मुखः। श्रीविष्णु स्वामिनं रुद्रो निम्यादित्यं चतुः सनः„— स्मृतकालतरंग में रामानुज का प्रागट्य शाकाब्द १०४९ में लिखा है जो ईस्वी सन के हिसाब से ११२७ होता है—किसी २ ने १००८ ईस्वी को

इनके जन्मका सम्वत माना है किन्तु अधिकतर यही प्रमाण के योग्य है कि श्रीरामानुज ग्यारहवीं शताब्दी के अन्त में प्रगटे और बारहवीं शताब्दी के मध्य में प्रसिद्ध हुये—दिव्यचरित्र नामक ग्रन्थ में जो कर्नाटकी भाषा में है लिखा है कि इनके पिता का नाम श्री केशवाचार्य था और मा का भूमिदेवी था—काँची में जाकर इन्होंने विद्या पढ़ा और वहीं से अपने मत का प्रचार किया पीछे श्रीरंगपट्टन में जा बसे और श्रीरंगनाथ ठाकुर की उपासना करने लगे और वहीं श्री भाष्य आदि अपने मत के मुख्य ग्रन्थों को रचा—उपरान्त दिग्विजय को निकले और शास्त्रार्थ में अनेक मतमतान्तरों को परास्त करते हुये खास कर शैव मत को परास्त कर कितने शैवों को वैष्णव मत में बदल दिया—श्रीरंगपट्टन में लौटने पर शैव और वैष्णवों का झगड़ा इतना बढ़ा कि चोल देश का राजा जिस्का क्रिमिकोंड चोल नाम था और जो बड़ा शैव था अपने राज्य के सब ब्राह्मणों को आज्ञा दिया कि याती शिव को सब देवताओं से उत्कृष्ट होने का हस्ताक्षर कर दो नहीं तो हमारे राज्य से निकल जाओ—जो बड़े प्रसिद्ध पण्डित उस समयके थे और हस्ताक्षर नहीं करते थे उन्हें रिशवत दे उनसे दस्तखत करवाया कितनों को धमकी दे उनका हस्ताक्षर इस विषय में लिया और रामानुज को कैद करलेने के लिये फौज़ भेजा किन्तु स्वामी रामानुज अपने शिष्यों की सहायता से कैद से निकल घाट पर्वत पर चढ़ जैन मतावलम्बी मैसूर का राजा वितलदेव बल्लाल राय के यहाँ जा छिपे—इस राजा की कन्या पर ब्रह्मराक्षस था रामानुज स्वामी ब्रह्मराक्षस को उस्की कन्या से दूर कर दिया इस कारण राजा इनसे अति प्रसन्न हुआ पीछे से आप भी जैन मत छोड़ वैष्णव हो गया और वैष्णव वर्द्धन की उपाधि अपने नाम के आगे कहने लगा—रामानुज १२ वर्ष तक मइसूर में रहे और चोल राजा जो इनका शत्रु था उस्का परलोक हो जाने पर फिर श्रीरंगपट्टन में आबसे और अपना शेष जीवन

वहीं पार किया—श्रीरंगपट्टन कावेरी नदी के तट पर है—द्रविड़देश कावेरी कृतमाला ताम्रपर्णी पयस्विनी प्रतीची, इत्यादि नदियों का नाम लिख भागवत के दशम स्कन्ध में ऐसा इशारा है कि जो लोग वहां रहते हैं और उन नदियों का जल पीते हैं वे प्रायः हरिभक्त और नारायण परायण होते हैं ॥

क्वचित् क्वचिन्महाभाग द्रविड़ेषुच भूरिशः। ताम्रापर्णी नदी यत्र कृतमाला पयस्विनी ॥ कावेरी च महापुण्या प्रतीची च महानदी । ये पिवन्ति जलं तासं मनुजा मनुजेश्वर ॥ प्रायो भक्ता भवष्यन्ति वासुदेवेऽमलाशयाः ॥

अब तो रामानुज संप्रदाय वाले कुल हिन्दुस्तान भर में फैले हैं पर दक्षिण में अब तक बहुत विशेष हैं और मुख्य२ इनकी गद्दी और मठ भी वहीं बहुत हैं—स्वामी रामानुजाचार्य ने सब मिलाय ६०० मठ स्थापित किये हैं और ७८९ मुख्य महन्त हैं जो औरों को वैष्णवी दीक्षा दे शिष्य करते हैं—इस संप्रदाय के वैष्णव केवल विष्णु और लक्ष्मी को पूजते हैं और राम कृष्ण नृसिंह वामन आदि विष्णु के अवतार सीता रुक्मिणी राधा इत्यादि लक्ष्मी के अवतारों को भी पूजते हैं—गुरू या महन्त केवल ब्राह्मण होते हैं और शिष्य सब जाति के लोगों को करते हैं ॥

सिवाय सीताराम और राधाकृष्ण की उपासना के रामानुजी वाला जी, रामनाथ, रंगनाथ, वरदराज, जिनका मुख्य मन्दिर कांची में है, जगन्नाथ, बदरीनाथ, और द्वारिकाधीश को भी मानते हैं—शालग्राम की शिला और तुलसी इनके मत में सब से अधिक पवित्र है—बिना शालग्राम के पूजन या उनका चरणोदक लिये भोजन या जलग्रहण निषिद्ध समझा गया है—और२ मत वालों से भोजन का क्रम इनके य-

हाँ सब से निराला है—खैर यह तो हिन्दूमात्र की एक चाल है कि एक जाति वाले दूसरे जाति के हाथ का पकाया या दूसरी जाति वाले के साथ बैठकर कच्ची रसोंई कोई २ पक्की भी नहीं खाते—आपस को फूट पैदा करने को प्रेम और सहानुभूति की जड़ पर कुल्हाड़ा चलाने को यही क्या कम था—ये लोग इसके भी बहुत आगे बढ़ निकले कि भोजन में दृष्टि दोष का परिहार यावत् आचार विचार सब की जड़ है। इस लिये ये अपना भोजन ऐसे गुप्त स्थान में बनाते हैं जहां किसी की नज़र न पड़े—इन्हें भोजन बनाते या खाते कोई दूसरी जाति वाला चाहो हिन्दूही हो देख लेगा तो ये उस भोजन को न खांयगे इतनाही नहीं वरन उसे यहां तक अपवित्र मानेंगे कि उसे भूमि में गाड़देंगे—यदि म्लेच्छ यवन इन्हें खाते या पकाते देख ले तब तो हम जानते हैं क्या ये अपने देह की मांस एक परत छील डालें क्या? मुख्य मंत्र जो ये अपने चेलों को देते हैं षड़क्षरी है गुरू को प्रणाम के साथ ये लोग दासोस्मि या दासोहं भी कहते हैं—मानो गुलामी की आदत को कूट२ कर नस२ में भरते हैं—दासत्व जिनके मज़हब का वमूल है उन्में स्वतंत्रता या आज़ादी भला कब आसक्ती है—जिस आज़ादी के लिये हमारे इन दिनों के सुशिक्षित बड़ा यत्न कर रहे हैं और झंख रहे हैं कि हम किसी तरह स्वतंत्र हों—ब्राह्मण या द्विज मात्र को अपने को दास कहना या दास मानना शास्त्र विरुद्ध भी है खासकर ब्राह्मण के नाम के आगे दास पद का प्रयोग तो हकीकत में बड़ाही कर्णकटु मालूम होता है सो दास बनना इनके संप्रदाय की शोभा है—अष्टांग प्रणाम का विधान भी इस मत में बहुत पूरा है आचार्य या गुरू को देख चाहो कैसी जगह हो दण्डायमान हो लेट जांयगे—कमल गट्टा और तुलसी का माला धारण शंख चक्र का चिन्ह दोनों भुजा पर तप्त मुद्रा से दगाना इस मत का प्रधान अंग है॥

येकण्ठलग्नतुलसीनलिनाक्षमालाःयेबाहुमूलपरिचिन्हितशंखचक्राः
येवाललाटपटलेलसदूर्द्धपुंड्रास्तेवैष्णवाभुवनमाशुपवित्रयन्ति ॥

जिनके कण्ठ में तुलसी और कमलगट्टे की माला पड़ी है जिनके बाहु मूल शंख चक्र के चिन्ह से अंकित हैं ऊर्द्ध पुण्ड् से जिनका माथा सुशोभित है ऐसे बैष्णव संसार को जल्द पवित्र करने वाले होते हैं— और भी—

शंखचक्रांकिततनुः शिरसा मंजरीधरः । गोपीचन्दनलिप्तांगो दृष्टश्चेत्तदघं कुतः॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रोवा यदिवेतरः। विष्णुभक्ति समायुक्तो ज्ञेयः सर्वोत्तमश्चसः ॥

वृहन्नारदीय पुराण जो बहुत ही हाल का बना है अवश्य किसी ने रामानुजियों को अधिक बढ़ते देख कुछ थोड़े से श्लोक चक्रांकित होने के खण्डन में बनाय के लिख दिये हैं ॥

इस मत के प्रमाणिक ग्रन्थ ये हैं—रामानुज स्वामी कृत व्यास के वेदान्त सूत्र का श्री भाष्य, गीता भाष्य, वेदार्थ संग्रह, वेदान्त प्रदीप, वेदान्तसार, नारदपंचरात्र व्यंकटाचार्य के बनाये कई एक ग्रन्थ शतदूषिणी, स्तोत्र भाष्य आदि । पुराणों में वही को ये मानते हैं विष्णुपुराण, नारदीय, गरुड़, पद्म, बाराह और भागवत—और पुराणों को ये तामसी और राजसी कहते हैं इससे तामसी राजसी प्रकृति वालों के लिये वे पुराण हैं सिवा इसके द्राविड़ी और कर्नाटकी भाषा में बहुत से इस संप्रदाय के ग्रन्थ हैं ।

ये लोग मानते हैं कि विष्णुही सब सृष्टि के कर्त्ता हैं और सृष्टि के आदि में वेही थे—ये लोग जगत् को सृष्टि कर्त्ता विष्णु से अलग नहीं

मानते किन्तु शंकर मतावलम्बी वेदान्तियों के विरुद्ध उसे निर्गुण नहीं मानते इसलिये इनका मत विशिष्टाद्वैत कहलाता है अर्थात् यह जगत् ईश्वर से अलग नहीं है किंतु सत्व रज तम तीनों गुण विशिष्ट हैं—प्रायः वैष्णव संप्रदाय वाले सब इसी मत को मानते हैं—दूसरी बात सेव्य सेवक भाव ये मानते हैं जो शंकर के मत के सर्वथा विरुद्ध है—ये लोग मानते हैं कि परमात्मा सब जीव मात्र का उत्पन्न करने वाला और स्वामी है जीव सब उस्के सेवक हैं—शंकर के अहं ब्रह्मास्मि से यह उनका मत विशेष सयुक्तिक मालूम होता है—ये लोग कहते हैं पहले जब कुछ न था और यह सृष्टि जिसे हम अपने इन्द्रियों के गोचर कर सक्ते हैं कहीं नाम मात्र को भी न थी परमपुरुष नारायण ही केवल एक थे पीछे उसने चाहा कि हम बहुत हों "एको हंबहुस्याम्,, इच्छा के साथ ही पंचतत्वात्मक सृष्टि में मिल वह बहुत हो गया—जैसा एक मिट्टी से घड़ा सकोरा इत्यादि अनेक पदार्थ बनते हैं वैसा ही परमात्मा स्थूल पंचतत्व में मिल जुदी २ शकल धर लेता है—उस परमात्मा की शक्ति सबसे अलग रह कर भी उसमें व्याप्त है शंकर मत वाले मानते हैं कि परमात्मा अनादि और अनन्त है जीवात्मा वैसा नहीं है ये लोग कहते हैं कि जीवात्मा भी जब उसी की विभूति है तो इसे भी अनादि अनन्त क्यों न मानो—परमात्मा अपनी इच्छानुकूल उपादान कारण तत्वों के द्वारा सृष्टि उत्पन्न कर अपना ईश्वरत्व पंचतत्व निर्मित जगत् पर चित अचित् ईश्वर तीन रूप में रखता है—पर ईश्वर के रूप में होकर चित् अचित् दोनों पर वह अपना अधिकार रखता है—सिवा इस्के जब उसने जैसा देखा तब मत्स्य कच्छ बाराह आदि रूप धर इस जगत् को उसने उस तरह उबारा और इस चित् अचित् जगत् को लाभ पहुंचाया-वह परमात्मा अपने भक्तों को ५ तरह पर प्रगट हो कर दर्शन देता है अर्चा अर्थात् अपनी प्रतिमा में अपने विभव या रामकृष्ण आदि अवतारों में विग्रह अर्थात् वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध के रूप में सूक्ष्म रूप में जैसा विरज आदि

६ गुणो में विरज अर्थात् काम क्रोध आदि मनुष्यता के दोषों से रहित हो कर, विमृत्यु मरनका अभाव, विशोक शोक का अभाव, विजिघित्सा इच्छा का अभाव सत्य काम या सत्य संकल्प और अन्तर्यामित्व—ये लोग श्री वैष्णव या आचारी भी कहलाते हैं और शिव के बड़े द्रोही होते हैं, रामानुज के द्वारा देश का कुछ भी उपकार न हुआ बरन मत मतान्तर के झगड़ों के कारण द्रोह और फूट बहुत अधिक बढ़ी-इस मत के लोग ज़िद्दी और अपने मत के कट्टर बड़े होते हैं पर बल्लभ कुल के गोसाइयों की तरह इस संप्रदाय के गुरु या आचार्य अत्यन्त विषयासक्त न हो यत्किंचित् विद्यानुरागी होते हैं—अब भी दक्षिण में आचारी बड़े२ विद्वान् पण्डित हैं श्रीस्वामी रामानुज ने जैनियों का ज़ोर बहुत घटाया पर साथही प्राचीन वैदिक समय की रीति नीति का उच्छेद भी किया इनका और विशेष वृत्तान्त फिर लिखेंगे—

सोलन।

यूनान देश के सात प्रसिद्ध बुद्धिमानों में एक सोलन भी थे—ईस्वी सन के ६३८ पूर्व यूनान की राजधानी एथेन्स में पैदा हुये थे एथेन्स राज्य के लिये सोलन ने कानून बनाये थे जिस्का कानून उस समय ऐसाही माना जाता था जैसा मनु का धर्म शास्त्र हिन्दुस्तान में माना जाता है—सोलन ने देश पर्यटन बहुत किया था और जहां२ गये वहां के आचार बिचार रीति नीति के जानने में इन्हों ने बड़ा परिश्रम किया था—अनेक देश के आचार बिचार रीति व्यौहार को अच्छी तरह अभ्यास कर तब एथेन्स राज्य के लिये व्यवस्था बनाया था इस कारण सोलन की व्यवस्था या कानून अत्यन्त माननीय हुई—देश पर्यटन समय अनेक देशों मे घूमते लीडिया के बादशाह कारूंसे जामिले कारूं अपने ख़जाने और धन संपत्तिके लिये अति प्रसिद्ध है बहुधा कहावतों में कारूंके खजाने की उपमा दीजाती है—कारूं को अपने ख़जाने के सबब बड़ा अभिमान

था कि मेरी बराबर सुखी संसार में कोई नहीं है—इसने सोलन का बड़ा सनमान किया और अपना सब वैभव उसे दिखाय पूछा आप तो बहुत देशाटन कर चुके हैं बताइये मुझ सा भाग्यवान कोई दूसरा आप को मिला है—इसे बड़ी आशा थी कि सब से बढ़कर भाग्यवान् सोलन उसेही कहैंगे और बड़ा उदास हुआ जब उस बुद्धिमान् ने यह कहा "कौन कह सक्ता है कि मैं बड़ा भाग्यमान् हूं जब तक वैसीही भागमानी के साथ आंख न मुद् जाय,,—अस्तु यह कह सोलन तो चलागया कुछ दिन बाद फारस का बादशाह सैरस ने लीडिया पर चढ़ाई की कारूं को हराय सब खज़ाना उस्का ज़ब्त कर लिया और कारूं को जीता जला देने की आज्ञा दी। जब चिता लगा कर तैयार हो गई और आग उसमें देने ही को थी तब कारूं को सोलन का कहना याद आया और तीन बार सोलन सोलन सोलन कह चिल्ला उठा—उस्को चिल्लाते सुन सैरस ने आग चिता में देना बन्द करवाय उस्से सोलन के पुकारने का कारन पूछा—कारूं सब हाल कह गया जिस तरह पर उसने अपना वैभव सोलन को दिखलाय अपने को प्रसन्न सोलन से कहलवाया चाहता था—यह सुन सैरस अचम्भे में आया चिता से उस्को हटाय उसका राज पाट और खज़ाना सब उसे लौटा दिया। सोलन यूनान के सात प्रसिद्ध बुद्धिमानों में एक होने के सिवाय कवि वावदूक और राजनीतिज्ञ भी था। सोलन के सात वाक्य प्रसिद्ध हैं और वे ये हैं—Know thyself अपने को पहिचानो, Consider the end परिणाम को सोचो, Who hateth surtyship is sure जिस्के लिये ज़मानत दरकार नहीं है ज़रूर सच्चा है, Most men are bad आदमियों में बुरे बहुत हैं, Avoid extreme हद्द से ज़ियादह को हमेशा बरकाओ, Seize time by the forelock जो कर्त्तव्य है उस्के लिये बिलम्ब न करो, Nothing is impossible to industry कोई ऐसी बात

नहीं है जो परिश्रम से न हो सकी हो। सोलन एटिका के राजबंश में पैदा हुआ था लेकिन इसका पिता इतना फिजूल खर्च था कि जब तक अपनी पूरी अवस्था तक पहुंचा इसको अपना जीवन काटने के लिये कुछ न बच रहा तब यह कुछ थोड़ासा व्यौपार करने लगा और उसी की थोड़ी सी आमदनी से अपना निर्वाह करता था—यह अपनी मातृभूमि यूनान का बड़ा हितैषी था—पहले इसने जो कविता की थी वह शृंगार रस प्रधान थी और लोगों ने उसे बड़ी चाह से स्वीकार किया पीछे जो कविता इसने रची उसमें देशानुराग और वतनदोस्ती भरी हुई थी और इसके उपदेश वाक्य यहां तक उत्तम समझे गये कि सोलन यूनान के सात बुद्धिमान् ऋषियों में गिना गया—यह ५५८ ईस्वी सन् के पहले ८० बर्ष की उमर में असार संसार से प्रयाण कर अपनी कीर्त्ति छोड़ गया—जिसके बुद्धि की उपमा दीजाती ऐसा बुद्धिमान् जैसा सोलन।

नौकरी।

कहता हर बशर यहां अब हाय नौकरी।
ढूंढ़े से भी कहीं नहीं मिलती है नौकरी॥
पहले तो रुपये देकर सब को पढ़ाते थे।
घर घर पै सब के जाके पढ़ने बुलाते थे॥
कागज़ कलम किसी को किताबें दिलाते थे।
हर बातों में लड़के इनआम पाते थे॥
तब तो बड़ी ही जल्दी मिलती थी नौकरी।
ढूंढ़े से अब कहीं नहीं मिलती है नौकरी॥ १॥
गोरे किरानी साहब फिरते हैं मारे मारे।
कौड़ी के तीन तीन हैं इंगलिश के पढ़ने हारे॥

इस नोकरी के लीये ढूंढ़े हैं आफिस सारे ।
दे दे के अप्लिकेशन बैठे रहैं बेचारे ॥
कहते हैं अब तो सब कोई ढोवैंगे टोकरी ।
ढूंढ़े से भी कहीं नहीं मिलती है नौकरी ॥ २ ॥

पटके हैं सर को नेटिव हा हा मचाते हैं ।
नित उठ सलाम करने को बंगले पै जाते हैं ॥
रुपया खरच कर अपना डाली चढ़ाते हैं ।
तिसपर भी वे बेचारे नहीं पोस्ट पाते हैं ॥
घर में उन्हों के रात दिन रोती है डोकरी ।
ढूंढ़े से अब कहीं नहीं मिलती है नौकरी ॥ ३ ॥

एफ ए बी ए एम ए कालेज के पढ़ने वाले ।
पहने हैं कोट बूट और जेबी घड़ी सम्हाले ॥
रङ्ग रङ्ग के रोज़ रोज़ वो पट्टे गले में डाले ।
फिरते हैं नौकरी को सर्टीफिकेट निकाले ॥
इनको भी अब कहीं नहीं मिलती है नौकरी ।
ढूंढ़े से अब कहीं नहीं मिलती है नौकरी ॥ ४ ॥

बहुतेरे छैला ऐसे कौड़ी नहीं कमाते ।
बन करके बाबू साहब फूले नहीं समाते ॥
हरदम फूलेल पट्टों में और इत्र भी लगाते ।
खाकरके पान फिरते सज धज नई दिखाते ॥
उनको भी फिक्र आज कल है हाय नौकरी ।
ढूंढ़े से अब कहीं नहीं मिलती है नौकरी ॥ ५ ॥

———

जैसा काम वैसा परिणाम।

(इस प्रहसन को मैं एक बार छाप चुका हूं किन्तु अब उसकी प्रति न रह गई—पढ़ने वालों के अनुरोध से फिर प्रकाश करता हूं ॥)

स्थान—

बसन्त लाल का बैठकखाना।

बसन्त और रघू सिंह बैठे हुये।

रघू—(हुक्का गुड़गुड़ाता हुआ) बाबू माल ऐसा फ्रेश और चौकड़ है कि देखोगे तो लार टपक पड़ेगी।

बसन्त—सच कहो।

रघू—आप जानते हैं हम कभी झूट बोलते हैं—किन्तु ज़रा रुपये ज़ियादह खर्च होंगे।

बसन्त—उः क्या परवाह है—रुपये हैं किस लिये—तुम्हें मालूम है हमको इसका निहायत शौक है—चार भले आदमियों में रहना पड़ता है ज़रा ऊपरसे रंगे चुंगे न रहैं तो काम न चलै वरना हमें तुम कुछ कम न समझो, ऐसी २ बातों का ढङ्ग तो हम से कोई सीख ले।

रघू—जनाब सैकड़ों ऐसे २ मामिले निपटा डाले—उसके लिये अलबत्ता बड़े खौफ की जगह है जो इन कामों में अभी एप्रिंटिस और नौसिखिया है।

बसन्त—हां तो तुमने फिर क्या तै किया।

रघू—जी मैंने दरियाफ्त किया था वह एक रकम राज़ी है पर—

बसन्त—पर क्या ?

रघू—(तीन अंगुली दिखाया) इतने सौ का खर्च है।

बसन्त—वाही हो कहे तो जाते हैं रुपये की कुछ चिन्ता नहीं है—तीन सौ क्या हम तीन हज़ार खरच सक्ते हैं—अरे ओ महरा एक चिलम तमाखू और भरला।

(भीतर से) हां सर्कार हे लै आए हुं।

बसन्त—भला तुम पक्का कहते हो राज़ी हो जायगी ?

रघू—जी ऐसा न होता तो मैं कभी बीड़ा न उठाता—उः एही पापर बेलते धौले आये केस—आप जानते हैं मैं कभी चूकने वाला हूं जो ऐसे कामों का जौहरी हूं—सच मानिये मामिला भी बड़ाही चौकड़ है—हितोपदेश तो आपने पढ़ाही है लिखा है " बाला स्त्री क्षीरभोजनम्" तब फिर क्या (कहकहे मार हंसता है) खैर यह तो सब हुआ अब बतलाइये कुछ शगल को भी है)।

बसन्त—हां रिफ्रेशमेंट के लिये कुछ ज़रूर चाहिये Wait a little I have bought some new bottles from kilner's this morning.

रघू—Very well please look sharp then.

(बसन्त—भीतर गया रघू बैठा हुआ मन में) इस काठ के उल्लू को खूब फसाया—दोही महीने में इसकी सब ज़ायदाद लेखेड़ेहुड़े कियेदेते हैं—तीन महीने हुये जब से इसकी जान पहचान हमसे हुई कई हज़ार रुपये खर्च कराये उसका चौथाई अमझक उस्तादोंकी गोड़ी हुई खूब चैन उड़े अच्छा तो यहां बिलाई के क्या भैंस लगती है—रोज़ नया शिकार मारना और गुल छर्रे उड़ाना—इस ३०० में भी २०० हमारे बाप का हो चुका—दस बीस खरच किसी अखोर से इसे मिलाये देता हूं—वाह क्या सोच घर से चला क्या हो गया—इलाहीजान से कौल कर आये थे कि बसन्त लाल को तेरे यहां ला झुकाते हैं—यहां कुछ औरही तार जम गया अच्छा कुछ चिन्ता नहीं उस बुड्ढो को भी जुल दूंगा नहीं कोई दूसरा असामी इस्से भी अधिक मालदार उसके यहां लै जाय झुकावैं—इस्को देर बड़ी हुई क्या करने लगा—हो आ तो रहा है—सब का सब इस्से झसलैं इलाहीजान के यहाँ जाता हूं तो शराब का खर्चा हमी को देना पड़ता है आज इसीसे काम चलाऊंगा।

(बोतल और ग्लास हाथ में लिये बसन्त का प्रवेश)

रग्घू—भाई बड़ी देर हुई अब हम जाते हैं ।

बसन्त—कैसे वक्त ही इतनी देर से बैठे थे अब हम माल लाये तब उठ खड़े हुये ।

र०—तो यह क्या सब हमारे ही लिये है ॥

ब०—और नहीं क्या ॥

र०—हमें तो अब बड़ी देर हुई तुम्ही इसे अपने मसरफ में लाओ नहीं इसे हमे दे न दो कल हमारे बाप की मासिक श्राद्ध है पित्तरों को भी तृप्त करेंगे । उच्छिष्ट करडालने से देवता पितर के काम का न रहेगा । (बोतल उसके हाथ से ले दुपट्टे में लपेट जाने लगा) ।

ब०—ठहरो २ अभी और कुछ बात करना है । कहो उस दिन के फाड़ में करीब एक हज़ार के हाथ लगे ।

र०—जनाब आप से बन न पड़ी जल्दी कर गये हम होते तो दाम २ उतार लेते असामी बनाने की भी हिमकतें हैं । आप ने तो पहिले उस्से गाल काटा । पहिला रोज़ था उस दिन कुछ उसे सुन्धी दे रखना था दूसरे दिन ऐसा मारते कि सांस न आती - बड़ी मेहनत से घात पर चढ़ाया था अब हाथ आना ज़रा मुशकिल है । खैर कोई दूसरा चिड़िया फसायेंगे कोई न कोई कांपे में आही जायगा । तो उस हज़ार में हमारा और आपका ठालंटाल तो रहेगा न ॥

ब०—हां हमे तुम से कोई उज़र नहीं है । क्यों रहेगा ॥

र०—तो लीजिये कल्ही एक नया असामी और लाते हैं ॥

ब०—एक बात तुम से और निहायत पोशीदा कहना था उसे तुम्ही कर सकोगे--हम यकीन करते हैं उस्का ज़िकिर कभी मुह पर न लाओगे॥

र०—हुज़ूर फरमावें बन्दा बदिलो जान बजा लाने को मुस्तैद है ।

(बसन्त ऐंड़ाते जंभाते उठखड़ा हुआ और चलते २ कहा) अब आज सो बड़ी रात गई दो एक प्याले जोश कर सोवेंगे कल्ह मिलोगे तो उस बात की सलाह करेंगे-(बसन्त भीतर जाता है रग्घू अपना हुक्का उठा घर की राह लेता है)॥

दूसरा गर्भांक।

स्थान।

ज़नानखाने में रसोंई का घर—

(दिया हांथ में लिये शशिकला का प्रवेश)

शशि—रसोंई करने वाली बाह्मनी चली गई उनके खाने को कुछ रख गई है कि नहीं तीन दिन बीत गये क्या जानिये आज आवैं (एक कोने मे ढकने से ढका बरतन देख) हो रख तो गई है मालूम (बायें हाथ में दिया ले दाहिने हाथ से बरतन खोलती है) एह में का रख गई है (देखती है) लुचुई, उपराठा, साग, भाजी, मीठा, दही, सब कुछ तो है एक सुरुवा नहीं है—रोज़ सुरुआ खाने की बान उनकी पड़ी है बिना उस्के कैसे खांयगे (सोच कर) अब कौन उपाय करूं—परसों जाती खिरिया कह गयें रहा जाते हैं सांकड़वांकड़ लगाय ले आज रात को हम न आवैंगे—सो वह रात बीती कल का दिन और रात बीती आज का दिन बीता अब तक नहीं आये—कौन जाने उन्हें कुछ होइ तो नहीं गवा—कभी हम से बोलते नहीं इस बात का हमे कुछ दुख नहीं है जो कुछ बदा रहा सो भवा जी से सुखी रहैं जो भावै सो करैं—हमारे भाग में जो सुख बदा होता तो क्या तिरिया का जन्म पातीं नारी के जन्म समान घिनौना जन्म किसी का न होइ है—जिसने पुर्बिले में बड़े२पाप कर रक्खा है वही स्त्री का जन्म पाती है—पराधीन दासी तिस परभी

अनेक यातना जैसा पिंजरे में बन्द पखेरू हो ऊंची२ दिवालों से घिरा हुआ घर क्या मानो पिंजरा—सूर्यदेव भी जिस्का मुख कभी नहीं देखतेहों न हवा अंग स्पर्श कर सकी हो—वही नारी सती कुलवती पतिव्रताओं में मुखिया समझी जाती है जो बाहर कभी पांव न रक्खा हो—लिखने पढ़ने से चरित्र बिगड़ जाता है इस कुसंस्कार के कारन उन्हें लिखना पढ़ना नहीं सिखलाया जाता—बचपनेही से रोना गाना गिल्ला चबाव का अभ्यास करते२ उमर बढ़ जाने पर भी वही सब बात बनी रहती है—यहां लौं कि अन्त में बड़ी कर्कशा चंडी कलह कारिणी होती हैं—अच्छा तो यह सब किस्का दोष है हम लोगों का तो इसमें कोई दोष ही नहीं है—लड़काई में बाप मा के आधीन रहती हैं व्याह होने पर सास ससुर और पति के बस में रहीं—जो वे हमे अच्छी तरह रक्खें, लिखना पढ़ना सिखावें, हमे तुच्छ न समझैं, हमसे घिन न करैं, मनुष्यकासा बर्त्ताव हमारे साथ करैं, और कहां लौं कहैं मुह भर हमसे बोलैं भी तो सही, तौ भी हम अपना भाग सराहैं और अपना जन्म सफल कर मानैं—आठही वर्ष मे हमे व्याह देते हैं सो भी बिना देखे भाले बहुधा एक ऐसे के साथ कि जन्म नष्ट जाता है॥

(नेपथ्य से) यहीं देजा खाने को (थोड़ा ठहर) अरे ओ बाह्मनी मिसराइन है कि मरगई—बोलती क्यों नहीं।

शशिकला—आयें मालूम घर मे तो कोई है भी नहीं यहां से हम कैसे जवाब देईं—दिन भर के भूखे होंगे मिसराइन न जाने कब आवै तो चलो हमी धर आवैं खाने को बैठक मे (एक हाथ मे दिया दूसरे हाथ मे थाली लिये बैठक में थाली रखने जाती है दूसरी ओर से बसन्त लाल का प्रवेश)॥

बसन्त—घर मे क्या कोई नही है सब मर गये (शशिकला को आते देख) हरामजादी घंटो से चिल्ला रहे हैं कुछ जवाब क्यों नहीं देती खाना क्यों नहीं तय्यार किया—

शशि०–हां हे तय्यार है लिये आती हैं॥

बसन्त–यहां ला, देखें क्या२ है [थाली देख] यह क्या अपना सिर लाई है। झुरुवा क्यों नहीं पकाया आज–लेजा हम नहीं खायेंगे हरामज़ादी, लुच्चिन तेरी शामत आई है एक दिन हम तुझे खूब ठीक करेंगे [लौटता है]॥

शशि०–हां हां किरोध छिमा करी जाव न आज बाम्हनी एकादशी भूखी रही माँस कैसे चुरवै। तनिक ठहरो हमीं तय्यार किये देती हैं। जानती होतीं की आज तुम आवोगे तो पकाय रखतीं झुरुआ। तुम्हारे आने का कुछ ठीक तो रहा नहीं कभी आए कभी न आए तुम छिन भर बैठो तमाखू ओनाखू पियो तब भर में हम तय्यार किये देतीं हैं॥

बसं०–तमाखू पियें तेरा सिर यहाँ अन्धखोपड़ी में बैठ तेरा जला चूल्हासा मुंह देख कृतार्थ हो जायंगे (जाने लगा)॥

शशि०–(आकुल भाव से सामने जाय हांथ से उसे रोक) सुनो२ जाव न तुम्हारे पांव पड़ी; तुम्हे हमरी किरिया बिना खाये चले जावोगे तो सारी रात हमारा जी करोता रहैगा तनिकसा बैठो हम सब तैय्यार किये देती हैं॥

बसं०–हरामज़ादी, हम सब तेरी हिकमत समझते हैं तू बहाने२ आज हमे घर में रक्खा चाहती है हट जा हमारे आगे से (हाथ से धक्का देता है वह थाली समेत गिर पड़ती है और आप गाली देता चला जाता है)॥

शशि०–(उठ कर) हाय नसीब कुछ बात भी कहना दुर्घट है–(सोच से) आज बिना खाये गये हैं वह भला काहे को खाने पीने को पूछैगी जैसा हमारा जी कम्लाता है वैसाही क्या उसका भी थोरे कम्लायगा; अरे तनिको जो ठहर जाते तो तुर्त हम सब तय्यार कर देतीं–

क्या हम जाने को मना करती रहीं फिर क्या हमारे कहे मान जाते घर में वे कब रहते हैं–हाय ऐसा नसीब जब से ब्याहि के आई हैं कभी आंख भर एक बार उनकी सूरत भी आज तक न देखा कि कैसे हैं काले या गोरे; और बात कौन कीखे एक बार घर में खाय आवते हैं तब भी सीधे से जो दो एक मीठी बात बोलैं तौहू जी जुड़ाय जाय सो भी नहीं केवल गाली और फिटकार, अच्छा सो भी सही आज खाय के जाते तो मन तो निश्चिन्त रहता दिन भर पीछू खाने आये सो वह भी मैं अभागिन के करान आज उन्हें मयस्सर न हुआ ॥

[शशिकला की एक परोसिन मङ्गला का प्रवेश]

मङ्गला–बहू कहाँ हो तनिक दूध······(देखकर अचरज से) एँ ई का अन्न काहे बिखरा पड़ा है बसन्तवा फेंक के चलागा है का–हां राह में किरोध में भरा कुछ बक्कत जाते मिला है–का भा रे बहू ॥

शशि०–[संकोच से मन की बात छिपाते] भवा का मौसी तीन दिन पीछे आज घर आयें रहा जो जानती होतीं कि आज आवैंगे तो मिसराइन को रोक रखतीं–खाने को माँगा मिसराइन तो रही नहीं हमी थाली लैके झपट के चली राह में गौ बंधी है मुतहरी में बिछलाय के गिर पड़ी यही देख उन्हें गुस्सा आवा बक झिक चले गये–यही सब सोंच २ रोरही हैं सारी रात भूखे रहैंगे इतना अन्न खराब गवा तौन अलग ॥

मङ्गला– हां तबै तो कहेउं काभा–एही से किरोध में भरा गा है ॥

शशि०–हमारे नसीब मौसी–भला तुमही बतलाओ हमार कौन कसूर–तनिक ठहरे भी तो नहीं ठहरते तो हम दुसरा खाना पकाय देतीं ॥

मङ्गला–बहू रानी तुम धन्य की हो जो सब बरदास करती हो । ओकर चाल तो जस बिगड़ी है वह कौन नहीं जानता घरवा में तो कबहूं एक छिन नहीं ठहरता का कीन जाय ॥

शशि०—जाय देव मौसी—उन्हें जिस्मे सुख मिले सो करैं—जैसी उन की मौज हो वैसे रहैं—हम सब में राज़ी हैं—आज खाय के जाते तो हमारा जी तो न करोटता—का लेन आई हो मौसी॥

मंगला—बहू तोरे समान सती सावित्री काहे को कहीं होंगी—हाय ऐसी बहू को ऐसा कलेस।

शशि०—[ठंढी साँस भर] तुम कौन काम से आई हो मौसी॥

मंगला—सिकहर पर दूध रक्खा रहा है बिलाई निगोड़ी घूमा करती है गिराय दिहिस लरिकवा दूध२ रोवत है तनिक दै डाल॥

शशि०—बरतन लाई हो चलो दें (दोनो गईं)

तीसरा गर्भांक।

मोहिनी का घर—

(मोहिनी और राधावल्लभ बैठा है पास बोतल और ग्लास रक्खा है)

राधा व०—प्यारी तुम्हारी बोल जैसी मीठी है वैसही तुम्हारी अक़िल भी तेज़ है—मानो छुरे की धार॥

मोहिनी—देख कहीं काट न डालै॥

रा०—व०—क्या मुज़ाका है काटडालो यह जान तुम पर तसद्दुक है [बोतल से मद्य ग्लास में उड़ेल] लो इसे तो छको [दोनो मद्यपान] भाई उस दिन तो बड़े दिक हुये॥

मो०—सो क्या?

रा०—ब०—उस दिन जब हम तेरे यहां से गये थे तब करीब ११ बजे का टाइम था घंटो तक दरवाज़ा खट खटाते रहे यहां तक कि चिल्लाते२ गला पड़ गया पर दरवाज़ा न खुला तब लाचार सो रात भर बाहर के चऊतरे पर पड़े रह गये। पासही नापदान था मारे बू के नांक सड़ती रही मसा सालों ने चोथ खाया नींद भी न पड़ी देखो ये बड़े२ ददोरे

पड़े हैं अब तक नहीं मिटे मानो शीतला निकसी हों [गात्र प्रदर्शन]

मो०—तो बचा तुम खूब छके अच्छा हुवा ।

रा०—ब०—उः कुछ परवाह नहीं लो जान साहब एक ग्लास तो और लो [दोनो मद्यपान] भाई तेरे में बड़ा साहस है ॥

मो०—क्यों क्यों क्या ?

रा०—ब०—यही कि जो तुझे रक्खे है वह यही समझता होगा कि तू उस के सिवा दूसरे को न जानती होगी पर तेरा कुछ और ही रङ्ग है जो तुझे खाना कपड़ा खरच पात सब कुछ देता है और सब तरह का धींगस उठाता है उसे गुल दै हमारे साथ अमोद प्रमोद करती है ।

मो०—अबे तू हम लोगों के रंग ढंग क्या जान सकता है भडुए । हम लोगों का काम ही है जिस्से राजी हों और जिस पर जी आजाय उस्से सब तरह हाज़िर हैं और जिस्से जी न चाहता हो वह चाहे कोट जतन करै उसे निबुआ नोन चटाय दें । हम लोगों ने केतनों को बन्दर बना रक्खा है जैसा चाहती हैं वैसा नाच नचाती हैं ॥

(नेपथ्य में केवाड़ा खट खटाने का शब्द)

रा०—ब०—[भय से चकित] यह कौन आया ॥

मो०—चुप चुप और कौन होगा वही निगोड़ा आया होगा [चिल्ला के] हां २ सुना है खड़े रहो । आती हैं क्या पानी बरसता है जो इतनी जल्दी कर रहे हो महरा कहां चला गया हम से कह गया जाते हैं तेल लेने तेल भी न लाया चिराग बुझ रहा है और आप न जानिये कहां सटक रहा ॥

[नेपथ्य में] महरा तो कहीं नहीं गया । सदर दरवाज़ा तो उसी ने खोला है । आज देखते हैं सीढ़ी तक का दरवाज़ा बन्द है । क्या रंग ढंग मचा रक्खा है ॥

मो०—(विकृत स्वर से) रंग ढंग मचा रक्खा है मरन॥

रा०—ब०—मोहिनी २ तो अब हम कहां जांय कहां लुकैं अब हमारी क्या दशा होगी—हम आज क्यों आये क्यों तूने आज हमे आने को कहा था अब हमारे बचाव की कोई सूरत निकाल किसी तरह—

(नेपथ्य में) दरवाज़ा क्यों नहीं खोल देती कब तक हम यहां अंधेरे मे खड़े रहैं॥

रा०—ब०—अब क्या करें कहां जांय [घबराया हुआ इधर उधर घूमता है]

मो०—(रा०—ब०—से) तुम इतना घबराते क्यों हो तुम्हे डर काहे की है [चिल्ला कर] हां हां सुनती हैं खड़े रहो आती तो हैं—बाप रे घोड़े पर चढ़े आये हो क्या खड़े रहो सावन भादों की रात बादल छाये हैं दिया भी बुझ गया हाथ पसारे नहीं सूझता दरवाज़ा न बन्द कर रक्खैं कोई चोर उचक्का घुस आवै तो कैसी हो [रा०—ब०—से] देखो एक काम करो अंगा और कुरता उतार डालो उस खूंटी पर हमारी धोती और चादर रक्खी है उसे पहिन लो॥

(नेपथ्य मे) अरे तो दरवाज़ा फिर कब खुले गा॥

मो०—(चिल्ला के) आज कौन ऐसी कमाई कमाय के आये हो जो थोड़ा सबर नहीं किया जाता दिया बुझ गया जलालैं दिया सलाई का बाकस निगोड़ा भी न जानिये कहां छिपाय गया घड़ियों से ढूंढ रही हैं मिलताही नहीं—(रा०—ब०—से) पहन लिया धोती चादर भी ओढ़ लो घूंघट काढ़ चुप चाप जा बैठो उस कोने मे—दिया सलाई हाथ में ले ऊंचे स्वर से—दिया सलाई ऐसा सिहलाय गई है कि इतनी एक घिस-डाला जलती ही नहीं—सस्ती ढूंढ कर लाते हैं इन्हे तो जिसमे पैसा बचै सो करना (दिया सलाई जलाय मुह से फूक उसे बुझा देती है) मुई एक भी न जली घंटो से सिर मार रही हैं॥

(रा०—ब०—से) होगया बस, पलंग के पास बैठो जाय खबरदार सनकना

नहीं न किसी ओर ताकना न कुछ बोलना (दिया जलाय बोतल ग्लास इत्यादि हटाय दरवाज़ा खोलने जाती है और उसके साथ फिर आती है)

मो०-(रो रो कर) तुम जो हमे इतना चाहते हो खरच पात सब देते हो यह देख इस मुहल्ले के लोगों की छाती फटती है न जानिये किस अधम पापी ने हमारी मा से जाय कहा है कि तुम्हारी बिटिया को हैज़ा होगया है सो मा हमारी अधीरज हो न कुछ खाया न पिया भूखी प्यासी हफटाती २ आई हैं-आया चाहैं हमारे सिवाय दूसरा उन के कौन है (हांथ से दिखाय) हो देखो बैठी हैं ॥

ब०-(चकित हो) मा आई हैं ऐसे बज्जात लोग भी हैं ऐसों को मौत क्यों नहीं आती-न जानिये यह कौन सा बदमाश आदमी था जिसने मा को इतनी तक़लीफ़ दिया-हम समझते हैं यह वही राधा वल्लभ होगा वह साला तीन चार दिन हुये तुम्हारा नाम ले ले हम से ठट्ठे-बाज़ी करता था और बहुत सी सख़्त२ बातें भी कहा था निश्चय यह उसी का काम है [सोचकर] ज़रूर वही है इस मुहल्ले मे दूसरा कोई नहीं है जो हम से ऐसी बज्जाती करे ॥

मो०-वही हो या दूसरा कोई, मा हमारी दिन भर की भूखी हैं जल तक नहीं पिया हमारा छुआ खांयगी नहीं इस लिये कि हम खानगी वेश्या होगई जातिहू गई धर्महू गया तुम सत्कुल हो तुम्हारा छुआ अलबत्ता खांयगी ॥

ब०-अच्छा हम लाये देते हैं खाने को उनके लिये ॥

मो०-ऊ बिधवा हैं तीरथ बरत सब कर आई हैं सिवा पेड़ा के और कुछ न खांयगी ॥

ब०-अच्छा तो हम जाते हैं [प्रस्थान]

मो०-[हंसकर रा०-ब०-से] मा घूंघट खोलो एक गिलास और

लो [दोनो मद्यपान] ॥

रा०-ब०-मोहिनी तू बड़ी चालाक है सूजी को खूबही चंगुल में फसा रक्खा है ॥

मो०-[मुसकिरा कर] अभी तुमने देखा क्या है तानपूरा तब तक दुरुस्त नहीं होता जब तक अच्छी तरह उस्का कान न मला जाय ॥

रा०-ब०—भाई तू जो चाहे सो करे हम तो अब यहां से भागते हैं। क्या जानिये पकड़ जांय तो बड़ी मुसीबत झेलना पड़ेगा ॥

मो०-अबे तू इतना डरता क्यों है देख तो अभी हम उस्की क्या २ दशा करती हैं। तुझे किसी ढंग से यहां से निकालेंगे नहीं तो सुआ शक करेगा हम पर। लो एक गिलास और तो छको [दोनो मद्यपान] ॥

नेपथ्य मे-दरवाज़ा फिर बन्द कर लिया ॥

रा०-ब०-हो आगया [पूर्ववत् फिर वैसही बैठ जाता है]

मो०-खड़े रहो आती हैं दरवाज़ा न बन्द कर लें तो क्या खुला छोड़ रक्खें [दरवाज़ा खोल फिर दोनों आते हैं] ॥

ब०-[पेड़ा मोहिनी के आगे रख] लो मा को दे खांय ॥

मो०-मा हमारे घड़े का पानी न पियैंगी एक लोटा पानी भी भर ला दो ॥

ब०-अच्छा [जाता है]

मो०-[रा०-ब०-के पास जा] मा लो पेड़ा खाओ ॥

रा०-ब०-पेड़ा कौन साला खाता है जो इस समय खाना चाहिये सो खाँयगे [दोनो मद्यपान] ॥

मो०-अच्छा तो इसे बांध ले लाया है तो क्या खराब होगा ॥

[बसन्त का प्रवेश]

हमने नाहक तुमको इतना क्लेश दिया पहले से हमे कुछ सुध न

रही आज एकादशी है मा निराजल व्रत करती हैं कुछ खांयगी नहीं और आज रातही के जांयगी रहैंगी भी नहीं। पासही उन के गांव का एक आदमी रहता है उसके घर टिक रहैंगी काल भोर भये जांयगी घर ॥

ब०-यह क्यों मा से कहो अभी रहैं दो एक दिन थकी मांदी आई हैं कहां जांयगी ॥

मो०-यह सब हम पहले ही कह चुके पर मा राज़ी नहीं होतीं रहने को हां भले सुध आई तुमने उस दिन कहा था हम बनारस जाते हैं तुम्हारे लिये झूमड और करनफूल अवश्य लावेंगे। ऐसे२ छछन्द भी तुम्हे याद हैं इतनी दगाबाज़ी तुमने किससे सीख रक्खा है ॥

तीन दिन बीत गये खबर तक न ली हम जान गई तुमने और कहीं भी कुछ सट्टा पट्टा लगा रक्खा है ॥

ब०-नहीं हम सच बनारस गये थे हम कभी तुम से झूठ न बोलैंगे सिर की कसम हम लाये हैं झूमड़ और करनफूल तुम्हारे लिये। हमारा तो तन मन धन सब तुम्हे छोड़ हम किसी दूसरे को रक्खैंगे लो यह झूमड़ और करनफूल [देता है] ॥

मो०-[लेकर हां गढ़न तो इसकी बहुत अच्छी है तनिक कुन्दन नहीं अच्छा किया गया चलो लाये सो लाये[धीरे से] मा आई हैं और जाने भी कहती हैं रहैंगी भी नहीं रात के ऐसही चली जायं यह भी अचछा नहीं लगता भला और कुछ न हो सके तो एक धोती तो इन्हें ज़रूर चाहिये ॥

बसन्त-हां कहती तो ठीक हो पर एतनी जून लावैगा कौन महरा साला तो न जानिये कहाँ चला गया आने दो साले को कलही जवाब देंगे अच्छा तो हमी जांयगे ॥

मो०-अच्छा तो फिर जानाही है तो जल्दी जाओ नौ बज गए हैं दूकान

बन्द हो जायगी तो फिर कहां पावोगे ॥

बसन्त-हां हे जाते तो हैं [गया] ॥

मो०-क्यों बचा तुम डरते थे कैसी उस्तादी किया कि तुम्हे तनिक दाग भी न लगने पाया-हम लोग बाज़ार की बैठने वाली हैं जिसे हम चाहैं उस के लिये प्राण तक दे डालैं सिर्फ़ जी आना चाहिये और जिसे हम बिगाड़ा चाहैं उसका निस्तार भी कहीं नहीं है ॥

रा० ब०-हां यह तो ठीक है पर ऐसही एक दिन तुम हम को भी छकाओगी तुम्हारा कौन बिश्वास "एक नार जब दो से फसी जैसे सत्तर वैसे असी" ॥

मो०-[हंसकर] तुम्हारे ऊपर तो हम तन, मन, धन, जो कुछ कहो सब वार डालैं तुम हमारी मा हो तुम्हारे पेट से हम पैदा भई हैं हा, हा, हा, हा, [हसती है] ॥

नेपथ्य में—मोहिनी ३ ॥

रा०-ब०-हो तुम्हारी मां फिर आई (घूंघुट काढ़ वैसाही बैठ जाता है।

मो०-खड़े रहो आती हैं [द्वार खोल देती है]

बसन्त-लो मा को दो [थोड़ा ठहर] मां कोरा कपड़ा लेकर जाँय इसमें हमारा जी खुश नहीं होता मा से कहो इसे पहन लें और खाली हाँथ उनको यहां से जाना भला नहीं मालूम होता माँ तो ब्राह्मनी हैं न ?

मो०-हां हमार माँ उपाध्या के घर की हैं।

बसन्त-तो इन्हें कुछ दक्षिणा पैलगी भेंट भी देना चाहिये [पांच रुपया उसके पांव तले रख साष्टांग प्रणाम] ॥

मो०-अच्छा तो तुम बरामदे में जाय बैठो तुम्हारे सामने मां धोती कैसे पहनैं ॥

बसन्त-अच्छा हम जाते हैं मां से कहो पहिनै [आड़ में हो जाता है]।

मो०-मा लो इसे पहिनो [कृत्रिम रुदन के स्वर से] मां हमारी सुध बनाये रहना-तुम्हे छोड़ अब कौन दूसरा हमारे है जब तक तुम जीती हो हमारे बाप का नाम तो बनाये हो [धोती पहिनाय उसे बिदा करती है]॥

ब०-[आकर] ऐं यह कैसा हमारी बीनाई में क्या कुछ फ़र्क पड़ गया है-मा आईं यह तो सुना पर मा जब नई धोती पहनने लगीं तब छाया जो पड़ी सो तो कुछ औरही तरह की थी॥

मो०-[कृत्रिम बिस्मय पूर्वक] ऐं क्या कहा छाया जो देख पड़ी-धिक्कार तुझे लाज नहीं आती-मा हमारी बुढ़िया मुहजरे झांकता था॥

ब०-नहीं २ सो नहीं किन्तु छाया में मर्द का आकार था छाया स्त्री और पुरुष की अलग २ होना चाहिये सो तो मा की छाया में न था॥

मो०-[अधिक क्रोध से] फिर वही कहता जाता है मुहजरे निगोड़े तूने हमारी मा को झांका था-तुझे शक है वह मा नथीं कोई पुरुष था हम साफ़ कहे देती हैं तुमको हमारे ऊपर कुछ शक है तो इसमें लल्लो पत्तो काहे की है तुझको हमे रखना हो तो रख नहीं तो नहीं सही-जैसा तुलसी राम से, वैसा राम तुलसी से-जैसा तू हमसे बर्तैगा वैसाही हम भी तेरे साथ बर्तैंगी सीधे से रहैगा तो सब सही नहीं तो मोहनी तेरी नहीं तेरे बाप की नहीं॥

ब०-मोहनी देखो क्रोध मत करो हमने साफ़ २ देखा ज़रूर कुछ दाल में काला है [क्रोध से] चुप रह बहुत बड़ २ मत कर हरामज़ादी हम सब समझ गये जैसी तू है वह भी जैसी तेरी मा है सो भी हम जान गये।

मो०-जान गया तो क्या करेगा भडुये हमारा, जा अपना मुह काला कर यहां से डाढ़ीजार [मारती है और हाथ पकड़ निकालने लगती है]॥

ब०-यह क्या तेरा मकान है भाड़ा तो मकान का हम देते हैं चौकीदारी

टिकस देते हैं पइप का देते हैं, तेरा मकान है नमकहराम बेईमान हरामज़ादी ॥

को०—तेरा मकान है हम बेईमान नमकहराम हैं—अच्छा तूही रह यहां हम अपनी जिनिस पात ले चली जातीं हैं एक छन भी न ठहरैंगी सिर खा गया निगोड़ा (गाली देते निकली जाती है) ॥

ब०—उः हरामज़ादी मानो काली सापिन कर्म्मदराज़ी के बल सब छिपाया चाहती थी वह अवश्य मा न थी कोई पुरुष था (पलंग के नीचे देख) यह क्या बोतल और ग्लास है साले ने मद पिया है मालूम–उः ऐसा धूर्त जो हमने समझा था वह किसी तरह झूठ न था साली ने हमे कितनी गालियां दी मार भी गई (छड़ी देख) यह छड़ी भी उसी की है गठरी के भीतर न समा सकी इस्से छोड़ गई इस्में लिखा क्या है R. राधा B. बल्लभ D. दास–हां अब निश्चय हुआ यह वही साला था क्या कहैं पहले से जानते होते तो साले को खूब छकाते–हा बड़े शरम की बात है जो कोई इस हाल को सुनेगा हमे गदहा बनावेगा किन्तु इस गदहेपन का कारण क्या है वही हरामज़ादी (सिर पर हाथ रख) यह क्या फूल आया है रुधिर भी बह रहा है हरामज़ादी ने ऐसा मारा कि लहू निकल आया—हा धिक अब हम संसार में क्या मुह दिखलावेंगे—हा उस राक्षसी ने हम पर क्या मोहनी छोड़ दिया था कि हमने अपनी व्याही सती स्त्री को कितना दुख दिया कभी मुह भर उस्से बोले भी नहीं–जब से उसे व्याह के लाये कभी एक दिन घर में न रहे–उसी पतिव्रता सती सावित्री के सराप से हमारी यह दशा हुई–हाय हम से किसी तरह का सुख उस्को न मिला स्त्री और पुरुष में जो बात होना चाहिये वह दूर रहे हमने पेटभर अन्न और तन ढापने को कपड़ा तक उसे न दिया—हा धिक्कार मुझ अधम पापी को मैं किस नरक में

ढकेला जाऊंगा–आज सांझ ही से चले आये खाया भी नहीं थोड़ा ठहरने को कहा सो भी न किया बरन व्यर्थ ही गाली गुफ़ा दिया और मारा भी–सबेरे से अभी तक एक घूंट पानी भी मुह में नहीं गया–कम्बख़्त हरामज़ादी ऐसी बात बोलती थी मानो हमे छोड़ कभी किसी को सपने में भी नहीं देखा–हमारे समान गदहा दूसरा कौन होगा चलते २ हमसे सैकड़ों का माल झूमड़ और करनफूल फंस ले गई–सच है जिस्का जैसा काम होता है उस्को वैसही परिणाम मिलता है (सभा की ओर) दर्शक महाशयो देखिये बचे रहना यही परिणाम कहीं आप लोगों को भी न भुगतना पड़े–(जवनिका पतन) इति ॥

सफ़ाई मे त्रुटि।

बम्बई की महामारी कहीं इस ओर भी अपना प्रकाश न करे इस भय से इन दिनो शहर में सफ़ाई के लिये बड़ी फिकिर हो रही है और बहुधा शहर में जहां हमेशा गन्दगी रहती थी वहां भी अब साफ़ रहने की फिकिर हो रही है। अभाग से किसी म्युनिसिपल मेम्बर का ध्यान सफ़ाई में इस बड़ी भारी त्रुटि पर आजतक न गया तो लाचार अब सूचित करना पड़ा। उस कंबख़्त की अक़िल को क्या कहें जिसने शहर में जगह२ खुली नाली का क्रम शुरु में निकाला है। वह नाली जो गंगादास की चैाक से थोरी दूर पटी रह कर खेमा की नीम के तले फिर खुली होकर बहा करती है अपने दोनो ओर के रहने वाँलों के लिये भयंकर मृत्यु और नरक का पूरा सामान है। खासकर उस समय जब मेहतर साहब दिन में कईबार चहबचों के पानी की गाड़ी उड़ेलने लगते हैं। हज़ार२ सिर पटका पर मेहतर साहब के शाहाना मिज़ाज

में उस्का कुछ असर न हुआ। हम नहीं कह सक्ते कैसी पीड़ा हम लोगों को होती है जिस समय वह इत्र का कराबा उड़ेला जाता है और इस खुली नाली से होकर बहने लगता है उस्की बू से दिमाग परागन्दा हो घंटो तक उस दुर्गन्धि का असर नहीं दूर होता। गरीब लोग जिन को इस दुर्भिक्ष के समय पेट चलाना दुर्घट हो रहा है ज़रासा नावदान बहने पर तलब किये जाते हैं और जुर्माने की यातना भोगते हैं। नावदान की मरम्मत में रुपया आठ आना ऐसे गाढ़े समय कैसा कर्रा है। इस्का खयाल किसी को नहीं होता जहां दिन में कई बार जब इस तरह दुर्गन्धि का दरिया उमड़ैगा तो वहां के इर्दगिर्द की दुर्वायु का बिकार कितना रोगकारी होगा—बबा का किबलेगाह हरदम हम लोगों के सिर पर सवार रहता है न जानिये कौन सी पुन्याई है जिस्से बचते चले आते हैं। और २ नालियों में न जानिये के हज़ार गेलन पानी नित्य सुबह शाम घंटोंतक धारासा बहा करता है यहां हमारे लिये पानी की इस इफ़रात पर भी मरुभूमि सी हो रही है। पहले महीनो तक इस्मे धोने के लिये पानी का आना बन्द रहा अब कुछ दिनो से बरायनाम को थोड़ी देर के लिये उस्मे पानी आता है सो इतना नहीं कि अच्छी तरह उस नाली की सफ़ाई हो जाती। मेहतर साहब बहुधा पानी उस्मे तभी गाड़ियों में भर २ उड़ेलते हैं जब नाली साफ़ हो चुकी—यह खुली नाली अत्यन्त घनी बस्ती के बीच हो कर गई है जिस्मे सफ़ाई की बड़ी ज़रूरत है। मेहतर पानी की गाड़ी दूर शहर के बाहर गुजराती मुहल्ले के नाले में पहले फेकता था वहीं फेकने का उसे हुक्म भी है अब अपनी मेहनत के बचाने को इसी नाली में फेकता है जो अत्यन्त गम्भिन बस्ती के बीच होकर गुज़री है। मेहतर के साथ म्युनिसिपालिटी के लोग इतनी रियायत करें हम लोगों का सुख और आराम कोई चीज़ नहीं हैं। इस तरह की बातों को लिखना

बड़े झंझट का बाइस समझ हमने बहुत दिनो से इसे छोड़दिया किन्तु अब देखते हैं तो ऐसी सफ़ाई की धूम में इसे एक बार चिता देना अवश्य है हो चाहो न हो ॥

स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा बिशेष प्रसंशनीय हैं ।

इन दिनों नई रोशनी के सभ्य समाज वालों ने यही निश्चय कर रक्खा है कि संस्कृत न केवल मुर्दा ज़बान है अपिच इसमें निरा कूड़ाही भरा है—इस लेख से हम उन्हें यह दिखलाया चाहते हैं कि संस्कृत के अथाह साहित्य को ढूंढो और उसमें डुबकी मारो तो ऐसे २ रत्न निकल सकते हैं जो इन दिनों के अंगरेज़ी खयाल और अंगरेज़ी सभ्यता के साथ न सिर्फ़ टक्कर मार रहे हैं बरन कुछ दरज़ा उसके ऊपर हैं—नई सभ्यता वाले हमे बदनाम करते हैं कि हिन्दुस्तान में स्त्रियों के साथ पुरुषों का बर्ताव निरी गुलामी का है—बच्चा जनने की कल Child producing machine उन्हें बना रक्खा है ग्रन्थकारों ने इनको निन्दनीय ठहराय हर तरह पर घटाया है किन्तु यह उनकी गलत फ़हमी है—स्त्रियों की ओर जैसा कुछ हम लोगों का बर्ताव रहा और जैसी उनकी कदर रही वह इन श्लोकों से प्रगट है—और अब तो हम सब तरह पर बिगड़े हुये हमारी सभी बात अनर्गल है तो इस बिषय में भी बिगड़े तो कौन अचरज है ॥

बाराह मिहर लिखते हैं :—

जाया वास्याज्जनित्रीवा सम्भवः स्त्रीकृतो नृणाम्।हे कृतघ्ना स्तयोर्निन्दां कुर्वतां वः कुतः सुखम् ॥ नशतेनापि वर्षाणामपैति मदनाशयः । तत्राशक्त्या निवर्तन्ते नरा धैर्येण योषितः ॥

अहो धाष्टर्यमसाधूनां निन्दतामनघा स्त्रियः। मुष्णतामिव चौराणां तिष्ठचौरेति जल्पताम्॥ वहिर्लोम्नातुपरामासान् वेष्टितः खरचर्मणा। दारातिक्रमेण भिक्षां देहीत्युक्त्वा विशुध्यति॥ ये प्यङ्गनानां प्रवदन्ति दोषान् वैराग्यमार्गेण गुणान् विहाय। ते दुर्जना मे मनसोवितर्कः सद्भाव वाक्यानिनतानि तेषाम्॥

एडिटरों की टर टर।

हिन्दी पत्रों के जितने सम्पादक हैं सबों को मैं जानता हूं जो कुछ और जितनी उनकी पूंजी है उसे भी हम अच्छी तरह जानते हैं। बहुधा तो हिन्दी की दो एक किताबें पढ़ पढ़ाय तुलसी दास की रामायण या मिडिल क्लास में जो गुटका प्रचलित है वह उनकी हिन्दी की लियाकत का छोर है। बस इतनीही पूंजी से वै संपादक बना चाहते हैं-शुद्ध संस्कृत शब्द लिखने का भी उन्हे शऊर नहीं है तब संस्कृत का व्याकरण या संस्कृत का साहित्य समझना तो बहुत दूर है इस पूंजी पर हिमाकत उन्हे यह है कि हम ऐसों पर बहुधा आक्षेप कर अपनी कलई खुलाया चाहते हैं। उन्हे चाहिये हमारा लेख पढ़ैं और लिखना सीखैं न कि हम पर बहुधा आक्षेप करते हैं। हम कहते हैं एक पेज भी तो ऐसा वे लिख लें जैसा हमारा लेख होता है। हम चाहो ६ महीने में एक बार प्रकाश हों पर अपने लेख से पढ़ने वालों का मनोरंजन अवश्य कर देंगे। हाल में बेंकटेश्वर समाचार के किसी पत्र प्रेरक ने हम पर कुछ ताना लिखा है। अभी तो बेंकटेश्वर जी जन्मे हैं कुछ दिन चलैं तो जानेंगे कि लेख और पत्र चलाना कैसा होता है॥

श्रद्धाप्रकाश।

जिस्मे फिल्लौर निवासी पं० श्रद्धाराम जी का जीवन चरित्र है इस जीवनी को उक्त पण्डित जी के शिष्य साधु तुलसीराम ने लिखा है—ग्रन्थ कर्ता ने तो अपने गुरू की बहुत ही बहुत तारीफ़ की है जिस्मे पं० श्रद्धा राम जी की जीवनी में लोगों की श्रद्धा अधिक हो पर सो न हो पढ़ते २ जी ऊब जाता है। अस्तु श्रद्धाराम जी सज्जन पुरुष हो गये हैं ग्रन्थ संग्रह के योग्य है॥

धर्म सम्वाद।

अर्थात् पं० श्रद्धा राम के धर्म सम्बन्धी उपदेशों का संग्रह—कोई २ बात इस पुस्तक की वास्तव में उत्तम उपदेश की हैं और पढ़ने योग्य हैं—मूल्य ।=) है। इस पुस्तक को भी साधु तुलसीराम ने संकलित किया है—मिलने का पता पण्डितानी महताब कुंवर हरिज्ञान मन्दिर फुल्लौर ज़िलह जालन्धर॥

मुहूर्तचिन्तामणि।

भाषा टीका सहित—माथुर चतुर्वेदी पं० प्रभु दयाल पांड़े द्वारा संपादित—अनुबाद की भाषा बहुत उत्तम और मूल ग्रन्थ के शब्दार्थ से मिलती हुई है—बंगवासी प्रेस कलकत्ता में छपी है मूल्य ॥) है॥

हिन्दीप्रदीप

261

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २० सं० ५-६-७ } प्रयाग { जनवरी-फरवरी-मार्च १८९७ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १।=)

नमूने की कापी =)॥

१-५-९७

हिन्दीप्रदीप

जिल्द २० } प्रयाग { जनवरी । फरवरी । मार्च
संख्या ५।६।७ } { सन् १८९७ ईसवी ॥

कृषि की कर्षित दशा ।

ऐसे दुर्घट समय में जब हम सब भाँति निरुद्यमी निरुत्साही सब ओर से जकड़े हुये अभागे और आलसी हो रहे हैं इस देशके लोगों को सुगम रीति से जीविका प्राप्त करने की सहज उपाय केवल खेती बच रही है—जिस्के द्वारा अधिकाँश यहाँ के रहने वाले सुख से कालक्षेप कर सक्ते हैं—उस खेती पर दैवी मानुषी तथा राजकीय इतने उपद्रव आ लगे हैं कि प्रतिवर्ष फसल पूरी उतर आना दुर्घट हो रहा है—यह यहाँ की उपज है कि समस्त यूरोप को इस समय भोजन दे रही है—न केवल भोजन मात्र बरन नील रुई चाह पेटुआ तीसी आदि भी जिस्से उनकी सभ्यता की सामिग्री सब तरह पर सम्पादित हो रही है—और उनके रङ्गबरङ्ग के अनेक चटकीले शिल्प और कारीगरी सब की इज़्ज़त बनी है—एक साल हिन्दुस्तान यूरोप को अपनी उपज न दे तो इङ्गलैण्ड फ्रान्स जरमनी आदि देश की जिनको अपनी दस्तकारी और शिल्प का बड़ा अभिमान है सब की कलई खुल जाय—और २ देशों में जब २ दुर्भिक्ष हुआ है हिन्दुस्तान बराबर अन्न सम्पादन करता रहा अन्न के

कष्ट से भूखा एक मनुष्य भी उन २ देशों में नहीं मरने पाया—इस बर्ष हिन्दुस्तान में दुर्भिक्ष हुआ तो किसी देश की हिम्मत न पड़ी कि भारत की प्रजा को अन्न का कष्ट न उठाने से रोक रखता—सच तो यों है कि इन खेतिहरों के बराबर दियानतदार, उदार, शान्त, प्रकृति, सरल, सन्तोषी और सच्चा दूसरा कोई न होगा यह इन्हीं खेतिहरों की मेहनत और नेकनीयती का फल है जिस्से न केवल क्षुधा की शान्ति होती है बल्कि राजाओं की रजई, अमीरों की अमीरी, शौकीन फेशन परस्तों का फेशन, महाजनों की महाजनी, रोज़गारियों का रोज़गार दानियों को दातृत्व, महत्तरों का महत्व सब निभता जाता है—कृषक जिस जून निर्विघ्न अन्न काट खलिहान से उठाय अपने घर ला रखता है उस समय अच्छी उपज हुइ तो बादशाह को भी कुछ माल नहीं गिनता अपनी उदारता और दानशीलता से करन और बलि ऐसे बिख्यात दानियों को भी अपने नीचे किया चाहता है—इन दिनों के सुशिक्षित पढ़े लिखे स्वच्छन्दता २ पुकार रहे हैं कृषि से बढ़ कर स्वच्छन्द व्यवसाय दूसरा कौन होगा—इस्को स्वच्छन्द व्यवसाय समझ वाल क व ने महिष शतक में खेती के सहारे राज सेवा की बड़ी जीट उड़ाया है—यह कबि नागपूर के भोंसला राजा की बेकदरी से अत्यन्त खिन्न हो भैंसे पाल खेती का अपने लिये स्वच्छन्द व्यवसाय निश्चय कर भैंसे की प्रशंसा के सौ श्लोक बड़ी ही उत्तम उक्ति युक्ति के रचे हैं—जिस्में हर तरह पर उन्हों ने भोंसले को भैंसे से भी निकृष्ट ठहराया है और खेतिहर को राजा से भी बिशेष सुखी और बड़ा अपनी कवित्व शक्ति के बल निश्चय किया है—जिनकी अनूठी कविता के कुछ उदाहरण हम यहां उध्रित करते हैं—

अश्लैभाँति ननु श्रुतिः श्रुतिपथं प्रायः प्रविष्टा न किं ।
सौख्यं वा हलजीविना मनुपपमंभ्रातर्न किं पश्यसि ॥

किं वक्ष्ये तदपि क्षितीश्वरवहिर्द्वारप्रकोष्ठस्थली।
दीर्घावस्थिति रौरवाय कुरुषे हा हन्त दीर्घस्पृहाम्॥

वेद के ब्राह्मण भाग में यह एक श्रुति है "अक्षैर्मादीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्तेरमस्व बहुमन्यमानः"—कोई ऋषि अपने बालक को समझाते हैं—"जुवा मत खेलो थोड़ी खेती करो जो कुछ धन उस्से पैदा हो गनीमत मान उसी में प्रसन्न रहो" कवि कहता है "अक्षैर्मादीव्यः" यह श्रुति तुम्हारे कानों में नहीं पहुंची क्या—भाई हल से जीविका करने वालों को जो सुख है उसे क्या तुम नहीं देखते—खेद होता है—क्या कहें तब भी तुम रौरव नरक तुल्य राजद्वार में चिर काल तक ठहरने की अभिलाषा रखते हो—

तानाश्रित्यचिरं खलान्मधुमुचा वाचा च नुत्वा वहु, श्रान्तोहं विफलश्रमस्तदुपरिद्राग्वैश्यकर्माश्रितः। निष्कान्यद्य शतं वितीर्य महिषाभिख्यानुपेत्य प्रभून् सम्यक् तैः परि रक्षितश्च कृति वित्स्तौम्यद्य हर्षेण तम्॥

मीठी २ बाणियों से तीन २ राजाओं की बहुत दिनों तक प्रशंसा करते २ हम अत्यन्त थक गये और उनकी सेवा में जो हमें परिश्रम हुआ सो सब व्यर्थ गया फल की सिद्धि कुछ भी न हुई—तब हम सौ निष्क का भैंसा मोल ले खेती कर रहे हैं जिस्से हमारी रक्षा हो रही है—इस्से हमारे प्रभुवर तो महिष देव हुये इसीलिये प्रसन्नता पूर्वक हम उनकी स्तुति करते हैं—

यो यं रक्षति तस्य स प्रभुरति स्पष्टंहि मद्दक्षिणो
राजच्छ्री महिषान्विनुत्य सफलं कुर्वन्द्यवाग्वैभवम्।

मत्पीडानिरतान्मदीय महिमाभिज्ञानशून्यान्प्रभू
न्यन्निंदामि निशम्य तद्गुणविदस्तुष्यन्तु सन्तोनृपाः ॥

जो जिस्की रक्षा करता है वह उस्का मालिक है यह बात स्पष्ट है मेरी रक्षा महिष राज से हल चला कर खेती के द्वारा होती है तब मैं अपने मालिक की स्तुति से वाणी को सफल करता हूं—मेरे गुणों को न जानने वाले मुझे दुख देने में तत्पर राजाओं की निन्दा करता हूं-जिसे सुन अच्छे राजा लोग अवश्य प्रसन्न होंगे॥

मता वित्तमदैर्दुराग्रहभृतश्चण्डालखण्डासुता
येऽमी दुर्धनिकानिकामकलुषव्याहारकौलेयकाः।
तेषां वक्त्रविलोकनात्तव वरं स्थूलाण्डकोशेक्षणं
येन श्रीमहिषेन्द्र लभ्यत इह प्रायेण मिष्टाशनम् ॥

कवि अविवेकी धनी और राजाओं की जीट उड़ाता हुआ हास्य करता है—धन के मद से मतवाले हठीले रांठ के साँड़ इन धनियों का मुख देखने से हे महिषेन्द्र तुम्हारा स्थूल अण्डकोश देखना उत्तम है जिस तुम्हारी कृपा से नित्य मधुर भोजन कृषि के द्वारा हमे प्राप्त होता है॥

नानाजीप्रभु चन्द्रभानुशहजीन्द्रानन्दरायादयो
विद्वांसः प्रभवोगताः श्रितसुधा सन्दोह जीवातवः।
विद्यायां विषबुद्धयोहि वृषलाः सभ्यास्त्विदनींतनाः
किं कुर्वेम्व कृषे व्रजामि शरणं त्वामेव विश्वावनीम् ॥

आश्रितों के जिलाने में सुधासन्दोह के सदृश अपने प्रभुवरों के न रहने का खेद प्रकाश करता हुआ कवि राजा के आधुनिक प्रधान सभासद शूद्रों की विद्या बुद्धि में बिष तुल्य मान उन से किसी तरह की सहायता

की ओर से निरास हो कृषि को सम्बोधन में रख कहता है विश्व को जिलाने वाली हे अम्ब कृषि अब तुम्हीं हमारे लिये शरण हो—

श्रुत्वैतं महिषप्रबन्धमिह ये भूपागुणाग्राहिणस्ते
बुध्वा निज दुर्गुणान्कविमुखात्तद्व्यंगमर्यादया।
अद्रोहेण निजाः प्रजा इव यथाधर्मम्प्रजारक्षितुं
कुर्वन्तु स्वकुलक्रमागतनरान्देशाधिकारोचितान् ॥

कवि अपनी कविता का फायदा दिखलाता है—व्यङ्गोक्ति पूर्ण मेरे इस महिष शतक प्रबन्ध को सुन राजा लोग अपने दुर्गुणों को पहचान किसी तरह की द्रोह बुद्धि बिना मन में लाये बाप दादा के समय से जो कर्मचारी होते आये हैं उन्हीं को राज काज में लगाय निज पुत्र के समान धर्म पूर्वक प्रजा का पालन करेंगे ॥

न ब्रूषे परुषं नजल्पसि मृषा वादान्नगर्वोन्नतिं
धत्से प्रत्युत लांगले विनियुतः संक्लेशयित्वावपुः।
मर्त्यानामनुपाधिजीवनंकृते त्वं कल्पसेकासर
त्वय्येवं सतिदुर्नृपाननुसरन्हन्तास्म्यहो वञ्चितः ॥

हे महिष देव तुम जघन्य राजा और लक्ष्मी मद मदान्धों की तरह निठुर बाक्य नहीं बोलते, न झूठ कोई बात कभी कहते हो—न अभिमान में फूल कभी उद्धत होते हो, प्रत्युत हल में जब जोते जाते हो तो क्लेश सह मनुष्य के लिये बिना किसी उपाधि के जीविका देने में समर्थ हो, ऐसे२ सद्गुण वरिष्ठ तुम्हारे रहते भी हम दुर्गुणी राजाओं की सेवा और खुशामद में दौड़ते हुये अवश्य ठगे गये ॥

त्वं क्रीतोसि मयापणैः कतिपयैर्भर्तुं कुटुम्बं निजं
त्वन्तु प्रागधमर्णतामिव भजन् स्वांक्लेशयित्वातनुम्।

नानाधान्य समुद्भवैर्यदकरोस्त्वं मांतथानिर्वृतं
तत्ते श्रीमहिपादभुतैरुपकृतैः क्रीतोस्मि मूल्यंविना ॥

तुमको हमने कुछ मूल्य दै खरीदा है इसलिये कि तुम्हारे द्वारा हम अपने कुटुम्ब का पालन करैं—तुमने पहले ही से हमारे ऋणी अपने को मान अपने शरीर पर अनेक क्लेश सह तरह २ के अन्न की पैदावारी से जो हमे अत्यन्त सुखी कर रहे हो इस तुम्हारे उपकार से हम बिना मूल्य मानो तुमसे खरीद लिये गये—इत्यादि प्रसंग प्राप्त बाल कवि की कविता के कुछ थोड़े से उदाहरण यहां दिखाये जिस्से पढ़ने वाले को बाल कवि की कवित्व शक्ति का परिचय हो जायगा दूसरे यह कि इससे अच्छी तरह सिद्ध हो जायगा कि खेती कितना स्वच्छन्द व्यवसाय है ॥

प्राचीन समय जब देश में आर्य जाति का पूर्ण प्रकाश था जब मुसलमान या अंगरेज़ तथा दूसरी जाति के पादस्पर्श से भारत भूमि मलिन और दूषित नहीं हुई थी कृषि कर्म केवल वैश्य जाति का था " कृषि गोरक्ष वाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् " तब ईश्वर की कुछ ऐसी देन थी कि समस्त देश का देश केवल थोड़े से लोगों के परिश्रम का फल भोगता था और इतनी अधिक उपज होती थी कि तमाम मुल्क के लिये काफी थी—अब ब्राह्मण से ले चमार पासी तक यावत् मनुष्य खेती की ओर झुक पड़े हैं तो भी इतनी उपज नहीं होती कि अन्न का कष्ट न सहना पड़े—इसके कई कारण हो सक्ते हैं—सब से बड़ा कारण राजदेयकर है जो तब सम्पूर्ण उपज का केवल छठवां भाग लिया जाता था कालिदास ने भी रघुवंश में लिखा है " षष्ठांश मुर्व्या इव रक्षितायाः " अब गवर्नमेंट आधे से ज़ियादह निचोड़ लेती है—दूसरे तब की पैदावरी बाहर नहीं जाती थी राजा और प्रजा दोनों की नीयत दुरुस्त थी—पाप कर्म की ओर लोगों की झुकावट बहुत कम थी—अनेक आधि

व्याधि काल और मरी जैसा अब वृटिश सभ्यता की मानो शोभा सी हो रही है तब न थी-तीसरे यह कि मुल्क की आबादी तब इतनी ज़ियादह न थी—जो कहो आबादी अब ज़ियादह बढ़ गई है तो काश्तकारी तब से अब बहुत अधिक हो रही है—सैकड़ों कोस के जङ्गल काट कर साफ कर दिये गये जो पहिले जंगल और बीहड़ पड़ा था वह अब हरियाली से भरे हुये लहलहे खेत हो गये, तो अब धरती न जानिये क्यों ऐसी निःसत्व हो गई है कि तब जितना एक बिगहे में उपजता था उतना चार बिगहे में नहीं होता—फिर देन पोत का खर्च इतना बढ़ गया है कि परता फैलाने से पैदावारी और मालियत का एक ही हिसाब पड़ जाता है, कभी को तो ऐसा होता है कि "यत्पठितं तद् गुरवे समर्पितम्" किसान बेचारे मेहनत कर जो कुछ पैदा करते हैं वह ज़मींदार की डेहुड़े सवाई और देन पोत में चुक जाता है खेतिहर कोरे के कोरे मुह ताकते रह जाते हैं—खैर उस समय को तो जाने दीजिये जब देश में एक छोर से दूसरे तक हिन्दू ही जाति का साम्राज्य था मुसल्मानी सलतनत में भी जब कुल पैदावरी का चौथाई लिया जाने लगा मुसल्मान काट मार लूट पाट में महा अत्याचारी और तअस्सुबी प्रसिद्ध थे पर धरती की उपज उनके समय में भी कम न हुई थी खेतिहर सब बड़े प्रसन्न और खुशहाल थे—कारण इसका यही था कि तब एक २ इंच ज़मीन इस तरह पर नहीं कस ली गई थी न वालियान मुल्क देन पोत के लिये इतनी सख्ती करते थे-अजी यों न कहिये कि तब अब की सी चिउटिया ढोअन तो न थी-यहां का धन यहीं रह जाता था बल्कि यहां की कला और शिल्प दूसरे २ देश का धन यहां ढो लाते थे—राज कर्मचारियों को इतनी ऊंची तनख़ाह तब कहां दी जाती थी-अस्तु बड़ी तनखाह भी पाते थे तब भी कुछ चिन्ता न थी यदि मुसल्मानों की तरह उनका अपने देश से कुछ सम्बन्ध

न होता यहीं के निवासी रहते—अब तो एक २ हाकिम बिलाइत पहुंच वहां इण्डियन नौवाब कहलाने लगते हैं—मुसल्मानों में अब भी बहुतेरे नौवाब और बेगम यहाँ मौजूद हैं वे सब शुरू में इसी तरह पर नौवाब बने थे किन्तु यहीं रहे इसलिये देश को कोई हानि न पहुंची—गवर्नमेंट की शासन प्रणाली में जो इतना अपव्यय होता है और इंडियन गवर्नमेंट दिवालिया हो रही उस सब का झौंक इन्हीं किसानों ही पर और खेती ही पर तो अन्त में पहुंचता है तब कृषि की कर्षित दशा क्यों न हो-कृषि की कर्षित दशा ही का कारण है कि प्रति बर्ष किसी न किसी प्रान्त में दुर्भिक्ष बना रहता है-सच मानिये सब तरह किसान ही पीसे जाते हैं जिनकी सचाई और दियानतदारी की हम इतनी तारीफ कर आये हैं-उन किसानों को केवल खेती का सहाड़ा है जिस्की इस समय अत्यन्त हीन कर्षित दशा हो रही है-देश में प्रति बर्ष खेती भर पूर लगती रहे तो कहांतक बिलाइत हिन्दुस्तान का रुपया ढोवैगी हमे ज़रा भी न अखरै-कृषि की कर्षित दशा मिटने की केवल एक उपाय सर्कारी जमाबन्दी का घटना है जो काहे को होगा-प्रत्युत दो एक बर्ष में जो अभी नई जमाबन्दी नये बन्दोबस्त में कायम होने वाली है उस्में और बिशेष कस दी जायगी—हां कदाचित् श्रीमान् सर मेगडानेल साहब के सामने बन्दोबस्त शुरू हुआ तो शायद कुछ रियायत की जाय तो क्या तअज्जुब है—इस्में सन्देह नहीं उक्त लाट साहब को प्रजा की भलाई सच्चे जी से मंज़ूर है पर मसल है एक चना भाड़ नहीं फोड़ सकता जब साधारण रीति पर कर्मचारियों का दल का दल उसी पालिसी का है कि जहाँ तक होसके गवर्नमेंट का नुकसान न होने पावे प्रजा चाहे जैसी दुर्गति भोगती रहै तब एक के किये क्या हो सकेगा॥

एक अनोखा स्वप्न।

अकाल महामारी आदि अनेक भयङ्कर बड़े २ उत्पात देख कल रात को पड़ा २ मैं सोच रहा था कि यह संसार केवल दुःख का आगार है पर यहां के रहने वाले प्रमाद मदिरा को पान कर ऐसा उन्मत्त हो रहे हैं कि अपने २ को सबी सुखी माने हुये हैं और यह निश्चय नहीं होता कि वास्तव में कोई सुखी हैं या नहीं—इस २ तरह का ऊहापोह मन में करी रहा था कि एक बारगी गहरी नींद ने मुझे ऐसा आ दबाया कि उसके अत्यन्त बश में हो यह अनोखा स्वप्न देखने लगा—मुझे जान पड़ा कि मैं एक ऐसे ऊंचे पर्वत के शिखर पर बैठा हूं जहां पवन का भी गम्य नहीं है मेघ जिस्की उंचाई तक न पहुंच बीच ही में लटके रह जाते हैं—मैं इस बात के अचरज में हुआ कि हे परमेश्वर मैं यहाँ कैसे आ पड़ा और अपने चारो ओर नज़र उठाय देखा तो सैकड़ोँ कोस के चौड़े मैदान लम्बी चौड़ी झीलें बड़े २ शहर जिन्में लाखों मनुष्य बसते हैं दिखाई दिये—एक ओर सभ्यता के छोर तक पहुंचे हुये राजा महाराजा सेठ साहूकार बिभवोन्माद में उन्मत्त अपने २ वित्त के अनुसार हर तरह का ठाठ ठठे हुये फेशन परस्ती के पीछे परेशान संसार के सुख की सीमा अपने ही में मानते हैं—एक ओर कङ्गाल किसान अपनी गरीबी के अभिमान में भूला हुआ थोड़े से खेत और फूस की झोपड़ी से सन्तुष्ट राजा महाराजाओं की सम्पत्ति को भी तुच्छ कहता हुआ अपने को परम सुखी माने हुये है—इस बात को सोच कि विश्वम्भर जगत् कर्ता ने मनुष्यों को उनकी अवस्था के अनुसार सबों को सुखी और प्रसन्न किया है मुझे बड़ा हर्ष हुआ परन्तु जब यह ध्यान आया कि उनका यह सुख चिरस्थायी नहीं है और सृजित पदार्थ मात्र की दशा सदा एक सी नहीं रहती तब उदासी ने मुझे फिर आदबाया—देरतक इसी पेच पेच में पड़ा था कि इन्में सच २ सुखी कौन हैं और इन सब देशों को जिन्हें मैं अपने

नेत्रगोचर कर रहा हूं सच्चा सुख किस्के बांट में पड़ा है जहाँ जाकर सुख और आराम की खोज में बहुत दिनों से भटकते हुये मेरे आत्मा को विश्राम मिले—पर ऐसा ठौर इस संसार में कहां है और जब कि सबी अपने २ को सुखी मानते हैं तो कौन कह सक्ता है कि यही स्थान सकल सुख की खान है—मारे शीत के ठिठुरे हुये पोलैण्ड लेपलैण्ड नारवे आदि देशों के रहने वाले मानते हैं कि सुख की खान हमारा ही देश है—सूर्य देव की खरतर किरणों से अति तप्त अफरिका ऐसे पृथ्वी के उष्ण कटिबन्ध के अत्युष्ण देश के निवासी कृष्ण वरण हब्शी भयङ्कर गरमी से तड़फ रहे हैं पर वे भी यही कहते हैं कि सुखी हमी हैं—यह सब भिन्न २ भूभाग के रहने वालों का अपने २ देशों पर अनुराग देख उस समय मुझे यही निश्चय हुआ कि निज जन्मभूमि ही सच्चा सुख उत्पन्न करने वाली है—क्षण भर के उपरान्त फिर मुझे खयाल हुआ नहीं २ यह मैंने क्या निश्चय किया यह तो स्वदेशानुरागियों का केवल पक्षपात मात्र है कदाचित् इसी से यह कहावत चल पड़ी है "नीम के कीड़े को नीम ही भाती है—" इस्से तो यह निश्चय नहीं हो सक्ता कि सुखी कौन है—इतने में मुझे ऐसा जान पड़ा कि कोई आकर मेरे कान में यह कह रहा है यहीं बैठा २ मनसूबा गांठता रहेगा—हाथ कङ्गन को आरसी क्या तेरे नेत्र के सामने सब प्रत्यक्ष है नीचे उतर प्रत्येक देशों की बातों को अच्छी तरह जाँच इस्का निर्णय क्यों नहीं कर डालता—इस आकाश वाणी के सुनते ही मैं चौंक पड़ा और ऊंचे पर्वत से धीरे २ उतर उसी बात की धुन में मौन साधे घूमने लगा और अनेक विचित्र लीलायें देखा उन सबों का स्मरण तो मुझे नहीं है उन्में दो चार बातें जो अब तक नहीं भूलीं और अचरज के कारण चित्त में खचित सी हो रही हैं उन्हें आपको कह सुनाता हूं—भ्रमण करते २ ऐसे लोगों के समूह में जा पड़ा जिनकी धूम धाम और चमक दमक देख चकाचौंधी सी आने लगी चित्त

चकित हो गया–सैकड़ों मनुष्य हाथ बाँधे जिनकी प्रतीक्षा में खड़े रहते हैं जिनका एक बार उनकी ओर आंख उठा कर देख लेना भी मानो बड़ी कृपा समझी जाती है–सर्वाङ्ग जिनका सुवर्ण और बहुमूल्य हीरा जवाहिरों से लसा हुआ है, तनसोहनी मनमोहनी तरुनी जिन्हें सब ओर से घेरे हुये हैं, जिन का सुमधुर कोकिलालाप कर्णेन्द्रिय को परम सुख दे रहा है–बन्दीजन हाथ बाँधे सामने खड़े बिरुदावली गा रहे हैं–दिल्लगीबाज़ मसखरे हां मे हां मिलाने वाले खुशामदी चाटुकार विटचेट विदूषक भाँड़ भगतिये चारो ओर जमा हैं रसूज़ और झूठी तारीफों से जी खुश कर रहे हैं–जिनकी प्रसन्नता पूर्वक मन्दमुसकियान और स्नेह युक्त कटाक्षपात में कुबेर की सम्पत्ति बसती है और क्रोध युक्त कराल भ्रू विक्षेप में महाकाल मृत्यु को प्रगट होते देर नहीं लगती–इस २ तरह की विचित्र २ लीलायें देख मैंने अपने चित्त में यही स्थिर किया बस सुख की पराकाष्ठा यही है–इतने में एक स्त्री न जानिये कहाँ से आय मुझे अत्यन्त विनीत भाव से प्रणाम कर बोली महाशय कहिये आपने क्या देखा और सब देख भाल जो कुछ आपने निश्चय किया वह आप की बड़ी भूल है–ये सब मेरे बड़े भक्त और अनुरागी हैं इन्हें मैं अपना खिलौना बनाय जैसा चाहती हूं वैसा खेल खेला करती हूं नाम मेरा अविद्या है–अशान्ति, स्वार्थपरता, निष्ठुरता, लोभ, मोह, बैर, फूट, इत्यादि कई एक और भी मेरे भाई बहन सखी सहेली हैं जो सदा मेरे साथ रहती हैं जहां मैं जाती हूं वहाँ ये सब भी पहुंच अपना डेरा छोड़ देते हैं–इन्हें आप सुखी मत समझें ये सब बड़े स्वार्थपर अविवेकी और निठुर हैं बहुत दिनों से मेरी उपासना करते २ उन्हें ज्ञानहीन रहा कि सोच सकैं कि चिरस्थायी सच्चा सुख इस संसार में क्या है–अपना सुख और आराम इनका सिद्धान्त है सर्वसाधारण प्रजा मात्र का लाभ और उपकार क्या वस्तु है सो ये जानते

ही नहीं शरीर इनका हीरा जवाहिरों की जगमगाहट से चमक रहा है पर हृदय में गाढ़ा अन्धकार छाया हुआ है—महाशय जब तक मैं अपना अधिकार इनके बीच दृढ़ता के साथ जमाये हुये हूं तब तक किसी तरह इनकी कुछ भलाई की आशा ही आप न करें और इन्हें बड़ा सुखी जो आपने मान रक्खा है इस सिद्धान्त को जलाञ्जलि दीजिये—इनकी यह सब रौनक और चमक दमक केवल ऊपर से देखने ही को है भीतर २ पोले और जर्जरित हो रहे हैं—स्वच्छन्दता का सुख इन्हें अणु मात्र भी नहीं है ये कहने ही को राजा हैं राजत्व और क्षत्रियत्व का आभास मात्र बच रहा है—इनमें एक भी ऐसे नहीं जिनको ब्रिटिश शासन सब ओर से आक्रमण न किये हो और जो ब्रिटिश सिंह के पंजे से छुटे हों—एजेंट साहब की खुशामद और सेवा में सदा तत्पर रहते हैं जिसमें कहीं ऐसा न हो कि प्रबन्ध में किसी तरह की खुचुर निकाल लाट साहब को लिख भेजें और हमारी प्रतिष्ठा में दाग लगे पदच्युत कर दिये जांय—कोई आपस के घरैलू भाई बन्धु पट्टीदारी के झगड़ों में फंसे फिकिर में चूर चूर हैं—कोई इस सब राज पाट का विलसने वाला अपने उपरान्त उत्तराधिकारी वलीअहद न देख राज पाट विभव सम्पत्ति सब फीकी मान रहे हैं—कोई ऊंची सी ऊंची पदवी और दरबार में प्रथम श्रेणी की कुरसी पाने की फिकिर में व्यग्र हैं—बहुत ऐसे भी हैं कि केवल अपना आराम और सुख चाहते हैं लाखों अपने आश्रितों की कुछ भलाई का खयाल कभी एक मिनिट के लिये नहीं होता लोग कर्मचारियों के अत्याचार से पीड़ित चीत्कार मचाये हुये हैं पर उन्हें शरण देने वाला कोई नहीं देख पड़ता—यह सब भीतरी बातें देख ऐसे सुख को धिक्कारते उस सुन्दरी से मैंने कहा देवी मुझे अच्छी तरह अनुभव हो गया अब मैं कभी इस प्रकार के सुख को सुख न मानूंगा—आज्ञा दीजिये मैं कहीं अन्यत्र जाकर सुखी कौन है उसकी खोज करूं—उसने उत्तर दिया जाओ पर मैं तुम से इतना कहे

देती हूं कि इस शापित देश हिन्दुस्तान में इस्की खोजने की चेष्टा करना व्यर्थ है—यहां के रहने वालों की ऐसी करनी नहीं है कि वे सच्चे सुख के अधिकारी हों इतना कह वह अन्तर्ध्यान हो गई और मैंने भी अपनी राह ली—घूमते २ ऐसे स्थान में जानिकला जहां की पृथ्वी उस देश के अत्यन्त शीतल होने से अनुर्वरा और पर्वत स्थली है पर वहां के परिश्रमी और साहसी निवासियों के कारण स्वर्ग भूमि को तुच्छ करती है—जहां के नगरों की प्रासाद पङ्क्ति इन्द्रपुरी अमरावती की स्पर्द्धा कर रही है जहाँ के लोग सभ्यता शिक्षा शिल्प विज्ञान और फेशन में लोकोत्तर हो जगत् भर के शिक्षागुरु बन रहे है—जिस्के विक्रम वैभव और समृद्धि की तुलना करने को अवनीतल के कोई देश समर्थ नहीं हैं—जहां की सफाई, शिल्प चातुरी, वाणिज्य, युद्ध विद्या, नीति पटुता, अपनी अन्तिम सीमा को पहुंची हुई है—जहां की भाषा सम्पूर्ण भाषाओं का रसाकर्षण कर दर्शन इतिहास उपन्यास चरिताख्यान विज्ञान का भाण्डारगृह हो रही है—जहां के लोगों का लोभ यहाँ तक बढ़ रहा है कि समस्त भूगोल हस्तगत होनेपर भी लोभ एक सीमा तक नहीं पहुंच सका। यह सब देख मेरे मन में आया कि निःसन्देह इस्से बढ़ कर कोई दूसरा ऐसा भाग्यशाली देश न होगा सकल सुख की खान यही है—यह सब अपने मन में कही रहा था कि मानो किसी ने आकर मेरे मन में कहा बन पड़े की सभी बात अच्छी होती है—तुम्हे अभी बहुत कुछ देखना है मत किसी सिद्धान्त पर आरूढ़ हो कूपमण्डूक बनो—इतने में मेरी आंख खुल गई भोर हो गया सूर्य की किरनें मानो हाथ पसार पसार मुझे उठा रही हैं—पाठक जिस बात की खोज में था उस्का निश्चय तो न हुआ पर इस स्वप्न के देखने से आनन्द बड़ा मिला आशा है आप को भी यह लेख पढ़ कुछ सुख मिलेहीगा॥

प्राचीन भारत।

मेगास्थानीज़ यूनान देश का इतिहासवेत्ता था जो सिकन्दर के साथ यहां आया था और उस समय उसने हिन्दुस्तान को जैसा पाया वैसा ठीक हाल यहाँ का लिखा है- यह लिखता है हिन्दुस्तानी कभी किसी देश पर नहीं चढ़े न इन पर कभी किसी ने चढ़ाई की सिकन्दर पहले पहल इस देश पर चढ़ा—यह बात मेगास्थानीज़ की बहुत ठीक नहीं मालूम होती–हिन्दुस्तानियों ने किसी देश पर कभी चढ़ाई नहीं की यह तो किसी कदर ठीक मालूम होता है पर हिन्दुस्तान पर सिकन्दर के पहिले किसीने चढ़ाई नहीं की कभी ठीक नहीं हो सक्ता इसे सोने की चिड़िया समझ इस्के लिये कौन नहीं ललचाया-पुराणों में देवता दैत्य के सैकड़ों किस्से क्या हैं-यहां वाले देवता थे जो विदेशी यहां आये वे दैत्यहुये-देश तब तक आपस की फूट से जर्जरित और छिन्न भिन्न नहीं हुआ था जो यहां चढ़ कर आते थे खातिरखाह अपने किये का फल पाय यहां से लौट जाते थे—कोई २ लोग कहते हैं फारस वालों ने कुछ अंश भारत का अपने अधिकार में कर लिया था–सिन्धु नद के पश्चिम के बहुत से देश भारत ही की सीमा के भीतर माने जाते थे-एरियन लिखता है उन सब देशों में हिन्दू लोग रहते थे और वे फारस के उस समय के बादशाह को कर देते थे—एरियन के मत से सिन्धु नद भारत की पश्चिमी सीमा न थी–महाभारत के समय तक गान्धार देश "कन्दहार" भी भारतवर्ष ही में गिना गया है-चन्द्रगुप्त के पहिले ही से हिन्दू लोग सिन्धु के पश्चिमी प्रदेशों को विदेश समझने लगे थे-देश जुदे २ राज्यों में बंटा था जब कोई प्रतापी राजा होता था उसे चक्रवर्ती या संम्राज कहते थे वह जीते गये राजाओं से कर ले सन्तुष्ट रहता था और उनके राज्य प्रबन्ध में कुछ हस्तक्षेप न करता था—इसलिये चक्रवर्ती राजा का यदि कोई

उत्तराधिकारी न र-सा था तो उसके उपरान्त उसका राज्य सरदारों में बंट के छिन्न भिन्न हो जाता था मेगास्थनीज़ के समय यहाँ का चक्रवर्ती राजा चन्द्रगुप्त था—उसके पुत्र अशोक बर्द्धन ने अपने पिता की अपेक्षा राज्य को अधिक बढ़ाया और मुसल्मानों के हमला करने के कुछ पहिले ही कोई चक्रवर्ती राजवंश हिन्दुस्तान में न रह गया था-भारतवर्ष में असंख्य छोटे बड़े नगर थे जो नगर नदी के तट पर थे उनमें प्रायः काठ और लकड़ियों के घर बने थे और जो शहर पहाड़ वा किसी ऊंचे स्थान पर थे वहां मकान मिट्टी या ईंट के बने होते थे-मेगास्थनीज़ के समय यहाँ का सब से प्रधान नगर पटना था जो सोन और गङ्गा के तट पर भारत के पूर्व भाग की राजधानी थी-इस्की बस्ती लम्बाई में ८ और चौड़ाई में डेढ़ मील थी—सम्पूर्ण नगर को घेरे एक बड़ी खाँई थी जो चार सौ हाथ तक फैली थी और २४ हाथ गहरी थी—६४ तोरण और ५०० बुर्ज़ भी इसमें थे—मेगास्थनीज़ के मत से भारत के लोग ७ श्रेणी में बंटे हुये थे—उनमें पदवी के अनुसार तत्ववित् फिलोसोफर सब से ऊंची श्रेणी के थे— वे यज्ञ आदि के समय लोगों की सहायता करते थे और वर्ष के प्रारम्भ में राजसभा में बुलाये जाते थे—उस समय यदि वे कोई भलाई की बात सोच रखते थे या कोई भलाई का उपाय अविष्कार कर पाते थे तो उसे सर्बसाधारण को बतलाते थे—उनमें से जिस्की बात तीन बार झूंठ हो उसे जन्म भर के लिये मौन रहने का दण्ड भोगना पड़ता था—मेगास्थनीज़ लिखता है कि तत्ववेत्ता दो प्रकार के थे ब्राह्मण और श्रमण अर्थात् बौद्ध संन्यासी—ब्राह्मण सबों की अपेक्षा माननीय थे क्योंकि वे जन्म भर पढ़े लिखे लोगों के बीच रहते और सीखते थे-इसलिये ब्राह्मण जितना ही उमर में बड़े होते थे उतना ही विशेष माननीय होते थे-वे नगर के बाहर उद्यान आदि में रहते थे कुशासन पर बैठते और मृगचर्म पर सोते थे— माँस भोजन और

विषय भोग से अलग थे नीति पूर्ण उपदेश देते हुये जीवन बिताते थे-इस तरह ३३ वर्ष बिताय प्रत्येक ब्राह्मण अपने घर लौटता था और शेष जीवन सुख से काटता था—तब वे चिकने कपड़े पहनते थे अंगुली और कानों में सोने के गहने पहनते थे और अधिक सन्तान होने की इच्छा से जितना चाहते थे उतना बिवाह करते थे ॥

मेगास्थनीज़ हिन्दू और बौद्ध दोनों को देखे था पर श्रेष्ठ उसने ब्राह्मणों को लिखा क्यों कि वे ब्रह्मचर्य गार्हस्थ्य और वानप्रस्थ तीनों के भेद जानते थे-जो तैंतीस बर्ष के उपरान्त गृहस्थ धर्म ग्रहण करते थे वे फिर नगर के बाहर जा वानप्रस्थ हो बन में रहते थे इतना अनुसन्धान मेगास्थनीज़ को न था और यह भी ठीक नहीं जान पड़ता कि सब लोग ३३ बर्ष ब्रह्मचारी रहते थे—मनु ने ३६ वर्ष लौं ब्रह्मचर्य की सीमा रक्खा है कदाचित् मेगास्थनीज़ ने इसे साधारण नियम समझ लिया होगा—अब इस समय ब्रह्मचर्य की कौन कहे ३६ वर्ष में लोग यहाँ बुढ़ा जाते हैं उस समय तब तक व्याह नहीं करते थे अब ३६ वर्ष में पोते नाती हो जाते हैं-मेगास्थनीज़ समझता था कि ब्राह्मण लोग स्त्रियों को आध्यात्मिक ज्ञान नहीं सिखाते थे कि पीछे से वे गूढ़ तत्वों के ज्ञान के पराधीन रहना न चाहैंगी—वे सदा मृत्यु विषयक चर्चा करते थे उन लोगों के मत से मनुष्य का जीवन गर्भावस्था के समान था-उनकी समझ थी कि आदमी पर जो कुछ आय पड़े सुख वा दुख दोनों एक सा जानै भला वा बुरा कुछ न था—एक ही पदार्थ किसी को सुखदायक किसी को दुखदायक जान पड़ता है और एक ही मनुष्य को भिन्न २ समय भिन्न २ पदार्थ सुख या दुखदायक हो जाते हैं-स्वाभाविक घटना के संबन्ध में हिन्दुओं का मत यूनान देश वालों के मत से मिलता है-यूनानी मानते थे कि जगत् की उत्पत्ति और नाश दोनो हैं इसका आकार गोल है जिस ईश्वर ने इसे बनाया और पालन करता है वह सर्वत्र व्याप्त है

और भी वे मानते हैं कि भूमण्डल में असंख्य तत्वों के द्वारा कार्य होते हैं और जल के द्वारा जगत् सृजा गया है—मेगास्थनीज़ कहता है कि आत्मा की उत्पत्ति उस्का स्वभाव उस्की अमरता उसे भविष्य का विवेक और इसी प्रकार के विषय हिन्दुओं ने भी यूनानियों में प्लेटो के समान प्रश्नोत्तर की भाँति बना रक्खे हैं ॥

श्रमणों के इसने दो भेद किये हैं, जिनका एक भेद वन में बसता था फल मूल खाते थे, पत्ते पहिनते थे, मद्य तथा विषय भोग से बचे रहते थे—संसारिक विषयों के मर्म जानने को राजा लोग उनके पास दूत भेजते थे—दूसरे प्रकार के श्रमण वैद्य होते थे वे यद्यपि वनवासी तो न थे पर मिताचारी थे—उनका प्रधान भोजन चावल का भात और यव का माँड़ था वे जहां जाते वहीं अतिथि समझ भोजन पाते थे—उनकी औषधि के प्रताप से लोगों के सन्तान उत्पन्न होते थे और यहां लों स्थिर हो जाता था कि बेटा होगा वा बेटी । औषधि प्रयोग की अपेक्षा उनके पथ्यानुसार रोगी अधिक शीघ्र आरोग्य हो जाता था । वे लोग तेल मर्दन और प्रलेप सब से बड़ी औषधि मानते थे । पहिले दल वाले श्रमण लोगों का आचरण हिन्दू वानप्रस्थों के समान था । इससे जाना जाता है कि हिन्दू और बौद्ध संन्यासियों के आचरण में बहुत भेद न था—मेगास्थनीज़ दोनों के भेद को भली भांति जानता न था । श्रमण वैद्य लोग जैसी चिकित्सा करते थे आजकल भी वही चाल प्रचलित है । इससे अनुमान होता है कि आजकाल के चिकित्सा की परिपाटी चन्द्रगुप्त के समय से भी पहिले से चल निकली रही होगी । मेगास्थनीज़ का दर्शन के विषय में जैसा मत है उससे वेदान्त की विद्या स्पष्ट झलकती है । मेगास्थनीज़ ने भारतवर्ष के निवासियों को जो सात श्रेणी में बांटे हैं उनमें से किसान लोगों की

दूसरी श्रेणी थी। देश के अधिकांश लोग इस वृत्ति के थे। वे धीर और नम्र होते थे। उन्हें लड़ाई के लिये नहीं जाना पड़ता था युद्ध के समय इनके किसी काम की हानि न होती थी। जहां पर दो दलों में युद्ध होता रहता था उसके निकटही किसान लोग स्वच्छन्दता से बिना रोक टोक खेती करते हुये देखने में आये। भूमि का स्वामी राजा था और किसानों से क्षेत्र की उत्पत्ति का चतुर्थांश कर लेता था। तीसरे श्रेणी के लोग अहेर वा शिकारी थे। ये शिकार पशुपालन तथा ब्योपार आदि कर्म करते थे। इन लोगों का कोई नियत स्थान न था। चतुर्थ श्रेणी के लोग बनिये होते थे। इन सबों को राजा को कर देना पड़ता था। पर जो लोग युद्ध का अस्त्र वा बोहित नौका बनाते थे उन्हें राजा से बेतन मिलता था। पांचवें श्रेणी के लोग योद्धा थे इन लोगों की संख्या केवल किसानों से कम थी। उनके पालन पोषण का व्यय राजकोष से होता था। इस कारण जब आवश्यक पड़ा उसी समय वे लोग युद्ध क्षेत्र में उतर पड़ते थे। शांति के समय में वे सुरा पान करके सुख चैन में समय बिताते थे। छठीं श्रेणी के लोग चर या जासूस थे। वे सब बात का समाचार गुप चुप राजा को सुनाते थे। सप्तम श्रेणी के लोग मन्त्री थे। न्यायालय, राज्य के ऊंचे २ पद और सामान्य शासन के कार्य इन लोगों के अधिकार में थे। येही लोग कोषाध्यक्ष (खज़ाञ्ची वा मुनीम) और सेनापति आदि के स्थान में भी नियुक्त होते थे। एक श्रेणी और दूसरी श्रेणी के लोगों के बीच विवाह न होता था। एक श्रेणी के जन दूसरे श्रेणी में नहीं मिल सकते थे वा उनका कार्य नहीं उठा सकते थे हां अलबत्ता तत्ववित् सब श्रेणी के लोग हो सकते थे।

इस प्रकार के श्रेणी का विभाग देखने से जान पड़ता है कि व्यवसाय (रोज़गार) के साथ जाति का ठीक २ सम्बन्ध न जानने के कारण मेगास्थनीज़ कई भांति के भ्रम में पड़ गया था। उसने जाति के

अभिमानी ब्राह्मणों को और बिना जाति वाले श्रमण लोगों को एकही तत्ववित् की श्रेणी में गिना। श्रमण सब जाति के लोग हो सकते थे इससे सब श्रेणी के लोग तत्ववित् भी हो सकते थे वह यह न जान सका कि चर और मन्त्री लोग ब्राह्मणही होते थे। उनके लोगों के कार्यों में विद्या और ज्ञान विषयक चर्चा न देख उन्हें मेगास्थनीज़ ने ब्राह्मणों के बीच नहीं गिना। इस प्रकार के और कई भ्रम शुद्ध कर लेने से बिश्वास होता है कि मेगास्थनीज़ के समय यहां जाति का वैसा ही क्रम था जैसा कि मनु के स्मृति अनुसार जाना जाता है। किसान लोग शूद्र और बनिये वैश्य होते थे। योद्धा लोग क्षत्रिय होते थे। चर मंत्री और तत्ववित् लोग ब्राह्मण और शिकारी लोग चाण्डाल आदि नीच जाति के थे। मेगास्थनीज़ ने आश्चर्य में आके लिखा है कि हिन्दू लोग सब स्वतन्त्र थे कोई किसी के परवश न था। इससे जाना जाता है कि मनु के समय में शूद्रों की जैसी अवस्था थी मेगास्थनीज़ के समय में उसमें अनेक भेदपड़ गये थे। और जाति की सेवा करना उन शूद्रों का मुख्य उद्देश्य पीछे से न रहा। हमारे जान वेही लोग पीछे से किसान हो गये होंगे।

मेगास्थनीज़ ने देखा था कि हिन्दू लोग कपास के सूत का कपड़ा पहिनते थे वे नीचे देह के अधोभाग में एक कपड़ा पहिनते थे जो जांघ लों पहुंचता था और एक दुपट्टा कन्धे पर रखलेते थे और कुछ माथे में बांधते थे। हम लोग इन्हीं कपड़ों को धोती और चादर कहते हैं पर हम लोग चादर से माथा नहीं ढापते पर प्रयोजनानुसार टोपी कुर्ता आदि पहनते हैं। चन्द्रगुप्त के समय में जो लोग अच्छी अवस्था में थे उनके वस्त्र सज धज के थे। लिखा है कि उनका पहिनाव बहुत अच्छा था उनके कपड़ों में सोने और मणि आदि के गोट लगे रहते थे और वे चिकने तथा पतले वस्त्र पहिनते

थे । सेवक लोग उन्हें छाता लगाये रहते थे क्योंकि वे लोग सुन्दरता का बड़ा आदर करते थे और सर्वतोभाव से अपनी कान्ति को बढ़ाना चाहते थे । सामान्य लोग छाता भी लगाते थे । श्वेत चमड़े का खड़ाऊं पहिनते थे । रुचि के भेद से लोग कपड़े भाँति भाँति के रङ्गों से रङ्गते थे । खड़ाऊं भाँति २ के तथा ऊंची खूंटी के होते थे । साधारण लोग ऊंट घोड़े वा गदहे पर चढ़ते थे । राजा बाबू लोग हाथी पर सवार होते थे हाथी सब से अच्छा वाहन गिना जाता था । उनके नीचे चार घोड़े की गाड़ी तदनन्तर ऊंट थे । एकाश्वयान पर चढ़ना कोई बड़ी बात न थी कदाचित् आज काल के एक्के इसी एकाश्वयान के स्थानापन्न होंगे । मेगस्थनीज़ के समय में प्यादे लोग साधारण धनुष बाण रखते थे । धनुष मनुष्य के डील के समान और बाण तीन गज़ लम्बा होता था । धनुष को भूमि पर धर के बाएं पांव से दबाके वे लोग बाण छोड़ते थे और ऐसी कोई ढाल वा कवच न था जो बाण से छेदा न जासके । पैदल लोग गोचर्म की ढाल रखते थे । कोई २ धनुष के स्थान में बरछा काम में लाते थे पर तलवार सब धारण करते थे । यह तलवार तीन हाथ से अधिक लम्बी नहीं होती थी और मुटभेड़ की लड़ाई में तलवार दोनों हाथों से चलाई जाती थी । घुड़चढ़े लोग चमड़े का ढाल और दो बरछा रखते थे । उनके पास ज़ीन न थी पीतल वा चमड़े की लगाम से घोड़ा चलाते थे । रथ में सारथी के सिवाय और दो रथी रहते थे और हाथी पर महावत को छोड़ और तीन योधा बैठते थे । मेगास्थनीज़ ने भारतबासियों को परिमिताचारी लिखा है । उन लोगों के भोजन की वस्तु भात थी यज्ञ को छोड़ और कभी वे मद्य न पीते थे । उन लोगों के बीच चोरी बहुत कम थी । चन्द्रगुप्त के छावनी में चार लाख जन थे पर डेढ़ सौ से अधिक रुपये की चोरी कभी नहीं हुई—चोरी आदि का मुकद्दमा बहुत कम राजा के न्यायालय में होता था दलील वा

साक्षी न ले के केवल विश्वास पर मुकद्दमा फैसल होता था । दूसरे के पास बन्धक वा गिरो रखने में कुछ सोच बिचार नहीं होता था। उनका सब घर द्वार तथा माल असबाब सम्पत्ति सुरक्षित न थी । वे सत्य और धर्म का आदर करते थे । स्त्रियों को मोल लै विवाह करलेते थे और किसी को धर्मपत्नी वा किसी को कामपत्नी बना लेते थे । बहुत से लोग बिन रुपये लिये दिये बिवाह कर लेते थे पिता कन्या को सब के सामने लाके उपस्थित करदेता और जो कोई मल्लयुद्ध वा और किसी भाँति की वीरता प्रकाश करता था कन्या उसी को वरण करती थी । ये हम लोगों के देश की प्राचीन स्वयंवरा थीं। मेगास्थनीज़ लिखता है कि इस देश में लिपिबद्ध नीति शास्त्र (कानून) न थे । जान पड़ता है कि व्यवस्था पुस्तकों का नाम स्मृति सुन उसे धोखा पड़ गया था । राजा युद्ध और बिचार के समय महल से बाहर आते थे और सारा दिन बिचार में लगा देते थे । इसके सिवाय यज्ञ और अहेर के लिये भी राजा लोग बाहर निकलते थे । राजा के शरीररक्षिणी स्त्रियों के दल भी थे मृगया के समय में वे सब राजा को घेर के चलती थीं । उनमें कोई रथ पर कोई हाथी पर भांति २ के अस्त्र लेकर चलती थीं और राजा हाथी पर चलते थे । दो देवताओं की पूजा होती थी जिनका नाम मेगास्थनीज़ हरक्लिश और डायोनिशस् लिखता है । अनुमान होता है कि हरक्लिश तो श्री हरिकृष्ण जी और डायोनिशस् दयावान् शिव जी होंगे ॥

हरिमङ्गल मिश्र

प्रयाग

हैदर अली।

हैदर अली का जीवन वृत्तान्त इसलिये लिखते हैं कि इसे पढ़ मालूम हो सक्ता है कि मनुष्य में किसी प्रकार की विच्छित्ति विशेष या अद्भुत शक्ति होने के लिये विद्या आभिजात्य अर्थात् ऊंचे कुल में जन्म या धन सम्पत्ति की आवश्यकता नहीं है—जो सब ऊपर को उठने और संसार में प्रसिद्ध होने के लिये बहुधा उपकरण या सामग्री होते हैं बरन लोकोत्तर असाधारण बात का मनुष्य में होना निरी ईश्वरीय कृपा या प्राक्तन संस्कार के लगाव का सबूत है—बाप दादे इस प्रसिद्ध पुरुष के अत्यन्त गरीब और नीच कुल के थे—यह खुद यहाँ तक अपढ़ और मूर्ख था कि अपना नाम भी नहीं लिखा सक्ता था अपने दस्तखतों में नाम लिखने के बदले एक तरह का चिन्ह बना देता था किन्तु इसकी स्मरण शक्ति ऐसी प्रबल थी कि अपनी सलतनत के इन्तिज़ाम में जो बात इसके कर्मचारी लिख पढ़ कर भी नहीं याद रख सक्ते थे उसे यह महीनों और सालों बाद यथास्थित ठीक २ बतला देता था—इसका बाप फतेह महम्मद पञ्जाब से रोज़गार की तलाश में आय मैसूर के राजा के यहां शुरू में कानस्टेबिल या हेड कानस्टेबिल कर लिया गया था फिर पटवारियों की किस्म पर मालगुज़ारी के वशूल तहसील के काम में मुकर्रर किया गया पीछे से एक छोटीसी फौज़ का सिरदार कर दिया गया और दादा इसका फकीर या दुरवेश के भेख में दर २ घूमता फिरता था—हैदर अली सन ईस्वी १७०२ में पैदा हुआ बड़ा होने पर इसे शिकार का शौक़ पैदा हुआ जिस्से यह आस पास के जङ्गल और पहाड़ों की छिपी घाटियों से अच्छी तरह वाकिफकार हो गया—लूट पाट और छापा मार उन्हीं जङ्गल और पहाड़ों में जा छिप रहता था—४७ वर्ष की उमर तक यह अप्रसिद्ध रहा कोई इसका नाम भी नहीं जानता था जब वह मइसूर के राजा की सेना में बलंटियर होकर भरती हुआ और धीरे

धीरे अपनी बीरता और युद्धोत्साह के कारण राजा के प्रधान मन्त्री नंजिराज का कृपापात्र हो गया ॥

फौज में भरती होतेही इसे जेता और फतेह आब बनने की उमङ्ग बढ़ने लगी—अनेक बीर विक्रान्त स्थिर अध्यवसाय वाले जो हिन्दुस्तान की सलतनत हासिल करने के लिये औरङ्गज़ेब के समय से अब तक बराबर चेष्टा करते आये इस्की तुलना किसी में न थी—महराठों में शिवा जी और पञ्जाब में रणजीत सिंह यद्यपि हैदर के समकक्ष थे पर शासन प्रणाली और मुल्की इन्तिज़ाम की अकिल हैदर कीसी उन में न थी—शिवाजी और रणजीत सिंह फतह करने में हैदर से आगे बढ़ गये थे सही पर उस जीते हुये राज्य का ऐसा उत्तम प्रबन्ध करना कि कहीं पत्ता भी न खड़कने पावे केवल यही जानता था—शिवाजी और रणजीत सिंह का लक्ष्य ही हैदर से निराला था इन दोनों को स्वच्छन्द राज्य स्थापन करना इतना अभीष्ट न था जितना हिन्दुओं के साथ मुसलमानों का पूर्वकृत अपकारों का बदला चुकाना अभीष्ट था—इसलिये उन दोनों की प्रवृति स्वधर्म और स्वजाति वात्सल्य के उदार उसूल के ढङ्ग पर थी किन्तु हैदर की प्रवृत्ति निरी स्वार्थपरता के बुनियाद पर थी इसीलिये शासन प्रणाली का ढङ्ग इस्का दोनों से अच्छा था—अराजकता और राजबिराजी महानिशा का अन्धकार जिस समय कुल हिन्दुस्तान में छाया हुआ था राज विप्लव के कारण लोगों के जान माल की रक्षा जिस समय सपने के खयाल के समान हो रही थी उस समय भारतीय राजमण्डल महा आकाश Political horizon of India में हैदर एक डूबते तारे के सदृश हो गया—जिस्का प्रकाश अब कहीं नाम को भी न रह गया पर भारत माता का बीर विजेता पुत्र की उपाधि अपने उपरान्त छोड़ गया जिस्के असम साहस और बीरत्व के हिन्दुस्तानी मात्र अब तक अभिमानी हैं ॥

मइसुर या महीसुर का राज्य प्राचीन समय में विजयनगर के हिन्दू महाराज्य का एक सूबा है तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दी में विजयनगर का राज्य बहुत बड़ा होगया था कृष्णा और तुङ्गभद्रा के बीच का दोआबा इसी में शामिल था राइचूर मुद्गल आदि प्रसिद्ध नगर जो अब निज़ाम की सलतनत में हैं विजयनगर के अधिकार में उस समय थे-प्राचीन करणाट देश तेलिङ्गाना का कुछ हिस्सा भी विजयनगर के राज्य में शामिल था मालबार जो समुद्र के किनारे है वह भी इसी राज्य के आधीन था—अब इस समय बिजयनगर का राज्य कई टुकड़ों में बंट गया और मइसूर का राज्य कई सौ बर्ष तक स्वच्छन्द रहा पर इस समय राजवंश में कोई न रह गया और सम्पूर्ण अधिकार राजमन्त्री नंजिराज के हाथ में आ गया—नंजिराज हैदर की वीर प्रकृति से प्रसन्न हो ५० सवार और २०० पैदल सिपाहियों का अफसर इसे कर दिया और आज्ञा देदी कि वह जितने चाहे उतने और सिपाही भरती कर सक्ता है—नंजिराज की यही आज्ञा आगे को इस्की तरक्की का कारन हुई—१७५५ में त्रिचनापली के दक्षिण डिण्डिगल के किले का यह किलेदार कर दिया गया—यहां रह कर यह स्वच्छन्द होने लगा और शिवाजी की तरह बहुधा लूटता और छापा मारता हुआ अपनी पूंजी बढ़ाने लगा—लूट का आधा माल अपने सिपाहियों को दे दिया करता था इस्से इस्की फौज़ इसमें और अधिक उत्साह के साथ प्रवृत्ति हुई छापा मारने में यह मित्र या शत्रु किसी को नहीं बरकाता था—एक बार नंजिराज को इसने एक बड़ी फतेह आबी की खबर दिया जिस्पर वह प्रसन्न हो सिपाही जो इस चढ़ाई में गये थे और घायल हो गये थे उनको पेंशन का हुक्म दिया, केवल ६७ सिपाही घायल हुये थे पर इसने ७०० सिपाहियों की हल्दी उनके बदन में पोतवाय और पट्टी बंधवाय नंजिराज को दिखला दिया—६७ छोड़ बाकी सिपाहियों के पेन्शन का रुपया अपने पास रख छोड़ा—इस

तरह के छल और नंजिराज को झूंठी २ खबरें दे इसने बहुत रुपया जमा कर लिया और अब इस समय इस्के सिपाहियों के फ़ौज का नम्बर ७००० हो गया—फ़रासीसी लोग जो गोआ में अपनी कोठी कायम कर आ बसे थे उनकी सहायता से इसने बन्दूक और तोप ढलवाने का कारखाना खोल अपने निज का बड़ा उमदा सिलाखाना तैयार कर लिया—१७५७ में बालाजी बिश्वनाथ राव पेशवा ने मैसूर पर धावा किया और श्रीरङ्गपट्टन मैसूर की राजधानी को घेर लिया नंजिराज तब ३२ लाख रुपया इस चढ़ाई का खर्च देने के वादे पर पेशवा से सुलह करने को लाचार किया गया और जब तक यह रुपया अदा न हो तब तक बहुत सा अपना मुल्क पेशवा के यहां गिरों रख दिया — इन कारणों से मैसूर का खज़ाना खाली हो गया फौज़ की तनखाह कई महीने की चढ़ गई न पाने से सिपाहियों ने बग़ावत कर ली—हैदर ने तब आकर कहा मैं फौज़ की सब तनखाह चुकता कर दूं यदि नई जागीर उस रुपये के बदले राज्य से मुझे दी जाय नंजिराज इस बात पर राज़ी हो गया—इस २ तरह के काट ब्योंत काम में लाय हैदर ने अपनी सालाना आमदनी बहुत अधिक बढ़ा ली और फौज़ को भी अपने काबू में कर लिया मैसूर की प्रजा भी सब इस्से प्रसन्न हो इस्की इज़्ज़त करने लगीं—अब इसने नंजिराज को महराठों को अपने मुल्क से निकाल देने को उभाड़ा—हैदर आप फौज़ का सरदार हो महराठों को मा भरदाया और जो मुल्क उन लोगों ने रुपये के बदले गिरों रख लिया था उसे रुपया अदा होने पर लौटा देने का वादा किया—हैदर अपनी ज़मानत पर शहर के महाजनों से रुपया उधार ले रुपया चुकता कर दिया और मुल्क महराठों से लौटा लिया —इस तरह और २ अनेक छल विद्या से हैदर ने अपना अधिकार राज्य भर में ऐसा दृढ़ कर लिया कि राजा और नंजिराज किसी गिनती में न रह गये मैसूर भर में इसी की दोहाई

होने लगी—तब राजा और राजा की बूढ़ी मा तथा राजमन्त्री नंजिराज ४ लाख रुपया सालाना पेन्शन ले राज्य से अलग हो जाने पर राज़ी हो गये और हैदर अब मैसूर का सब भांत स्वच्छन्द और पूरा मालिक बन बैठा—अब इस्को अपना राज्य बढ़ाने की फ़िकिर हुई और दोही वर्ष में इसने कृष्णातक अपने सलतनत की सरहद बढ़ा लिया—१७६३ में घाट पर्वत के ऊपर समुद्र के तट पर बिदनोर की रियासत पर चढ़ाई की—बिदनोर इस समय ८ मील के घेरे में बसा हुआ बड़ा आबाद और मालदार शहर था—लड़ाई भिड़ाई के झगड़ों से बचा हुआ था—बिदनोर की रानी हैदर को आते हुये सुन अपनी महल में आग लगा पास के जङ्गल में जा छिपी और बिदनोर का पूरा राज बिना परिश्रम ही हैदर को मिल गया—कहते हैं बिदनोर उस समय दक्षिण का बड़ा मालदार शहर था जिस्की लूट में १२ करोड़ का धन हैदर के हाथ लगा अब इस्की हुकूमत समुद्र के किनारे तक फैल गई और जहाज़ तैयार करने का हौसिला इसे हुआ—इस समय इस्की फौज़ में २० हज़ार सवार और ४० हज़ार पैदल सिपाही थे—महराठे मैसूर के राज्य को अब तक अपना, वशंवद मानते थे हैदर को रोज़ तरक्की करते देख चौंक उठे और बड़ी फौज़ ले इसपर चढ़ आये—दो भारी लड़ाई महराठों के साथ इस्की हुई जिसमें इसके १० हज़ार आदमी काम आये-महराठे सवार तमाम हैदर की रियासत को महीनों तक लूटा किये अन्त को ३२ लाख रुपया और बहुत सी नई हासिल की हुई जागीर दे इसने महराठों से किसी तरह जी छुटाया—इस समय पेशवा निज़ाम हैदर और अंगरेज़ ये चारो हिन्दुस्तान के प्रधान चक्रवर्ती सम्राज होने को मानो चौसर खेल रहे थे और अलग २ अपने अपने दांव पर पासा फेकने लगे—हैदर भी अपनी कुटिलाई और पालिसी से नहीं चूकता था—कभी यह निज़ाम से मिल अंगरेज़ और

पेशवा दोनों का मुकाबिला करता या कभी अंगरेज़ और हैदर पेशवा के मुकाबिले एक हो जाते थे—कभी वे तीनों एक हो हैदर को घर दबाते थे इस २० वर्ष का इतिहास हिन्दुस्तान का बिल्कुल हलचल और राजबिराजी से भरा हुआ है—जब कि सन् १७८२ दिसम्बर की सात तारीख को ८० वर्ष की उमर में इसके कूच का डङ्का बज गया और अनेक अत्याचार जो इसने अपनी लोभी कुटिल प्रकृति से कर रक्खा था उस्का फल भोगने को मुल्क अदम को इसे सिधारना पड़ा—अपने अन्त के दिनों तक यह बराबर दुश्मनों पर फौज़कशी करता रहा बल्कि बुढ़ापे मे इस्की तनदुरुस्ती बिगड़ने का यही कारण हुआ जिस्से कूच के दिनों को जल्द दौरा करना पड़ा नहीं तो यह अभी कुछ दिनों और जीता—अस्तु यह अपने पीछे महा साहसी युद्धोत्साही वीर बिक्रमी की वह पताका गाड़ गया जिस्की समता करने को उसके उपरान्त मृत भारत के सन्तानों में कोई न हुआ—कहावत है "पुरुष की माया वृक्ष की छाया" हैदर अली ने निज पुरुषार्थ से जो कुछ किया कि इतना बड़ा राज्य स्थापित कर गया वह उसी के जीवन तक अपनी पूरी उन्नति में रहा इसके उपरान्त इसका और सपुत्र टीपू सुलतान यद्यपि वीरता युद्धोत्साह और साहस तथा निठुराई में हैदर से कम न था किन्तु हैदर कासा भाग्यवान न होने से बहुत दिनों तक राज न कर सका—अंगरेज़ों के साथ लड़ाई में कई बार हारा आखिरी लड़ाई जो १७९९ में हुई टीपू सुलतान मारा गया और हैदर ने जो बादशाहत मैसूर में कायम किया था उसका अन्त हो गया—टीपू के बंशधर अब तक कलकत्ते में सर्कार के पेन्शनर हो रहते हैं और मैसूर के राज्य पर वहां के पुराने राजा का एक नाबालिग लड़का गवर्नमेंट की ओर से बैठाया गया जिसके बंश में अब तक वहां का राज्य चला आता है॥

हाड़ की उत्तमता।

पहले किसी समय कुलीनता और श्रेष्ठता श्रेष्ठ कर्म के आधीन थी-स्वच्छ आचरण चरित्र की पवित्रता उत्तम श्रेणी की विद्या ऊंचे दरजे की लियाकत किसी कदर धन का पास होना भी कुलीनता और अभिजात्य की पहचान थी—बुरा काम करने वाला ऊंचे कुल का भी नीच कर दिया जाता था—समाज के लोग कोई उसे आदर न देते थे—अब हमारी अवनति के समय जब हम सब तरह पर बिगड़ गये हैं जब कि एक भी ऐसे न बच रहे कि अपने में चरित्र की पवित्रता का दावा कर सकें—इस दशा में कि "न तुम कहो हमारी न हम कहैं तुम्हारी" हाड़ की उत्तमता के घमण्ड में भर ग्राम कुक्कुर सदृश एक दूसरे के मुकाबिले काम पड़ने पर भूकने और गुर्राने लगते हैं-बर्षों की जमी हुई मन की मैल ईर्षा द्रोह या किसी दूसरे प्रकार का चित्त के वैमनस्य का बुखार निकालने का यही तो एक मौका मिलता है कि काम पड़ने पर अपने एक भाई को कह डालें कि तुम नीच हो, जाति में हेठे हो, ररा हो, षट्कुल में नहीं हो, न तीन में हो, न तेरह में, तुम्हारे साथ हम न खांयगे हमारा धर्म जाता रहेगा-नमस्कार ऐसे धर्म को, गाज पड़े ऐसी समझ पर, ऐसे भगोड़े धर्म को हम कब तक बांध कर जकड़बन्द किये रहेंगे जो थोड़े२ में भागा करता है-बाज़ार की मिठाई दांत तले दबा लिया धर्म धूर में मिल गया अन्य जाति के लोटे में पानी पी लिया भ्रष्ट हो गये—वेश्या संसर्ग दूषित हों दासी गमन करते हों दिवाला निकाल दूसरे की रकम मार बैठे हों धर्म कभी न बिगड़ेगा-बेईमानी फ़रेब जालसाज़ी झूठ बोलना अपने थोड़े से स्वार्थ के लिये दूसरे का सत्यानाश कर देना इत्यादि बातों में धर्म का कहीं ज़िकिर भी नहीं—सब ओर से सिकुड़ सिकुड़ाय हिन्दू धर्म अब रसना इन्द्री में आ टिक रहा है जिस्का प्रादुर्भाव पूर्ण रीति

पर तभी देखने में आता है जब हाड़ की उत्तमता प्रगट करने का कभी को काम पड़ता है—सिवाय दंभ और भेद बुद्धि के सह भोजन की बाधक इस समय की खान पान की प्रणाली में और क्या मूल है—इसमें क्या बुराई है कि पञ्चद्रविड़ ब्राह्मणों की तरह यहां के पञ्चगौड़ मात्र का सहभोजन होने लगे—क्या पञ्चद्रविड़ यहां के ब्राह्मणों से किसी बात में हीन हैं—क्या वे गोत्र प्रवर्तक उन ऋषियों के कुल परम्परा में उत्पन्न नहीं हैं—या कि सब एक साथ बैठ खा पी लेते हैं इसलिये प्रतिष्टा में हम से कुछ हेठे हैं—जब ब्राह्मणोंही का क्रम ठीक नहीं है तब क्षत्री और वैश्य तथा शूद्रों की कौन कहै—क्षत्री सब वैश्य और शूद्र भी अपने जाति का सह भोजन चला दें तो इसमें कौन सी धर्म की हानि है—बुद्धिमानों का सिद्धान्त है "सर्बनाशे समुत्पन्ने अर्द्धंत्यजति पण्डितः" अभी अच्छा है पहले से इसकी ततबीर कर रक्खो नहीं तो बङ्गाल मदरास बाम्बे तुम्हारे लिये नमूना तैयार है खान पान में उनसे भी बुरी दशा तुम्हारी होने वाली है—तब एक २ जाति का सह भोजन प्रचलित कर हाड़ की उत्तमता के कुलाभिमान को इस बात में क्यों न अलग कर दो—कुलाभिमान का अङ्ग हाड़ की उत्तमता को हम किसी अच्छी बात में काम में लावें तो बहुत ही अच्छा हो पर सो न कर किस बुरी तरह से इसका इस्त्यामाल कर रहे हैं—फूड़ा अक्लि वाले पुराने क्रम के लोगों को हमारा यह लेख बहुतही नापसन्द होगा जिसे पढ़ न जानिये क्या २ खयाल उनके जी में हमारी ओर होगा किन्तु लाचारी है जिसमें किसी तरह की भलाई समझ पड़े उसे समय २ चिताते जांयगे मानो या न मानो ॥

सफ़ाई में त्रुटि रही गई ।

गये अङ्क में हम इस्के बारे में लिख चुके हैं उस्पर कुछ खयाल न किया गया तो चितावनी के ढङ्ग पर फिर याद दिलाते हैं-कि एक तो यह खुली नाली कुल गन्दगी और नासफ़ाई की बुनियाद है उसमें अच्छी तरह इस्का न धोया जाना माना कोढ़ में खाज सा हो रहा है-शहर की और २ नालियों में घंटों तक पानी बहा करता है यहां इस नाली में सो भी नहीं इस्में तो पक्का घंटे डेढ़ घंटे तक ज़ोर से धारा प्रवाह सा पानी बहे तब कुछ सफ़ाई हो सक्ती है-सो न होकर सिर्फ़ नाम के लिये थोड़ी देर तक पानी दिन में एक बार बहा दिया जाता है-उस्में मेहतर अपने आराम और सुबीते पर जब चाहता है तब पानी की गाड़ी उस्में ला उड़ेलता है-बहुधा तब जब इस्की केवल नाम की सफाई हो चुकी है—कितनी गन्दगी इस्से फैलती है इस्पर किसी का खयाल कभी नहीं जाता कि जिस समय यह गन्दा पानी बहने लगता है उस समय आस पास के रहने वालों की नाक सड़ने लगती है छठी का दूध याद आता है-हेल्थ अफ़िसर अलबत्ता मुकर्रर हुये हैं जो परदेनशीन गृहस्थों के घर में घुस कोना अन्तरा झांकते फिरते हैं-बम्बई का वबा तो यहां आवै या न आवै इस नये तरह के वबा की अलबत्ता प्रति दिन भय उपस्थित रहती है न जानिये किस दिन और किस जून आजाय-सर्कार को यह क्या मालूम कि हम लोगों का घर तुर्क और इसाइयों के मकान का सा निरा मुर्गीखाना नहीं रहता-हिन्दू के घर की स्त्रियां जिस घर में हेल्थ अफ़िसर जा खड़े होंगे उस मकान को जब तक तीन बार गोबर से लीप गङ्गाजल छिड़क न लेंगी तब तक उस्की सफ़ाई और पवित्रता न होगी-साहब का मकान के भीतर घुस आना हम लोगों को बहुत ही नागवार और दुखदायी है पर क्या किया जाद लाचारी है बिलाइती सभ्यता यही कहती है ॥

होली।

यों तो हिन्दुस्तान ऐसे जघन्य देश में खासकर हिन्दू जाति के बीच सदा आठ वार नौ तेहवार लगेही रहते हैं कोई महीना नहीं जाता जिसमें दो चार बड़े तेवहार न होते हों पर होली दिवाली तो सबसे बड़े तेवहार हैं—जिस मौसिम में ये रक्खे गये हैं वह ऋतु भी शरत् और बसन्त का अति सोहावना होता है—कवियों ने ऋतु बर्णन में अपनी कवित्व शक्ति की कारीगरी जैसा इन दो ऋतुओं के बर्णन में प्रगट की है वैसा और किसी ऋतु के बर्णन में नहीं—अब तो जल वायु का क्रम बदल जाने से बहुधा प्राकृतिक बातों में अदल बदल और हेर फेर हो गया है कि चार महीने की बरसात के उपरान्त मेलीरिया ज्वर बहुधा कातिक में ऐन दिवाली पर अकसर ज़ोर पकड़ता है—नहीं तो इसमें सन्देह नहीं कि कार्तिक और कुछ हिस्सा अगहन का बहुत मन का रमाने वाला होता है—न बहुत जाड़ा न बरसात के उमस की सड़ी गरमी न दिन को घाम की तेज़ी न रात को शिद्दत का जाड़ा—इसी तरह होली पर भी बसन्त का प्रारंभ हो जाता है—शीत का प्रयाण गरमी का आगमन रात और दिन दोनों बराबर मानो कांटा के तुले हुये—नये २ फूल और पत्तों से आभूषित पेड़ और पौधे प्रकृति नर्तकी के लिये मानो एक विचित्र नाचघर तैयार कर देते हैं—आबाल वृद्ध बनिता नई फसल के कटने की उम्मेद में निहाल विशेष कर खेतिहरों के हर्ष सन्दोह का उद्गार इसी होली के नाम और रूप में परिणत हो प्रगट होता है—परन्तु होली दिवाली के इस सब आनन्द के पूर्ण भोक्ता तो वे ही भाग्यमान् जन रहे होंगे जो अपने समय भारत को सब भांत हृष्ट पुष्ट देख ऐसे २ उत्सव और तेवहार निकाल गये—दुर्भिक्ष कर पीड़ित हम लोगों को ये तेवहार मानो लीक का पीटना होता है कहावत है "सदा दिवाली ताहि घर जेहि घर गेहूं होय"— हमारी वर्तमान्

निष्किंचन दरिद्र दशा में ये तेवहार भी क्लेशदायी होते हैं—जिनको प्रति दिन का भोजन न जानिये किस तरह निभता है उनको इन तेवहारों का एक नया खर्च सिवाय अखरने का बाइस होने के सुख का कहीं लेश भी नहीं इन तेवहारों में मालूम होता है—विशेष कर इस साल तो जैसी होली हुई वह जीही जानता है राम २ कर किसी तरह इस मनहूस संवत् से जी छूटा—जैसा हमारे एक मित्र ने होली के राग में दिखलाया है जिसे हम नीचे प्रकाश करते हैं :—

डफ बाज्यो भरत भिखारी को ।
केशर रंग गुलाल भूलि गयो,
कोउ पूछत नहि पिचकारी को ॥ डफ बा० ॥ १ ॥
बिन धन अन्न लोग सब व्याकुल,
भइ कठिन बिपत नर नारी को ॥ डफ बा० ॥ २ ॥
चहुं दिशि काल पर्‍यो भारत में,
भय उपज्यो महमारी को ॥ डफ बा० ॥ ३ ॥
अपना करम भोग फल चाखो,
दोषन अमल सरकारी को ॥ डफ बा० ॥ ४ ॥
छांड़ि छांड़ि घर लोग पराहीं,
तज पुत्र पिता महतारी को ॥ डफ बा० ॥ ५ ॥
धन्य धन्य लाट मेगडानेल,
भये जो जीवन प्रजा बिचारी को ॥ डफ बा० ॥ ६ ॥
त्राहि त्राहि सब जनहि पुकारें,
कोउ होहु सहाय दुखारी को ॥ डफ बा० ॥ ७ ॥

रायल कमिशन।

"होइहै वही जो राम रच राखा। को करि तर्क बढ़ावै शाखा"

जान कर अजान बनना इसी को कहते हैं—गवर्नमेंट को क्या मालूम नहीं है कि देश की कैसी बुरी दशा है कर्ज़ पर कर्ज़ बढ़ता जाता है प्रति वर्ष लोन पर लोन खोलती जाती है—दिवालदारी का भी कुछ छोर होता है यहां अब तक बराबर नया कर्ज़ लेना जारी है पुराना कर्ज़ अदा होने की कोई सूरत नहीं देखी जाती—ख़र्च सब उसी तरह पर कायम हैं और क्यों न कायम रहे जब विलाइत वालों की खातिर हर तरह पर सर्कार को मंज़ूर है—यह तो बिल्कुल साफ़ है कमिशन बैठने की ज़रूरत ही क्या है। अब भी ऊंची २ तनखाह वाले हाकिम कर्मचारी इंगलैंड से न बुलाये जांय सुयोग्य हिन्दुस्तानी जिनकी कमी अब देश में यहां नहीं है थोड़ी तनखाह पर रक्खे जांय—फौज़ का ख़र्च जो इतना बढ़ा है कम कर दिया जाय फौज़ी बड़े २ ओहदों में भी हिन्दुस्तान के लोग शरीक किये जांय—सरहद पर जो हरसाल इतना ख़र्च किया जाता है रोक दिया जाय—विलाइत के लोगों को एक्सचेञ्ज में हर साल कई लाख रुपया दिया जाता है सो क्यों—लंकाशायर आदि के सौदागरों को खुश रखने को फ्री ट्रेड जारी है हिन्दुस्तान के माल पर टैक्स लगा दिया गया है—यही सब तथा और २ बहुत सी छोटी २ बातें ऐसी हैं जिसे गिनाने लगें तो पेज का पेज रङ्ग जाय—कहां तक कहैं हम लोग खाते पीते सोते जागते हर जून विलाइत का फ़ाइदा कर रहे हैं कमिशन हिन्दुस्तान की भलाई किया चाहे तो हर तरह पर कर सक्ता है—अब के बार इस कमिशन में विलाइत के कुलीन घराने के बड़े २ लाट और बड़े २ ओहदेदार शरीक किये गये हैं जिनका इज़हार नित्य पायोनियर में छपा करता है—यहाँ से बाबू सुरेन्द्रनाथ गये हैं मदरास की

महाजन सभा की ओर से सुब्रमेनिया ऐयर इसी के लिये भेजे गये हैं-देखिये इस कमिशन का क्या परिणाम होता है— अब तक जो कमिशन हुये उस्मे हेर फेर के रही वही बात तै जो गवर्नमेंट चाहती थी और जिसे वह बिना कमिशन बैठाये भी कर सक्ती थी-इसी से हम कहते हैं "होइहै वही जो राम रच राखा" हां कमिशन के बदौलत भी कई लाख रुपया हिन्दुस्तान को इस्के ख़र्च का बरदाश्त करना पड़ता है सो होगा-अस्तु इस कमिशन में बड़े २ उदार प्रकृति के इनसाफ़ पसन्द लोग शरीक किये गये हैं कुछ भी करोड़ दो करोड़ साल की किफ़ायत हिन्दुस्तान के लिये कर दी जाय तब भी हम अपने भाग सराहें-देश हर तरह पर रुपये की ओर से कर्ज़ बेहद्द बढ़ जाने से दिवालिया और पोला पड़ गया हैं इसी से ज़रा सा एक फ़सल मारी पड़ी या कम पैदा-वार हुई लोगों ने मुह बाय दिया कई लाख आदमी भूख से मर गये-काल यहां पड़ना कोई नई बात नहीं है १८या २० बर्ष पर इस्का दौरा होना तो मानो पारी सी बंध गई है पर पहिले के अकालों में लोग इतना और ऐसी जल्द नहीं बिलबिला उठते थे जैसा अब इतनी जल्द और इतने थोड़े में धीरज छोड़ देते हैं-हम तो जानते हैं यह इसी लिये ऐसा होता है कि देश में धन अब बाकी न रहा लोगों को सिवाय खेती के दूसरा सहाड़ा न रहा खेती की उपज जिस साल बं बोल गई उस बर्ष लोग भी निरावलम्ब हो घबड़ा उठे-हिन्दुस्तान में जो भाव अन्न का ऐसे करें दुर्भिक्ष के समय है वह इंगलैन्ड में सदा रहता है बल्कि इस्से भी सेर दो सेर कम पर बिकता है पर वहां लोग सब भांत भरे पुरे हैं सब भांत मालामाल हैं रुपये का सेर भर अन्न बिके तो उन्हे न अखरै-सिवाय इस्के संसार भर का धन वहां ढोआ जाता है बनिज और शिल्प इस कदर चढ़ा बढ़ा है कि धरती की उपज का ख़याल कभी किसी को होताही नहीं-हम भी किसी समय अब पोले नहीं हुये थे

उस समय एक इंगलैन्ड की कौन कहे समस्त योरप को मोल ले सक्ते थे बन पड़े की बात है – अब हम सब भांत परकटे पखेरू हैं, तुम्हारे आधीन हैं, बशंवद हैं, अनुयायी हैं, चाहो बोर दो चाहो उबारो, हमारे लिये कमिशन बैठाओ, जो चाहे सो करो, पर इतना समझे रहो उदार और उत्तम शासन का अभिमान और दावा छोड़ बैठो—दाम से हम पोले पड़ गये तो आप के उदार शासन का भी हमें सब हाल खुल गया–हिकमत को अब कब तक काम में लाते रहोगे निरा विलायतही के फ़ाइदे पर से दृष्टि हटाय हिन्दुस्तान के लिये भी कुछ करनाहीं पड़ेगा दिलासा दे२ अब कब तक रक्खो गे –कमिशन इत्यादि को हम लोग केवल दिलासा देना मानते हैं जब तक वास्तव में कोई बात आप की देख न लेंगे —आशा करते हैं विलाइत के बड़े २ कुलीन और अफ़सरों की गवाही का अवश्य कोई अच्छा फल होगा और यह कमिशन पहले के कमिशनों की तरह छूछा न जायगा—एक बात यहां पर और सूचित करने लायक है कि यह कमिशन प्रति वर्ष कानग्रेस के अन्दोलन का बाइस है—कानग्रेस के विरोधियों को चाहिये कि अब भी इस्की ओर अपनी श्रद्धा और रुचि प्रगट करें और तन मन धन से देश के महा हित के काम में तत्पर हों—मसल है गावते२ ब्याह होता है–उचित है हम भी अपनी गीत गातेही रहैं – कुछ तो असर इस गीत का होता भी है पर जो होता है सो इतना कम कि उस्से हम लोगों को सन्तोष नहीं होता और हिकमत से खाली नहीं रहता लाचारी है ॥

—०—

सच है अन्धे को चिराग से कोई फाइदा नहीं है।

इस्मे सन्देह नहीं बंगवासी सरीखे स्वार्थ तिमिर के अन्धों को हमारा प्रदीप प्रकाश नहीं पहुंचा सका हमारा तो लक्ष्य यह हर्द नहीं

कि बंगबासी से ओछे छिछोरों की नेत्र दें। बंगबासी यदि सनातन धर्म की आड़ में प्रचलित बुराइयों का पोषण न करैं तो उन्हें पढ़ै कौन— हिन्दू धर्म के बिगड़जाने की और हिन्दुस्तान का इस दीन दशा में आजाने की चोट तो चित्त में हई नहीं आठवें दिन पर खुराफात लिख लिखाय भर देना चाहियेई तो क्या लिखैं "मुखमस्तिचवक्तव्यं शत हस्ता हरीत्तकी" मुख है तो कुछ कहना चाहिये हां लो सुनो सौ हाथ की हरैं। न कुछ सूझा व्यर्थ की गालीही मुरू हमे लिख मारा। श्रुतिस्मृति संमत आर्य श्रेष्ट पुरुषों का चलाया हुआ हमारा हिन्दूधर्म लालची स्वार्थी ब्राह्मण और पण्डितों के कुचलन और असत् स्वार्थी बर्ताव से बिगड़ रहा है जिस्से अब जल में तुंबी के समान ब्राम्हणों का टका केवल ऊपर उतरा रहा है। उसे हम सुधारने को कहते हैं तो क्या बुरा कहते हैं जो बंगबासी जामे के बाहर हो गये। "सत्तर चूहे खाय बीबी हज्ज को चलीं" बंगबासी के मालिक तो अपने को देखैं कब से सनातन धर्म के मानने वाले पक्के हिन्दू बन बैठे। सुनते हैं बिलाइत हो आये हैं पवित्र होटलों में सब कुछ खा पी अब सिद्ध बन बैठे हैं। न भी बिलाइत गये हों तो कलकत्ते के बाबुओं में तो हई हैं। जिनका दल का दल सामयिक सभ्यता का बड़ा भक्त है। जिनके लिये हिन्दुओं का पुराना तरीका और पुराना क्रम जो सनातन के नाम से प्रचलित है मानो शरम का बाइस है और साहब बनने में बड़ा विघ्नकारी है। ऐसे लोग जो सनातन की रीति नीति और धर्म के पोषक बनैं और उस्मे किसी तरह के संशोधन की उन्हे कलक हो तो इसे सिवाय दंभ और मक्कारी के क्या कहैं॥

पटंछिन्द्यात् घटंभिन्द्या द्र्दभा रोहणं चरेत्।
येन केन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत्॥

कपड़े फाड़ डाले घड़े फोड़ डाले गदहे पर चढ़ कर चलै जिस्मे सब लोग उस्पर अङ्गुल्या निर्देश करैं। संसार में किसी तरह पर प्रसिद्ध हो। कोई एक बात अनूठी अपने में लाने ही को बंगबासी अच्छा और प्रसिद्ध होने का द्वार समझते हैं। समाचार पत्र मात्र कानग्रेस को अच्छा कहते हैं और उसके पोषक हैं एक बंगबासी अकेले उसे बुरा कह रहे हैं और यही चाहते हैं कि किसी तरह इस्की जड़ उखड़ जाय। जिसकी ऐसी उलटी समझ है उसने हमे गाली जो दिया तो उस्का बुरा मानना क्या। राजकीय बिषयों में गवर्नमेंट हमे दबाये हुये है सामाजिक मामिलों में ये पंडित लोग सनातन के नाम से हमे जकड़े हुये हैं उभड़नेहीं नहीं देते दोनो के चाप में दबा हुआ देश का देश पिसा जाता है कोई उम्मैद आगे बढ़ने की देखने में आतीही नहीं॥

पराये की स्त्रियों पर पुराने पिशाच ब्राह्मणों का क्या अधिकार है इस्का अर्थ ज़रा भी गूढ़ नहीं है। इस लेख के लिखने वाले अपने आस पास के घरों में या हिन्दुओं के "अर्धांडागमा" के पैरोकार खुद हों तो अपने ही घर में जा देखैं ब्राह्मणों का उन पर क्या ज़ोर है। भारत महिलाओं में यदि बुद्धि और विद्या का पूर्ण प्रकाश रहता तो कभी संभव था कि उन्हे ये अपने चंगुल में रख खातिरखाह अपना फ़ायदा उनसे उठाते और पागुर करते हुये तोंद पर हाथ फेरते बैठे रहते। जीविका प्राप्त करने को अनेक गुण उपार्जन करते ब्राह्मणों में संस्कृत का ऐसा जल्द लोप न हो जाता जैसा अब है। पहले तो दरिद्रता का प्रकाश बढ़ने से देश से दान का क्रम उठताही जाता है पुरुष बहुधा सभ्यता की शागिर्दी में आय धर्म बुद्धि से किसी सुपात्र को कुछ देना फ़जूलख़र्ची मानते हैं जो कुछ बच रहा है वह इन्ही सीधी स्त्रियों में जो सनातन के क्रम पर उन्ही को देंगी जो उनके घराने के पुरोहित या वृत्ति कर रहे हैं। वृत्ति करने वालों को जब यों ही कसरत से मिलता

जाता है तो उन्हे दैव लगा है जो बिद्या गुण के उपार्जन में लगैं—नहीं तो क्या कारण कि जिस समय देश में सब ओर हलचल और राज बिराजी छाई हुई थी कैसे२ विद्वान् पंडित हुये और प्रत्येक विषय के कैसे२ उत्कृष्ट ग्रन्थ बने—अब इस समय जब कि अंगरेज़ी राज्य की शान्ति सब ओर छाई हुई है पचास साठ वर्ष के बीच कोई ग्रन्थ किसी विषय के संस्कृत के बने या इधर के ज़मानों में उन ग्रन्थकार पंडितों सा कोई एक भी वैसा उत्कृष्ट विद्वान् संस्कृत का हुआ? साठ सत्तर वर्ष पहले तक हर तरह के टकसाली ग्रन्थ बनते गये—नागेश के उपरान्त भी भैरव नाथ इत्यादि शेखर का तिलक भैरवी बना गये। इसी तरह और२ विषय के भी ग्रन्थ बराबर बनते गये। ऐसे शान्ति के समय हमे उचित था कि इस्का पूरा फाइदा उठाते संशोधन के द्वारा समाज की बुराइयों को दूर करते—ब्राह्मण मात्र बिद्या वृद्धि में तत्पर होते न कि खूंटा से गड़ गये हिलने डोलने को बुराई और पाप समझते हैं सनातन का माला जपते हुये आंख मूंद बैठ गये। सनातन की दो एक भलाई हैं तो उसके ज़ैल मे पलटन की पलटन बुराईयां प्रचलित हैं पर सनातन से चली आई हैं तो किस्की ताकत जो उसे समाज से हटा सके—चाहो बंगबासी हमे जो कहैं हम तो इस सनातन की पैरवी बड़ा दोष मानते हैं और देश का उद्धार हो ही नहीं सक्ता जब तक सनातन पर लोगों की श्रद्धा बनी है—

"हां अवश्य इस हिन्दू धर्म और इस्की रीति नीति घिन के लायक होगई है" जिस्पर बंगबासी ऐसे दांभिकों को क्षोह है वह घिन के लायक क्यों न होगा—जिस्को कलकत्ते मे रह नाई कसाई डोम के साथ खाने का अभ्यास पड़ रहा है उसने भट्टों को भी ऐसा समझा तो क्या अचरज है—सच है जिस्मे सात ही वर्ष की कन्या व्याही जाय, जिस्मे आठ कनौजिये नौ चूल्हे हों, जिस्मे लड़कपन से क्षीरकण्ठ बालक का

ब्याह कर स्वच्छन्द जीवन का पांव तोड़ दिया जाय, जिस्मे संसार भर की बुराई बेइमानी फ़रेब व्यभिचार इत्यादि कोई पाप न समझे जांय एक जाति वाला किसी दूसरी जाति का छुआ भात खाय लिया बस-पतित हो गया धर्म रसातल को चला गया वह सनातन धर्म क्या विचारवान् लोगों के पोषण योग्य है। तअज्जुब क्या हमने उसी लेख में बिलाइत के लौटे हुओं की बड़ी पोल खोली है और उनके कुचरित्र दिखलाये हैं उसी पर बंगबासी कुढ़कर हमे गाली देने लगे हों॥

——:o:——

सत्पुत्र ऐसेही होते हैं।

ज़िलह इलाहाबाद के प्रसिद्ध तअल्लुकेदार राय प्रताप चन्द्र ने निजग्राम फूलपूर में अपनी स्वर्गबासिनी मा के वार्षिक श्राद्ध में प्रयाग तथा प्रान्तवर्ती स्थानों के विद्वानों का बृहत्समारोह एकत्रित किया जिस्मे चुने चुने ५० पंडितों के ऊपर थे–उनको दो दिन तक अपने स्थान पर टिकाये रहे और बहुत उत्तम सत्कार के उपरान्त एक२ पंडितों को चार२ मुद्रा दक्षिणा दिया। सै के ऊपर संन्यासी और उदासी तथा और बिरक्त योग्य विद्वान् भी इस समारोह में आये थे उन का भी उचित सत्कार के उपरान्त एक२ बिरक्त को दो२ रुपये, और कुछ वस्त्र दे बिदा किया–उक्त राय साहब तथा उन के प्रधान कर्मचारी बाबू शिव बदन सिंह दोनो बड़े विद्या रसिक धर्म रुचि श्रद्धालू हैं। इन दोनो की बड़ी रुचि है कि संस्कृत की उन्नति हो। वर्ष में दो एक बार इस तरह का समारोह सदैव किया करते हैं कि जिस्में संस्कृत के पठन पाठन में ब्राह्मणों की रुचि बढ़ती रहे–उक्त राय साहब तथा उनके सहकारी बाबू शिव बदन सिंह इस बात के लिये बड़े सावधान हैं कि हमारा धन किसी दुर्व्यसन में असद्व्यय न होने पावे अपिच जो कुछ व्यय हो वह इसी तरह के धर्म के कामों में उठै। नीति भी ऐसीही है॥

"अर्थाना मर्जनंकार्यं वर्द्धनं रक्षणं तथा ।
वर्द्धितं पालयेत् सम्यक् वृद्धं तीर्थेषु निक्षिपेत्" ॥

धन का उपार्जन करै उसे बढ़ाता जाय और चौकसी से उस की रखवाली करै बढ़े हुये धन को तीर्थ अर्थात् पात्र को देने मे और उन के सत्कार मे उठावै—हिन्दुस्तान की सबी श्रीमन्त धनी दुर्व्यसन मे असद्व्यय न कर यदि उक्त राय साहब के समान पात्र मे धन का विनियोग किया करैं तो इस युग को कलियुग क्यों कहैं—पर युग धर्म के प्रभाव से ऐसा काहे को कभी हो सक्ता है । सब से अधिक प्रशंसनीय काम उक्त महाशय ने यह किया कि दश हज़ार के ऊपर कंगलों को इस महा दुर्भिक्ष के समय उत्तम भोजन दिया—एक२ कंगले दो२ सेर के ऊपर चीनी फाक गये होंगे जिस समय ये कंगले खा रहे थे वह दृश्य देखने के योग्य था "क्षयाहे भूरि भोजनं" सत्पुत्र की सब से बड़ी पहचान है । ईश्वर ऐसे श्रद्धालू की उत्तरोत्तर वृद्धि करता रहे ॥

पुस्तक प्राप्ति ।

बिहारी की सत सई सतिलक । गीत गोबिन्द भाषानुवाद सहित-अंगरेज़ी चरित्र । ये तीनों पुस्तकें बंगबासी की ओर से उपहार में दी गई हैं । इन्मे बिहारी की सतसई सब से उत्तम ग्रन्थ है प्रारंभ में बिहारी का समय निरूपण और उनका थोड़े में जीवन चरित्र है टीका इस्का उत्तम है मूल्य १) —दूसरी गीति गोविन्द का मूल्य ॥) है—तीसरी अंगरेज़ी चरित्र बिलाइतके लौटे हुये एक हिन्दुस्तानी की लिखी हुई—इस्मे उपन्यास के ढंगपर अगरेज़ों के रहन सहन वर्ताव आदि को दिखलाया है दाम ।=) है बंगबासी मेशीनप्रेस कलकते मे छपी है ॥

उपन्यास लहरी।

इस नाम का मासिक पत्र काशी से बाबू देवकी नन्दन खत्री द्वारा दो साल से प्रकाशित हो रहा है जिसमें चन्द्रकान्ता सन्तति अर्थात् चन्द्रकान्ता के लड़कों का हाल छप रहा है यह उन्यास बहुत बड़ा है। अब तक इसके ८ भाग छप चुके हैं। उपन्यास की बन्दिश और उठान बहुत अच्छी पढ़ने लायक है। उक्त बाबू साहब ने इस में कूट २ संस्कृत शब्द नहीं भरे बल्कि क्लिष्ट संस्कृत शब्दों के बदले मुहाविरे की सब के समझने लायक उर्दू को विशेष आदर दिया है। उचित था कि उर्दू के बदले सुललित ठेठ हिन्दी का प्रयोग करते पर क्रम कुछ ऐसाही है कि लेखक पाठकों की रुचि अनुसार लेख लिखता है जब रुपया पैदा करने के खयाल से पुस्तक लिखी जाती है तब मातृ भाषा की कोरी भक्ति अलग रख दी जाती है। जो हो उपन्यास बहुतही मन का रमाने वाला है। एक बार प्रारंभ करने से बिना अन्त तक पढ़े नहीं रहा जाता। इस्का वार्षिक मूल्य २) है। मिलने का पता उपन्यास लहरी आफ़िस लाहोरी टोला बनारस॥

——:0:——

सहायार्थदान।

कृष्णागढ़ राज पुताना निवासी बाबू मदन मोहन जगन्नाथ बहोरा ने हमे ५) पत्र के सहायार्थ भेजा है। उक्त महाशय न जानिये क्यों हमारे लेख से ऐसा रीझ उठे कि हम यद्यपि सर्वथा अपरिचित्त उनको अबतक थे तौभी सहायार्थ हमे ५) भेज दिये। खेद का विषय है कि पहले तो हिन्दी के रसिक विरले हैं, हैं भी सो उलटा हमारीही लिपढ़ी बतोना करना चाहते हैं। निष्कारण सच्चे हिन्दी के प्रेमी ऐसेही को

कहना चाहिये जैसा बाबू मदन मोहन महाशय देखने में आये ॥

गृहय चिकित्सा ।

वैद्यक के प्रमाणिक ग्रन्थ चरक सुश्रुत आदि से लेकर छोटे२ रोगों की चिकित्सा और उन का निदान आदि इसमे अच्छे दिये गये हैं। मूल्य ।=) मुलतान निवासी गोस्वामी घनश्याम शर्मा कृत ॥

जातीयता के गुण ।

पहले इसके कि जातीयता के गुण प्रगट कर दिखलावें यह जनना अति आवश्यक है कि जातीयता क्या वस्तु है और क्यों जातीयता का भाव पैदा होता है। मनुष्यों में जातीयता का भाव दो कारणों से पैदा होता है एक प्राकृतिक दूसरा व्योहारिक—प्राकृतिक कारण जातीयता का जुदे२ देशों का शीत उष्ण उर्बर अनुर्बर इत्यादि का तारतम्य है और इस कारण उन२ देशों के रहने वाले मनुष्यों में शारीरिक और मानसिक भावों का भेद हो गया वही एक२ जाति बन गई है। इसके अनुसार यूरोप के विद्वानों ने मनुष्य जाति के ३ भेद किये हैं। काकेशीय मांगोलीय और ईथियोपीय—ये तीनों जाति भेद केवल स्थान विशेष में निवास के कारण मनुष्य के शरीर की गढ़न और गौर या श्याम बरण के अनुसार किये गये हैं। पृथ्वी के जिन २ स्थानों में शीत की अत्यन्त अधिकता है और भूमि उस स्थान की अनुर्बरा और नैसर्गिक दृश्य वैचित्र्य Natural beauty बिहीन है। ऐसे स्थान के निवासी प्रायः सब ठौर एक से शील स्वभाव के होते हैं—ये लोग बहुधा निष्किंचन और धन शून्य होते हैं और इस कारण निष्ठुराचारी हिंसा बिहारी प्रवंचना पटु शठ मूर्ख विश्वास घातक होते हैं। आखेट इत्यादि से अपना पेट येन केन पाल लेते हैं। आखेट इत्यादि मे अधिक परिश्रम करते२ स्वस्त और साहसिक अवश्य होजाते हैं। किन्तु उस स्थान में जहां वे

रहते हैं किसी तरह की नैसर्गिक शोभा और प्राकृतिक दृश्य के अभाव के कारण उनकी बुद्धि स्फूर्ति बिहीन होती है। इस जाति के लोग मध्य और दक्षिण अफ्रिका, मध्य एशिया, तिब्बत तातार आदि अनेक देश के रहने वाले हैं। केन्द्र के समीप जो देश हैं वहां बड़ी शीत होने से उन देशों के मनुष्य भी ऐसेही निरिकंचन और साहसिक हैं॥

दूसरी श्रेणी के लोग वे हैं जो ऐसे स्थान में रहते हैं जो न अत्यन्त शीत है न अत्यन्त उष्ण है जहां की पृथ्वी कुछ उर्बरा और कहीं२ नैसर्गिक शोभा संयुक्त है। यूरोप खण्ड के रहने वाले अधिकांश इसी श्रेणी के हैं जिनका नवाभ्युत्थान और सौभाग्य इन दिनो हर एक बातों में तरक्की के ओर छोर को पहुंचा हुआ है। भूमि यद्यपि यहां की बहुत पहाड़ी और अनुर्बरा है किन्तु योरप वाले निज कला-कौशल और विज्ञान से पृथ्वी के सब खण्डों से धन संपत्ति में बढ़े हुये हैं और मनुष्य जाति मात्र को शिक्षा देने का बाना बांधे हुये हैं॥

तीसरी श्रेणी के वे हैं जो ऐसे स्थान में रहते हैं जहां गरमी और सरदी दोनो समान भाव से होती है। ६ ऋतुओं का समय२ प्रकाश होता है। वहां की धरती उर्बरा प्राकृति दृश्य वैचित्र्य की अधिकाई से सुशोभित रहती है। ऐसा देश प्राचीन भारत प्राचीन ग्रीस और प्राचीन इटली तथा मिसिर देश हैं। इनमे ग्रीस और इटली अपनी अवनति देख ठीक समय में उस से छुटकारा पाने का यत्न कर शीघ्र अपनी उन्नति की दशा को पहुंच गये किन्तु भारत के भाग्य में क्या बदा है सो कुछ जाना नहीं जाता। शताब्दी पर शताब्दी बीती जाती है किन्तु इसके दुर्भाग्य की दशा में कुछ अदल बदल नहीं होती दीखती—जैसी अचेत दशा में भारत पड़ा सो रहा है उससे बोध होता है मानो इसकी नाड़ी में जीवनी शक्ति हई नहीं इसमें कुछ भी दम होता

तो अवश्य उठने की चेष्टा करता॥

हम ऊपर जातीयता का एक दूसरा कारण व्यवहारिक कारण कह आये हैं काम साधने के लिये मनुष्य का मनुष्य के साथ जो परस्पर संयोग एकता उद्यम और साहस वह व्यवहारिक कारण है। जातीयता का अवान्तर कारण प्रतिवासिता अर्थात् परोस का निवास भाषा मत या धर्म आदि है। परोसी का परोसी के साथ परस्पर आलाप परिचय और सुहृद्भाव के द्वारा दोनो में जो एक प्रकार का विश्वास और सहानुभूति हो जाती है उसी सहानुभूति और विश्वासके बल वे दोनों किसी बड़े काम के साधन निमित्त जहां तक एकता के सूत्र में बंध सकें उसी को हम व्यवहारिक कारण जातीयता का कहेंगे। सहानुभूति और विश्वास यही दो जातीयता नदी के दो किनारे हैं। एक भाषा एक मत वा एक धर्म एकही कुल गोत्र या बंश से जन्म आदि से भी सहानुभूति और विश्वास वृक्ष की जड़ पुष्ट पड़ती जाती है। हम पहले लिख चुके हैं कि प्रयोजन की सिद्धि इस जातीयता का फल है सो जातीयता बिना सहानुभूति के अकेली भाषा अकेला धर्म वा मत से कभी नहीं होती बरन अलग२ ये तीनों जातीयता के विरोधी हैं। हिन्दुस्तान में जातीयता और सहानुभूति इसी लिये नहीं होती कि यहां मत और भाषा की विभिन्नता बहुत है। संस्कृत यहां की बोल चाल की भाषा किसी समय थी यह भी इसी से प्रगट होता है। प्राचीन भारत जिस समय उन्नति की दशा में था और जातीयता का यहां पूर्ण प्रादुर्भाव था उस समय अवश्य संस्कृत देश भर की एक भाषा वैसेही रही जैसा अब अंगरेज़ी यहां होती जाती है। पीछे प्राकृती ने ज़ोर पकड़ा जो एक समय ग्रामीण और नीच लोगों की भाषा थी और वही बढ़ते२ यहां तक पुष्ट पड़गई कि संस्कृत को दबा लिया और अनेक भेद उसके होगये और भेद होने के साथही देश से मैंजातीयता को भी टुकड़े२

करडाला। अब मत को लीजिये जब तकदेश भर में एकही वैदिक धर्म था जुदे २ संप्रदाय और मत नहीं फैले थे जातीयता भी सर्वांग सुन्दर हो प्रकाशमान् थी। उपरान्त पंचायतन पूजा प्रारंभ हुई तब तक भी जातीयता के इतने खण्ड नहीं हुये थे—जब से अनेक धर्म और संप्रदाय चलीं तब से जातीयता के सैकड़ों टुकड़े होगये देश जो दुर्दशा भोग रहा है वह प्रत्यक्ष है और न कोई आशाहै कि जब तक ये विविध संप्रदाय प्रचलित रहैंगे, तब तक फिर जातीयता हम लोगों मे कभी आसकेगी।

जिस समय यहां वैदिक धर्म प्रचलित था ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र चारो मिलकर भारत में आर्य के नाम से विख्यात थे। उस समय इन की शोभन मूर्ति पर मोहित हो यवनो की दृष्टि इन पर पड़ी और उन्हे पराजित कर उन्ही के अंक में इन मुसल्मानों ने भी स्थान पाय बस गये आर्यों ने भी इन्हे अपना अंग बना लिया ऐसा कि दोनो एक शरीर होगये। पहले शूद्रों को जीत आर्यों ने उन्हे अपना अंग बना लिया था अब ये यवनो से पराजित हो आप उनके अंग बन गये सही पर ऐसा जुट सा गये कि दोनो अंग एक हो अनेक शिराओं से रक्त संचालन होना आरंभ होगया। यहां तक कि उठना बैठना नशिस्त बरखास्त रीति नीति व्यौहार रंग ढंग सब एक हो आर्य से यावनिक होगया सही पर कितनी बातों मे जातीयता का आभास मात्र बनाही रहा। इसी समय समुद्रपार से अनेक जाति की श्वेत मूर्ति यहां आउपस्थित हुई। आर्य लोग यद्यपि अपनी पहली आर्य जाति की जातीयता खो बैठे थे तौभी इस नई प्रकार की यावनिक जातीयता में आय ऐश्वर्य सेवा महा वात व्याधि से पीड़ित हो ऐसे वातुल और उन्मत्त होगये थे कि इन श्वेत मूर्तियों ने अपने को वैद्य विदित कर इन आर्यों से कहा कि हम तुम्हारे उन्माद रोग की चर्चा सुन समुद्र के पार से आये हैं और तुम्हारे कृपा पात्र बना चाहते हैं। तुम हमारी चिकित्सा मन लगा के करो तुम्हारी सब

बाई हम जल्द पचा देंगे-तुम्हारे जोड़२ में अनेक शोषक द्रव्य छोड़ जातीयता के शरीर का रस मात्र खींच लेंगे और ऐश्वर्य की गरमी से आंख में जो मोतियाविन्द छा रहा है जिस्से तुम्हे देख नहीं पड़ता उसमे दारिद्र महा रस का एक ऐसा रसांजन छोड़ देंगे कि उससे इस चर्म चक्षु की क्या तुम्हारे हिये की जो फूट रही है वह भी खुल जायगी तब तुम्हे अनेक प्रकार के कौतुक सूझ पड़ने लगेंगे। भारत वासियों ने इनकी कमनीय कोमल मूर्ति और सुमधुर वाक्यावली पर मोहित हो कुछ मुसकिरा इन की चिकित्सा स्वीकार कर लिया। जब तक अनेक कल बल छल से शरीर का थोड़ा थोड़ा रस खिंचता रहा तब तक जैसा किसी को सहराने में सुरसुरीका मज़ा मिलै। किन्तु रस खिंचते २ जब ये अत्यन्त दुर्बल और मृयमाण होगये तब चिल्लाने लगे। तब वे भिषकवर बोले देखौ गुल शोर मत मचाओ जब तक तुम्हारे शरीरे में थोड़ा भी बाई का असर बचा रहेगा तब तक तुम किसी काम के न रहोगे लिखा भी है "दारिद्रं परमांजनम्" तुम्हारी आंख खोलने को यही बड़ा श्रेष्ठ रसांजन है। यहां तक कि भरत अब सर्वथा उत्थान शक्ति रहित हो गया परन्तु उस अंजन से जो इस्की आंख खुल गई तो अब यह बूंद का चूका घड़ा ढरकाने की भांत तरह२ की बातें सोच रहा है-अब लोग अपनी अनेक भूल चूक को पछताय इस्का अनेक कारण कह रहे हैं पर यह किसी के मन में नहीं समाता कि यह केवल जातीयता की सहानुभूति के न होने का कारण है-और फिर जातीयता के आने की न कोई चेष्टा कभी की जाती है ऐक्य, सहानुभूति, देश भर की एक भाषा, एक मत, आदि जातीयता के उत्कृष्ट गुण जब तक न अवैगें तब तक भारत का पुनरुत्थान सर्वथा असंभव है

इति०

हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २० सं० ८-९-१० { प्रयाग } अप्रैल-मई-जून १८९७ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

मूल्य अग्रिम ३।=) —— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥≡)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द भी पोस्टेज १।=)

नमूने की कापी =)॥

१-७-९७

हिन्दीप्रदीप

जिल्द २०
संख्या ८।९।१० } प्रयाग { अप्रैल । मई । जून
सन् १८९७ ईसवी ॥

यह समय पलिटिक्स के परिज्ञान के तरक्की का है।

इस अनादि अनन्त समय के परिवर्तन से लोगों की रुचि और चित्त की झुकावट मे भी बराबर परिवर्तन होता गया—सृष्टि के प्रारम्भ मे सब के पहिले ईश्वरीय या आध्यात्मिक ज्ञान की उन्नति की गई अर्थात् इस दृश्य जगत् का उद्भव कहां से हुआ इस्का नियामक भी कोई है और अन्त मे आदमी की रूह कहां जाती है क्या इस्की दशा होती है इत्यादि बातों के जानने और तलाश करने मे लोग प्रवृत्त हुये—उस समय अनेक उपनिषद् बने दर्शन और फिलोसोफी की तरक्की की गई इसी तरह कोई समय ऐसा आता है जब लोगों को पुरावृत्त पुराने इतिहास जानने की विशेष रुचि बढ़ती है उस समय अनेक पुराण भांत २ की तवारीखें बन जाती हैं—दृश्य जगत् की प्राकृतिक शोभा पर मोहित हो शब्दों के द्वारा अब उन प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन की रुचि लोगों की हुई तब कविता और शायरी की तरक्की कीगई रामायण भारत आदि काव्य बने और आर्ष के नाम से प्रचलित हुये—हिन्दुस्तान मे इन सब विषयों की उन्नति अपने ओर छोर को पहुंच अब अस्तंगत दशा को पहुंच

गई—अब यह समय विज्ञान और पलिटिक्स की उन्नति का है और २ जाति और देश वाले इन दोनो बातों मे बड़ी तरक्की कर रहे हैं—इंगलैंड और अमेरिका का नवाभ्युत्थान केवल इन्ही दोनो की तरक्की का बाइस है—मसल है "सबी अलोना नोन बिन" षट्रस भोजन आगे परस दिया गया पर लोन उसमे नहीं है तो वह भोजन क्या कभी स्वाद देगा—ऐसाही इस समय पलिटिक्स मे परिज्ञान हम लोगों के लिये उसी लोन के सदृश है जिसके बिना हमारी जितनी बातें सब फीकी मालूम होती हैं—जातीयता या कौमीयत के शरीर मे रक्त संचालन बन्द होगया है, एक २ अंग उस जातीयता शरीर के ठिठर से गये हैं, और हिन्दुस्तान मे जातीयता Nationality. का सर्वथा अभाव हो गया है सो क्यों ? इसीलिए कि उसी पलिटिक्सपरिज्ञान का हम लोगों मे अभावहै—पोलिटिकल सर गरमी के मन्द और शिथिल पड़ जाने से ब्राह्मण क्षत्री और वैश्य इन तीनों मे अब ब्राह्मणत्व क्षत्रियत्व और वैश्यत्व का आभास भी न बच रहा वस्तुतः सहा शूद्र अन्त्य जाति भी अपनी शूद्रता और अन्त्य जाति के कर्म मे तत्पर रहने से इन से कितनी बातों मे अच्छे हैं—राजकीय विषयों के समझने मे हमारी दुर्बलता और कमज़ोरी ही हमे हर तरह पर खराब कर रही है—कानग्रेस का प्रति वर्ष अधिवेशन खास कर इसीलिये किया जाता है कि पोलिटिकल मामिलों मे हमारी भी बुद्धि वैसही फैले जैसा विलायत के लोगों की इस विषय मे अत्यन्त पटुता है—पर यहां तो उसका अंकुर भी नहीं है तब कैसे पलिटिक्स के मर्म समझने मे हमारी बुद्धि फैल सक्ती है—विलाइत मे एक अदने से अदना किसान भी पोलिटिकल मामिलों मे अपना नफ़ा नुकसान जैसा समझता है वैसा हमारे देश के उच्च कुलाभिमानी बड़े प्रतिष्ठित पुरुष भी नहीं समझ सक्ते—पलिटिक्स के परज्ञान की बुद्धि हमे होती तो एक बार क्या कानग्रेस मुल्की मामिलों मे तरक्की करने केलिये

काफ़ी था यहां प्रति वर्ष लाख सवा लाख रुपया कानग्रेस के अधिवेशन मे लोगों का उठता है पर सर्व साधारण इसे निरा जलसा और तमाशा मान बैठे हैं जो प्रयोजन इस प्रति वर्ष के बड़े खर्च का है वह नहीं सिद्ध होता–धर्म सम्बन्धी जोश देश मे यहां तक बढ़ा हुआ है कि एक २ पर्व मे तीर्थ स्थानों में लाखों आदमी टूट पड़ते हैं, स्वर्ग की सीढ़ी लग जाती है, तीर्थ मे जाय मूड़ बोरा कि बैकुण्ठ रवाना हुये–बड़े २ पोलिटिकल मामिले सरकार अपने तौर पर तै कर लेती है किसी को खबर तक नहीं होती—इस समय बिलाइत में रायल कमिशन बैठा हुआ है देश मे कै आदमी हैं जो इसे समझते हैं कि यह क्या वस्तु है और हिन्दुस्तान का इससे क्या नफ़ा नुकसान है–परस्पर ऐक्य और सहानुभूति न होने से बड़े २ मुल्की मामिलों की चोट किसी को हई नहीं चोट होती तो अनेक सामाजिक झगड़े खान पान इत्यादि से धर्म कर्म का बनना बिगड़ना एक दिन भी न चलता हम बिना अपनी तरक्क़ी किये एक मिनिट भी न ठहरते–इनफ़िज़ूल झगड़ों से पोलिटिकल मामिलों के समझने में अपनी दुर्बलता देख ऐसे २ झगड़ों को लात मारते–अफ़सोस इस्का अंकुर मन में न रहने से ब्राह्मणों की बन पड़ी समाज का नित्य अधः पात कर रहे हैं–अपने थोड़े से लाभ की उम्मेद में रेवड़ी के लिये मसजिद ढहाने के ढंग पर बाल्य विवाह इत्यादि अनेक कुरीतों से देश के देश को रसातल मे भेजे देते हैं—कौन वश है क्या किया जाय लाचारी है ॥

——:o:——

पढ़े लिखे बेकार की एक नक़ल ॥

जिन्हों ने अपना जीवन केवल किताब और पुस्तकोंही मे बिताया और जिनके सीधे सरल चित्त मे संसार की बुराई भलाई ने स्थान पा-

याही नहीं उनको कालेज छोड़ने पर ऊंची नीची दशा मे पड़ कैसा सुख दुख झेलना पड़ता है उसी का एक चित्र हमारे इस लेख का लक्ष्य है—

मास्टर बिन्द्रावन दास—मुफ़लिस की भी क्या कंबख़्त ज़िन्दगी होती है—मेरा मतलब उन कदर्य मुफ़्त खोरों से नहीं है जो हज़ार पांच सौ साल में जमा कर तरियाय के रख लेते हैं पर अपने को गरीब और मुफ़लिस संसार में प्रसिद्ध किये हुये हैं—ऐसों के लिये गरीबी क्याही एक अच्छा लटका है कि मुफ़लिसी के लबादे से अपने को ऊपर से ढ़ांपे हुये नीचे से नीचा काम करने में ज़रा नहीं हिचकिचाते न कभी शरम और हिजाब को मन में जगह देते हैं—कि मैं यह क्या कर रहा हूं लोग मुझे क्या कहेंगे और कहें भी तो मुफ़लिस के लिये सब माफ है—सच है "निन्हियाये धनबाढ़े" खुशी की बात है मैं उनके समूह में नाम दर्ज कराय कदर्य नहीं बना चाहता (अपने फटे मैले कपड़ों को देख) हा मुफ़लिसी ने कपड़ों को धागे २ करडाला—धोबी की धुलाई इतनी अधिक चढ़ गई है कि उस्को बिना चुकाये और कपड़ा धोने को नहीं देसक्ता—संसार में प्रतिष्ठा पाने को सुफैद कपड़ा पहली बात है "वस्त्रेण विभवेन च वकारैः पंचभिर्हीनो कथं गौरत्वमाप्नुयात्" जो मेरे कने उमदा नफ़ीस कपड़े होते तो मैं भी ज़रक बरक हो अकड़ कर चलता—पहले तो मैं किसी की मुलाकात बहुत बरकाता हूं किसी शरीफ़ भले मानुस से अकस्मात् भेट हो जाती है तो या तो कहीं कोने अंतरे छिप रहता हूं या मुह छिपा लेता हूं जिसमें चार आंख न हों—जनाब मन इसे मुफ़लिसी कहते हैं न कि अमुक ३ जिन्हे आप मुहताज और गरीब समझ बैठे हो—फ़र्क उनमें और मुझमें इतनाहीं है कि उन में किसी तरह की लियाकत तो हई नहीं कि अपने बाहु बल को काम में लाय कुछ पुरुषार्थ कर दिखावें तो मुहताजगी की एक बहाना कर उन्होंने मांगना अपना पेशा कायम कर लिया है—यहां तो किसी के

सामने हाथ पसारना मरने के बराबर मानता हूं—सच है गरीबी भी कहर खुदा है—अच्छा किसी ने कहा है "अहो निधनता सर्वापदामास्पदम्" मनुष्य में निर्धनता उत्साह के भंग की भूमि है—लज्जा और लोगों से अनादर पाने का स्रोत है—द्रारिद्रता के बोझ से दबे हुये का एक क्षण भी ऐसा नहीं बीतता जिसमें वह उद्वेग और चिन्ता से खाली रहता हो—यह साधु भाव के नष्ट करने को घुन के समान है—बहुतेरे ऐसे देखे जाते हैं कि द्रारिद्रता के बोझ से दब लाचार हो उदार भाव को चित्त से अलग कर डाह और द्रोह बुद्धि को उन्हो ने मन में स्थान दे रक्खा है—द्रारिद्र दशा में प्राप्त पुरुष जब किसी कुन्देनातराश लंपट काम किंकर को बाग बगीचों मे अपनी दिलदार को गल बांह दिये अठलाते देखता है तो यही कहने लगता है—ईश्वर न्याय करना भूल गया जो इसको ऐसे घराने में जन्माया जहां अपने हिस्से का इतना धन पाय मन मानता गुल छर्रे उड़ा रहा है—वही मैं हूं कि किसी तरह की बदनीयती का एक पैसा हराम समझ सुबह से शाम तक सख़्त मेहनत के बाद अपना पेट भी नहीं पाल सक्ता—इसमे क्या भेद है कि ऐसे २ दुराचारी जिनको सुराह में चलते किसी ने कभी न देखा होगा सावन की जंगली घास की तरह लहलहा रहे हैं—जो हो इस भेद के खोलने का कुछ उपाय तो करनाही चाहिये—बात यह है कि इस बारे में मैं अपने निज के अनुभव की चरचा किया चाहता हूं जिसे कौन पतियायगा कि यह बिल्कुल सच है—कौन बिश्वास करेगा कि ऐसी दुर्घटना कभी किसी पर आपड़ी जैसी मुझे झेलना पड़ा—इसमे भी संदेह नहीं बहुतों पर ऐसी दुर्घटना आपड़ी जैसा मुझपर—जिस्से तत्काल तो उन्हे कुछ चितावनी हुई कि यह मेरेही किये हुये कामों का फल है "स्वात्मापराध वृक्षस्य फलमात्र न संशयः" किन्तु उनके दुर्बल चित्त में इस चितावनी का असर सदा के लिये कहां ठहर सक्ता है ज्योंही उस्से पार हुये सब भूल गये ॥

मुझे अचरज होता है कि उन्हेभी वहीशिक्षा क्यों न मिली जैसा मुझे उस्का एक पाठ पढ़ाया गया-अवश्य इसमें कोई छिपी हुई शक्ति है जो मनुष्य के भीतर रह प्रेरणा किया करती है और उनके कामों के अनुसार उसे बुराई या भलाई की ओर झुकाती है—तबतो अब इसमें कोई भेद न रह गया और वह सन्देह जो हमारे चित्त में उठा था कि ईश्वर न्यायी नहीं है बिल्कुल साफ है और जिसे हमदुनिया के साथ ईश्वर की बेइनसाफी कहते थे वह उसका पूरा अदल और शुद्ध न्याय है—अब जो आगे मैं अपनी बीती आप को कह सुनाऊंगा उससे मेरा यह प्रयोजन नहीं है कि अपने नमूने से दूसरे किसी अपने भाई को उपदेश देने वाला बनूं किन्तु आदमी की ज़िन्दगी में जो अनेक उलटी सीधी घटनायें आ पड़ती हैं उसका क्या गूढ़ भेद है उसे हल करूं॥

इस तरह के पूस माघ के जाड़ों में जब जाठराग्नि दीचन्द धधक उठती है देहली ऐसे बड़े शहर में जहां एक से एक नाज़ुक मिज़ाज नौवाब ज़ादे, बड़े २ महाजन, धनाढ्य व्योपारी और सौदागर तथा कोठीवाल, खचा खच खज़ाना तहखाने सेहखानों में भरे हुये दूध मलाई चाभ कर दिन काटते हैं वहां कौन बिश्वास करेगा कि यह अभागा बिन्द्राबन कड़ाके पर कड़ाका करता हुआ चन्द्रायण के अनशन ब्रत की दीक्षा लिये हुये है—जिन्हों ने अपनी कंदर खो बहाया है उनको किसी से कुछ मांगना या यह कहना कि मैं भूखा हूं कोई शरम की बात नहीं है बल्कि कितनो ने तो इसे एक पेशा समझ रक्खा है—पर पढ़े लिखे सभ्य समाज वालों में तो ऐसा करना फेशन के खिलाफ है—मैंभी उन्ही सभ्यों में अपने को दाखिल होने का दं भर रहा हूं तबक्योंकर मुंह फोड़ किसी से कह सक्ता हूं कि कई दिनों से मुझे खाना हराम है॥

पिता जी के परलोक के उपरान्त अब तक बराबर रोज़गार तलाश

करता रहा और अनेक यत्न किया कि किसी तरह अपनी दुर्गत दशा में कुछ भलाई कर सकूं पर किस्मत का ऐसा खोटा हूं कि आराम और सुख से जीवन पार करना किसे कहते हैं मैंने न जाना—बाप की कमाई हुई थोड़ी पूंजी या ज़ायदाद जिसे मैंने समझ रक्खा था कि कोई स्वच्छन्द व्यवसाय के द्वारा सुख से दिन काटने को काफ़ी होगी सो उनके बादही उस पूंजी और ज़ायदाद पर सूद खोर महाजन जिनका कर्ज़ा पिता जी छोड़ गये थे अपने रुपयों का सूद दर सूद बढ़ाय ऐसा आ टूटे जैसा मछेह के छत्ते पर शहद की मक्खियां आ टूटती हैं—उन दुष्टों ने लेई पूंजी कुछ न छोड़ा सब कुछ नीलाम करा लिया—माता मुझ अभागे के जन्मतेही प्रसूत बेदना में कई दिनों तक ज्वर से पीड़ित रह सुरधाम सिधार गईं तो इस अभागे का अब संसार मे कोई न रहा जिसे मैं अपना कहता और अनाथ कहलाने से अपने को बचाये रहता—पूंजी पास न रही तो लाचार हो सोचा कि अब तो दिन काटने का इल्म एक ज़रिया है जिसे इतने दिनों तक कालेज में जुदे २ प्रोफेसरों की झिड़की सहकर भी मैंने उनकी खुशामद और सेवा टहल से सीख रक्खा है—महीनों तक यह भी सोचा किया कौनसी रास्ता बेहतर होगी जो मेरी रुचि और पसन्द के उपयुक्त हो जिसमे पढ़ने लिखने का कुछ व्यवसाय बना रहे और सुख से जीवन भी पार हो—चित्त मे आया किसी पत्र की एडिटरी या नई २ पुस्तकें लिख मुसन्निफी सब से उमदा होगी पर हम ऐसे निष्कंचन परम दरिद्र क्योंकर उसे चला सक्ते हैं—पत्र या पुस्तक छपवाने के लिये मुख्य तो पूंजी चाहिये फिर समाज मे बहुत लोगों से हेल मेल हो ज़रा चुना चुनी दुनियां साज़ी की भी लियाकत पास हो—यहां उसकी भी ख़ामी अपने मे ठहरी सिवाय कालेज के इनेगिने दस पांच साथ के पढ़ने वाले दोस्तों के और कोई मुझे जानताही नहीं—चुना चुनी दुनियादारी बिल्कुल मक्कारी है जिन के साथ

मिल बजने की कौन कहे बल्कि उन २ मक्कार झूंठे फरेबियों को देख मुझे यहां तक घिन होती है कि मै उनकी हवा बरकाता हूं तब उनसे मिल फायदा उठाना कैसा—कई एक प्रिन्टर और पबलिशर जिनके यहां पुस्तक और समाचार पत्रों के छपने का बड़ा भारी कारखाना है सब ठौर घूम आया किसी ने तो कोरा जवाब देदिया कि मेरे यहां तुम्हारे लिये कोई ठिकाना नहीं है किसी ने बतौर उम्मैद्वारों के कुछ दिनों के लिये मुझे रक्खा तो सही पर मेरे काम की कदर के लायक मुकर्रर तनखाह देना स्वीकार न किया—अन्त को मुझे यही निश्चय हुआ कि जो निरी दिमाग की मेहनत से केवल लेखनी के द्वारा औकात बसरी किया चाहते हैं खास कर हिन्दुस्तान ऐसे मुल्क मे निश्चय ऐसे लोग या तो भाग्य के हेठे हैं या कम अकिल हैं—ऐसों की भी चाह कहीं है इस का तो ज़िकिर ही क्या बरन बहुधा ऐसों से लोग घिनाते हैं—ऐसों का अनादर और उपहास किया जाता है उनके छपे हुये लेख को पढ़ना कैसा बरन रद्दियों मे उसे फेक देते हैं—जेल मे पड़े हुये किसी बड़े कैदी की कुछ कदर भी है पेट भर खाने को तो उसे दियाही जाता है—बीमार पड़ता है तो डाक्तर साहब खुद आय उसका इलाज करते हैं—कभी को जेलर साहब दिल बहलाने को उसके साथ ताश खेलते हैं—पर इस अभागे को सोभी मयस्सर नहीं है—नये फेशन के भक्त तरहदार शौकीन लोग जो वज़ेदारी मे अपने को एकता माने हुये हैं उसे चिढ़ाते हैं, चपत जमाते हैं, मुह बिचकाते हैं—इस तरह की बेइज़्ज़ती और अपमान सहकर भी मैं जीता रहा सो इस लिये नहीं कि संसार मे मनुष्य का चोला पाय हर तरह के सुख और भोग बिलास आमोद प्रमोद मे दिन बिताऊं बरन बड़े २ अपमान सहकर भी आत्मघात को निकृष्ट और नरक पात का द्वार मान उदासीन भाव से ज़िन्दगी के दिन पूरे कर रहा हूं—सच है "उम्र की किश्ती हमारी देखिये किस घाट आ-

ती है-रहैगी डूब के दरिया मे या उस पार लगती है" ईश्वर की सृष्टि में आशा तो एक अनोखी वस्तु है-कहावत है "जब तक श्वासा तब तक आशा" चन्द्रा लग गया दम घुट रहा है तौभी लोग चन्द्रोदय देते हैं कदाचित् इसकी पुड़िया अमृत संजीविनी होजाय और यह प्राणी फिर भी जी उठै॥

संशय ग्रस्त हो इस तरह के ख्याल मन में उठा किये-कदाचित् कभी को मेरे दिन लौटें सदा एक ढंग पर न रहने वाली किस्मत के पहिया की धुरी कभी को ऊपर उठ आवै और भाग जग उठे तो क्या अचरज-खैर अब तक तो किसी न किसी तरह चला किन्तु पिछले महीने से तो अब मैं बिल्कुल सुक्ख होगया हूं बल्कि मकान का किराया भी दो महीने का चढ़ गया है-सुबह से शाम तक नौकरी की टोह में घूमता फिरता हूं सिफ़ारसी टट्टुओं के आगे मुझ गरीब को कौन पूछै-मन मे आया गठीले मज़मून का कोई लेख लिख पत्र संपादकों के पास भेजूं और छोटा या बड़ा जैसा लेख हो उस हिसाब से उस्का मूल्य नियत कर दूं महीने में चार पांच लेख भी जो संपादक लोग खरीद लेंगे तो गुज़रान के लायक मिलता जायगा-लेकिन अफ़सोस मेरे गंभीर लेख के पढ़ने वाले कम होने से संपादकों ने उसे छापने से इनकार किया-सब से पिछला आदमी जिस्से मैं मिला और अपने लेख की बानगी उसे दिखलाया वह कुछ रहम दिल था-मेरे फटे कपड़ों को देख बोला-हम देखते हैं तो अभी नई उमर होने से आप में जोश और मिज़ाज मे उजलत बहुत है इसी से आप के लेख में भी वही बात आजाती है-बहुधा आक्षेप और ताने जो अपने लेख में आप अधिक रख देते हैं समाज की स्थिति और उसके एक बंधे हुये क्रम के विपरीत पड़ता है इसी से लोग उसकी कदर नहीं करते-मिठाई खाते २ बीच में एक

टुकड़ा मिर्चा या कोई दूसरा कडुआ पदार्थ भी भोजन में स्वाद देता है । निरा मिर्चा खाया चाहोगे तो कलेजा तक जल जायगा और भोजन में ज़रा भी स्वाद न आवेगा । इससे चाहिये इस दोष को अपने लेख से आप निकाल डालें । जिस समाज मे रह हम कुछ फ़ायदा उठाया चाहते हों तो उस समाज के लोगों की रुचि किस तरह की है उसे ज़रूर पहचाने और उन्ही में मिल वजैं । मैं समझता हूं सो आप से कभी न निबहैगा । इस लिये रुपया कमाने का यह क्रम आप को अनुकूल न होगा आप कोई दूसरा उद्यम अपने गुज़र का सोचिये—अस्तु जब तक कोई सिलसिला ठीक नहीं होता आप मेरे यहां उठ आवें आप के गुज़रान का सब बोझ मैं अपने ऊपर लेता हूं आपको पसन्द हो तो ॥

मैंने उस वृद्ध महाशय को धन्यवाद दिया और मन में सोचने लगा । इसमे सन्देह नहीं इसने मेरी दीन दशा को पहचान लिया । बूढ़ा आदमी था ज़माने की ऊंची नीची हालतों को खूब टटोले था इस कारण समय के अनुसार सब तरह का अनुभव भी उसे था । किन्तु मेरे मन में उस समय कुछ ऐसही आया कि इस्का एहसान मैं क्यों लूं और हाथ पांव रखकर भी परभाग्योपजीवी जो अधम पामर और निष्पुरुषार्थियों का लक्षण है क्यों बनूं । इस तरह का आगा पीछा मन में लाय उस्को प्रणाम कर घर की राह ली ॥

ज्योंही घर के दरवाज़े पर पहुंचा कि मालिक मकान से जिस्का मैं रियाया था मुलक़ात हुई उसने नम्रता और अदब के साथ किराये के लिये मुझे याद दिलाया । मैं अपना भीतरी हाल छिपाता हुआ किराया कल चुकता कर देने का वादा कर भीतर गया । यद्यपि कहीं से मुझे उम्मेद न थी कि कल मैं किराया चुकता कर अपना कौल पुरै सकौंगा । अस्तु भीतर जाय दरवाज़ा बन्द कर दिया और टूटी खाट

पर उदासीन लेट रहा । कई दिनो फांके पर फांका करते क्षीण और दुर्बल होगया था उठते बैठते सांवर आती थी फिर भी थोड़ा लेटे रहने से कमज़ोरी कुछ कम हुई । इस नाउम्मैदी की हालत में स्त्रियों की भांत आंसू बहाना बार२ भगवान् को सुमिरना कि सब दुःख दूर होजाय मैने अपनी लियाकत और दृढ़ता के विरुद्ध समझा । सच तो यों है मैं एक प्रकार का नास्तिक हूं मुझे सर्व नियामक कर्म फल देने वाला किसी ईश्वर पर विश्वास नहीं है और न मैं किसी दीन या धर्म का कायल हूं—इस्में सन्देह नहीं मैं हिन्दू के कुल मे जन्मा हूं बाप मा हिन्दू थे किन्तु किसी धर्म को अन्ध परंपरा को जी से घिनाता हूं—चाहो लोग मुझे जो समझैं मज़हब खुदा दोज़ख या बिहिश्त सब धूर्त और चालाकों की धूर्तता और चालाकी के साथ रोटी कमा खाने की हिकमतें हैं । "प्रज्ञापौरुष हीनानां जीविकेति बृहस्पतिः" दांभिकों को संसार में गौरव और प्रतिष्ठा पाने का द्वार है । जी में तो ऐसे२ हौसिले उठते हैं कि आसमान में भी पैवन्द लगा दूं किन्तु पास फूटी कौड़ी भी न रहने से मेरे जितने हौसिले सब शेखचिल्ली के खयाल होगये नाउम्मैदी और नाकामयाबी सदा मेरा दावन पकड़े रहती है । विधाता जिस समय भाग्यवानी किस्मतवरी और कामयाबी का इनाम बांट रहा था उस समय अवश्य मैं वहां पर उपस्थित न था । या नेकी और बदी के फ़रिश्ते जब एक२ रूह को अलग२ दांव में रख पांसा खेल रहे थे उस समय मेरी रूह के लिये बदी के फ़रिश्ते का बदकिस्मती का पासा पड़ गया । अस्तु यह सब जानकर भी मैं उपाय और यत्न करने से नहीं चूकता इसका मुझे पूरा विश्वास है । "यत्नेकृते यदि नसिध्यति कोत्र दोषः" इस सिद्धान्त को झूठ कर देने वाले हमी हुये । तौभी सबर और दियानतदारी से कोशिश और मेहनत करने से न हटूंगा । मेरे यत्न और प्रयास अब तक व्यर्थ होते आये वेला से अन्तरात्मा को यह खटका तो नहीं है कि काम

बूझ मैंने फलाने मौके पर इस तरह की बदनीयती और बेइनसाफ़ी की। खुशी की बात है कि मैं उन धूर्त कुमार्गी बेइमानों में नहीं हूं जिन्हों ने असद् व्यवहार और अन्याय से लाखों कमालिया है जिनका अभ्युदय ऐश्वर्य और बिभव इस बात को सिद्ध कर रहा है कि इमानदारी से चल फूक२ पाव रखना संसार में निरी बेअकिली और हिमाकत है ॥

उस रात को इतनी अधिक शीत थी कि हाथ पांव ठिठरे जाते थे उंगुलियां मारे जाड़े के टेढ़ी पड़ गई थीं। जाड़े के कपड़े इतने अधिक न थे कि उन्हे ओढ़ सो रहता और जल्द शरीर गरमा जाता उस समय अमीरी के चोंचले का मुझे यह श्लोक याद आया—

"अतिबलशालिनि शीते नितरां सेव्यो तकारसमुदायः ।
ताम्बूलं तरुणबधू तैलं तूलं तनूनपात तरणिः" ॥

मैं अपने मालिक मकान को धन्यबाद देता हूं कि महीनों मकान का भारा न देने पर भी चिमनीदार एक लैम्प नित्य जलवा दिया करता था और जब से जाड़ा शुरू हुआ मेरी कोठरी मे पुवाल बिछवा दिया था— मैं रात को आधा पुवाल बिस्तर के काम मे लाता आधे को अपने ऊपर ओढ़ गुठने से गुठना सांट सो रहता था—ईंधन का सुबीता भी न था कि अत्यन्त शीतार्त्त हो आग ताप भोर करता । इस तरह मारे जाड़े के हीलता कांपता ज्यों त्यों रात काट देता था ॥

उस रात को जब उंगुलियां ठिठरने लगीं तो लैम्प की चिमनी के ऊपर हाथ रख सेकने लगा अचानक मेरी दृष्टि उस पुराने टूटे हुये टेबिल पर जापड़ी जो उसी कोठरी में रक्खा था जहां मैं सो रहता था और उसपर तीन लिफाफे रक्खे हुये देख पड़े । देर तक सेंकते२ जब उं-

गिलियों में कुछ ताकत आई तो उस मेज़ के पास जा लिफाफों को उठा लिया। एक उसमे से काले रंग का लंबा लिफाफा था जिसके देखने से मुझे यही मालूम हुआ कि या तो अदालत से मेरे नाम का कोई सम्मन आया है या कोई लेख जो मैं बहुधा समाचार पत्रों मे दिया करता हूं नापसन्द हो लौट आया है—दूसरा वज़नी चौड़ा लिफाफा था चारो ओर उसके रंगीन सोनहली हाशीया थी। तीसरा साधारण मामूली लिफाफा था। पर टिकट तीनों पर लगे हुए थे। इसने तीनो को बेपरवाही से कई बार उलटा पुलटा और एक उसमे से उठा लिया खोलने के पहले मिनिट भर उछालता रहा और वज़न उसका तजवीज़ता रहा मन मे कहने लगा इस पर बाम्बे के पोस्ट आफ़िस का मुहर भी है मैं जानता हूं जहां से आया है। थोड़े दिन हुये कालेज मे साथ पढ़ने वाले एक दोस्त को मैंने ५० रुपये उधार देने को लिखा था। वह मेरे दोस्त बड़े उद्यमी साहसी और ऊंची तबियत के मज़ेदार आदमी हैं। निश्चय यह वही लिफाफा उन्ही का भेजा है जिसमे उन्हों ने सिवाय इनकार के और क्या लिखा होगा। उनका कारखाना इन दिनों खूब चल रहा है बंबई के नामी हुण्डीवाल और खिरे सराफ़ों मे गिने जाते हैं। आसट्रिया चीन इंगलैंड फ्रान्स आदि देशों मे उनकी आढ़त है लाखों का सोना चांदी महीने में खरीद फरोख़ उनकी आढ़त मे होता है। यही सब देख भाल और मित्र को बहुत खुशहाल समझ मैंने ५० रुपये बतौर क़र्ज़ के मांगने की हिम्मत किया था, अवश्य यह उन्ही का पत्र है और इनकार भी इसमे ज़रूरही लिखा होगा। अजी रुपये पैसे के मामिले बड़े टेढ़े होते हैं कैसा ही मेहरबान और दिली दोस्त क्यों न हो रुपये की आंच इस बुरे ज़माने में किसी से नहीं सम्हाली जाती। दूसरे यह कि हमारा उनपर दावाही क्या है जैसा कालेज के मेरे और बहुत से दोस्त हैं वैसही एक यह भी हैं। मैं इस

तरह के लोगों के बर्ताव से अच्छी तरह जानकार हूं कई बार इसका अनुभव कर चुका हूं कि कसौटी के समय भेड़ के ऊन सब निकल जाते हैं। सिवा इसके कि मैं और वह कुछ दिनों तक कालेज मे एक साथ पढ़ता था और उनके साथ मेरा रिश्ताही क्या है जो मेरी सहायता वह करैं। इसी तरह के सिड़ीपन के खयाल करते २ इसे ऐसा मालूम हुआ कि उसी दोस्त को गलबांह दिये मानो कालेज के बरामदे में टहल रहा है और अपनी छात्र दशा को यादकर कहने लगा—आह वे भी क्याही अच्छे दिन थे—हम और हमारे दोस्त फिलोसोफी के बड़े शौकीन थे। हम और वह प्लेटो और सोक्रेटीस की फिलोसोफी को कणाद और गौतम के दर्शनो से मिलान कर उनके अनेक बारीक और सूक्ष्म सिद्धान्तों को मनन कर कितना मन मगन होते थे। उस समय यही मेरे मन में बसा हुआ था कि कालेज से निकलतेही संसार मे जो अनेक कुसंस्कार फैल रहे हैं उनका संशोधन कर संसार भर को सुधार दूंगा। अपनी विद्या के अभिमान मे फूले हुये हम दोनो बड़े २ बुद्धिमानों को हंसते और यही मन मे कहते थे "छिः ये लोग इतने बुद्धिमान् और विद्वान् होकर भी कैसी २ भूल चूक अपने बर्ताव मे कर रहे हैं भाई हम से तो कभी ऐसा नहो" पर यह कहावत ठीक उतरी ऊंट की बलबलाहट तभी तक रहती है जब तक वह पहाड़ के तले नहीं जाता। कालेज से निकलतेही ऐसे चक्कर मे पड़े कि वे सब बातें भूल गईं और अब सोच रहा हूं कि महात्मा ईसा बुद्ध देव भगवान कृष्ण चन्द्र सरीखे जब संसारी लोगों को राह पर न ला सके और बुराइयों को दुनिया से निर्मूल न कर सके तो उन महा पुरुषों के मुकाबिले मैं किस गिनती मे हूं॥

अस्तु इस तरह के अनेक सोच बिचार के उपरान्त इसने उस लिफाफे को खोला जिसमे पत्र के साथ ५०) का एक नोट निकला। मैं अपने

मित्र की इस उदारता पर अचरज में आया और बड़े चाह से पत्र पढ़ने लगा। पत्र बहुत बड़ा न था और मालूम होता था जल्दी में लिखा गया था॥

"प्रिय मित्र तुम्हारी बर्तमान् हीन दशा का समाचार बांच मुझे अत्यन्त खेद हुआ। मालूम होता है जहां तुम रहते हो वहां तुम्हारे इर्द गिर्द निरे कूड़ा दिमाग वाले बसते हैं तब तो आप ऐसे सुयोग्य विद्वान् की कदर किसी को न हुई। आपकी लिखावट से मालूम होता है कि आप ने बड़ी संकीर्णता में पड़ मुझे लिखा है अस्तु यह ५०) आप के अपेक्षा है। इस के पटा देने की आप बिलकुल फिकिर न करें मैं अपने एक मित्र को आपके पास भेजता हूं जो तुम को सब भांत सहायता देंगे। यह मेरे मित्र बड़े देशानुरागी और संपन्न पुरुष हैं कुछ दिनों पत्र के संपादक भी रहे हैं। मैं समझता हूं इन से आप की पट जायगी। रुपये पैसे की संकीर्णता आप न उठावें बरन जब ज़रूरत हो बिना किसी तरह का आगा पीछा मन में लाये मुझे तुर्त लिखें। परिचय के लिये मैंने एक पत्र भी मित्र को आपके नाम का दे दिया है। आपकी कुशाग्र बुद्धि और उदार प्रकृति का चर्चा मैं मित्र से सदा किया करता हूं इसी से यह हमारे मित्र तुम से मिलने के बड़े उत्सुक हो रहे हैं। उन्हे आप से मिलाने का यह बहुत अच्छा मौका हाथ लगा। ये पूंजीवाले हैं बड़े धनी राजा बाबू से धन में कम नहीं हैं। इनकी बहुत इच्छा है कि मैं अपना धन किसी देश की भलाई के काम में लगाऊं आप का और इनका साथ बहुत अच्छा होगा "रत्नं समागच्छतु कांचनेन"॥

आप का प्रेमी मित्र वही बदलू।

मुझे अपने मित्र के बदलू इस हस्ताक्षर पर हंसी आई। मन में आया कि लड़कपन का समय ऐसाही सोहावना होता है कि उस

समय की कितनी बातें यावज्जीव नहीं भूलतीं । अखिल में मेरे मित्र का नाम घनश्याम है साथ के पढ़ने वाले इन सब लोग बदलू इन्हे इस लिये कहा करते थे कि यह अपनी राय थोड़ी२ बातों में बहुत जल्द बदल दिया करते थे। मैं नहीं समझता था यह मेरे मित्र ऐसे उदार चित्त हैं । इसने उस पत्र को लिफाफे में कर रखदिया और सोचने लगा यह कौनसा आदमी है जिस्की मित्र ने इतनी सराहना की है। मैं मित्र को अनेक धन्यवाद देता हूं मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता हुई कि मालिक मकान का किराया चुकता कर मैं अपने वादे का सच्चा ठहरूंगा अब मैं इस लायक तो हुआ कि रात को दो पैसे के कोइले जलाय इस कोठरी को गरम रख सकूंगा और आग ताप किसी तरह रात काटूंगा ॥

अब इसने दूसरी चिट्ठी खोला जिसमे उसके नाम एक वसीयत का समाचार था जिसे देखते ही यह अचरज में आया। ऐं ऐं यह क्या । उसे कईबार पढ़तो गया पर साफ़२ कुछ समझ में न आया । किसी ने मेरे साथ दिल्लगी तो नहीं की । यह तो कभी होही नहीं सक्ता कि मुझ ऐसे अभागे का भाग चटपट ऐसा जल्द पलटा खाय । इसने फिर से ध्यान दे एक२ अक्षर इसका पढ़ा । क्या यह हकीकत में सच है तो अब मुझ में और बड़े नामी अमीरों में क्या अन्तर रहा । अब तो मैं अपने को भागमान्, किस्मतवर, नसीबे का सिकन्दर, दर्शनीय, गुणाढ्य, कुलीन, कवि, विद्वान्, वावदूक, सम्पन्न, सब कुछ कह सक्ता हूं । जो चाहूं सो कर सक्ता हूं। सब भांत कृत कृत्य और पूर्ण कामहूं फिर सोचने लगा क्या मैं पागल तो नहीं हो गया अथवा यह स्वप्न देख रहा हूं । वसीयतनामे के समाचार पर एक बड़े प्रसिद्ध तअल्लुकेदार का दस्तख़त था जो इसके बाप के एक दूर के रिस्तेदार थे और वह पत्र यह था । कुल ज़ायदाद जिसे मैं आपके नाम लिखा चाहता हूं दस लाख के लग भग की है इस बड़ी संपत्ति का बर्तने वाला इस खान दान में सिवा

तुम्हारे और कोई न रहा इसलिये बेहतर होगा कि इसी सप्ताह में आप आकर मुझ से मिलें जिसमें उस्की लिखा पढ़ी आप के रूबरू कर दी जाय—अब मेरे अन्त का समय आ रहा है इससे आप यहीं चले आवें जिसमें मेरी अन्त्येष्टि भी सब आपही के हाथ से हो—सिवा तअ-ल्लुके के दो लाख का प्रोमेसरी नोट बहुत से सोने चांदी के असबाब ज़ेवर वगैरह हैं उस सब के मालिक भी मेरे उपरान्त आपही होंगे—बहुत सी बातें इसके सम्बन्ध में और भी हैं जो भेट होने पर मैं आप से कहूंगा—आने में देर न करो जहां तक हो सके जल्द आओ ॥

आपका—दर्शनाभिलाषी—धनपतिलाल ।

उः हम ऐसे भुक्खड़ों को एक बारगी इतनी सम्पत्ति क्या मिल जायगी—कुछ विक्षिप्तसा हो उस कोठरी की दीवालों के चारो ओर देखने लगा—हमको तो कभी इस किस्म की बेहूदा बातों का भाग कि-स्मत या दैव का कभी ख़ाब में भी खयाल नहीं होता—कदाचित् हो भी तो दैव को क्या उन्माद हो गया है जो बिना निर्खे किये इतनी अ-सीम संपत्ति एक ऐसे के हाथ में रक्खा चाहता है जो सब तरह पर उसके अयोग्य है—मैं नहीं समझता क्यों दैव की ओर से ऐसा किया गया मैं इतनी संपत्ति लेके करूंगा क्या—जब मैं अपने पुआल के बिछौने, टूटी खाट, मैले फटे कपड़े, टूटें हुये लैंप को देखता हूं जो हमारी इस दरिद्र दशा के पक्के सबूत हैं तब अचरज होता है कि इतना धन मेरे अब किस काम आवैगा कैसे इसे बर्तूंगा—कभी यह खयाल इसके मन में आता था कि दुनियां में एक से एक लायक फायक नामी गिरामी लोग पड़े हैं उन्हे छोड़ हमी ऐसा झट पट भाग्यवानों की फ़िहिरिश्त मे दर्ज़ होने लायक क्यों चुन लिये गये—मेरे मित्र ने लिखा है मैं एक ऐसा आदमी भेजता हूं जो तुमको लिखने पढ़ने के काम में सहायता देगा अब मुझको सहायता और सलाह देने वाले की दरकार क्या रही

अब तो मैं स्वयं बड़े २ सलाहकार और सहायकों को मोल ले सक्ता हूं—गांठ में पैसा चाहिये सहायक सलाहकार और हितैषियों की क्या कमी—बड़ी से बड़ी पदवी ख़िताब या इज्ज़त रुपये से ख़रीदे जाते हैं—मुहब्बत, दोस्ती, ऊंचा दरजा, सब मानो यहां दुनिया में नीलाम हो रहे हैं जिस्की बोली इस नीलाम घर में सब के आगे बढ़ जाय वही उसे पा सक्ता है—मैं शपथ कर कहता हूं बड़े से बड़े धनी और देशानुरागी भी अब मेरी बराबरी न कर सकैंगे क्योंकि कौन ऐसा होगा कि सब का सब इतना धन देश की भलाई के काम में लगा सकै—पैसा पास न रहने से फाके पर फाका कर रहा था अब मैं उमदे से उमदा स्वादिष्ट भोजन के पदार्थ महीनों तक उधार केवल विश्वास पर ले सक्ता हूं—अब मुझे चाहिये कि जानवरों की मांद्सा इस घर को छोड़ किसी शाही महल में जा टिकूं—इतने में इसे याद पड़ी कि मैंने उस तीसरे लिफाफे को अभी नहीं खोला बेपरवाही से उसे भी उठा लिया और फाड़ा तो एक पत्र मोटे कागज़ों में लिखा हुआ उस लिफाफे से निकला और वह यह था—

प्यारे मित्र मैं वही हूं जिसके बारे में बंबई के आप के मित्र ने लिखा है मैं आप के बड़े काम का हूं हर तरह की सहायता आप को दे सक्ता हूं—आज रात को आप से मिलूंगा आशा है उस समय अवश्य घर पर रहेंगे—आपका हितैषी वही अपरिचित मित्र ॥

इसने एक बार उस पत्र को फिर पढ़ा जो सब तरह पर इसकी हितैषिता का प्रकाशक और सभ्यता के क्रम से पूर्ण था और देर तक सोचता रहा कि यह आदमी किस तरह का है इससे मेरी विधि काहे को पटैगी—संभव है जो बात इसे रुचै और पसन्द हो वह मेरे अनुकूल न हो—आजही रात को इसने आने कहा है उस समय मैं कहीं बाहर चला आऊंगा और इस पत्र को फाड़ के फेके देता हूं जिसमें उसे यह

मालूम रहे कि मैंने उसके पत्र को नहीं पाया-अब किसी दूसरे अच्छे मकान में जा टिकूंगा और सामयिक सभ्यता के चलन के अनुसार भले मानुसों का सा सब सामान इकट्ठा कर लूंगा जो अब मेरे लिये कुछ दुर्घट न होगा क्योंकि अब तो मैं इतनी बड़ी संपत्ति का अधिकारी हुआ तब एक दिन मिलने के लिये उसे इत्तला दूंगा—यह सब सोच रहा था कि एक ऐसा हवा का झकोर आया कि वह लैंप बुत गया और उस मांद्सी कोठरी में महाशूची भेद्य अन्धकार के बीच यह सब ओर टटोलने लगा कि इतने में गाड़ी की घड़घड़ाहट और घोड़ों के टाप की टप २ ध्वनि इसके कान में आई अब यह किंकर्तव्यता मूढ़सा हो सकुचा गया मन में कहने लगा—जान पड़ता है वह आही गया क्या-इस समय इससे मिलना मुझे बिलकुल नापसन्द था (दरवाज़ा खोल देहली के पास खड़ा हो वह इसका नाम ले २ पुकारने लगा) यद्यपि अंधेरा था किन्तु कुछ झलक इसके शरीर की जो मास्टर बिन्द्राबन को मिली उससे मालूम हुआ कि यह लांबे कद का था—वह कहने लगा अंधेरा है चिराग भी बुझा है मैं समझता हूं मास्टर बिन्द्राबन दास कहीं गये हैं पर दरवाज़ा खुला पड़ा है इससे निश्चय होता है अवश्य होंगे-इसका नाम ले फिर पुकारने लगा और जवाब न मिलने पर उसे अचरज हुआ और अपने नौकर को गाड़ी से लालटेन लाने को कहा-तब तो यह घबराया और मालूम हुआ कि अब इससे छुटकारा नहीं हो सका दबी ज़बान बोला—हां मैं हूं किन्तु आप ऐसे प्रतिष्ठित पुरुष से इस भेष में जिसमें इस समय मैं हूं मिलना और इस अंधेरी मांद में बैठाना आप की प्रतिष्ठा के योग्य नहीं है इससे नहीं मिला चाहता था मैंने अभी आपका पत्र पाया है—वह बोला तो आप चाहते थे मैं आप से न मिलता और लौट जाता—इस्पर यह कुछ शरमाया और इसका यह कहना इसे नापसन्द भी हुआ क्योंकि यह सच था और सच बात भी

अपने बिरुद्ध होतो बहुधा नापसन्द होती है—मास्टर बिन्द्राबन ने कहा तो आप मुझे निरा गंवार असभ्य और कदर्य समझते हैं—कदाचित् यह उसी का नतीजा है जो मैंने साफ़ २ कह दिया—ठीकही है सच और साफ़ बात को बहुत कम लोग पतियाते हैं—असलीयत इसकी यों है कि पत्र पढ़ मालूम हुआ कि आप आया चाहते हैं आप के स्वागत सत्कार की फिक्र में हुआ इतने में हवा के झकोरे से लैम्प बुत गया दियासलाई भी न थी जब तक उसे बालूं कि आप आगये ॥

इन दोनो की ये बातें अंधेरीही में हुईं इतने में उसके नौकर ने लालटेन ला रख दी—बिन्द्राबन उसका लांबा कद और रोबदार चेहरा देख घबड़ा गया हक्का बक्का सा हो यह न जान सका कि अब क्या करना चाहिये—यह अपने को लम्बे कद का मानता था किन्तु वह इससे भी एक मूठी अधिक लम्बा था—अच्छी तरह ध्यान जमा के देखा तो मालूम हुआ कि ऐसा आदमी अब तक नहीं देखने में आया था जो चेहरे मुहरे का भी वैसाही सर्वांग सुन्दर था जैसा बुद्धि का बिशाल और गंभीर था सच है—"यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति"—इसका चौड़ा माथा भारी सिर बिशाल नेत्र फ़रकते हुये होठ हसती पेशानी सब महा पुरुष के चिन्ह थे जिससे प्रगट होता था कि यह कोई अद्भुत मनुष्य है—इसकी चितवन आदि से मालूम होता था कि यह अपने समान बहुत कम लोगों को मानता है ॥

वह फिर बोला आप इन बातों का कोई ख्याल न करैं अब आप मेरे साथ हो लें और जहां मैं हूं वहीं चल कर टिकैं आप को वहां सब तरह का सुबीता होगा ॥

उसके सरल बर्ताव और मीठी बोल चाल से यह मोहित हो गया जिससे इसको मालूम हुआ कि उससे इसकी पट जायगी और यह भी यह जान गया कि मेरी गरीबी का सब हाल यह ताड़ गया है अब मेरी

दुर्गत दशा का दुराव इससे नहीं हो सक्ता—उसके बोल चाल के क्रम से इसे मालूम हुआ कि यह निरा सीधाही नहीं बरन चालाक और दुनिया को खूब देखे भाले है कहने लगा—हां मैं आप के साथ खुशी से चल सक्ता हूं—मेरे मित्र ने मेरे बारे में आप से कहा होगा उनके पत्र से यह भी मालूम हुआ कि आप की मेरे ऊपर कृपा हुई भलाई की दृष्टि से आप यहां आये हैं इस उदार भाव का आप को धन्यवाद है—यह तो निश्चय है आप मुझे निष्किंचन परम दरिद्र अक्षर पिशाच किताबों का कीड़ा जान मेरी इस दीन दशा का बोझ हलका करने को यहां आये हो और वैसही यहां आय आपने मुझे पाया भी—दो घंटे पहले वास्तव में मेरी यही दशा थी किन्तु अब उसमें कुछ अन्तर हो गया है—हाल में एक पत्र आया उससे जो समाचार मुझे मिले उसने मेरी दशा अब और की और कर डाला॥

वह बोला वे समाचार जान पड़ता है आपके अनुकूल हैं॥

यह थोड़ा मुसकिराया और वसीयतनामे का पत्र उसके हाथ में रख दिया बस इसी से आप समझ सक्ते हैं॥

इसने सरसरी निगाह से उस पत्र को पढ़ा और लिफ़ाफे में फिर रख मुझे लौटा दिया और कहने लगा—आप समझे होंगे मैं इसके लिये आपको मुबारक़बादी दूंगा और यह कि दुख दरिद्र का सब तरद्दुद यावज्जीव के लिये अब आप के पास से बिदा हुआ—इसमें सन्देह नहीं आप इतनेही से सन्तुष्ट होगये पर मेरे ध्यान में आता है कि इतना धन कुछ भी नहीं है इससे आपका कोई बड़ा उपकार नहीं हो सक्ता (हंसकर) इतना धन केवल ८ या १० वर्ष से अधिक नहींचलने वाला है—निश्चय जान रक्खो जैसा तुमने समझ रक्खा है कि जन्म भर के लिये सब भांत सुखी रहैंगे और बड़े२ अमीरों में हमारी भी गिनती होगी सो न होना—जिसको अमीर और रईस कहते हैं सो तभी हो

सक्ता है जब कम से कम पांच चार लाख साल की आमदनी हो वह अलबत्ता इस फ़ेशन के कद्र के ज़माने में ब्रिटिश सभ्यता के साथ टक्कर मार सक्ता है ॥

उस्को इस तरह दून की हांकते सुन यह अचरज में आया उस्के शब्दों का अर्थ न समझ सका कि यह क्या कह रहा और इस्की क्या ध्वनि है—जो यह कह रहा है सो हकीकत में सच है या इस्की केवल गप्प मात्र है ॥

वह फिर बोला साहब तमा और लालच के सामने इतना धन कुछ भी नहीं है धन पास आने से इतनी लालच बढ़ती है कि जब तक एक पूरी नहीं होती कि दूसरी अपना पांव पसार देती है सच है "यत्पृथिव्यां ब्रीहियवं हिरण्यं पशवस्त्रियः। नालमेकस्य तत्सर्वं" संसार में जितना अन्नधन, उत्तम २ स्त्रियां, हाथी, घोड़े, ज़र, ज़ेवर, मकान, महल दोमहले, सब तमा के आगे एक आदमी के लिये भी कम हैं—अतः मनुष्य की लालसायें कभी छोर को पहुंच बुझ सक्ती हैं—जब आप अपने को बड़े अमीर और तअल्लुकेदारों में समझ लोगे तब उसी के अनुसार आप को अमीरी के सब सामान इकट्ठा करना पड़ेगा—इस लिये साधारण रीति पर भी रहने से इतना धन १० वर्ष चलजाय किसी तरह तो बहुत है—कलकत्ता या बम्बई के अमीरों के ढंग पर रहा चाहोगे तो मैं समझता हूं दो चार महीने के लिये भी काफ़ी न होगा—दस पांच हज़ार तो एक हमिलटन की दुकान पर पांव रखते ही उड़ जाना कुछ बात नहीं है—दो अंगूठी हीरे की आप अपने लिये खरीदोगे तो बीबी और लड़कों के लिये एक २ तो ज़रूर चाहिये—इसी तरह फ़ैशन के पूरा करने को भांत २ के कपड़े शाल दुशाले इत्यादि अनेक वस्तु हैं जो अमीरी के सामान के लिये बड़ी ज़रूरी बात हैं—अमुक बाबू ने कैसी उमदा फिटन ख़रीदी है अजी हम उस्से उमदा न ख़रीदा तो डूब गई—फलाने

ने लाख रुपया ख़र्च कर किला सा बड़ा उमदा मकान बनवाया है हम उन से भी ज़ियादह उमदा और नफ़ीस बनवायेंगे इत्यादि—इसी से हम ने कहा तुम मालदार नहीं हुये बरन इतना हो गया कि भूखे न रहोगे और हर तरह की इतनी संकीर्णता न उठाओ गे—अस्तु तुम कुछ अन्देशा मत करो रुपये की तुम्हें जब ज़रूरत पड़े तुम मेरे नाम की हुंडी कर देना मैं उसे सकार लूंगा—बस अब मेरे साथ चलने मे देर मत करो ॥

यह कुछ ऐसा लाचार किया गया कि उसके साथ जाने से इनकार न कर सका—तुर्त मालिक मकान को एक पत्र लिखा—मैं आज की मिती से आपका मकान छोड़ता हूं आप का किराया पोस्ट के द्वारा दाम२ चुकता कर भेज दूंगा आप बिश्वास रक्खैं—और इसके पास क्या था जिसे लेता सिवा दो एक बर्तन के और थोड़े से रद्दी की भाँत फुटकर लेख और आर्टिकिल्स कि जिसे यह अपने जीवन का सर्वस्व मानता था सबको अपने कोट की जेब में भर यह उठ खड़ा हुआ—उस समय इसे ख्याल न रहा कि यह हिस्सा इसकी ज़िन्दगी का सब से उत्तम था जैसा निर्द्वन्द्व निश्चिन्त यह अब तक रहा वैसी बेफिकरी फिर इसे न मिली—यह यही समय था जब कि दरिद्रता का कष्ट मानो उत्तमोत्तम योग्यता प्राप्त करने का द्वार था—यह इसे कुछ मालूम न हुआ कि जिस तरह के जीवन में यह पांव रखता है वह आगे को इसके लिये भला होगा या बुरा क्योंकि भविष्य मनुष्य की दृष्टि से कुछ ऐसा छिपा रहता है कि हर एक आदमी अन्धे के माफ़िक इसको टटोला करते हैं और कुछ पता नहीं पाते—यदि मालूम हो कि भविष्य अगाध सिन्धु के दो भले बुरे किनारों में भलाई की रास्ता किस किनारे की ओर मिल सकैगी तो पहिलेही से अपने जीवन की नौका मनुष्य उसी ओर खे चले—बड़ा प्रसन्न चित्त हो सूनी मांद सी कोठरी के

यह बाहर निकला बाहर इसके मेहमान की फिटिन खड़ी थी जिसमें दो कुंम्मैद रंग के घोड़े जुटे थे जो सुनौले और रुपौले साज़ से लसे हुये थे और धरती को अपने आगे के दो सुरों से खूंद रहे थे दौड़ने को उद्यत और बेसबर थे—मालिक के आतेही सईस ने अदब के साथ गाड़ी का दरवाज़ा खोल दिया और दोनों गाड़ी पर चढ़ गये—जब यह गुलगुली मुलाइम गद्दियों पर जा बैठा तो उस समय बाहर का यह अमीरी सुख और भीतर कांव २ करती पेट की अगिन दोनों आपस में लड़ने लगे ॥

मुसकिराता हुआ ताने के ढंग पर वह बोला—इसे आप मालूम कर सक्ते हैं कि यह दुनिया सिर्फ रुपये की है—रुपये वाला संसार भर को जैसा चाहे वैसा नाच नचा सक्ता है रुपये वाला बड़े२ गुणी ज्ञानी मानी सबों को तुच्छ और हकीर मानता है—धनी जिसमें उनका उप-हास न कर सकें इस लिये बुद्धिमानों ने अपने मान रक्षा के अनेक उपाय निकाले हैं और इन धनियों के उपहास से बराबर बचते रहे—

इसने कहा संसार के अनेक उत्तमोत्तम गुणों पर आप क्यों ताना मार रहे हैं कदाचित् यह आप का कहना ठीक हो क्योंकि आप का अनुभव हम से विशेष है ॥

उसने कहा हां सच है मैं अपने रुपये के ज़ोर अपने को संसार भर का एक मात्र प्रभु मानता हूं यह दुनिया सब रुपये वालेही की तो है ॥

इसने नम्रता पूर्वक कहा सो नहीं आत्म गौरव और शुद्ध धर्मानु-ष्ठान वाले रुपये को कुछ माल नहीं समझते बल्कि ऐसे लोग रुपये वाले को पशु तुल्य मानते हैं रुपया उन्हे उनके मनस्विता के दृढ़ सिद्धान्तों से ज़रा नहीं हिला डुला सक्ता ॥

वह हंसा और ऐसा मुंह बनाया कि जिससे मालूम हुआ कि इसकी ये बातें उसके चित्त में ज़रा भी नहीं धसीं—कहने लगा आप का

ख़याल सही नहीं है माफ़ कीजिये बेअदबी होती है—साहब जिसे आप मान आत्मगौरव और धर्माचरण कहते हैं वह भी रुपये के लिये है और रुपये से सधता है बड़े से बड़े मनस्वी तपस्वी संयमी न्यायशील सब रुपये के लिये तपस्या इत्यादि से हाथ धो बैठते हैं—मैंने बड़े २ तपस्वी और मनस्वियों को अजमाया रुपया देख सब फिसल गये इसी के लिये बाप बेटों में चल जाती है भाई २ कट मरते हैं—उस रुपये की कमी हम को नहीं है ज्यों २ आपका चिट्ट पिट्ट मेरे साथ बढ़ता जायगा आप जानेंगे कि मैं कौन हूं मेरा इतिहास किस प्रकार का है॥

बिन्द्रावन इसकी ये बातें सुन अचंभे में आया थोड़ी देर तक सोचता रहा कि यह तो कोई अद्भुत पुरुष है मेरे मित्र ने क्या समझ इसे मेरे पास भेजा। यद्यपि बिन्द्रावन को अपनी लियाक़त का कुछ कम घमंड न था किन्तु इस समय यह उसके रोब में आगया और गिड़गिड़ाता हुआ धीमी आवाज़ से बोला मैं आपका नाम जाना चाहता हूं वर्णमाला के किन २ अक्षरों को वह सुशोभित करता है॥

उसने कहा मेरे कई एक नाम हैं—भिन्न २ समाज़ और संप्रदाय वालों ने अपने २ ढंग पर अपनी पसन्द और रुचि के अनुकूल मेरा नाम धरा रक्खा है किन्तु साधारण रीति पर सब लोग मुझे सिद्धार्थक कह कर पुकारते हैं॥

इतने में गाड़ी अपने ठिकाने पहुंच गई दोनो उतरे अपने नौकरों में से एक को इसने इशारे से बुला कर कहा देखो बाबू साहब को किसी तरह की तकलीफ़ न होने पावे—यह तो कोठी के भीतर चला गया नौकर अपनी जात की कमीनगी के मुताबिक जैसा इन लोगों का दस्तूर होता है कि मालिक की आंख के सामने सब कुछ मालिक आंख की ओट में हुआ कि हाहा ठीठी टाल बटाल—खास कर जिसे इन्हों ने

फटे कपड़ों से गरीब समझा उसे तो वे अपनी ठठोलबाज़ी का पूरा निशाना बना देते हैं—इन कमीनों के बर्ताव पर मुझे क्रोध और जी से घृणा हुई और अन्त में मैंने यही चित्त में स्थिर किया कि कदाचित् सभ्य समाज का यह एक साधारण बर्ताव है कि ऊपर से दिखाने को और भीतर कुछ और जिनके यहां योग्यता की कोई कदर नहीं है बल्कि कदर का पैमाना केवल रुपया है—इतने में भीतर से आवाज़ आई बाबू साहब को यहां ला—नौकरों में से एक बिन्द्राबन को भीतर ले गया सिद्धार्थक ने चांदी के बर्तनों में उमदा से उमदा भोजन जिसे बिन्द्राबन को बहुत दिनों के उपरान्त खाने का संयोग हुआ था परोस दिया और प्रीत भाव से दोनों एक साथ भोजन करने लगे—कई दिनों का भूखा था रुचि से पेट भर भोजन किया—उपरान्त सिद्धार्थक की आज्ञानुसार उसके नौकर इसे दूसरे कमरे में ले गये जहां सुथरी साफ़ पलंग बिछी थी कमरा गरम रखने को आतशदान में आग जल रही थी यह वहां खर्राटे की नींद लेता हुआ एकही नींद में भोर कर दिया—शेष ॥

जगत् प्रवाह ।

वेगगामी झरने नदियां समुद्र इत्यादि का प्रवाह रुक जा सक्ता है प्रद्योतित बुद्धि के नई अकिल वाले इस समय के विज्ञानियों ने अनेक ऐसे यंत्र औज़ार और कलें ईजाद की हैं जिसके द्वारा वे तीखी सी तीखी धाराओं के प्रवाह को रोक दे सक्ते हैं या उसके प्रवाह को उलट दे सक्ते हैं—किन्तु आज तक ऐसा कोई बुद्धिवान् न हुआ जो जगत् के प्रवाह को रोक देता या उसे एक ओर से दूसरी ओर को पलट देता—चौकसी के साथ अनुसन्धान करते रहो तो पता लग जाता है कि अमुक नदी या झरने के प्रवाह का प्रारम्भ कहां से कब से है और कब तक रहेगा पर जगत् के प्रवाह का प्रारम्भ कब से है कहां से है और कब तक रहेगा

इसका कुछ पता नहीं लगता—बुद्धिमानों ने इस विषय में भांति २ के अनुमान किये हैं और अकिल भिड़ाया है सही पर ठीक ऐसाही है यह निश्चय किसी को न हुआ—सच तो यों है जब तक यह प्रवाह अपने पूर्ण वेग में चला जाता है तभी तक कुशल है ज़रा सा मन्द पड़ा या एक निमेष मात्र को भी रुका कि कयामत या प्रलय का सामान जुट जाते देर नहीं लगती—योगाभ्यासी तथा वेदान्ती मन को मार शान्ति २ पुकारते हैं यह नहीं विचारते कि जगत् के प्रवाह में पड़े हुए को शान्ति कहां—जमशेद दारा सिकन्दर से प्रबल प्रतापियों की कौन कहे राम युधिष्ठिर सरीखे जो अंशावतार माने गये हैं जगत् के प्रवाह मे पड़ उनका भी कहीं ठिकाना न लगा—प्रातःकालीन गगन मंडल के एक देश में नक्षत्र समूह सदृश थोड़े समय तक जग मगाते हुए इस प्रवाह मे पड़ न मालूम कहां बिलाय गये—यह प्रवाह ऐसा प्रचण्ड है कि एक दो मनुष्य की क्या देश के देश को अपनी एक लहर में बटोर न जानिये कहां लेजा फेकता है—जहां कई करोड़ मनुष्य बसते थे, जहां के लोग मनुष्य जाति के सिरमौर थे, जो देश सभ्यता की सीमा था, वह इस प्रचंड जगत् प्रवाह में पड़ ऐसा अस्त हुआ कि उसकी पुरानी बातें किस्से कहानियों का मज़मून और चण्डूखानों की गप्पें हो गईं और जगत का प्रवाह जैसे का तैसा बनाही रहा—प्राचीन भारत प्राचीन पारस प्राचीन यूनान प्राचीन रोम इसके निदर्शन हैं—इस प्रवाह में पड़ा हुआ जिसे जो सवार है वह अपनी गीत गाये जाता है अपने स्थिर निश्चय और उत्साह से ज़रा मुह नहीं मोड़ता ॥

पुराने आर्यों ने इस प्रवाह को त्रिगुण विभाग माना है जहां जिस भूभाग में जब इस प्रवाह का वेग सीधा और मनुष्य जाति के अनुकूल रहा प्रकृति के सब काम जब तक स्वभाव अनुसार होते रहे तब तक वहां सतयुग या सतो गुण का उदय रहा वहां के स्थावर जंगम सर्जित

पदार्थ मात्र में सात्विक भाव का प्रकाश रहा प्रत्येक मनुष्य यावत् अभ्युदय और स्वर्ग सुख का अनुभव करते हुये कृत कृत्य पूर्ण काम और आप्तकाम रहे किसी अंश में कहीं पर से किसी तरह की किसी को त्रुटि का नाम न रहा "कृतकृत्याप्रजाजात्यातस्मात्कृतयुगंविदुः" इसी को उन्नति तरक्की सभ्यता उदार भाव स्वतंत्रता जो चाहो सो कहो—भारत में न जानिये के बार उस प्रवाह की प्रेरणा से चक्रवत् पलटा खाते सतोगुण का उदय हो चुका है—सतोगुण में क्रम २ हानि और घटती का होनाही रजो गुण है जिसके प्रादुर्भाव में प्रमाद, आलस्य, तृष्णा, स्वार्थ पर दृष्टि, हिंसा, अपने और पराए की विर्ख, विषम भाव आदि बढ़ जाता है—विलाइत में इन दिनों रजो गुण बहुतही बहुत चढ़ा बढ़ा है बल्कि युग सन्ध्या के क्रम पर तमों गुण की तरक्की होती जाती है—वह प्रवाह जब तमोगुण के साथ टकराता है तब राग, द्वेष, बैर, फूट, ईर्षा, द्रोह, हिंसा, पैशून्य, विषयलंपटता, चित्त की क्षुद्रता और कदर्यता बढ़ती है—काल चक्र की वक्र गति हिन्दुस्तान में उसी तमोगुण को प्रवाहित कर रही है—जिसे अवनति, तनुज्जुली, घटती, जघन्यता, पराधीनता, बिगाड़ चाहो जिस नाम से पुकारो तुम्हे अधिकार है—उनकी तो बातही और है जो इसमें पगे हुये इसी को बड़ा भारी सुख मान रहे हैं—नहीं तो नरक के प्राणी भी हम ऐसों के पराधीन निकृष्ट जीवन से अधिक श्रेष्ट और सुखी हैं—यहां पर हमारे एक प्रिय मित्र का कहना हमे याद आता है जिनका सिद्धान्त है कि मरने के बाद रूह को फिर जन्म लेना पड़ता है—यह खयाल सच है तो हिन्दुस्तान की नारकिक समाज के बीच नरक भूमि में जन्म लै पराधीन जीवन से सहारा के रेगिस्तान में भी स्वच्छन्द जीवन अच्छा—भागवत के उस श्लोक का लिखने वाला हमे इस समय मिलता तो कम से कम गिन के तीन गहरी चपत उसे जमाते जिसने लिखा है कि स्वर्ग में देवगण भी सोचते हैं और इस बात के

लिये तरसते हैं कि भारत की कर्म भूमि में किसी तरह एक बार हमारा जन्म होता तो हम अपने जन्म को सफल करते - बड़े नामी लेखक जिन्हों ने इस प्रवाह के अन्तर्गत किसी बुराई के संशोधन के लिये हज़ारों पेज लिख डाला, प्रसिद्ध वक्ता जिन्हों ने चाहा कि हम एक छोर से दूसरे तक अपनी मेघ गंभीर वक्तृता और वाज़ से उन बुराइयों को उच्छिन्न कर दें, पर उनका वह परिश्रम उस प्रबल प्रवाह सागर में एक बिन्दु भी न हुआ और उस उनके लेख और वक्तृता का अणुमात्र भी कहीं असर न देखा गया—हमने बहुत चाहा कि बाल विवाह कुरीत को अपने बीच से हटा दें कोई अंक ऐसा नहीं जाता जिसमें दो एक मज़बूत धक्के इस कुरीत के प्रबल प्रवाह न देते हों किन्तु एक आदमी को भी अपने पन्थ में न ला सके—प्रकृति के नियमों में कुछ ऐसी मोहिनी शक्ति है कि कोई कितनाही इस प्रवाह से बचा चाहे नहीं बच सक्ता सच है—

आदित्यस्य गतागतै रहरहः संक्षीयते जीवितं व्यापारै र्बहु कार्यभार गुरुभिः कालोपि नज्ञायते दृष्ट्वाजन्मजरा-विपत्तिमरणं त्रासश्चनोत्पद्यते पीत्वा मोहमयीं प्रमाद मदिरा मुन्मत्त भूतं जगत् ॥

सूर्य देव के प्रति दिन उदय और अस्त से आयुष्य घटती जाती है—कार्य के बोझ से लदे हुये अनेक व्यापार में व्यापृत बार २ जन्म लेना बुढ़ा जाना अनेक प्रकार की विपत्ति और मरण देख किसी को त्रास नहीं होता—मोहमयी प्रमाद मदिरा को पीकर संपूर्ण जगत् उन्मत्त हो रहा है—इस तरह के महाप्रवाह पूर्ण भव सागर के पार होने को धैर्य एक मात्र उत्तम उपाय है सच है "धीरज धरै सो उतरै पारा" और भी भारत के बन पर्व में इस जनम मरन महा नदी के प्रवाह का बहुत उत्तम रूपक दर्शाय धैर्य को नौका रूप एक मात्र अवलंब निश्चय किया है यथा—

काम लोभ ग्रहाकीर्णां पंचेन्द्रिय जलां नदीम्।
नावं धृतिमयीं कृत्वा जन्म दुर्गाणि सन्तर॥

भांति२ की कामना और लोभ नक्र मक्र पूर्ण पांच इन्द्रियों के विषय जिस नदी का जल रूप प्रवाह हैं उसके पार जाना चाहे तो धैर्य की नौका पर चढ़ फिर२ जनन मरन के क्लेश से छूट सक्ता है॥

पश्चिम की सभ्यता और बिज्ञान इस देश के अनुकूल नहीं है।

यहां के लोग प्रकृति सेवा में सदा तत्पर रहे प्राकृतिक घटनाओं के बड़े भक्त गंभीर और शान्त भाव पूर्वक प्रकृति अर्थात् कुदरत के कामों को सदा लखा करते थे और कुदरत के उन कामों के हेर जाने के उपरान्त अपना अनुमान और अनुभव उस्पर फैलाते थे—इसी के बिरुद्ध आधुनिक विज्ञान प्रकृति का बड़ा विरोधी है वैज्ञानिक प्रयोग Scientific process. थोड़ा या बहुत जो कुछ किया जाता है उससे प्रकृति के सब काम जो धीरे२ आप से आप होते जाते हैं उनमें बड़ा हल चल मच जाता है सब काम अस्त व्यस्त हो कुछ के कुछ हो जाते हैं—रसायनिक विज्ञान किमिस्टरी की इतनी तरक्की इसका बड़ा भारी सबूत है—कदाचित् यही कारण हो कि पुराने आर्यों ने रसायनिक विज्ञान को प्रकृति के कामों का विरोधी समझ जान बूझ उसकी ओर ध्यान न दिया हो इसी लिये विलायत के अनेक आधुनिक विज्ञान की सन्धि गन्धि भी हमारे ब्राह्मणों की पोथियों में नहीं पाई जाती—हमे कुछ ऐसा अनुमान होता है कि इस तरह के काम को जिससे प्रकृति में कुछ विक्षेप होते देखा उसे उन्हों ने आसुरी और राक्षसी कहा—यह कभी संभव नहीं है कि अथाह बुद्धिशाली आर्य जाति के मनन और चिन्तन में आधुनिक अनेक विज्ञान किमिस्टरी इत्यादि के उसूल न आये हों किन्तु उसके जानने वाले और उसमें अभ्यास रखने वाले असुर या दैत्य की कोटि में शामिल किये गये—

मेघनाद राजा शाल्व प्रभृति इसके उदाहरण हैं—रसायनिक विज्ञान के तत्व को ये सब लोग मेघनाद शाल्व प्रभृति अवश्य जानते थे जैसा उनके अनेक अस्त्र प्रयोग से प्रगट होता है—जो काम प्राकृतिक समय से अपने आप होता है उस्का परिपाक पुष्ट होता है जैसा फल जो डाल से अपने आप पक कर गिर पड़ता है उसकी मिठाई और स्वाद जैसा उत्तम होता है वैसा उन फलों का नहीं होता जो पाल में रख पकाये जाते हैं—यहां के लोग जो किसी तरह के परिवर्तन को बुरा समझते हैं उस्का हेतु भी यही प्रकृति सेवा है—इस समय यूरोप का विज्ञान और सभ्यता यहां वह ज़ोर पकड़े है कि प्रकृति के काम शिथिल पड़गये—तअज्जुब क्या कोई दिनों ऐसी एक कल बनाई जाय कि खाना अपने आप पक कर हाथ न हिलाना पड़ेगा भोजन पेट में चला जायगा—हमारे लिये पाश्चात्य विज्ञान जो लाभकारी नहीं है उस्का कारण यही है कि उन भांति २ की कल और विज्ञान के प्रचार में जो धन खरच होता है वह तो हिन्दुस्तान देता है और उससे जो लाभ होता है वह विलाइत गढ़ करती जाती है—देश भर में रेल का फैल जाना शहर २ पानी की कल और गेस की रोशनी आदि अनेक काम इसके उदाहरण हैं—रेल और पानी की कल जारी होने में जो लोहा लक्कड़ आये सब विलाइत से आये न जानिये कै करोड़ रुपया यहां का बिलाइत ढो गया और उस से जो कुछ फ़ाइदा होता है वह भी उन्हीं बिलाइत के लोगों को हो रहा है—इन सबों के प्रचार से जो आराम और आशाइस हमे मिल रही है वह वैसही है जैसा किसी ने जान बूझ शरीर में रोग पैदा कर दिया पीछे उसकी इलाज ढूंढता फिरे—गंभीर बुद्धि वाले पुराने आर्य प्रकृति के आधीन अधिकतर इसी से रहे कि उनका ध्यान सदा इसी बात पर रहा कि नया रोग न पैदा होने पावे बरन जो रोग भूख प्यास शीतोष्ण आदि हमे पीड़ा दे रहे हैं या वे विषय बासनायें जो पांचो

इन्द्रियां और मन को अपने ओर खींच रहे हैं और रोग सदृश क्लेश पहुंचा रहे हैं उन्हे जहां तक हो दबावें नई २ वासनायें न पैदा होने पावें—जो ये नये विज्ञान आध्यात्मिक उन्नति के तो अवश्य बड़े बाधक हैं—इस समय के ये सब विज्ञान उस समय प्रचार पाते जब भारत के उन्नति का समय था तो अवश्य बड़े उपकारी और लाभदायक होते—देश के और हिन्दू जाति के बिगड़ जाने पर अब उनका प्रचार हमे सिवा अधिक २ बिगाड़ने और खराब करने के कभी मुल्क के वास्तविक फ़ाइदे का होही नहीं सक्ता—यही हाल आधुनिक सभ्यता का भी है खान पान आहार बिहार पहनने ओढ़ने की जितनी बातें सबों में हम बिलायत के लोगों को अपने से अधिक सभ्य और उत्कृष्ट समझ उनकी नक़ल कर रहे हैं—कभी एक बार भी इसका ध्यान मन में न आया कि जिनका हम अनुकरण कर रहे हैं वे महाशीत देश की पैदाइस के हैं—हम महा उष्ण देश में उत्पन्न हो और रह कर किस तरह पर आधुनिक सभ्यता में उनकी बराबरी कर सक्ते हैं—पहनावे में जैसा कोट पतलून का पहनाव है नाक कटाय शहीदों में दाखिल होने की भांत हम लोग उसे पहनने को बड़े उत्सुक हैं पर सच पूछो तो जैसा ढीला ढाला हमारा पहनाव हम लोगों को आराम दे सक्ता है वैसा कसी अंगरेज़ी पोशाक नहीं—इसी तरह कई प्रकार के मांस भी हम लोगों को केवल हानि पहुंचाने और रोग पैदा करने के सिवाय उपकारी कभी नहीं हो सक्ते इसी से हम कहते हैं कि हिन्दुस्तान के बने हुये ज़माने में यदि इस सभ्यता और विज्ञान का प्रचार किया जाता तो इस तरह का अनुकरण हम न करते जैसा अब कर रहे हैं—अनुकरण का सदा से यही क्रम चला आया है कि निकृस्ट अथवा जित अपने से उत्कृष्ट या जेता का अनुकरण करते हैं—हज़ारों वर्ष से हम दूसरों का अनुकरण कर रहे हैं यही करते २ हमारे में असलीयत अब केवल आभास मात्र को बच रही है—पहले

मुसल्मान हमारे जेता हुये बहुत दिनो तक उनका अनुकरण किया किये अब अंगरेज़ हमारे जेता हैं तो उनका कर रहे हैं—हमारे सामयिक प्रभु इसी घमण्ड में फूले हुये हैं कि हम देश को सुधार रहे हैं और उस्की तरक्की कर रहे हैं यहां हम भीतरही भीतर आधुनिक सभ्यता और विज्ञान की बदौलत चूरंचूर हो घुसे जाते हैं और किसी को मालूम नहीं होता—जैसा स्वामी दयानन्द का मत था कि हमारी वास्तविक उन्नति और सच्ची तरक्की तभी होगी जब हम वेद के समय की तरक्की को अपने में प्रचलित करेंगे—वेद के समय के लोग आध्यात्मिक उन्नति और प्रकृति के अनुकूल जिसे समझा उसी की ओर झुके अब इस समय दोनो बातें हमारे बीच से जाती रहीं उसी का परिणाम है कि प्रति वर्ष मंहगी और अकाल व मरी आदि क्लेश सह मुह खाते पेट सलाते हैं—तौभी आधुनिक सभ्यता के पीछे जी दिये डालते हैं॥

"बङ्गाली का मच्छी का झाल"

बङ्गवासी आज कल हमारे माननीय हिन्दी प्रदीप सम्पादक पण्डित बालकृष्ण भट्ट जी पर बिगड़े हैं। यह कुछ आश्चर्य्य नहीं है, बङ्गवासी का देश हितैषी मात्र से स्वाभाविक "अहिनकुलवत्" बैर है! कांग्रेस्, कान्फ्रेन्स, सभा, सुसाईटी आदि यावत् देशोपकारी कार्य्य, और नौरोजी, रानड़े, महता, चार्लू, बनर्जी आदि समस्त देश हितैषी इसके शत्रु हैं! सच तो यह है कि यह पत्र हिन्दी में भारत विद्वेषी "पाईनियर" की प्रति मूर्ति है! देश के सर्वनाश करने की इसकी पलिसी है! यद्यपि हिन्दी में और भी कई एक पत्र हैं, और आगे भी थे, और सब सनातन धर्म के अनुयायी हैं, परन्तु जैसा विरोधकारी यह पत्र है दूसरा कोई नहीं! प्रगट में यह 'धर्म' का आडम्बर रखता है, पर अन्तःकरण में यह अर्थ पिशाच है। स्वामी कृष्णानन्द, और स्वामी

विवेकानन्द, पण्डित अम्बिका दत्त व्यास आदि धर्म प्रचारक भी इसके चक्षुःशूल हैं। और क्यों नहीं, जब कि इनसे बङ्गवासी जी को टका नहीं मिलता० कहा है कि "जा घर देखें, तवा परात। ता घर गावें सारी रात" देश की उन्नति करना, जो पत्र का मुख्य उद्देश्य है, यह उसके सर्वथा प्रतिकूल है। देश में कहीं कुछ उन्नति की आशा हुई कि बङ्गवासी के प्राण निकल गये। ऐसे देश द्रोही पत्र को कभी आदर की दृष्टि से न देखना चाहिये। हां "भारत धर्म महा मण्डल" के ढकोसले इसे अच्छे लगते हैं, जिसका कुछ औरही रहस्य" है० जो हो बङ्गवासी जी ने हिन्दी प्रदीप सम्पादक महाशय की निन्दा करके अपने कई कागज़ काले किये हैं। लेख का प्रारम्भ अन्धे का चिराग़ है। हम लोग भट्ट जी को प्रदीप के पहिले से जानते हैं, और जानना ही नहीं इनके सत्सङ्ग का लाभ भी उठाया है, भट्ट जी एक निस्स्वार्थ देश हितैषी, आडम्बर शून्य विद्वान् और स्थिर चित्त सम्पादक हैं, इन्हों ने धन सम्बन्धी, शारीरिक, और मानसिक, परिश्रम करके जिस प्रयत्न और कष्ट से प्रदीप लिखकर 'देश की सेवा' की है, किसी हिन्दी सम्पादक ने नहीं की। इनके लेखों में जो कुछ चमत्कार और भाव, तथा गवेषणा है, वह हिन्दी प्रदीप के पुराने और नये फ़ाइलों को लौटते जाइये, देखिये कि इनकी मस्तिष्क शक्ति संस्कृत, और अंगरेज़ी विद्या में कहां तक पारङ्गत है? मैं समझता हूं कि भट्ट जी के दिमाग़ में कालिदास, भवभूति, जगदीश आदि संस्कृत के कवि और दार्शनिक, तथा शेक्सपीअर, मिलटन, न्यूटन, कोमट आदि अंग्रेज़ी के आथर फ़िलासफ़र कूट कूट कर भरे हैं। इस पर भी लेख की स्वतंत्रता इनकी सब से स्वतंत्र है। जिनके समझने योग्य भी जिसके बुद्धि नहीं वह बंगवासी ऐसे विद्वान् को अन्धा कहे, "किमाश्चर्य्यमतः परम्" बङ्गवासी के इस व्यक्तिगत आक्रमण को सब लोगों ने बुरी दृष्टि से देखा है। और बहुत

ही क्षोभ किया है! हम, तथा बङ्गवासी, और हिन्दी प्रदीप के सम्पादक महाशय, सभी सनातन धर्म के अनुयायी हैं, परन्तु कोई सम्पादक अपनी स्वाधीन अनुमति देने से नहीं रोका जा सक्ता! न यह हो सक्ता है कि बङ्गवासी के घर का गढ़ा सनातन धर्मही धर्म है, बाक़ी सब अधर्म! यह इायर्ड की कुनैन राजर्स का चाक़ू नहीं है! न धर्म को बङ्गबासी ने पेटेन्ट करा लिया! भट्ट जी कहते हैं कि 'बाल बिवाह मत करो,' 'आठ कनौजिया नौ चूल्हे' मत बनो, अनावश्यक छूआ छूत के झंझट में मत पड़ो, बंगबासी तो वर्तमान समय के धर्मावतार बनते हैं, भला हमें किसी धर्म ग्रन्थ में बाल बिबाह का प्रति पादन दिखला दें! सखरा, निखरा, ब्राह्मण ब्राह्मण में अभोज्यान्नता, बिना महापातक किये परस्पर हिन्दू जाति में अग्रयवहार्य्यता किस शास्त्र का मत है? महा भारत को भी यदि बंगबासी ने पढ़ा हो, तो जान सक्ते हैं कि प्राचीन हिन्दू धर्म, और आज कल के हिन्दू धर्म में क्या अन्तर है? वह हिन्दू धर्म जिसे बंगबासी मानते हैं शुद्ध सनातन हिन्दू धर्म नहीं है, वह जैन धर्म की शाखा है! वह स्वार्थी नक्षत्र सूची, धर्म शास्त्र बहिर्मुख, यजमान सर्वस्व ब्राह्मणों का रुपया कमाने का इंस्ट्रूमेन्ट है। वह हिन्दू सन्तान को अधःपात करने के लिये व्यग्र है! वह प्राचीन निस्स्वार्थ अग्रमान्य ऋषियों का नाम डुबाने वाला षड्यंत्र है! वह हिन्दू जाति को क्रमशः 'तृणादपि सुनीच' बनाने वाला आडम्बर है! हम ऐसे धर्म को नमस्कार करते हैं! हमारा सनातन धर्म चक्रवर्ती युधिष्ठिरादिकों का सहचर है? हमारा सनातन धर्म वह है, जिसमें भीष्म पितामह आदि बीर वर दश दश सहस्र योद्धाओं का नाश कर के जलपान करते थे! हमारा सनातन धर्म वह है जिसमें प्रति हिंसा पूर्ण करने के लिये भीमसेन ने दुश्शासन का उष्ण रुधिर पान किया था! हमारा सनातन धर्म वह है, जिसमें सहोदर भ्राता कर्ण को अर्जुन ने बाणों से

टुकड़े टुकड़े किया! हमारा सनातन धर्म वह है, जिसमें अश्वत्थामा ने
सौप्तिक संहार किया? हमारा सनातन धर्म वह है, जिसमें गुरू गोविन्द-
सिंह और शिवाजी, उत्पन्न हुए! हमारा सनातन धर्म वह नहीं है, जिस
में एक चिउंटी मारने का प्रायश्चित्त दो मास करना पड़े! हमारा सना-
तन धर्म वह है जिसे व्यास, वशिष्ट, गौतम, जैमिनि आदि तपोनिधि
वन वासी ब्राह्मण गण धर्म का भय करके प्रति पादन करते थे! वह
नहीं है जिसकी व्यवस्था पण्डितगण पहिले दक्षिणा लेकर करते हैं।
हमारा सनातन धर्म वह है जिसे त्रिभुवन में त्रिकाल सर्व जाति के लोग
अराधन कर सक्ते हैं, वह नहीं है, जिसे तीन वर्ण मात्र भारत वर्ष भर
में ही कूप मण्डूक बन कर गंदला करें! हमारा सनातन धर्म स्वाभाविक है,
कल्पित नहीं है० हमारा संतान धर्म हमें लोक परलोक दोनों में बचाने
वाला है० न कि लोक में दुःख, और परलोक में न जाने क्या देने वाला
है० महाशय! इस विषय में बहुत कुछ लिखने की इच्छा है, पर आस्तां
तावत्—फिर कभी लिखूंगा—

आप का मित्र

नाम लिखना व्यर्थ है,

लिख दे "अङ्कवाली" पहचान लेंगे।

पुनश्च

हिन्दी पत्रों में ऐसे बहुत कम हैं, जो अङ्कवाली के विरुद्ध लेख छापें
इससे यह पत्र आपही को भेजा गया।

वही।

हमारी नासमझी।

यदा किंचित् ज्ञोहं द्विप इव मदान्धः समभवं तदा सर्वज्ञोस्मी त्यभवदवलिप्तं मम मनः। यदा किंचित् किंचिद्बुधजन साकाशादवगतं तदा मूर्खोस्मीति ज्वर इव मदो मेऽव्यपगतः॥

ऊपर का श्लोक राजर्षि भर्तृहर का है जिस्मे उन्हो ने ना समझी का बड़ा उत्तम चित्र उरेहा है—"जब हम कुछ जानते थे उस समय मतवाले हाथी के समान गर्व से पूर्ण अपने को सर्वज्ञ मानने लगे—जब विद्वानों का साथ करते २ हमे कुछ ज्ञान हुआ तब जैसा ज्वर के उतर जाने पर शरीर की दशा होती है और सर्वांग में सुस्ती छा जाती है उस तरह पहले का हमारा सब गर्व जाता रहा—ठीक इसी तरह हम अपनी अकिल के भोंड़ेपन को स्वीकार न कर जो हमारी समझ में न आया या जिसके मर्म तक हम न पहुंच सके उस्को बुरा और वाहियात कहने लगते हैं किन्तु पीछे समझ आजाने से कायल हो पछताते हैं और अपनी नासमझी पर अफ़सोस करते हैं—यहां थोड़ी सी नासमझी का संग्रह किये देते हैं उसी से आप की टटोल हो जायगी कि कहां २ किस२ बात में हम नासमझी के चक्कर में पड़े हुये हैं॥

पहले पहल जब हमें दो चार अक्षर गोदना आने लगा, एक आध छोटे मोटे हमारे मज़मून कभी इस पत्र में कभी उस पत्र में प्रकाशित हुये, पढ़ने वालों को रुचे भी, उनके प्रशंसा पत्र आने लगे, मारे घमंड के फूल उठे, कि हम बड़े अच्छे हिन्दी के लेखक हैं—यहां तक हमारी अकिल ने ज़ोर मारा कि यही समझने लगे कि हमारे सम कक्ष शायदही कहीं कोने अंतरे दो एक पड़े हों—"उत्पत्स्यतेऽस्तिममकोपि समानधर्माकालोह्ययंनिरवधिर्विपुलाचपृथ्वी" हौसिला हुआ कि पत्र के संपादक बनें हम अपने लेख से देश का उद्धार कर देंगे हज़ारों रुपये

कमाय माला माल हो बैठैंगे किन्तु कुछ दिनों के उपरान्त समझ आई तो निश्चय हुआ कि यह सब हमारी भूल थी—बड़े २ महानुभाव सुलेखक जिन्हों ने अपनी कलम की कारीगरी और अद्भुत लेख प्रणाली से लोगों को दंग और अचंभित कर रक्खा है, जिनके एक २ शब्द में रस टपक रहा है, जिन्हों ने देश के देश को अपनी लेख शक्ति से उभाड़ एक २ मनुष्य में वह उत्साह और मुल्की जोश पैदा कर दिया कि जिससे उस जाति या देश का जिसमें वह लेखक पैदा हुआ है शत गुण गौरव और मान्य अधिक हो गया—उनके मुकाबिले हमारा तुच्छ लेख किस गिनती में है—लेख के द्वारा कुछ कमाना कैसा एक बराटिका भी ऐसी हाथ न लगी जिसे हम निज को अपने लेख की निरी कमाई कहते ॥

जब तक नासमझी और कम अकिला का ज़ोर था हमे सनातन पर बड़ी श्रद्धा और भक्ति थी कंकड़ को जवाहिर की भांत पुरखों की चलाई रीति नीत जैसा बाल्य बिवाह इत्यादि को बहुत अच्छा समझते थे—हम जगती तल की जितनी जाति सबों में श्रेष्ठ हैं आर्य हैं हमारे समान कुलीन दूसरा कोई नहीं है इत्यादि—पीछे जब समझ आई तालीम की झलक ने हृदय के अन्धकार को दूर हटाया आंख खुली तो मालूम हुआ कि यह सब हमारी भूल थी हमारे समान पतित और नष्ट दूसरा कोई न होगा—यह उसी पुरखों की चलाई रीति नीति का फल है जिसने हमें गर्द खोर कर क्षार में मिला दिया, जातीयता की जड़ उखाड़ डाला, पोलीटिकली महा दुर्बल और क्षीण हो गये—फूले नहीं समाते थे कि हम वैदिक धर्मावलंबी हैं हमारे जितने धर्म सम्बन्धी कृत्य सब वेद संमत हैं किन्तु पीछे बिचारा तो मालूम हुआ कि इस समय के जैसे हमारे वर्ताव और धर्म सम्बन्धी कार्य हैं उनमें अधिकांश ब्राम्हणों की कल्पना है नाम तो उसका वैदिक धर्म है किन्तु बिचारो तो प्रचलित धर्म सर्वथा वेद बिरुद्ध है केवल स्पर्धा दंभ और लोभ मूलक है—वेद की

कोई ऐसी कथा अब तक न देखी गई जिसमें सखरी निखरी की इतनी निखें हो एकही गोत्र के दो आदमी एक साथ बैठ खाने में हिचक रक्खें-इत्यादि ॥

इसी तरह मुसल्मानों को हिन्दू का सहकारी मानना नासमझी है हिन्दी कभी इस देश की राजकीय भाषा होगी उर्दू उठा कर हिन्दी सर्कार अदालतों में जारी करैगी नासमझी है-बिलाइत गये हुये नई रोशनी वालों से देश का कुछ उपकार होगा नासमझी है-क्योंकि जैसी उनकी खानगी अब तक देखी गई उससे यह किसी तरह नहीं निश्चय है कि ये लोग हमें वहशी और जानवर छोड़ कभी अपने बराबर का भी वे मानैंगे-तब कैसे यह आशा की जाय कि ये सब हमारे लिये बड़ी बरकत हैं-पुतिमा पूजन को पाप तथा उसके उठ जाने से हिन्दू जाति को कुछ लाभ है मानना नासमझी है-बाल्य बिवाह बिना उठाये बिधवा बिवाह प्रचलित करने में भला है यह मानना नासमझी है-इत्यादि इत्यादि अनेक कितनी नासमझी की बातें प्रचलित हैं कहां तक गिनावें ॥

जुबली उपहार।

जुबली के शुभ अवसर में बहुत लोगों ने बहुत तरह पर अपने चित्त का प्रमोद और औदार्य प्रगट किया है-किसी ने निज बित्त अनुसार खैरात किया, किसी ने रोशनी और दीपावली की जगमगाहट से जी का हौसिला ज़ाहिर किया, किसी ने बहुत दिनों तक जुबली की यादगारी के लिये भांत२ के स्मारक चिन्ह पाठशाले धर्मशाले पुस्तकालय औषधालय अनाथालय आदि स्थापित किया, शौकीनो ने शौक पूरा करने का उमदा मौका पाय नाच और जशन कराया, दोस्तों का जी बहलाया, महफिल सजाया, भांड़ भगतियों का भला मनाया-तात्पर्य यह कि जो जैसी रुचि के थे उन्हों ने अपनी रुचि और समाई तथा

सावकर्य के अनुकूल एक न एक ऐसी बात किया जिससे जुबली महोत्सव खाली न गया—पर ऊपर की सब बातें हाकिमों में रसाई वित्त की बहुतात तथा सावकार्य के आधीन हैं जिसकी यहां सब तरह पर कमी है—लाचार अपने पढ़ने वालों के रिझाने को यह नई कजली हम उपहार में लाये हैं—बरसात का मोसिम है जहां तहां लोग कजली अलापने लग गये हैं मैं समझता हूं यह उपहार समय के अनुकूल होगा॥

कजली (१)

देखो धाइ २ के लोगो आई कजली की बाहार । टेक—
प्रबल प्रतापवती महराणी जयति जागती ज्योति ।
जिनकी जुबली को शुभ अवसर आयो दूजी बार॥ देखो ॥१॥
जै जै जै श्री सर मेगडानेल, यश गावत संसार।
जो नहि होते ऐसे प्रभुवर, कैसे होत निस्तार ॥ देखो० ॥ २ ॥
वाम्बे ब्यूबानिक भय ब्याकुल, कलकत्ता भूचाल ।
शेष देश की कथा को बरनै, छायो दुःख अपार ॥ देखो० ॥३॥
बिन पानी सब बिरवा सूखे फैला महा अकाल ।
प्राण बचे तब जुबिलिहु भाई राख लिहिन करतार॥ देखो० ॥४॥
देश दशा पर ध्यान देहु प्रभु, दुखियन लेहु उबार ।
नाम तुह्मारो रटैं रैन दिन, इक सुर से नरनार ॥ देखो० ॥५॥
दयावन्त हाकिम जो चाहैं, छिन में दें दुखटार ।
आरत भारत यही पुकारत, अटल राज सरकार ॥ देखो० ॥६॥

——:०:——

कजली (२)

आई बाग बहारी फूली, गुलशन में फुलवारी रामा ।
हरी २ चलो सबै मिल देखें जुबली, त्यारी रे हरी । टेक—
अषाढ़ की अंधियारी अष्टमी, मंगलवार सुवारी रामा ।
हरी २ जुबली मेला देखें, सब नरनारी रे हरी ॥१॥
उत्तम सज्यो बेवान शान से, बैठी यें महरानी रामा ।
हरी २ मानो दुर्गा आप लीन, औतारी रे हरी ॥२॥
हाथिनि के हलके दलके संग, लागत बहुत सुहावन रामा ।
हरी २ पाछे पुलिस असवार, लिये तरवारी रे हरी ॥३॥
धावैं सब बेवान के आगे, हाकिम और महाजन रामा ।
हरी २ बोलैं सब मिल, जै जै जै धुन प्यारी रे हरी ॥४॥
चौक बाज़ार हाट बाट में, ठाठ रोशनी भारी रामा ।
हरी २ झंडे झंडी उड़ैं लगे, छटा प्यारी रे हरी ॥५॥
गेंदा चकर बंधे झाड़वो, गिलास की छवि न्यारी रामा ।
हरी २ मानो अष्टमी आज, जन्म बनवारी रे हरी ॥६॥
सुजन सोमेश्वर दास राज, भक्तन मे बड़े उत्साही रामा ।
हरी २ खर्चैं रुपया खूब, थैलिया भारी रे हरी ॥७॥
कहैं जेतली वंस हंस सरवर तज, कित को जावैं रामा ।
कठिन काल कलिकाल, कला है प्रगटी रे हरी ॥८॥

पुस्तक प्राप्ति ।

प्रीतिकुसुमांजलि।

महाराणी राज राजेश्वरी के जुबली उत्सव के चिरस्मरणार्थ काशी के पण्डितों ने अपनी २ कविता की बानगी इसमें दिखलाई है—सब मिल ३२ पंडितों की काव्य रचना चातुरी की बानगी इसमें दी गई है—इसमें की कविता शब्द चातुरी अर्थ चातुरी दोनों से पूर्ण है॥

जुबली साठिका।

बाबू पत्तन लाल कृत—इसमें ६० कवित्त जुबली के संबन्ध में अनेक उत्तम २ छटाकी दी गई है खड़गबिलास प्रेस बांकीपूर में छपी है॥

महाराणी विक्टोरिया के साम्राज्य के साठ वर्ष।

प्राचीन समय में भारत भूमि बहुत दिनों तक इस्का अभिमान करने में समर्थ थी कि यह वृहत् भूभाग एकही चक्रवर्ती सार्वभौम सम्राज के सदा आधीन रहा और उन महा पुरुषों के चक्रवर्ती राज्य केवल दो चार वर्ष के लिये समस्त भारत भूमंडल पर रहे हों सो नहीं—वरन ऐसे २ प्रतापी राजा होगये जिन्हों ने हजारों हजार वर्ष तक एकाधिपत्य एक छत्र राज्य यहां किया—श्री रामचन्द्र के संबन्ध में लिखा है कि उन्हों ने दस सहस्त्र वर्ष एक चक्र सार्वभौम राज्य किया—परन्तु वे सब लोग तो देव कोटि में गिने गये हैं इस लिये उनके सम्बन्ध की बहुत सी बातें अब कथानक और किस्से कहानी की भांत समझे जाते हैं—आज कल के लोग जो तवारीखों के पढ़ने पढ़ाने के बड़े शौकीन हैं और ऐतिहासिक वृत्तान्तों की हिन्दी की चिन्दी निकाल रहे हैं उन पुराने इतिहासों को दन्त कथा उन्होंने मान रक्खा है—जब से मितीवार और तारीख़वार पता ऐतिहासिक घटनाओं का मिलने लगा है

तब से समूचा हिन्दुस्तान कभी एक राजा के आधीन ना रहा—मुद्रा राक्षस नाटक और सोमदेव कृत कथा सरित्सागर में पटना के राजा योगानन्द को नवनवतिकोटीश्वर ९९ करोड़ धन का स्वामी लिखा है—यदि यह सच है तो भी उसी समय हिन्दुस्तान के और २ प्रान्तों में कई एक राजा स्वच्छन्द राज करते थे और वे आपस में एक दूसरे की मातहती कबूल नहीं करते थे Political Unity राजकीय विषयक एकता सिर्फ खयाली बात थी देश भर का एका क्या है कहीं इसका ज़िकिर भी न था—कदाचित् वैदिक समय में इस २ तरह के ऊंचे हौसिले लोगों के रहें भी हों तो यथार्थ में उन लोगों ने अपने इस ख्याल को पूरा कर दिखाया इसका कोई ठीक पता नहीं लगता—माना कि उस समय राजकीय ऐक्य रहा है तो देश का देश खाली पड़ा था और इतना कम आबाद था कि उस एका की कोई बड़ी तारीफ़ नहीं है—न अब के समान इतने मत मतान्तर और जुदे २ फिरके के लोग यहां तब बसते थे—श्रीमान् स्वामी शंकराचार्य ने जब बौद्धों को यहां से निकाला और फिर से वैदिकमत स्थापन किया उस समय उन्होंने सम्पूर्ण हिन्दुस्तान को १० जुदे २ राज्यों में बांटा और उन २ देशों की १० जुदी २ भाषा और ब्राह्मण कायम किये—सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल, उत्कल, ये ५ बिन्ध्य पर्वत के उत्तर, द्रविड़, कर्नाट, तैलंग, महाराष्ट्र और गुर्जर ये ५ बिन्ध्य के दक्षिण—उपरान्त इन दसों के भी अनेक आवान्तर भेद हो गये और देश इतने छोटे २ टुकड़ों में बंट गया कि आज तक हिंदुस्तान एक देश एक जाति का कहलाने लायक कभी न हुआ और वे सब आपस में इतनी विभिन्नता, फूट और द्वैविध्य रख इस क़दर लड़ते भिड़ते थे कि इस पवित्र भारत को नरक भूमि कर डाला—नित्य की राज बिराजी और लूट मार से लोगों को सुख और स्वास्थ्य सपने के ख्याल हो गये—जिसका परिणाम यह हुआ कि यह देश भारत जो

किसी समय सभ्यता का सिरमौर था, जहां के लोग मनुष्य जाति के अग्र गण्य थे, समस्त संसार को शिल्प, विज्ञान, दर्शन, रीति नीति, धर्म सम्बन्धी शिक्षा में राह दिखलाने वाले थे, और मनुष्य जाति मात्र के गुरुर्गुरु थे, सो अब सब के पीछे हटे हुये हैं—उनकी पहले की बातें कहीं नाम को भी अब न रहीं बल्कि पहले की इनकी करतूतों का बार२ उद्घाटन निरी हिमाकत और हंसी के लायक है—इनके रोज़ के बर्ताव और प्रचलित रीति नीति में अब कहीं उन गुणों का पता नहीं लगता अनेक कुढंग देख अचरज होता है कि क्या ये वेही लोग हैं या उन्हीं के औलाद हैं॥

अस्तु तौ भी यह विश्वास इनमें सदैव से रहा और अब भी है कि हम आर्यवंशीय हैं, मनुष्य जाति मात्र में हम सब से श्रेष्ठ हैं, स्वर्गीय जीव हैं, भगवान् के यहां से चुने हुये लोग हमी हैं—इन्हें उम्मेद और विश्वास है कि एक दिन फिर ऐसा आवेगा जब कि हम अपनी आर्य जाति का गौरव उससे भी शतगुण अधिक प्राप्त होंगे जितना रघु, भगीरथ, मानधाता, तथा राम, युधिष्ठिर के समय हमें प्राप्त था—दक्षिण में पेशवाओं का साम्राज्य, पंजाब में सिक्खों का एक बारगी ज़ोर पकड़ लेना, इस बात को पुष्ट करता है कि इनमें राजकीय वीरता Political Vitality का अंकुर बना है अनेक दुर्दशा सहने पर भी उसका समूल नाश नहीं हुआ—ब्रिटिश राज्य का अमन चैन और स्वास्थ्य पाय उन को अपनी पूर्व उन्नति की आशा करना अनुचित और असंभावित किसी तरह नहीं है—हज़ारों वर्ष की बहुत तरह की खल बली अत्याचार दुःख सन्ताप और अधःपात के उपरान्त प्रतापवती माननीया महाराणी राज राजेश्वरी विक्टोरिया के एकाधिपत्य एक छत्र राज्य से हिन्दुस्तान को पूरा मौका मिला है कि यहां के लोग अपने पहले के महत्व को फिर पुनरुज्जीवन करें—जिनका धर्म राज्य, जिनकी प्रजा वत्सलता, जिन

का छोह और दया, जिनका न्याय, हमें प्रोत्साहित करता है और बचन देता है कि सब तरह पर गिरे हिन्दू अपने जातीय गौरव को एक न एक दिन न केवल प्राप्त होंगे अपिच उसे और २ देशों में फैलावेंगे भी-जिनका एक होजाने का हौसिला जिसका अंकुर इनमें युगान युग से रहा दयावती न्यायशीला महाराणी के सार्वभौम एकाधिपत्य में चरितार्थ हुआ-कहां मन्दराज कहां पंजाब, कहां बंगाल कहां गुजरात और सिन्ध, कभी संभव था कि ये सब जो न जानिये कब से अलग हो रहे थे और न जानिये कितनी बिभिन्नता द्वैधभाव और ईर्षा द्रोह तथा लाग डांट की मैल इन अत्यन्त दूर देश के जुदे २ स्थानो में रहने वालों के जी में जमी हुई थी सब अलग हो भ्रातृ भाव के प्रेम से अब लोग मिलने लगे—यह सब प्रतापवती महाराणी ही के सार्वभौम राज्य का फल है—निश्चय यह कोई ईश्वर की ओर से बिधिनियोग है कि यह गिरी हुई कौम पर जिसे अपने पूर्व काल के गौरव बल और बीर्य का अभिमान है भावी महत्व को अपनी बपौती और मीरास की भांत प्राप्त करने को प्रोत्साहित हो रही है॥

महाराणी के चमकीले साम्राज्य के ६० वर्ष हमारे देश के लिये अगणनीय अभ्युदय और बरकत के संपादन करने वाले हुये-यद्यपि दरिद्रता और दैन्य यहां अब तक पांव जमाये हुये है बल्कि बढ़ रहा है तौभी अनेक सभ्यता की बातें विद्या वृद्धि, और सुलभ्य संमिलन की बड़ी बरकत हमें अपनी दीन दशा को हम से भुलाये हुये है—नित्य का लगातार अकाल और महामारी के क्लेश को झेलते हुये भी लोग स्वास्थ्य और स्वच्छन्दता के सुख के सामने उन क्लेशों को कुछ नहीं गिनते बादशाही हुकूमत के अत्याचार और जुल्म से दबे हुओं को मानों अन्धकार में टटोलते हुये को अचानक दीपावली की भांत: मिल गई है—तालीम और विविध विद्या का प्रचार एक सिरे से दूसरे सिरे तक

धारा सा बहता चला आ रहा है—प्रति वर्ष हमारे कालेज और युनिवरसिटियों से सैकड़ों छात्र उत्तम शिक्षा और ऊंचे दरजे की तालीम पाय निकलते हैं विविध विज्ञान तथा अंगरेज़ी भाषा के बड़े विद्वान् हो यूरोप अमरिका के सुप्रसिद्ध विद्वानों के साथ बराबरी करने को सन्नद्ध हैं-पहले कभी हज़ारों में एक दो बड़े २ शहरों में ऐसे नामी विद्वान् होते थे जिनका आदर ऋषि और देवताओं के समान किया जाता था अब इस समय मूर्ख रह जाना मानों अचरज और उसका अभाग है जब कि सबी साक्षर बनने का दावा बांधते हैं—हर एक भाषा के सस्ते से सस्ते ग्रन्थ पुस्तकें और समाचार पत्र और किताबें दैनिक सप्ताहिक मासिक पत्रिका प्रति दिन फैलते जाते हैं, जिससे सर्व साधारण में बुद्धि का उदय अधिक बढ़ता जा रहा है—पहले किसी के पास कोई ग्रन्थ रहता था, तो उसे ऐसा छिपाता था कि प्राण चला जाय पर वह पुस्तक नहीं देता था, अब कोई ऐसे अद्भुत ग्रन्थ बचेही नहीं जो न छप गये हों, बल्कि छापे के आगे पत्रेदार लिखे हुये ग्रन्थों को पढ़ते जी घिनाता है—राजकीय विषय और मुल्की मामिलों में लोगों की झुकावट और रुचि बढ़ रही है जो हिन्दू राज के सलतनत ज़माने भी न थी—साल २ कांग्रेस और जुदे २ किस्म के कानफेरेन्स अनेक सभा और पुस्तकालयों का ठौर २ स्थापित होना मानो इस बात को पुष्ट कर रहा है कि पलिटिक्स परिज्ञान में हम बढ़ रहे हैं और एक नये प्रकार का जीवन Newlife हम लोगों में आरहा है जो हमारी होनहार तरक्की का एक बहुत अच्छा आसार है—दूर २ के लोगों में आपस की मिला भेंटी और मेल मुलाकात परस्पर सह भोजन न होने की प्रथा को ढीला कर रहा है देश के आगे बढ़ने का यह भी अच्छा आगम है—कौन न मानेगा कि अनेक व्यर्थ के सामाजिक बन्धन और कैद का मिट जाना हमारे भावी कल्याण का हेतु है—जिससे समुद्र पार की सभ्यता में अन्तिम सीमा को पहुंची हुई यूरोप और अमे-

रिका की सुसभ्यता जाति से भांत २ की विद्या विज्ञान और कला के सीखने में यहां के लोगों को अब आसान होता जाता है—अब उन २ विद्या और कला तथा दूसरी २ देश हितैषी बातें उन २ देशों में जाकर सीखना और वहां कुछ दिनों तक बास कर उनका उपार्जन करना दुष्कर न रह गया जो यहां संसार में हमारे ऐहिक जीवन का सुख बढ़ने को बहुतही बहुत आवश्यक है—यह महाराणीही के साम्राज्य की बरकत है कि हमारे देश की वेद विद्या वेदान्त तथा अन्य दर्शन जो ईश्वरी ज्ञान तथा ईश्वर के निर्वाणपद प्राप्त करने का मुख्य द्वार है, ऐहिक तथा पारलौकिक सुख सन्दोह का श्रोत है, जर्मनी प्रभृति देश में आदरणीय हुआ, अमरिका ऐसे दूर देशो में भी जाकर जिसका जौहर लोगों को यहां के वक्ता तथा धर्मोपदेशकों ने प्रगट कर दिखलाया—पादरी साहब इसाई धर्म के फैलाने को सिर पीटतेही रहे और वैदिक धर्म की प्रज्वलित अग्नि के बुता देने को अनेक प्रयास करते रहे परजो सत्य है वह कितनाही तोपाजाय नहीं छिपता—हमारा वैदिक धर्म जिसमें किसी तरह की लालच नहीं देखी जाती न इसमें आजाने से मेंम मिलने की उम्मैद है, न ऊंचा पद, न धन, पर तौ भी विदेशी विद्वानों के मन में स्थान पा रहा है—यह सब इसी धर्म राज्य के अमन चैन का फल है जिसका हम प्रतापवती महाराणी को जितना धन्यबाद दें वह सब कम है—रेल और तार तथा अनेक वाष्पीय यन्त्र का प्रचार पोस्ट आफिस का उत्तमोत्तम प्रबन्ध सब इन्हीं के एकाधिपत्य में इस तरक्की को पहुंचे तब कौन ऐसा अभागा होगा जो इन उपकारों को भूल जायगा ॥

———:०:———

यह नोटिस हमारे पास गवर्नमेंट से आई है

नोटिस (इश्तिहार)

हरिद्वार जाने वाले यात्री इस बात से सावधान किये जाते हैं कि इन दिनों में वहां जाने से बड़ा डर है क्योंकि इन्ही दिनों में वहां बाज़े आदमियों को बद की महामारी अर्थात् बम्बई का रोग हो गया है और इस कारण से गवर्नमेंट को बहुत कड़े प्रकार की सफ़ाई और रोग के दूर करने के प्रबन्ध की आवश्यकता हुई है ॥

जो यात्री वहां जाने वाले हों वे इस बात से सावधान किये जाते हैं कि उनको इस मई के महीने के बाक़ी दिनों में और आगे आने वाले महीने जून में वहां नहीं जाना चहिये और अगर इस प्रकार सावधान कर दिये जाने पर भी यात्री लोग इस मई महीने के बाक़ी दिनों में और आगे आने जून महीने में हरिद्वार में आवेंगे तो यह हो सकता है कि उनको हरिद्वार से बाहर एक पड़ाव में डाक्टर की निगरानी में रहना पड़े ॥

स्थान नैनीताल
ता: १७ मई सन् १८९७ ई०

हस्बुल हुकुम इत्यादि
(दस्तख़त) डबल्यू० एच० एल० इम्पी,
सेक्रिटरी गवर्नमेंट पश्चिमोत्तर देश और अवध ॥

हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २० सं० ११-१२ } प्रयाग { जुलाई-अगस्त १८९७ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

मूल्य अग्रिम ३।=) पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज १।=)

नमूने की कापी =)॥

१-९-९७

हिन्दीप्रदीप

जिल्द २०
संख्या ११ । १२ } प्रयाग { जुलाई । अगस्त
सन् १८९७ ईसवी ॥

हमारे करे दिन ।

कुछ दिनों से बहुधा सर्कारी कर्मचारियों की राय हो गई है कि हिन्दुस्तान के साथ जब तक सख़्ती न की जायगी तब तक लोग यहां के न दबैंगे--कितने तो यहां तक खुल पड़े हैं कि बिना आगा पीछा सोचे बिचारे बरमला कह रहे हैं कि यहां वालों में जो कुछ स्वच्छन्दता अब बर्तमान् है और बच रही है वह भी उनसे छीन ली जाय या कम कर दी जाय--पढ़ाना तथा ऊंचे दरजे की शिक्षा उठा दी जाय, प्रेस ऐक्ट जारी कर राजकीय विषय या मुल्की मामिलों में कुछ लिखने की स्वच्छन्दता बिल्कुल छीन ली जाय इत्यादि इत्यादि--किन्तु स्मरण रहे ब्रिटिश राज यहां इस कारण नहीं बढ़ता गया और दिन दिन मज़बूती पकड़ रहा है कि बिलाइत के लोगों में शारीरिक बल यहां के लोगों से बिशेष है युद्ध शिक्षा कवायद आदि इनकी बहुत चढ़ी बढ़ी है--बल्कि इस लिये कि जब से इंगलैंड के लोग यहां आये और देश को अपने आधीन किया न्याय, इन्साफ़, समभाव, अनेक प्रकार की स्वतंत्रता, अब तक बराबर बढ़तीही गई और लोगों के जी में यह दृढ़ निश्चय

होगया कि ब्रिटिश जाति के लोग वह कौम है जो अपनी बात की सच्ची और वादे की पूरी है—ये लोग जैसाही अपने बात के धनी हैं वैसाही अपने नियम के दृढ़ और क़ानून तथा काइदे के पाबन्द हैं—गवर्नमेंट के नौकरों को महीने के उपरान्त तीसवें दिन तनख़ाह अवश्य मिलैगी—मुकर्रर दिनों तक नौकरी के बाद पेन्शन ज़रूरही मिलैगी—इसी तरह प्रोमिसरी नोट का व्याज भी ठीक समय पर मिलता रहेगा और वादे के मुताबिक़ असिल रुपया भी तुमको सर्कार चुकता करदेगी—बीच के कर्मचारी चाहो कभी २ अनेक कारणों से कुछ गड़बड़ करदें नहीं तो इनके बनाये क़ानूनों का मनशा शुद्ध न्याय है—यह उसी का फल है कि ब्रिटिश राज्य में शेर बकरी एक घाट पानी पी रहे हैं—एक छोर से दूसरे तक विद्या का प्रचार ऐसा किया गया कि बड़े शहरों की कौन कहे कसबों और दिहातों में भी कोई मूर्ख न रह गया और विद्या की झलक पाय हमे चेत हुई और समझ पड़ने लगा कि हम लोगों ने किन २ बातों में कहां तक कितनी भूल चूक की है इत्यादि—जहां तक तवारीखों के देखने से पता लगता है और इस देश का हाल मिलता है उससे यही सिद्ध होता है कि किसी राजा के समय यह सब नहीं किया गया था जो इस राज्य में होता है—जिस बात पर चलिये उसी में ब्रिटिश राज का न्याय, राज, धर्म, अदल, इन्साफ़, और दया इसके खम्भ से हो रहे हैं—जब तक राजा और प्रजा में निकपट शुद्ध भाव बना रहेगा और महाराणी के सिंहासन के पाये राजभक्त इस देश की प्रजा के चित्त में चुभे रहेंगे तब तक यहां अंगरेज़ी राज्य को कोई भय नहीं है—आभ्यन्तरिक विवाद के कारण जो कुछ शत्रुभाव कभी २ किसी के मन में उठ आता है सो एक किनारे रहे बरन बाहरी शत्रु रशिया आदि की भी कभी हिम्मत नहीं पड़ सकी कि इधर ताके भी—पिता या मालिक को उचित है कि अपने पुत्र तथा सेवक को चुमकारने या

दिलासा देने से काम चल जाय और पुत्र तथा सेवक आज्ञाकारी बना रहे तो उसे दण्ड न दे—कहा भी है गुड़ दिये मरे तो ज़हर न देना "साम्नैव यत्र सिद्धिर्न तत्र दण्डो बुधेन विनियोज्यः। पित्तं यदि शर्करया-शाम्यति कोर्थः पटोलेन" सर्कार हम लोगों के लिये आप की जगह है पुत्र से यदि अपराध भी बन पड़े तो बाप उसे माफ़ करता है—दण्ड देना या सख़्ती करना अच्छे बाप का काम कभी न समझा जायगा—दूसरे यह कि हम लोग तो उन पुत्रों में हैं भी नहीं जो पिता के किये उपकार को सर्वथा भूल गये हों—हिन्दुस्तान के लोग मुक्त कण्ठ हो अंगरेज़ी राज्य के अनेक उपकार को स्वीकार कर रहे हैं तब इन पर सख्ती करना या इन्हें दण्ड देना कैसा—इस्पर भी यदि आप हमसे बिगड़े हैं और हमें दण्ड दिया चाहते हैं तो आप को अधिकार है जो चाहो सो करो तुम्हे कौन मना कर सक्ता है। हम तो फिरभी आपको अपना राजा और अपने को आपके वशंवद माने बैठे हैं "राजा हरति सर्वस्वं शरणं कस्य जायते" इस समय प्रेस ऐक्ट का जन्म होना वैसाही है जैसा कोई शेर के शिकार का सामान कर एक छोटे से खरहे का शिकार करे—हम लोग देशी समाचार पत्रों की भुगतही कितनी ज़रा कलट्टर साहब का एक बार बुलाकर डाट देना या समझा देना काफ़ी है—सिवा इसके ज़ाबिता फौज़दारी पीनलकोड आपके हाथ में है वही एक हम लोगों को दाब में रखने को क्या कम है—हम कभी किसी हालत में गवर्नमेंट के बदख़ाह नहीं हैं किसी कर्मचारी के अन्याय या अनुचित बर्ताव पर गवर्नमेंट को चेताते अलबत्ता हैं, सो इस लिये कि जब देखते हैं कि गवर्नमेंट के क़ानून शुद्ध न्याय और प्रजा दोनों की भलाई और अपक्षपात की बुनियाद पर रचे गये हैं तो जब शुद्ध न्याय में कुछ अन्तर देखा गया या कहीं पर किसी बात में कुछ पक्षपात मालूम हुआ तो पुकार मचाने लगते हैं—हमारी पुकार चाहे न सुनी जाय किन्तु चिल्लाने और पुकार

मचाने से सन्तोष हो जाता है भीतर का बुख़ार कम हो चित्त में शान्ति आजाती है । भीतर का बुख़ार जमा रहना किसी हालत में अच्छा नहीं है इसी से हम कहते हैं हमारे कईदिन आरहे हैं हम लोग देशी समाचार पत्र सम्पादकों का ईश्वरही कुशल करे ॥

मन और प्राण ।

मनुष्य के शरीर में ये दोनो बड़े काम के हैं । एं हमने क्या कहा मनुष्य के शरीर में हैं ? और हैं तो कहां पर हैं ? आप कहेंगे यह प्राण वायु गिनती में ५ हैं और संपूर्ण शरीर भर में व्याप्त हैं ॥

हृदि प्राणो गुदे पानः समानो नाभि मण्डले ।
उदानः कण्ठ देशस्थो व्यानः सर्व शरीरगः ॥

हृदय में प्राण वायु है, गुदा मार्ग से जो हवा निकलती है उसका नाम अपान है, समान नामक वायु का स्थान नाभि मण्डल है, कण्ठ देश में जो वायु है जिस से डकार होती है वह उदान वायु है और व्यान नामक वायु है सो संपूर्ण शरीर में व्याप्त रह रक्त संचलन करता है । अस्तु प्राण की व्यवस्था तो हो चुकी अब बतलाइये आप का मन कहां है हृदय में—या मस्तिष्क में—या सर्वेन्द्रिय में फैला हुआ होकर जुदी२ इन्द्रियों के जुदे२ कामों का ज्ञान मन स्वयं अनुभव करता है । लोग कहते हैं जो कोई किसी का प्राण ले उस्के बदले में जब तक उस्का प्राण भी न लिया जाय तब तक बदला नहीं चुकता किन्तु मन जब कोई किसी का लेलेता है वह उसी का होजाता है । ईश्वर न करै हमारा मन किसी पर आजाय तब हम को उस्का दास बन जाना पड़ेगा—न विश्वास हो किसी नवयुवा या नव युवती से पूछ लो जिनका मन बहुत जल्द छिन जाता है—संसार में यही एक ऐसी वस्तु है कि हरजाने पर फिर नहीं लौटा दीसक्ती है—सच पूछिये तो

कवियों की प्रणयिनी प्रणायी यही दोनो के आपस में मन हरलेने के किस्सों का कविता के लिये बड़ा सहारा है—भवभूति के मालती माधव में, कोकिल कण्ठ जयदेव के गीत गोविन्द में, महा कवि श्रीहर्ष के नैषध में, सम्पूर्ण ग्रन्थ भर में यही है और अनेक अनूठी उक्ति युक्ति की नई २ छटायें दी गई हैं, सिवाय इसके लैलामजनू और यूसफजुलेखा के किस्सों की भी यही बुनियाद है—वास्तव में हरा तो जाता है मन पर प्रणयिनी या प्रणायी की बियोग जनित यातना प्राणही को भोगना पड़ता है—बिक्रमोर्वशी नाटक में पुरुरवा का मन उर्वशी से छिन जाने पर पुरुरवा को जो २ यातना भोगना पड़ा केवल उतनाही उस नाटक का एक मात्र विषय है—किसी कवि ने किसी नायिका के अंग की कोमलता के वर्णन में बड़ी अनूठी उक्ति युक्ति का यह श्लोक दिया है—

"तव बिरह विधुरबाला सद्यः प्राणान्विमुक्तवती।
दुर्लभमीदृशमंगं मत्वा न ते तांमजहुः" ॥

किसी वियोगिनी का वृत्तान्त कोई उस के प्रणयी से कहता है—वह बाला ने तुम्हारे वियोग में बिधुरा हो तत्काल प्राण त्याग कर दिया; किन्तु ऐसे कोमल अंग अपने रहने के लिये अब और कहां मिलने वाले हैं यह समझ प्राणों ने उसे न छोड़ा—और भी ॥

अपसारय घनसारं कुरू हारं दूर एव किं कमलैः"
अलमालमालि मृडालैरिति रूदति दिवानिशं वाला ॥
किंकरोमि क्वगच्छामि रामो नास्ति महीतले।
कान्ता विरहजं दुःख मेको जानाति राघवः ॥

मन और प्राण दोनो एक बस्तु हैं कि दो और ये दोनो क्या वस्तु हैं और कैसे इन दोनो की आप विवेचना करेंगे—यह रोझमी है—इवा

है विद्युत शक्ति है—या कोई दूसरी वस्तु है—दोनों मिलके काम करते हैं कि अलग २ जो मिलके काम करते हैं तो जब प्राण निकल जाता है तब मन कहां रहता है—प्राण के आधीन मन है कि मन के आधीन प्राण—जिसमें प्राण रहता है उसे प्राणी कहते हैं जिसमें मन है वह मनई है—वह क्या है जिसके आधीन ये दोनों हैं अर्थात् जो यह कह रहा है हम बड़े हैं, हम छोटे हैं, हमारा प्राण निकल गया, हमारा मन हर गया, हमारा मन नहीं चाहता, मन नहीं लगता, यह सब कहने वालों कोई तीसरी व्यक्ति है या इन्हीं दोनो का मेल है, और ये दोनो घटते बढ़ते हैं या जैसे के तैसे बने रहते हैं—सुना है योगी जन प्राण ब्रह्माण्ड में चढ़ा वर्षों तक उसे अलग रख लेते हैं—हिन्दू मुसल्मान तथा अंगरेज़ों में ऐसे २ विद्वान् हुये हैं जिन्हों ने मन की बड़ी २ ताकतें प्रगट की हैं मिसमेरेज़िम इत्यादि—थियोसोफिस्ट लोगों के लिये मन बड़ी भारी चीज़ है जिसके सम्बन्ध में वे लोग अब तक नई २ बात निकालते जाते हैं—मुसल्मानों में रोशन ज़मीर किसे कहते हैं—योग शास्त्र में जैसा इस्का विस्तार है उस्का वर्णन करने लगें तो न जानिये के बड़े २ ग्रन्थ इस्के बारे में लिखे जा सक्ते हैं—हमारे प्राचीन आर्यों ने मन के सम्बन्ध में जहां तक तलाश किया है वैसा अब तक किसी कौम के लोगों ने नहीं किया ॥

मनः कृतं कृतं लोके न शरीर कृतं कृतम् ।
मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ॥

जो कुछ काम हम करते हैं वह मन का किया होता है—हाथ पांव से हम काम करते हैं सही पर मनो योग जब तक उस काम पर न हो तब तक वह काम काम न समझा जायगा—बन्धन में पड़ जाने का या बन्धन से मुक्त होने का हेतु केवल मन है—योग वाशिष्ट और भगवद्गीता में मन के सम्बन्ध में अनेक बातें लिखी हैं पर प्राक मिश्रित

मन के बारे में जो हमारे अनेक तर्क वितर्क हैं, उनका उत्तर कहीं से नहीं मिलता और यह पहेली बिना हल हुये जैसी की तैसी रही आती है॥

चढ़ती उमर ।

ईश्वर की सृष्टि में चढ़ती उमर भी क्याही सुहावनी होती है जिस्की आमद में क्या स्त्री क्या पुरुष कुरूप से कुरूप भी थोड़े समय के लिये अत्यन्त भले और सुहावने मालूम होने लगते हैं—लिखा भी है "प्राप्तेच षोड़से वर्षे सूकरीचाप्सरायते" नई जवानी, नये खयाल, नई उमंग, नई २ सज धज, नये हौसले, चढ़ती उमर के उभाड़ में सब नयाही नया जर्जरित सड़े घुने पुराने का कहीं लेश या लुवाब भी नहीं—इस दशा में नयों को जो पुरानो की कोई कदर जी में न रही तो इसमें अचरज की कौनसी बात हुई—नयों को अपनी ओर अछूता देख पुराने जो उन्हे अशालीन धृष्ट और गुस्ताख कह बद्नाम करें तो यह पुरानों की पुरानी अकिल की खूबी है—यद्यपि वे खुद भी अपनी चढ़ती उमर में ऐसेही थे, लोहे तांबे उत्तर अब बड़े संजीदा और बुजुर्ग बन बैठे, तो अब चढ़ती उमर वालों में नुक्तचीनी करते सब दोषही देख झुंझलाते हैं—यह नहीं सोचते कि इस नई उमर के उभाड़ में जो कुछ विनीत भाव नम्रता भलाई की ओर झुकावट और बुराई से घिन बनी रहे वही गनीमत है नहीं तो आदमी की ज़िन्दगी में यह वक्त ऐसा नाज़ुक और अल्हड़पने का होता है कि उसके जोश में जो कुछ निकृष्ट काम आदमी न कर गुज़रे वही उस्की तारीफ़ है—यह उमर अनेक दुर्व्यसन या बुराई के उगने और बढ़ने की प्ररोह भूमि है, जैसा खेत जब जोतबोके तैयार किया जाता है तब उसमें जो बिया बोया जाता है वह दिन दूना रात चौगुना फबकता हुआ बढ़ता जाता है—अथवा नई जवानी फलवन्त उर्वरा पृथ्वी का एक बाग है जिसमें मेवे के उमदा पेड़ न लगाए जांय

तो लम्बी २ घास आप से आप उग आती हैं—इसी से चतुर सयाने बागवान की तरह अच्छे मा बाप अपने सन्तान की पूरी फिकिर करते हैं, सदुपदेश सद्गुण अनेक विद्या शिल्प और कला को वृक्ष की भांत उसमें आरोपण करने की सदा चेष्टा किया करते हैं—बाप मा का उद्यम सफल हुआ और लड़का उनका इस चढ़ती उमर में भलाई और अच्छे ढंग की ओर झुक पड़ा तो जीवन पर्यन्त भलीही बात करता आता है अनेक विद्या का उपार्जन कर वंश का भूषण हो जन्म भर अपने जन्म दाता को सुख देता रहता है। बुराई और कुढंग की ओर झुक पड़ा तो कुल का दूषण हो यावज्जी वह अपने बाप मा को डहता है—इस चढ़ती उमर में जब मनुष्य की यावत् वस्तु का उपचय होता जाता है एक विवेक या बिचार अलबत्ता पास नहीं फटकने पाता—सच कहो तो बिचार को अवकाश उमर के घसने पर मिलता है गदहपचीसी प्रसिद्ध है—शादी का भी कौल है॥

चेहल साल उमरे अज़ीज़तगुज़स्त।
मिज़ाजे तोअज़हाल तिफ़्ली नगश्त॥

इससे सिद्ध हुआ कि परिपक्व बुद्धि या बिचार शक्ति मनुष्य में तब तक नहीं आती जब तक इस्की चढ़ती जवानी का समय नहीं बीत गया—यही एक ऐसा भारी दोष है जिससे नौजवानों में बहुत से उत्तमोत्तम गुण उत्साह, अध्यवसाय, दृढ़ता, स्थिरता, साहस, हिम्मत, आदि के रहते भी वे छिप्रकारी अविचारी और अविवेकी कहलाते हैं—सब भांति निपौगुर अपाहिज बूढ़ी दाढ़ी वाले उन्हें लोकड़े थालिश तिफ़्ल और मूर्ख समझ अपने मुक़ाबिले उनका कुछ भी गौरव नहीं करते चाहो वे कैसेही विद्वान् होगये हों—तो निश्चय हुआ नौजवानी की उमंग बड़े काम की होती है यदि वे अपने काम समझदारी और बिचार के साथ

करते रहे—नवंबय शृङ्गार रस का तो प्रधान सहारा है—१८ बर्ष की उमर से २५ बर्ष तक में हम जो कुछ कर लेंगे वह जीवन पर्यन्त हमारे काम आवेगा जिस ढंग पर हम ढुलक जायंगे जन्म भर वह ढंग हमारा न बदलैगा—मुखसे आ रहे हैं मूछों की रेख भीजती हो ऐसे बयः सन्धि में प्राप्त को देख कन्दर्प अपने दर्प को कई गुना अधिक बढ़ा लेता है—इस तरह के नव युवा या नव युवती को परस्पर प्रेम बढ़ कराने में वह अपने पाचों बाणों को एक साथ जब छोड़ने लगता है वह समय जैसा नाजुक सुहावना और प्यारा होता है वैसाही भयंकर भी है—ऐसे समय आंख अलग उरझना चाहती है मन में अलग उचाट होना आरंभ हो जाता है दोनों को परस्पर प्रणयबन्धन में बांध देनाही उस समय सयानपन है—शान्ति ऐसेही समय की सराहने लायक है—इसी से किसी ने कहा है॥

नवे वयसि यः शान्तः स शान्त इति कथ्यते।
धातुषु क्षीयमाणेषु शमः कस्य न जायते॥

जो नये बय में शान्त है उसी को शान्त कहना चाहिये ४० बर्ष के उपरान्त जब इन्द्रियां शिथिल होने लगीं, और अपने२ विषयों की ओर से उपराम को प्राप्त होने लगीं तब तो शान्ति अपने आप आय हमारा दामन पकड़ लेती है—घी ढरक गया हमे रूखीही भाती है—बुढ़ापे की शान्ति इसी भांति की है—बढ़ती जवानी की उमंग का स्वरूप किसी ने इस तरह पर दिखलाया है "चुल बुल चालाक चुस्त चरपर छिन २ मे होत। छैले छबीले छिछोरे ओर छोर के" नई जवानी में आये हुये को जब ये सब बातें न हों बरन संजीदगी और गौरव का आदर उसके चित्तमें हो उसी को शान्त कहना चाहिये और ऐसाही मनुष्य समाज का अगुआ होने लायक है—जिनकी

संख्या बहुत कम पाई जाती है—कोई २ ऐसे हैं जो इस असि-धारा व्रत के व्रती पाये जाते हैं—नहीं तो नई जवानी के आरंभ में जैसा एक स्वाभाविक गहन अविवेकान्धकार बुद्धि में छाया रहता है वह ऐसा नहीं है कि जिसे साधारण चिराग की क्या ताक़त बरन बिजली की रोशनी भी हटा सके—इधर तरुणाई की तरल तरङ्ग, उधर जो कहीं खाने पीने की आशाइस के सिवाय बहुतसा धन पास हुआ और बेरोक टोक खुद मुख़ार मालिक उस बड़ी दौलत के हुये तब फिर क्या कहना, एक तो तितलौकी दूजे चढ़ी नीम, ऐसी दशा में उनके दारुण लक्ष्मी मद की चिकित्सा और दर्पदाहज्वर की गरमी का शिशरोपचार अति कष्ट साध्य है—उनके ऐश्वर्य तिमिर जनित अन्धत्व के दूर करने को बरेली में भी अब तक ऐसा कोई सुरमा न ईजाद किया गया—चढ़ती उमर के जोश में बुद्धि बहुक शास्त्रों के द्वारा मांजने से भी अब तक इस्का नशा दूर नहीं होता बुद्धि की स्वाभाविक मलिनता नहीं जाती—गदहपचीसी को जहां इसने डाका और बाल पकने लगे कि पक्कापन उसमें आपसे आप आजाता है—सुफ़ेदी से चमकते हुये बाल मानो गवाही देने लगते हैं कि बुद्धि के मांजने से जो चमक आई है वह अब तक छिपी रही आओ अब उस्की चमक आकर देखो—हमने ऊपर लिखा है कोई २ ऐसे हैं जो चढ़ती उमर में भी असि-धारा व्रत के समान चरित्र पालन में सावधान रह चढ़ती उमर के स्वाभाविक दोष से बचे रहते हैं—उनके गुण गौरव के प्रकाश का अवसर यही ढलती उमर का बाल पकने वाला समय होता है जिनके दमन शक्ति की दमक और बुद्धि चातुरी की चमक अब चौगुनी बढ़ जाती है—धन्य हैं ऐसे लोग जो इस नई उमर को चौकसी से पार हो गुण गांभीर्य के अगाध सागर बन, औरों के लिये नमूना होते हैं—साधु जन ऐसोंही का सत्कार करते हैं, कुटुम्ब के लोग भी उसी का आदर करते

हैं, विद्वन्मण्डली उस्को अपना अग्रवर मानती है, चापलूस मुफ़्तखोरे खोटे लोग उसे देख शरमाते हैं, मुंह छिपाते हैं, उसे आंख मिलाने की हिम्मत नहीं बांधते, धूर्त प्रतारक वंचक वक वृत्तियों की कोई कला उसके सामने नहीं लहती—इसमें सन्देह नहीं यह उमर एक कसौटी है जो इसमें कसे जाने से खरा निकल गया वह उमर के बढ़ने पर अपने चारु चरित्र में चारुदत्त का नमूना बनता है—नीचे का यह श्लोक ऐसों ही के उदार चरित्र का दर्साने वाला है :—

उपरि करवालधाराः क्रूराः सर्पाः भुजंगमपुंगवाः।
अन्तः साक्षाद्द्राक्षा दीक्षागुरवो जयन्ति केपि जनाः॥

यह लेख हमने केवल नई उमर वालों के उद्देश्य से लिखा है आशा है इसे ध्यान दे वे लोग पढ़ेंगे तो अवश्य उनको एक प्रकार की चितावनी होगी नई उमर में जो बहुत से दोष मनुष्य में आजाते हैं उससे बचेंगे और समाज तथा अपना भी कल्याण साधन में अग्रसर होंगे॥

दरिद्र की गृहस्थी।

गृहाश्रमो हि निः स्वानां महत्येषा विडम्बना।
तस्मात्पूर्वमुपादेयं वित्तमेव गृहैषिणा॥ १॥

दरिद्र को गृहस्थी महा विडम्बना अर्थात् बड़ा जंजाल है—इस लिये गृहस्थी करने की इच्छा रखने वाले को चाहिये पहले धन संचय कर ले तब गृहस्थी में आवे॥

वरं सोढा मनुष्येण तीव्रानरकवेदना।
नत्वेवच गृहे दृष्टं पुत्रदारक्षुधार्दितम्॥ २॥

कड़ी नरक वेदना सह लेना सहज है किन्तु द्रव्य के अभाव से स्त्री और पुत्रों का भूख के मारे पेट की अग्नि में झुलसते हुये देखना

नहीं सहा जाता ॥

असंभवे शिशुं दृष्ट्वा रुदन्तं प्रार्थना परम् ।
बज्रसार मयं मन्ये हृदयं यन्न दीर्यते ॥ ३ ॥

जो किसी वस्तु के लिये गिड़ गिड़ाते हुये बालकों को देखता है पास धन न रहने से उनके मनोरथ को नहीं पुरै सक्ता और इस दुःख के कारन उसका हृदय नहीं फट जाता इससे जान पड़ता है वह मनुष्य बज्रसा कठोर हृदय है ॥

साध्वीं भार्यां प्रियां दृष्ट्वा कुचैलां क्षुत्कृशी कृताम् ।
अस्य दुःखस्य तन्नास्ति सुखं यत्समतां ब्रजेत् ॥४॥

प्यारी सती भार्या को मैले फटे कपड़ों से किसी तरह तन ढांपे और भूखों मरते २ दुर्बल देख जो दुःख होता है उसका हमवज़न कोई ऐसा सुख नहीं है जो उस दुःख का बदला चुका सके ॥

रूक्षं विवर्णं क्षुधितं भूमि प्रस्तर शायिनम् ।
पुत्र दारं निजं दृष्ट्वा किमकार्यं भवेन्नृणाम् ॥५॥

अपनी स्त्री तथा पुत्र को भूख से क्षीणकाय, रूखी देह धरती में पड़े लोटते देख उनके भरण पोषण तथा तन ढांपने के लिये कौनसा ऐसा बुरा काम है जो आदमी नहीं कर गुज़रता ॥

बाहूपधानं क्षुत्क्षामं दृष्ट्वा दीनु मुखं सुतम् ।
मृत्यु रेवोत्सवः पुंसां व्यसनं जीवितं द्विज ॥ ६ ॥

क्षुधा से दुर्बल हाथ को तकिया बनाय लेटे हुये दीन मुख पुत्र और स्त्री को देख मनुष्य के लिये मरण महा मंगल है जीवन उस्का संसार में केवल दुःख भोगने को है ॥

परिसीदत्स्वपत्येषु दृष्ट्वा दीन मुखीं प्रियाम्।
वज्रसार शरीरास्ते यो नयाति सहस्रधा ॥ ७ ॥

लड़कों को दुखी और अपनी प्रिया भार्या को खिन्न और उदास देख जो जीता है अवश्य उसका शरीर बज्रसार सदृश कठोर है तब तो उसके हज़ारों टुकड़े नहीं होते ॥

तस्मादर्थ विहीनस्य पुंसो दारपरिग्रहात्।
कुतस्त्रिवर्ग संसिद्धिर्यातनैवहि केवलम् ॥ ८ ॥

इससे धन हीन को गृहस्थी बांध कर रहने में धर्म अर्थ काम त्रिवर्ग साधन जो गृहस्थी का मुख्य फल है सो तो कहीं लेश मात्र को भी नहीं है बल्कि गृहस्थी केवल नरक यातना का भोग है—ऊपर के श्लोक भविष्य पुराण के हैं जिनमें दरिद्र के गृहस्थाश्रम का ठीक२ चित्र उतारा गया है—सच है दरिद्र के लिये गृहस्थी बांध कर बैठना ऐसाही महा पाप का परिपाक है—किन्तु क्या किया जाय कुयें की भांग है सब तरह की यातना लोग भोगते हैं कहीं से किसी तरह का सुख नहीं है तौ भी कोई ऐसे नहीं देखे जाते जिनको गृहस्थी से घिन हुई हो—रहने को घर नहीं है, पहिनने को कपड़े नहीं हैं, दिन रात में एक बार भी भर पूर पेट भर भोजन मयस्सर नहीं है ऐसे लोग भी गृहस्थी की ओर से कभी एक बार भी नहीं घिनाते—लड़के का ब्याह आ लगा अवश्यही करेंगे, भूखों मर रहे हैं तौभी ज़ायदात गिरों रक्खेंगे कर्ज़ काढ़ेंगे पर लड़के को ब्याहेंगे ज़रूरही—कुछ ऐसी निषिद्ध चाल चल पड़ी है कि क्वांरा कोई रहनेही नहीं पाता—यदि किसी ने लड़के का ब्याह न किया तो उस्की तारीफ़ कोई न करेगा बल्कि बिरादरी के लोग अंगुश्त-नुमाई करेंगे और यही कहेंगे कि अवश्य इसमें कोई ऐब है तब तो

इसके लड़के का ब्याह नहीं होता फिर जिनका ब्याह होता है उनके लच्छन और सपूती देखो तो कोई ऐसी बात सिफ़त और तारीफ़ की उसमें नहीं है जिस से अनुमान हो कि यह अपनी गृहस्थी खातिरखाह चला लेगा—ऐसे अपाहिज जब गृहस्थ और लड़के बाले हो बैठे तो वे क्या करैंगे, गुण कोई ठहरा नहीं जिससे वे अपना गुज़ारा करैं—भीख मांगैंगे, चोरी करैंगे, हज़ार किस्म की बेइमानी करैंगे, "किम कार्य भवे न्नृणाम्" ऊपर के श्लोकों में यह एक टुकड़ा बहुतही समझ कर लिखा गया है—हम कहते हैं किसी के चार लड़के हैं तो क्या ज़रूरत है कि वह चारों के गले में चक्की बांध उसका जीवन सत्यानाश करे-जिसको योग्य समझे और उसका मन गृहस्थी करने को चाहता हो तो उसका ब्याह कर उसे गृहस्थ बनावे नहीं तो बाप मा अपने लड़कों के भलाई चाहने वाले नहीं हैं बरन पूरी शत्रुता उसके साथ कर रहे हैं—अस्तु भर पूर धन पास हो तब बाप मा अपने लड़कों का व्याह करदें तब भी कुछ ऐसी हानि नहीं है—धनी चाहो ब्याह करते रुकैं भी पर दरिद्र को हम देखते हैं तो जहां लड़के का व्याह आलगा कि लार टपक पड़ी अवश्यही ब्याहैंगे लड़कों को ब्याह दिया मानो बड़ा बोझ सिर पर से टला-हिन्दुस्तान में भीखमंगे जो इतना बढ़े हुये हैं उसका कारण भी यही बाल बिवाह है—पुत्र जन्म में लोग बड़ी खुशी मनाते हैं आनन्द सन्दोह में मग्न फूले नहीं समाते; हमें रंज होता है कि जहां देश में २८ करोड़ गुलाम और दास थे वहां एक और बढ़ा, कहां तक इस दुखरोने को रोते रहैं किसी एक के मन में भी तो हमारी बात न धंसी अंधे के आगे रोना अपना दीदा खोना है—लाचारी है-क्या किया जाय इस बर्ष के कड़े दुर्भिक्ष ने गृहस्थाश्रम की अच्छी तरह कलई खोल दी इस दुर्भिक्ष में अन्नकष्ट भोग कर भी जो गृहस्थ बनने का हौसिला रखते हों उनके समान पाक बेहया और कौन होंगे-जिस बेहयाई का

नमूना यहां देश का देश होरहा है-- जो इस बात से प्रत्यक्ष है कि इस बर्ष भी ऐसे कराल दुर्भिक्ष में लोग अपने लड़कों को ब्याहने से न चूके सिंहस्थ में भी स्वार्थी ब्राह्मणों ने ऐसी लगन निकाल दिया कि शादियों का शुमार और साल के मुक़ाबिले कम न रहा—दरिद्र भारा क्रान्त भारत वसुधा का हम नहीं जानते अब और क्या अनिष्ट भावी है जो अपाहिज निपांगुर इन गर्द खोरों की गृहस्थी बढ़तीही जाती है— हम गृहस्थाश्रम की निन्दा नहीं करते गृहस्थी सब सुख की खान और मनुष्य जाति की उन्नति का एक मात्र द्वार है किन्तु इस चलन की गृहस्थी को हम कभी न सराहेंगे जैसी हम लोग भुगत रहे हैं—देखते हैं तो समाज में धनियों की संख्या नित्य २ घटती जाती है सोभी इसी लिये है कि दस बीस बर्ष के बीच में एक दो धनी बिभवशाली वंश क्षीण हो जाते हैं— पर ये धनहीन दरिद्री जो रुपया पास न होने से ब्यभिचार तथा बेश्या संसर्गदूषित न हो सृष्टि पैदा करने की शक्ति में कम नहीं होते एक २ के छः सात से कम औलाद नहीं होती परिणाम में ऐसों की संख्या आबादी में बढ़ती जाती है सम्पन्न समर्थों की गिनती घट रही है—भारत के दरिद्र होजाने का यही बड़ा भारी कारण है इसी से ऊपर के श्लोकों में सिद्धान्त किया कि पहले धन संचय कर तब गृहस्थी में आवे—अत्यन्त दूध मुहे का ब्याह न किया जाय तब भी कुछ भलाई इसके बारे में हो सक्ती है किन्तु जगत् प्रवाह में पड़े हुये लोग कब हमारी सुन सक्ते हैं हम चाहो जितना गला फाड़ २ चिल्लाया करें—इस अपनी मूर्खता और ना समझी का परिणाम जो कुछ हो रहा है उसे कोई न मालूम करता हो सो भी नहीं है—सबी इस्का फल भुगत रहे हैं और पड़े २ कांख रहे हैं—किन्तु भेड़िया धसान तो है हिन्दू समाज का अवलम्बही भेड़िया धसान है—जिसके बिरुद्ध चलना कैसा बरन मुख से कभी एक बात भी निकालना बड़ी बुराई है—भीतरही भीतर चूरचूर होते रहो पड़े २

कांखा करो किन्तु समाज में सुर्खरुई चाहते हो तो अपने "मारेल-करेज" को दखल न दो—इस विषय को पिष्टपेषण की भांत हम न जानिये कै बार लिख चुके समझते हैं कि पढ़नेवालों को अरोचक होगा किन्तु फिर भी नहीं रहा जाता कुछ न कुछ लिखी डालते हैं—पढ़नेवालों से प्रार्थना है कि हमें माफ़ करेंगे॥

बङ्गबासी का भ्रम ।

कुछ दिनों से हिन्दी बङ्गबासी में हिन्दी प्रदीप पर बड़े आक्षेप छपते हैं इस विषय में मैं भी अपनी दीन सम्मति पक्षपात रहित प्रकाश करता हूं :—

जो बड़ा भारी आक्षेप है वह यह जान पड़ता है कि बङ्गबासी महाशय के मत में हिन्दी प्रदीप हिन्दू धर्म की निन्दा करता है तथा उनके मत में हिन्दू होकर हिन्दू मत की निन्दा करना अनुचित है ॥

इस विषय में कुछ कहने से मज़हबी बहस छिड़ जाने का भय है जिस्का तै होना आज कल कठिन है—अस्तु संक्षेपतः यह है कि हिन्दू धर्म के अन्तर्गत बड़े २ झगड़े पड़े हुए हैं अब यह प्रश्न होता है कि बङ्गबासी महाशय का क्या अभिप्राय है—क्या उनको मालूम नहीं है कि एक दूसरे के बिरुद्ध ऐसे द्वन्द्व युद्ध करते हुये अनेक मत वाले सब अपने को हिन्दू धर्म के अन्तर्गत मानते हैं। क्या जैन या बौद्ध लोग भी जो भारत वर्ष में इस समय मौजूद हैं वे हिन्दू के अन्तर्गत नहीं हैं—क्या एक सम्प्रदाय मांसाहार व मदिरा पान को उचित व दूसरा अनुचित मानने व बर्ताव करने वाले दोनों अपने को हिन्दू धर्मी नहीं कहते क्या ऋणम् कृत्वा घृतम् पिबेत् वाला भी एक मत निरीश्वर बादी, हिन्दू नहीं कहलाता—इत्यादि अनेक उदाहरण से जाना जायगा कि हिन्दू धर्म बड़ा भारी

आड़ है ऐसे लोगों के लिये जो दूसरों को नीचा दिखलाया चाहैं— कारण यही है कि जब एक आर्ष प्रमाण दिया जायगा तो अनेक सम्प्रदायों में से किसी में उसके विरुद्ध होही गा इसलिये बङ्गबासी महाशय से प्रार्थना है कि पहले आप इस गम्भीर शब्द हिन्दू धर्म का अर्थ सप्रमाण समझाइये तो इस बात का विचार हो कि हिन्दी प्रदीप कहां तक हिन्दू धर्म से विमुख हुआ है ॥

२ दूसरा आक्षेप आप का यह है कि हिन्दू हो करके हिन्दू धर्म की निन्दा करना अनुचित है। परन्तु यदि हिन्दू धर्म जिस वस्तु को आपने माना है वह निन्दा योग्य है तो क्यों उसकी निन्दा न हो— यह विद्यावानों व बुद्धिमानों का काम नहीं है कि अपने खट्टे दही को भी दूसरे के मीठे दही से अच्छा बतावै यह तो धोखा देना है जो स्वार्थी लोगों का काम है ॥

३ हिन्दू धर्म की निन्दा करने के उदाहरण आपने दिये कि अमुक२ पंक्ति में हिन्दी प्रदीप के एडिटर महाशय ने अमुक२ बातें ऐसी लिखी हैं जो आप के मत में हिन्दू धर्म की बाधक हैं परन्तु उनका सप्रमाण खण्डन कीजिये—आप का इतना कह देना इस में सन्देह नहीं कि उन लोगों के लिये काफ़ी है जो कौआ कान लिये जाता है सुन कौवे के शत्रु व्यर्थ बन गए—किन्तु जिनके मस्तिष्क में ईश्वर कृपा से कुछ विचार शक्ति है वे बेप्रमाण व युक्ति आप की बात पर ध्यान नहीं देंगे ॥

भट्ट जी का सिद्धान्त है कि ब्रह्मचर्य की प्रथा बिगड़ गई है और उस्का मूल कारण बाल्य बिवाह है जिसके बिना छोड़े देश की भलाई नहीं है ॥

बङ्गबासी महाशय। आप अपने हिन्दू धर्म मात्र को खोजकर एकही श्लोक दीजिये कि ब्रह्मचर्य सत्यानाश की जड़ है वा हिन्दू धर्म के

प्रेमी ब्रह्मचर्य से नरक को जांयगे॥

भट्ट जी का सिद्धान्त है कि सह भोजन का न करना उतना पुण्य बढ़ाने वाला नहीं जितना आज कल प्रचार है—यथा उन्हों ने लिखा है कि "वेश्या संसर्ग दूषित हों दासी गमन करते हों दिवाला निकाल दूसरे की रक़म मार बैठे हों धर्म कभी न बिगड़ेगा। बेईमानी, फ़रेब, जाल-साज़ी, झूंठ बोलना, अपने थोड़े से स्वार्थ के लिये दूसरे का सत्यानाश कर देना इत्यादि बातों में धर्म का कहीं ज़िक्र भी नहीं परन्तु बाज़ार की मिठाई दांत तले दबा लिया बस धर्म धूर में मिल गया, अन्य जाति के लोटे में पानी पी लिया धर्म भ्रष्ट हो गया इत्यादि"॥

यह बहुतही ठीक है—बिचार शक्ति को न्याय पूर्वक काम में लाइये और अपने हिन्दू धर्म में से खूब खोज कर प्रमाण बतलाइये कि क्या उक्त पापों से यह अधिक है। अर्थात् क्या आप किसी धर्म ग्रन्थ से यह बतलावैंगे कि ब्राह्मण होकर झूंठ, व्यभिचार, बेईमानी, विद्याहीनता, संध्या गायत्री के त्याग आदि से उनको जो२ पाप होना लिखा है तथा जो२ अति कष्टदायक नरक बास लिखे हैं उससे भी अधिक पातक छुआ-छूत की बुरी रसम को न जारी रखने से होगा॥

मेरे जान आप को कोई भी ऐसा प्रमाण त्रिकाल में न मिलेगा—यदि आपही अपनी गढ़न्त न करलें क्योंकि आज कल्ह के अधिकांश लोग जिनको भेड़िया धसान पसन्द है धर्म ग्रन्थों को बिना देखेही प्रचलित बिगड़ी दशा को धर्मानुकूल मान कर व्यवस्था देने को तैयार हैं॥

अन्धे का चिराग़, भट्ट जी के पिट्ठू, आदि हृदय बेधी कुवाच्य भी यदि आप के हिन्दू धर्म में हैं तो मुझे इससे कुछ मतलब नहीं किन्तु यदि आप न्याय दृष्टि से धर्म ग्रन्थों के प्रमाण देने का साहस कीजिये तो

मुझको भी मालूम हो कि कौन सच्चा है ॥

बङ्गवासी महाशय! क्या आप देशोद्धारक देषहितैषी होना चाहते हैं? क्या? आप को इसी आर्य भूमि (हिन्दुस्तान) में रहने पर भी यह मालूम नहीं है कि कैसा धर्म विमुख यह देश होता जाता है। क्या आप को यह भी मालूम है कि जिन को आप हिन्दू धर्मानुसार अपना पूज्य गुरु ब्राह्मण साधु माने हैं उनमें नब्बे फीसदी से अधिक असाधु और बड़े२ पापकर्म कारी हैं। क्या स्वामी कृष्णानन्द का मुक़द्दमा आपही बड़े ज़ोर से नहीं छापते थे। क्या उक्त को उस मुक़द्दमें से एक दिन पूर्व तक आप भी साधु महात्मा पूज्य नहीं मानते रहे होंगे। क्या ऐसे अधिकांश लोग आप के हिन्दू धर्मानुसार पूज्य नहीं माने गये हैं ॥

तो आपही बतलाइये फिर ऐसे लोगों को सुधारने की जो शिक्षा भट्ट जी लिखते हैं तो क्यों बुरा है ॥

बहुत जो आप बिगड़े हैं वह इस बात पर कि भागवत के एक श्लोक पर भट्टजी अपनी निष्पक्षपातता के कारण क्रुद्ध हुये हैं सो आप जोंक की भांति बुरा लहू खींचने वाले क्यों बनते हैं बालक के समान दूध खींचने वाला सतोगुनी बनने की शक्ति क्या आप में नहीं है। क्या आप को वही भागवत माननीय नहीं है जिसके किसी स्थल पर कहा है कि अच्छे लोग बुरों से भी भलाई का उपदेश लेते हैं और बुरे लोग अच्छे से भी बुरा—अस्तु अपनी बात के आप ज़िम्मेदार हैं भट्टजी के उक्त लेख का तात्पर्य यह है कि जिस भारयखण्ड में ऐसे२ ऊपर कहे हुए लोग पूज्य, गुरु, साधु माने जाते हैं जिस देश में जो२ तीर्थ कहे जाते हैं वहां२ के ब्राह्मण मानों हर तरह के दुष्ट कर्मों का ठीका लिये हैं। जिस देश के २८ करोड़ निवासियों में २८ मनुष्य भी वेदज्ञ चार वेद के वक्ता अर्थ सहित, वा सट्शास्त्री नहीं अर्थात् एक फ़ी

करोड़ भी नहीं—या छोटे मोटे विद्यावानों को भी यदि लिया जाय तो १० दस फ़ी करोड़ १८० से अधिक न मिलेंगे—तथा ब्रह्मचर्य हीन महामूर्ख अनेक दुष्ट कर्मकारी कलह द्रोह फूट के आचार्य जहां के अधिकांश वे लोग हों जिनको चारों वर्णों का गुरु माना जाता है तो ऐसे देश में वास के लिये देवता लोग तरसते हैं यह किसी स्वार्थी की चालाकी से प्रक्षिप्त श्लोक मिलाया गया होगा। अथवा यह भी सम्भव है कि किसी प्राचीन समय में यह भूभाग आर्यभूमि सार्थक नाम की थी उस समय वह प्रशंसा उचित रही होगी परन्तु जब वे सब गुण यहां न रहे तो उक्त प्रशंसा व्यर्थ है। सो भागवतकार ने भविष्य भारत का कुछ अनुमान न करके जो इस उक्त प्रशंसा को बर्तमान भारत के लिये लिखा हो तो क्यों उनकी भूल न मानी जावै॥

भट्टजी का लेख पक्षपात रहित होता है। ईसाई आदि मतों की पुस्तकों में से भी अच्छी व उचित बातें उद्धृत किया करते हैं तथा इसी न्याय से जो अपने मत में त्रुटि हों उनको छोड़ने का प्रयत्न करते हैं॥

एक बात और बङ्गवासी महाशय की बाकी है उसका भी समाधान यथा सम्भव संक्षेप से किया जाता है॥

एक बहुत बड़ा आक्षेप आप का इस कारण जाना जाता है कि भट्ट जी का लेख है कि बर्तमान समय में ब्राह्मणों में नब्बे फ़ी सदी पिशाच तुल्य हैं तथा इन्हीं के कारण से अकाल हुआ व होगा॥

इस बात के समझने के लिये बहुत अधिक बुद्धि का भी काम नहीं है। साधारण लोग भी थोड़ा समझाये जाने पर मान लेते हैं तब विद्यावान् बुद्धिमानों को शङ्का ही क्या हो सक्ती है—ब्रह्महत्या सुरापानम् के अनुसार क्या सुरा (मदिरा) पान करने वाले ब्राम्हण महा पाप के दोषभागी न हुए तब ऐसों को सिवाय पिशाच के और क्या कहें॥

यक्षरक्षः पिशाचान्नम् । मद्यं मांसं सुरासवम् के अनुसार साक्षात् पिशाच हैं वे लोग जो मदिरा मांस के सेवी हैं—क्या आपने तीर्थों की सैर की है यदि न की होतो कृपा पूर्वक बिन्ध्याचल व प्रयाग आदि के तीर्थों ब्राह्मणोंसे मिल लीजिये कृतार्थ हो जाइयेगा तथा मैथिल ब्राह्मण व बङ्गाल देश मात्र तो मद्य पान दोषके कारण ब्राह्मणत्व से च्युत होरहे हैं॥

महाशय अब अन्त में मैं इतना विशेष निवेदन किये देता हूं कि पिशाच भी अच्छे क्योंकि पिशाच तो एक प्रकार देवयोनि हैं "पिशाचो-गुह्यकःसिद्धोभूतोमीदेवयोनयः । परन्तु ये लोग उससे भी अधिक अर्थात् पशु हैं और इस बात को मैं नहीं कहता वही आप का हिन्दू धर्म के पोषक विख्यात राजर्षि श्री भर्तृहरि जी कहते हैं॥

बिद्या राजसु पूजिता नहि धनम् बिद्या बिहीनः पशुः
येषां न बिद्या न तपो न दानम् ।
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता ।
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥
साहित्यसङ्गीतकलाबिहीनः ।
साक्षात् पशुः पुच्छबिषाणहीनः ।
तृणं न खादन्नपि जीवमान ।
स्तद्भागधेयं परमम् पशूनाम् ॥

कहिये बङ्गबासी जी पिशाच व पशु होने का प्रमाण आपही के हिन्दू धर्म से निकला वा अन्य कहीं से अथवा आप का हिन्दू धर्म विशेष कोई गढ़न्त होगी—अस्तु एक भूल और प्रकाश करता हूं कि पिशाच

आदि शब्द केवल उन्हीं लोगों को कहा गया है जो ऐसे हैं किन्तु अधिकांश प्राय: सबही ऐसे आज कल हो रहे हैं—परन्तु जो लोग ब्राह्मणों में सदाचरण करने वाले हैं उनको ऐसे शब्द नहीं कहा जासक्ता—बात यह है कि वैसे लोग बहुतही कम हैं तो जिस देश में जो वा जैसे लोग अधिक होते हैं वह देश वैसाही कहा जाता है। अस्तु यदि अब भी ब्रह्मवासी न समझें तो जब तक वह भट्ट जी के सिद्धान्तों के विरुद्ध सप्रमाण कोई लेख न छापें तब तक हम लोग उनका कथन नही मानेंगे यों मूर्खों को भड़काने वाली बातें लिखने को उनकी विद्या बुद्धि वा परोपकार तथा देश हितैषिता को बिद्यावान् लोग जान लेंगे॥

जगदम्बा प्रसाद प्रयाग

हिं. प्र. बस बहुत हो चुका अब हम अपने सहयोगी का उत्तर न छापेंगे॥

—:०:—

प्राचीन इतिहास।

विद्वान् शिक्षित समाज को प्राचीन इतिहास के जानने की अधिक उत्कण्ठा रहती है—पुराने इतिहासों के पढ़ने से हम लोग प्रत्येक देशों की उन्नति तथा अधोगति का कारण तीन२ देशों के रहने वलों के समाज की स्थित, बर्ताव, चाल चलन, रीति नीति, इत्यादि को अच्छी तरह जान सक्ते हैं—केवल इतनाही नहीं बरन ऐतिहासिक उन२ घटनाओं के परिणाम पर दृष्टि रख हम अपने को बुराई से बचा सक्ते हैं और भलाई की ओर दत्त चित्त हो सक्ते हैं जैसा राम रावण का इतिहास पढ़ हमे शिक्षा मिलती है कि मनुष्य को राम के समान चलना उचित है रावण के सदृश नहीं—जो समाज कष्टित दशा में पड़ अनेक दुख उठा रही हो उसके लिये प्राचीन इति-

हास श्रौषधि के तुल्य है, ढाढ़स बंधाता है, नल तथा युधिष्ठिर का हाल पढ़ ढाढ़स मन में आती है कि क्या भया जो किसी कारण बश हमारी ऐसी दशा आगई पर नल युधिष्ठिर के समान पहले का वैभव या सुख यथा स्थित वैसाही हम फिर पासकेंगे यदि सम्हल के चलें श्रौर घबड़ा कर अपने को भूल बिगड़ न जांय—बहुत लोगों ने प्राचीन इतिहासों को धर्म ग्रन्थ मान रक्खा है जैसा हिन्दुश्रों में महा भारत श्रौर रामायण इत्यादि—यहूदियों का इतिहास बइबेल के नाम से प्रसिद्ध है जो ईसाइयों की धर्म पुस्तक है—सयाम देश के शिक्षित लोग प्राचीन इतिहास की पूजा करते हैं—मुसल्मानो में प्राचीन इतिहास हदीफ़ की इज्ज़त वैसाही करते हैं जैसी कोरान की—सिक्खों के ऐतिहासिक ग्रन्थ की पूजन अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर में नित्य होती है। हज़ारो मन कड़ा प्रसाद साल में भोग चढ़ता है—रोमनकेथोलिक भी बइबिल को जो उनका धर्म ग्रन्थ समझा गया है लोहबान की धूप देते हैं, मरियम श्रौर ईसा की तस्वीर के बराबर की इज्ज़त उसे भी देते हैं—पलिटक्ल परिज्ञान का प्राचीन इतिहास एक मात्र अवलम्ब है बिना जिस्के जाने हम को मुल्की मामिलों में हाथ डालना निरा लड़कपन है—ह्यूम साहब कहते हैं छोटे को बड़ा बनाने के लिये इतिहास एक महा मंत्र है—राजा सरटीमाधवराव भी बहुधा कहा करते थे इतिहास कल्प वृक्ष के समान है जिस्से हम धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पदार्थ पा सक्के हैं अर्थात् इसमे ऐसे२ उदाहरण पाये जाते हैं जिनके नमूने से हम यथा रुचि उन२ महा पुरुषों के चरित्र को पढ़ वैसाही अपने को भी बना सक्के हैं—प्राचीन इतिहासों के पढ़ने की विशेष रुचि वहीं होती है जहां देशानुराग का अंकुर लोगों के जी में जमा हुआ होता है—देश में जो२ महा पुरुष हो गये हैं उनका हाल पढ़ अपने देश पर उनकी ममता श्रौर छोह अधिक२ होता जाता है

प्राचीन इतिहासों में जो पुण्य श्लोक महात्मा नल, राम, युधिष्ठिर सरीखे हुये हैं उनका वृत्तान्त पढ़ अवश्य एक तरह की शिक्षा मिलती है—उसी तरह पर नादिर औरंगज़ेब सरीखे ज़ालिमों का हाल पढ़ भी वही शिक्षा मिलती है कि बुराई का परिणाम अवश्यक नाशकारी है—दूसरी शिक्षा यह भी मिलती है कि जो एक बार सब से ऊंचे पद पर पहुंच गये हैं उनका पतन भी होता है रोम राज्य अपने उन्नति के शिखर पर चढ़ ऐसा गिरा कि नाम भी न रह गया—संसार से विरक्ति और घिन पैदा करने का पुरातन इतिहास बड़ाही उमदा लटका है जिससे यह साफ़२ प्रगट होजाता है कि आवागमन जन्म मृत्यु सब क्षणिक है जो आया है सो जायगा ज़रूर सदा स्थिर कुछ या कोई नहीं रहा "मान्धाता स महीपतिः कृतयुगे लंकार भूतोगतः" मान्धाता रघु दिलीप ऐसे राजा सिकन्दर ऐसे विजयी कालके कलेवा होगये मुकर्रर वक्त से एक मिनिट ज़ियादह न रह सके तब इस क्षणिक जीवन या ऐहिक पदार्थों के लिये पारमार्थिक चिन्ता की ओर ध्यान न देना बड़ी भूल है—नलिनी दल गत जलवत् तरल संसार के सकल पदार्थों पर बुद्धिमानो की तब ममताही क्या—प्राचीन इतिहास न होते तो यूनान के सात अद्भुत पदार्थों की Seven wonders of the Greeks. को कौन जानता ——इसी तरह पर विष्णु का सुदर्शन चक्र, इन्द्र का वज्र, अर्जुन का गाण्डीव धनुष, शिव जी का त्रिशूल, आदि कभी चिरस्मरणीय न रहते——कोर्थेज निवासी हानिवाल तथा बोनापार्ट की वीरता की कौन प्रशंसा करता——रोचक तथा भयानक के द्वारा संसार का ये इतिहास कितना उपकार कर रहे हैं——भयानक तथा मद्यपान की अधिकाई से यदुकुल का संहार और द्यूतव्यसन में युधिष्ठर को राज्य च्युत हो १४ वर्ष का वनवास न दिखलाया गया होता तो हम समझते कोई भी द्यूत और मद्यपान आदि बुराइयों से न

बचला—इसी तरह पर सौशील्य सौजन्य सत्य दया आदि उत्तम धर्मों के दृष्टान्त शिव दधीच हरिश्चन्द्र के दृष्टान्तों से कितना अधिक दिखलाया कि वे उत्तम गुण इस कराल काल में भी रह गये और लोगों में ऐसे२ उत्तम उदाहरण उनके पाये जाते हैं कि उन२ महात्माओं का चरित्र देख या सुन अचरज होता है कि क्या अब भी ऐसे महानुभाव संसार में अभी विद्यमान हैं—इत्यादि इतिहास के उत्तमोत्तम गुणों के वर्णन का केवल दिक् प्रदर्शन मात्र यहां किया गया है लिखने वाले इस्पर और बहुत कुछ लिख सक्ते हैं—जो कुछ यहां पर लिखा गया वह बहुत संक्षिप्त है इसी को जितना चाहे पल्लवित करता रहे—

हरिमंगल मिश्र॥

सामयिक।

हम लोगों की शोचनीय दशा आज कल बिचारने के लायक है—जैसा आंधी का आगम होता है—आकाश में जब आंधी बहुत दूर रहती है तभी से प्रगट होने लगता है—यही हाल इन दिनों हमारा हो रहा है—हम लोगों को दोष लगाया जाता है कि हम लोग सावधानी से नहीं लिखते कर्मचारियों के काम को दूषित करते हैं उनके कामों पर अपनी अनुमति धृष्टता, बेअदबी, और गुस्ताख़ाना तरीके पर देते हैं—इससे हम राजविद्रोह की आग को भड़काते हैं—याद रहे कि जो२ फ़ायदे हमको इंगलैण्ड से पहुंचे हैं सब से बड़ा फ़ायदा यह है कि हम में सोचने या बिचारने की शक्ति पैदा करदी गई है—क्या पहले भी हम ऐसेही सोचते या बिचारते थे? हरगिज़ नहीं—क्या विद्या का प्रचार पहले भी हम लोगों में ऐसेही था जैसा अब है? कभी नहीं—यदि यह ठीक है तो अभी हमको अच्छी तरह लिखने कहां से आया जैसा इङ्गलैंड के पत्र सम्पादकों में है अभी तो हम उसमें बिल्कुल दूध मुहे बालक के समान हैं॥

प्रिय पाठक! हम लोगों में भी जाति होती है आप जानते हैं हर एक जाति के लोगों में काम अलग २ होते हैं—जिस चीज़ की ज़रूरत होती है उसके लिये आप वैसी दूकान में जाते हैं; मसलन आप को चीनी खरीदना होगा तो आप नमक बेचने वाले की दूकान पर चीनी खरीदने न जांयगे—ऐसाही जिस तरह का विषय आप देखना चाहते हैं या जिस तरह के विषय पढ़ने की आप की रुचि है उसी प्रकार का पत्र भी आप चाहेंगे—इसी नगर में एक हमारे भाई पायोनियर हैं जब आप को हिन्दुस्तानियों का दोष दिखलाना हो या उन में ऐब या बुराई ढूंढ़ना हो पायोनियर उठा लीजिये और पढ़िये, अथवा आपको देशी लोगों की छीट उड़ाना हो या उनके बिरुद्ध कुछ लिखना हो जिससे उनकी हंसी होती हो और वे बेवकूफ़ बनाये जाते हों आप अपना लेख उसमें दीजिये पायोनियर आप का लेख अवश्यही छापेंगे वरन नमक मिर्च लगाय उसे और भी लज्ज़तदार कर दें तो तअज्जुब नहीं—एक हमारे दूसरे भाई हिन्दुस्तान की राजधानी कलकत्ता में अमृत बाज़ार पत्रिका हैं—जो आप को इङ्गलैंड के लोगों का छिद्र देखना हो तो उसे मंगाइये और पढ़िये—क्या ये दोनों पत्र जो लिखते हैं और अलग २ अपनी राय देते हैं कोई ऐब की बात है? कभी नहीं, जो पालिसी इन दोनों ने ग्रहण किया है वही उनके जाति का कर्म है—अपना २ स्वाभाविक कर्म करते हैं तो इसमें कौनसी हानि है और यह तो आप जानही गये कि ये दोनों दो जाति के हैं आपस में बिरुद्ध हैं सहमत कभी होही नहीं सक्ते—यहां तक कोई बड़ा ऐब नहीं है कि पायोनियर अमृत बाज़ार पत्रिका को बुरा कहै और अमृत बाज़ार पत्रिका पायोनियर को किन्तु उनका लेख झूंठ और न्याय बिरुद्ध न होना चाहिये—अब रहा राजद्रोह सो यह निश्चय रहै कि देशी पत्र अंगरेज़ कर्मचारियों को मारे डर के इस लिये नहीं लिखते कि पिनल-

फोड़ तो एक ओर रहैं मेजिस्ट्रेट साहब का ज़रा सा इशारा काफ़ी हैं-अंगरेज़ी राज्य को और उनके शासन प्रणाली को हम अपने मतलब से बुरा नहीं कहते जो२ फ़ायदे इससे हुये हैं और हो रहे हैं वह प्रति क्षण और सब ठौर हमारे सामने हैं-तरक्की कदम बढ़ाये तेज़ घोड़े की चाल के समान आगे को बढ़तीही जाती है न बिश्वास हो ३० या ४० वर्ष पहले जो हम लोगों की कैफियत थी उसे आंख खोल पीछे को देखिये—इस लिये कौन ऐसा होगा कि ब्रिटिश शासन के शुद्ध न्याय मूलक उसूलों को भूल जायगा—रहा थोड़े से कर्मचारियों के हम लोगों की ओर से बुरे ख़याल सो यह अबिचार कारिता को हम तुलसीदास की इस उक्ति के अन्तर्गत मानते हैं "प्रभुता पाय काहि मद नाहीं" सर्कारी कर्मचारी अपने प्रभुता के मद में जो चाहैं सो करैं—हमारे यहां के समझदारों का यह सिद्धान्त है "आंधी आवै बैठ गंवावै" यह एक सामयिक झकोर आंधी का हम हम लोगों पर आगया है—उचित है उसे शान्त भाव से सहलें जहां तक सावधानी से चलते बन पड़े चलैं और ब्रिटिश शासन के शुद्ध न्याय मूलक उसूलों की माला सा जपते रहैं-एक दूसरी बात का लक्ष्य यह भी रहना चाहिये कि हम कितनाही बढ़ गये हों फिर भी यह न भूलें कि हम उनके मुकाबिले उनकी प्रजा हैं और वे उसी दरजे के लोग हैं जिनको हमारे निग्रहानुग्रह में सर्वतोमुखी प्रभुता प्राप्त है तब हमारी और उनकी बराबरी क्या—नवशिक्षित कतिपय युवकजन हमारी इस बात को चाहो पसन्द न करें पर कहते हैं हम लाख टके की बात-जो इस सिद्धान्त से नहीं हटे हुये हैं उनका यह सामयिक झकोर कुछ नहीं कर सक्ता न ऐसों के लिये इस प्रेस ऐक्ट का जन्म होने वाला है-एक बात और मन में आती है कि बिलायत की ब्रिटिश कमेटी अवश्य इसके रोकने का प्रयत्न करैगी, सिवा उनके जो इंडिया के ओर से ब्रिटिश कमेटी

के मेम्बर हैं विलाइत के बहुत से लोग उदार प्रकृति के पड़े हैं जो केवल न्याय के खयाल से निःस्वार्थ हिन्दुस्तान का पक्ष कर रहे हैं—उनका जहां तक बश चलेगा इस कानून को नहीं जारी होने देंगे इतने पर भी यदि दैवही हमारे प्रतिकूल है और वास्तव में हमारे बुरे दिन आये हैं तो लाचारी है ॥

बंगाली ।

इंगलिस्तान के सुप्रसिद्ध इतिहास लेखक मेकाले साहब बंगालियों के विषय में लिखते हैं-शारीरिक गठन बंगालियों की अत्यन्त सुकुमार होती है-वे सब कार्मों में ढीले होते हैं, अंग प्रत्यंग कोमल और चेष्टा उनकी म्लान होती है। प्राचीन काल में यह जाति अनेक अधिक साहसी और बीर लोगों के बश रह चुकी है—साहस, स्वतंत्रता, सत्यशीलता आदि गुण इस जाति की प्रकृति और दशा के बिरुद्ध हैं। उनका भीरुचित्त भी उनके शारीरिक गठन के अनुसार है—यहां तक डरपोक होते हैं कि वे निज पुरुषार्थ से अपने शत्रु को कभी नहीं रोक सके—बलवान् के मुकाबिले निर्बल को अपनी रक्षा करने की युक्तियां जैसा बंगाली जानते हैं वैसा दूसरे लोग नहीं-जैसा भैंसे को सींग, बाघ को पंजा, मधुमक्खी को डंक, और स्त्रियों को सौन्दर्य दूसरों के बेधने और डंसने को एक स्वाभाविक ऐसा शस्त्र है जो उनके अंग में बर्तमान् है वैसाही बंगालियों में धूर्तता है-बड़ी२प्रतिज्ञा करना, चिकनी चुपड़ी बातें कहना, मिथ्या गढ़न्त की बातें सोचना, कपट, झूठी कसम, कृत्रिम लेख (जालसाज़ी) इत्यादि गङ्गा की नीची धार के तीर पर बसने वाले मनुष्यों के प्रहार तथा अस्त्र हैं जिनका प्रयोग कर वे अपने को बचाते हैं—बंगाल के कई करोड़ निवासियों में एक भी सरकारी सेना में भरती नहीं पाये जाते पर दल्लाली, शर्राफी, कानूनी, वकालत आदि कामों में और जाति वाले बहुत कम उनकी बराबर के हैं—यद्यपि

देखने में नम्र होते हैं पर बंगाली बैर को नहीं भूलते और न दया भाव इन्हें याद है—कितनाही अध्यवसाय और स्थिरता या दृढ़ता से वे अपने काम में लगे हों केवल तात्कालिक भय दिखलाने से उसे छोड़ बैठते हैं—और कभी२ ऐसे साहस के काम दिखलाते हैं कि बड़े२ शूरवीर अथवा राजा लोग भी उसे न कर सकेंगे वे विपत्तियां जिस्का रोक नहीं है चुप चाप धीरज के ये साथ सहलेते हैं इत्यादि—

आश्चर्य है कि मेकाले साहब जिसके लिखे हुये इतिहासों की प्रशंसा मुक्तकण्ठ हो सब कोई करता है बंगालियों के विषय ऐसी अपनी अनुमति प्रकाश करें—कदाचित् जिस समय मेकाले हिन्दुस्तान में आये उस समय उन्हें दुश्चरित्र बंगालियों के बीच रहना पड़ा और उन्हीं के साथ अधिक घृष्ठ पृष्ट रखना पड़ा अथवा बंगालियों के किसी द्वेषी ने उनका कान भर दिया हो जिससे बंगालियों के विरुद्ध अपनी लेखनी उन्हें चलाना पड़ा—यह मेकाले जिसने वारेनहेसटिंग उस समय के गवर्नमेंट जेनरल का इतिहास लिखा है बहुधा इंगलैंड के विद्वान् उस्पर दोषारोपण करते हैं जैसा रोहिल्लों के प्रकरण में सर आलफ्रेड लायल आदि लोगों ने उस्की भूल पकड़ा है इससे सिद्ध होता है इसने बहुतसा अपने मन का आन तान लिखडाला है—पहले पहल जब अंगरेज़ों का राज्य भारत वर्ष में स्थापित हुआ था उस समय का हाल देखना चाहिये कि राज्य पाके अंगरेज़ों ने बंगालियों के साथ कैसा बर्ताव किया है—जिस समय वारेनहेस्टिंग गवर्नर जेनरल नहीं हुआ था बरन सिर्फ़ कौंसिल का मेम्बर होकर कलकत्ते में रहा था उस समय बंगालियों की क्या दशा थी—मेकाले साहब स्वयं लिखते हैं कि क्लाइब के पहले और दूसरे के राज्य प्रबन्ध का समय ऐसा नाज़ुक था कि इस समय ईस्टइंडिया कम्पनी के ऊपर जो २ दोष लगाये गये उस अपयश का धब्बा अनेकों वर्ष तक न्याय और सभ्यता के साथ राज्य करने पर भी न छूट सकेगा—

गवर्नर वेन्सिटार्ट कम्पनी के इस नये राज्य के मुखिया थे—एक ओर तो चतुर साहसी और लालची अंगरेज़ अधिकारी लोग थे दूसरी ओर निःसहाय डरपोक दब्बू बंगाल के निवासी थे—बलवान् जाति से निर्बल जाति के बाधा हटाने को क्लाइव ने तन मन से परिश्रम किया था—वेन्सिटार्ट सोचते तो अच्छा थे पर निर्बल और अयोग्य अधिकारी थे—ऐसा मालूम होता है नीचे के कर्मचारी इससे नहीं डरते थे और जैसा चाहते थे अपने मन की कर गुज़रते थे—उस समय के प्रबन्ध में जैसी अनीति थी उसके बिरुद्ध इन निर्बल असाहसी बंगालियों को झगड़ना असंभव था, मानो भेड़िये के साथ भेड़ों का शिर उठाना था—अंगरेज़ी राज्य का स्वास्थ्य पीछे से इन बंगालियों को मिला—पहले पहल कम्पनी का राज्य यहां अंगरेज़ी राज्य के मामूली अदल इन्साफ़ और सुचाल के साथ नहीं प्रारंभ हुआ था—जब हम लोगों ने उन्हें अपनी प्रजा समझा और जब यह सोचने लगे कि हमें उनके साथ अपने अधिकारी के समान बर्तना चाहिये इन दोनों समयों के बीच कुछ अन्तर भी था—उस समय के कम्पनी के नोकरों का मुख्य कार्य यही समझा जाता था कि जितना जल्द हो सके यहां की प्रजा से लाख दो लाख रुपया उगाह के यहां की अत्युष्ण वायु के कारण रोग ग्रस्त न हो जाने के पहलेही अपने घर को लौट जांय—किसी कुलीन की बेटी से व्याह कर विलाइत की ठंढी हवा में आनन्द से दिन काटें—इससे स्पष्ट जान पड़ता है कि उस समय के अंगरेज़ कर्मचारी और बंगाली भी जो कम्पनी की नौकरी में थे प्रभुता पाय निपट अत्याचारी हो गये थे उन्हें बंगाल की दीन प्रजा पर बहुत कम दया थी—इसी कारण विलाइत के किसी २ न्यायशील सज्जन के मन में दया आई जिन्हों ने विलाइत में लौट एडमंडबर्क के कान भर दिये होंगे जिस से उसने हेसटिंग के विरुद्ध ७ वर्ष लों पार्लियामेंट में वक्तृता दी—संभव है बंगाली लोग

वास्तव में निर्बल हीं पर मेकाले साहब जैसा उनके बारे में लिखते हैं वह सब बात का सत्य होना असंभव जान पड़ता है—क्या अंगरेज़ों की यह ज्ञात न था कि कि भारत वर्ष का राज्यधिकार उन्हीं ने बंगालही से प्रारंभ किया है—तो अब बंगाल के निवासियों का आदर छोड़ निरादर करना कौनसा न्याय था—अंगरेज़ी राज्य का विस्तार बङ्गाल देशही के कारण हुआ है-सब से पहले वहीं के रहने वाले अंगरेज़ों की आधीनता स्वीकार कर उन्हें यहां का राजसिंहासन दिया-अंगरेज़ी राज्य लक्ष्मी का सब से पहले वहीं के लोगों ने वरण किया और उनकी वाणिज्य सम्पति को बाज़ार से घर के अंगने तक बड़े आदर के साथ लेगये-अंगरेज़ों की चाल चलन का अनुसरण भी हिन्दुस्तान में पहले पह बङ्गालियोंही ने किया—ऐसे बङ्गालियों की संख्या बहुत कम है जिन्हों ने अंगरेज़ी न पढ़ा हो और अंगरेज़ी सभ्यता का कुछ हिस्सा न लिया हो-अपनी शक्ति और भक्ति के अनुसार बंगदेशी अंगरेज़ों की सेवकाई करते हैं उनके साथी और सहायक हैं—लेखनी के द्वारा लेख लिखने की चतुराई बंगालियों में अंगरेज़ों से किसी तरह अल्प नहीं है-इस समय जो समस्त भारत वर्ष अंगरेज़ों के हाथ में है ब्रह्मा देश भी अधिकार में कर लिया गया है इस सब का आरंभ बंगालियोंही ने कराया है-इन सब बातों का विलाइत के लोगों को बंगालियों का कतज्ञ होना चाहिये॥

अब बंगालियों की उन्नति की ओर ध्यान देना चाहिये। पहिले भाषा और साहित्य के विषय में देखिये। बंगाली भाषा में कितने ग्रन्थकार हो गये हैं। कितने समाचार बंगभाषा में प्रति वर्ष छपा करते हैं। बंगभाषा तो मेरे समझने में अरबी फारसी आदि एशिया की सब भाषाओं से उत्तम है। जिसकी उन्नति अत्यन्त शीघ्र हो गई। बंगालही में कृष्णदास पाल, राजेन्द्रलाल मित्र, मधुसूदन माइकेल, बङ्किमचन्द्र

चटर्जी, विद्या सागर आदि भाषा के अनुत्तम लेखक हुये हैं, इससे सिद्ध होता है कि बंगालियों ने अपने भाषा की कैसी उन्नति की । अंगरेज़ी सभ्यता की कोई ऐसी बात न होगी जो बंगालियों ने न पकड़ी हो । जितने इतिहास, नाटक, काव्य, साहित्य आदि ग्रन्थ अंगरेज़ी में हैं सब की छाया बंगभाषा में आ चुकी है ॥

धन में बंगालियों को देखिये कि कैसे धनवान् और मुक्तहस्त हैं । जगत् सेठ बंगालही का निवासी था ॥

बम्बई तथा पश्चिमोत्तर प्रदेश में जिसकी धोती घुटने तक की हो, जो तीन आने का जूता छः आने का कुर्ता पहिन के निर्बाह करते हैं बहुधा धनी और सुसम्पन्न समझे जाते हैं और स्वभाव तो उनका विचित्रही होता है वे सब औरों से अपनी प्रशंसा चाहते और चापलूसों से प्रसन्न रहते हैं । पर बंगालियों में ऐसा नहीं है कैसा भी दीन बंगाली क्यों न हो पर उचित व्यय करैहीगा । कंजूसी तो बंगलियों में छू नहीं गई है ॥

इसी प्रकार से औरभी कई गुणों में बंगाली भारतवर्ष के और प्रान्त के निवासियों से शतगुण अच्छे हैं ॥

हरिमङ्गल मिश्र

विज्ञप्ति ।

हमारे कृपालु पढ़ने वाले जिन्हों ने समय पर उपस्थित न होना आदि हमारे दोषों पर कुछ ध्यान न दे हमारे यत्किंचित् गुणों को बहुत मान अब तक हमारा आदर करते रहे-जिनके सम्मान पूर्वक सहारा देने से हमने २० वर्ष पार कर दिया उन सज्जनो से विनय पूर्वक विज्ञप्ति है कि पत्र का मूल्य जिनसे जो कुछ निकलता हो भेज हमें अनुग्रहीत करें-वर्ष पूरा हो गया है छपाई का हिसाब चुकता कर हम एक बार हलके हो जांय तो समय से आप लोगों से मिलने की चेष्टा करें-किमधिकम् विज्ञवरेषु ॥ इति ॥

हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक ..वार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २१ सं० १--२ } प्रयाग { सितम्बर अक्तूबर १८९७ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥≡)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १।=)

नमूने की कापी =)॥

१-११-९७

हिन्दीप्रदीप

जिल्द २१ संख्या १ । २ } प्रयाग { सितम्बर । अक्तूबर सन् १८९७ ईसवी ॥

हमारा इक्कीसवां वर्ष ।

अखिल का अलख अगोचर चराचर का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता, सर्वेश सर्व नियन्ता सर्वात्मन्, परात्पर परेश परमेश्वर का धन्यवाद है जिस्की अमृत संजीविनी पीयूषवर्षिणी कृपा दृष्टि से हम बीसवां वर्ष समाप्त कर आज इक्कीसवें में पांव रखते हैं । यह २० जिसे हमने पार किया गिनती के प्रधान अंकों में एक है—दरजन और कोड़ियों की गिनती में जो गिनती कोड़ियों में रक्खी गई है उस्का खातिमा २० ही से होता है—लाघव के लिये यह बीस बहुत मौके से आपड़ा है—पांच चौक २० और २० पंजे १०० ताख२ कर गिना चाहते हो तो ५ जो गिनतियों में ताख है उसे चार जगह रक्खो २० हो जायगा—जुस२ कर गिना चाहते हो तो ४ जो संख्या में जुस है उसे पांच ठौर रक्खो २० होजायगा—जिसे पांच तक भी गिनती आती है उसको सौ और हज़ार गिन लेना कुछ कठिन नहीं है—हमारे देश की सीधी सादी अपढ़ महिलायें जिनको सौ तक गिनती जानना बड़ा शास्त्र है इसी २० के सहारे जिसमें कोड़ी पूरी होती है सैकड़ों हज़ारों तक गिन लेती हैं—अब जिसमें हम प्रवेश करते हैं वह २० के भी एक आगे है ॥

इस बीस की संख्या को हमने बड़े सुख से पार किया हमारे पढ़ने वाले हम से राज़ी रहे और हम उन से—पढ़ने वाले तो यों प्रसन्न रहे कि सबेरे का भटका सांझ की भांत देर आये दुरुस्त आये—देर में हम उनकी सेवा में पहुंचे सही तौ भी पढ़ने वाले हमसे प्रसन्न रहे—और हम उन से यों राज़ी रहे कि ऐन वक्त पर न सही तो आगे पीछे हमारी सेवा शुश्रुषा का स्वल्पबेतन हमे चुकाही तो दिया—सच तो यों है कि फिर भी यह उनकी कृपा है कि ऐसे अनियमित पत्र को भी अपनी स्वाभाविक सहज उदारता से अपनियाये हैं और समय से सेवा में न पहुंचने की बुरी आदत से रूष्ट नहीं होते—अस्तु हम भी कहते हैं कि कई कारणों से ठीक समय पर उपस्थित होने की प्रतिज्ञा तो नहीं करते किन्तु हमारी क्षुद्र लेखनी से जहां तक कलम की कारीगरी बन पड़ सक्ती है उस्का ठीका अलबत्ता लेते हैं कि हम अपनी ओर से न चूकेंगे और उन्हें बिना रिझाये न रहेंगे—अजी रिझानाही कैसा उनका जी अपनी मूठी में न कर लिया तो बातही क्या रही—एक अभिलाषा हमारी और भी है कि हम अपने पढ़ने वालों की संख्या कई सौ और सहस्र नहीं चाहते सिर्फ उतनेही जितने से हम चल सकें—हां पढ़ने वाले ऐसे अलबत्ता हों जो हमारे लेख के सारग्राही हों—"ये गांहक करबीन के तुम लीनी कर बीन" हज़ारों भी हमारे किस काम के—बंगबासी से छिद्र दर्शियों की तो बातही निराली है जो गुण में भी केवल दोषही देखते हैं नहीं तो हमारे पाठकों में तो कोई एक भी हमें ऐसे न मिले जो हमारे लेख के कारण हम से असन्तुष्ट हो हमारा अपमान किया हो जैसा बंगबासी ने किया—हम समझते हैं यह बहुधा लोगों का स्वभावही है कि दूसरे का अणुमात्र भी उदय नहीं देख सक्ते—कहा भी है॥

विषमा मलिनात्मानो द्विजिह्वा जिह्मगा इव।
जगत्प्राणहरा नित्यं कस्य नोद्वेजकाः खलाः॥
अपूर्वः कोपि कोपाग्निः सज्जनस्य खलस्यच।
एकस्य शाम्यति स्नेहात् वर्द्धतेऽन्यस्य वारितः॥
खलानां धनुषां चापि सद्वंश जनुषामपि।
गुण लाभो भवेदाशु परहृद्भेद कारकः॥
बहु निष्कपटद्रोही बहुधान्योपघातकः।
रन्ध्रान्वेषी च सर्वत्र दूषको मूषको यथा॥
नौश्च दुर्जन जिह्वा च प्रतिकूल विसर्पिणी।
पर प्रतारणायैव दारुणा केन निर्मिता॥
अयः पिण्डइवोत्तप्ते खलानां हृदये क्षणात्।
पतिता इव नश्यन्ति गुणास्तोय कणा इव॥
दुर्जनो दूषयत्येव सतां गुणगणः क्षणात्।
मलिनी कुरुते धूमः सर्वथा बिमलाम्बरम्॥

अस्तु इस नये साल की खुशी में हमने मसाले दार लज़ीज़ चरपरी चटनी तैयार किया है जिसे तोहफ़ा समझ हम अपने पढ़ने वालों के नज़र करते हैं॥

चरपरी चटनी।

चटनी बनी मज़ेदार। आती खट्टे की बहार॥
चटनी बनी मेरी अनमोल। जिसमें मिले मसाले तोल॥
इसमें पड़ा अर्क पोदीना। जिसको खाते अहल मदीना॥

सब हिकमत छान बनाया। चाटे शुद्ध होय मन काया॥
इसमें मिला मसाला धनिया। जिसको खाते हैं सब बनियां॥
चटनी चाटैं एडिटर लोग। जिनको व्यापा सेडिशन रोग॥
चटनी चाटैं सन्त महन्त। फैलावैं अपना मुल्कों २ पन्थ॥
चटनी चाटैं लोग लुगाई। जिसमें पड़ी पसेरिन राई॥
चटनी चाटैं हुंडीवाल। फौरन होजावैं कंगाल॥
चटनी जब से हिन्द में आई। तब से सुस्ती आलस छाई॥
चटनी चाटैं जो ब्योपारी। पावैं रोजगार में ख़ारी॥
चटनी चाटैं हिन्दू लोग। जिनको अकिल अजीरन रोग॥
चटनी साहब लोग जो खावैं। सारा हिन्द हज़म कर जावैं॥
चटनी अमले लोग जो खाते। दूनी रिशवत तुरत पचाते॥
चटनी सबी महाजन खाते। जिससे रकम हज़म कर जाते॥
चटनी खाया है बंगबासी। पैदा हुई हसद की खांसी॥
चटनी ग्राहक जन जो खावैं। चन्दा सालों का तुर्त चुकावैं॥
चटनी ऐसी यह फैलाया। तन धन दौलत मान नसाया॥
मेरी चटनी है पचलोना। जिसको खाता स्याम सलोना॥
मेरी चटनी जो कोई खाय। मुझको छोड़ अन्त नहिं जाय॥

भारतीय पृथ्वी का प्राकृतिक परिवर्तन।

सूर्य का उदय और अस्त, पूनो की रात को पूर्ण चन्द्र का प्रकाश, शीतल और मन्द वायु की सनसनाहट, छोटे बड़े भांति २ के बनस्पति, आकाश में स्वच्छन्द उड़ते हुये रङ्ग बरङ्ग के पक्षी, खेत और मैदानों में चरते हुये चौपाये, ऊँची २ लहरों में लहराता हुआ समुद्र और बड़ी २ नदियां, सदा एक रस झरते हुये पहाड़ी झरने आदि प्रकृति के परिचित पदार्थ हैं जिन में प्रकृति देवी बिहार करती हुई प्रगट करती है कि उस्का रूप या स्वभाव परमानन्द परिपूर्ण है—हम लोग जो मनुष्य

कोटि में गिने जाते हैं और अपनी बुद्धि उद्यम और साहस के घमण्ड में फूले नहीं समाते क्षण२ में दुख और वेदना तथा ऐसे अनेक रोग शोक और चिन्ता झेलते हुये जन्म काट रहे हैं जिनका आर पार नहीं है—सहते२ गट्ठे पड़ गये हैं कितनों को तो ऐसी चमत्नक सी हो गई है कि उन्ही भांति२ के दुःख को सुख मान बैठे हैं—प्रकृति का अविच्छिन्न परमानन्द जो सदा एक रस है ठीक इसके बिरुद्ध है—वेद के समय के हमारे पुराने आर्य प्रकृति के कैसे भक्त थे और उसके आराधन में कहां तक तत्पर थे यह ऋग्वेद के अनेक प्राकृतिक सौन्दर्य के बर्णनों से स्पष्ट है—मनुष्य का मन जब प्रकृति की तन्मयता की दशा में पहुंचता है अर्थात् वाह्य प्रकृति के सौन्दर्य का दर्शन और चिन्तन इस अगाध आल्हाद से करता है कि अपनी आत्मसत्ता का भी भान तब उसे नहीं रहता—जिसका परिणाम यह होता है कि उस समय उस मनुष्य का खयाल इतना सजीव और फुरतीला हो जाता है कि बाहर के पदार्थ जो वास्तव में जड़ हैं सजीव और चैतन्य से लक्ष्य होते हैं और उसके मन में प्रकृति देवी अपनी सहज पवित्रता डाल पाप कलुषित हृदय में अपनी असाधारण ज्योति को विकसित कर ऐसे अद्भुत अदृष्ट पूर्बतत्वों का उसको स्वयं अनुभव कराने लगती है जिन तत्वों के पास पहले न कभी उसकी बाह्यचक्षु न अन्तर्गत चक्षु फटकने पाई थी—तेजस्विता ओजस्विता आदि दैवी गुण जो केवल देवताओंही के हैं मनुष्य के नहीं उनसे पूर्ण हो स्पन्दन शक्ति विशिष्ट उस्की वाक् सृष्टि उस समय बड़ीही चमत्कृत रहती है—प्रकृति की इस तन्मयता की दशा में पुराने आर्यों ने जो कुछ कहा या लिखा वही एक२ सूक्त हो गये जो कर्ण द्वारा सुनने और सुन के समझने वाले के चित्त में पहुंच एक अद्भुत जीवनी शक्ति उसमें भर देते हैं ॥

यूरोप आदि पश्चिम देश के विद्वानों के मत के अनुसार दुःख मात्र का कारण जन समूह की सृष्टि का सीमा से अधिक हो जाना है—इस विषय में कुछ कहना या लिखना स्वयं एक प्रकार का साएन्स हो गया है जिस्का नाम मेलथूसियन विज्ञान है—हिसाब लगाने से सन ८१ में जो मर्दुम शुमारी की गई उपरान्त सन ९१ जो जन संख्या की गई इस १० बर्ष में कुल आबादी का बारहवां हिस्से के लग भग मनुष्य संख्या अधिक बढ़ गई—इस हिसाब से जो परता फैलाते रहो और बराबर दस२ बर्ष का हिसाब लगाते जाओ तो १५० बर्ष में मनुष्य संख्या द्विगुण निकलेगी ३०० बर्ष में चौगुनी पाई जायगी—जन संख्या के बढ़ने का यदि यही रेट रक्खो तो चार सौ या पांच सौ बर्ष पहले अब की आबादी का आठवां हिस्सा निकलेगा। नौ सौ या हज़ार बर्ष पहले अब की आबादी का सोलहवां हिस्सा लोग संसार में रहे होंगे॥

तीन सौ बर्ष पहले शाहजहां सालगिरह के दिन रत्न और जवाहिरों से तौले जाते थे मणियों की तुला चढ़ते थे और वे जवाहिरात कंगले और भीखमंगों को बांट दिये जाते थे—मुसल्मानी सलतनत की चमत्कारी और वैभव ताज तख़ताऊस और जवाहिरों का तुलादान इत्यादि जो केवल ३०० या ४०० बर्ष पहले की बात है तो बाल्मीकि आदि कवियों का वर्णन मणिस्तम्भ मणिकुट्टिम राजसभाओं में जवाहिरों के फ़र्श को हम क्यों कर निरी कवियों की कल्पना माने—हम लोग तो बेद का समय बहुत अनादि काल का मानते हैं पर अंगरेज़ों ने उसे अधिक से अधिक ५००० नहीं तो कम से कम २००० बर्ष पहले ईसा के माना है जिसको अब इस समय ७००० बर्ष हुये—सोचने की बात है कि तब से अब मनुष्य संख्या में और मनुष्य की बुद्धि, धरती की उपज, आदि तथा देश की संपति में, कितना अन्तर हो गया है—जिस पृथ्वी में हीरा जवाहिर आदि बहु मूल्य मणि और सोना चाँदी झरोखे और दीवालों

में लगाये जाते थे वहां के लोग अब कौड़ी के लिये भी तरसते हैं–जैसा पुरुष का भाग पलटा खाता रहता है वैसाही देश का भी–तैमूर जात का गड़रिया जो तुरकिस्तान के मैदानों में दस बीस बकरियां चराया करता था कभी ख़ाब में भी यह उसके मन में न था कि २० पुश्त तक उसके घराने में राज्य रहेगा–राज्य भी कहां का कि हिन्दुस्तान ऐसे देश का उसमें भी अकबर शाहजहां औरंगज़ेब ऐसे चतुर ज़र्रार तर्रार बादशाह होंगे–इस जीर्ण जर्जरित भारत के भाग्य में यही बदा है कि जो यहां का सम्राज चक्रवर्ती हो वह तमाम दुनियां के बादशाहों की नज़र में खटकता रहे–वेद के समय के सम कालीन देश यूनान रोम मिश्र और केलडिया इत्यादि इसके साथ बराबर हिसका करतेही रह गये और दर्शन विज्ञान यहां की सभ्यता तथा धन सम्पत्ति में इसके आगे न बढ़ने पाये–अन्त में हार मान हर एक बात में इसके चेलेही बने–काल चक्र अपनी अद्भुत परिवर्तन शक्ति के ज़ोर में सब को निगल बैठा और यह बूढ़ा भारत काल के परिवर्तन के साथ जो अपने में प्राकृतिक परिवर्तन होता गया सब चुप चाप सहता गया—वेद को हटाय पुराणों ने प्रचार पाया, पुराणों को मिटाय बौद्ध आये, वे भी न रहे जैनियों ने अपना ज़ोर दिखाया, वे भी न जानिये कहां बिलाने–मुसल्मानों के समय ईरान तूरान आदि पश्चिम एशिया के देशों की निगाह में यह खटकताही रहा और इसकी किसी बात में उन्हो ने पार न पाया—उपरान्त श्वेत द्वीप निवासी देव दूत आय अब इसके नेत्र खोला चाहते हैं–नये२ विज्ञान और दर्शन के द्वारा इसका जीर्णोद्धार कर नया जीवन इसको दिया चाहते हैं–तो यूरोप के रूस इत्यादि देश खांव२ करते तेज़ निगाह से इसे देख रहे हैं और अपना कुछ बस चलते न देख दांतो अंगुली चबाते चुप रह जाते हैं॥

——०*०——

मुंशी काली प्रसाद ।

सुग्रहीतनामा महात्मा मुन्शी काली प्रसाद स्वजाति वात्सल्य के एक मात्र परमोत्तम उदाहरण हुये–पटना से दिल्ली और पंजाब तक कौन ऐसा कायस्थ होगा जो उक्त मुन्शी जी का नाम ज़बान पर आजाने से हर्ष निर्भर गद्गद् मन हो देवता और ऋषियों के बराबर की प्रतिष्ठा और इज्ज़त उन्हे न देगा–जिसने अपना सर्वस्व अपनी जाति की उन्नति के लिये दे कायस्थों में वह बात पैदा कर दी जिस्का इन प्रान्तों की और २ जातियों में सर्वथा अभाव है–अर्थात् यह कि जाति भर का एका और सहानुभूति क्या चीज़ है? एक होजाने से कौनसा ऐसा बड़ा लाभ है जो केवल जाति भर के एक होजानेही से सध सक्ता है–काली प्रसाद के आगे लोग टिकइतराय को भूल गये–टिकइत राय ने यदि कायस्थ जाति की कुछ भलाई की तो वह भलाई और उपकार उनका केवल उन्हीं के समय तक रहा–कायस्थ कुल कमल दिवाकर उक्त मुन्शी जी ने अपना सब कुछ कायस्थ जाति के अर्पण कर वह नेह डाल दिया जो कभी हिलाये न हीलैगी बरन जिससे कायस्थ कुल आचन्द्र तारक लाभ उठाता रहेगा–कायस्थ तो एक उपलक्षण मात्र हैं किन्तु द्विजाति भर काली प्रसाद की कीर्ति कौमुदी के प्रकाश का फायदा कायस्थ पाठशाला के द्वारा उठा रहे हैं–जैसा कि फीस के बढ़ जाने से अंगरेज़ी की तालीम इस समय महा महंगी कर दी गई है कायस्थ पाठशाला जो न होता और तालीम वहां इतनी सस्ती न कर दी गई होती तो गरीब लोग यहां के बिलबिलाया करते और किसी तरह अपने लड़कों को न पढ़ा लिखा सक्ते–यद्यपि यह श्री बास्तव जाति के कायस्थ थे किन्तु पाठ-शाला या अपना स्वत्व जो कुछ यह छोड़ गये उसके अधिकारी बारहो जाति के कायस्थ बराबर एक से हैं–पिता उक्त मुन्शी जी के जौनपुर

मुन्शी जी अपनी बाल्य अवस्थाही से मनुष्य मात्र की हितैषिता का परिचय कई मौकों पर दे चुके थे—इस समय जब ये सामर्थ्यवाले हुये तब अपनी जाति कायस्थों की दरिद्र और हीन दशा का खयाल इन को सब से अधिक चुभने लगा—यह कुछ मुन्शीही जी ऐसे संस्कारी जीव के सुकृत का उदय था जो ऐसे २ खयाल इनके मन में उठे नहीं तो रुपया पैदा कर हिन्दुस्तान की यह चाल नहीं है कि आत्म सुख रत और आत्म गौरव की बात को छोड़ कोई दूसरा ऐसा काम करे जो सर्वजनीन और सर्व साधारण से कुछ सम्बन्ध रखता हो—विशेष कर कायस्थ जाति के लाला लोग तो रुपया जमा कर सिवाय ऐश इशरत के और कुछ जानतेही नहीं—हां अब इन को उदाहरण में रख चाहो कोई दूसरा भी तत्सदृश हो निकले—इसी लिये कायस्थ समाचार नामक एक समाचार पत्र प्रचलित किया और बहुतसा शारीरिक परिश्रम और निज धन व्यय कर कायस्थ धर्म सभा लखनऊ में स्थापित किया—अनेक कायस्थ बिधवायें उनके धन से पलने लगीं और बहुत से अनाथ कायस्थ बालकों का पालन पोषण और उन्हे विद्या दान के प्रयत्न में लगे—कायस्थ पाठशाला जो उनके महत्व का कीर्तिस्तम्भ है उसके लिये ये निज उपार्जित ५ लाख १० हज़ार मुद्रा दे गये—अपनी स्त्री और भावज के लिये केवल २०००० रुपया दे गये जिस्का सूद उन्हे दिया जाया करे और उनका परलोक होने पर वह धन भी पाठशाले में लगा लिया जाय—जिसमें कायस्थ जाति के लड़के बहुतही स्वल्प वेतन पर पढ़ते हैं कितनों को फ़ीस भी माफ़ है और बहुत से गरीब लड़कों को किताब इत्यादि भी दी जाती है—कितनी कायस्थ बिधवाओं को मासिक वेतन दिया जाता है—उसी पूंजी में एक मद्द और भी है कि कायस्थ की लड़कियां जो धन के अभाव से न ब्याही गई हों उनका व्याह करा दिया जाय—मुन्शी जी ने केवल कायस्थोंही के साथ अपनी उदारता

प्रगट किया है सो नहीं वरन लखनऊ केनिंग कालेज ब्रेंच स्कूल उठा देने का प्रस्ताव होने पर इन्हीं ने अपने निज व्यय से बहुत दिनों तक इसे चलाया—लखनऊ इन्सटिटूट की बुनियाद डालने वाले भी यही थे—कृषि वाणिज्य उत्कर्ष साधिनी सभा के लिये भी इन्हीं ने बड़ा परिश्रम किया था यह उन्हीं की विशेष चेष्टा और उद्योग था कि लखनऊ पेपर-मिल कम्पनी स्थापित हुई जो अब उमदी तरह पर चल रही है—और लखनऊ के मिल का बना हुआ हर एक किस्म का देशी कागज सस्ते से सस्ता और उमदा मिलता है—यह मिल जो ऐसाही बराबर तरक्की करती गई तो कुछ दिनों में विलाइती कागज़ फुलिस्कैप आदि को हम भूल जांयगे—बीच में एक बार यह कम्पनी दिवालिया हो जाने को थी उस समय इन्होंहीने अपना दो लाख रुपया इसे कर्ज़ दे बचा रक्खा—इन्हीं ने पुराण और धर्म शास्त्र के अनेक प्रमाणों से सिद्ध कर दिया कि कायस्थ क्षत्री वर्ण हैं जिस पुस्तक में उन प्रमाणों का संग्रह है उस्का नाम कायस्थ एथ्नोलोजी है—इस संग्रह ग्रन्थ के निर्माण कर्ता केवल मुन्शी काली प्रसाद थे ॥

सन् ई० १८८६ में ४६ वर्ष की उमर में उक्त मुन्शी जी इस संसार से बिदा हो स्वर्ग में देवराज इन्द्र के पाहुने हुये—कन्या या पुत्र इन के कोई सन्तति न थी बिरादरी के तथा और२ मित्रों ने इन से बहुत अनुरोध किया और पिण्ड पड़े कि आप कोई लड़का गोद लें जो आप के उपरान्त सब ज़ायदात का वारिस हो पर इन्हीं ने एक न माना और लोगों को यही उत्तर दिया, "कोई एक या दो पुत्र के लिये तरसता है हमारे तो २ करोड़ २० लाख उत्तराधिकारी हैं जो हमारे बाद हमारी ज़ायदात के वारिस होंगे"—हमारे जाति भाई सब हमारे वारिस हैं तब किसी को गोद लेने की आवश्यकता क्या—काली प्रसाद को उनकी जाति वालों ने कायस्थ कुल भास्कर की उपाधि दिया है—निस्सन्देह

में सरकारी नौकर थे सही पर कोई ऐसे ऊंचे ओहदे पर न थे कि प्रसिद्ध होते—इस्वी सन् १८४० की तीसरी दिसम्बर को मुन्शी जी साहब पैदा हुये थे—छः बर्ष की उमर में पिता जी इनके फ़ारसी पढ़ने को उस समय की चलन के अनुसार किसी मख़तब खाने में बैठा दिया था वहां मख़तब के अधिष्ठाता मोलवी साहब लड़के की तीक्षण और कुशाग्र बुद्धि पर बड़े अचरज में आये थोड़ेही दिनों में ये अपने सहपाठियों में सब के आगे बढ़ गये—मोलवी साहब जो कुछ बतलाते थे उतने से सन्तुष्ट न हो और अधिक पढ़ने के सदा उत्सुक रहते थे—बाल्य अवस्थाही से इनको पुराण सुनने की अधिक रुचि रही शहर में जहां कहीं गीता भागवत या रामायण की कथा होती वहां ये अवश्य सुनने जाते—बारही बर्ष में इन्हों ने फ़ारसी में विशेष व्युत्पत्ति प्राप्त कर लिया और बालकपनेही से इनको संस्कृत पढ़ने की दो कारणों से प्रगाढ़ इच्छा थी—एक तो यह कि प्रारंभही से इनको धर्म की ओर विशेष झुकावट थी—दूसरे यह कि जब तक हम संस्कृत न जानेंगे तब तक धर्म विषयक हमारी अनेक शंका और कुतूहल दूर न होगा—एक इसका कारण और भी था कि मुन्शी जी को इसका पूर्ण निश्चय था कि संस्कृतही विद्या की भिन्न २ शाखाओं की उत्पत्ति स्थल है—उपरान्त मुन्शी जी अपनी पितृ भूमि शाहज़ादपुर जो अब इलाहाबाद से १५ कोस पश्चिम गंगा तट पर एक छोटा सा कस्बा है चले गये और वहां संस्कृत के दो पंडितों से पढ़ने लगे—थोड़े ही दिनों में सारस्वत और दो एक छोटे मोटे काव्यों को पढ़ संस्कृत में इतनी व्युत्पत्ति प्राप्त कर लिया कि मनु आदि धर्म विषयक ग्रन्थों के तात्पर्य को समझने लगे—संस्कृत प्रारंभ करने के पूर्व इन्हो ने थोड़ा अरबी भी पढ़ा था अब अंगरेज़ी पढ़ने की इच्छा इनको हुई इस लिये बनारस में जाय वहां के क्वीन्स कालेज में नाम लिखाया—वहां भी इनके पढ़ाने वाले इनकी तीव्र बुद्धि और धारणावती मेधा इन में देख इन से बहु-

तही प्रसन्न रहे—किन्तु सन् ५७ के सिपाही म्यूटिनी के बड़े बलवे के कारण इनका अंगरेज़ी पढ़ना छुट गया और अपने निज घर शाहज़ादपुर को फिर लौट आये-४० के सन् में पैदा हुये और ५७ के सन् इस्वी तक विद्या पढ़ते रहे—इस १७ बर्ष की उमर तक में मुन्शी जी साहब पारसी संस्कृत और अरबी उत्तम रीति पर जान गये और अंगरेज़ी इतनी जान गये जिस से आगे को अपना निज का काम काज तथा कोई सर्कारी नौकरी में जो काम इनको सौंपा जाय उस के लिये काफ़ी थी सच है "होन हार बीरवान के होत चीकने पात" सन् ईस्वी १८५८ में सब डिपुटी इन्सपेक्टर शरिस्ते तालीम में मुकर्रर हुये—सन् ५९ में इनको खज़ाने का काम दिया गया जिस में यहां ६४ के सन तक रहे और इस काम में इनको कई ज़िलों में घूमना पड़ा और मुन्शी जी सरकार में बहुत नेक नाम रहे तथा प्रसिद्ध होने लगे ॥

मुन्शी जी को नौकरी शुरूही से नापसन्द थी और अपने लिये कोई स्वच्छन्द जीविका की फिकिर में बहुत दिनों से लगे रहे—एक तो कोई स्वच्छन्द व्यवसाय दूसरे कायस्थ जाति बहुत बुरी दशा में आ गये हैं क्योंकर इनकी कुछ भलाई और उन्नति हो इन दो बातों का अंकुर इनके चित्त में आरंभ से था—इस लिये क़ानून पढ़ना प्रारंभ कर दिया और सन ६५ ईस्वी में वकालत की परीक्षा में उत्तीर्ण हो सरकारी नौकरी छोड़ लखनऊ में वकालत करने लगे—जिस में ये अत्यन्त विख्यात हुये जीवन पर्यन्त वकालत करते रहे और बहुत धन संचय किया—जब अपढ़ कायस्थ भी कानून में हिन्दी की चिन्दी निकाल सक्ता है और ऐसी२ बारीकियां निकालेगा कि अच्छे पढ़े लिखे को न सूझैगी तब मुन्शी काली प्रसाद से असाधारण बुद्धि शाली को उस में चमकना कौन सी बड़ी बात थी यह तो मानों उनके घर का काम था ॥

अभ्युदय वह आपही हो-एवम् पापियों को जो पाप का फल दरिद्रता आदि अनेक क्लेश भुगतना पड़ता है वह भी तुम्हीं हो—सज्जनों में जो श्रद्धा है वह तुम्हाराही रूप है—अन्त में फिर यह बहुतही अच्छा कहता है कि कुल जन प्रभव अर्थात् जो कुलीन घराने में पैदा हो नेक चलनी आदि सद्वृत्त का बोझ अपने ऊपर लिये हुये हैं वह तुम्ही हो-तुम्ही चाहो तो संसार में उस्की लाज निभती जाय मुह उजागर रहे नहीं तो उसका निभना दुष्कर है—कितनों ने निश्चय कर रक्खा है "धनेनकुलम्" जिस के पास धन है वह नीच कुल में भी जन्म ले कुलीन है किन्तु यह सिद्धान्त अदूर दर्शियों का मालूम होता है-कौलीन्य ऐसी वस्तु नहीं है जो धन से बढ़ जाती हो और निर्धनी की कुलीनता घट जाती हो बरन कुलीनता आदमी के काम पर अलबत्ता आ टिकी है-किसी निषिद्धि आचरण के पहले कुलीन अवश्य रुकेगा—जिसे दूसरा जिस में कौलीन्य की गन्ध भी नहीं है बेधड़क कर गुज़रेगा—इस से सिद्ध हुआ कि शील या वृतही कुलीनता का प्रधान अंग है॥

भारत के शासन कर्ताओं की एक उपज।

प्रिय पाठक इन दिनों सेडिशन कुछ ऐसा गले पड़ गया है कि अपने बर्तमान शासकों के सम्बन्ध में कुछ लिखना या इस विषय की कोई बात ज़बान पर लाना भी शंका का स्थान हो गया है-किन्तु हम लोगों की इतनी हिम्मत कहां कि अपने शासन कर्ताओं के विरुद्ध एक बात भी मुह पर ला सकें-बंगाल या पूना वालों की तरह हम लोगों को इस की आदतही नहीं है-उस में आज कल की धर पकड़ से तो और भी जी कांप उठा है॥

इंगलैण्डेश्वरी के पुत्रों के हम एहसानमन्द तो हई हैं अब इंगलैण्ड की कन्यायें भी हम पर अपने बुद्धि विभव का प्रकाश दिखलाने लगी हैं—और क्यों न दिखलावें महाराणी के सम्राज्य में क्या२ नहीं

हुआ केवल इसी की कसर रही—आधा भारत शिक्षा और सभ्यता के शिखर पर शारीरिक तथा मानसिक उन्नति के किस छोर तक पहुंचा इस की कुछ सीमा नहीं है किन्तु दूसरा आधा जिस को भारत का आधा अंग कहना चाहिये घूरों पर पड़ा लोट रहा है और आकाशगामी अपने आधे को देख रहा है—उस आधे से मिलने और तत्सदृश हो जाने की चेष्टा कर रहा है पर सर्वथा असमर्थ है इस लिये चुप जहां का तहां रह जाता है—यदि यह कमी पूरी न की गई और निर्बल अबलाओं को बल न मिला तो बड़े खेद की बात है ॥

इंगलैण्ड की एक गौरांगिनी ने पायोनियर में अपनी बहिनों को बहुत डांटा है और न्याय पूर्वक लिखा है कि यदि आप लोग चाहो तो बहुत जल्द हम अपनी भारतवर्षीय बहिनों को सुशिक्षा के आभूषण से आभूषित कर सक्ती हैं और यह होजाय तो यह इंगलैंड के महत्व और बड़प्पन का ऐसा अतिशय प्रकाशक होगा जिसके मुकाबिले जितनी प्रशंसा इंगलैंड की आज तक हुई कुछ भी नहीं है—सोचने की बात है कि जितनी फिकिर इंगलैंड के न्याय शील राज्य प्रबन्ध कर्ताओं ने भविष्य पिताओं के सुधारने की की है उस्की चौथाई भी जो भारत की भविष्य माताओं की भलाई की किया होता या अब भी करते जो शिक्षा के द्वारा अति सुगम है तो यह भारत भी नन्दन बन के सदृश हो कुछ और का और हो गया होता और जिस के फूल की सुगन्धि इंगलैंड क्या बरन और २ सुसभ्य देश या जाति के बड़े २ दिमागों को अचंभित कर देती—क्या एनीबिसेंट या जार्ज इलियट यहां नहीं जन्म ले सक्तीं—अथवा मैत्रेयी लीलावती विद्याधरी सरीखी बिदुषी हुई नहीं—किन्तु विद्या का प्रचार न होने से अब तत्सदृशी विद्यावती का जन्म लेना यहां बन्द हो गया—सच है ईश्वर ने केवल भारत वर्ष के उद्धारही के लिये इंगलैंड को इतना बल पौरुष तथा अभ्युदय दिया है—

ये यथा नाम तथा गुण थे भी जिनके जन्म धारण से कायस्थ कुल पवित्र और उज्वल हो गया—धन्य वह पृथ्वी जहां यह पैदा हुये, धन्य उस मा की जिस ने ऐसे सत्पुत्र को गर्भ में धारण किया—ऐसे लोग यदि दीर्घ जीवी होवे तो न जानिये कितना उपकार सर्व साधारण का इन से होता किन्तु हिन्दुस्तान ऐसे अभागे देश का कहां ऐसा भाग्य जो ऐसे लोग जन्म धारण कर चिरायु हों ॥

कौलीन्य और सद्वृत।

नकुलं वृत्तहीनस्य प्रमाण मिति मे मतिः।
अन्त्येष्वपिहि जातानां वृत्तमेव विशिष्यते ॥

ऊपर का श्लोक कुलीनता का लक्षण सद्वृत्त को कहता है—अन्त्यज जाति में भी पैदा हुआ हो और नेक चलन है तो वही कुलीन है—हम को भी कुछ ऐसाही समझ पड़ता है कि अभिजात्य या कुलीनता केवल नेक चलनी है जिस में चलन नहीं है उसे कुलीन कहते हमारी जिह्वा संकुचाती है—बल्कि यह कहना अनुचित न होगा कि कुलीनता की कसौटी शील या वृत्त है—अनेक ऊंची नीची संकीर्ण दशा में पड़ कसे जाने पर जो ठीक उतरा वही कुलीन या खानदानी है—इसी से बहुदर्शी विद्वानों ने निश्चय किया है ॥

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद्वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ॥

जो धन से हीन है वह दरिद्र नहीं है किन्तु जिसमें वृत्त नहीं है वही दरिद्र है—इसी से वृत्त की रक्षा अवश्य करे धन की कौन आता है चला भी जाता है—रुपया पैसा हाथ पांव की मैल है पर चलन से जो दगीला हो गया उस्का शिष्ट भले लोगों में यथोचित आदर पाना

बहुत कठिन है-इसी से प्रमाणिक पुरुष संसार के अनेक क्षुद्र सुखों को लात मारते हैं-निर्धनता के कारण बहुत तरह का क्लेश झेल जाते हैं किन्तु अनुचित काम जो उनके पद या प्रतिष्ठा के प्रतिकूल हैं उसे नहीं किया चाहते-सिद्धान्त है "नशयानःपतत्यधः" गिरा क्या गिरेगा गिरने का डर उसी को रहता है जो ऊपर को चढ़ा है-जो मैला कपड़ा पहिने है उस को जहां तहां मैली जगह में बैठते जरा संकोच नहीं होता वैसाही जो चलन में एक बार दगीला हो गया वह आगे को बेशरम हो फिर शील पालन की फिकिर कुछ कभी उसे नहीं होती-जैसा जो एक बार चोरी में पकड़ गया और सज़ायाफ़्ता हो जेल काट आया तो उसके आंख का पानी ढरक जाता है फिर दोबारा जेल में जाते कभी नहीं संकुचाता

यथाहि मालिनै वस्त्रै र्यत्र तत्रोपविश्यते ।
एवं चलित वृत्तस्तु वृत्त शेषं न रक्षति ॥

इस लिये बिचार दृष्टि से देखो तो यह आभिजात्य या शिराफ़त बहुतही नाजुक चीज़ है—थोड़ी २ बातों में इसके बनने बिगड़ने का डर समाया रहता है—बल्कि यहां तक बारीक और सूक्ष्म है कि इस का निभना सर्वथा अपने बश की बात न देख कुल जन प्रभव की रक्षा को एक अद्भुत शक्ति मान चण्डी पाठ वाला भगवती का एक रूप इसे मान प्रार्थना और स्तुति करता है ॥

याश्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः। श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नतास्मि परिपालय देवि विश्वम् ॥

भगवती जो तुम सुकृती मनुष्यों की स्वयं श्री हो अर्थात् "सुकृत" सत्कर्म करने वाले मनुष्य को उस के सत्कर्म का फल जो श्री अनेक

वह दयावती गौरांगिनी देवी ने जिसके मन में यह विमलभाव उदय हुआ है अपना लेख इस तरह पर समाप्त किया है कि जो हाथ पालने को झुलाता है वही इस समय संसार पर प्रभुता कर रहा है:—

"The hand that rocks the cradle rules the world"

बिजया दशमी।

हिन्दुओं में जैसा चार बरण हैं उसी के अनुसार साल के चार तेवहार भी रक्खे गये हैं सलीनो, दशहरा, दिवाली और होली—पहिला सलीनो जिस को अब इस समय भीखमंगे ब्राह्मणों ने अपनियाय लिया है किसी समय ब्राह्मण मात्र के बड़े उत्सव का हेतु था—शुद्ध सतोगुण के अनुसार १० महीने तक ब्राह्मण और ऋषि बालक अपना पठन पाठन समाप्त कर उस दिन एक २ अध्यापक अपने २ छात्र समूह को साथ ले शूद्र आदि हीन जाति को वेद प्रयुंजन या उनके वेद पाठ में मात्रा-च्युत बिन्दुच्युत आदि अशुद्ध पाठ के दोष के निराकरण निमित्त साधारण प्रायश्चित्त पूर्बक अपने पूर्बज ऋषियों का बंश बर्णन कर उनका तर्पण करते हैं—फिर दो मास तक पठन पाठन में अनध्याय मानते हैं—ठीक उसी तरह जैसा इस समय सालाना इमतिहान के उपरान्त अब स्कूल और कालेज़ों में छुट्टी होती है—श्रावण की पूर्णमासी को इस लिये यह रक्खा गया है कि तब तक मे बर्सात का नया पानी पाय यज्ञ की अंग उत्तम औषधियां कुशा इत्यादि पैदा हो जाते हैं और पुष्ट पड़ जाते हैं—जैसा ब्राह्मण इस समय सब भांत हीन हो गये और दबते जाते हैं उसी तरह यह श्रावणी कर्म और सलीनो का तेवहार भी बहुतही बेरौनक सा हो गया है—श्रावणी कर्म में प्रवृत्त ब्राह्मण उसके अयोग्य अपने को मान बहुत कम देखने में अब आते हैं—दक्षिणा के लिये गलियों में भीड़ की भीड़ दौड़ते हुये अलबत्ता वैसाही देखे जाते हैं जैसा ग्रहण लगने पर कंगलों की भीड़ उरगा २ पुकारते दौड़ती है॥

दूसरा दशहरा या विजया दशमी है—यह राजसी और क्षत्रियों का तेवहार है सो जब क्षत्रीही देश में न रहे तब उन के खुशी मनाने के पर्व दशहरा की कौन कहे—असलीयत तो इस्की भी अब जाती रही आभास मात्र को जैसा क्षत्री देश में रह गये वैसाही यह तेवहार भी उसी तरह केवल आभास मात्र को बच रहा है—अस्तु अब यह दशहरा १५ दिन पितृ पक्ष के बहुत से संयम के उपरान्त मन बहलाने के ढंग पर निरा तमाशा समझा जाता है—राजवाड़ों में चाल है कि इस दिन वे अपनी २ सेना घोड़ा हाथी सबों को साज बड़े धूम से निकलते हैं और नगर प्रदक्षिणा करते हैं-जो जिस लायक है वैसा दरबार कर भेट और नज़र के उपरान्त मुलाज़िम और राज कर्म चारियों को इनाम एकराम खिलत आदि देते हैं—इस से उपकार यह होता है कि यद्यपि इस अंगरेज़ी राज्य की शान्ति में इन राजाओं को हथियार का कोई काम न रह गया तौभी इसी बहाने एक दिन के लिये उन्हें नाम मात्र को क्षत्री बन जाना पड़ता है और उन हथियारों का जो साल भर बेकाम पड़े रहते हैं फिर से यत्किंचित् पुनः संस्कार हो जाता है—सिकली इत्यादि के द्वारा मुरचा उनका साफ़ कर दिया जाता है और उन्हें काम में लाने का बिल्कुल अभ्यास नहीं भूल जाता—महाजनों में बहुतेरों के यहां इस दिन अनपूछा दिन समझ नया काग़ज़ किया जाता है—साल भर के आय व्यय का ब्यौरा लगा कर उन महाजन या व्यौपारियों को अपने नफा नुक़सान का पता लग जाता है और उसी के अनुसार आगामी बर्ष के लिये वे अपने व्यौपार का रूपक बांधते हैं—और दो तेवहारों की अपेक्षा इस में एक यह भी बड़ा गुण है कि यह होली के समान मादक द्रव्य के सेवन से लोगों को तामसी नहीं बना देता न दिवाली के भांत जुआ खेला देवालिया कर देता है ॥

एक बात इस दशहरे की रामलीला है जो इस समय क़रीब कुल हिन्दुस्तान में बड़े२ शहरों के सिवाय छोटे कसबे और दिहातों में भी की जाती है-भारतवर्ष मात्र के परम पूज्य महाराज रामचन्द्र इसी योग्य हैं कि उन के चरित्र की उद्धरनी प्रतिबर्ष की जाय-जिस से यह बड़ा लाभ है कि श्री रामचन्द्र का चरित्र जितना आदि से अन्त तक उपदेश से पूर्ण है उतना किसी का नहीं अफसोस कि प्रति बर्ष श्री रामचन्द्र का चरित्र नया और ताज़ा होने पर भी किसी के मन में नहीं धसती कि रामचन्द्र का एक पत्नीव्रत क्या वस्तु है—रामचन्द्र के एक पत्नीव्रत का ज़रा भी लोग खयाल करते तो अनेक तरह के व्यभिचार और बेश्या संसर्ग काहेको हिन्दुस्तान में क़दम जमाये रहता-इसी तरह लक्ष्मण और भरत की भ्रातृ भक्ति पर जो लोग खयाल करते तो कितना आपस की फूट कम हो जाती—सर्कारी क़ानून आपस में भाई २ को लड़ाय जो प्रति दिन "लिटिगेशन" मुकद्दमों का दायर होना बढ़ता जाता है अवश्य कम हो जाता—न्याय पूर्वक चलने वाले की पशु पक्षी भी सहायता करते हैं जैसा रीछ बानरों ने, पक्षी जटायु ने भी, श्री रामचन्द्र की सहायता की कुराह पर चलने वाले को अपना सगा भाई भी छोड़ देता है—रावण को अन्याय में चलते हुये देख सगा भाई बिभीषण ने भी उसे छोड़ दिया-ऐसे न जानिये कितने उपदेश प्रति बर्ष की रामलीला से टटके हो जाते हैं—पर अफसोस निरा तमाशा समझ कोई उस पर ध्यान नहीं देता इत्यादि:—

यान्तिन्याय प्रवृत्तस्य तिर्यञ्चोपि सहायताम्।
कुपन्थानंतु गच्छन्तः सोदरोपि विमुञ्चति॥

यहां प्रयाग में रामलीला के दो दल बहुत दिनों से चले आए हैं एक दल के अग्रणी अग्रवाल दूसरे के दक्षाल खत्री हैं—इन दोनों में

परस्पर की स्पर्द्धा और लाग है दोनो इस बात की कोशिश करते हैं कि दूसरा जुलूस और रोशनी आदि में उन के आगे न बढ़ जाय—दोनो ओर दो २ हज़ार के ऊपर रुपया खर्च किया जाता है--खत्रियों की रामलीला प्रबन्ध और इन्तज़ाम की खूबी से हर तरह पर चढ़ी बढ़ी रहती है—कई साल से लीला नाटक के आकार में होती है—इस साल पात्रों ने अपना२ पाठ बहुत अच्छा याद किया और अभिनय भी बहुत उत्तम किया गया किन्तु खेद है कि इस के मुखिया लोग एक दिन भी वहां नहीं जाते—यदि जांय और देखें कि कैसा अच्छा अभिनय पात्र लोग करते हैं तो अवश्य इस की तरक्की की विशेष फिकिर करैं-सो न कर केवल जलूस और भाड़ फानूस की रोशनी में व्यग्र रहते हैं और हज़ारों रुपया हर साल न देवाय न धर्माय उड़ा दिया जाता है अस्तु ॥

तीसरा तेवहार दिवाली है यह उत्सव विशेष कर बणिक् वृत्ति वाले महाजनों का समझा जाता है—चार महीने की बरसात के उपरान्त घर की सफ़ाई आदि के द्वारा लक्ष्मी का प्रकाश इस में अच्छी तरह प्रगट होता है मसल है "सदा दिवाली सन्त घर—जो घर गेहूं होय" अब इस समय जब देश का देश दरिद्र और दुखिया हो रहा है दिवाली गृहस्थों का केवल दिवाला निकालने के लिये होती है लक्ष्मी के प्रकाश के बदले दरिद्रता चुड़ैा का प्रकाश विशेष छाया हुआ है—दूसरे जुआ जो इस में दिल बहलाव के खयाल से लोग खेलते हैं सच २ कितनों का दिवाला निकाल देता है जिस का अंकुर इस में बोया जाता है पीछे वेही पक्के चोर और जुआरी हो सर्कारी जेल के पाहुने होते हैं ॥

चौथा होली शूद्रों का तेवहार माना गया है यह तामसी तेहवार वास्तव में शूद्रोंही के योग्य है जिस में मादक द्रव्य के सेवन से स्वस्थ और धीर चित्त वाले भी कुछ न कुछ बिचलित हो जाते हैं-दूसरे यह कि अनेक असभ्यता की बातें जैसी इस समय की जातीं है वैसी और

कभी नहीं—इस प्रकार चारों तेवहारों का बर्णन संक्षिप्त रीति पर पाठकों के बिनोदार्थ किया गया—जगदम्बा प्रसाद॥

सीमा युद्ध।

हमारे पढ़ने वालों को अचरज होगा कि हमने आज तक इस बारे में कुछ न लिखा—इस युद्ध का जो परिणाम होगा उसे सब लोग अनुमान करले सक्ते हैं पर जो हो रहा है उसे कहिये हम आप लोगों को सुना दें—इतना याद रखिये कि हमारा पत्र खबर का कागज़ नहीं है खबर जानने की इच्छा हो तो बंगबासी या अन्य किसी पत्र को देख लिया कीजिये—विद्या सम्बन्धी या बुद्धि बर्द्धक विषय पढ़ने का मन हो तो हमारा पत्र पढ़िये—सीमा युद्ध की तैयारी का एक बड़ा फल तो यह देखने में आ रहा है कि इस दुर्भिक्ष के समय अन्न तथा और सब चीज़ें जिस की हम को प्रति दिन ज़रूरत पड़ती है इस युद्ध की रसद में खिची जा रही हैं कई किस्म के गल्लों की पैदावरी पर भी अभी तक अन्न सस्ता नहीं होने पाता—इंगलैंड के लोगों को याद रखना चाहिये और देश निवासियों को भी आंख खोल देखना चाहिये कि यहां की प्रजा तथा राजाओं को इंगलैण्ड की सहायता करने का कैसा जोश है—किसी राजा ने इस युद्ध की सहायता के लिये रुपया दिया है, किसी ने कपड़े दिये हैं, किसी ने जानवर, किसी ने सेना, किसी ने गोला बारूद इत्यादि—सेंधिया बहादुर ने सर्कार से कह दिया है कि हमारे राज से सरहद्द के प्रान्तों तक रेल लगवा दीजिये जिस क़दर घोड़ों के लिये घास की ज़रूरत होगी मैं दूंगा—बहुतेरे युद्धोत्साही बीर राजा संग्राम भूमि में जूझ जाने को वहां मौजूद हैं—एक बात और खयाल करने की है कि पायोनियर इंगलिशमेन आदि ऐंगलो इंडियन पत्र सीमा युद्ध का समाचार रोज़ लिखते हैं गौरांगों के युद्ध में मरने या ज़खमी होने का बिस्तृत हाल लिखते हैं पर काली पलटन के सिपाहियों

का हाल आज तक उन पत्रों में न लिखा गया—क्या मेम साहब और मिस बाबाओं की तरह दिहात और गांव के रहने वाले देशी लोगों के घरों में मा बाप बहन भाई नहीं हैं जिन को अपने उस बीर की जो सरहद्द पर लड़ने को गया है मौत या ज़िन्दगी का हाल जानने की उत्कण्ठा नहीं रहती, किन्तु उनकी गिनती किस में है—क्या विश्वास हो सक्ता है कि काली पलटन युद्ध क्षेत्र में जातीही नहीं—जिस जगह पर मोरचा है वहां से अलग रक्खी जाती है—हम नहीं समझते कि काली पलटन क्या सवार क्या पैदल सिपाही संग्राम भूमि में पीछे रहते होंगे दरियाफ़्त किया जाय तो सब के आगे वेही रक्खे जाते होंगे—दुश्मनो का वार जिन लोगों पर सब से पहले पड़ता होगा वे भारतवर्षही के बीर होंगे-अस्तु सब सही हिन्दुस्तान फिर भी तन मन धन बल विक्रम सब सर्कार लिये के देने को प्रस्तुत है यदि महाराणी इस के पुत्रों को निज भक्त समझ अपनाये रहने का खयाल रक्खें—इसी अब की बार के सीमा युद्ध की क्या भारत वर्षीय बीर योद्धा कब किसी युद्ध में औरों से कम रहे और सर्कार को जब किसी बैरी से लड़ना पड़ा तब पीछे न हटे होंगे—खास कर गोरे सिपाहियों के मुक़ाबिले जिन से हमारे काले सिपाही चार कदम आगे बढ़े रहते हैं—किन्तु कदरदानी के बर्ताव में ये गोरे सिपाहियों की अपेक्षा कमी रहते हैं जिस का एक उदाहरण पायोनियर और इङ्गलिशमेन आदि ऐंगलो इंडियन पत्रों की लिखावट ही है—और भी फ़ौज के बड़े२ ओहदे भी उन्ही गोरोंही को दिये जाते हैं तो क्यों कर समझा जाय कि इन की कदर उन से बढ़ कर न सही तो उन के बराबर की तो की जाती हैं—अस्तु फिर भी अपने मालिक की आज्ञा मानना अपना धर्म समझ बीर लोग कर्तव्य से नहीं चूकते॥

संस्कृत का पढ़ना पढ़ाना क्यों घटता जाता है।

स्मरण रहे भाषा वही तरक्की पाती है जिसे सर्व साधारण आदर देते

हैं—संस्कृत के न पड़ने पढ़ाने का सब से बड़ा और मुख्य कारण कचहरियों में हिन्दी का न रहना है—बंगाल जहां बंगाली सर्कारी दफ्तरों में लिखी पढ़ी जाती है वहां इतर जाति शूद्र भी इतनी संस्कृत जानता है जितनी इन प्रान्तों में ब्राह्मण नहीं जानते—ऐसाही महाराष्ट्र देश में मराठी गुजरात में गुजराती कचहरी की भाषा रहने से उन२ प्रान्तों के सर्व साधारण संस्कृत यहां के लोगों से अधिक जानने लगे हैं—अदालतों में हिन्दी न रहने से संस्कृत का प्रचार केवल ब्राह्मणोंही में बच रहा जिन्हों ने इसे निरी बछिया पुजावन विद्या कर डाला—संस्कृत जिसे लोग मुरदा भाषा कह अवज्ञा करते हैं कभी मुरदा नहीं रही वरन एक भाण्डार गृह के समान रही— वेद के समय में भी जब सब लोगों की भाषा लौकिक संस्कृत थी जो बोल चाल के काम में आती थी तब भी वेद की संस्कृत कुछ निराली थी जो भाण्डार गृह के समान प्रचलित संस्कृत को सहायता देती थी—उपरान्त बौद्ध और जैनियों के सम्राज में जब प्राकृती चली तब जो लौकिक संस्कृत रही वही उस समय प्राकृती के लिये भाण्डार हो गई—वही बात अब भी है यद्यपि अब हम लोगों की घरैलू भाषा में बहुत दिनों तक मुसल्मानों का अधिपत्य यहां होने से फारसी अरबी कहीं२ पर हंस के दल में कौआ के समान आ मिली है किन्तु हिन्दी का भण्डार वही संस्कृत अब भी बनी है—जैसा प्रति दिन के बर्तने की जिनिस खाने पीने की सामग्री चुक जाती है तो लोग भण्डार से निकालते हैं वैसाही हिन्दी के शब्द जिस अंश में चुक जाते हैं उस अंश में नई गढन्त हम संस्कृतही के सहारे से करने लगते हैं-उर्दू और हिन्दी का यही फरक भी है कि उर्दू की नई गढन्त के लिये सहारा अरबी फारसी है हिन्दी के लिये संस्कृत है इस से सिद्ध हुआ कि हिन्दी का प्रचार पाना मानो संस्कृतही को सहारा देना है जो अब केवल हिन्दी अक्षरों के प्रचार मात्र से सुख साध्य हैं॥

बहुतों का मत है कि संस्कृत में विज्ञान नहीं है सोभी केवल भ्रम मात्र है बहुत दिन बीते जब से यवनो का आधिपत्य हुआ अदालत और शाही दरबारों में फारसी अरबी आ गाजी संस्कृत का पठन पाठन सर्व साधारण के बीच से उठ गया केवल ब्राह्मण पढ़ते रहे—उन्हें प्राचीन या आधुनिक विज्ञान से क्या काम जितना दान दक्षिणा की उपयोगी संस्कृत बची उसी को पढ़ा लिखा तब से संस्कृत निरी बछिया पुजावन हो गई—अब छापा के प्रचार पाने से ढूंढ२कर छिपे छपाये संस्कृत के ग्रन्थ जो प्रचलित होने लगे तो बहुधा दो एक ग्रन्थ उन में निकल आते हैं जो यूरोप के नये विज्ञान के साथ टक्कर मारने को तैयार हैं—बंगाल और बम्बई के बिद्वानों ने कई ग्रन्थ ऐसे मुद्रित किये हैं जिस से पुराने आर्यों का विज्ञान बिषयक बोध साफ२ झलकता है और यूरोप के नामी वैज्ञानिकों को भी अचंभित करता है—जैसा पृथ्वी का चलना सूर्य मण्डल में दाग इत्यादि को वे लोग नई ईजाद मान बैठे पर संस्कृत में वे सब पाये जाते हैं—आर्य भट्ट ने पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूमना और पंडित बाराह मिहर ने सूर्य मंडल में दाग का होना कई तरह पर अनुमान किया है जो बाराही संहिता की केतुचार वाली अध्याय के देखने से बोध होता है कि बराह मिहर के मन में इस की झलक आ गई थी कि सूर्य मण्डल में दाग है—ज्यों२ पुराने ग्रन्थ मुद्रित होते जांयगे यूरोप के बिज्ञान जिन्हे उन्हो ने अपनी बपौती की भांति अपने निज की ईजाद मान रक्खा पुराने आर्य उन्हें जान चुके थे—ब्राम्हणों को फिर भी धन्यबाद है कि न जानिये कितनी बिपत्ति अपने ऊपर अत्याचारी मुसल्मानो के द्वारा झेल कर संस्कृत का पिण्ड न छोड़ा बरन उस्की तरक्की में लगेही रहे अनेक ग्रन्थकार जैदेव आदि प्रसिद्ध कवि उसी समय में हो गये—अब वह संस्कृत गवर्नमेंट से अनादर पाय शिथिल पड़ती जाती है सर्कार जो उचित और न्याय समझ हिन्दी

अक्षर भी अदालतों में जारी कर दे तो यह संस्कृत जिसे घटका लगा है मर रही है दस बीस बर्ष में फिर चमक उठे—हमारे सामयिक प्रभुवर श्रीमान् सर मेगडानेल साहेब बहादुर अपने स्वाभाविक न्याय पर आरूढ़ हो हमारे प्रतिपक्षियों की बात न मान अपने स्थिर निश्चय से न हटैं तो इस्का होना कुछ दुष्कर नहीं है ॥

हम को यह देख खेद होता है कि बनारस जो समस्त संसार में संस्कृत का भाण्डार गृह प्रसिद्ध है वहां भी संस्कृत का प्रचार अब छीजता जाता है—इस बात का खयाल कर जो दुःख संस्कृत के प्रेमियों को होता है वह अकथनीय है—हमारे इन प्रान्तों के लोगों का हम यह महा अभाग्य कहेंगे जब देखतें हैं कि जर्मनी और इंगलैंड के विशिष्ट विद्वानों को संस्कृत में आदर प्रति दिन विशेष होता जाता है किन्तु इन प्रान्तों में संस्कृत के पढ़ने और जानने वालों की संख्या दिनों दिन कम होती जाती है- बंगाल बम्बई मद्रास में न केवल पुराने ढंक के पण्डित बरन सहस्त्रों हमारी आर्य भाषा संस्कृत के सुधारस पान से तृप्त अंगरेज़ी पढ़े लोग भी इसके उत्तमोत्तम उपदेशों का लाभ उठाते हैं—बंगाल बाम्बे मद्रास पूना आदि प्रान्त के मित्रों से जब कभी भेट होती है और उनको व्यास बाल्मीकि कालिदास भवभूति की अलौकिक कविता पढ़ते या गाते सुनते हैं तो इनको इस प्रान्त के मोलवी साहब की सनहकी धोनेवालों पर दुःख होता है—जिनका जन्म उर्दू फ़ारसी के आशिकी माशूकी के घृणित किस्सों से भरी शृङ्गार रससनी चरित्र को गन्दा करने वाली शेर और ग़ज़लोंही में बीतता है—यह न कोई समझे कि हम उर्दू फ़ारसी के उत्तम ग्रन्थों के कदरदां नहीं हैं किन्तु उस में उत्तम ग्रन्थही बहुत कम हैं—इसी से बहुधा फ़ारसी पढ़े नवजवानों के आचारण में आशकी माशूकी पर झुकावट विशेष पाई जाती है—यह बिल्कुल स्पष्ट और अनुभूत है कि दो हिन्दू बालक

एक को निरी फ़ारसी पढ़ाई जाय दूसरे को निरी संस्कृत, या अंग-रेज़ी के साथ एक को फ़ारसी दूसरे को संस्कृत पढ़ाई जाय, तो उस बालक के खयाल और बर्ताव में जिस ने संस्कृत पढ़ा है हिन्दुओं की स्वाभाविक धर्म निष्ठता, पाप कर्म से भय, और घृणा, दया, शान्ति, भोलापन, मर्दानगी, दियानतदारी, सचाई, आचरण की पवित्रता, सन्तोष, कुछ न कुछ अवश्य रहेगा, खान पान रहन सहन में कम खर्च होगा—वही फ़ारसी पढ़ा हुआ अन्दाज़ और तरहदारी के पीछे हैरान, खर्राच, नौवाबी दिमागवाला, कर्ज़दार, ज़ाहिरदार, आशकी माशूकी में डूबा हुआ, ईमानदारी को छप्पड़ पर रख इसी दुनिया को अपना सर्वस्व मानेगा—सर्कारी मुलाज़िमों में भी जिन्हों ने कुछ संस्कृत पढ़ लिया है उन का बर्ताव सब के साथ इन्साफ़ पसन्द और ईमानदारी का होगा केवल फ़ारसी खां से—संस्कृत की कौन कहे केवल हिन्दी पढ़े तुलसी दास के उपदेश वाक्यों के जानने वालों में भी दया और धर्म की ओर अधिक झुकावट पाई जाती है—यदि गवर्नमेंट ऐसे लोगों को खास कर पुलीस में भरती करे जो महकमा अत्याचार के लिये बदनाम है तो कदाचित् प्रजा पर वह अत्याचार न हो जो निठुर फ़ारसीखां के द्वारा होता है—किन्तु संस्कृत को कोई क्यों पढ़ेगा जिस्का राजा के यहां आदर होता है राज काज में जिस की चाह और पूछ होती है वही भाषा लिखी पढ़ी जाती है—सो यहां संस्कृत का आदर तो दूर रहे हिन्दी को भी कोई नहीं पूछता—प्रजा के बीच संस्कृत हिन्दी की रुचि क्यों हो जब लोगों में चाल है कि वही वृक्ष लगाया जाता है जो फलवन्त समझा जाता है—फ़ारसी पढ़े रहैंगे तो चार पैसे का रोज़गार सहज में मिल जायगा तो संस्कृत कोई क्यों पढ़े—सर्कार जो नागरी अक्षर कचहरियों में करदे तो देखो कितने लोग इसे पढ़ने लगैं—अंगरेज़ी जो इस समय इस उन्नति की दशा में पहुंची

हुई है कभी ऐसी होती यदि नारमन भाषा इंगलैण्ड से न उठा दी जाती और उस समय की अदालतों में वहां अंगरेज़ी न जारी कर दी जाती—यही सब कारण हैं जिस से संस्कृत का पठन पाठन हमारे बीच से उठा जाता है॥

कान।

मनुष्य के शरीर में यह भी एक बिलक्षण इन्द्री है—मस्तिष्क या दिमाग़ जिस को बुद्धि और मन का स्थान कहते हैं उसकी यह भी एक नली है—हमारे ज्ञान की नेह इसी से पड़ती है—जितना बचपन में यह काम में आया है उतनाही उस के ज्ञान की नेह मज़बूत हुई है—और सच तो यों है जो शब्द हम मुख से उच्चारण करते हैं उसका एक यही द्वारा है—बहुश्रुत जिसका संस्कृत के ग्रन्थों में अर्थ बहुत पढ़ा लिखा है उसका तात्पर्य भी यही करण इन्द्री के काम में आने का है—आप की धर्म पुस्तक वेद जिसका मान्य आर्य जाति मात्र के मन में सदा से अटल चला आया है वह महामान्य वेद भी तो श्रुति इस शब्द से गतार्थ है—अर्थात् पुराने ऋषि लोग परम्परा से जिसे सुनते आये और उस सुने हुये को याद रक्खा वह स्मृति हुई—तो सिद्ध हुआ कि हमारे मानसिक ज्ञान का यही एक मुख्य द्वार ठहरा—हम ने ऊपर लिखा है कि हम जो बोलते हैं वह इसी करण इन्द्री को काम में लाने का फल है इस पर एक दन्त कथा है जिसे हम आप को सुनाते हैं॥

एक बार एक राजा ने किसी पण्डित से पूछा—पंडित जी भला बतलाइये तो, कोई ऐसा भी बालक है जो जन्म से कभी कुछ न सुना हो, तो वह कौनसी बोली बोलेगा और क्या इस की भाषा होगी—पंडित जी ने कहा महाराज भाषा की क्या चलाई वह कुछ बोलेहीगा नहीं—राजा ने इस की परीक्षा के लिये एक बालक को ऐसे सून सान मकान में रक्खा जहां कभी किसी तरह की आवाज़ जानेही न पाई—दूध

पिलाने वाली वहां जाती और उसे चुप चाप दूध पिला चली आती उसको कुछ बोलने का हुक्म न था—मनुष्य और पशु की क्या किसी पक्षी के बोलने का भी शब्द वहां न गया—ज्ञान का लेश मात्र भी उसे न होने पाया सब चीज़ें ठीक समय पर उसे मिल जाती थीं इशारा तक भी उसे कुछ काम न पड़ा—लड़का पांच बर्ष का हुआ तो राजसभा में लाया गया लोगों को बोलते सुन उसे भी बोलने की इच्छा हुई पर उसके कण्ठ से सिवाय चूं चूं के और किसी तरह की कोई बोली न निकली—यह देख सभा के सब सभासदों ने निश्चय किया उस बन्द मकान के किवाड़ बन्द होने की आवाज़ को इस बालक ने सुना है उसी को यह बोल सका॥

यह तो बहुत लोगों ने देखा और सुना है कि जिन लड़कों को भेड़िये मांद में ले गये हैं वह भेड़ियोंही की बोली बोल सका—जो बज्र बहरा होता है वह सदा गूंगा रहता है-संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फ़ारसी, अंगरेज़ी, फरासीसी, चीनी, तुर्की, अरबी, इत्यादि जिसे पहले मनुष्य अपनी मा की गोद में सुनता है उसी को पीछे से बोलने लगता है—यदि शरीर में यह इन्द्री न होती तो उपदेशकों के बड़े२ उपदेश लेक्चर झाड़ने वालों के लेक्चर तब किस काम में आते, और भाइयो ब्यास जी की कथा तब कौन सुनता, बिना इसके हरि कीर्त्तन तब कहां किसी से हो सक्ता, बड़े२ शहरों की बारांगनायें कौवाल गवैइये सब बेकाम रहते—शरीर में आंख बड़े काम की है पर शूची भेद्य महाअन्धकार में आंख बिल्कुल बेकाम रहती है उस समय कानही आदमी के लिये सहारा होता है सुन कर सब बात बिना आंख से देखे भी वह जान लेता है—सूरदास जन्म के अन्धे होकर भी सवा लाख बिष्णुपद सूरसागर ग्रन्थ के रच गये तो इस से निश्चय होता है आंख ज्ञान के प्राप्ति का ऐसा भारी द्वार नहीं है जैसा कान "सूर कहा कहे द्विबिध आंधरो बिना मोल को चेरो"

सूरदास जी ने यहां पर अपने को द्विविध आंधरो लिख अपना अनौद्धत्य कवि समाज में प्रगट किया पर आंख और हृदय का दोनो तरह का अन्धा वही है जो श्रवण इन्द्री शून्य है—इत्यादि कान के अनेक फ़ाइदे हैं थोड़े से यहां कह सुनाया हमारे पढ़ने वालों को सुनने की भरपूर ताकत होगी तो कितना ऐसा वे खुद गढ़ लेंगे ॥

नल दम्यन्ती नाटक स्थान राजपथ।

(एक ओर से इन्द्र दूसरे ओर से कलि का प्रवेश)

इन्द्र—वेग पूर्वक धावमान् कलिराज आज तुम किधर जा रहे हो ॥

कलि—दमयन्ती के स्वयम्बर की संसार में इस समय धूम है क्या आप ने उस की चरचा न सुना होगा—ब्रह्मा की सृष्टि में ऐसा कौन है जिसे दमयन्ती के रूप लावण्य और लोकोत्तर सौन्दर्य की अनेक कहानियां सुन उस के बरने का हौसिला न हुआ हो—मनुज की कौन सुर, असुर, यक्ष, राक्षस, किन्नर, गन्धर्व में भी कौन होंगे जो वहां न गये हों—तो हम भी वहाँ पहुंच अपनी किस्मत को क्यों न आजमावें—क्या अचरज कदाचित् रूप गर्बिता लावण्य मदमाती दमयन्ती हमी को अपना पति बरले ॥

इन्द्र—वह स्वयम्वर तो हो गया हम वहीं से चले आते हैं—दमयन्ती ने अपने योग्य वर निषध देश के राजा नल को चुना और इन दोनों का मिलाप मानो रत्न का कांचन के साथ संयोग हुआ है—पुरुष रत्न जैसा नल है वैसाही सौन्दर्य की सीमा दमयन्ती सराहने योग्य है—ऐसे बधू बर के संमिलन को कौन न अनुमोदन करेगा ॥

नल (क्रोध पूर्वक स्वगत) ऐं यह कैसा इन्द्र वरुण कुवेर ऐसे अमर गण और दिक्पालों के रहते दमयन्ती ने एक सामान्य पुरुष मर्त्यधर्मा नर कीट नल को जो पति बरा यह उसने बड़ाही साहस

किया हमसे ऐसी असमंजस बात नहीं देखी जाती–प्रतिज्ञा करते हैं कि इसका इन दोनों को समुचित दण्ड दिये बिना हम न रहेंगे ॥

इन्द्र–तो इस में नल अथवा दमयन्ती दोनों का अपराध क्या जो तुम उनको दण्ड दिया चाहते हो –दमयन्ती ने जो नल को बरा सो अच्छाही किया हम भी इन दोनों का परस्पर वधू और वर होना पसन्द करते हैं–हमारी राय से दमयन्ती ने नल को बरा है–राजा नल को दण्ड देना तुम को सर्वथा अनुचित है–नल के समान गुनवान, क्षमाशील, ज्ञानी, हमे और कोई दूसरा नहीं देख पड़ता—हम निश्चय कहते हैं यह तुम्हारा नल के प्रति उद्यम सर्वथा अनुचित है पीछे पछताना पड़ेगा–सहसा किसी काम को कर डालने में पीछे पछतावा होता है आगे तुम्हारी इच्छा हम तो जाते हैं (प्रस्थान)

कलि–(स्वगत) अजी देवता लोग तो स्वभावही के भीरू होते हैं–उस में भी इन्द्र तो सदा से डरपोक प्रसिद्ध हैं–ज़रा सा किसी को यज्ञ या तपस्या करते देखा कि डर जाया करते हैं—जब तक अपसराओं को भेज उसके तपस्या को भंग नहीं कर लेते तब तक उन्हें कल नहीं मिलती–व्यर्थ हमें डरवा दिया—हम क्या नहीं कर सक्ते—कहो एक क्षण भर में अथाह सागर के सब जल को सुखा उसे मरु भूमि कर दें–पृथ्वी को कहो रसातल में भेज दें–तब इस क्षुद्र मनुष्य को दण्ड देना कौनसी बड़ी बात है–अच्छा तो चल कर अब नल में कोई छिद्र की बात खोज उसे धर पटकें (प्रस्थान) शेष ॥

पुस्तक प्राप्ति ।

शिशुसखा ।

सचित्र अक्षराभ्यास की पहली पुस्तक एक २ अक्षरों के साथ एक २ चित्र हैं चित्र उसी का है जिस अक्षर से उस शब्द का प्रारंभ है–जिस्से

छोटे बालकों को वह अक्षर अच्छी तरह मन में गड़ जा सक्ता है—उपरान्त उसी तरह छोटे २ वाक्य और छोटे २ पाठ भी दिये गये हैं—सबों में चित्र हैं—बहुत अच्छे शुद्ध और साफ़ टाइप के अक्षरों में छपी है-मूल्य -) है जो हम समझते हैं ऐसी उत्तम पुस्तक का दाम बहुत कम है-सिटीबुक सोसाइटी कालिज स्ट्रीट नं० ६४ कलकत्ता में इसके मिलने का पता है॥

भामिनी भूषण।

स्त्री शिक्षा सम्बन्धी सरस्वती यंत्रालय इटावे की छपी छन्दोबद्ध पुस्तक—स्त्री शिक्षा की छन्दोबद्ध ऐसी पुस्तक बहुत कम अब तक छापी गई है—बलदेव सिंह चौहान मकरन्दपुर ज़िला मैनपुरी निवासी कृत—इस पुस्तक में स्त्रियों के छोटे २ दैनिक गृहस्थी के काम रसोई बनाना पाक इत्यादि उमदी तरह कैसे करना चाहिये सबों को छन्दोबद्ध कर दिखलाया है—यदि वे छन्दों को बालिकायें प्रारम्भ से याद कर लें तो बड़ी होने पर घर के सब कामों में अति निपुण उत्तम गृहस्थिनी उमर अधिक होने पर हो निकलें—सिवा इसके शिशु पालन इत्यादि के प्रकार भी उसी तरह छन्दोबद्ध हैं और अनेक उत्तम उपदेश भी स्त्रियों के योग्य बहुत अच्छी तरह पर लिखे गये हैं—स्त्रियों के प्रयोजन की यह बहुत उत्तम पुस्तक है और संग्रह के लायक है मूल्य ।) ॥

मेवाड़ देशाधिपति महाराणा श्री प्रताप सिंह और महाराणा उदै सिंह का जीवन चरित्र, टाड राजस्थान से अनुवादित, हिन्दी और उर्दू में, मुन्शी देबी प्रसाद मुनसिफ़ जोधपुर कृत—जिसे ग्रन्थकार ने सिवा टाड राजस्थान के और २ तवारीखों की पुस्तकों की मदद लेकर निर्माण किया है—इसमे मुसल्मानों के मुक़ाबिले राजपूत क्षत्रियों की बीरता बहुत अच्छी तरह प्रगट की गई है—अकबर ने उदैपुर के घराने को कित-

नी तकलीफ़ दी है और राणा लोग फिर भी उनके वशंवद नहीं हुये यह सब अच्छी तरह दिखलाया है—मूल्य दोनो पुस्तकों का ॥) है॥

काव्य सुधाधर।

यह मासिक पुस्तक के ढंग पर प्रकाशित होती है—इसके सम्पादक सुयोग्य पंडित देबीदत्त मंत्री कवि समाज बिसवां ज़िला सीतापुर हैं—एक२ समस्याओं पर अनेक कवियों की अलग२ पूर्ति दी गई है कविता रसिकों के लिये बड़ी उत्तम पुस्तक है मूल्य बार्षिक १) है॥

पुनः सूचना।

पढ़ने वालों को मूल्य भेज देने के लिये हम फिर स्मरण दिलाते हैं—गये अंक में जो हमने सूचना दी थी उसपर हमारे पढ़ने वालों को कुछ खयाल न हुआ तो फिर याद दिलाते हैं कि कृपा कर अब भी हमारा दाम चुकता कर भेज देते तो बड़े उपकृत होते नहीं बड़ी कठिनाई आ पड़ेगी कैसे फिर आगे बढ़ेंगे॥

हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

बिद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २१ सं० ३-४ } प्रयाग { नवम्बर दिसम्बर १८९७ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहांय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥≡)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १।=)

नमूने की कापी =)॥
१-१-९८

हिन्दीप्रदीप

जिल्द २१ संख्या ३ । ४ } प्रयाग { नवम्बर । दिसम्बर सन् १८६७ ईसवी ॥

हिन्दी के दिन भी कभी बहुरेंगे ।

जब बनारस की नागरी प्रचारिणी सभा ने सर एँटोनी मेगडानेल को इसके सम्बन्ध में मेमोरियल दिया था तब उक्त श्रीमान् ने कहा था कि यह विषय बहुत आवश्यक और बड़ा भारी है हम फिर इसे खयाल करेंगे—हम नहीं जानते तब से पुनः उनको इसकी याद दिलाई गई या नहीं—कदाचित् इस खयाल से उन्हें न चिताया गया हो कि अभी ये दुर्भिक्ष के बन्दोबस्त में व्यग्र हैं अभी इस्का मौका नहीं है— अब श्रीमान् उस से सुचित्त हुये हैं तो अब उस्का स्मरण दिलाना अनुचित और बेमौका न होगा—बहुत दिनों तक बिहार और मध्यप्रदेश में रहकर अपने निज के अनुभव से लाटसाहब जान गये होंगे कि बिहार और मध्यप्रदेश की अदालतों में हिन्दी अक्षर प्रचलित रहने से सरकारी काम में कोई त्रुटि न हुई बरन सब काम आसानी से होता रहा— हम अपना और हिन्दी का भी बड़ा सौभाग्य मानते हैं कि जहां २ ये गये वहां हिन्दी इनके साथ रही तो हिन्दी के इस नित्य सम्बन्ध को उक्त श्रीमान् क्यों अब अपने से अलग कर रहे हैं—ऐसे न्यायशील से

हिन्दी ने यदि अपनी दाद न पाई और उसका इन्साफ़ न हुआ तो कब होगा—इस लिये हमारी श्रीमान् से प्रार्थना कि हिन्दी की हीन दशा पर ध्यान दे इसके उद्धार में जहां तक जल्द हो सकेगा दत्तचित्त हो हमारे धन्यवाद के पात्र होंगे—हिन्दी अक्षर अदालतों में जारी होने से बड़ा कल्याण तो यह देख पड़ता है कि ललाट लिपि से बिधिना के अक्षर समान शिकस्ता उर्दू अदालतों से उठा दी जाय तो अमलों के चंगुल से प्रजा का जी छूटे और गवर्नमेंट के शुद्ध न्याय में बट्टा न लगे—कई बार की आंख की देखी बात है कि दिहातों में एक साधारण सम्मन के आने पर भी लोगों में तहलका फैल जाता है लोग घर २ उसे पढ़ाते फिरते हैं और फिर भी बहुधा मतलब साफ़ नहीं होता—बंगाल गुजरात महाराष्ट्र द्रविड़ तैलंग कर्नाट आदि देशों में वहां की देश भाषा और देशी अक्षर अदालतों में प्रचलित रहने से उस २ देश के लोग कैसी तरक्की कर रहे हैं—कितना अधिक विद्या का प्रचार वहां वहां के लोगों में देखा जाता है—हम जो सब से पीछे हटे हुये हैं इस का कारण एक यह भी है कि हमारे अक्षर और हमारी भाषा यहां की अदालतों में स्थान नहीं पाये हुये हैं—ब्रिटिश राज्य के उदार शासन का मुख्य उद्देश्य यही है कि हम लोगों को अपने शासन गुण से ऊपर को उठावे—यदि श्रीमान् इस सिद्धान्त पर ध्यान रक्खें तो उचित है कि हिन्दी का उद्धार कर हम लोगों को नवजीवन दान दें॥

उद्वेग जनक एक किम्वदन्ती।

कुछ दिन से कभी सेक्रेटिरियट कभी और २ स्थानों से जब तब यह हवा उड़ती है कि हमारे प्रजा हितैषी न्यायशील गवर्नर श्रीमान् सर ऐंटोनी मेगडानेल बम्बई को यहां से बदल कर जाने वाले हैं—पहले यह अफवाह थी कि बंगाल को जांयगे फिर यह अफवाह उड़ी कि मन्दराज

को जांयगे अब यह सुन पड़ता है कि बम्बई को जांयगे—यद्यपि इसे सुन चित्त को बुरा मालूम होता था पर हमने इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया। हम समझते थे यह उस कहावत का उदाहरण है कि "जो मन से भावै सो मुह डोलावै" हम अच्छी तरह जानते हैं कुछ लोगों को उक्त लाट साहब की प्रजा हितैषिता नहीं सोहाती—उनका प्रबल अपक्षपात शासन और बहुधा सिविलियन कर्मचारियों पर लगाम उन कर्मचारियों को अप्रिय मालूम होता है—वे बड़े प्रसन्न होंगे यदि उक्त लाट साहब यहां से चले जांय—किन्तु अब कलकत्ते के इण्डियन डेलीन्यूज़ ने इसे प्रत्यक्ष छाप दिया और चित्त के छिपे भाव को प्रगट कर दिया कि बम्बई के गवर्नर लार्ड सैंडर्स छुट्टी पर जांयगे और ये उनकी जगह पर वहां बदल कर जांयगे—इसे पढ़ इस प्रान्त के लोगों को जैसी चोट लगी है उसे शब्दों के द्वारा नहीं वर्णन कर सकें—जब से ब्रिटिश राज्य यहां पर स्थापित हुआ अब तक प्रायः सामान्य काम चलाऊ योग्यता के लफटिनेंट गवर्नर यहां आये—सब के पहले टामिसन साहब छोटे लाट नियत हो यहां आये जो प्रजा की शिक्षा की ओर बड़े दत्तचित्त थे जिन्हों ने प्राथमिक शिक्षा "प्रइमरी इज्युकेशन" की प्रणाली प्रजा के बीच प्रचलित की—उपरान्त सर विलियम म्यौर ने इस्पर बहुत ध्यान दिया—फिर लायल साहब जिन्हों ने अवध रेंट ऐक्ट के द्वारा अवध के काश्तकारों का बड़ा उपकार किया, हिन्दू और मुसल्मान दोनों को एक सा समझा, किसी का विशेष पक्षपात न कर सबों को प्रसन्न रक्खा और यूनिवरसिटी "विश्वविद्यालय" इलाहाबाद में स्थापित किया—इन महानुभावों को प्रजा बड़े प्रीत भाव से याद करती है किन्तु हम मुक्त कण्ठ हो कहते हैं कि ऐसी विशिष्ट योग्यता का गवर्नर कोई नहीं आया जिसने इन प्रान्तों की आवश्यकताओं को समझा हो और उनके पूरा करने का पक्का इरादा ज़ाहिर किया हो।

निस्सन्देह ऐसे यही एक आये—सर ऐंटोनी मेगडानेल की स्पीचों को पढ़ हम लोगों के चित्त में बड़ी २ आशा की लहरें उठती हैं कि इनके समय यहां की प्रजा की दशा अवश्य सुधरैगी—पर जैसेही मूड़ मुड़ाये वैसही ओले पड़े—दो वर्ष दुर्भिक्ष के भयंकर उपद्रव के कारण ये कुछ न कर सके अब कुछ करने का समय आया है तो लोग इस तरह के नये २ शिगूफ़े छोड़ हमारे आशा कुसुम को कुम्हलाये देते हैं और चित्त को सन्ताप पहुंचाते हैं कि उक्त प्रभुवर बम्बई जांयगे—महामारी के उपद्रव के कारण बम्बई में जो कुछ होना था वह होगया अब वहां ऐसी विशिष्ट योग्यता सम्पन्न की कोई आवश्यकता नहीं है—हमारा प्रान्त पश्चिमोत्तर और अवध जो सब भांत सब से हेठा और सब के पीछे हटा हुआ है उसमें ऐसेही सुयोग्य शासन कर्ता की आवश्यकता है—हम लोगों के शिक्षा में संशोधन की बड़ी आवश्यकता है पुलिस का महकमा अत्याचार पूर्ण हो रहा है तथा और २ शासन प्रणाली सम्बन्धी बातों में हम बहुत पीछे हटे हुये हैं—उन सबों में संशोधन ऐसेही सुयोग्य हाकिम का किया हो सक्ता है जैसे श्रीमान् सर ऐंटोनी मेगडानेल हैं—हम यह नहीं चाहते कि उनकी तरक्की बम्बई की गवर्नरी पर न की जाय बरन एक वर्ष उनका और बढ़ा दिया जाय जैसा सर विलियम म्यौर साहब का बढ़ा दिया गया था ५ वर्ष रहने के एवज़ ६ वर्ष यहां रहें—एक वर्ष बढ़ाने को हम इस लिये कहते हैं कि एक वर्ष दुर्भिक्ष के उपद्रव के कारण यह कुछ कर नहीं पाये बिल्कुल ध्यान इन का इसी दुर्भिक्ष के इन्तिज़ाम से लगा था—इस लिये हमारे यहां ये ६ वर्ष रह कर तब बम्बई क्या समस्त हिन्दुस्तान के प्रधान शासन कर्ता कर दिये जांय तो यहां की प्रजा अत्यन्त प्रसन्न हो और अपना सौभाग्य समझै॥

लोग कहते हैं सिविलियन इनके शासन से प्रसन्न नहीं है

हम नहीं बिश्वास करते कि यह बात यावत् सिविलियन दल के लिये सच है—जो अपना कर्तव्य अच्छी तरह समझते हैं और उचित रीति पर उसे किया चाहते हैं उन से कोई गवर्नर नहीं नाराज़ हो सक्ता तब सर ऐंटोनी मेगडानेल की क्या जो कर्तव्य की परख के पूरे जौहरी हैं बरन जो स्वयं अपने कर्तव्य को बहुत अच्छी तरह समझते हैं—जिनके कामों से प्रगट है कि कर्तव्य का पालन कैसी बड़ी तारीफ़ की बात है—हां सिविलियनों में जो आलसी और खुद पसन्द हैं अपना काम यथोचित् न्याय पूर्वक नहीं किया चाहते यदि एंटोनी ऐसे राज रथ के सारथी की लगाम और चाबुक को कड़ी पावें और कभी २ चाबुक खा भी जांय और उसे बरदाश्त न कर उनकी शिकायत करें तो यह उक्त श्रीमान् की निन्दा नहीं बरन तारीफ़ है—अन्त को यहां की प्रजा की यही प्रार्थना है कि ऐसे उदार शासन कर्ता अधिक नहीं तो पूरे ५ वर्ष तो अवश्य यहां रहें—पर ऐसे हमारे भाग्य कहां कि यह सुख हमें प्राप्त हो कुछ नहीं तो बीच २ लोग इसी तरह के अफवाहों से हम लोगों के चित्त को दुखाते और सन्तापित करते हैं—सामान्य गवर्नर तो कितने आये और चले गये प्रजा ने अपना इतना पक्षपात किसी की ओर न प्रगट किया इससे हमारी बर्तमान कुत्सित दशा में संशोधन की कुछ आशा पाई जाती है तो हम लोग भी अपनी अनुमति प्रगट करने का साहस करते हैं नहीं तो हमारे लिये बांट में यह कहावत तो पड़ीही गई है "कोउ नृप होहि हमें का हानी । चेरी छोड़ न होउब रानी" ॥

कतिकी का नहान ।

कतिकी पूनो पास आरही है दूसरेही दिन होने वाली है—रेल से ४ स्टेशन जिसका किराया १० आना आते जाते सवा रुपया है उससे एक स्टेशन इधरही तक का किराया केवल नव आना है आने जाने के पूरे किराये में २ आने की किफ़ायत है—पांच २ सात २ कि कई

झुंड औरत और मर्द के देखे गये जो करीब बीस मिनिट तक बराबर झगड़ते रहे और आपस के "डिबेट" मुबाहिसे में ऐसे मशगूल थे कि पार्लियामेंट के मेम्बरों का भी अपने मुकाबिले हेच कर रहे थे–"भाई हमे तो ये दो आने अधिक देते बहुत गड़ाते हैं दो आने हमारे घर भर का एक दिन का भोजन है—क्या करैं हमे अब गंगा में कातिकी का नहान कल नहीं मिल सक्ता है–इस्से लाचार लोटा थाली गिरों रख रेल का किराया रुपया अठारह आने किसी तरह लाये हैं नहीं तो हम सब लोग पैदल पहुंच जाते—पहले से कुछ इरादा न था कि कातकी नहाने जांयगे कतवारू को जाते देख हमारे घर के लोगों को भी नहाने का हौसिला हो आया"–दूसरा बोला "यही तो बात है खटला साथ रहने से तो लाचार होजाना पड़ा अकेले होते तो क्या बात रही छिड़िक जाते हमारे लिये तो इतनी दूर आधे दिन की रास्ता है" तीसरा जो सुफ़ेद पोश था जिसकी बोल चाल से मालूम होता था कि यह सौ पचास रुपये की मातबरी रखता है बोला "अजी दो आने की क्या हक़ीक़त है जो देर से इसके पीछे सिर मार रहे हो एक आना कम देने से दो ढाई कोस पैदल चलना पड़ेगा भाई हम तो दसही आने का टिकट लेंगे" एक दूसरे जो लाठी में पनही टांगे लाठी कंधे पर धरे थे बोले "हम भी तुम्हारे से भागवान् होते तो क्या मुज़ाका था दो आने क्या दो रुपये कुछ न थे" बाहरी लोगों की स्थूल दृष्टि में यही खयाल जमैगा कि एक साधारण से पर्व में जगह २ लाख पचास हज़ार आदिमियों की भीड़ जुड़ जाती है तो मुल्क बड़ी खुश खुर्रम हालत में है जहां इतने बेफिकिरे पड़े हैं जिनको रोज़ सैर सपाटा की सूझती है–किन्तु इनका भीतरी हाल सोच जी भर आता है—वास्तव में जो वे अच्छी तरह खाने पीने से दुरुस्त रहते तो रेल के किराये में दो आने की कमी के लिये इतना न झगड़ते—फाके करेंगे पर पर्व में गङ्गा स्नान

को अवश्यही जांयगे—हमारे नव शिक्षित समझते हैं देश तरक्की कर रहा है इसी धुन में हम लोगों को इस गिरी दशा से उठाने को कानग्रेस, कानफेरेन्स आदि न जानिये कौन २ उपाय सोचते हैं किन्तु ये सब उपाय हमको ऊपर को उठाने की निरा खयाली पुलाव है - कितनों का मत है कि "इज्युकेशन" तालीम का सर्व साधारण में प्रचार पाना देश को ऊपर उठा देगा - हमारी समझ में इस पचास साठ वर्ष में जो विद्या का प्रचार अब तक हुआ है वह रुपये में एक पाई भी नहीं है—बंगाल और मन्दराज जहां बहुत पहले से अंगरेज़ी फैली और अंगरेज़ी भाषा वहां की मातृ भाषा की जगह होती जाती है वहाँ अभी सैकड़े में सात या आठ आदमी आबादी के हिसाब से पढ़े लिखे पाये जाते हैं तो हिन्दुस्तान के इस प्रान्त का क्या कहना जो हमेशा हर एक बातों में औरों के पीछे रहने का आदी हो रहा है आगे बढ़कर हाथ मारना जिसे आताही नहीं न आगे बढ़ जाने की हिम्मत इसे है—तालीम अभी मन्दराज, कलकत्ता, बम्बई, इलाहाबाद, लाहौर, लखनऊ, ऐसे दो चार बड़े २ शहरों में कुछ फैली है सो इतनी नहीं कि समाज में उस्का कुछ असार हुआ हो - हमारी भ्रष्ट और पतित समाज में पढ़े लिखे अभी केवल दाल में नमक हैं-जिन्हें तालीम हुई है उनकी आंख खुली तो अब हक्का बक्का हो गये हैं उन्हें कुछ समझही नहीं पड़ता कि हम कैसे रहैं, कैसे चलैं, तालीम पाये हुये अपने इस नये जीवन को कैसे संसार मे लै चलैं—कितनों को वह तालीम बन्दर के हाथ में मणि के समान हो गई है-उनके बर्ताव से यही साबित होता है कि तालीम बुरी चीज़ है-तो जो कुछ अब तक हुआ वह सब बाहरी बाहर समाज की आभ्यन्तरिक दशा ज्यों की त्यों वैसीही बनी है—दिहात और ग्राम में तो कहीं उस की छीट तक नहीं गई जिस्का नमूना हमारे इस कतिकी पूनो नहाने वालों के दास्तान से

ज़ाहिर है ॥

इस बात पर भी हमारी दृष्टि गई कि उन नहाने वालों के गरोह में जो स्त्रियां थीं वे गाजर मूली की तरह मर्दों के साथ घसिटती चली जा रही थीं-उस देश की भलाई की कब कुछ आशा की जा सक्ती है जहाँ की स्त्रियां ऐसी बेकदर हीन दशा से रक्खी जाती हैं-ये भी उन्हीं विलाइत की नाज़ुक रोशन ज़मीर परिस्कृत मस्तिष्क वाली, लेडियों की बहनें हैं जिन लेडियों की सुशिक्षत जाति और सुसभ्य देशों में धूम है—यदि इन की हीन दशा से इनको निकाल मनुष्य की कोटि में ये रक्खी जांय तो जैसा हम पहले लिख चुके हैं कि क्या एनीविसेंट और जार्ज इलीयट सी कितनी इन में न निकलें-पर यहां तो ये गाजर मूली कीसी बेकद्र हैं और हमारे समान इनको वही सब बात दीगई है इस्का खयाल कभी किसी को होताही नहीं तो क्या किया जाय-सतीत्व और सच्चरित में अवश्य विलाइत की परिस्कृत मस्तिष्क वाली लेडियों को कहो लात मारें पर बुद्धि वैभव में यहां लौ कम हैं कि उन के हर एक काम खयाल और रुचि में गंवारपन बरस रहा है-अस्तु स्त्रियों को कौन झींखे जब पुरुषों का यह हाल है कि वे अपनी वही पुरानी लीक पीटते चले जा रहे हैं ज़माने में क्या२ हेर फेर हुये इस्का खयाल कभी उनको ख़ाब में भी नहीं होता—अफसोस हमारे तालीम याफ्ता भी उलटाही सोचते और चलते हैं—एक तो हमारे योंही दुर्दिन हैं दूसरे हमारे साथ सहानुभूति दरसाने वालों के "Views" खयाल भी कुछ उलटेही हैं-जो दुरुस्ती के सामान तक हमें लेजाया चाहते हैं—हमारी इस समय वह दशा है कि दवाखाने को रोगी के पास जाना चाहिये न कि रोगी चल कर दवाखाने के पास खुद आवे—हज़ार कोई कितना ही यत्न करै हम उस प्रकार के रोगी नहीं हैं कि आप से चलकर दवाखाने के पास जांय ॥

एक गोरख धन्धा।

इस में सन्देह नहीं अंगरेज़ी राज्य को हिन्दुस्तान में अटल रूप से रहने के सब आसार नज़र पड़ते हैं—अस्तु इस से हमें यहां इस लेख में कोई सरोकार नहीं अटल रहो या न रहो किन्तु जो २ बातें ब्रिटिश शासन के सम्पर्क से पैदा हुई हैं उन का मिटना दुशवार है—जहां देखिये वहीं जिस विषय को सोचिये उसी में शारीरिक मानसिक या भौतिक पदार्थ सबों में अंगरेज़ी रूप रंग चढ़ गया है—जिस में देखो उसी में अंगरेज़ी की बू आती है और ऐसी बू आती है कि हमारे पुराने रूप रंग से हमारे देश वालों को घृणा हो चली है—जिसको अलग २ बिस्तार रूप से जो हम दिखलाया चाहें तो एक नम्बर क्या साल भर के सब नम्बर काफ़ी न होंगे और लेख जो उस में होंगे पिष्ट पेषण से भरे हुए नितान्त अरोचक होंगे—किन्तु यह गोरख धन्धा जो मैं आप के सामने सुरझाने को इस समय रखता हूं कदापि अरोचक न होगा बल्कि जिस विषय को लक्ष्य कर लिख रहा हूं वह सर्वथा सत्य है—हिन्दुस्तान के निवासियों की भाषा बदल जाय, बैठना, उठना, रहन, सहन, पोशाक, सब बदल जाय पर वे फिर भी इसी भूमि और यहीं की आबहवा के कहलावेंगे—किन्तु भारतवर्षीय और इंगलैण्डीय व्यक्ति दोनों प्रेमबद्ध हो जब एक हो जाते हैं तो उनके प्रेम वृक्ष का जो फल लगेगा उसे कौन अपनाएगा भारत या इंगलैण्ड—दावा दोनो का उस्पर बराबर का है और कठिनाई यह कि वह फल अविभज्य है—ऐसा नहीं है कि दोनो उसे आधा २ कर अपने २ हिस्से को बांट लें—समूचे का समूचा चाहो भारत माता ले चाहो भारतेश्वरी लेलें दोनो का जी यही चाहेगा कि मैं समूचा पाऊं—इस बात पर एक दृष्टान्त मुझे याद आया है—दो स्त्रियां एक बालक के लिये लड़ने लगीं एक

कहती थी यह मेरा जाया है दूसरी कहती थी यह मेरी गरम कोख से हुआ है तू इस पर हरगिज़ हाथ न लगा—दोनो लड़ते २ क़ाज़ी के पास गईं क़ाज़ी साहब महात्मा की बुद्धि दोनो का बयान सुन पहले तो हैरत में आई अकिल ठिकाने न रही पर पीछे से अपनी बुद्धिमानी और युक्ति से ऐसा न्याय किया कि इन दिनो के गौरांग जजों को भी वह नहीं आता—क़ाज़ी ने हुक्म दिया यदि तुम दोनो नहीं मानती हो तो इस लड़के के दो टुकड़े कर दिये जांय आधा तुम लो आधा यह— इस न्याय को सुन जो सच्ची मा थी बोल उठी कि मैं बाज़ आई—यह बालक इसी को दे दिया जाय - जो झूठी माता बनती थी उसने कहा क़ाज़ी साहब का बोलबाला रहै लड़का सिर से पैर तक चीर दिया जावे सब अंगों का आधा २ दोनों को दे दिया जावे—यह सुन क़ाज़ी ने झूठी मा को कारागार के सिपुर्द किया और बालक सच्ची मा को दे दिया॥

जिस हिन्दू या मुसल्मान ने अंगरेज़ी बीबियों के फन्दे में फंस अपना मत छोड़, सनातन की रीति नीति से मुंह मोड़, अपने भारतवासी भाइयों की रिश्तेदारी की मुहब्बत तोड़, गोरी बीबी से व्याह कर लिया है उन से जो लड़का या लड़की पैदा होगा वह हिन्दुस्तानी कहलावेगा या अंगरेज़—पहले तो अचरज यह है कि जहां कहीं ऐसे सम्बन्ध देखने या सुनने में आये हैं वहां बहुधा प्रकृति देवी कुछ ऐसा विरोध करने लगती हैं कि सन्तानही नहीं होते—प्रकृति का विरोध ऐसाही समझिये जैसा कोई इंगलिस्तान में अंगूर या आम पैदा किया चाहे जहां उनका पैदा होना कठिन नहीं बरन असंभव है—जहां कहीं ऐसे लड़के पैदा हुये भी हैं तो जिये नहीं-यह तो शारीरिक उपाधि हम ने दिखलाया—अब मन का सुधारना इस से भी और अधिक कठिन है मैं समझता हूं इस का सुधारना वैसाही है जैसा कोई मोम और पत्थर को मिला कर एकही पदार्थ किया चाहे—हिन्दुस्तानी

खयाल हिन्दुस्तानी रिवाज़ और दस्तूर अपनी ओर मन को खींचा चाहते हैं– अंगरेज़ी तरीके दूसरी ओर–मन ऐसे झकोर में पड़ता है ऐसे भंवर में हिलकोरे खाता है कि उस का स्थिर रखना या एक किनारे लगाना दुस्तर है–ऐसे समय बुद्धिही एक चतुर मल्लाह बनती है वह चाहे उसे जिस पार लगावे–मन तब दोनों किनारे का नहीं हो सक्ता चाहो इस किनारे पर जा लगे या उस किनारे पर—उस मन का आधार वह फल जिस का किस्सा हम ऊपर गा आये हैं दोनो किनारे का कभी न होगा अन्त को वह किस किनारे का होकर रहेगा इस गोरख धन्धे को सुलझाना ज़रा काम रक्खा है–जिस भूमि में वह मन तथा फल जा लगेगा वह उस की सौतली मा है उस की पहली मा उसे किस आंख से देखती होगी इसे आप सोच रखियेगा, मैं फिर कभी को आप से आकर मिलूंगा॥

वे दिन भारत के सुदिन के थे।

जैसा किसी घर में जिस में दस आदमी हैं और दसो मिल अच्छी चाल चलन, योग्यता, विद्या आदि उत्तम गुणों के उपार्जन से उस घराने की प्रतिष्ठा और गौरव को बढ़ाते जाते हैं ठीक यही हाल मुल्क का है। जिस मुल्क की तरक्की देखने में आती है वहां के एक २ आदमी अलग २ अपने करतव्य कर्म में तत्पर रह कर देश की सम्पत्ति को बढ़ाते जाते हैं–भारत के सुदिन भी तभी थे जब यहां के हर एक आदमियों को अपने २ जाति या पद के काम में पूरी नेष्ठा थी–जैसा ब्राह्मणों का तपोबल और बुद्धि, क्षत्रियों का बाहुबल और वीर्य्य, वैश्यों का कृषि कर्म और वाणिज्य, शूद्रों की सेवा वृत्ति, ये चारों मिल कर भारत की उन्नति करने में दत्तचित्त और कटि बद्ध थे–अब इन चारों में उनके २ विशिष्ट कर्म बिल्कुल न रह गये सेवा जो शूद्र का कर्म था सब के ऊपर रहा—इन चारों में ब्राह्मण विशेष दोषी ठहराये जाते हैं अब भी इन में तपस्या

और विद्या आजाती तो ये आप तो सब के सिरताज हैं।तेही देश को उन्नति के शिखर पर चढ़ा देते किन्तु दक्षिणा में इनका ऐसा दांत बूड़ रहा है कि इन से कुछ होही नहीं सक्ता—ये अपने स्वरूप को ऐसा भूल गये हैं कि मुहर लुटाय कोयले की कदर कर रहे हैं—अस्तु भावी प्रबल है किस का बश है भारत के अब फिर वे सुदिन काहे को कभी आ सक्ते हैं॥

गायत्री महत्व।

ब्राह्मणों की गिरी दशा का प्रसङ्ग आजाने से प्रसङ्ग प्राप्त गायत्री का महत्व दिखलाना उचित मालूम होता है—आहा गायत्री यह तीन अक्षर शुद्ध ब्राह्मण के कान में आजाने से इस के महत्व का जैसा भाव मन में उत्पन्न होता है वह क्या अक्षर और शब्दों के द्वारा कहा जा सक्ता है—ब्राह्मणों का सर्वस्व, ब्राह्मणता का एक मात्र सहारा, इस गायत्री के बड़प्पन और महत्व तथा गौरव का आविष्कार केवल इसी श्लोक से अच्छी तरह स्पष्ट है "गायतात् त्रायते यस्माद्गायत्री साउदाहृता" केवल गान करने से अर्थात् पुनः पुनः पाठ मात्र से जो रक्षा करे वह गायत्री है—मनु महाराज ने भी लिखा है :—

ओंकारपूर्विकास्तिस्रो महाव्याहृतयोमताः।
त्रिपदा चैव सावित्री विज्ञेयं ब्राह्मणो मुखम्॥

ओंकार पूर्वक भूर्भुवः स्वः ये तीन व्याहृति, अविनाशी ब्रह्म की प्राप्त कराने वाली तीन पद की गायत्री, ब्रह्म अर्थात् वेद का मुख है—इस लिये कि पहले गायत्री जान कर तब वेद का पठन आरंभ किया जाता है—अथवा गायत्री के निरन्तर अध्ययन और जप के द्वारा पाप रहित हो ब्रह्मज्ञान में प्रकर्षता पाये हुये को मोक्ष पद की प्राप्ति सहज होती है॥

योऽधीतेऽहन्यहन्येतां त्रीणि बर्षाण्यतन्द्रितः।
सब्रह्मपरमभ्येति वायुभूतः खमूर्तिमान् ॥

जो प्रति दिन आलस्य रहित हो प्रणव व्याहृति पूर्बक तीन बर्ष तक बराबर गायत्री का पाठ अर्थात् जप करता है वह शरीरपात होने पर भी ब्रह्म मूर्ति हो वायु के समान काम चारी होता है ॥

सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्य वहिरेतत्त्रिकं द्विजः।
महतोप्येनसोमासात्त्वचेवाहिर्विमुच्यते ॥

प्रणव और व्याहृति पूर्बक गायत्री का जप कहीं घर के बाहर किसी जलाशय के समीप बड़े २ पापों से ब्राह्मण को वैसही छुटा देता है जैसा केचुल से सांप छुट जाता है ॥

एतदक्षरमेतांच जपन्व्याहृति पूर्बिकाम्।
सन्ध्ययोर्वेद बिद्विप्रो वेदपुण्येन युज्यते ॥

ओंकार व्याहृति और गायत्री का जप दोनो समय प्रातःकाल और संयंकाल वेदज्ञ ब्राह्मण के लिये वेद पाठ के पुण्य का देने वाला है— इत्यादि अनेक बचन धर्म ग्रन्थ तथा स्मृतियों में ऐसे मिलते हैं जिस से गायत्री की महिमा जहां तक लिखी जाय सब कम होगी— गायत्री से बढ़ कर दूसरी कोई ऐसी मीरास ब्राह्मण के लिये हई नहीं बालकपन से आमरणान्त जिस्का वारिस वह रहता है—ब्राह्मण का जैसा नित्य सम्बन्ध गायत्री के साथ है वैसा नित्य सम्बन्ध का दूसरा उदाहरण कहीं ढूंढने से भी कम मिलेगा—सो अब इन दिनों सौ ब्राह्मणों को इकट्ठा करो तो कदाचित् १० मिलैंगे जो गायत्री जानते हों दस में एक होंगे जो नित्य उस्का अभ्यास अथवा जप करते होंगे—ब्राह्मणों से हमारा लक्ष्य उन पर है जो ब्राह्मणी वृत्ति करते हैं और ब्राम्हण के कुल में

पैदा होने का फायदा उठाते हुये गुलछर्रे उड़ा रहे हैं—जो ब्राह्मण वृत्ति के द्वारा माला माल हैं न कि इस लिये ब्राह्मण हैं कि ब्राह्मण के घर में पैदा हुए हैं तब तपस्या के क्रम पर जो अनेक संयम हैं उस में आरूढ़ रह हर तरह का क्लेश अपने ऊपर उठा रहे हों—जिन्हों ने यह समझ रक्खा है कि हम ब्राह्मण हैं तब हमें हर तरह का क्लेश सहनाही हमारी शोभा और तारीफ है न कि ऐसा जिन्हों ने समझ रक्खा है कि हम ब्राह्मण हैं तो हमें हर तरह का ग्राह्य अग्राह्य खज्ज अखज्ज सब माफ है—जिन्हें दान कुदान खाद्य अखाद्य से परहेज़ है कर्म में पूरी नेष्ठा है ऐसे कहीं दस में एक भी शुद्ध ब्राह्मण न मिलेंगे—जिन्हों ने वृत्ति छोड़ रक्खा है और दान पात्र अपने को मानतेही नहीं उन्हों ने तो मानो एक तरह पर ब्राह्मणता का अपना दावाही तरक कर रक्खा है—"धर्मस्यनिर्व्याजाता" उन्हीं के लिये कहना चाहिये—धर्म में वैसे धर्म की प्रशंसा है जो निर्व्याज अर्थात् बिना किसी प्रतिबन्ध के किया जाय—दान पात्र जो ब्राह्मणता निबाहै तो उस्की कोई तारीफ नहीं क्योंकि उन के लिये ब्राह्मणत्व का धर्म निबाहना एक बहाना है उसी बहाने से उन की जीविका है पर तारीफ उस्की अलबत्ता है कि ब्राह्मणी वृत्ति न कर विद्या और तपश्या से सब भांत सम्पन्न है—बिमल हिन्दू धर्म को गन्दा और घिन के लायक न जानिये कब से वृत्ति पुजाने वाले ब्राह्मणोंही ने कर रक्खा है—अपने मतलब की ऐसी २ गढ़न्त गढ़डाला जिस से साफ २ ज़ाहिर होता है कि यह सब कल्पना पुराने आर्य-ऋषियों की कभी होही नहीं सक्ती—अपनी गढ़न्त पुराने ऋषियों के सिद्धान्त के साथ ऐसा मिला दिया है कि उस में से चोखे सिद्धान्तों को अलग कर लेना सहज काम नहीं है और उस सब को सनातन के नाम से चला दिया—न केवल हिन्दू धर्मही को गन्दा कर दिया बरन आप भी दिन २ ऐसा खन्दक में गिरते जाते हैं कि उन ऋषियों के नाम को

जिन के वंश में वे अपने को कहते हैं शरम दिलाते हैं—उन ऋषियों की आत्मा को इनके कुत्सित आचरण देख न जानिये कितना मर्म ताड़न होता होगा—मनु के इस श्लोक का लक्ष्य ऐसेही ब्राह्मणों पर है॥

गायत्रीमात्रसारोपि वरं विप्रः सुयंत्रितः।
नायंत्रितस्त्रिवेदज्ञो सर्वाशी सर्वविक्रयी॥

केवल गायत्री मात्र जानने वाला ब्राह्मण अपने को खूब कसेहो वह श्रेष्ठ है तीनों वेद का जानने वाला भी सब कुछ खा पी लेता हो वह श्रेष्ठ नहीं है—हमारे पण्डित इन दिनों ऐसेही देखे जाते हैं कि उन में विद्या दूसरों के बताने के लिये है स्वयं तदनुसार चलने के लिये नहीं है—दूसरी बात एक यह भी यहां पर कहने लायक है कि इन दिनों के बहुत चेला मूड़ने वाले जैसा गोकुल के गोसांई और रामानुजी इत्यादि गायत्री के महत्व को और भी घटा दिया उन के दिये हुए मंत्रों के आगे गयात्री की कोई कदरही न रही—गायत्री का महत्व फिर पहले का सा हो जाना भी भारत के पुनरुत्थान का हेतु है॥

अपराध और दण्ड।

सज्जनों के स्थापित सुचाल के नियम के अनुसरण करने में जो त्रुटि होती है उसे अपराध कहते हैं। अपराध कर्ता को त्रुटि के कारण जो कष्ट सहना पड़ता है उसे दण्ड कहते हैं। नीति शास्त्र में भी अपराधियों को दण्ड देने की बिधि तो है। पर तौ भी कई एक अपराध इस प्रकार के होते हैं कि नीति शास्त्र व क़ानून के अनुसार उन का दण्ड बिधान उचित नहीं जान पड़ता है—जैसे कृतघ्नता यद्यपि सब अपराधों से बढ़ के गिनी गई है तथापि नीति अनुसार इस का दंड नहीं मिल सक्ता है। ऐसे २ अपराधों का तो प्रत्यक्ष दंड देखने में नहीं आता है पर लोग बिश्वास रखते हैं कि इस लोक में नहीं तो परलोक

में अवश्यही कृतघ्नता का फल भुगतनाही पड़ेगा। और २ सब पापों तथा अपराधों का तो विद्वान् लोगों ने प्रायश्चित भी रक्खा है पर कृतघ्नता ऐसे पाप का कुछ प्रायश्चित्त भी नहीं लिखा गया। यथा :—"सर्वस्य निष्कृतिरस्ति कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः" अर्थात् और दूसरे पापों से छुटकारा पाने का प्रायश्चित भी है पर कृतघ्नता से छुटकारा नहीं मिल सकता है॥

अब देखना चाहिये कि दंड बिधान करने का अधिकार किस के हाथ मे सौंपा गया है? इस प्रश्न के उत्तर में यही कहना उचित है कि राजा के हाथ में। नीति शास्त्र के नियम इसी लिये बने हैं कि राजा को बतलावें कि किस प्रकार के अपराधी को कैसा दंड दिया जावे—अपराध दो प्रकार के हो सकते हैं एक तो अन्तःकरण से और दूसरे कायिक व वाचिक। अन्तःकरण से आचरित अपराधों को तो ईश्वर के अतिरिक्त और कोई जान नहीं सकता। पर कायिक और वाचिक अपराधों को समाज के लोग जान सक्ते हैं। इसी कारण अन्तःकरण कृत अपराधों का दंड तो ईश्वरही से मिलता है और कायिक वाचिक आदि अपराधों का दंड राजा भी दे सक्ता है। इस प्रकार से कोई भी अपराधी बिना दंड पाये नहीं रहता है अथवा उसे अपने अपराध के लिये क्षमा मांगनी पड़ती है। पर अपराधियों पर क्षमा कर उन को दंड न देना एक प्रकार के धर्म में गिना जाता है। क्षमा का तो अर्थही अपराध का मार्जन है॥

बिचार का अवसर है कि दंड का बिधान नीति शास्त्र में आवश्यकही क्यों समझा गया। कोई २ लोगों का ऐसा मत है कि अपराध को दंड उस के अपराध के लिये नहीं दिया जाता बरन औरों की चितावनी के लिये दिया जाता है। यदि औरों को चितावनी देना आवश्यक न होता तो अपराधी को दंड देने की आवश्यकता न पड़ती।

इसका दृष्टान्त उस न्यायाधीश के वाक्यों से स्पष्ट होता है जिसने कि एक भेड़ के चुराने हारे को चोरी का दंड देते समय कहा कि "तुम्हें भेड़ चुरा लेने के लिये दंड नहीं दिया जाता है पर इस लिये दिया जाता है कि अब भेड़ चोरी न जावें" अर्थात् भेड़ के चुराने वाले को इस लिये दंड दिया गया कि फिर अब और दूसरा कोई दंड के भय से इस के समान आचरण कर पुनः अपराधी न ठहरे। पर इस में तो लोग आपत्ति करते हैं कि औरों के लाभ के लिये किसी एक मनुष्य को क्लेश भुगताना उचित नहीं है इस कारण इस बिचार से दंड विधान उचित नहीं है कि इस से औरों को लाभ होगा॥

कुछ लोगों का तो यह मत है कि जिस अपराधी को कि दंड दिया जाता है सो दूसरे के लाभ के लिये नहीं किन्तु उसी के चाल के सुधारने और भविष्य में उसी को लाभ पहुंचाने के लिये किया जाता है। इस मत के अनुसार प्राण दंड की आज्ञाही नहीं दी जा सक्ती क्योंकि अपराधी को प्राण दण्ड देने में फिर उस के भविष्य सुचाल के सुधरने की संभावना कहां रही। इसी प्रकार से और भी कितने प्रकार के दंड इस मत के अनुसार विधान करने से निष्फल होंगे॥

मुख्य करके यह तो कहाही जा सक्ता है कि वास्तव में साम समझाने आदि से जितनी अपराधी की चाल सुधारी जा सक्ती है तितनी दंड देने से नहीं की जा सक्ती। इस कारण किसी अपराधी की यदि कोई चाल सुधारना चाहे तो उसे समझा बुझा के उस के दोष दिखला देवे तो शीघ्र सुधर जाने की आशा है पर दण्ड देने से अपराधी के और ढीठ हो के बिगड़ पड़ने की दशा आन पहुंचेगी॥

तीसरे कुछ लोगों का यह भी मत है कि अपराधी पर दंड विधान औरों को उचित नहीं है क्योंकि किसी अपराध के लिये दंड देना

तो उस अपराध के कारण हानि होने का प्रतीकारही चुकाना मात्र है। पर प्रतीकार चुकाना सज्जनों के आचरण के बिरुद्ध है इस कारण अपराधी को अपकार का दंड भी देना सदाचरण के बिरुद्ध है॥

बहुत से लोगों का बिश्वास है कि अपराधी को अपने अपराध का यदि दंड औरों से न मिला तो क्या—वास्तव में उसी के अन्तःकरण में पश्चात्ताप रूपी बड़ा कड़ा दंड तो उसे भुगतनाही पड़ता है। पर तौभी कुछ लोगों का मत है कि अपराधियों का अन्तःकरण पाप करते२ इतना बिगड़ जाता है कि फिर उस का सुधरना संभव नहीं जान पड़ता किन्तु चित्त में सुधराव का नैराश्य होता है तो ऐसे लोगों के पक्ष में दंड बिधान करना अवश्य कर्तव्य सा जान पड़ता है॥

द्वेष आदि के कारण जो किसी अपराध का पलटा चुकाया जाता है वह प्रतीकार के समान है जिसका चुकाना अनुचित है पर जब एक न्यायाधीश किसी अपराधी को उसके किये अपराध का दंड देता है तो उस प्रतीकार के चुकाने में ईर्षा व द्वेष नहीं रहता है। मनुष्य को अपनी करनी का फल तो भुगतनाहीं चाहिये और सो भी इस भांति से कि केवल उसी पर भुगतना पड़े ऐसा नहीं बरन उसके साथ वा पलटे में और किसी को भी निरपराधही दंड भुगतना पड़े। इस नियम के अनुसार पाठशाला के बिद्यार्थियों के अपराध में धन दंड करना सर्बथा भूल है। नीति के अनुसार सब को वैसा आचरण भी करना चाहिये। और नीति के नियम भी ऐसे दृढ़ रक्खे जावें कि उनका उल्लङ्घन कर्ता अपने मन में यह भाव न ला सके कि इस के बिरुद्ध बर्ताव करने से मुझे कुछ हानि न पहुंच सकेगी॥

इस कारण दंड देने की आवश्यकता का यह जो नियम है कि जिस मनुष्य ने अपराध किया उसका फल उसी को भुगतना पड़े सो ही मुख्य है॥

सूक्ष्म बिचार करने से ज्ञात होगा कि और सब नियम वास्तव में इसी के अन्तर्गत हैं। यदि दंड बिधान का मुख्य तात्पर्य नियम उल्लंघन करने पर अवश्यही विधेय है तो इस के अनुसार अपराधी का चाल चलन भी सुधर सकता है तथा और २ ऐसे नियमोल्लंघन के अपराध फिर न किये जा सकेंगे। और सच मुच में भी जब तक कि यह बात विदित न रहे कि नियमही का उल्लंघन करना एक अपराध है तब लों दंड बिधान से न तो चाल सुधर सक्ती है और न आगे को ऐसे अपराध किये जाने से रोके जा सक्ते हैं। अपराधी को अपने आचरण पर तभी पछतावा होगा जब कि वह देख लेगा कि हमारे नियमोल्लंघन का स्वाभाविक परिणाम हमें दण्डही भुगतना पड़ता है। अन्यथा अपराधीं को अपने किये अनुचित आचरण पर पछतावा होना दुर्घट सा जान पड़ता है। और इसी प्रकार से और २ लोगों को भी निश्चय जान पड़ता है कि नियमोल्लंघन श्रेयस्कर न होने के कारण त्याज्य है॥

दंड विधान के विषय में बिचार करने से यह निर्णय करना विशेष आवश्यक है कि मनुष्य कहां तक अपने कृत कार्य का उत्तर दाता हो सक्ता है। बहुत से लोग दंड से बचने के लिये यह बात कहते हैं कि अपराधी का ध्यान अपराध करने समय ठिकाने न था—इस से यह अपराधी का दोष नहीं हो सक्ता है कुछ लोग तो यह भी कहते हैं कि प्रत्येक अपराध ध्यान के न ठिकाने रहनेही से किये जाते हैं इस कारण अपराधी उन का उत्तर दाता नहीं है—इस लिये हमें चाहिये कि अपराधी को दंड न देके उसके ध्यान के बिचलित होने का उपाय कर उसे स्थिर रखने का प्रयत्न उससे करावें॥

इस बिचार के अनुसार जानना चाहिये कि मनुष्य के कार्यों के जो फल भले बुरे होते हैं उन सब का कारण भिन्न २ दशा हैं कि जैसी दशामें मनुष्य आ पड़ता है वह विवश होके जब स्वयं कुछ नहीं कर सक्ता तब

दशा जैसा कराती है वैसा करना पड़ता है। यह बिचार सही नहीं है क्योंकि जब मनुष्य भली भांति जानता रहता है कि हम यह कार्य भला या बुरा कर रहे हैं तो निश्चय है कि यह उस के दशा के नहीं वरन उस के आचरण के अनुसार है। और इस आचरण को छोड़ के और किसी पर कार्य के भले बुरे होने की प्रशंसा वा निन्दा नहीं निर्भर रह सक्ती है॥

पागलपने की तो बातही न्यारी है क्योंकि उस दशा में कार्य करते समय कर्ता अपने से बाहर रहता है और उस को यह विदित नहीं रह सक्ता कि वह क्या कर रहा है अलबत्ता सरेख मनुष्य की भी कई एक दशा ऐसी भी हो सक्ती है जिस में कि वह अपने कृत कार्यों का उत्तरदाता नहीं हो सक्ता है। बहुत से दोषी तो अज्ञान के कारण निर्दोष कहे जा सकते हैं पर अज्ञान भी कई ऐसे हैं जो दूषणीय हैं अर्थात् मनुष्य अपने को ऐसी अज्ञान की दशा में ला रक्खे जिस से कि ब-चना शक्य है और जिस दशा में कि वह अपनी असावधानता वश गिरता है। जैसे कि मदिरा पीके उन्मत्त होना इस उन्मत्त हो जाने पर अज्ञान की दशा में जो मनुष्य पड़ता है तथा उस के बश हो अनुचित कर बैठता है तो इस अनुचित कार्य का उत्तरदाता कार्य कर्ताही होगा॥

जब मनुष्य किसी प्रवृत्ति के बश होके कुछ अनुचित कर बैठता है तो यह दोष उतना अधिक नहीं हो सक्ता जितना कि दोष उस का यह होगा कि उस ने ऐसे प्रवृत्ति दायक कार्यों वा दशाओं के बीच अपने को ला छोड़ा है॥

जब कि एक कुकर्म किया गया और उसके बुरे फल की भोगने की दशा आन पहुंची तब मनुष्य के मन में जो सन्ताप होता है वह पश्चात्ताप कहलाता है–पश्चात्ताप का मूल यही है कि मनुष्य के कार्य तथा विवेक भिन्न २ रहते हैं यदि विवेक अनुसार कार्य किया जावे तो पश्चात्ताप का सन्ताप भोगना

न पड़े। इसी कारण से निर्विवेकी होना दोष है। तथा "उतावली करनेवाला पीछे पछताता है" यह कहावत भी उसी मूल से निकली है। अर्थात् शीघ्रता से कार्य करने वाला पूर्वापर का अनुसन्धान नहीं कर सक्ता है सो परिणाम बुरा होने से चित्त को सन्ताप होता है। इस कारण कार्य को भली भांति बिचार के करना चाहिये अन्यथा अविवेक रूपी अपराध बन पड़ेगा। पश्चात्ताप रूप दुख से तो लोग आगे को अपने निर्विवेकी आचरण को सुधारने का यत्न करते हैं। तथा सुधार भी ले सक्ते हैं। पर कुछ लोग तो स्वभाव से भी ऐसे दुष्ट होते हैं कि कैसा भी कुकर्म वे कैसे भी निर्विवेक के साथ क्यों न करें तोभी उन्हें पश्चात्ताप जनित खेद नहीं होता है। जैसे कि ठग लोगों को बहुधा अपने कृत अपराध का पछतावा नहीं होता है। ऐसेही अपराध निरन्तर करने वालों को यद्यपि आरंभ में कुछ पश्चात्ताप होता है तौ भी पीछे घटते २ कभी निर्मूल भी हो जाता है॥

इस कारण से जिन को कि पश्चात्ताप रूपी दुख अपने कुकर्म के कारण नहीं भुगतना पड़ता है उन अपराधियों को दंड देके दुराचरण रोकने के लिये दंड विधान करना आवश्यक है। पर यह भी ध्यान रहना चाहिये कि जिस अपराधी को पश्चात्ताप रूपी दंड मिल गया है उसे पुनः दंड देना अनुचित होगा। पर यह बात निश्चय कैसे हो सकती है कि किसको पश्चात्ताप रूपी दंड मिला है वा नहीं। क्यों कि कोई किसी के चित्त की बात तो जान नहीं सक्ता तब किसी को पश्चात्ताप रूपी दंड के अतिरिक्त भी दंड दिया जा सक्ता है॥

अतएव किसी अपराधी को अपने आचरित अपराध के फल बिना भुगते छुटकारा मिलना न चाहिये॥

हरि मङ्गल मिश्र

पैसा।

पहले तो इस पैसे का नामही सुन हमारे पढ़ने वाले शंकित होंगे कि बाज़ारू भिखमंगों की तरह आज इस ने कहां की पैसा २ रट लगाई है—कितने कहेंगे ईश्वर कुशल करे यह कैसा पैसा लेकर आया है पैसा २ कर क्या कोई चन्दा वसूल किया चाहता है क्या—कितने जिन्हों ने बरणमाला से दद्दा की बरतनियाही गायब कर रक्खा है समझैंगे कि यह पैसे वाला है पैसे की जो रट लगाए है इस से मालूम होता है पैसा देने को हमें बुला रहा है—याद रखिये मैं पैसा देने या लेने नहीं आया बरन इस पैसे की करामात आप को बतलाने आया हूं कि इस में क्या २ जादू है—और भी न किसी खास पैसे का विवरण सुनाने आया हूं मद्दूसाही चेहरेसाही बालासाही गोरखपुरी आदि हज़ारों किस्म के पैसे चल गये हैं कहां तक गिनावें मुझे इन झगड़ों से क्या काम, मैं शर्राफ़ नहीं हूं जो एक २ किस्म के पैसों का ताव भाव आप को बतलाऊं—इन में चाहो जिस एक किस्म के पैसे को आप ले लीजिये—एक वह भी पैसाही था जिसे गंगा में डूबते हुये हुमायूं को बिहिश्ती ने अपने मशक के वसीले बचाय उन से बर मांग आधे दिन के लिये उसी मशक के चमड़े का पैसा चलाया था और चाम की चकती चलाय इतना पैसा पैदा कर लिया कि उस के पुश्त दर पुश्त वह पैसा न चुका—लोग एक२ पैसा जोड़ अचक माया रख जाते हैं कि हमारे पोते दर पोते चैन उड़ावैं मगर उन से चलते बना तो वह पूंजी कायम रही नहीं तो बीचही में बम्बोल गये—झगड़े की जड़ ज़र ज़मी न ज़न इन्ही तीन को लोगों ने कायम किया है उन में भी ज़र अर्थात् पैसे को सब से पहले गिनाया है—तात्पर्य यह कि संसार में हर एक चीज़ का बनाने या बिगाड़ने वाला यही पैसा है—इस पैसे ने क्या २ नहीं कर डाला पैसा ही है जिस ने हिन्दुस्तान को सोने की चिड़िया बनाय किस २ मुल्क

के आदमियों को यहाँ नहीं बुलाया और अपने पैरों से यहां की धरती खूंदते हुये जो देश सोने फूल फूला था उसे खार में मिला दिया—यह पैसाही है जिस ने कौरव पाण्डवों को जुझाय हिन्दुस्तान से बीरों को निर्बीज कर डाला—यह पैसाही है जिस ने महमूद गिज़नवी के १६ हमले यहां कराये सच है—इस की लालच ने किसे २ यहां नहीं घसीटा और ठोकर खिलाया—यह पैसाही है जो पढ़े लिखे अथाह बुद्धिवालों से कुन्देनातराश तुन्दिलों की खुशामद करवाता है—पैसेही के लिये बड़े से बड़ा इमतिहान पास किये हुये दर २ भटकते फिरते हैं और चपरास-गीरी तक की नौकरी उन्हें नहीं मिलती—पैसे की गरमी का कुछ निरा-लाही ढंग है जिस की गरमी निकल जाने से हाथ पाव आंख नाक आदि इन्द्रियों से सब भांति अबिकल शरीर रह कर भी एक क्षण में वह और का और हो जाता है—"अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव ह्यन्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत्"—हमारे एक मित्र ने इस पैसे की कुछ नई गढ़न्त गढ़ा है जिसे हम यहां आप को सुनाते हैं :—

गर हो न पैसा पास । नंगे भूखे फिरैं उदास ॥
पैसा मिल जावे जो चार । पूरन करैं पेट का गार ॥
पैसे रहैं पास जो चार । जोडू भी करलें वे प्यार ॥
पैसे की जग में है यारी । पैसा न हो तो ख़ारिहि ख़ारी ॥
पैसा करै तबाह । पैसा बढ़ावे जाह ॥
पैसे की वाह वाह । पैसे की वाह वाह ॥
दुनिया यह सब पैसे की । माल ख़ज़ाना दौलत खाना आला खाना
पैसे का ॥
माई बाप भाई बन्धु रिश्तेदारी पैसे की । काका चाचा बाबा दादा
नाना मामा पैसे के ॥

राज पाट और तख़्त ताज सब राजा परजा पैसे का। खाना पीना लेना देना भीड़ भाड़ सब पैसे की॥

दोज़ख भी दे यही। जन्नत भी दे यही॥
पदवी भी दे यही। इज्ज़त भी दे यही॥
पैसे की सब गावैं गीत। इसी लिये बन जावैं मीत॥
पैसा है यह जग में सार। पैसे वाले सब का सरदार॥
पैसे की वाह वाह। पैसे की वाह वाह॥

स०—प्र०—

नल दमयन्ती नाटक।

दूसरा गर्भांक—कलिकी पंचाइत।

(कलि सभा पति के आसन पर बैठे हुये काम क्रोध लोभ मोह आदि सभासद अलग २ अपने २ स्थान में स्थित)

कलि—आज आप लोगों को इस लिये मैंने बुलाया है कि मैंने एक बड़े साहस का काम करना सोचा है—आप लोग जानतेही हैं कि राजा नल ने कैसा अनुचित काम किया है कि बड़े२ शूर सामन्त महाबली राजा महाराजा तथा इन्द्रादि लोक पालों के रहते भी स्वयम्बर में दमयन्ती का पाणिग्रहण करते किंचित् संकोच मन में न लाया उसी का दण्ड मैं उसे दिया चाहता हूं—सो आप लोग अलग २ अपना २ पौरुष और बल बिक्रम बतलाइये कि कौन मेरी कितनी सहायता इस काम में दे सक्ता है—जिस में मैं निश्चिन्त रह नल से इस का बदला चुकाऊं॥

काम—यह कौनसी ऐसी बात है जिस के लिये आप ने इतना आडम्बर रचा है—चिड़की के शिकार के लिये शेर के शिकार का बन्दोबस्त आप कर रहे हो—क्षुद्र मनुष्य नल किस गिनती में है जब मैंने काम

के वेग में फसाय बड़ें २ को अन्धा कर रक्खा है—इन्द्र और अहल्या का किस्सा कौन न जानता होगा—स्त्री हो चाहो पुरुष हो कामातुर लज्जा और भय को जलांजलि दै अपना मनोरथ बिना पूरा किये नहीं रहते और वियोग में प्राण तक दे डालते हैं :—

अगम्यार्थं तृणप्राणाःपृषुस्थी कृतभीह्रियः।
शंभली भुक्त सर्वस्वाः जनाः यत्पारिपार्श्वका: ॥

विधाता की सृष्टि के कई करोड़ मनुष्य तो ऐसे हैं जिन्हों ने लाज शरम से मुंह मोड़ अपना सर्वस्व गणिका को समर्पण कर मेरे पूरे अनुयायी चेले बन बैठे हैं—हम ने धनदास के न जानिये कितने नाती पोतों को सब काम काज छोड़ मदनसेना की चरण सेवा का कैंडिडेट बना दिया—यह हमारीही प्रेरणा से वसुमित्र के पौत्र सागर चंद्र मदन लतिका पर मोहित हो घर खाली कर डाला—यहां तक कि अब ठिकरा ले दर २ भीख मांगता फिरता है पर उस मनोज मोदिनी के द्वार की डेहरी नहीं छोड़ता—हमने न जानिये कितने दुबे तिबे चौबे गर्ग गौतम शांडिल्य काश्यप भारद्वाज आजपेयी बाजपेयी को मदन मंजरी के घर का कुत्ता कर दिया—रोज़ दुरियाये जाते हैं तौभी उस का घर नहीं छोड़ते—जिस की मधुर मुसकियान पर मोहित हो अपना सर्वस्व सौंप बैठे—इत्यादि मेरे अनेक काम हैं हमारे रहते नल को अपनी बिजय पताका के आधीन करने की कोई फिकिर आप न करें ॥

क्रोध—क्या हम को भी अपनी करतूत का बखान करने की कोई आवश्यकता है—कुशल इसी में समझिये कि हमारा प्रादुर्भाव न हो हम चाहें तो क्षण भर में प्रलय कर डालें—हम इसी से शिव के तीसरे नेत्र में पड़े २ सोया करते हैं जिसे शिव जी महाराज तभी खोलते हैं जब सब संहार होना होता है—पंचबाण के तीखे बाण भी जहां थोथे

पड़ते हैं जो इन्द्र आदि लोकपालों को भी क्रोधाग्नि से क्षण भर में भस्म कर डाल सकते हैं—ऐसे दुर्वासा का हृदय मेरे बसने की दुर्ग भूमि है॥

दुर्गं कामाशुगेनापि दुर्लंध्यमवलम्ब्ययः।
दुर्वासो हृदयं लोकान् सेन्द्रानपि दिधिक्षति॥

महादेव जी ने काम को भस्म करने मे क्रोधही का सहारा लिया था—काम ऐसे ज़नख़ों की ताकत वहीं चल सक्ती है जहां रसीलापन है जो रसीली तबियत के नहीं हैं उन रूक्खड़ों को अपने कब्ज़े में लाने को हमी कारगर होते हैं—मेरा उत्पत्तिस्थान केवल मन है सही पर मैं बिजली के समान तुर्त सब इन्द्रियों में फैल विवेक और बिचार शक्ति को गाढ़ अन्धकार में गेर देता हूं—जब बिचार और विवेक न रह गया तब कोई कुत्सित कर्म कर डालना कौन अचरज की बात है—एक हमी अकेले आप का प्रयोजन सिद्ध करने को सब तरह समर्थ हैं क्या दरकार है जो अलग २ आप एक २ से सहायता मांग रहे हैं॥

लोभ—(हंस कर) ये दोनों अपना २ प्रभाव देर तक बकते रहे सुनते २ कान फट गया—यह नहीं जानते कि मैं इन दोनों का दादा गुरू हों—इन दोनो के प्रगट होने के लिये कारण और समय है युवा अवस्था बीत जाने पर काम का बेग सब भांति शिथिल पड़ जाता है—क्रोध भी निर्बल को आताही नहीं आया भी तो वह सर्वथा असमर्थ करी क्या सक्ता है—यह मैही हूं जो समय और कारण की कुछ अपेक्षा न कर आदमी को अपने बश में कर लेता हूं बल्कि बुढ़ापे में तो हमी सब के ऊपर रहते हैं—लिखा भी है "तृष्णैका तरुणायते" काम और क्रोध दोनो अकेले हैं कहां तक ज़ोर बांध सक्के हैं मेरे समान उनके अनेक नाम और रूप कहां हैं—चोरी चटोरपन उत्कोच इत्यादि

अनेक भेद मेरेही हैं—महापातकों में भी स्तैन्य के नाम से मुझे दरजा हासिल है—जिह्वा में मेरी स्थिति विशेष रहती है "जितं सर्वं जितेरसे" यह सिद्धान्त बहुतही ठीक है और इन्द्रियों का बेग संयम पूर्वक रहने से कदाचित् रुक जा सकता है पर जिह्वा का स्वाद रोकना टेढ़ी खीर है—चटोरों ने धीरे २ लाखों की सम्पदा चाट डाला और मालूम न हुआ सब कहां चला गया—ऐसों को जो सुख जीभ को सन्तुष्ट रखने में है वह किसी में नहीं है दरिद्र हो जाने की पहली सीढ़ी सो चटोरापन मेराही एक दूसरा नाम रूप है तब मेरे रहते किसी दूसरे की सहायता लेना सर्बथा व्यर्थ है—नल को दण्ड देना ऐसी तुच्छ बात के लिये मैं नहीं समझता आप को क्यों इतनी घबड़ाहट है—विशेष क्या कहूं इसका बोझ मुझ अकेले पर छोड़ आप निश्चिन्त रहैं॥

मोह—(हाथ जोड़) महाराज मेरा नाम मोह है आप जानतेहीहैं मोह मुह धातु से बना है जिस के माने चेतना शक्ति का नष्ट होना है जब चेतना न रही कार्य्य अकार्य्य करने की बुद्धि उखड़ गई तब फिर मनुष्य के शरीर में बाकी क्या रहा मैं—इन लोगों की भांति झूठी २ दन्त कथा मात्र से अपना झूठा पौरुष आप को नहीं प्रगट किया चाहता पर इतना समझे रहिये कि ये तीनों तथा और सब जो मेरे उपरान्त अपना २ परिचय आप को देंगे सब मेरेही गण हैं—महा मोह के नाम से मैं इन सबों का राजा हूं अपनी २ तारीफ़ ये सब चाहे जितनी गाय जांय पर अन्त में सब का तोड़ इसी पर है कि आदमी किसी तरह मोह के जाल में फांस दिया जाय॥

पुंसामलब्धनिर्वाण ज्ञानदीपमयात्मानाम् ।
अन्तर्म्लापयति व्यक्त यः कज्जलवदुज्वलम् ॥

नहीं प्राप्त हुआ निर्वाण के ज्ञान का प्रकाश करने वाला दीपक

का उंजाला जिसके आत्मा को उस का अन्तःकरण उस दीपक के जलने से जो कज्जल पैदा हो गया है उस से मैला अवश्यही पड़ जाता है— पुत्र कलत्र के मोह रूप कीचड़ में फसे हुये लोग कल या परसों तक में अपना प्रयाण जो अवश्य भावी है उसे कभी नहीं सोचते ॥

श्वः स्वप्राण प्रयाणेपिनस्मरन्ति स्मरादिपम्।
मग्नाः कुटुम्ब जम्वाले वालिशाः यद्युपासिनः॥

मोह मे पड़ा जागता हुआ भी सोता है, देखता हुआ भी अन्धा है, पढ़ा लिखा भी मूर्ख और जड़ है, प्रकाश में रहता हुआ भी अन्धकार में टटोल रहा है॥

जाग्रतामपि निद्रा यः पश्यतामपि योन्धता।
श्रुते सत्यपि जाडयं यः प्रकाशेपिच यस्तमः॥

महा आश्चर्यवत् यह मोह का विलसित नहीं तो क्या है कि प्रति दिन लाखों लाख जीव जन्तु प्राण वियुक्त हो यमराज के मन्दिर में जाते हैं पर जो जीते हैं वे कभी नहीं सोचते कि हमारा भी यही हाल होने वाला है न अपने कामों से यह प्रगट होने देते है कि हम को भी वहीं जाना है प्रत्युत हज़ार बर्ष की नेह गाड़े बैठे हैं॥

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यममन्दिरम्।
शेषा जीवितुमिच्छन्ति किमाश्चर्य मतःपरम्॥

भगवान् १८ अध्याय गीता अर्जुन से गा गये कि संसार भर को मोह जाल से छुटाय ज्ञानी कर दें पर उनकी एक भी न चली मैं गाजताही रहा और जगत् भर को अपने चंगुल में किये हों—मन को लुभाने वाली वाराङ्गनाये पास बैठी हों, चान्दनी रात हो, प्याले पर प्याला चल रहा हो, सब ओर भांत २ के रङ्गीन भाड़ और फ़ानूस की रोशनी की

जगमगाहट छाई हो, साफ़ श्रीर सुथरा फ़र्श बिछा हो, इतर श्रीर गुलाब की महक सब श्रोर गमक रही हो, तब ज्ञान प्रदीप श्रीर वैराग्य उदय हो तो अलबत्ता कहा जा सकता है कि मोह रूप अन्धकार ने इस के नेत्र से ज्ञानांजन शलाका को नहीं हटाया—सो ऐसे लोग ब्रह्मा की सृष्टि में काहे को जन्मते हैं—तब आप को इस विषय में कुछ शंकाही न होनी चाहिये कि कैसे हम नल को अपने आधीन करें—सिवा इस के माया श्रीर अविद्या दो कन्यायें मेरी ऐसी प्रबल हैं कि जिन्होंने संसार भर को आक्रमण कर रक्खा है—ज्ञान वैराग्य यम नियम अहिंसा सत्य अस्तेय इत्यादि को कहीं ठहरने को अवकाशही नहीं मिलता—इन में से एक भी कोई ज़रा सिर उठाया चाहे तो उन के लिये दूसरा प्रति भट योद्धा उन्हे दबाने को तैयार है जैसा दया के दबाने को क्रोध सत्य के लिये झूठ इत्यादि ॥

दंभ—इस अवसर पर हम को भी अपना नाम गोत्र का परिचय देना ही पड़ा—यद्यपि मैं इस प्रकार का नहीं हूं कि सहसा मुझे कोई ताड़ सके ऊपर की बनावट जैसी मुझे मालूम है उस से मेरा आभ्यन्तरिक भाव श्रीर स्वरूप जान लेना किसी तरह सहज नहीं है—सच२ तो मैं जैसा आप का सहायक हूं ऐसे ये कोई भी नहीं हैं जब तक मैं हूं तभी तक आप अपनी स्थिति यहां संसार में समझिये टट्टी के आड़ में शिकार करना हमी को आता है—रात को अपने माशूक के साथ कीमती शराब मन मानता छक आज इस कोठे पर कल उस कोठे पर रात काटा—सवेरा होतेही गंगा स्नान कर तिलक मुद्रा रमाय हम सर्वज्ञ हैं, हमने यज्ञ की दीक्षा लिया है, हम वाजपेयी हैं, हम अग्निहोत्री हैं, दूसरों को आचार सिखलाने मे हम उदाहरण हैं—हमारे सदृश ब्रह्मज्ञानी दूसरा कौन होगा इत्यादि दंभाचरण से धूर्त लोग खतिरखाह संसार को ठगते हैं ॥

वेंश्यावेश्मसु शीधुगन्धिललनावक्त्रासवामोदितै नींत्वा निर्भर मन्मथोत्सववसै रुन्निद्रचन्द्राक्षपाः । सर्वज्ञा इति दीक्षिता इति चिर प्रसाग्निहोत्रा इति ब्रह्मज्ञा इति तापसा इति दिवाधूर्तैर्जगद् वंच्यते ॥

हम त्रिदण्डी हैं हम ब्रह्मचारी हैं वैष्णव सिद्धान्त के जानने वाले अथवा शैवमत के तत्व वेत्ता हमीं हैं इत्यादि अनेक ढंग से धनियों का धन ठग आनन्द से जीवन हमीं काटते हैं—एक बार हम को ब्रह्मा जी के सभा में जाने का इत्तिफाक हुआ हमें देखतेही सब ऋषि लोग उठ खड़े हुये और अपने से ऊंचा आसन देने में देर तक व्यग्र रहे पर मुझे तौ भी उन के बराबर बैठने में संकोचही रहा—तब ब्रह्मा ने गोबर से अपनी जंघा लीप और कई घड़े पानी से उसे धोकर तब मुझे उस पर बड़े आदर से बैठाया—हम कौन हैं और किस कुल में जन्में हैं इस का परिचय जब तक आप को न देंगे तब तक आप नहीं जान सकते कि ब्रह्मा की सृष्टि में कौनसी लोकोत्तर बात हमारे में है—सुनिये हमारी मा यद्यपि बड़े ऊंचे कुल की न थीं पर हम ने एक बड़े कुलीन श्रोत्री की कन्या ब्याहा तब से हम अपने बाप से भी बड़े हो गये—किन्तु हमारे साले के मित्र के मामा की कन्या को कोई झूंठा कलंक लगा इस से यद्यपि बड़े कुलीन घराने की थी तौ भी मैंने अपनी स्त्री को तज दिया—मैं अपने प्रिय पुत्र कपट और अनृत के साथ हमी अकेले आप का काम साध सकते हैं इतनी भीड़ आप ने नाहक इकट्ठा की ॥

नास्तिकता—यद्यपि हमारी स्थिति जगत् में अनादि काल से है सत्ययुग आदि युगों में भी हम रहे किन्तु चार्वाक बुद्ध प्रभृति दार्शनिकों का प्रादुर्भाव अपही के समय में हुआ इस लिये हम सब लोग आपही के अनुयायी अपने को मानते हैं—नेचरिये स्वभाववादी आदि कितने

और भी उन्हीं बौद्ध और चार्वाक के परतो पर नये २ लोग अब आपही के समय में हुये और होते जाते हैं जिन में यह चार्वाक सबों का दादा गुरु है—इसके वक्तृत्व को आप बहुतही पसन्द करेंगे जो कुछ आप का अभिप्राय है उसे यह खूब समझे हुये है—बेटा चार्वाक तुम भी अपना सिद्धान्त कह सुनाओ॥

चार्वाक—(प्रणाम पूर्वक) जो आज्ञा—म्हाराज क्या कहैं धूर्त मुफ्त-खोरों ने अपना मतलब गाठने को ईश्वर अदृष्ट पाप और पुण्य तथा परलोक स्वर्ग नरक आदि इतने जाल फैला रक्खे हैं—झूठी २ बातें कह मन यहाँ तक कमज़ोर और दुर्बल कर दिये गये हैं कि अब ज़रा २ सी बातों में लोगों को ईश्वर का क्रोध नरक की विविध यातनाओं का ख़याल सवार रहता है—पानी पर शिला तैरती है यह वाक्य जैसा असंगत है वैसाही ज्योतिष्टोम यज्ञ से स्वर्ग मिलता है इस वेद वाक्य पर हम नहीं जानते बड़े २ विद्वानों को क्यों श्रद्धा होती है॥

अग्निहोत्रं त्रयोवेदास्त्रिदण्डं भस्म पुण्ड्रकम्।
बुद्धि पौरुषहीनानां जीवो जल्पति जीविकाम्॥

अग्निहोत्र तीनो वेद त्रिदंड भस्म का त्रिपुंड यह सब बुद्धि हीन निष्पुरुषार्थियों के लिये जीविका है ऐसा बृहस्पति ने जो कहा है सो बहुतही ठीक है—पाप से ताप और पुण्य से सुख ऐसा मतप्रवर्तकों ने सिद्धान्त कर रक्खा है सो क्यों—हम कहते हैं इस से उलटा क्यों न हो कि पुण्य से दुःख पाप से सुख॥

बलात्कुरुत पापानि सन्तुतान्यकृतानिवः।
सर्वान् बलकृतानर्थानकृतान्मनुरब्रवीत्॥

बलात्कार पूर्वक पाप करो तो वह न किये के समान होगा

मनु ने कहा भी है जो काम बलात्कार से किया जाता है वह न किये के तुल्य है ॥

मृतःस्मरति कर्माणि मृतेकर्मफलोर्मयः ।
अन्य भुक्ते मृते तृप्ति रित्यलं धूर्तवार्या ॥

मनुष्य मरने के उपरान्त अपने कामों का स्मरण करता है और उस्को पूर्व जन्म कृत पाप या पुराय का फल भोगना होता है—मृतक के नाम से उस्का उद्देश्य कर जो कुछ दिया लिया जाता है उस से उस की तृप्ति होती है-यह सब स्वार्थी धूर्तों की कल्पना मात्र है—अपनी जिह्वा के स्वाद सुख के लिये चटोरों ने लिख मारा है कि यज्ञ में जो पशु बलि दिया जाता है उसे स्वर्ग होता है यह यदि सत्य है तो यजमान अपने पिता का बलिदान यज्ञ में क्यों नहीं कर देता पिता उस का बिना प्रयासही स्वर्ग चला जा सक्ता है ॥

निहतस्य पशोर्यज्ञे स्वर्ग प्राप्तिर्यदीष्यते ।
स्वपिता यजमा नेन किन्नतस्मा न्निहन्यते ॥
मृतानामपिजन्तूनां श्राद्धश्चेत्तृप्ति कारणम् ।
निर्वाणस्य प्रदीपस्य स्नेहःसंवर्द्धयेच्छिखाम् ॥

मरे प्राणी की तृप्ति का कारण यदि श्राद्ध है तो दिया के बुझजाने पर तेल उस में बना रहता है तो टेम उस में क्यों नहीं फूटती—मनुष्य का देहही सब कुछ है देह के अतिरिक्त कोई आत्मा है इस में प्रत्यक्ष प्रमाण कुछ नहीं है सिवाय प्रत्यक्ष के और कोई प्रमाण भी है इस में कोई पक्की युक्त नहीं है—इस लिये ऋण चाहो होजाय बला से घी अवश्य खाय-खाओ पिओ देह को सब भांत आराम में रक्खो यही

सब का सार है—तब देह को कष्ट दे अनेक तरह के यम नियम और संयम केवल मूर्खता नहीं तो और क्या इसे कहैं ॥

दैनस्यायुष्यमस्तैन्यमभक्ष्यं कुक्षि वंचना।
स्वाच्छन्द्यमृच्छतानन्द कन्दली कन्द मेककम् ॥

चोरी आदि अन्याय और असत्कर्म न कर अधर्म होगा इस डर से दीनता और दरिद्रता को बढ़ने के लिये मदद पहुंचाना है—खाद्य अखाद्य के बिचार में अनेक स्वादिष्ट भोजन से परहेज़ जीभ को और पेट को वंचित करना है—एक मात्र परमानन्द सन्दोह का मुख्य कारण स्वच्छन्दता को तब क्यों न चित्त में स्थान दिया जाय ॥

(नेपथ्य में) आः! कुटिल पापी अधम धर्म के मर्म को कतन करने वाले धूर्तप्रतारक ? ठहरो २ मैं तुम सबों को आकर यथोचित दण्ड देता हूं—पापियो अब तुम्हारे ये प्रलाप हम नहीं सुन सक्ते अभी हम आकर अपने बज्र से तुम सबों के सिर सौ टुकड़े किये देते हैं—जिस में तुम्हे अब भी निश्चय हो कि अधर्म और अन्याय का कैसा जल्द फल मिलता है—अरे नास्तिकाधम दुष्ट चार्वाक हम अभी आकर तेरी जिह्वा को कुण्ठित किये देते हैं—जिस में फिर तुझे ऐसा कहने का साहस न हो ॥

(सब लोग डर से कांपते हुये इधर उधर भागते हैं)

कलि—जान पड़ता है देवता भी नल के सहायक हैं अच्छा तो अब हम नल को दंड देने की कोई और दूसरी उपाय सोचैंगे (प्रस्थान) शेष० ॥

हिं०प्र० सम्पादक महाशय।

तोता और कबूतर।

कबूतर और तोते में उलटे गुण होते हैं तोता जिस घर में रहता है और उस में से निकल जाता है तब फिर उस की तरफ़ फिरके नहीं देखता—इसी से फ़ारसी वालों ने तोते को बेमुरौअत लिखा है ऐसा

सुनने में भी आता है कि तोतेचश्म के माने हैं एहसान का भूल जाने वाला अर्थात् जिस घर में वह पला हो उसे याद न रक्खे—बिरुद्ध इस के कबूतर की प्रकृति है कि जिस घर में वह पैदा हुआ है और पला है उस को कभी भी नहीं भूलता—लोग कहते हैं जिस घर में कबूतर पैदा हो और पले जब कोई उस की आंख बन्द कर कहीं ले जाय और वहां उस को छोड़ दे तो वह उड़ता २ वहीं आवेगा जहां वह पैदा हुआ था या पला था—लोग कहते हैं ऐसे कबूतर जो अपनी जगह अच्छी तरह पहचान गये हैं उन के गले में खत लिख कर बांध देते हैं और उसे छोड़ देते हैं तो वहीं जाकर बैठता है जहां उस ने दाना पानी खाना पीना सीखा था—राह में भटक कर कहीं रह नहीं जाता—जब वह अपने ठिकाने पहुंच गया तब वहां के लोग चिट्ठी उसके गले से खोल पढ़ लेते हैं और सब हाल जान जाते हैं— इसी लिये कबूतर को फ़ारसी के कवियों ने नामाबर और क़ासिद लिखा है—बहुतेरे लोग जानते हैं कि फ्रान्स और प्रूशिया में लड़ाई थी तब पेरिस को जो फ्रांस की राजधानी है जरमन वालों ने ऐसा घेर लिया था कि कोई आदमी प्यादा या सवार उस नगर से बाहर नहीं जा सक्ता था तब पेरिस नगर के निवासियों का हाल किसी को मालूम हो या किसी दूसरे देश या नगर का हाल पेरिस के लोगों को मालूम हो यह सब कबूतरों ही के द्वारा होता था॥

अब सोचने की बात है कि क्या कबूतरों में मनुष्य की बोली समझने की शक्ति है जो नहीं है तो कैसे वह चिट्ठी पहुंचा देता है—चिट्ठी या सन्देसा पहुंचाना मनुष्य की शक्ति और प्रकृति है—कबूतर की जो प्रकृति है सो ऊपर लिखी गई है तो लोग यह करते हैं कि जब कबूतर पैदा होता है तभी से उसे उस घर को पहचनवाने लगते हैं जो उसकी जन्मभूमि थी फिर ईश्वर ने भी ऐसी शक्ति उसे दी है कि वह

आकाश मार्ग में अपने घर की राह को जानता पहिचानता है और भूलता नहीं—पर यह कोई न समझे कि कबूतर को आदमी की तरह समझ होती है या जान बूझ वह चिट्ठी पहुंचा देता है—फ़ारसी की किताबों में बहुत जगह कबूतरों की कासिदगरी का बयान किया गया है जिस से निश्चय होता है कि पशु पक्षियों में भी अनेक अद्भुत शक्ति मनुष्यों की सी दी गई है और उनकी उन शक्तियों से मनुष्य अपना फ़ायदा निकालता है ॥

कबूतर जब बड़े होते हैं तब उन की आखें बन्दकर दूसरी जगह ले जाते हैं चाहो उसी शहर में हो या दूसरे में फिर वे आकाश में उड़ा दिये जाते हैं तो उड़ते २ वहीं जाते हैं जहां पैदा हुये थे या पले थे—चाहो एक कबूतर हो या बहुत जब वह वहां जाकर बैठ जाता है तब जिस का वह कबूतर था पिंजड़े में बन्द कर चिट्ठी उस के गले से खोल उसे पढ़ सब हाल मालूम कर लेता है-चिट्ठी बड़े पतले काग़ज में लिखी जाती है जिस में कबूतर को भारी न मालूम हो—बहुत लोग जो यह चाहते हैं कि उन के चिट्ठी पत्री का व्यवरा किसी को मालूम न हो वे कबूतरों के बड़े होने पर आपस में उसे बदल लेते हैं याने जो सब कबूतर एक जगह पर रहे वे दूसरी जगह भेज दिये जाते हैं और वहां के यहां अब उन में से जब कोई कबूतर छुटेगा तो वहीं जायगा जहां उस ने दाना पानी खाया था और पला था तो उस के साथ पत्र भेजना और उत्तर मंगवा लेना कौनसी बड़ी बात है ॥

आप के पत्र का एक नगर निवासी ग्राहक

२३ दिसम्बर १८७७

गुमानी कविकृत काव्य संग्रह ।

यह कवि कमाऊं "कूर्माचल" प्रान्त में हुये हैं ये कुलीन महाराष्ट्र

ब्राह्मण थे इन के पूर्व पुरुष महाराष्ट्र देश से आय कूर्मांचल में बसे थे—सम्वत् १८४९ में इन का जन्म हुआ और १९०३ में सुरलोक सिधार गये—इस ५३ या ५४ वर्ष के बय में इन्हों ने संस्कृत तथा देश भाषा के अनेक फुटकर छोटे काव्य रचे—इन की सदुपदेश पूर्ण कविता में एक विशेष गुण यह है कि पुराने कवियों से इन का काव्य बहुत मिल जाता है—आधुनिक कवियों के काव्य में जो एक तरह का पिष्ट पेषण रहता है जिस से आधुनिक कवियों का लेख पढ़ते घिन होती है सो इस कवि के काव्य में नहीं है—इस पुस्तक में उक्त कवि के बहुत से काव्यों का संग्रह मै भाषानुवाद और कवि के जीवन चरित्र के दिया गया है—इस के सम्पादक रामज़े कालेज अल्मोड़ा के प्रधान संस्कृताध्यापक पं० देवीदत्त शर्मा हैं—सरस्वती यंत्रालय इटावा में यह पुस्तक छपी है मूल्य १) है—थोड़े से उदाहरण पुस्तक से उध्रित कर यहां पर दिये जाते हैं जिस से कवि की कविता की बानगी पढ़ने वालों को मिल जायगी ॥

निर्वासितो हितेप्सु, र्बिभीषणो रावणेन लङ्कायाः।
तन्नाशहेतुरासी, न्नहि निजवन्धुर्विरोद्धव्यः ॥
हृतराज्यदर्पसारं, सुयोधनं निग्रहीतुमपि शक्ताः ।
श्रोषुर्वनेषु पार्थाः, धीरः समयं प्रतीक्षेत ॥
स्वाराज्यमश्नुवानः, प्रकोप्य नहुषो मुनीनहिर्भूत्वा ।
न्यपतत्त्वरितमधस्तात्, प्रासैश्वर्यो न दृप्तः स्यात् ॥
सहधर्मिणीं वनान्ताद, दशरथसूनोर्जहार दशवक्त्रः ।
बन्धनमाप समुद्रो, न दुर्जनस्यान्तिके निवसेत् ॥

हन्तुं देवकतनयां, वसुदेवेनोद्यतायुधः कंसः।
मधुरोक्तिभिस्तुनीतः, साम्ना मूर्खं वशे कुर्य्यात् ॥
गर्वाद् योद्धुमुपेतः, पौलस्त्यः सपदि कार्त्तवीर्य्येण।
क्रीडामृग इव बद्धो, न बलोद्रिक्तेन योद्धव्यम् ॥
सन्दीपिताग्रपुच्छो, बद्धतनुस्ताड़ितोऽपि रक्षोभिः।
लङ्कां मारुतिरदहद्, विपदि विजह्यान्न शूरत्वम् ॥
मखरक्षाणाय पुत्रौ, विश्वमित्राय दशरथोऽर्थयते।
प्रायच्छतगतशङ्कः, महद्वचो नावमन्तव्यम् ॥
त्यज पार्थैःसहरणमिति, विदुरेणोक्तोऽम्बिकासुतः सततम्।
तदमत्वा क्षयमापत्, कर्त्तव्यं भाषितं सुहृदाम् ॥
सुग्रीवो रघुपतिना, हृतदारेणोपगम्य हृतदारः।
दृढमाबबन्ध सख्यं, समानदुःखः सखा कार्य्यः ॥
शतयोजनततमब्धिं।
विलङ्घ्य वातात्मजो विशल्लङ्काम् ॥
वीराग्रतः सरोऽभूत्।
यशोऽर्थयन् साहसं कुर्य्यात् ॥

दुर्जन दूषण से।

हर्त्तुं वयो जनन्याः, कर्त्तुमवन्याः सुदुर्धरम्भारम्।
क्लेशयितुमार्य्यलोकान्, दुर्जन ते केवलं जन्म ॥

यद् गर्भ एव तप्त्वा, न मृतो जातोपि नाहिना दष्टः।
जीवसि सुखं दुरात्मन्, दौर्भाग्यं तत्सतामेव॥
भारं वहन् परेषां दूर्वोत्करपुष्टविग्रहस्तुष्टः।
हरतः परार्थसारं खल साधीयान् खरस्त्वत्तः॥
उष्णत्वमिवहिमांशौ शैत्यमिवार्के चलत्वमिव शैले।
स्थैर्य्यन्नभस्वतीव त्वयि वञ्चक नास्ति सौजन्यम्॥

ज्ञान भैषज्य मंजरी से।

भक्तिर्विभाव्यमाना,विधुनोति श्रद्धयान्विता मोहम्।
अनिलज्वरमिवशुण्ठी क्वथिता मधुधारयोपेता॥
सदसदविवेक एकः प्रकृष्टभवतापवारणः प्रथितः।
पित्तज्वरापहारी केवल इव पर्पटक्वाथः॥
विद्या विरक्तियुक्ता त्रितापतापं क्षणादपाकुरुते।
अमृतान्विता बृहत्या ज्वरमिव दोषत्रयोद्भूतम्॥
स्मृतिरेव राघवीया दुर्धरदुरितोच्चयक्षपणयोग्या।
कृमिजालपातनार्हा, यवानिका पारसीकेव॥

पञ्च पञ्चाशिका से।

चैतन्यसान्निकर्षात् मायासंभूतभूतनिकुरम्बम्।
अचिदपि चलति विचित्रम् चुम्बकसामिप्यिलोहइव॥
महदादौ प्रतिफलितं प्रविष्टवद् भाति तत्र चैतन्यम्।
न हि वस्तुतः प्रविष्टं वदनमिव द्रष्टरादर्शे॥

उच्चावचेषु भूते ष्वेकाकारोऽपि तत्तदाकारः।
प्रतिभासतेऽयमात्मा, दारुषु विविधेषु वन्हिरिव ॥
लोकोक्ति से।

पूर्वो श्लोकः बलाधिकान्मन्त्रविदः सपापान्हत्वा रणे तान्धृतराष्ट्रपुत्रान् शशास धर्मात्मज एव राज्यम्, आखिर भले का जग में भला है ॥

यस्मिन्देशे निर्गुणे निर्विवेके न क्वापि स्याद्वेदशास्त्रस्य चर्चा।
प्राज्ञः प्रज्ञाहीनवत्तत्र तिष्ठेत् कीजे काणे देश में आंख काणी इत्यादि ॥

शहर में बन्दरों की बढ़ती।

बहुत दिनो से शहर मे बन्दर बढ़ते जाते हैं लोगों को इस कारण बड़ा क्लेश हो रहा है —म्युनिसिपलेटी का कर्तव्य कर्म है कि इस क्लेश के हटाने की जल्द तदबीर करे नहीं तो कुछ दिनो में बन्दर बढ़ कर शहर को वीरान कर डालेंगे — अभी इन के पकड़ने और पकड़ कर जंगलों में छुड़वाने में बहुत खर्च नहीं है — पीछे जब ये बहुत अधिक होजांयगे तब खर्च करने पर भी इन का शहर से निर्मूल होना अति कठिन होगा — दूसरे यह कि बन्दर पालने के शैाकीनों को चिता दिया जाय कि वे जब तक बन्दर बच्चा रहता है तब तक बड़े चाह से उसे पाले रहते हैं जब बड़ा हो अपनी वानरी वृत्ति प्रगट कर उन को क्लेश का कारण होता है तब उसे छोड़ देते हैं — ऐसा न किया करें बल्कि जो लोग इसके शोकीन हों उनका नाम दर्ज कर लिया जाय और उन पर हमेशा ताकीद रहे — खुली नाली की बदबू की तकलीफ़ तो हम लोग झेलतेही रहे न जानिये कै बार लिख चुके कहीं न सुनाई हुई अब

बन्दरों के बाढ़ का क्लेश भी बढ़ता जाता है —मालूम होता है हम लोग इसी लिये सृजे गये हैं कि क्लेश पर क्लेश झेलते जांय — अस्तु लाचारी है॥

इसे अवश्य पढ़िये

हमारे पढ़ने वाले यदि अपना २ मूल्य चुका दें तो अब हम इस लायक हो गये हैं कि प्रति मास उन की सेवा में ठीक समय पर उपस्थित हुआ करें–नहीं तो नकटा जिया बुरे हवाल के परतो पर किसी न किसी तरह ठुनके तो जातेही हैं–सो दाम चुकता करना कैसा फर्रुखाबाद के एक हमारे ग्राहक जिन का नाम जीभ पर लाते संकोच होता है इस लिये कि उन्हों ने नालायकी की तो हम उन की बराबरी क्यों करें दो वर्ष का मूल्य डकार बैठे तकाज़ा करने पर लिखते हैं अब पत्र न भेजना और दाम चुकता करने का कोई ज़िकिर नहीं अस्तु ॥

हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २१ सं० ५—६ } प्रयाग { जनवरी फरवरी १८६[illegible] ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

मूल्य अग्रिम १।=) —०•०— पीछे देने से १।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १।=)

नमूने की कापी =)॥
१-३-९८

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] | [illegible] | [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] —— [illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

हिन्दीप्रदीप

जिल्द २१ } प्रयाग { जनवरी । फरवरी
संख्या ५ । ६ । सन् १८९८ ईसवी ॥

नये स्वर में पुरानी गीत ।

अकाल और महामारी का तेरहवां कान्ग्रेस ।

इस कान्ग्रेस महासभा का अधिवेशन इस साल अमरावती में किया गया था—अमरावती इस नाम से न तो आप को मुसल्मानी ज़ायका मिल सक्ता है जिस के लालच से बहुतेरे जनेऊधारियों ने अनेक चतार चूंदी कटाय एक ब्रह्म लायलाय लिल्लाह का कलमा पढ़ लिया—न अंगरेज़ीही की इस में बू आप को आवेगी जिस के लोभ से बहुतेरे ऊंची जाति के लोगों ने गुप्त होटलों में जाना आरम्भ कर दिया है—किन्तु यह पुराने आर्यों के समय का एक नगर बिरार अर्थात् प्राचीन बिदर्भ देश में है—बिरार को हम बिदर्भ इस लिये कहते हैं कि पौराणिक कथा और गाथाओं के अनुसार बिदर्भ के सब चिन्ह वहां अब तक मिलते हैं--कुण्डिनपुर जो बिदर्भ की राजधानी थी वहां से १६ कोस पर है अम्बा देवी का यहां पर मन्दिर है जिसे पूजने को रुक्मिणी वहां आई थी और वहीं से कृष्णचन्द्र उसे हर के रथ पर चढ़ाय ले भागे—वहां से ६ या सात कोस पर खोलापुर एक जगह है लोग कहते हैं रुक्मिणी के भाई रुक्मी की मुश्क भगवान् ने यहीं पर खोला

है इसी से उस्का खोलापुर नाम पड़ा---दो एक चिन्ह भी वहां ऐसे बने हैं जो इस बात को पुष्ट करते हैं-दमयन्ती भी यद्यपि विदर्भ देश की थी पर दमयन्ती के इतिहास का वहां कोई चिन्ह नहीं देखा जाता जितनी बातें रुक्मिणी के सम्बन्ध की पाई जाती हैं-लोग कहते हैं उमराव राजा का बसाया हुआ यह नगर है और चारो ओर पक्की चार-दिवाली से घिरा हुआ है-एक डेलिगेट जो वहां गया है कान्ग्रेस का हाल यों कहता है-वहां के लोगों में कान्ग्रेस के होने का उत्साह तथा मिलन-सारी जैसी देखी गई वह कुछ अपूर्वही थी पंडाल रचना तथा डेलीगेटों के आतिथ्य सत्कार का सामान जैसा यहां किया गया वह और २ स्थानों से किसी अंश में कम न था-महामारी और अकाल के भयँकर उपद्रवों के होते भी करीब दो सौ के डेलिगेट बाहर के वहाँ आये और ५०० बिरार प्रान्त के एकत्रित हुए-आप लोगों को मालूम है कि कानग्रेस अंगरेज़ी शिक्षा और अंगरेज़ों के साथ सम्पर्क होने का फल है-यह बीज इंगलैण्ड से आया और ह्यूम साहब की खेती से उपजा है-वेडरवर्न केन इत्यादि इसे सींचते रहते हैं-यदि इस खेती की हरियाली से आप की आँख न जुड़ानी और इस हरे भरे वृक्ष के फलने का फल आप को न मिले तो दुर्भाग्य है--इतना याद रखिये कि इंग-लैण्डही की प्रजा होकर आप इस खेती को कर सकेंगे--इंगलैण्डही की रोशनी ऐसी है जो आप के हाथ में दी गई है कि ब्रिटिश शासन की त्रुटि को उस रोशनी से आप दिखावें और राजराजेश्वरी क्वीन इम्प्रेस के राज्य को जिस में आप ने अनन्त सुख उठाये हैं पुष्ट और चिरस्थायी करदें-यही प्रयोजन प्रति वर्ष के कान्ग्रेस का है जिस में ब्रिटिश पारलियामेंट को यह प्रत्यक्ष हो जाय कि ब्रिटिश राज्य के शत्रुओं को सर करने में बहुतसा रुपया खरच करना और बहुत से आदमियों के खून करने से कान्ग्रेस की सहायता लेना अत्युत्तम है-यद्यपि प्लेग रिगुलेशन

जारी है यहां से अमरावती तकमें कम से कम १५ जगह नब्ज़ टटोली गई—न केवल नाड़ीही की परीक्षा की गई बरन मुसाफ़िरों के अन्तःकरण की भी जांच की गई तौभी भारत के प्रत्येक प्रान्त के निवासी हिन्दू मुसल्मान पारसी मद्रासी बंगाली गुज़राती महरठे पंजाबी वहां पहुंचे पर पहुंचे—ब्रिटिश राज्य की जयजयकार मनाने को और अपना दुख रोना गाने को इकठ्ठे होही गये—२०० डेलीगेट और २ प्रान्तों के और ५०० बिरार प्रान्त के सब मिला के ७०० के ऊपर डेलिगेट थे—इस में सन्देह नहीं अब इस की कदर गवर्नमेंट और पार्लियामेंट की निगाह में भी पूरी २ जम गई—जैसा इसे अब तक निरा खेलवाड़ और तमाशा सरकार समझती थी सो बात अब मालूम होता है न रही—और २ प्रान्तों के लोग इस्का गौरव भरपूर करते हैं और प्रति वर्ष इस के अधिवेशन के उत्सुक भी हैं—एक पश्चिमोत्तर औध और पंजाब के लोग जो इस की उपेक्षा किये हैं सो इस में कोई बड़े अचरज की बात नहीं है सदा सब के पीछे रहना तो इन का स्वभावही है—जब अग्रसर होने की इनकी आदत नहीं है तब उस काम के फाइदे में भी कैसे अगुआ हो सक्ते हैं—

इस कान्ग्रेस के सभापति मद्रास के आनरेबुल शंकरनैयर थे जिन की स्पीच का खुलासा यहां पर हम देते हैं ॥

उक्त सभापति महाराणी और उन के धर्मराज्य तथा काली गोरी प्रजा पर समभाव की बहुतसी प्रशंसा के उपरान्त कहा कि ४० वर्ष तक सब भांति शान्ति और उत्तरोत्तर उन्नति के साथ प्रजा का शासन महाराणी की उदार नीतिज्ञता और राज काज कुशलता का पक्का सबूत है—इस साल एका एक "सेडिशन" प्रजा संक्षोभजनक राजद्रोह की सब ओर से पुकारने हम लोगों को चकित कर दिया जो कलङ्क भारतीय प्रजा के न सिर्फ़ किसी एक आदमी या एक फिरके पर लगाया जाता है बल्कि समस्त देश का देश इस कलङ्क से दूषित ठहराया गया

है—यद्यपि ऐंगलो इण्डियन पत्र काग्रेस पर सेडिशन का कलङ्क बहुत दिनो से लगाते आते हैं पर अब तो उसकी सीमा यहां तक बढ़ा दी गई है कि पढ़े लिखे हिन्दुस्तानी मात्र पर यह दोष तरोताज़ा कर दिया गया है—ऐंगलो इण्डियन हम से कहते हैं आप कब से इस लायक हुये कि ब्रिटिश शासन में दोष निकालो—अपना पहिला इतिहास तो पढ़ो जो तुम्हारी गिरी हीन निकृष्ट दशा का सुबूत है—जिस निकृष्ट दशा से अंगरेज़ी शासनही ने तुम्हे ऊपर को उठाया और अब सभ्यता के अनेक छल और उपकार से उपकृत हो गुरुमार विद्या को काम में लारहे हो—इस के उत्तर में हम कहते हैं कि हम अपनी बीती दशा से अच्छी तरह जानकार हैं जिस दशा से हमरा उद्धार अभी बहुतही थोड़े दिनो से हुआ है—जिस वर्तमान उत्कृष्ट दशा में हमें अंगरेज़ी सभ्यता और शिक्षा ने उठा दिया है उस के हम बड़े कृतज्ञ हैं—किन्तु हमारे प्रतिपक्षी ऐंगलो इण्डियन भ्रम में हैं कि हम उसे भूल गये और उसी भ्रम में पड़ वे अनेक अधिक्षेप और ताना हम पर कस रहे हैं—हम अच्छी तरह जानते हैं कि अंगरेज़ी राज्य ने हमको अपनी तरक्की करने की रास्ता को साफ़ कर दिया और अङ्गरेज़ी शिक्षा दे उस तरक्की का बीज हम लोगों के बीच बो दिया जिस के द्वारा हम अपने को ऊपर उठा सक्ते हैं—अपनी सामाजिक राजनैतिक तथा धर्म सम्बन्धी हीनता पहचानने लगे और अन्धकार में पड़े २ जो टटोल रहे थे उस से अलग हो जाग उठे और नया जन्म पाया जिस नया जन्म पाने की हमें बड़ी आवश्यकता थी—इसे भी हम अच्छी तरह समझते हैं कि अङ्गरेज़ी शासन की रक्षा हम पर न रहे तो देश में राज बिराजी लूट मार लड़ाई भिड़ाई फैल जाय—मुसल्मान फिर हिन्दुओं को सताने की कोशिश करने लगें और हिन्दूराजा आपस में लड़ना आरंभ करदें—सिवा इस के रशिया और फ्रांस को भी पांव फैलाने का मौका मिल जाय—

इस में सन्देह नहीं अंगरेज़ी राज्य के इन उपकार और गुणों को ये पढ़े लिखे लोगही समझ सक्ते हैं जिन पर सेडिशन का दोष लगाया जाता है अपढ़ क्या जान सक्ते हैं कि इङ्गलैण्ड का अधिकार हिन्दुस्तान पर न रहने से कितनी मुसीबतें झेलना पड़ैगा— इस बात को सोचकर हंसी आती है कि पढ़े लिखे तालीम याफ्ता जिन्हों ने अंगरेज़ी तालीम की बरकत पाई है ऐसे निर्बुद्धी और अदूर दर्शी हों कि अंगरेज़ी शासन के न रहने से क्या २ अनर्थ देश में हो सक्ते हैं और उस के रहने से क्या २ सुख हैं इन दोनों को अपनी समझ के तराज़ू में रख न तौल सकैं—दूसरी बात यह कि जब वे मुक्त कण्ठ हो अंगरेज़ी राज्य के उपकारों को स्वीकार कर रहे हैं और ब्रिटिश जाति के कृतज्ञ हैं तब वे सेडिशन क्यों फैलावेंगे—यह गवर्नमेंटही है जो हमें बाहर वालों के हमलों से बचा रही है और हमारे जान माल की रक्षा का बीड़ा उठाये हुये हैं—इसे एक क्षण के लिये भी कौन भूल सक्ता है कि यहां के लोगों का इङ्गलैण्ड के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध इसी आशा से दृढ़ तर होरहा है कि इन्हे पूरा बिश्वास है कि इङ्गलैण्डही की सहायता से और उसी को अपना राह दिखलाने वाला मानने से हम अपनी जातीय एकता और स्वच्छन्दता National unity and freedom. प्राप्त कर सक्ते हैं— यह कैसे संभव हो सक्ता है कि जिस चाह और उत्कट लालसा से हम अंगरेज़ी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं अंगरेज़ी खयालों को चित्त में स्थान दे रहे हैं तो अंगरेज़ों का सा भ्रातृस्नेह, उनका सा जन्मभूमि वात्सल्य, कर्तव्य बुद्धि, अपने स्वत्व की पहचान, हम में न आवे—और यही सब का हमारे में आना एंगलो इण्डियनों की संकीर्ण बुद्धि में सेडिशन समझा गया है॥

उपरान्त सुयोग्य सभापति ने राजनैतिक संशोधन के सम्बन्ध में इस तरह पर कहा—जिन के जी में ऐसे खयाल और उसूल भर दिये गये हैं उनके लिये यह बात स्वाभाविक है कि वे राजनैतिक विषयों में

भी अपना पूरा हक्क और स्वत्व पावें और ब्रिटेन निवासियों की तरह गौरव और प्रतिष्ठा राज काज में आप भी हासिल करें—इस बात को हमने जान लिया है कि उन राजनैतिक सत्वों के प्राप्त करने में और उन उसूलों के पहचानने में जिन पर हमारे स्वत्वों Rights. की बुनियाद है उन बुराइयों के दूर करने का इलाज करना आवश्यक है जो बुराइयां हमारे देश को क्लेश पहुंचा रही हैं—और वे वैसीही हैं जैसी इंगलैण्ड खुद कभी को उठा चुका है—क्योंकि इंगलैण्ड में किसी समय साक्सन और नारमन दो जातियों में जाति भेद का उपद्रव इस से बहुत अधिक था जितना हिन्दू और मुसल्मानों में यहां है—दूसरे यह कि धर्म और मत सम्बन्धी झगड़े जैसा हिन्दुस्तान में हैं किसी देश में ऐसे न होंगे—जाति भेद जो हमारी सामाजिक तथा राजनैतिक उन्नति वृक्ष का काटने वाला कुठार है ऐसा कहीं न होगा पर यह सब कौमी आज़ादगी की कोशिश के मुकाबिले यहां वाले भूल गये—जिसके लिये सब के सब एक मुह और एक जान हो साधारण रीति पर यत्न करने से नहीं चूका चाहते—महाराणी की सन् ५८ की घोषणा से लोग और भी अधिक प्रोत्साहित हुये हैं—जिसमें काले गोरे धर्म या जाति भेद को बिल्कुल अलग कर सबों के लिये एकसा हक्क और दावा महाराणी की प्रजा होने का घोषित किया गया है—तब यह आशा करना सर्वथा उचित है कि एक दिन ऐसा आवेगा कि हम लोग सर्कारी सब कामों में अंगरेज़ों के साथ बराबर हिस्सा लेने वाले होंगे—स्वच्छन्दता के दिव्य मन्दिर में उस परम पूज्य देवता स्वच्छता के पुजेरी हम भी वैसही होंगे जैसा हमारे भाई इंगलैण्ड निवासी हैं—ब्रिटिश जाति के उदार शासन के प्रभाव से ऐसा होने लगा है कि हम लोगों के लिये भी सिविल सरविस का द्वार वैसाही खोल दिया गया है जैसा इंगलैण्ड वालों के लिये-छोटे तथा बड़े लाट की कौंसिलों में हम लोगों में से भी मेम्बर चुने जाने लगे हैं इत्यादि और सब

हमारी राजनैतिक उन्नति अंगरेज़ी राज्य के यहां स्थिर रहने ही से हो सकेगी—जितना राजनैतिक स्वच्छन्दता के लिये अंगरेज़ी शासन का यहां चिरस्थायी रहना आवश्यक है उस से अधिक सामाजिक और धर्म सम्बन्धी संशोधन के लिये उस्की ज़रूरत है—जो हालत हिन्दुस्तान की इस समय है, जितने तरह के जुदे २ मज़हब या फ़िरके हिन्दू मुसल्मान जैन इसाई आतस परस्त यहां हैं जो अक्सर एक दूसरे के बिल्कुल बिरुद्ध हैं उस के लिये ऐसाही राज्य का होना आवश्यक है जो कभी किसी का पक्षपाती न हो॥

उपरान्त सभापति ने अकाल के सम्बन्ध में कहा—दुर्भिक्ष पीड़ितों का दुःख दूर करने और उनकी सहायता में जो कुछ गवर्नमेंट ने किया उसका अनेक धन्यबाद है—किन्तु साथही हम इस बात को भी कहा चाहते हैं यदि सरकार इस तरफ़ अपना ध्यान दे कि अकाल देश में फैलने का क्या कारण है और उन कारणों को यहां से हटाने पर कटिबद्ध हो तो बहुतही बहुत उपकार देश का हो—समय २ इन दुर्भिक्षों की बुनियाद हिन्दुस्तान की निर्द्धनता है—बहुधा सुकाल के समय इतना अन्न देश में नहीं रह जाता कि २८ करोड़ की आबादी में ५ करोड़ आदमी भी पल सकें—जिस ओर अख उठाकर देखो उसी ओर जुदी२ शकलों में निर्द्धनता और मुहताजगी देश में टपक रही है—पहले जो सुबीता वाले खाने पीने से खुशहाल थे मौरूसी काश्तकार और ज़मीदार थे वे अब पास पूंजी न रहने से साधारण खेतिहर हो गये—सर्कारी मालगुज़ारी इतनी बढ़ा दी गई है कि कितनो की ज़मीदारी मालगुज़ारी चुकता करने में गाय बजाय गई—दरिद्रता के कारण बाप मा अपने लड़कों को उचित शिक्षा नहीं दे सक्ते जिस से वे आगे को अपनी रोटी कमा सकें—एक फसल के न होने से या कम होने से लोगों का धीरज छुट जाता है बिलबिलाने लगते हैं—अकाल ने थोड़े २ समय के उपरान्त मानो पारी बांध रक्खा है और

हिन्दुस्तान को अपना घर कर लिया है—१८७७ में अकाल पड़ा २० वर्ष के उपरान्त फिर इस साल दुर्भिक्ष के कारण जितने लोग परलोक सिधार काल के कलेवा हो गये उस पर खयाल करने से जी कांप उठता है—क्या ऐसाही सदा होता रहेगा ? सर्कार जो हमारी रखवालीका ज़िम्मा लिये हुये है उस से हम लोगों का यह पूछना क्या बेजां होगा कि उस ने इस के लिये कोई तद्बीर किया है जिस में हमको पूरी मदद मिले ? ऐसे देश मे जहां पृथ्वी उर्वरा और ज़रखेजी के लिये प्रसिद्ध है जहां के लोग परिमित व्यय किफायत सारी और सख़ मेहनत से ज़मीन की पैदावरी बढ़ाने के लिये मशहूर हैं—जहां सब देश की और सब किस्म के आबहवा की पैदावार थोड़े मेहनत में अच्छी तरह पैदा हो सक्ती है—जहां जल्दी २ दुर्भिक्ष और देश में दरिद्रता सिद्ध करती है कि शासन कर्ता के शासन में कुछ ऐसी त्रुटि है जिस से वे अपनी मेहनत का फल पाने से वंचित रहते हैं और देश धन से खाली होता जाता है—अगर मुल्क की पैदावरी आबादी के लिये काफी है तौभी भोजन की किल्लत लोगों को रहे तो निश्चय कोई ऐसा भारी निर्गम यहां है जो देश की उपज बहाये लिये जाता है—महर्घता और दुर्भिक्ष जो देश के किसी न किसी हिस्से में बनाही रहता है और बहुधा समय२ जहां आकर व्यापा वहां उजाड़ कर देता है लाखों मनुष्यों का बिना संहार किये नहीं रहता-जो बात ऐसी सभ्य गवर्नमेंट को जैसा हमारे देश की इस समय है निःसन्देह शरम की है—इस का खयाल केवल एकही गवर्नर जेनरल के मन में आया जो इसतिमरारी बन्दोबस्त के द्वारा इस का इलाज कर गये जिस से तीस २ वर्ष बाद सेटिलमेंट आफ़िसरों को माल गुज़ारी बढ़ाने का अधिकार न रहा—देश से दरिद्रता दूर होने की यह एकहीउ पाय है कि इसतिमारारी बन्दोबस्त जो केवल बङ्गाल मात्र में है कुल हिन्दुस्तान में जारी कर दिया जाय—इस से उपकार यह होग कि खेतिहर अपने परिश्रम से जिस पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति

बढ़ा देंगे उसपर ३० वर्ष के उपरांत मालगुज़ारी जो बढ़ा दी जाती है सो न होगी धरती की उपज और मूल धन दोनों किसान के पास बना रहेगा और वही दुर्भिक्ष के समय उनके काम आवेगा—पहले गवर्नमेंट ऐसही चाहती थी कि इसतिमरारी बन्दोबस्त जारी किया जाय किन्तु फ़ौज इत्यादि के बढ़ाने में गवर्नमेंट का इतना खर्च अधिक हो गया कि उसे कायम न रख सकी और मालगुज़ारी हद्द से ज़ियादा बढ़ा दी गई॥

दूसरी उपाय हिन्दुस्तान से दरिद्रता दूर होने की सर्कारी खर्चों में किफ़ायत का करना है—विलायत के छोटे २ कर्मचारियों को भी जो तनख़ाह दी जाती है वह इतनी अधिक है कि किसी मुल्क में इतनी इतनी नहीं दी जाती—एक २ कर्मचारी नवाब बने हुये हैं—सब से बड़ा मद्द सर्कारी ख़र्च का फ़ौज का है—जब देश में सब ओर शान्ति और रक्षा है तब केवल बाहरी भड़क के लिये इतनी फ़ौज रखने की आवश्यकता क्या है—जो रुपया इतनी फ़ौज रख बाहरी भड़क के लिये ख़र्च किया जाता है वही हमारी अन्दरूनी तरक्की में लगाया जाता तो कितना उपकार होता—हाल में जो सीमा युद्ध उपस्थित हो गया जिस में असंख्य रुपया ख़र्च हो गया और हज़ारों आदमी काम आये कलकत्ता और लन्दन में केवल गवर्नमेंट की पालिसी का दोष है बजट लेजिसलेटिव कौंसिल में पेश किया जाया करे मेम्बरों की अनुमति से पास हुआ करे और मेम्बरों को इसके रिज़ोल्यूशन के संबन्ध में इखतियार रहा करे—हमारेही ख़र्च से इतनी फ़ौज क्यों रक्खी जाती है जितने की हमको ज़रूरत नहीं है—जब कि लड़ाइयां अंगरेज़ी हुकूमत हिन्दुस्तान में कायम रखने को लड़ी जाती हैं तो इसका कुल ख़र्च इङ्गलैण्ड को देना चाहिये हिन्दुस्तान से क्यों लिया जाता है—लड़ाई के ख़र्च का जब बजट पास हुआ करे तब वाइसराय की कौंसिल के हिन्दुस्तानी मेम्बरों को अपने फाइदे के खयाल से उस्का

विरोध करना आवश्यक है॥

अंगरेज़ और हिन्दुस्तानी के लिये सर्कारी कानून एक से होने चाहिये—गवर्नमेंट की यह पालसी हम लोगों को नहीं रुचती कि अङ्गरेज़ बाहर से यहां आये हैं हिन्दुस्तानियों से हर तरह पर हर एक बातों में बढ़कर हैं और उन लोगों ने तलवार के ज़ोर से हिन्दुस्तान को लिया है—न हिन्दुस्तान के लोग ऐसे हैं जिन पर बिश्वास किया जाय तो इन के लिये और इंगलैण्ड वालों के लिये अलग २ कानून होना चाहिये—महाराणी की सन् ५८ की घोषणा पर पूरा २ अमल किया जाय तो जाति भेद का फरक जैसा अंगरेज़ और हिन्दुस्तानियों में रक्खा गया है बिल्कुल न रहना चाहिये—इस बुनियाद पर आर्म्स ऐक्ट शस्त्र निग्रह वाले कानून के वसूलों से हमें बिलकुल विरोध है जिस का परिणाम यह देखा जाता है कि यूरोपियन यूरेशियन जितना चाहें उतना हथियार पास रक्खें कोई न पूछेगा हिन्दुस्तानी ज़रूरती कामों के लिये भी बिना लइसेंस हथियार न रख सकें—इसी लिये हम गवर्नमेंट से प्रार्थना पूर्बक निवेदन करते हैं कि हम लोग भी वालिंटियर में क्यों न भरती किये जांय और फ़ौज़ के बड़े २ ओहदे करनैल जरनैल इत्यादि हमें भी क्यों न मिलें हिन्दुस्तान में भी मिलिटरी कालेज क्यों न हम लोगों के लिये स्थापित किया जाय—सर्कारी बड़े २ ओहदे यदि हम उस लायक अपने को प्रगट कर दिखावें तो हमें क्यों न मिलें—सिविलसरविस, पुलीस के मुहकमे, परमट के मुहकमे, शिक्षा विभाग में, जो कायदे बने हैं वे सब के सब इसी बुनियाद पर हैं कि यूरोपियन केवल योग्यता के कारण बड़े २ ओहदे पाने लायक नहीं है वरन इस लिये कि वे यूरोपियन बाप मा से पैदा हुये हैं और हिन्दुस्तानी कैसाही सुयोग्य हो किन्तु वह हिन्दुस्तानी बाप मा से पैदा हुआ है इस लिये सर्वथा

उस के अयोग्य है—महाराणी की उस घोषणा पर बिल्कुल धूल छोड़ दी गई—हम समझते हैं इस का भेद उठ जाना जैसा हमारी होनहार तरक्की का कारण है वैसा कोई और दूसरी बात हमारे लिये उपकारी नहीं है—अंगरेज़ी उदार शासन में इस का उठ जानाही उस की शोभा है—इत्यादि संक्षिप्त रूप में सुयोग्य सभापति की स्पीच का अनुवाद यहां पर हमने दिया जो हमारे पढ़ने वालों की रुचि के अवश्य अनुकूल होगा—दूसरी स्पीच मदन मोहन मालवीय की भी इस वर्ष के कानग्रेस में बहुत उत्तम हुई जिस्का अनुवाद हो सका तो हम दूसरे अंक में देंगे॥

श्री युत हिं० प्र० सम्पादक महाशयेषु।

कृपा कर इस लेख को पत्र में स्थान दे अनुग्रहीत कीजिये।

रामायण के पढ़ने वालों को यह शंका उत्पन्न होती है कि हनूमान् जी दो पैरों से मनुष्य की नाईं चलते थे या चार पैरों से चौपायों की भांत—इस का ठीक पता नहीं लगता जितनी मूर्तें हनूमान् जी की देखने में आईं उन में दो पैरों से खड़े देखे गये जिस से निश्चय होता है कि हनूमान् जी दो पैरों से आदमी की तरह चलते फिरते थे—पर तुलसीदास जी ने किष्किन्धा काण्ड में जहां महावीर जी दोनो भाइयों को समझा बुझा के सुग्रीव के पास ले चले हैं यह चौपाई लिखा है॥

यहि बिधि सकल कथा समुझाई। लिये दोऊ जन पीठ चढ़ाई॥

इस से मालूम होता है गोसांई जी की समझ में हनूमान् जी चारो पैरों से चलते थे जो दो पैर से चलते तो राम और लक्ष्मण दोनो को कैसे पीठ पर लादते—पर जो महावीर जी घोड़े की तरह चलते थे तो यह कहना ठीक है कि "लिये दोऊ जन पीठ चढ़ाई" फिर जब सुग्रीव ने सब बन्दरों को बुलाया और सीता की सुध लेने को भेजा तब श्रीरामचन्द्र हनूमानही जी को बुला कर साथ प्यार के ऐसा कहा॥

दस करोरि बानर संग लैके । चले सकल प्रभु पद चित दैके ॥
पीछे पवन तनय सिर नावा । जानि काज प्रभु निकट बुलावा ॥
परसा सीस सरोरुह पानी । कर मुद्रिका दीन्ह जन जानी ॥

जो हनूमान् जी मनुष्य की नाईं चलते थे तो सिर पर हाथ फेरना अच्छा नहीं मालूम होता—पर जो यह बीर शिरोमणि कुत्ते की नाईं राज कुमारों के चरणों पर झुक गये हों तो यह संभव होता है कि "परसा सीस सरोरुह पानी" इस के सिवाय यह भी बिचार करने योग्य है कि रामावतार की कथा के आदि कवि बाल्मीकि ने जो लिखा है उसे भी यहां पर टटोलें - मैं संस्कृत नहीं जानता पर पं० गोपाल शर्मा कृत अनुवाद मैंने पढ़ा है वह इस तरह पर है-इस के अनन्तर महाप्राज्ञ हनूमान् दोनो भाइयों को ले सुग्रीव के पास चलने को उद्यत हुए और भिक्षुक का रूप छोड़ बानर हो दोनों भाइयों को पीठ पर चढ़ाय ले चले" शेष ॥

जो महाशय इस विषय पर कुछ लिखैंगे उन का मैं कृतज्ञ हूंगा—मैं समझता हूं इस के सम्बन्ध में लेख आप के पढ़ने वालों को अरोचक न होगा ॥

आप का एक प्रयागस्थ ग्राहक ॥

बया ।

बया एक चिड़िया पीले रंग की गौरैया से कुछ छोटी और लाल से बड़ी होती है—उसे जो सिखलाया जाता है बहुत जल्द सीख लेती है लोग इसे कुंआ से पानी खींचना सिखलाते हैं, माला फेरने, तोप या बन्दूक छुटाना, इत्यादि-बहुतेरे लोग बीड़ा लगाय टोंट में उसे थंबा देते हैं, जो आदमी उसे परचाये रहता है वह जिसे बतला देता है उस को वह दे आती है बल्कि मुंह में खिला आती है-कितने इसे ऐसा

सिखाते हैं कि यह टिकुली या चन्दन माथे से उधार लाती है—इस तरह के बहुत से तमाशे और दिलबहलाव राहचलतू के साथ लोग किया करते हैं—जो कोई स्त्री या पुरुष रास्ते में चले जाते हों उन में से बया का मालिक जिसे दिखला देता है उसी के माथे से वह टिकुली या चन्दन उचेर लाती है—वह स्त्री या पुरुष हक्का बक्का हो रह जाता है और दिल्लगीबाज़ ठठोल जिसने यह दिल्लगी की थी हसने लगता है—बया सदा नहीं दिखाई देती केवल बरसात के दिनो मे जब इसके बच्चा देने का मोसिम आता है देख पड़ती है—अपनी झोंझ बनाने मे यह जैसी कारीगरी करती है वैसी बिलायत के भी बड़े २ कारीगरों से नहीं बन पड़ेगी जिससे सिद्ध होता है कि प्रकृति के कामों पर बनावट अर्थात् हाथ की कारीगरी कभी पार नहीं पा सकी—कहां हैं वे लोग जो अपने हाथ की कारीगरी की प्रबलता प्रकृति के कामों पर दिखलाने के घमण्ड में फूले नहीं समाते—बया की इस ईश्वर प्रदत्त स्वाभाविक चतुराई को आके देखें और लाज को जी में जगह दें ऐसा कहने का साहस आगे को कभी न करें ॥

आप के पत्र का एक पाठक ।

खगोल निरूपण ।

जिस समय बादल की आकाश में कहीं एक छींट भी न हो कोहिरा या हिमपात जनित अन्धकार से गगन मण्डल परिस्कृत हो चन्द्रमा का भी उदय न हुआ हो और हम संसारिक अनेक चिन्ताओं से निश्चिन्त हों—ऐसे समय ऊपर की ओर दृष्टिपात करने से जो स्वच्छ विमल आकाश की शोभा देख पड़ती है उस से चित्त एक अनिर्वचनीय अपूर्व आनन्द और विस्मय तथा अद्भुत रस से परिप्लुत हो भांत २ के प्रश्न करने लगता है—इस अनन्त असीम शून्य सागर की कहीं पर सीमा भी है ? इस अथाह अतल स्पर्श गह्वर की कहीं पर थाह भी है ? हमारे

चारो ओर यह कैसा तनवा तना हुआ है जिसमें न जानिये कितने चमकीले मोतियों के झुप्पे झुण्ड के झुण्ड ताराओं के रूप में लटक रहे हैं—अथवा अन्धकार पूरित अनन्त अपार सागर में ठौर २ ये तारे एक २ सिगनल हैं—अथवा हमने जो सुन रक्खा है कि त्रिदशाधिपति इन्द्र के सहस्र नेत्र हैं उसे सच करने को सहस्राक्ष अपने सहस्र नेत्र से ऊपर बैठे २ संसार के सर्जिन पदार्थों की सब शोभा देख रहे हैं—पुंज के पुंज ये हीरक राशि सब किस खानि से निकले हैं? किस ने उन्हे खान से निकाला? किस ने उन्हे सान पर चढ़ाय खराद कर ऐसा चमकीला किया? यह भी सुनते हैं दस्युराक्षस और चोर इनका बल रात्रही में बढ़ता है अवश्य अन्धकार महाराक्षस इतने बहुमूल्य रत्नो को कहीं से चुरा लाया है नहीं तो क्यों ये सब तारे रातही को देख पड़ते हैं दिन को अलोप रहते हैं ॥

इस तरह की अनेक चिन्ता और कल्पना के स्रोत का प्रवाह बन्द नहीं हुआ था कि यह भी देखा गया कि तारे स्थिर नहीं हैं प्रायः सब के सब चल रहे हैं—जो पहिले पूरब की ओर भूमि संलग्न थे वृक्ष या तरुखण्ड आदि के ऊपर थे सो क्रम २ ऊपर हो आये और जहां पर वे उगे थे वहां पर दूसरे नये २ और तारे निकल आए—जो हमारे सिर के ऊपर मध्य आकाश में थे सो एक २ कर पश्चिम की ओर झुकने लगे और जो पश्चिम की ओर झुक गये थे वे डूबने लगे—सोचते २ यह भी मन में आया कि ये तारागण समस्त चलते तो हैं किन्तु इन की चाल में कभी व्यत्यय अर्थात् घट बढ़ उलट पुलट विरोध भाव या बेतरतीबी नहीं होती—जो तारे जिस तरह पर जिस दिशा में जितनी दूर रह कर चलते हैं वे तारे उसी तरह उसी दिशा में उतनही दूर रह चल रहे हैं—आज रात को जो जहां जिस तरह पर हैं कल रात को भी वे वैसही देखे जांयगे—बल्कि हज़ारों हज़ार वर्ष बीत जाने पर वे उसी

तरह पर देखे जाते हैं—इन ताराओं का रूप रंग डौल डौल कलकत्ता में जैसा देखा गया ग्रीनविच वाशिंगटन और जापान की राजधानी जेड़ो में भी उसी तरह के देखे जाते हैं—फलतः समस्त आकाश मण्डल मानो कांच का एक खोखला गोला है तारागण मानो एक २ हीरे हैं जो उसी गोले में जड़े हुए हैं—यह पृथ्वी भी उसी गोले में एक बिन्दुवत् जड़ी हुई है और वह गोला कुह्मार के चाक की तरह कल्पित शलाका पर घूम रहा है—ज्योतिषी लोग उस शलाका को नभोमण्डल का अक्ष कहते हैं जिस के एक अन्त को उत्तर केन्द्र दूसरे को दक्षिण केन्द्र कहते हैं—उत्तर केन्द्र से १ अंश १५ कला के अन्तर में एक तारा है जिसे ध्रुव तारा कहते हैं—ध्रुव इसे इस लिये कहते हैं कि यह चलता नहीं वरन जहां है वहीं पर सदा स्थिर रहता है और वही इस समस्त ब्रह्माण्ड अण्ड कटाह का केन्द्र अर्थात् मध्य भाग है—रात को उत्तर की ओर देखने से किसी न किसी समय सप्तर्षि के सात तारे देख पड़ते हैं सप्तर्षि का दूसरा नाम चित्र शिखण्डिन् भी है "सप्तर्षयोऽमरीच्यत्रि मुखाश्चित्रशिखण्डिनः" ये सात तारे छकड़ा या मयूर के आकार के हैं इसी से इन का नाम चित्र शिखण्डिन् है—और इस तरह का उन का आकार है

* * * *यूरोप के लोग इस तारा पुंज को आर्सामेजर या ग्रेटबेयर
* * *

अर्थात् वृहदृक्ष कहते हैं इस में पूछ की ओर अन्त का जो तारा है वही ध्रुव तारा है—दूसरा नाम सप्तर्षि मण्डल का ध्रुव मत्स्य या शिशुमार है विष्णु पुराण में लिखा है शिशुमार के आकार की जो हरि की मूर्त्ति है उस के पूछ में ध्रुव तारा स्थित है ॥

तारामयी भगवतः शिशुमाराकृतिः प्रभोः।
दिवि रूपं हरेर्यत्तुतस्य पुच्छे स्थितो ध्रुवः॥

"सौम्य मीना कृतिर्भानां ध्रुव मत्स्य इति श्रुतः" सप्तर्षि मण्डल की

और २ ताराओं के सम्बन्ध में बाराहमिहर ने इस तरह पर लिखा है ॥ "पूर्वे भागे भगवान् मरीचिरपरे स्थितो वशिष्टास्मात् । तस्य अङ्गिरास्ततो त्रिस्तस्यासन्नः पुलस्त्यश्च । पुलहःक्रतुरिति भगवानासन्नानुक्रमेण पूर्वाद्याः" अंगरेज़ी में सप्तर्षि के ताराओं के ये नाम हैं—मरीचि Alkaid जो इस तारा पुंज के पूर्व भाग में है, अत्रि Megrez जो मरीचि से चौथा तारा है, अंगिरा Alioth तीसरा तारा है, पुलह Merak छठवां तारा है, पुलस्त्य Phecda पांचवां तारा है, क्रतु Dubhe सातवां तारा और ध्रुव के सब से अधिक पास—वशिष्ठ Mizar मरीचि के उपरान्त दूसरा तारा यही है—ध्रुव तारा का कुछ वृत्तान्त यहां पर इस लिये लिखा गया कि यह एक केन्द्र है जिस के चारो ओर समस्त खगोल घूम रहा है ॥

सप्तर्षि इत्यादि बहुत से अनेक असंख्य तारे ऐसे हैं जिन की गणना स्थिर ताराओं में है और अनन्त आकाश में भ्रमण कर रहे हैं—किन्तु ये सब हम से इतनी दूर हैं कि उन की गति स्पष्ट नहीं होती इसी से स्थिर संज्ञा इन की हो गई—वरन ये सब बड़े २ ग्रह सूर्य के समान हैं और उन के साथ भी उतनेही ग्रह उपग्रह लगे हुये ध्रुव तारे की परिक्रमा कर रहे हैं— जैसा हमारा सूर्य अपने साथ पृथ्वी चन्द्रमा मंगल शुक्र शनि वृहस्पति आदि ग्रहों को साथ लिये ध्रुव की परिक्रमा कर रहा है—जैसा भागवत में ध्रुव के चारो ओर सब ग्रहों की परिक्रमा के सम्बन्ध में लिखा है " सहिसर्वेषां ज्योतिर्गणानां ग्रहनक्षत्रादीनामनिमेषेणाव्यक्त रंहसा भगवता कालेन भ्राम्यमाणानां स्थाणुरिवावष्टंभईश्वरेण विहितः शश्वदवभासते " इन ताराओं की इतनी मन्द गति है कि हज़ारों हज़ार वर्ष में एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र तक जाते हैं—हमारे सौर जगत Solar System में अर्थात् वे सब ग्रह पृथ्वी आदि जो उस बड़े प्रकाश सूर्य से प्रकाश और गरमी पाते हैं सब से बड़ा ग्रह सूर्य है जिस का दूसरा नाम सवितां भी है—सूर्य को सविता हम इस लिये कहते

कि सविता सू धातु से बना है सू के अर्थ उत्पन्न करने के हैं यह सूर्य ही का प्रसाद है कि जगत् विद्यमान् है—लाल गुड़हर के फूल समान इस के मण्डल से जो किरने निकलती हैं वे ऐसी प्रखर हैं कि उनकी गरमी हम तक न आती तो हम सब लोग मृतक की नाई ठिठरे पड़े रहते और अत्यन्त शीत के कारण न कोई वस्तु पेड़ पालो आदि उगते—यहां पर यह भी खयाल रहे कि इस अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड में ऐसे न जानिये कितने सूर्य पड़े हैं जो अत्यन्त दूरी के कारण स्थिर ताराओं के रूप में देख पड़ते हैं पर वे सब के सब एक २ सौर मण्डल हैं और ऐसही ग्रह गण साथ लिये उन ग्रहों को प्रकाश और गरमी दे रहे हैं॥

सूर्य हमारे इस सौर जगत् का केन्द्र भाग है और ग्रहों में सब से बड़ा है इस लिये पहिले उसी के सम्बन्ध में कुछ कहना आवश्यक है—यह केन्द्र इस लिये है कि उसी के चारो ओर सब ग्रह जुदी २ दूरी पर और जुदे २ समय के नियम से घूमते हैं—उसी की आकर्षण शक्ति के बल सब ग्रह अपनी २ कक्षा या मार्ग में स्थित हैं और उन ग्रहों के प्रकाश और गरमी का उद्गम स्थान वही है अर्थात् सब ग्रह प्रकाश और गरमी उसी से पाते हैं—सर्जित पदार्थ मात्र जिन्हें हम इन्द्रिय गोचर कर सक्ते हैं सूर्य मण्डल का अद्भुत सौन्दर्य सब से निराला है—प्रति दिन यह एक बिम्ब के आकार में रात्रि के अन्धकार को दूर हटाता हुआ प्राणी मात्र को प्रसन्नता और जीवन दान देते हुये हमें देख पड़ता है—बिना जिसकी बलिष्ठ शक्ति के जो यह प्रकाश और उष्णता के द्वारा हम पर प्रगट करता है यह पृथ्वी अन्धकार पूरित एक सून सान जंगल सी रहती—किन्तु प्रकाश और दूसरे २ बड़े २ लाभ जो देदीप्यमान् इस ग्रह से हमें मिलते हैं एक ऐसी साधारण बात हो गई है कि हम कौतुक की दृष्टि उसे कभी देखते ही नहीं—प्रकृति के एकान्त भक्त

हमारे पुराने आर्यों को अलबत्ता यह एक कौतुक था जो उस की अनेक अद्भुत शक्ति और इसके चमत्कार पर मोहित हो इसे देवांश मान गये और बेदों में न जानिये कितने सूक्त सूर्य देव की स्तुति के उन्हों ने रच डाला—देखने वाले को साधारण रीति पर यह एक छोटा सा गोलाकार वृत्त देख पड़ता है जिस के व्यास Diameter की लम्बाई दस या बारह इंच से अधिक न होगी—जैसा एक बड़ा प्रकाशमान् लैम्प हो जो आकाश में लटक रहा है जिस में दिन को उस्का प्रकाश पा२ हम अपने दैनिक कार्य में प्रवृत्त रहें—पर हाल के खगोल बिद्या में निपुण बड़े२ ज्योतिषियों का अनुमान है कि सूर्य मण्डल के वृत्त का व्यास ८,८०,००० है और गोलाई इस के मण्डल की २७,६४,६०० मील है अर्थात् जैसी हमारी पृथ्वी है ऐसे २ दस लाख तीन सौ पचास गोले मिल कर एक किये जांय तो सूर्य के गोले के बराबर हों—या यों कहो कि एक आदमी ४५ मील एक दिन में चलता हो तो १६० वर्ष सूर्य मण्डल के चारो ओर घूमने में उसे लगेंगे—यह इतना छोटा जो देख पड़ता है इस्का कारण यह है कि सूर्य हम से ५ करोड़ ५० लाख मील की दूरी पर है—अगर एक गोला यहां से छोड़ा जाय जो ५०० मील एक घंटे में जाता हो तो उस गोले को सूर्य तक पहुंचने में २१ वर्ष २४० दिन लगेंगे—या एक रेलगाड़ी जो प्रति दिन ४८० मील जाती हो बिना ठहरे बराबर चली जाय तो वह सूर्य मण्डल को ५४७ वर्ष में पहुंचैगी—तब यह कैसी बिलक्षण बात है कि इतनी दूरी पर रह कर सूर्य हमारी पृथ्वी पर अपने आकर्षण का असर पहुंचावे किरणों के द्वारा पृथ्वी पर प्रकाश और गरमी पहुंचाय इस की उर्वरा शक्ति को बढ़ावे समुद्र की लहरों में ज्वार और भाटा का बाइस हो—न सिर्फ़ हमारी पृथ्वी पर उसका यह असर पहुंचता है बरन समस्त सौर जगत् पर उसका असर पहुंच रहा है और यूरानस ऐसे बड़े२ ग्रह और अनेक केतु

ताराओं पर भी उसका इसी तरह का असर पहुंच रहा है जो हमारी पृथ्वी की अपेक्षा भी करोड़ों मील उस से दूर हैं ॥

सूर्य मण्डल भी पृथ्वी के समान गोल है और अपने अनुयायी अनेक ग्रह उपग्रहों को साथ लिये निरावलम्ब अपनी कक्षा में घूम रहा है जैसा और सब ग्रह उस के चारों ओर घूम रहे हैं वैसाही यह ध्रुव की परिक्रमा कर रहा है—अनेक प्रकार की दूरबीनों के ईजाद होने से सूर्य मण्डल के बहुत से छोटे बड़े दाग प्रगट किये गये हैं जिस से इसका पृथ्वी की तरह गोल होना सिद्ध होता है क्योंकि यदि इस का मण्डल दर्पण सा गोल होता तो वे दाग सदा एक से और एकही स्थान में देख पड़ते—गोल हैं तो वे इस्की गति के साथ बदला करते हैं कोई २ दाग का व्यास पृथ्वी के व्यास से दूना है हाल में जो एक दाग प्रगट हुआ उस का व्यास १७,६०० मील का था—कभी २ अठवारों तक एक दाग भी सूर्य मण्डल में नहीं देख पड़ते कभी २ सौ के ऊपर छोटे बड़े सब मिला के हो जाते हैं—उन में ५ या ६ सब से बड़े दाग हैं कोई २ ऐसे भी हैं कि २२ घंटे में अलोप हो जाते हैं—अब ये दाग हैं क्या इस प्रश्न की मीमांसा में ज्योतिर्विदों ने सिद्ध किया है कि सूर्य मण्डल में ज्वालामुखी पर्वत बहुत हैं वे कभी भभकने लगते हैं कभी बुझ जाते हैं—जब भभकने लगते हैं तब अधिक गरमी सूर्य मण्डल से निकलती है और उसकी साया पृथ्वी के जिस भाग में पड़ती है वहां अवर्षण मरी आदि अनेक उपद्रव होते हैं—बाराह मिहर के मन में सूर्य के इन दागों की कल्पना कुछ आई थी कूर्म विभाग की कल्पना, जुदे २ देशों में उनका अलग २ फल, जो वृहत्संहिता में उन्हो ने लिखा है वह इन्हीं दागों की साया उन २ देशों में पड़ती है—बृ० सं० की १४वीं अध्याय में यह है ॥

सूर्य सब का केन्द्र है उसके उपरान्त बड़े ग्रहों में बुध की कक्षा

है-बुध के उपरान्त शुक्र की कक्षा है-तब हमारी पृथ्वी की कक्षा है-पृथ्वी के उपरान्त मंगल की कक्षा है-उस के उपरान्त कई एक और छोटे२ ग्रहों की कक्षा है जो हाल में प्रगट किये गये हैं, तब वृहस्पति की कक्षा है—उपरान्त शनि है शनि के उपरान्त दो और बड़े२ ग्रह हैं यूरानस और नेपचून-सूर्य के उपरान्तही बुध की कक्षा है इस लिये बुध का कुछ हाल पहले लिखना आवश्यक है

बुध सब से छोटा ग्रह है तौभी इस के कक्षा का वृत्त या गोलाई २३ करोड़ २० लाख मील से अधिक है-एक रेलगाड़ी जो २० मील एक घंटे में चलती हो तो वह एक हज़ार तीन सौ चौबीस वर्ष में उसके चारो ओर घूम आवेगी जिस पर बुध ८८ दिन में घूम आता है अर्थात् बुध ८८ दिन में बारहो राशि पर घूम आता है—जिस पर हमारी पृथ्वी ३६५ दिन ६ घंटे में घूमती है-बुध सब ग्रहों से शीघ्रगामी है और सूर्य के निकट है—यद्यपि संभव है कि कदाचित् बुध और सूर्य के बीच में और भी कोई ग्रह होंगे पर अभी तक प्रगट नहीं किये गये-बुध एक मिनिट में १,८३० मील चलता है—इस की दूरी सूर्य से ७ करोड़ १० लाख मील के लग भग है और सूर्य के चारो ओर यह ८७ दिन २३ घंटे २५ मिनिट में घूम आता है—इसके मण्डल की गोलाई १०,०५३ मील है और इसके वृत्त का व्यास ३,२०० मील है-२ करोड़ २० लाख ऐसे गोले जैसा बुध का है सूर्य मण्डल में समा जा-सक्ते हैं-बुध सूर्य के बहुतही पास है इस लिये बहुत कम दिनो तक देख पड़ता है—जब यह सूर्य से दूर रहता है तब बहुतही कम ऊंचाई पर सूर्य से पूर्ब को संध्या समय कुछ थोड़ी देर के लिये देख पड़ता है उस समय इसका पश्चिम में उदय माना जाता है—जब यह सूर्य से पश्चिम रहता है तब सबेरे को जून सूर्योदय के कुछ पहले पूर्ब दिशा में देख पड़ता है—सब से अच्छा समय इसके देखने का बसन्त और शरत् ऋतु है इसलिये कि इस समय यह अपनी सब से अधिक उचाई

पर रहता है—दूसरे यह कि बसन्त और शरत् में अरुण का उदय और अस्त गरमी के दिनों की अपेक्षा कम रहता है और थोड़ी देर के लिये होता है—बिना दूरबीन इत्यादि यंत्र काम में लाये भी इसे देखो तो बड़ा प्रकाशमान् चमकता हुआ देख पड़ता है —दूरबीन से जब देखा जाता है तो चन्द्रमा की तरह घटता बढ़ता हुआ देख पड़ता है—अर्थात् कभी दोज तीज के चान्द की तरह, कभी सप्तमी अष्टमी के चन्द्रमा की भांत, कभी एकादशी द्वादशी के चन्द्रमा के आकार में—जिस से सिद्ध होता है कि और २ ग्रहों की भांत बुध भी प्रकाश और गरमी सूर्यही से पाता है—चन्द्रमा की तरह इस्का भी आधा या शेष भाग आड़ में आजाता है तब वहां प्रकाश नहीं पहुंचता—यह अपनी धुरी पर २४ घंटे ५ मिनिट में एक बार घूम जाता है—जब कि बुध पृथ्वी की अपेक्षा तीन तिहाई सूर्य के पास है तो प्रकाश और गरमी भी इस में हमारी पृथ्वी की अपेक्षा सात गुना अधिक पहुंचती होगी॥

बाराह मिहर लिखते हैं कि बुध का उदय उत्पात से खाली नहीं रहता—जिस के उदय होने पर कभी अति वृष्टि का उत्पात होता है कभी अग्नि का प्रकोप कभी बड़े ज़ोर की आंधी पृथ्वी के जुदे २ भाग में आया करती है—जिस से बहुत संक्षय होता है कभी अन्न की पैदावरी कम होती है कभी अधिक भी होती है॥

नोत्पातपरित्यक्तः कदाचिदपि चन्द्रजो व्रजत्युदयम्।
जलदहनपवनभयकृत् धान्यार्घक्षयविवृद्धौच॥

सत्ताइसो नक्षत्र में बुध के उदय होने के जुदे २ फल लिखे गये हैं—हस्त से ६ नक्षत्र में बुध के उदय का फल तो बाराह मिहर ने कुछ अच्छा लिखा है बाकी नक्षत्रों में उदय का फल मंहगी बीमारी गऊ को पीड़ा अनावृष्टि राजाओं में परस्पर युद्ध आदि अनेक प्रजा पीड़ा लिखा है—

पूस अषाढ़ श्रावण वैशाख और माघ मे इस्का उदय हो तो संसार में किसी प्रकार की भय पैदा हो—कार्तिक और कुआर में जो यह देख पड़े तो अग्नि की, चौर की, रोग की, जल की, शस्त्र की भय हो—वर्षा बुध का सोनेका सा अथवा तोते की तरह हरा या हरे खेत के रङ्ग का अथवा हरे मणि की तरह हो स्निग्ध मूर्ति और और प्रकार में बड़ा उदय हो तो जगत् के लिये हित और शुभ है ऐसा बाराह मिहर का मत है॥

बुध के उपरान्त शुक्र की कक्षा है—आकाश के जितने तारे हैं शुक्र सबों में सुन्दर और चमकीला है यह सवेरे और सांझही को देख पड़ता है—सांझको जब कोई तारे आकाश में नहीं देख पड़ते उस समय सब के पहिले इसी का उदय होता है—सांझ को जब देख पड़ेगा तो पश्चिम में और भोर को जब दिखाई देता है तो पूरब में—चन्द्रमा को छोड़ शुक्र जैसा पृथ्वी के समीप है ऐसा कोई ग्रह नहीं है जिस समय यह बहुत पास आजाता है उस समय इसकी दूरी हम से २ करोड़ ७० लाख मील की रहती है—सूर्य से इस की दूरी ६ करोड़ ८० लाख मील की है बुध से इस की दूरी ३ करोड़ एक लाख मील की है—इसकी गोलाई का व्यास ७,८०० मील है पृथ्वी के व्यास से थोड़ाही कम है—प्रकाश सूर्य का इस पर हमारे अपेक्षा दूना पहुंचता है—शुक्र लोक के रहने वालों को सूर्य हमसे दूना बड़ा देख पड़ता होगा—यह अपनी धुरी पर २३ घंटे ११ मिनिट में एक बार घूम जाता है और पृथ्वी २३ घंट ५६ मिनिट में एक बार घूमती है तो शुक्र का दिन रात ३५ मिनिट हम से छोटा होता है॥

सन् ईस्वी १६१० में इटली देश का प्रसिद्ध ज्योतिषी गेलिलियों ने इसे पहले पहल जब दूरबीन से देखा तब तीज या चौथ के चन्द्रमा के समान सूर्य के चारों ओर घूमता हुआ देख पड़ा—फिर कुछ दिन उपरान्त देखा तो अष्टमी के चन्द्रमा सा उपरान्त थोड़े दिन बाद एकादशी द्वदशी के

चन्द्रमा सा देख पड़ा-जिससे स्पष्ट हो गया कि यह पृथ्वी के चारो ओर नहीं बरन सूर्य के गिर्द घूम रहा है क्योंकि यदि इस की कक्षा प्रथ्वी के कक्षा के बाहर न होती तो यह भिन्न २ आकार में ऐसा न देख पड़ता—२२४ दिन १६ घंटे में शुक्र बारहो राशि में सूर्य के गिर्द घूम आता है—४ करोड़ ३४ लाख मील की इसकी कक्षा है जिस पर यह ८ हज़ार मील एक घंटे के हिसाब से घूमता है-किसी २ ज्योतिषी का ख्याल है कि इसके साथ भी प्रथ्वी के समान चन्द्रमा लगा हुआ है पर यह ख्यालही मात्र है तेज़ से तेज़ दूरबीन से कभी इसका चान्द देख नहीं पड़ा-जब यह पृथ्वी के बहुत समीप आजाता है तब इसका अंधियारा हिस्सा हमारी ओर रहता है वह यदि प्रकाशमान् रहता तो जितना बड़ा यह हमें देख पड़ता है उस से २४ गुना बड़ा देखाई देता—शुक्र लोक के रहने वालों को बुध भी ऐसाही सांझ और सबेरे देख पड़ता होगा जैसा शुक्र हमें देख पड़ता है किन्तु प्रकाश में शुक्र जैसा हमें देख पड़ता है उससे बुध का अधिक रहता होगा और पृथ्वी शुक्र लोक के रहने वालों को जैसा हमें बृहस्पति और शुक्र देख पड़ते हैं उस से दस गुना अधिक प्रकाशमान् देख पड़ती होगी ॥

बाराह मिहर ने जुदे २ नक्षत्र में शुक्र के उदय और अस्त का जुदे २ देश में जुदा २ फल लिखा है-पूर्णिमा चौदस और अष्टमी को कृष्ण पक्ष में जो शुक्र का उदय या अस्त हो तो पृथ्वी जल से पूर्ण हो जाय ॥

चतुर्दशे पंचदशे तथाष्टमे तमिस्रपक्षस्य तिथौ भृगोः सुतः ।
यदाव्रजेद्दर्शनमस्तमेति वा तदा मही बारिमयीव लक्ष्यते ॥

बृहस्पति और शुक्र परस्पर एक दूसरे से सातावीं राशि पर एक पूर्व में दूसरा पश्चिम में देख पड़े तो प्रजा में रोग और शोक की पीड़ा पैदा करें और जल एक बिन्दु भी न बरसे ॥

गुरुर्भृगुश्चापरपूर्वकाष्ठयोः परस्परंसप्तमराशिगौयदा।
तदा प्रजा रुग्भयशोकपीडिता नवारि पश्यन्ति पुरन्दरोज्झितम् ॥

जो बृहस्पति बुध मंगल शनैश्चर ये सब शुक्र के आगे चलते हों तो मनुष्य, नाग, बिद्याधर, में परस्पर युद्ध हो और बायु अधिक बहै ॥

यदा स्थिताजीवबुधारसूर्यजाः सितस्यसर्वेऽग्रपथानुवर्तिनः।
नृनागविद्याधरसंगरास्तदा भवन्ति वाताश्च समुच्छ्रितान्तकाः ॥

इसी तरह पर शनैश्चर के आगे शुक्र चलता हो तो म्लेच्छ पुलिन्द शूद्र इन सबों को पीड़ा हो मंगल के आगे शुक्र हो तो अग्नि चोर अवर्षण और क्षुधा से प्रजा को पीड़ा हो विशेष कर उत्तर दिशा में—बृहस्पति के आगे शुक्र हो तो ब्राह्मण और गौ को पीड़ा हो पूर्व दिशा में ओले बहुत पड़ैं—शुक्र के उदय और अस्त के समय में बुध आगे हो तो जल बरसै पित्त के रोग बढ़ैं—गरमी के फल फूल तथा औषधी पुष्ट हों—उदय के समय शुक्र के वर्ण का यह फल लिखा है—अग्नि के रंग का शुक्र उदय हो तो अग्नि की पीड़ा हो, लाल रंग का उदय हो तो शस्त्र का प्रकोप हो, सोने के रङ्ग का हो तो व्याधि का भय हो, हरा या पीले रङ्ग का हो तो श्वास कासरोग बढ़ै, राख के समान रुखा और सफ़ेद रङ्ग हो तो अवर्षण हो ॥

शिखिभयमनलाभे शस्त्रकोपश्चरक्ते कनकनिकष गौरे व्याधयो दैत्यपूज्ये। हरितकपिल रूपे श्वासकासप्रकोपः पततिनसलिलंखाद् भस्मरूक्षासिताभे ॥

दधि, कुमुद, चन्द्रमा के समान कान्तिवाला होकर शुभ उदय हो, आकार में बड़ा और किरण युक्त हो तो अनेक प्रकार के मंगल करै और सब भांत शुभ है- इस के उपरान्त पृथ्वी की कक्षा है जिस का वर्णन दूसरे अंक में होगा॥ शेष॥

धन्य हो प्रभुवर प्रजा के प्राण रक्षक धन्य हो।

प्रयाग बासियों को १४ फरवरी सन् १८९८ भी चिरस्मरणीय रहेगी जिस दिन यहां के लोग तथा पश्चिमोत्तर देश के प्रधान नगरों के प्रधान पुरुष प्रभुबर प्रजा हितैषी श्रीमान् सर ऐंटोनी मेगडानेल को म्योरसेंट्रल कालेज के विस्तृत "हाल" सभा मंडप में अभिनन्दन पत्र देने को प्रस्तुत हुये—श्रीमान् की प्रभु शक्ति स्थिर अध्यवसाय महानुभावता प्रजा वत्सलता जल में तूंबी की नाईं सब के ऊपर प्रकाशमान् थी जिन की आकृति से देखने वाले को बोध होता था कि श्रीमान् जैसेही प्रजा बत्सल हैं वैसेही अपने इरादे के भी बड़े पक्के और दृढ़ हैं—म्योरसें-ट्रल कालेज की दीपावली से जगमगाहट तथा इवनिंग पार्टी की तैयारियां जो श्रीमान् के अभिनन्दन के इस अवसर पर की गईं; अनेक तअल्लुकेदार और नगर के बड़े २ रईसों का उत्सुकता के साथ एकत्रित होना मानो इस बात को सिद्ध कर रहा था कि जो सच्चे मन से प्रजा का हित चाहने वाले हैं उन को प्रजा भी कितना चित्त से चाहती है सच है "जैसा राम तुलसी से वैसा तुलसी राम से" "परस्परम् भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ" उक्त श्रीमान् ने काशी के पंडितों के अभिनन्दन पत्र के उत्तर में जो कहा वह सब तरह पर उचित और ठीक था कि "आप लोग हिन्दुस्तान भर को Morally govern. धर्म सम्बन्धी विषयों में शासन कर रहे हैं और अपना जीवन शास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने में बिता रहे हैं—इतनी दूर से आकर जो मेरे कामों का

अभिनन्दन किया तो अब मुझे निश्चय हो गया कि मुझ से कुछ अच्छा काम बन पड़ा है—दूसरे यह कि आप लोग भी जो राजनैतिक विषयों को समझने लगे और उस में प्रविष्ट होने का इरादा कर रहे हो तो निश्चय अब हिन्दुस्तान की भलाई होगी ॥

अन्त का यह जुमला बहुतही उपयुक्त श्रीमान् ने कहा निश्चय जो ये पंडित लोग राजनैतिक विषयों में हस्तक्षेप करने का इरादा कर लें तो न जानिये देश का कितना कल्याण हो—पंडितों का अभिनन्दन पत्र यह है जिस की संस्कृत देववाणी में अभ्यास रखने वालों के लिये बड़ी प्रमोद जनक होगी ॥

सम्माननीयवर महाशय—

ऎयान्टनि प्याट्रिक् म्याकडलेन् जि० सि० एस० आई०,

पश्चिमोत्तरायोध्याप्रदेशशास्तारम्प्रति।

सुप्रसीदन्तु श्रीमन्तः समालोचयितुमिदमभ्यर्थनीयम्।

अयमसौ सर्वसंप्रतिपन्नोऽर्थः—

स्वीयप्रखरप्रतापदवदहननिपातितसकलशत्रुशलभानां नीतिनिगड़निबद्धनिखिलेन्द्रियवृत्तीनां प्रजाहितेहायापितसर्वनिजानेहसां समुद्यद्दुष्टानां दिगन्तविश्रान्तयशसामसीषां वृटिश्जनताऽधीश्वराणां सुतनिर्विशेषं सर्वप्रजासु स्नेहभाजां मङ्गलमयशासनानां राज्ये निर्बला न प्रबलैर्निर्धना न धनवद्भिर्जडमतयो वा न धूर्तैर्वञ्चनपरैरतिलङ्घ्यन्ते प्रबाध्यन्ते वा। येषां राज्ये सुदूरदेशा अपि सान्निध्यं कौशलेनोपयान्ति। दुष्प्रतरा नद्योऽपि सुप्रतरतां गिरयोऽप्यनतिलङ्घ्या जङ्घालल‍ङ्घ्याः पङ्गु लङ्घ्यताम्। किमुत तेषां कलाकौशलमुपवर्णनीयं यद्देशीयैर्नाविकैरपि महोदधयः क्रीडापुष्करिणीकृताः कुल्यात्मतां च नीताः। विशेषतश्चैतदस्ति

तेषां परमसौभाग्यं ये भवादृशान् राजकार्यनिर्वाहकान् पुरुषाननायासेन लभन्ते येष्वन्यतमः श्रीमानस्मत्सौभाग्यसुलभः पुरुषशिरोमणिः प्रजाजनचित्तचिन्तामणिश्च ॥

अस्ति चायं परमाभोदावहः समयो यद्वयमिह प्रजारक्षणविचक्षणस्य नीतिविशारदस्य स्वकीर्तिधवलीकृतसर्वदिगङ्गणगणस्य प्रजाहर्षहर्षस्य प्रजाखेदखिन्नचेतसश्च अधुना पोष्यवर्गतां प्राप्ताः। किमिव श्रीमतो जनानुरञ्जनभगीरथयत्नो वर्णनीयः। येन पूर्वस्मिन्नेव वत्सरे कृतिशतमारचय्य प्रजा अन्नक्लेशभयात् परित्राताः। यश्च प्रजाधर्मे स्वधर्म इव शश्वद्दत्तदृष्टिः रक्षणपरायणः। यं प्राजाजना निर्भीकाः स्वक्लेशमुपश्राव्य सहसैव विज्वराः कृतार्थाश्च। यं स्वपुण्यपुञ्जजन्मानमिव राजानं मन्यमाना नीतिनिर्माणसमयेषु अयत्नेनैव स्वाभिलाषमनुरूपमासादयन्ति पश्चिमोत्तरदेशीयाः प्रजाः ॥

आशास्महे च सांक्रमिकत्वेन संभाविता मुम्बईप्रान्तप्रचलितमहामार्याद्युपसर्गा यदीयसुप्रयत्नेन पश्चिमोत्तरदेशान् न बाधेरन्निति। अस्ति चेदमपि सविशेषविमर्शनीयं यद्भारतवर्षीयासु सुप्राचीनासु सर्वासु विद्यासु तद्वेदिषु च दयादृष्टिः सर्वथा तद्विवर्धनयत्नश्च श्रीमान्। आशास्महे च श्रीमतां प्रयत्नेन पाश्चात्याः पूर्वदेशीयाश्च विद्याः सिन्धोरिवाद्भिः कावेर्या आपः सारस्वतीभिरिव वा अद्भिर्गाङ्गय आपः औशनसनीतिभिरिव बार्हस्पत्यमतयः पुरुषनियतिभिरिव पुरुषसत्कृतयः संगतिमधिगम्य मनोमलक्षालनेन उभयेषामपि देशानां परमकाष्ठां मानसीं लौकिकीं च समुन्नतिं विदध्युः। भृशमभ्यर्थयामहे च भगवन्तं परमेश्वरं यत्स सपरिवाराणां श्रीमतां चिरस्वास्थ्यं समृद्धिं चिरायुष्कतां च क्रियादिति। शम्।

काशी— संवत् १९५४, फाल्गुनकृष्णपञ्चमी	काशीवास्तव्या भवद्वशंवदाः पण्डिता वयम्

इन दिनों पायोनियर ऐसे ऐंगलो इण्डियन प्रायः यह कहते हैं कि हिन्दुस्तान की प्रजा में राज विद्रोह का रोग बढ़ गया है इस बात के मिथ्या होने का इस से अधिक पुष्ट प्रमाण और क्या हो सक्ता है कि सर ऐंटोनी मेकडानेल ने जो अकाल का उत्तम प्रबन्ध किया प्रजा के साथ सची सहानुभूति प्रगट की और सामान्य रीति पर प्रजा का दर्द बूझा तो प्रजा का हृदय जैसा समुद्र पूर्ण चन्द्र को देख उस्की ओर उमड़ २ कर उठता है उसी तरह उनके अभिनन्दन के लिये उठा—औरों की तो हम नहीं कह सक्ते हिन्दू मात्र तो रोम २ से सर ऐंटोनी मेग डानेल को धन्यवाद दे रहे हैं—अधिक लिखने से क्या हम लोग तो उक्त लाट साहिब को उसी प्रीति और भक्ति के साथ देखते हैं जैसे अपने जाति के राजा को देखते–यहां का सोमवार की रात का उत्सव देख क्या कोई यह कह सक्ता है कि विदेशीय राजा के लिये लोग यह आनन्द प्रगट कर रहे हैं और अपने चित्त का सच्चा भाव दरसाय रहे हैं? किसी विदेशीय शासन कर्ता की इस्से अधिक और क्या स्तुति और प्रशंसा हो सक्ती है कि प्रजा उस्का वैसाही आदर सम्मान करे जैसा देशीय राजा का करती—हम ने ऊपर हिन्दुओं के सम्बन्ध में कहा है इस से हमारा यह तात्पर्य नहीं है कि और जाति के लोग भी मेगडानेल साहब का वैसही धन्यवाद नहीं करते जैसा हिन्दू करते हैं—हम ने हिन्दुओं के विषय में इस लिये कहा कि हम अपने हिन्दू हृदय का भाव जानते हैं– यह तो प्रत्यक्ष है कि सिवाय थोड़े से ऐंगलो इंडियन के और सब जाति के लोग उक्त श्रीमान् से प्रसन्न हैं और उन्हें असीस रहे हैं–ऐंगलो इंडियन हम पर राजविद्रोह का दोषारोप तो करते हैं इनसाफ को काम में लाय यह एक बार कभी नहीं सोचते कि हमारा शासन कर्ता भी तो ऐसा गुण रखता हो कि हम उस के उपकार के बोझ से दब कर उस्का पूरा समादर करने को बाधित और प्रोत्साहित

हैं-कहावत है "एक हाथ ताली कभी नहीं बजती" अच्छा कहा है-

नरपति हितकर्ता द्वेष्यतां जातिलोके जनपदहितकारी त्यज्यते पार्थिवेन्द्रैः। इति महति विरोधे विद्यमाने समाने नृपति जनपदानां दुर्लभः कार्य कर्ता॥

जो केवल राजा का है वह प्रजा का नहीं हो सक्ता जो केवल प्रजा का हित चाहेगा राजा उसे अपना कैसे मान सक्ता है-इस तरह राजा प्रजा दोनों में परस्पर महा बिरोध रहते ऐसा पुरुष दुर्लभ है जो बिचार को काम में लाय राजा प्रजा दोनो को सम्हाल रक्खे-ऐसे पुरुष सर ऐंटोनी मेगडानेलही देखे गये-ईश्वर इन को चिरायु करे और सब भांत फूलते फलते रहैं॥ इतिशम्॥

नल दमयन्ती नाटक॥ दूसरा अंक॥ स्थान।

बनभूमि का प्रान्त भाग

(कलि पीछे २ द्वापर का प्रवेश)

कलि—(हांफता माथे का पसीना पोछता हुआ) उः मैं जानता कि नल को हराने में मुझे इतना परिश्रम और दुःख उठाना पड़ेगा तो कभी ऐसा प्रण न करता (हांफता हांफता) उःबाप रे बाप ऐसी मेहनत करना पड़ा कि दातों पसीना आया-पर नल अपने धर्म और सदाचरण का ऐसा पक्का और दृढ़ कि कहीं किसी बात में उसकी चूक न पाई गई॥

द्वापर—(स्वगत) साधु राजा नल साधु—तब तब॥

कलि—तब क्या बहुत दिनों तक इसी खोज में रहा कि कहीं पर तो कुछ छिद्र उस में पावेंहींगे चट उस के शरीर में प्रवेश कर अपना मतलब गाठेंगे—अन्त को जब लाचार हुआ तो उसके नगर की परि-

झमा करते घर २ घूमता फिरा—पर भीतर प्रवेश करने का अवसर मुझे कहीं न मिला—एक गृहस्थ के घर गया तो वहां लोग झूठी गप्पें मार रहे थे मैं बड़ा प्रसन्न हुआ कि अब मुझे अवसर मिल गया कि यहां मिथ्या का सञ्चार है पर ध्यान देकर सोचा तो वह मिथ्यावाद स्त्रियों के बहलाने को था "स्त्रीषु नर्म विवाहेषु वृत्यर्थे प्राणसंकटे। नानृतं स्याज्जुगुप्सितम्" सोच कर उदास हो गया और भीतर न जा सका—कहीं गया तो पशुओं के बध करने के लिये खंभे गड़े थे बड़ा प्रसन्न हुआ कि हिंसा यहां होती है—मुझे अब यहां रह कर अपना काम करने का मौका मिल जायगा पर सोचा तो जाना कि वह तो यज्ञ का खंभा था तब मुझे याद पड़ा "तस्मात् यज्ञे बधो ऽबधः" "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति" कहीं गया तो भस्म त्रिपुण्ड्र रमाये बहुत लोगों को चिल्लाते हुये पाया मैंने समझा यहां पाखण्डी लोग रहते हैं अवश्य मुझे टिकने का अवकाश मिलेगा—पर वे सब वेद पाठी ब्राह्मण निकले जिन के वेदाध्ययन का शब्द मेरे कानो को ऐसा कडुआ मालूम हुआ कि वहां न ठहर सका—बल्कि तीनो सन्ध्या में ब्राम्हणों के अघमर्षण का जो जल वहां बहा था उस में ऐसा फिसल कर गिरा कि हाथ पांव टूटने से बचा देखो यह कई जगह फूट गया है (देह देखाता है)

द्वापर—अच्छा तो फिर तुमने क्या किया॥

कलि—किया क्या तुम जानते हो मैं भी कैसा धुनी हूं अपने उद्योग और यत्न से न चूका बहुत दिनो के उपरान्त मालूम हुआ कि नल को पासा खेलने का दुर्व्यसन बहुत अधिक है—बस मुझे बहाना मिल गया उस के भाई पुष्कर के साथ पासा खेलने में उसे ऐसा फसाया कि वह अपना राज पाट सब खो बैठा दमयन्ती समेत अपने निषध देश से निकल इसी बन में आया चाहता है—अब तुम जाओ मैं इस सामने के बहेरे के पेड़ में प्रवेश कर बैठ रहता हूं—यहां भी मैं उसे

अभी न छोडूंगा जब तक पूरा २ दांव न ले लूंगा॥

द्वापर—अच्छा तो मैं अभी जाता हूं फिर मिलूंगा-(प्रस्थान)

कलि-मैं भी जाकर इसी बहेरे के पेड़ में छिप रहूं और वहीं से बैठा २ देखूं कि दोनों यहां आय क्या करते हैं (जाता है)

प्राप्त ग्रन्थ।

(राजस्थानकेशरी अथवा महाराणा प्रताप सिंह—एक ऐतिहासिक नाटक)

काशी निवासी बाबू राधाकृष्ण दास विरचित-इस नाटक में प्रधान बीर रस रक्खा गया है सही पर जहां जैसा आ पड़ा है उसके अनुसार करुणा वात्सल्य और हास्यरस को भी बहुत अच्छी तरह निबाहा है—यहां तक कि शृंगार जो बीर रस के सर्वथा बिरुद्ध है उसका प्रादुर्भाव भी बड़ी चतुराई के साथ दिखलाया गया है और उस शृंगार का निचोड़ भी अन्त में बीरता के अनेक गुण धीरज साहस अपनी प्रतिज्ञा को सत्य करने पर आदिकि हैं—यह नाटक पढ़ने में जैसा सरस है वैसाही अभिनय भी इसका बड़ा उत्तम हो सक्ता है—पारसियों का सत्यानाश हो जिन्हों ने मुसल्मानी ढंग के आशकी माशूकी का तमाशा कर हमारे यहां के नवयुवावों की रुचिही चौपट कर डाला उनको ऐसे नाटकों का अभिनय जो दिखाया जाय तो निःसन्देह उन्हे सब तरह के रस का स्वाद मिले और शृंगार रस के तमाशों को देखते २ उन के चित्त की झुकावट जो बिगड़ गई है सो भी उधर से हट पौरुषेय अनेक उत्तम गुणों की ओर लग जाय—मुसल्मानों की हूर परी नबी पैगम्बर जी से हट जांय और उन के बदले हमारे पुराने हिन्दुस्तान की बीरता साहस प्रतिज्ञा पालन धर्म में दृढ़ता आदि स्थान पावे—बाबू राधाकृष्णदास इस के रचयिता उस पुनीत वृक्ष के अंकुर हैं जिस वृक्ष के अमृत रसास्वादी फल सुग्रहीत नामधेय श्रीमान् बाबू हरिश्चन्द्र थे—हिन्दी रसिकों को उचित है कि इस पुस्तक का यथोचित आदर कर ग्रन्थकार के उत्साह

को बढ़ावैं मूल्य ॥।) बनारस चन्द्रप्रभा प्रेस में छपा है ॥

उपन्यास माला।

चन्द्रकान्ता रचयिता बा-देवकी नन्दन ने उपन्यास माला मासिक पत्र के द्वारा विलायत के प्रसिद्ध उपन्यास लेखक रेनलड के नाविलों का अनुवाद हिन्दी में करना आरंभ किया है-दो नम्बर इस्के अबतक निकल चुके हैं इन दोनों मे रइहौसम्राट नाम का उन्यास का अनुवाद है बाबू देवकी नन्दन की लेखनी किसी से छिपी नहीं है जिन्हों ने चन्द्रकान्ता पढ़ा है जान लेंगे तब उक्त ग्रन्थकार का विशेष परिचय देना केवल पिष्ट पेषण मात्र है ॥

संस्कृत भाषा की प्रथम पुस्तक।

मेरट निवासी पं० श्याम लाल शर्मा द्वारा संकलित जो संस्कृत में अभ्यास किया चाहते हैं उनके लिये यह पुस्तक बड़े उपकार की है-पहले दो लब्ज़ के जुमले फिर तीन शब्दों के चार के इस क्रम से जुमले "वाक्य" बढ़ते गये हैं मूल्य -)

प्रदीप

इस नाम का बङ्गभाषा का अनेक सुललित उत्तम विषय शोभित मासिक पत्र-कायस्थ पाठशाला कालेज के प्रिन्सिपल बाबू रामानन्द चट्टोपाध्यय एम० ए० द्वारा संपादित-उक्त बाबू साहब बड़े सुयोग्य विद्वान् और विद्या रसिक हैं तब जिस के सम्पादक ऐसे लोग हैं उस पत्र के उत्तम होने में कौन सन्देह है इस का वार्षिक मूल २) है ॥

हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २१ सं० ७--८ { प्रयाग { मार्च अप्रैल १८९८ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

मूल्य अग्रिम ३।=) —— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १।=)

नमूने की कापी =)॥

१-४-९८

हिन्दीप्रदीप

जिल्द २१ संख्या ७।८।	प्रयाग	मार्च। अप्रैल सन् १८९८ ईसवी

श्रीमत् शंकराचार्य और गुरू नान्हिक शाह।

ये दोनो हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध पुरुषों में अग्रगण्य और बड़े महात्मा हो गये हैं—पंजाब में जैसा गुरू नान्हिक माननीय हैं आबाल वृद्ध बनिता कोई ऐसे नहीं हैं जो गुरू नान्हिक के चित्र के सामने सिर न झुकाते हों और उनका नाम मुह पर आजाने से हर्ष निर्भर हो प्रेम मग्न फूले न समाते हों वैसाही दक्षिण महाराष्ट्र देश में श्री शंकराचार्य माने जाते हैं—प्रतिमा पूजन के सिद्धान्तों को काटने वाले और ईश्वर की निर्गुण उपासना के पोषक दोनो थे—किंतु शंकराचार्य जाति के ब्राह्मण थे, इसलिये ब्राह्मणों के उसकाने से जिसने ब्राह्मणों की जीविका में बाधा न पहुंचे पंचायतन पूजा अर्थात् विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य और शक्ति की पूजा और आराधना फिर से स्थापित किया और बौद्धों को इस देश से निकलवा दिया—बौद्धों के देवी देवताओं की प्रतिमाओं को हिन्दुओं के देवी देवताओं की प्रतिमा कायम कर उन्हें विष्णु, शिव, काली, दुर्गा के नाम से पुजवाया—नान्हिक शाह इसके विरुद्ध ब्राह्मणों का ज़ोर बहुतही बहुत तोड़ा नाम के माहात्म्य को अधिकाधिक बढ़ाया सच

भी है नाम संकीर्तन में लगा हुआ चित्त का शुद्ध सीधा सादा मनुष्य कुटिल चित्त त्रिवेदज्ञ ब्राह्मण से श्रेष्ठ है—दूसरे यह कि शंकर पूर्ण विद्वान् वेदान्त दर्शन के प्रवर्तक थे और उस समय हुये जब मुसल्मानों का ज़ोर न बढ़ने से संस्कृत का पठन पाठन देश में पूरी तरह जारी रहा और देश के हर एक प्रान्त में बड़े नामी मंडन मिश्र ऐसे पण्डित विद्यमान् थे—उस समय शंकरही कासा विद्वान् प्रतिष्ठा पा सक्ता और सर्वग्राह्य हो सक्ता था—दूसरे यह कि बौद्ध जिनके मुकाबिले शंकराचार्य उठखड़े हुये बड़े दार्शनिक थे शंकरही कासा सुयोग्य पण्डित उन से पार पासक्ता था—इधर नान्हक जिस समय और जिस देश में हुये उस समय और उस देश में मुसल्मानों का बड़ा अत्याचार था चाल चलन रीत वर्ताव रहन सहन लोगों का यावनिक हो गया था बोली और पहनावे तक में मुसल्मानी छागई थी—संस्कृत के पढ़ने पढ़ाने से कहीं सरोकार न रह गया संस्कृत की जगह लोग अरबी फ़ारसी के बड़े मुल्ला और आलिम होने लगे तब नान्हिकही ऐसे अल्पविद्य किन्तु कुशाग्र बुद्धि का काम था कि खान पान के अनेक आचार बिचार पर ध्यान न दे एक निर्गुण की उपासना के द्वारा हिन्दू और मुसल्मान दोनो को एक करे—आपस की सहानुभूति और हमदरदी लोगों में आजाने की बहुत कुछ उन्होंने चेष्टा किया—उसी समय के लग भग बङ्गाल में कृष्णचैतन्य महाप्रभु जैसा भक्ति और परस्पर के प्रेम के पोषक हो रहे थे और जाति पाँति के झगड़े को तोड़ रहे थे वैसाही पंजाब में गुरु नान्हिक ने जाति पांति को फूट की बुनियाद समझ वरण विवेक को यहां तक घटाया कि हिंदू मुसल्मान दोनो को एक कर दिया—यह इसी का नतीजा है कि सिक्ख जाति में दोनो पाये जाते हैं सच्चा सिक्ख वही है जिसको हिंदू और मुसल्मान का बिचार नहो सिक्ख हिंदू तो होतेही हैं बहुधा मुसल्मान भी सिक्ख पाये जाते हैं—हिंदुस्तान

के दो प्रान्त बङ्गाल और पंजाब जो कुछ २ आगे को बढ़ रहे हैं यह इन्ही दो महात्माओं के उपदेश का फल है महाप्रभु कृष्णचैतन्य और गुरु नान्हिक-सारांश यह कि नान्हिक यद्यपि शंकर के से विद्वान् न थे किन्तु चरित्र की पवित्रता सौजन्य आस्तिक्य बुद्धि में शंकर से किसी अंश में कम न थे-अब देखना चाहिये राजनैतिक विषयों में और मुल्की मामिलों में इन दोनों के उपदेश और शिक्षा का क्या फल हुआ-शंकर ने बौद्धों को यहां से निकाल शासन की स्थिर शैली में बड़ी खलबली मचा दिया और बहुत चाहा कि भारत फिर वैसाही हो जाय जैसा वैदिक ऋषियों के समय में था किंतु सो नहो आधा तीतर आधा बटेर सा होगया-अब इस समय हम लोगों में कर्मकाण्ड कलाप और यज्ञोपवीत विवाह आदि की जो पद्धतियां प्रचलित हैं वह सब उस समय की बनी हैं जब शंकर ने हिंदुस्तान को बौद्धों के हाथ से छुटाय इसका पुनः संस्कार किया और ब्राह्मणों को फिर पूरी ताकत मिली-बौद्धों के उच्छिन्न हो जाने से अपनी मनमानी करने में कोई रोक टोक करने वाला उन्हें न रहा-दुसरे शैव और वैष्णवों का ऐसा विरोध बढ़ा कि फूट को फैलने के लिये पूरा मौका और स्थान मिल गया-इस सब का फल यही हुआ कि मुल्क में कमज़ोरी यहां तक छाई हुई है कि अंगरेज़ी शासन की शान्ति और अंगरेज़ी शिक्षा को लग भग सौ वर्ष के होता जाता है पर लोगों के कुसंस्कार बदलतेही नहीं-संशोधन का बीज जमने के लिये वही बात याद आती है कि जनम का कोढ़ कहीं एक एतवार से दूर हुआ है अभी नजानिये कै शताब्दी का समय भारत के यथोचित संशोधन के लिये काफ़ी न होगा-शंकर तथा रामानुज न हुये होते तो मुसल्मानों को यहां कदम जमाने में इतनी सुगमता न होती न मुल्क में इतनी कमज़ोरी फैल जाती-सब से बड़ी हानि शंकर से वेदान्त दर्शन की हुई जिसके सिद्धान्त बदल कर और के और होगये-व्यासदेव जी

वेदान्त सूत्र के प्रवर्तक हैं उनका प्रयोजन वेदान्त सूत्रों के बनाने का कुछ औरही था शंकर उन्हे औरही मतलब पर झुकालाये—व्यासदेव का यह कभी तात्पर्य वेदान्त के प्रचलित करने से न था कि इस प्रकार अकर्मण्यता देश में छाजाय संसार को मिथ्या मान हम स्वयं ब्रह्म बन बैठें—बरंच सुख दुःख को एकसा समझ अपना काम करने में न चूकें, स्थिर अध्यवसाय दृढ़ निश्चय व्यवसायात्मिका बुद्धि को चित्त में हर समय अवकाश देते रहैं, दुःख में घबड़ा न उठैं और सुख में मारे घमण्ड के फूले न समांय, संसार को स्थिर अनश्वर मान कर्मयोग में सदा लगे रहैं इत्यादि—गुरु नानिक से बुद्धिमान् ने इन सब बातों को सोच बिचार कबीर के सिद्धान्तों को बिशेष आदर दिया—किसी एक खास मज़हब या धर्म में अपने को जकड़े रहना राजनैतिक तरक्की का बड़ा बाधक है—जब तक किसी खास धर्म की पाबन्दी हमे लगी रहेगी तब तक मनुष्य जाति में साधारण प्रेम, जाति वात्सल्य, मुल्की तरक्की के उद्योग में सबों के साथ एकसा सहमत कभी हम होही नहीं सक्के—इसलिये हर एक धर्म के Forms and ceremonies बाहरी बनावट को तुच्छ समझ नाम संकीर्तन आदि के द्वारा ईश्वर की केवल भक्ति मात्र और आस्तिक्य बुद्धि को मुख्य समझा उसी के अनुसार अपने अनुयायियों को चलने को कहा और अपने शिष्यों को वैसीही शिक्षा दिया—अन्त को जिस का परिणाम यह हुआ कि रणजीत सिंह ऐसा विजयी उद्भट योद्धा पंजाब में पैदा होगया और अब तक सिक्खों में जैसा कौमी जोश है वैसा तमाम हिन्दुस्तान के किसी प्रान्त के लोगों में नहीं है ॥

शंकराचार्य ने पक्षपात और अपने मत की खींच यहां तक रक्खा कि सर्व संमत न हो सके—गुरु नानिक के उदार चित्त में न पक्षपात था न कसी से बिरोध या अपने मत की खींच थी इसलिये न केवल पंजाब भर में बरन और प्रान्त के लोगों में भी सर्व संमत हुये—अस्तु ये

दोनो महात्मा जैसे रहे हों सर्बथा माननीय हैं किन्तु इन दोनों के मत के फकीर सन्यासी और उदासी देश के अकल्याण के बड़े भारी द्वार हैं–शंकर बड़े भारी पण्डित थे तो अब भी कहीं २ दो एक सन्यासी ऐसे देखे जाते हैं जो विरक्ति त्याग तथा पाण्डित्य में संन्यास आश्रम की शोभा हैं–किन्तु उदासी तो बहुधा ऐसेही पाये जाते हैं जो विषयाशक्ति में गृहस्थों के भी कान काटे हैं—भांत २ की आवारगी में पड़ घर गृहस्थी में जब न रहसके तो मूड़ मुड़ाय पेट के लिये सन्यासी बैरागी या उदासी होगये केवल भेख को पूजने वाले श्रद्धा जड़ गृहस्थों को ठगने लगे–उदासी बहुत बिगड़े हुये हैं संन्यासी आवारगी में कुछही उनसे कम हैं–"नारि मरे अरु संपद नासी, मूड़ मुड़ाय भये संन्यासी"—अब संन्यासी बनने के लिये केवल गीता की एक पुस्तक पास रहना अवश्य है और गुरुमुखी अक्षरों से परिचय रखना जिस्से ग्रन्थ साहब का पाठ करले उदासी के लिये योग्यता की कसौटी है—ग्रन्थ साहब का पाठ करने आता ही मानो गुरू नान्हिक का प्रतिनिधि होगया–गुरू नान्हिक का प्रधान हेड क्वार्टर रणजीत सिंह का बनवाया अमृतसर का स्वर्ण मन्दिर है–शंकरा-चार्य्यों के प्रधान क्षेत्र ४ हैं शृंगेरी मठ जिस्के प्रधान हस्तामलका-चार्य थे—शंकर के १० शिष्यों में पुरी भारती सरस्वती इन ३ संप्रदाय वालों के अधिकार में यह मठ है—यह मठ शृंग गिरि पर्वत पर है जो रामेश्वर की रास्ते में मन्द्राज हाथे में कहीं पर है–शारदा मठ द्वारिका में है शंकर के सब से मुख्य शिष्य पद्मपादाचार्य के अधिकार में यह मठ रक्खा गया–तीर्थ और आश्रम दो संप्रदाय के सन्यासियों के अधि-कार में यह मठ है–जोशी मठ हिमालय में बद्री और केदार की रास्ते में कहीं पर है तोटकाचार्य इस्के प्रधान किये गये—गिरि पर्वत सागर तीन संप्रदाय के सन्यासी इस्के अधिकारी हैं–गोबर्धन मठ जगन्नाथपुरी में है—सुरेश्वराचार्य जो पहिले मण्डन मिश्र के नाम से

प्रसिद्ध थे इस मठ के प्रधान किये गये बन और आरण्य दो संप्रदाय के संन्यासी इसके अधिकारी हैं उन २ गद्दियों पर अब जो रहते हैं वे शंकराचार्य कहलाते हैं और जगद्गुरू की उपाधि उन्हें दी जाती है—मुख्य शंकराचार्य महाराज को यह कभी इच्छा न हुई कि हम जगद्गुरू कहलावें किन्तु जो अब उस गद्दी पर बैठते हैं अपने को जगद्गुरू कहते और मानते हैं—मन्दराज और बम्बई हाथे में जगद्गुरू शंकराचार्य का बड़ा ज़ोर है सामाजिक और धर्मसम्बन्धी मामिलों में बिना जगद्गुरू की व्यवस्था के कोई काम पंचद्रविड़ों में नहीं हो सक्ता—बिलाइत से लौटे हुओं को जगद्गुरू ने व्यवस्था दे दिया तो प्रायश्चित्त कराय समाज में ले लिये जाते हैं सौन्दर्य लहरी आदि अनेक स्तोत्र शंकर के नाम से प्रचलित हैं पर वे मुख्य शंकर के बनाये कोई नहीं हैं—इस से सिद्ध है कि ये जगद्गुरू शंकराचार्य उत्कृष्ट पण्डित होते आए और हैं भी—तत्वमसि, अहंब्रह्मास्मि, प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म, अयमात्मा ब्रह्म, ये ४ महा वाक्य थे चारो मठ के अलग२ माने गये हैं—शंकराचार्य के प्रधान पट्ट शिष्य पद्मपाद, हस्तामलक, सुरेश्वराचार्य, तोटकाचार्य, समित्पाणि, चिद्विलास, ज्ञानकन्द, विष्णुगुप्त, शुद्धकीर्ति, भानुमरीचि, कृष्णदर्शन, बुद्धिवृद्धि, बिरंचिपाद, शुद्धानन्त, आनन्दगिरि, सुधन्वाराजा, कविराज राजशेखर इत्यादि थे—इसमे सन्देह नहीं बौद्धों के उपरान्त शंकराचार्य वर्तमान् हिन्दू धर्म के बड़े पोषक हुये यह न हुये होते तो देश का देश या तो बौद्ध मतावलम्बी बना रहता या सब के सब यवन या मुसल्मान हो जाते—नास्तिक की भी १३ गद्दी हैं उनके जुदे२ पन्थ हैं १० इनके अवतार माने गये हैं चेला में सब से मुख्य सुधरा था ।

खगोल निरूपण ।

(पहिले के आगे से)

साधारण पढ़ने वालों को यह देख अचरज होगा कि पृथ्वी

जिस्पर हम हैं और २ ग्रहों की भाँत एक ग्रह है और वर्ष में एक बार सूर्य के चारों ओर घूम आती है—पढ़ने वालों को अचरज इसलिये होगा कि जहां कहीं हम हों मैदान में या किसी बन्द मकान में बैठे हों हमे कहीं से किसी तरह का होलना डोलना पृथ्वी में नहीं मालूम होता तो हम कैसे जानें कि पृथ्वी चल रही है—किन्तु वास्तव में प्रति क्षण सैकड़ों मील जैसा कोई रेलगाड़ी में बैठा हो और रेल उसे लिये जाती हो वैसा यह हमें लिये जाती है-रेल तो पृथ्वी पर चलती है और पृथ्वी उस का आधार है पर पृथ्वी विना आधार के अनन्त आकाश में ईश्वर नियमित ग्रह उपग्रहों की आकर्षण शक्ति से निरा-वलम्ब चली जारही है—यदि हम चन्द्र लोक में होते तो यह हमें वैसही दीखती जैसा चन्द्रमा हमे दीख पड़ता है—किन्तु आकार में १३ गुना चन्द्रमा से बड़ी देख पड़ती और चन्द्रमाही के समान घटती बढ़ती भी रहती—शुक्र के लोक में होते तो शुक्रही के समान यह भी कभी सबेरे कभी सांझ को हमे देख पड़ती और चन्द्रमा बहुतही छोटा तारासा उस के पास दीख पड़ता—शुक्र लोक से पृथ्वी हमे उस्से दस गुना बड़ी दीख पड़ेगी जितना शुक्र हमें यहां से दीख पड़ता है—इस्से सिद्ध होता है कि पृथ्वी तथा दूसरे ग्रह स्वयम् प्रकाशमान् पिण्ड नहीं हैं बरन उन सबों में प्रकाश सूर्यही का रहता है और उसी प्रकाश से ये ग्रह हमें प्रदीप्त मानों प्रकाश का पुंज दिखाई देते हैं—तात्पर्य यह कि जैसा बुध शुक्र मंगल बृहस्पति आदि ग्रह ग्रह के अन्तर्गत हो रात के प्रकाश-मान् देख पड़ते हैं वैसही उन २ ग्रहों के रहने वालों को यह पृथ्वी भी ऐसाही प्रकाशित देख पड़ती होगी—सृष्टिनियामक उस बड़े कर्त्तार ने पृथ्वी के चारो ओर ऐसा एक वायु नियत कर दिया है जो प्राणी मात्र के जीवन के लिये उपकारी है जिस्मे रहकर सब जीव जन्तु तथा मनुष्य अच्छी तरह चल फिर सक्के हैं तथा आसानी से श्वास प्रश्वास कर

सक्के हैं-पृथ्वी से ४५ मील ऊपर तक यह वायु क्रम २ पतला पड़ता गया है यहां तक कि ४५ मील के ऊपर इतनी कम हवा है कि दम घुटने लगता है और न आग उस में बिना बुझे रह सक्की है—यह इस वायुही का गुण है कि उस से पक्षी उड़ सक्के हैं बादल पैदा हो लटके रहते हैं पानी बरसता है ओस और ओले बनते हैं—यह वायुही है जिस के परस्पर संघट्ट और रगड़ से बिजली चमकती है बादल गरजते हैं आंधी आती है इत्यादि-इस की गोलाई २४,९१२ मील की है और व्यास अर्थात् वह रेखा जो इस के बीचो बीच होकर गई है ७,९३० मील की है-इस्की कक्षा १९ करोड़ ७० लाख मील की है यह बिल्कुल गोल नहीं है बरन नारंगी के आकार में ध्रुवरेखा पर कुछ चपटी है—यदि पृथ्वी स्थिर मान लीजाय तो यह सौर जगत् बिल्कुल अस्तव्यस्त हो जाता है—इस प्रकार ऋतुओं का अदल बदल तब नहीं हो सक्का या तो अत्यन्त शीत से समस्त भूभाग ठिठरा पड़ा रहेगा या सूर्य की अत्यन्त उष्णता से यह भूगोल जल कर खाक हो जायगा-२४ घंटे में यह एक बार अपनी धुरी पर घूम जाती है और ३६५ दिन ६ घंटा ९ मिनिट १२ सेकंड में एक बार सूर्य के चारो ओर घूम आती है-हमारे यहां के ज्योतिषियों में आर्य भट्ट के मन में आया था कि पृथ्वी चल रही है और अपने ग्रंथ आर्य सिद्धान्त में साफ २ लिख दिया पर और २ लोगों ने उन पर इतना अधिक्षेप और ताना किया और उन के सिद्धान्त को पुराणों के विरुद्ध कह उसका सर्वथा इतना खण्डन कर डाला कि आर्य भट्ट की वह बात न चली जो अब अंगरेज़ी विज्ञान और अंगरेज़ी तालीम की बरकत से माननाही पड़ता है ॥

चन्द्रमा ।

चन्द्रमा सब ग्रहों में पृथ्वी के सब से नज़दीक है यह उन ग्रहों में नहीं है जो सूर्य के चारो ओर घूमते हैं बरन पृथ्वी के चारो ओर

घूमता हुआ पृथ्वी के साथही साथ यह भी एकबार सूर्य के गिर्द घूम आता है इसलिये यह उपग्रहों में है—चन्द्रमा प्रति दिन पूरब की ओर उगता देख पड़ता है और कुछ घंटों के उपरान्त पश्चिम में डूब जाता है यह इसका उदय और अस्त पृथ्वी की प्रति दिन की चाल का कारण है—२७ दिन ७ घंटा ४३ मिनिट में यह सत्ताइसों नक्षत्र और बारहों राशि पर घूम आता है—चान्द्रमास जो एक अमावाश्या से दूसरी अमावाश्या तक में होता है २९ दिन १२ घंटा ४४ मिनिट २ सेकंड का होता है—यह एक घंटे में ७०,००० मील चलता है—चन्द्र लोक के रहने वालों को पृथ्वी भी ऐसाही दीख पड़ती होगी जैसा चन्द्रमा हमे देख पड़ता है—फर्क इतनाही है कि जब हमें अन्धियारा पाख है चन्द्रलोक वालों को उंजेला पाख होगा जब हमें पूर्णिमा है तब उन्हे अमावाश्या और जब हमको अमावश्या है तब उन्हे पूर्णिमा होती है, जैसा कि पृथ्वी चान्द से १३ गुना बड़ी है तो हम को जैसा चन्द्रमा देख पड़ता है उस से यह तेरह गुना बड़ी चंन्द्रलोक वालों को दीख पड़ती होगी—और प्रकाश भी १३ गुना अधिक वहाँ होगा—जब पृथ्वी के बहुत समीप रहता है तो इसकी दूरी २,३७,००० मील से भी कम रहती है—यद्यपि चन्द्रमा का बिम्ब भी उतनाही बड़ा दिखाई देता है जितना बड़ा सूर्य का, पर दोनो की दूरी और कद में बड़ा अन्तर है—६ करोड़ ३० लाख इतना बड़ा बिम्ब जितना बड़ा चन्द्रमा का है सूर्य के बिम्ब में समा जा सक्ता है—जितना दूर चन्द्रमा पृथ्वी से है उस से चार सौ गुना सूर्य पृथ्वी से दूर है इसी से दोनो के बिम्ब में समता है—चन्द्रमण्डल का व्यास २,१८० मील है जो पृथवी के व्यास की चौथाई से कुछ बड़ा है—इसका वृत या गोलार्द्ध ६,८४८ मील की है—दूरवीन से चन्द्रमा को देखो तो उस में पहाड़ पहाड़ों की बड़ी २ गुफा और अलग २ छोटी २ पहाड़ियां भी बहुतसी देख पड़ती हैं—हम लोग जिसे कलंक कहते हैं वह इन्ही पहाड़ और बड़ी २ कन्दराओं की कालिमा है॥

अंकं केपि शशंकिरे जलनिधेः पंकं परे मेनिरे।
सारंगं कतिचिच्च संजगदिरे भूच्छाय मैच्छन्परे ॥

जो हो यह चन्द्रमा हमारी पृथ्वी का बड़ा सहायक है चन्द्रमा को यदि ईश्वर ने न सृजा होता तो महीने भर तक बराबर अमावास्या की रात होती और रात को घोर अन्धकार में हम टटोलते फिरते कुदरती लैम्प की रोशनी जो हमें दी गई है उस से रात में समस्त भूमंडल प्रकाशित रहता है इसका धन्यबाद इस लैंप के बड़े कारीगर को जहां तक दिया जाय सब कम है ॥

मंगल ।

सब दो प्रकार के ग्रह रक्खे गये हैं एक वे जिनकी कक्षा सूर्य और पृथ्वी के बीच में है दूसरे वे जो पृथ्वी की कक्षा के उपरान्त अपनी २ कक्षा पर चलते हुये सूर्य की प्रदक्षिणा कर रहे हैं-बुध और शुक्र की कक्षा सूर्य और पृथ्वी के बीच में है इसलिये ये छोटे ग्रह समझे गये हैं—सूर्य के साथही साथ बहुधा एक या दो राशि सूर्य के आगे या पीछे भी रह कर नियत समय से सूर्य के गिर्द घूम आते हैं-इन दोनो की कक्षा छोटी है तो बड़े ग्रहों की अपेक्षा कम दिन में बारहों राशि पर एकबार घूम आते हैं-मंगल की कक्षा पृथ्वी की कक्षा के उपरान्त है इसलिये यह बड़े ग्रहों में है-बड़े ग्रह बहुधा आधी रात बीत जाने पर और २ ग्रहों के साथ मध्य आकाश में आजाते हैं जो छोटे ग्रह बुध और शुक्र में कभी नहीं होता अर्थात् ये दोनो सांझ और सबेरे सूर्य के उदय और अस्त के साथही साथ देख पड़ते हैं सुबह को सूर्योदय के थोड़ा पहिले देख पड़ते हैं और सांझ को सूर्यास्त के थोड़ा उपरान्त अस्त होते हैं-इस लिये ये दोनो सांझ और सुबह के तारे कहलाते हैं—ये बड़े ग्रह कभी को पूरब में उगते देख पड़ते हैं जब सूर्य पश्चिम में अस्त हो गया है जो बात

बुध और शुक्र में कभी नहीं होती—बड़े ग्रहों में एक बात यह भी है कि वे सूर्य के साथ मिल कर अस्त नहीं होते जब सूर्य पृथ्वी और उस ग्रह के बीच में है—और छोटे ग्रह बुध और शुक्र सूर्य मण्डल में मिलकर कई दिनों तक अस्त रहते हैं जब ये दोनों सूर्य और पृथ्वी के बीच में आ जाते हैं—मङ्गल जब पृथ्वी से बड़ी दूरी पर रहता है तब यह एक छोटासा तारा देख पड़ता है जब समीप आजाता है तब बृहस्पति या शुक्र के समान बड़ा और लाल रंग का चमकता हुआ देख पड़ता है—इसकी दूरी सूर्य से १४ करोड़ ५० लाख मील है और इसकी कक्षा की गोलाई ८० करोड़ मील की है—जब यह पृथ्वी के बहुत समीप आजाता है तब इसकी दूरी कम से कम ५ करोड़ मील की रहती है जैसा अभी सन् ७६ और ७७ में हुआ था जब अमेरिका के ज्योतिषियों ने मंगल के साथ एक चान्द्र और प्रगट किया था—उस साल अधिक गर्मी के बढ़ जाने से आवर्षण और काल पृथ्वी के कई हिस्सों में पड़ा था—इस से सिद्ध होता है मंगल में गरमी बहुत अधिक है—६८७ दिन या एक वर्ष १० महीने में मंगल बारहों राशि पर सूर्य के चारो ओर एक बार घूम आता है—इसकी गति एक घंटे में ५४ हज़ार मील की है—किन्तु जहां से यह चला था लौट कर फिर उसी स्थान पर आने में इसे ७८० दिन अर्थात् २ वर्ष ५० दिन लगता है—इसी से यह अपनी चाल में वक्री बहुत हुआ करता है—यह अपनी धुरी पर २४ घंटा ४० मिनिट में एक बार घूम जाता है अर्थात् २४ घंटा ४० मिनिट का इस्का दिन रात होता है जो पृथ्वी के दिन रात से ४४ मिनिट अधिक है—ऋतु का अदल बदल इस में भी पृथ्वी के समान होता होगा—गोलाई और व्यास में यह पृथ्वी का आधा है इस्का व्यास ४,२०० मील का है धरती इस में की लाल मिट्टी की है इसी से इसकी चमक में ललाई अधिक है—दूरबीन से देखने में छोटे बड़े बहुत से दाग इस में भी देख पड़ते हैं जो जल्द २ बदला

करते हैं कभी छोटे रहते हैं कभी बहुत बड़े हो जाते हैं—मालूम होता है इस में झील और समुद्र बहुत हैं मेघ जब तब उठते रहते हैं वही भांत २ के आकार में दाग से देख पड़ते हैं-मंगल का नाम भौम भी है जिस के अर्थ हुये भूमि से सम्बन्ध रखने वाला—पुराणों में मंगल को पृथ्वी का पुत्र माना है वेद की ऋचाओं में भी-" पृथिव्या अयम् " ऐसा लिखा है जिस से सिद्ध होता है कि लोगों का यह अनुमान कदाचित् ठीक है कि ब्रह्माण्ड अखण्ड कटाह की सृष्टि के समय जब ये सब ग्रह पंचभूत की तन्मात्रा "ईथर" के आकार में बन रहे थे और लाखों वर्ष उपरान्त ठोंस होते २ अलग २ एक २ पिण्ड हो गये—उस समय पृथ्वी और मंगल दोनों का एक गोला बना था पीछे आकाश के और पिण्डों से रगड़ खाय एक टुकड़ा पृथ्वी का अलग हो गया वही मंगल के नाम से कहलाया इसी से मंगल सब ग्रहों में छोटा है—इसके साथ कई चन्द्रमा लगे हुये हैं जो इसके उपग्रह समझे जाते हैं—अब तक इसके ४ चन्द्रमा प्रगट किये गये हैं-यह सूर्य से इतनी दूर है कि यहां रात को प्रकाश पहुंचाने को ४ उपग्रह इसके साथ सृष्टि कर्त्ता ने लगाया जो पारी २ एकही रात को उगते और डूबा करते हैं—बिना बड़ी तेज़ दूरबीन के इसके उपग्रह नहीं देख पड़ते-हम ने ऊपर लिखा है मंगल बहुत जल्द वक्री हुआ करता है उदय के उपरान्त जो नक्षत्र चल कर भौम वक्री हो उस्का अलग २ फल वाराह मिहर ने लिखा है—उदय से दस ग्यारह या बारह नक्षत्र चल कर वक्री हो तो रस को सुखावै रोग बढ़ावै और अवृष्टि करै—तेरह नक्षत्र चल कर वक्री हो तो सर्प सिंह आदि हिंस्र जीवों को पीड़ा हो—चौदहवें नक्षत्र से वक्री हो तो डसने वाले जीव व्याल और चतुष्पद जीवों को पीड़ा हो और सुभिक्ष हो—१५ और १६ नक्षत्र चल कर वक्री हो तो प्रजा में रुधिर के प्रकोप से फोड़ा फुंसी पैदा करै पीछे से सुभिक्ष भी हो इत्यादि॥

मङ्गल और बृहस्पति की कक्षा के बीच १६ और छोटे २ ग्रह हैं जो इसी शताब्दी में प्रगट हुये हैं और बिना दूरबीन के नहीं देख पड़ते-सिरीस पालस वेसटा जूनों आदि उनके नाम हैं सिरीस और पालस ४ वर्ष ७ महीना १५ दिन में सूर्य के चारों ओर घूम आता है वेसटा ३ वर्ष ७ महीना १५ दिन में और जूनों ४ वर्ष ४ महीना १५ दिन में -१२ बहुतही छोटे २ ग्रह हैं और उनकी गति का हिसाब अभी नहीं निश्चय किया गया॥

बृहस्पति।

बृहस्पति सूर्य को छोड़ और सब ग्रहों से बड़ा है इसकी दूरी सूर्य से ४९ करोड़ ५० लाख मील की है—मंगल की कक्षा से इसकी दूरी ३५ करोड़ मील की है—जब पृथ्वी के बहुत समीप आजाता है तब इसकी दूरी हम से ४० करोड़ मील की रहती है—जब बहुत दूर पृथ्वी से हो जाता है तब ५९ करोड़ मील की दूरी इसकी हम से रहती है इतनी दूरी होने पर यह इतना बड़ा ग्रह है कि सूर्य के उपरान्त फिर यही बड़ा चमकीला ग्रह है-४ हज़ार ३ सौ करोड़ मील की कक्षा में यह २९ हज़ार मील प्रति घंटे चलकर ११ वर्ष १० महीना १७ दिन में बारहो राशि पर घूम आता है-इसकी गोलाई २ लाख ७९ हज़ार मील की है और व्यास कम से कम ८९ हज़ार मील का है—यह १,४१३ गुना पृथ्वी से बड़ा है जितना बड़ा चन्द्रमा देख पड़ता है उस से बहुत बड़ा यह दूरबीन से दिखाई देता है और इसके साथ ४ चन्द्रमा लगे हुये हैं-यद्यपि यह बड़ा चमकीला ग्रह है किन्तु सूर्य का प्रकाश इस पर २७ गुना पृथ्वी से कम पड़ता है-इस के चारो चन्द्रमा पृथवी के चन्द्रमा से बड़े हैं जिन में बहुत जल्दी २ ग्रहण हुआ करता है इसका चौथा चन्द्रमा हमारे चान्द से तिगुना बड़ा है—धन्य

उस बड़े सिरजनहार की बुद्धि को जिसने इसका मण्डल अत्यन्त बृहत् देख इसके साथ ४ उपग्रह लगा दिये ४ उपग्रह न होते तो सूर्य के अभाव में रात को बिल्कुल अन्धकार इस में रहता ॥

जैसा सौर मास अर्थात् वह महीना जो हर एक महीने की संक्रांति से प्रारंभ होता है और चान्द्रमास अर्थात् वह मास जो हर महीने की पूनो को समाप्त होता है उसी तरह सौर वर्ष और चान्द्र वर्ष भी है ऐसाही बृहस्पति के वर्ष का भी आदि और अन्त होता है अर्थात् जितने दिनो बृहस्पति एक राशि पर रह कर दूसरी राशि पर आवे उतने दिनो का एक वर्ष होता है——बृहस्पति के वर्ष का बाराह मिहर ने अलग २ फल लिखा है—कार्तिक से बृहस्पति का वर्ष प्रारंभ हो तो गौ को पीड़ा हो रोग बढ़े शस्त्र का कोप हो लाल और पीले फूल बहुत हों—अगहन से आरंभ हो तो अनावृष्टि हो मूसक और टीड़ियों से खेती का नाश हो रोग बढ़े राजाओं में बैर बढ़े—पूस में प्रारंभ हो तो जगत् भर को शुभ हो राजाओं में आपस में मेल रहै धान्य दोगुने तिगुने हों—माघ में हो तो लोगों में पितरों के मानने की श्रद्धा बढ़े वर्षा अच्छी हो आरोग्य और धान्य की वृद्धि हो—फाल-गुण में हो तो कहीं अन्न अधिक हो कहीं कम हो स्त्रियों को सुख न मिले चोर प्रबल हों राजा लोग अधिक क्रोध करैं—चैत्र में हो तो वृष्टि कम हो राजा लोग प्रजा के साथ मुलाइम बर्ताव रक्खैं रुपवानों को पीड़ा हो ख़ज़ाना और धान्य की वृद्धि हो—वैशाख में हो तो राजा प्रजा दोनों प्रसन्न रहैं यज्ञ बहुत हो सब तरह का अन्न उपजै—जेठ में हो तो राजा और अपनी २ जाति में श्रेष्ठ लोगों को पीड़ा हो—कगुनी को छोड़ और अन्न कम पैदा हों—असाढ़ में हो तो कहीं अधिक अन्न हो कहीं न हो कहीं पानी बरसै कहीं न बरसै योगक्षेम मध्यम रहै राजा लोग व्यग्र रहैं—श्रावण में होतो अन्न अच्छी तरह पक्कै पाषण्डी

और उनके मानने वालों को पीड़ा हो—भादों में हो तो लताओं की वृद्धि हो कुआरी अन्न अच्छा हो चैती अन्न कम पैदा हो कहीं सुभिक्ष रहे कहीं अनेक प्रकार की भय हो-कुआर में हो तो जल निरन्तर बरसे प्रजा प्रसन्न रहे अन्न बहुत हो—उदय के समय इसका वर्ण आग कासा हो तो अग्नि का भय हो, पीला हो तो रोग बढ़े, कलाई लिये हो तो युद्ध हो, हरा हो तो चोरों की भय हो, लाल होतो शस्त्र की भय हो, धुआं कासा रंग हो तो अनावृष्टि हो, दिन को इसका उदय हो तो राजा का बध हो बड़ा निर्मल सब ओर तारे छिटके हों ऐसे समय रात को उदय हो तो प्रजा सब प्रसन्न रहें ॥

अनल भय मनलवर्णेव्याधिः पीते रणागमःश्यामे ।
हरिते च तस्करेभ्यः पीड़ा रक्ते तु शस्त्रभयम् ॥
धूमाभेऽनावृष्टीस्त्रिदशगुरौ नृपबधो दिवादृष्टे ।
बिपुलेऽमले सुतारे रात्रौ दृष्टे प्रजाः स्वस्थाः ॥

शनैश्चर।

बृहस्पति के उपरान्त शनि की कक्षा है जितनी दूरी सूर्य से बृहस्पति की कक्षा की है उसकी दूनी दूरी सूर्य से शनि की कक्षा की है बृहस्पति और शनि की कक्षा के बीच ४१ करोड़ मील की दूरी है और सूर्य से इसकी दूरी ९ करोड़ ६० लाख मील की है-जब पृथ्वी के बहुत समीप आजाता है तब यह ८१ करोड़ १० लाख मील की दुरी पर रहता है—बारहों राशि पर सूर्य के चारो ओर घूमने में इसे ३० वर्ष के लग भग लगता है जितने दिनो में ५७० करोड़ मील की गोलाई की कक्षा पर प्रति घंटे २२ हज़ार मील के हिसाब से यह चलता है—बरसों और

महीनों तक यह उसी एक स्थान में प्रति दिन उगते अस्त होते देख पड़ता है इसकी इतनी मन्द गति है कि स्थिर तारात्रों से इसे अलग करना कठिन है —जितनी दूरी चन्द्रमा २४ घंटे में तै करता है उतने को यह एक वर्ष में तै करता है—इसकी जस्ते कीसी चमक है इससे ज्योतिषियों ने इसे मन्द अशुभ और अमंगल ग्रह मान रक्खा है किन्तु सो नहीं है जातक और ताजक दोनो के नये क्रम से विशेषतः पाराशरी के मत से कुण्डली में यदि कहीं यह कारक ग्रह हो अच्छा स्थान पा जाय अपने मित्र से या किसी बली ग्रह से सम्बन्ध करता हो तो इस के समान दूसरा ग्रह राजयोग करने वाला होही नहीं सक्ता—एक शनि दूसरा मंगल बन जांय तो न जानिये क्या कर डालें—कहां तक कहें रंक को राजा करदें बिगड़ जांय तो इन दोनो के बराबर सत्यानाश करने वाला भी कोई दूसरा ग्रह नहीं है बिगड़ जांय तो राजा को भी रंक करदें—वृष और तुला दो लग्न के लिये शनि धन सिंह और कर्क लग्न के लिये मंगल अद्भुत फल देने वाले हैं उन स्लग्नों की कुण्डली वाले को जब कोई भलाई होगी तो अवश्य इन्ही दोनो की महा दशा अन्तर्दशा या प्रत्यन्तर्दशा में होगी ॥

बिस्तार में शनि का मण्डल करीब २ वृहस्पति के मण्डल के बिस्तार के बराबर है दुरबीन से इस ग्रह को देखो तो यह सब ग्रहों से बड़ा सोहावना और सुन्दर ग्रह देख पड़ता है—जितना प्रकाश सूर्य का हम पाते हैं उसका उन्नीसवां हिस्सा शनि में पहुंचता है किन्तु उतना प्रकाश भी हमारे चन्द्रमा का हज़ार गुना है अर्थात् एक हज़ार पूर्ण चन्द्र के प्रकाश से जितना प्रकाश होता उतना शनि में रहता है—जैसा हमारे साथ एक चन्द्रमा लगा दिया गया है वैसाही शनि के साथ ८ उपग्रह लगाये गये हैं और ये सब उपग्रह दूरबीन यंत्र के इजाद होने के उपरान्त प्रगट किये गये हैं १६५५ ईस्वी में इसका

पहला उपग्रह हालेंड के एक ज्योतिषी ने प्रगट किया था तब से अब तक बराबर इसके उपग्रह प्रगट होते गये—सन् ईस्वी १६७१ में फ्रान्स के एक ज्योतिषी ने इस्का छठवां चन्द्रमा प्रगट किया १४ वर्ष के उपरान्त चौथा और पांचवा उपग्रह प्रगट किया गया—१७८९ ईस्वी में हरशल नामक विलाइत के एक ज्योतिषी ने इसके और बाकी उपग्रहों को प्रगट किया इसका पहिला चन्द्रमा जो शनि से बहुत समीप और सबों में छोटा है १२०००० मील शनि से दूर है-बड़ाई में अनुमान हमारेही चन्द्रमा के बराबर है और साढ़े २२ घंटे में इसका उदय और अस्त होता है- इसके उपग्रह बढ़ाई में उत्तरोत्तर कढ़ते गये हैं जिन में बहुधा ग्रहण लगा करता है बहुधा उन उपग्रहोंही का ग्रहण एक दूसरे में लगा करता है—इसको आठवां उपग्रह १८४८ ईस्वी में यूनइटेड स्टेट अमरिका के एक ज्योतिषी ने प्रगट किया है—बाराह मिहर लिखते हैं:—

अण्डजहा रविजो यदि चित्रः क्षुद्भय कृद्यदि पीतमयूखः।
शस्त्रभयायच रक्त सवर्णो भस्मनिभो बहुवैर करश्च ॥
बैडूर्य कान्ति रमलः शुभदः प्रजानां वाणातसीकुसुमवर्णनिभश्च शस्तः ॥

उदय के समय शनि यदि चित्र बिचित्र रंग का होतो अण्डज जीवों का बिनाश करे—पीली किरनवाला उदय हो तो क्षुधा की भय पैदा करे लहूकासा रंग का हो तो शस्त्र चले राख सा मैला रंग हो तो बैर बहुत बढ़ावै—बैडूर्य मणि अर्थात् पन्ना कासा रंग का उदय हो और मंडल इसका निर्मल हो तो प्रजा के लिये शुभ है—बाण और अलसी के फूल का रंग उदय के समय हो तो कल्याण का करने वाला हो इत्यादि—और भी बाराह मिहर ने जुदे २ नक्षत्र पर शनि का जुदा २ फल लिखा है—यूरोप और अमरिका के ज्योतिषियों ने इसके उपरान्त दो ग्रह और प्रगट

किये हैं यूरानस और नेपचून ये दोनों बिना दूरबीन के नहीं देख पड़ते—जिन में यूरानस की कक्षा इतनी बड़ी है कि ७५ वर्ष में यह बारहों राशि को तै करता है जिसे शनि ३० वर्ष में तै करता है और नेपचून की कक्षा उससे भी बड़ी है यह १५० वर्ष में सूर्य के चारो ओर बारहो राशि पर घूमता है जिसका विशेष वर्णन हम फिर लिखेंगे—शेष॥

सर सैयद अहमद।

अपनी निज कोशिस से आदमी छोटे दरजे से कहां तक ऊपर को चढ़ सक्ता है तथा अपने हम मज़हब हमवतन कौम के लोगों को कहां तक फ़ायदा पहुंचा सक्ता है उक्त सैयद साहब इसके नमूना थे—निस्सन्देह सैयद के परलोक सिधार जाने से मुसल्मानों के जमात की बांह कट गई—यहां के मुसल्मानों को जो हानि पहुंची उसे वे सदा अनुभव करते रहैंगे जब तक कोई दूसरा सैयद साहब का सा जाति हितैषी उनमें न उठ खड़ा हो—अलीगढ़ महमेडन कालेज स्थापित कर इरादा तो सैयद साहब का ऐसाही था कि अनेक सैयद उसमें से निकल देश भर में छिटक जांय और ऐसा होना कोई अचरज की बात नहीं है किन्तु कहावत है "मेरे मन कुछ और है कर्ता के कुछ और" कौन उम्मेद थी कि उनके औरसपुत्र मिस्टर महमूद ऐसे सुयोग्य माननीय से उन्हे इतना नैराश्य सहना पड़ेगा—यद्यपि हिन्दू और मुसल्मान यहां अनेक बातों में सहमत कभी न रहे उचित था कि कोई ऐसा महा पुरुष मुसल्मानों में पैदा हो जाता जो उस भेद बुद्धि पर खाक छुड़वाता सो नकर सैयद ने उस भेद बुद्धि को उनमें और उसकाया कानग्रेस के प्रतिपक्षी बन उस भेद बुद्धि को तरक्की दे देश भरके लिये हानिकारक हुये—हम ने तो बहुत दिनों से यह निश्चय कर रक्खा है कि हिन्दुस्तान में राजनैतिक जातीयता कभी न आवेगी पहले तो हमारे हिन्दू इस लायक हुई नहीं कि जातीयता इनमें कभी आवै समझाने

बुझाने से हज़ार २ यत्न के उपरान्त कदाचित् इस लायक हों भी तो हमाराही एक दुसरा अंग मुसल्मान इसमें बड़े बाधक होंगे बनी बनाई बात बिगड़ जायगी—सैयद के समय २ कथन और कर्तव्य इसके बढ़ाने में बहुतही बहुत कारगर हुये—अलीगढ़ कालेज में मुसल्मान तालबेइल्मों को जिस क्रम की शिक्षा दी जाती है जिस ढंग पर वे तैयार किये जाते हैं और अंगरेज़ीयत जिस तरीके पर उनकी नस २ में पिरोही जाती है वह उनके भविष्य जीवन के लिये उपकारी नहीं है—कालिज से निकलने के उपरान्त सौ डेढ़ सौ की नौकरी जैसा शुरू में इन लोगों को दी जाती है वह साहबाना तर्ज़ पर रहने वालों के लिये कभी काफी नहीं है—हम अपने हिन्दुस्तानी फ़ेशन में रहकर उतनेही से अपनी इज़्ज़त और भलमनसाहत बहुत अच्छी तरह निबाह सक्ते हैं तो विचार कर देखो तो सैयद साहब ने महमेडन कालेज स्थापित कर और अंगरेज़ी तर्ज़ सिखाय मुसल्मानों का उपकार नहीं बरन अपकार किया—सन ५७ के बलवे में सैयद ने जैसी खैरखाही गवर्नमेंट के साथ की वह मुसल्मान मात्र को राज विरोधी होने से बचा रक्खा—हिन्दुओं में राजाशिव प्रसाद और मुसल्मानों में सर सैयद एक ढंग और एकही समय में उठे और चमके अभाग से राजा शिव प्रसाद हिन्दुओं के लिये कुछ न कर गये जो किया सो स्वार्थ परता के मूल पर अपनेही लिये, सैयद अपनी कौम मुसल्मानों के लिये बहुत कुछ कर गये अपने लिये बल्कि इतना कुछ भी न किया—इसमें सन्देह नहीं हम लोगों में ऐसा आदमी हुआ होता तो पहले के ऋषियों के समान आदर के योग्य था मुसल्मान उन की यादगारी के लिये जो कुछ करें वह सब जां है॥

मन के गुण।

भगवान् कृष्ण चन्द्र ने गीता में मानव तप को लक्ष्य कर मन के गुण इस भांत कहा है :—

मनः प्रसाद सौम्यत्व मौन मात्मविनिग्रहः।
भाव संशुद्धिरित्येतत्तपो मानस उच्यते ॥

मनःप्रसाद अर्थात् मन की स्वच्छता सौम्यता या सौमनस्य जो बहुधा तभी होगा जब बाहरी विषयों की चिन्ता में मन व्यग्र और व्याकुल न हो—बाहर से विनीत और सौम्य बनना कुछ औरही बात है मन का सौम्य कुछ औरही है—जिस की बड़ी पहचान एक यह भी है कि वह किसी का अनिष्ट न चाहेगा बरन सबों के हित की इच्छा रक्खेगा—तीसरा गुण मन का श्रीकृष्ण भगवान् ने मौन कहा है मौन अर्थात् मुनि भाव—एकाग्रता पूर्वक अपने को सोचना कि हम कौन हैं जिसका दूसरा नाम निदिध्यासन भी है—वाक् संयम न बोलना या कम बोलना भी मन के संयम का हेतु है मुनि भाव का लक्षण श्रीमद्भागवत में इस तरह पर दिया गया है :—

मुनिः प्रसन्न गंभीरो दुर्विगाह्यो दुरत्ययः।
अनन्त पारोह्यक्षोभ्यः स्तिमितोद इवार्णवः ॥

मुनि वह है जो सदा प्रसन्न अर्थात् विमल चित्त हो, गंभीर अर्थात् जिस की थाह लेना सहज काम न हो, न जिस्का पार किसी ने पाया हो, जिसे कोई क्षुब्ध चलायमान न कर सके, ये सब गुण स्थिर सागर के हैं सागर के सदृश जिसका मन हो वह मुनि कहा जा सक्ता है मौन से जो सब बातें आदमी में आ सक्ती हैं—आत्मविनिग्रह अर्थात् मन जो बड़ा चंचल है उसे वृत्तियों के निग्रह करने से रोकना—सब से बड़ी बात भाव संशुद्धि अर्थात् लोगों के साथ बर्ताव में माया कपट कुटिलता छल छिद्र का न होना—अथवा क्रोध लोभ मद मात्सर्य जो मन को मैला करने की बड़ी सामग्री हैं उन से दूर रहना इत्यादि सब मन के गुण हैं—इसी को मानस तप भी कहेंगे—मन के और भी गुण सहानुभूति आश्चर्य, कुतूहल

पूर्वक जिज्ञासा, प्रेम, बुद्धिया प्रतिभा, बिचार या बिवेक आदि और मन के गुण हैं—सहानुभूति यद्यपि मन की सौम्यता के अन्तर्गत है किन्तु सहानुभूति का लेश मात्र भी अंकुरित हो चित्त में रहना जन समाज का बड़ा उपकारी है—उपकार के प्रति उपकार सहानुभूति न कहलावेगी बरन वह तो एक प्रकार की दुकानदारी और लोक रंजन है—सच्ची सहानुभूति वही है कि हम अपने सहचरगी या साथी को दुखी देख दया मन में लाय उसके दुख दूर करने में तन मन धन से प्रवृत्त हों—हमारे यहां इन दिनो सहानुभूति का बड़ा अभाव है इसी कारण हम नीचे गिरते जाते हैं—अंगरेज़ी शिक्षा के अनेक गुणों में यह भी एक उत्कृष्ट गुण है कि अच्छा पढ़ा लिखा अपने हम वतन दोस्तों के साथ हमदर्दी करने में नहीं चूकता—अनेक प्रकार के दान इसी बुनियाद पर रक्खे गये हैं कि सहानुभूति वाले मानसिक गुण में पुष्टता पहुंचे—किन्तु वह अब केवल यश प्राप्ति के लिये रह गया—इस में सन्देह नहीं अब भी दान जितना हमारे यहां दिया जाता है किसी देश में इतना नहीं दिया जाता पर सहानुभूति की बुनियाद पर न रहने से वेफ़ाइदा है और राख में होम के बराबर है॥

आश्चर्य और कुतूहल दोनों सीधे और भोले चित्त के धर्म हैं—लड़कों को छोटी २ बातों पर कुतूहल होता है और चित्त का कुतूहल दूर करने को वह अनेक ऐसे प्रश्न करता है जिस पर बहुधा हंसी आती है तो कुतूहल ज्ञान की वृद्धि का एक द्वार ठहरा—लड़का ५ वर्ष की उमर तक में जो कुछ सीखता है वह तमाम ज़िन्दगी भर में नहीं सीखता—ज्यों २ वह बढ़ता जाता है और चित्त की सिधाई कम होती जाती है उस की जिज्ञासा भी घटती जाती है—प्रेम भी सहानुभूतिही का एक रूपान्तर है—प्रतिभा, प्रतिपत्ति, संवित्, आदि शब्द लग भग एकही अर्थ के बोधक हैं और ये सब बुद्धि के धर्म हैं मन के नहीं—किन्तु मन पर

उन सभों का असर पहुंचता है इसलिये हम उन्हे मन के अनेक गुणों में मानते हैं—ऐसाही बिवेक और बिचार भी बुद्धिही के धर्म हैं किन्तु बिचार के द्वारा बुद्धि के तराज़ू पर हम उसे तौल जो कुछ परिणाम उस तौल का होता है उसे मन में स्थिर कर तब आगे बढ़ते हैं—मन यद्यपि ज्ञान का आश्रय है पर उस ज्ञान को सत् या असत् निर्णय करा देना बुद्धिही का काम है इसलिये विवेक और बिचार के बिना निश्चयात्मक ज्ञान कभी होहीगा नहीं—मन जो बड़ा चंचल है उसका चांचल्य रोकने को बिचार बड़ा उपयोगी है इस लिये ऊपर के श्लोक में कथित आत्मविनिग्रह के ये सब अंग हुये—आत्मविनिग्रह जिसका दूसरा नाम संयम भी है मनुष्य में पूरा २ हो तो सिद्धावस्था तक पहुंचने में फिर अड़चन क्या रहा—दूसरे यह कि संयमी को कठिन से कठिन काम करना सुगम होता है—सारांश यह कि ऊपर कहे हुये मन के सब गुण पारलौकिक या आध्यात्मिक उन्नति के साधन करने वाले तो हुई हैं हमारी इस लोक की उन्नति भी उन से पूरी २ हो सक्ती है—इन सब उत्कृष्ट गुणों में एक भी जिस में हो वह मनुष्यों में श्रेष्ट और ऊंचा दरजा पाने का अधिकारी अवश्य बन सक्ता है॥

अलीगढ़ गज़ट की एकतान।

अदालतों में हिन्दी के लिये जो मेमोरियल सर ऐंटोनी मैंगडानेल साहब को दीगई यह मियां अलीगढ़ गज़ट को नहीं सुहाना चिढ़ कर एक नई तान लेने लगे हैं—हम अफ़सोस करते हैं उक्त मियां साहब इलाहाबाद के इण्डियन प्रेस का छपा उस पैंफ्लेट को नहीं पढ़ा क्या जो ऐसी बेतुकी तान लेने लगे—गज़ट ने कोई ऐसी बात नहीं लिखा जिस्का जवाब उस पैंफ्लेट में न हो जिस्की कोई ऐसी तकरीर नहीं पाई जाती जो उससे न कटती हो—इन को जिस्का जवाब देना निरा पिष्टपेषण है सही किन्तु प्रतिपक्षी को जिससे अब भी समझ आजाय इसलिये कुछ

लिखनाही पड़ा—अलीगढ़ गज़ट लिखते हैं "मुद्दत बाद हमारे हम वतन हिन्दू भाइयों को फिर जोश आया है और लाट साहब को एक मेमोरीयल हिन्दू साहबान की ओर से डिप्युटेशन के साथ दी गई है कि अदालतों में हिन्दी हर्फ़ जारी किये जांय उर्दू ज़बान जो फ़ारसी हर्फ़ों में लिखी जाती है उठा दी जाय" इत्यादि—हिन्दू भाइयों को जोश आना कोई अनुचित नहीं है जैसा मुसल्मानों को हिन्दुओं की ओर से तअस्सुब है वह हिन्दुओं को नहीं है—न हिन्दी अदालत में जारी होने से मुसल्मानों की किसी तरह की हानि है—हम लोग उरदू फ़ारसी पढ़ते हैं मुसल्मान सिर्फ़ तअस्सुब में आय हिन्दी नहीं सीखते इसी बहाने हिन्दी पढ़ने लगैंगे तो कौन सी हानि होगी-गज़ट की यह भूल है जो भाषा का प्रश्न उठाता है भाषा उर्दू रहे जिसे वे अपनी मानते हैं अक्षर हमारे हो जांय तो हम और वे दोनो मिल कर एक साथ अपनी तरक़्क़ी कर सके हैं—और यह बात कब जब उर्दू को वे अपनी भाषा मानते हैं सच पूछो तो जिसे वे हिन्दी कहते हैं वह भी उनकी भाषा है—दिहात के मुसल्मान कौन भाषा बोलते हैं वही हिन्दी जो सर्व साधरण में प्रचलित है—अस्तु भाषा का तो कोई ज़िक्रही नहीं है उर्दू हो या हिन्दी डिप्युटेशन हिन्दी अक्षरों के लिये दिया गया है न भाषा के लिये ॥

फिर गज़ट लिखता है—"शायद यह गलत खयाल भी इस पुराने मुर्दा मज़मून के उठाने का बाइस हुआ हो कि इन दिनो गवर्नमेंट की नज़र इनायत मुसल्मानों की निस्बत कम है और वह इनको ना शुकरा समझती है—अगर दरहकीकत यही अमर हमारे हम वतन भाइयों को ऐसी दर्खास्त पेश करने और डिपुटेशन भेजने का बाइस हुआ है तो उनकी गलती है—इस लिये कि सूबे बिहार और अज़लाय मगरबी शुमाली और अवध की हालत एक सा नहीं है और यह कुछ ज़रूरी नहीं है कि हुज़ूर ममदूह ने जो कुछ बिहार मे किया था वही इन जिलों में करें"—

गवर्नमेंट को यह दोष देना कि मुसल्मानों पर इनायत की नज़र नहीं है बिल्कुल बेजां है गवर्नमेंट हम लोगों का बाप मा के बराबर है वह अपने सब लड़कों को एक नज़र से देखती है—इंगलिश गवर्नमेंट का तो यह कभी उसूल नहीं रहा कि वह किसी खास एक फिरके का या मज़हब का कुछ पक्ष करे खास कर वर्तमान् गवर्नमेंट में सर ऐंटोनी मैंगडानेल के समय ऐसी बात मुह से निकालना भी कुफ्र है—पहले तो गवर्नमेंट ने जहां तक हमें याद है कभी किसी मौके पर मुसल्मानो को नाशुकरा नहीं कहा यदि कहा भी हो तो चोर की डाढ़ी में तिनका बस इतनेही से हमारे पढ़ने वाले समझ सक्ते हैं—बिहार और अवध तथा पश्चिमोत्तर की हालत क्यों एकसी नहीं है जिन कारणो से बिहार से उर्दू उठाय कैथी जारी की गई वह सब यहां भी मौजूद है तो क्यों ज़रूरी न हुआ कि यहां भी वही बात की जाय॥

फिर गज़ट लिखता है "बिहार में कैथी हर्फ़ जारी हुये हैं जो आसानी से लिखे जाते हैं मगर उनका पढ़ना उर्दू हर्फों की तहरीर से भी ज़ियादह मुश्तबा और मुशकिल है—नागरी हर्फों का लिखना बनिस्बत कैथी हर्फों के निहायत मुशकिल है और बहुत देर में नागरी लिखी जाती है,, हम लोग कैथी चाहते ही नहीं नागरी अक्षर के लिये प्रार्थना कर रहे हैं—नागरी देर में लिखी जाती है बिल्कुल झूंठ है कमाऊं में नागरी प्रचलित है दरियाफ़्त कर लिया जाय कितनी देर उस में लगती है—हम ने खुद देखा है एक ओर शिकस्ता उर्दू लिखने वाला लिख रहा था एक ओर कमाऊं का एक मुहर्रिर नागरी लिखता था और दोनो बराबर लिखने में थे—माना ज़रा देर भी हुई तो शिकस्तह और का और पढ़ा जाने से कभी को कितनी बेइनसाफ़ी हो जाती है—जैसा लिखो वैसाही पढ़ो इत्यादि सैकड़ों गुण नागरी अक्षरों के ऐसे हैं जो उर्दू में कभी आही नहीं सक्ते चाहो कैसही नस्तालीक उर्दू लिखा हो नागरी को न पावेगा॥

इस के आगे गज़ट ने लिखा है कि अखबार और हर साल किताबें उर्दू की ज़ियादह छपती हैं इसलिये सर्वसाधारण की भाषा हिन्दी नहीं है यह भी आंख में धूर का झोंकना है—मान लिया जाय कि हिन्दी के अखबार कम छपते हैं तो सरकुलेशन बिक्री हिन्दी समाचार पत्रों के मुकाबिले उर्दू अखबारों की आधी भी न होगी—बंगवासी वेंकटेश्वर भारत मित्र से दरियाफ़्त कर लिया जाय कितनी बिक्री उन पत्रों की है—उर्दू का एक भी पत्र इतना न बिकता होगा—बिना गवर्नमेंट की दस्तगीरी हिन्दी पुस्तकें फिर भी इतनी छपती हैं कि उर्दू से शायदही कम हैं—अदालत में नागरी स्वीकार कर देती तब नागरी की पुस्तक उर्दू से कम छपती तो अलबत्ता यह कहना मुनासिब था कि हिन्दी औवाम की ज़बान नहीं है—ऐसाही और भी दो एक बातें गजट ने लिखा है जो बिल्कुल पोच हैं॥

नल दमयन्ती नाटक।

पहले के आगे से—दूसरा गर्भाङ्क।

स्थान—वन भूमि

नल और दमयन्ती एक पेड़ के नीचे बैठे हुये :——

दम—महाराज बिधाता ने हमारे लिलार में कौन २ सा दुःख भोगना लिख दिया है सो हम नहीं जानतीं – देखिये आप जो उन्मत्त की नाईं इस तरह पासा खेलने में आसक्त न हो जाते तो सब राज पाट खो भिखारिनी बन कारी ऐसे भयंकर बन में हम न आतीं—हाद हम क्या थीं क्या हो गईं—आगे अभी औरन जानिये क्या होना बदा है (रोती है)

नल—प्रिये करन की रेख अमिट है भाग में जो बदा रहता है वह हटाये नहीं हटता—हम वही नल हैं जो एक समय एक चक्रा पृथिवी के राजा रहे छनही भर में देखो क्या के क्या हो गये—पहले का वह राज्य सुख मानो अब सपने की बात हो गई—हाय दो दिन बीत गये

केवल जल पान के सिवा दाना मुख में नहीं गया—प्रिये धीरज धरो धीरज धरो-तुम यहीं बैठी रहो हम जांय इस सामने के बन से मिले तो कुछ फल फूल तोड़ लावें भूखों मर रहे हैं किसी भांत प्राण रक्षा तो हो (जाता है)

दम—(स्वगत) तेरी गत लख न पड़े रे बिधाता ।
महाराज नलख्यात चराचर—भये भिखारी दीन ।
समय समान प्रजा जिन पाल्यो—हत विधि बश भये हीन ।
राज कन्या राज महिषी—भई कंगालिन छीन ।
हाय बिधाता तक दया नहिं अब का चाहत कीन (रोती है)

(दिगम्बर वेश में नल का प्रवेश)

दम—(अचरज से) जीवितेश्वर-अब यह क्या-किस ने यह तुम्हारी दुर्दशा किया-क्या बन में भी शत्रु तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ते ॥

नल प्रिये बन में यहां शत्रु कहां—जिस दैव ने राज पाट से भ्रष्ट कर हमें बनबास दिया उसी ने आज बिवस्त्र भी कर डाला—बन में फिरते हुये देखा तो एक ठौर सोने के रंग के बहुत से पक्षी बिचर रहे थे उन्हें देख मन प्रसन्न हुआ शरीर पुलकित हो आया—बिचारा यदि इन पक्षियों को पकड़ सकें तो इन्हें बेंच कुछ धन पा सकेंगे—यह सोच वस्त्र उतार उन के झुण्ड पर फेंक दिया किन्तु भाग्य के प्रतिकूल होने से जो समझे थे सो न हुआ स्वर्ण वर्ण वे पक्षी हमारा वस्त्र ले उड़ गये और हम ऊपर को ताकतेही रह गये—कि आकाश बाणी हुई—हे अबोध बीरसेन सुत अब क्या ऊपर को ताक रहा है हम वेही चौसर के पासे हैं जिस ने तुझे राज्य भ्रष्ट कर बनबास दिया तुझे वस्त्र पहिने देख हमें बड़ा क्षोभ होता था इस लिये वस्त्र भी हर लिया—प्रिये क्या कहें इस असह दुःख में हमारी बुद्धि लोप हो गई—पतिदेवते दम-

यन्ती हम तुम्हारे पति हैं तो जो हम कहैं वह तुम्हे अवश्य कर्तव्य है॥

दम—आज्ञा कीजिये क्या करैं॥

नल—देखो दमयन्ती यह जो कई रास्ता दक्षिण को गई है सो अवन्ती और ऋष्यमूक पर्वत को नांघते हुये गई है—यह विन्ध्य नाम पर्वत है जहां प्रबल बेग से बहने वाली समुद्रगा पयोष्णी नदी है वहां केवल कन्द मूल फलाहार करने वाले अनेक ऋषियों का आश्रम है—और यह रास्ता विदर्भ देश को गई है—यह कोशल देश को गई है—इस ओर जो रास्ता गई है उसे दक्षिणापथ कहते हैं॥

दम—(आंसू आंख में भर) महाराज आप क्या किया चाहते हो आप के मन का यह अभिप्राय समझ हमारा हृदय कांपता है—नाथ आप राज्य से च्युत हो भयंकर दुर्दशा में पड़ भूख और प्यास का दुःख जो सह रहे हो वह ईश्वर करे तुम्हारे शत्रु को भी न सहना पड़े-पहनने का एक वस्त्र था सो भी न रह गया—जिस समय भूख और प्यास से आप अत्यन्त कातर दारुण चिन्ता नल में दग्ध होंगे उस समय आप को आश्वसन देने वाला कौन आप के साथ रहेगा—बुद्धिमानों का मत है पत्नी सहचारिणी हो मनुष्य को सब दुःख में सहायक होती है॥

नच भार्यासमं किंचिद्विद्यते भिषजां मतम्।
औषधं सर्वदुःखेषु सत्यमेतद्ब्रवीम्यहम्॥

नल—प्रिये ऐसाही है तुम जो कहती हो सब सत्य है—सहधर्मिणी साथ रहे तो दुःख का बोझ हलका मालूम होता है किन्तु तुम क्या वृथा शंका मन में लाती हो हमने तो तुम से हंसी किया था—निश्चय रक्खो हम अपने प्रिय प्राणों का त्याग करदेंगे पर तुम्हे न छोड़ेंगे॥

एवमेतद् यथात्थत्वं दमयन्ति सुमध्यमे।

531

नास्ति भार्या समं मित्रं नरस्यार्तस्य भेषजम् ॥
न चाहं त्यक्तकामस्त्वां किमलं भीरु शंकसे।
त्यजेहमहमात्मानं न चैव त्वामनिन्दिते ॥

दम—महाराज आप को इस समय जो विकलता है उस में हमें त्याग देना कोई अचरज नहीं है—बार २ आपने जो हमें कई रास्ते बतलाये इस से हमारा चित्त और भी कांपता है—साथ यह भी हम कहा चाहती हैं यदि हमारे पिता के घर आप को रहने की इच्छा हो तो चलिये हम दोनों वहां जाय बसें—सम्पूर्ण विदर्भ राज्य आप की सब भांत मान रक्षा और सेवा में सन्नद्ध रहेगा ॥

नल—इस में सन्देह नहीं विदर्भ राजा जैसे तुम्हारे पिता हैं वैसही हमारे भी हैं किन्तु हम इस अवस्था से वहां नहीं जाया चाहते—एक समय वह था कि सकल समृद्धि युक्त हम वहां जब जाते थे तब तुम्हे कितना सुख होता था अब इस नष्ट भ्रष्ट दशा से वहां जांयगे तो तुम्हे कितना दुःख होगा ॥

दम—अच्छा तो अब क्या हो—आओ हम तुम दोनों इस एकही वस्त्र से तन ढांपें (एकही वस्त्र दोनों पहन बन में इधर उधर घूमते हैं)

नल—प्रिये अब हम चलते २ थक गये आओ इस लता कुंज में सो कर थकाहट दूर करें [दोनों जाते हैं]

(कलि और द्वापर का प्रवेश)

कलि—(हंसता हुआ ताली पीट २) हा हा हा कहा को कैसा छकाया तुम्हे हमारा विश्वास न था तुम समझते थे यह झूठही गप्पें मार रहा है—तुम्हें नहीं मालूम है क्या कि रावण जब रामबाण से पंचत्व को प्राप्त हुआ तब सिंदुराई जो उसमें थी अब हमी को सौंप

गया था—हा हा हा (हसता है) ॥

द्वापर—कलिराज हम जान गये रावण से तुम किसी भांत कम नहीं हो किन्तु अब वह इस ओर छोर को पहुंच गई है कि कदाचित् रावण जिस के तुम चेले बनते हो इस दशा में राजा नल को देखता तो उसे भी दया आजाती और कट्टरपन से सदा के लिये मुह मोड़ बैठता ॥

कलि—अभी तक उसे राजा कहतेही जाते हो—तुम भी निरे कौदन कोता अकिल के बखाही अजीब जानवर हो—अभी हुआ क्या है हम तो नशा लिये उस की क्या २ दुर्गत करेंगे—तुम्हे दया आती है तो हमारा तुम्हारा साथ न निबहैगा तुम जाओ ऐसे मूढ मति पर दया करो हम तो उसके अनिष्ट की अभी और उपाय जाकर सोचते हैं (जाता है)

द्वापर—सच है खल को अच्छी राह पर लाना दुर्घट और असाध्य है "नेतुं वाञ्छति यः खलान् पथि सतां सूक्तैः सुधास्यन्दिभिः", दैवही नल से रूठा है तो क्या किया जाय लाचारी है (जाता है)

(तीसरा गर्भांक)

(स्थान कुंज भवन)

नल (सोते से उठ) दमयन्ती तो सो गई—बन में इधर उधर व्यर्थ घूमने से क्या होगा मन होता है जीवन त्याग इस सब दुःख से छुटकारा पावैं अथवा दमयन्ती को ही त्याग स्वेच्छा पूर्वक बन में बिचरण करें किन्तु दमयन्ती हम पर अकृत्रिम प्रेम प्रकाश कर रही है और हमारेही कारन इतना क्लेश उठा रही है—अस्तु हम इसे छोड़ देंगे तो यह अपने बाप के घर में चली जायगी और वहां सुख से रहैगी सो—यह जैसी पतिप्राणा सच्चरित्रा सती है उससे बोध होता है यह कभी अपना सतीत्व भंग न करेगी न किसी का साहस होगा कि किसी तरह इसका धर्षण कर सके—तो अब इसका त्याग उचित जान पड़ता है—अच्छा तो यह कैसे हो दोनो एकही वस्त्र पहने हैं वस्त्र इसपर से उतारते हैं तो जाग

पड़ैगी आधा कतर लें तो कैसे कतरैं कोई शस्त्र पास नहीं है—(इधर उधर देख लता गृह के बाहर तलवार पड़ी हुई देख) जान पड़ता है किसी बटोही की छुट गई है (कुंज के बाहर आ तलवार उठाय) इसके द्वारा काम सिद्ध होजायगा (तलवार से आधा वस्त्र कतर) प्रिये दमयन्ती आज हम तुम्हारा त्याग करते हैं—ईश्वर को तुम्हे सौंपते हैं वही तुम्हारी रक्षा करे (कुछ थोड़ा चल)ऐं यह हम क्या कर रहे हैं अपनी पति प्राणा प्रियतमा प्रणयिनी सह धर्म चारिणी को निर्जन शून्य कानन में छोड़े देते हैं—(ठंढी सासें भर) हाय जिसे पहले कभी सूर्य चन्द्रमा भी नहीं देखने पाते थे सो रमणी रत्न धूलिके बिछौने पर पृथ्वी में पड़ी सो रही है—हाय नींद टूटने पर पागल की भाँत हिंस्र जीव पूर्ण इस निर्जन सूने बन में कैसे घूमैगी—आदित्य वसु रुद्र अश्विनी कुमार मरुत् के गण तेरी रक्षा करें (कुछ जाय फिर लौटकर) हाय मुझसा कठोर हृदय कौन दूसरा होगा कि निरपराध इसे मै त्यागता हूं (रोते २ गमन)

दम—(सोते से उठ घबड़ाई सी) ऐं महाराज कहां हैं (चारो ओर देख पुकारती हुई) महाराज महाराज—(रोती हुई) हाय महाराज क्या हमे छोड़ चले गये—मुझ पापिनी में कौन ऐसा दोष पाया जो प्राणनाथ ने मुझे त्यागा॥

हा नाथ हा महाराज हा स्वामिन् किंजहासि माम्
हा हतास्मि विनष्टास्मि भीतास्मि विजने बने ॥

महाराज हम सब भांत विनष्ट हो गईं—नाथ इस विजन बन में हम डरती हैं—महाराज आप सत्यबादी और धर्म परायण हो सोती हुई हमे क्यों छोड़ के चले गये—नाथ कौन सा दोष हम मे आपने पाया जिससे हमे त्यागा—हा जीवितेश्वर प्राणनाथ पाणिग्रहण के समय अग्नि को साक्षी दे आपने क्या प्रतिज्ञा की थी वह प्रतिज्ञा क्यों

भूल गये—यदि हंसी करते हो तो हे परिहास प्रिय हंसी हो चुकी अब आप मुझे दर्शन दीजिये—किसी पेड़ की ओट में लुके हो क्यों उत्तर नहीं देते—महाराज यह निठुराई आपने कब और किससे सीखी—इस भयंकर बन में अकेली हम कैसे रहैंगी ॥

नृशंसं बत राजेन्द्र यन्मामेवं गतामिह।
विलपन्तींसमागम्य नाश्वासयसि पार्थिव॥

भूखे प्यासे भ्रमण के श्रम से कातर हो सांझ को वृक्षमूल में इसे न पाय आप क्या करेंगे कैसे रहैंगे—नाथ मुझे अपना सोच नही है—जितना आप का है (रोती हुई बन में इध उध घूमती है)

तापस वेश एक ऋषि का प्रवेश।

तपस्वी—फूल लकड़ी और कुश के लिये आज कुटी से चले थे किन्तु उपबन की शोभा देखते २ बड़ी दूर निकल आये (सामने देख) अतिशय रूप लावण्य से शोभायमान् यह रमणी रत्न कौन है—किस की स्त्री है—यहां बन में यह कैसे आई—इस की आकृति से बोध होता है यह किसी बड़े घर की बेटी या बहू है—यह रो रही है दुखी सी जान पड़ती है—किसी को दुखी देख जो भरसक उस्का दुःख न दूर कर सका तो उस्की तपस्या से क्या फल है— चलो इससे पूछें तो कि यह कौन है और क्यों दुखी है (पास जाता है) बेटी तुम कौन हो यहां कैसे आ पड़ी और बिलाप क्यों कर रही है—बतलाओ कदाचित् हम तेरा कुछ उपकार कर सकें-बेटी तुम्हारा रूप लावण्य देख अचरज होता है—तुम इस बन की अधिष्ठात्री देवी तो नहीं हो हमारी तपस्या का फल देने को आज हमें अपने दर्शन से कृतार्थ करने को प्रगट हुई हो पर रो रही हो इस से अचरज होता है ॥

दम—(आँसू पोंछते हुए धीरज धर) महा भाग आप मुझे को

देवयोनि समझते हो सो नहीं है मैं इस भागिनी मानवी विदर्भराज की अभागी कन्या निषधेश्वर राजा नल की सहधर्मिणी दमयन्ती हूं— वो राजा जिनकी मैं जन्म २ की दासी हूं जुआ खेल धन धान्य राज-पाट सब हार इस निविड़ बन में मुझे छोड़ न जानिए कहाँ चले गए— आपने घूमते २ इस तपोवन में उन्हें कहीं देखा हो तो बतला दीजिए मैं आप की बड़ी अनुग्रहीत हूंगी (रोती है) महाभाग पतिहीन नारी का जन्म विफल है—पति विरह यंत्रणा हम किसी तरह पर न सहैंगी अवश्य इस इस जीवन को न रक्खेंगी ॥

तपस्वी-बेटी धीरज धरो धीरज धरो यहां इस बन में तुम को पद २ में भय है इस से तुम हमारे आश्रम को चलो हम अपने शिष्यों को भेज २ तुम्हारे पति का पता लगावेंगे जहाँ तक हो सकेगा नहीं तो तुम्हारे पिता के घर तुम्हें पहुंचा देंगे—तुम निश्चय मानो मैं अपने तपोबल से कहता हूं राजा नल फिर अपना राजपाट सब एक दिन पावेंगे और सब दुःख दूर होगा चलो मैं तुम्हारा जहां तक होगा भला करूंगा ॥

दम...जो आज्ञा (दोनो गए) शेष—

नीति दृष्टान्त रामायण और नीति दृष्टान्त माला ।

ये दोनों छोटीसी पुस्तक हमारे प्रेमास्पद मुकुटपुर निवासी बाबू ब्रज बिहारी लाल ने हिन्दी छन्दों में रचा है एक में ९० दूसरी में १८० दोहे नीति विषयक हैं—दृष्टान्त रामायण में जो दृष्टान्त दिये गए हैं वह रामायण की कथा के हैं जैसा "समरथ को गुनिए न लघु-राखिये मन बिश्वास । राम बालपन में कियो-प्रबल ताड़का नास ॥ निन्दित कर्म किए कहा-क्यों न बड़ा लघु होय । केकई रानी को कहै-नीच सबन सब कोय ॥ होनहार अतिही प्रबल—यह मानिय बिश्वास । राम राज मंगल समय-भयो दुखद बनबास ॥ इत्यादि दृष्टान्त के द्वारा रामायण की सम्पूर्ण कथा क्रम से निबाही गई हैं-दृष्टान्त माला का उदाहरण जैसा [घर फूटे संपत लुटै घटै मान मर्याद । टूक भए मनि के यथा तौल मोल बर्बाद ॥ पूरे धन सब आदरै घटे जात सन्मान । जिमि दुतिया के चान्द को करत चकोर न ध्यान ॥ बड़न संग नित कीजिए बढ़े बड़ाई मान । मैलो जल गंगा मिले पुनत सब जग आन ॥ इत्यादि ॥

हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २१ सं० ९-१० } प्रयाग { मई जून १८९८ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार

पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १।=)

नमूने की कापी =)॥

१-४-९८

हिन्दीप्रदीप

जि० २१	प्रयाग	मई । जून
संख्या ६।१०		सन् १८६८ ईसवी

हिन्दी अक्षरों की दरखास्त पर क्या किया गया।

अदालतों में नागरी अक्षरों के जारी करने की जो दरखास्त श्रीमान् छोटे लाट साहब को दी गई थी उसका परिणाम अब तक कुछ न प्रगट हुआ-संभव है कदाचित् सर ऐंटोनी मेगडानेल फरलो छुट्टी ले विलाइत जाने को थे इस विषय को अत्यन्त गंभीर समझ कर बिचारा हो कि विलाइत से लौट कर आने पर इसमें ध्यान देंगे-तीसरी या चौथी बार है कि गवर्नमेंट के सामने यह मामिला पेश किया गया है जिस गौरव और यत्न से अब की बार यह पेश किया गया ऐसा पहिले नहीं किया गया था-इस बारे में जो कुछ लिखा पढ़ी अब तक पायोनियर में छपी है उस्से प्रगट है कि पढ़े लिखे मुसल्मान इसके सब तरह बिरुद्ध हैं-कायस्थों में भी जो देश और समाज के हित अनहित को अच्छी तरह समझते हैं अवश्य इसके अनुकूल हैं-किन्तु अमले लाला भाई इसके प्रतिकूल भी हैं इसलिये कि वे समझते हैं कि नागरी अक्षर जारी होने से हमारी हानि है-पर यह उनकी

उलटी समझ मात्र है—पहले पहल नागरी सीखने में थोड़ी दिक़्क़त तो उठाना पड़ेगा सही किन्तु पीछे सब सुबीता अमले और सर्वसाधारण दोनो को होगा—गवर्नमेंट जो इन्साफ़ किया चाहती है तो इन वक़ला या अमलाओं की बातों पर कहां तक ध्यान देगी—ये लोग तो यही चाहेंगे कि अदालती काररवाइयों की लिखा पढ़ी में अजनबीपन ज़रूर रहे, अदालत की लिखा पढ़ी जो साफ़ अक्षर और सीधी सरल भाषा में रहेगी तो उन्हें फिर कौन पूछेगा—दूसरे यह कि पढ़े लिखे हिन्दुओं का उर्दू फ़ारसी से दुनियावी कामों में ज़ाहिरा कौनसा नुक़सान हुआ है जो वे नागरी के लिये यत्न करें और नागरी न प्रचलित होने से पछतावा मन में लावें—नौवाबी के वक़्त ये हिन्दू उर्दू फ़ारसी में वैसही तरक़्क़ी किये थे जैसा इन दिनों अंगरेज़ी में कर रहे हैं उनका नुक़सान कौन है—सर्कार यदि अदालतों में उर्दू फ़ारसी के जगह लाटिन, फ्रेंच, ग्रीक, जर्मन जारी कर दे तो जिन्हे नौकरी से औक़ात बसरी करना है उन भाषाओं को भी पढ़ेहींगे—हानि तो इसमें साधारण प्रजा की है जो सर्कारी नौकर नहीं हैं और न सर्कारी नौकरी से जीविका करना चाहते हैं—जिस भाषा को आम रियाया नहीं समझती उसमें अदालतों की काररवाई उन गरीब किसान या दिहात के रहने वालों के माथे खिसाती है—पढ़े लिखे हिन्दू हों या मुसल्मान हों क्यों इसके लिये सर गरन हों—दिहात के लोग अदालत की भाषा और उस भाषा के अक्षरों में जो काररवाई होती है उसके मुहताज अलबत्ता हैं—तब सर्कार जो उनकी रक्षा चाहती हो और अमलों के चंगुल से उन्हें छुड़ाया चाहती हो तो अब की बार उचित है कि न्याय पूर्वक इसका निर्णय कर डाले कि कौन से अक्षर या भाषा कचहरियों में प्रचलित रहैं॥

म्युनिसिपल का दफ़्तर हिन्दी में क्यों न हो।

सोचने से यही मन में आता है कि म्युनिसिपल या लोकल बोर्ड

का जो कुछ है वह सब रियाया का है जिसे सर्कार पहले खुद करती रही पर श्रीमान् लार्ड रिपन ने आत्मशासन प्रणाली "लोकल सेल्फ़ गवर्नमेंट" की बुनियाद इस देश में जमाने के लिये उसे प्रजा को सौंप दिया—इसका कुल काम जैसा रुपया वसूल करना, जमा घटाना बढ़ाना, मेम्बरों की अदल बदल इत्यादि सब कमेटी की राय से होता है—म्युनिसिपलिटी की आमद चुंगी है जिसके देनेवाले मुख्य कर महाजन दूकानदार और सौदागर हैं जिनके बही खाते बीजक चिट्ठी पत्री आदि सब महाजनी और हिन्दीही में रहते हैं तब उर्दू अक्षर जो किसी हाल में प्रजा के बर्ताव में नहीं आते इसलिये साधारण प्रजा के वे अक्षर किसी तरह नहीं कहे जा सक्के तो उर्दू म्युनिसिपलिटी के दफ़्तरों को क्यों सब ओर से आक्रमण किये है—यदि यह कहा जाय अदालतों में उर्दू जारी है तब यावत् दफ़्तर मात्र ऊंट की नकेल की भांत सब एकही डोरी में बंधे रहना चाहिये—तो इस्का उत्तर यही हो सक्ता है कि अदालत गवर्नमेंट का दफ़्तर है गवर्नमेंट चाहो दो सींग अपने माथे पर जमा ले हमें क्या पड़ी जो मना करैं हमारा कुछ दावा है—हमारे निज का हक़ हमे क्यों न दिया जाय—जो कहो म्युनिसिपल मेम्बर अपना दफ़्तर हिन्दी में रखलें उन्हें कौन मने करता है—हां सच है परन्तु वे मेम्बर भी तो वही पढ़े लिखों की जमात में हैं जिनका हाल हम पहले लिख आये हैं कि उनका इसमें कौनसा नुक़सान है जो हिन्दी न होने के लिये छटपटांय—दूसरे हाकिमों की खुशामद भी तो उन पर चढ़ी जमाये है जिनका बिना कुछ इशारा पाये कैसे उनकी हिम्मत पड़ सक्ती है कि अपने आप कुछ कर सकें—सच तो यों है कि इलेकशन के समय जो लोग म्युनिसिपल कमिश्नर होने की दिलोजान से कोशिश करते हैं सो समाज में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने को न कि सर्वसाधारण के हित की वासना से "मसल है कटै जजमान का खिसै नाऊ का"

बहुधा तो म्युनिसिपल कमिश्नरों को अपने फ़ाइदे का खयाल रहता है कोई २ कभी कुछ मेहनत करना गंवारा भी करते हैं तो इतनाही कि ऊपर के हाकिम नाराज़ न हों अपनी बात बनती हो घिलौने में प्रजा का भी कुछ हित हो जाय तो कोई उज़र नहीं—और कोई तो कोढ़ में खाज के समान जान बूझ सर्वसाधारण के हित में बाधा डालनाही अपना खरापन और कारगुज़ारी मानते हैं—इनतिख़ाब के समय ये लोग जो छल बल कल काम में लाते हैं वह न्यायशील विवेकी के लक्ष्य करने लायक रहता है—यही सब देख इन्साफ़ पसन्द खरे सच्चे लोग जो इस योग्य हैं कि म्युनिसिपल मेम्बर हों तो बड़ा उपकार करें इन झगड़ों से अलग रहा चाहते हैं—सारांश यह कि मेम्बरों से हम ऐसी आशा कदापि नहीं कर सक्ते इससे सर्कारही से निवेदन है कि वह अपनी सरस कृपादृष्टि पूर्वक जो न्याय हो सो करे—उर्दू अक्षरों के कारण चुंगी का महसूल देना अथवा फेर लेना व्योपारियों को कितना कष्टदायी होता है कभी २ को और का और पढ़ लिया जाता है—ऐसे २ अन्याय नागरी के स्वच्छ अक्षरों के प्रचलित होने से मिट जांयगे जो लिखा रहेगा वही पढ़ा जायगा और सब तरह की आसानी होगी—हम लोग हिन्दी के प्रेमी सर्कार के न्याय की प्रशंसा करेंगे—इत्यादि गुण हिन्दी अक्षरों के जारी होने में हम समझते हैं अवश्य है—इसी से निवेदन किया कि कदाचित् हमारे कहने का कुछ असर हो ॥

—— :0: ——

चान्दी की बेकदरी ।

चान्दी दिन २ बेकदर और सस्ती होती जाती है जिसके कारण दो हैं—एक यह कि चान्दी की कई नई २ खान निकली हैं दूसरे यह कि यूरोप में खास कर इंगलैंड आदि कई एक देशों में सोने के सिक्के की अधिक चलन है और २५ या ३० वर्ष से यह चलन बढ़तीही गई है

पहले जितनी चान्दी उन २ देशों में सिक्का के बनाने में खपती थी अब उतनी नहीं खपती इसलिये चान्दी की पैदावार ज़ियादह और खरच कम हो जाने से चांदी सस्ती होती जाती है—हिन्दुस्तान के आम लोग इस बात को नहीं समझते और जब से चाँदी सस्ती होती आई है लोग फ़ाइदा समझ खरीदते जाते हैं—यह नहीं खयाल करते जिसको आज १६ आना दे खरीद रहे हैं कल उसका दाम १२ आना परसों ८ आना रह जायगा होते २ कुछ दिनो में चांदी और ताम्बा में कुछ थोड़ा ही अन्तर रहेगा—दूसरा एक विशेष कारण यह भी है कि हिन्दुस्तान इंगलैण्ड के आधीन है विलाइत में लोगों की तनखाह और हिन्दुस्तान में भी बहुतसा बेतन सोनेही के सिक्के में दिया जाता है—इंगलैण्ड के लोगों का रुपया जो रेल और नील आदि के कामों में लगा है उस्का सूद वहां सोनेही के सिक्के के हिसाब से दिया जाता है हिन्दुस्तान में गोरों के पलटन की तनखाह भी सोने के सिक्के में दी जाती है—सेक्रटरी आफ़ स्टेट ने जो कर्ज़ हिन्दुस्तान के लिये विलाइत वालों से लिया है उस्का सूद भी सोने के सिक्के के हिसाब से देना पड़ता है—जो रुपया हिन्दुस्तान से बिलाइत को जाता है उसके समष्टि का नाम होमचार्ज है सो सब सोनेही के सिक्के के हिसाब से यहां से विलाइत को भेजा जाता है—चान्दी का भाव घटता जाता है सोने का भाव चढ़ता जा रहा है तो जो इसका बट्टा है सब सोने में दिया जाता है ज्यों २ चान्दी का भाव गिरता गया और सोना बढ़ता गया त्यों २ बट्टे की रक़म बढ़ती गई यहां तक कि अब ५ करोड़ के लग भग बट्टे का रुपया विलाइत प्रति वर्ष यहां से जाता है—सन् ९३ में जब गवर्नमेंट ने देखा कि चान्दी का भाव गिरता जाता है तब यहां के अपने टकसाल घरों को बन्द कर दिया जिसका परिणाम यह भया कि चांदी की बिक्री घट गई बट्टा जो बढ़ता जाता था किसी क़दर रुक गया—

अब गवर्नमेंट कहती है कि हिन्दुस्तान में भी सोने के सिक्का का एक Standard. दर कायम कर देंगे पर सोने का सिक्का यहां चलावेंगे नहीं और २० करोड़ रुपया विलाइत से कर्ज़ ले १० करोड़ चान्दी के सिक्के की चांदी हर साल गला देंगे जिस दस करोड़ का "व्येलू" दाम ६ करोड़ रहेगा—परिणाम यह होगा कि चान्दी हर साल के कम करने में एक गृहस्थ के यहां वर ज़ेवगैरा में जो चांदी यहाँ है वह भी रुपये की ग्यारह आने रह जायगी—१० करोड़ सिक्का जो गलैगा चांदी हो बाज़ार में बिकैगा लोग यह समझ कर कि चांदी सस्ती है खरीदेंगे घाटा सहेंगे—गवर्नमेंट विलाइत वालों का नुक़सान नहीं किया चाहती हिन्दुस्तान घाटा अलबत्ता सह रहा है—विलाइत में जो रुपया पेनशन इत्यादि का जाता है अवश्य चाहीगा उन रुपयों का बट्टा देनाही होगा तब क्योंकर चाँदी का सस्ता होना रुक सक्ता है॥

——:0:——

चतुर सयानों की चतुराई की दो चार बानगी।

जानना वही जिस जानकारी से ईश्वर जाना जाय या जिसे जान फिर कुछ जानना बाकी न रहे॥

नीति वही जिसमें अनीति गन्ध भी न हो॥

जाना वही कि फिर न आना हो॥

दान वही जो साथ सन्मान के हो॥

जीत वही जिससे मन जीता जाय॥

प्रीति वही कि साथ प्रतीत के हो॥

सब नामों में बड़ा नाम राम नाम—धामों में परं धाम, कामों में अपना काम—दामों में गांठ का दाम, बेकाम का काम देश की भलाई वाला काम, बुरी बला ईश्वर न करे किसी की इसका चस्का पड़ जाय मानो दीन और दुनियां दोनो से दूर गुज़रा॥

सब से बड़ा बल, बाहु बल जल—वर्षा का जल, गंगा जल, अब इस सभ्यता के समय सब के ऊपर बंबा जल, कल—उद्योग का कल, मल—खटमल अथवा मोटे मल ॥

दल—लिबरल दल, कनसर्वेटिव दल, बादलों का दल, सब के ऊपर टीड़ी दल ॥

प्रकाश—सूर्य का, चन्द्रमा का, बिजली का, अब इस समय सब के ऊपर प्रकाश नई रोशनी का ॥

लोकोक्ति।

खाना शिराकत रहना फ़राकत, रूप रोवे भाग खाय, लांबा देखे खेतना मुह देखे व्योहार, हीले रिज़क बहाने मौत, जिसका खाइये उस का गाइये, जहाँ देखें हंडा परात, वहां गावैं सारी रात, ज्यों तेली के बैल को घरही कोस पचास, किये न जाय कहे जाय, घुमची अपने रंग बावरी, बारह बरस को वैद्य बधा, पूत सपूते तो धन क्या, पूत कपूते तो धन क्या, मा भठियारिन पूत नवाब, मा पिलंगिनी बाप पिलंग, तिनके लड़के रंग बरंग, धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का, जिस पतली में खाय उसी में छेद करें, मार के पीछे सवांर, फूटी सहैं आंजी न सहैं, कल का लीपा गया झुराय, आज लीपा देखो आय, पांड़े जी पछतांयगे वही चने की खांयगे, पांड़े की पड़ियाइन खोटी, एक चना की सोलह रोटी, सोलह सौ के हज़ार, नौ सौ चूहे खाय बिल्ली हज्ज को चली, दंचे दाना कुनद कुनद नादान बले खराबिये बिसियार, मन की मनही रही, भरी चले सऊं सूक, नरकी में ठेलिं ठेला, नरक पड़ै को चन्दू चाचा, ८ कनोजिये ९ चूल्हे, एक तो बुढ़िया नचनी दूजे घर भा नाती ॥

कपिरपिचकापिशायन मदमत्तोवृश्चिकेन संदृष्टः।
अपिचापिशाचग्रस्तः किंब्रूमो वैकृतंतस्य ॥

राम राम जपना पराया माल अपना, मुख पर राम दिल में कसाई का काम, सिर का मुड़ाना ओलों का पड़ना ॥

क्या मोदी की चाकरी, क्या बालू की भीत ।
क्या बादल की छांहरी, क्या ओछे की प्रीत ॥
एकै घर में दो मता, कलियुग का व्यौहार ।
खसम चले हैं द्वारिका, मेहरी शाह मदार ॥

सांझ के मुरदे को कब तक रोइये ॥

सदा न फूले तोरई, सदा न सावन होय ॥
सदा न जोबन थिर रहे, सदा न जीवै कोय ॥
बिसवा बन्दर अगिन जल, कुटनी कटक कलार ।
ये दस होंहिं न आपने, सूजी सुआ सोनार ॥

दानारा इशारा काफ़ीस्त ॥

होनहार हिरदै बसै, भूल जात सब सुद्ध ।
जैसी हो भवितव्यता, वैसी उपजै बुद्ध ॥

सोवैं खलियान सपना देखैं लाख टके का, सौ सोनार की एक लोहार की, सन्दीप्ते भवनेतुकूप खननं प्रत्युद्यमः कीदृशः, आग लगाय, पानी को धावै, गगरी दाना सूद उतराना, आग लगन्ते झूपड़ा जो निकलै सो लाभ, हरि के हाथ निबाह, हम चुनी दीगरे नेस्त, फूहौ २ ताल भरै, भीख और पछोर, सोहर लुटै कोइलों पर छाप, ऊंचे चढ़ के देखा घर २ एकै लेखा, सावन सुआ उपास, सुघनी मे हमरी पांव, हीं, तो गाय बेटी पर बहुओं से अच्छी पड़ती हूं, रांड रोवैं एहवाती रोवैं, तिनके संग सतभतिरिउ रोवैं, जिन्ह ढूंढा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ, सोवैं सो खोवैं जागै सो पावैं, खरबूजे को देख खरबूजा रंग पकड़ता है, आधा तीतर आधा बटेर, एकै साधे सब सधे सब साधे सब जाय, खाना गेहूं यो रहना येहूं, सांचे को आंच क्या, स्पष्ट वक्ता न वंचकः ॥

भात छूटै साथ न छूटै—नयना वही सराहिये जिन नयनन में लाज—बड़े भये अरु विष भरे आवें कौने काज ॥ ओस के चाटे कहीं प्यास बुझी है—दाता की नाव पहाड़ चढ़ै—दाता दे भण्डारी का पेट फटै—अढ़कैं पहाड़ फोड़ैं घर की सिल—राख पत रखाव पत—जाको जौन सुभाव जाय नहि जी से—बाम्हन कूकर नाऊ जाति देख गुर्राऊ—जग में जीवतही का नाता—जहां राज रजे वहां भीख क्या मांगना—जहां आसा तहां बासा—चोर २ मौसियायत भाई—चोर का साथी गांठ कटा—

नदुःखं पंचभिःसह—पंचै लीजै कीजै काम हारे जीते नाहीं लाज—जब तक जीना तब तक सीना—गुज़र गई गुज़रान क्या झोपड़ी क्या मैदान—ऊधो बन आये की बात—ढाक के तीन पात—आशिकी और खाला जी का घर—नाच न आवै आंगन टेढ़—क्या नंगा नहाय क्या निचोड़ै—कलियुग का व्यौहार मारै भाई जिलावैं यार—आम के आम गुठली के दाम—आम्रश्चसिक्तःपितरश्चतृप्तः हर्यं का क्रिया द्विअर्थ करी प्रसिद्धा—जिसकी लाठी उसकी भैंस—Might is right—जिसकी तेग़ उसकी डेग—जुलहे धुनिए रोपी हाट गई बज़ाजी बारह बाट—जूठा खाय मीठे की लालच—जाहि बिधाता दाहिने सबै दाहिने ताहि—करम रेख ना मिटै करै कोई लाखों चतुराई—जान न पहचान बड़ी बी सलाम—दिवार खोवै साला घर खोवै आला—मान नमान मैं तेरा मेहमान—जात पांत पूछै नहिं कोय हरि को भजै सो हरि का होय—सैयां भये कोतवाल अब डर काहे की—खात रहे चकवड़ खाय लगे पान दिल मोर वही खुबद सोर आन—दिमाग़ परियों का शक्ल चुड़ैलों की—मन मलीन तन सुन्दर कैसे—विषरस भरा कनक घट जैसे—इत्यादि ॥

दीर्घायु।

मनुष्य के लिये आयु भी उन भाग्यवानी की बातों में है जिसके बड़ी होने की इच्छा सब को होती है और जिसके लम्बे होने से

कोई कभी नहीं अघाता—पैंसठ बरस के हो गये पोते नाती कोड़ी और दुर्जनो की संख्या तक पहुंच गए, अंग २ शिथिल पड़ गये, उठते बैठते कांखते हैं—कान ने अलग जवाब दे दिया सुन नहीं पड़ता कमर झुक गई, आंख अलग धोखा दे गई, नज़र मोटी पड़ गई, चश्मे की हाजत होने लगी, तौभी जीने से न अघाने—रोज़ भोर उठ देवता, पितर मनाते हैं थोड़ा और जीते कनुआ के भी लड़का हो जाता परपोता देख लेते सोने की सीढ़ी चढ़ तब मरते तो अच्छा होता—किन्तु विवेकी बुद्धिमान् संसार की असारता ने जिसके मन में भरपूर कदम जमा लिया है वे लोग ऐसा नहीं मानते वे अल्पायुही को बड़ी बरक़त कहते हैं—ज़िकिर है किसी फ़कीर कामिल ने आके नवाब खान खाना से कहा मैं तुम्हारे लिये दुआ करता हूं और तुम को एक ऐसी जड़ी बूटी दूंगा कि जिसे खाकर तुम या तो अमर हो जाओगे या हज़ारों वर्ष जिओगे—नवाब खान खाना ने जवाब दिया मैं ऐसी बूटी कभी न खाऊंगा—फ़कीर साहब मुसकिराने और पूछा क्यों ? नवाब बोले वह आप की बूटी आपही को मुबारक़ रहे मैं अमर या दीर्घायु होके क्या करूंगा—मेरे बन्धु मित्र लोग कुटुम्ब सबों की मौत मेरे सामने होगी तो मैं कहां तक उनके वियोग का दुःख सहता रहूंगा—मैं बाज़ आया तुम्हारी दुआ और बरक़त से मुझे ऐसी बूटी न चाहिये ॥

अचरज तो यह कि " तुम दीर्घायु हो दीर्घजीवी हो " इसे सच मूच संसार में आशीर्वाद कहते हैं " शतं जीवेम शरदःशतात् " इत्यादि वेद वाक्य भी हैं—यदि यह कोई कहे तुम अल्पायु हो जल्द इस दुनिया फानी से रवाना बाशद् हो तो जिसे कहो वह बुरा मान जायगा आप का दुश्मन बन बैठेगा—इसमें सन्देह नहीं मनुष्य बहुत दिनों तक संसार में रह बहुतसी बातों का अनुभव करता है चतुराई, ज्ञान, जानकारी आदि बढ़ती जाती है—जिससे वह अपने को और दूसरों को भी

बहुत कुछ फ़ाइदा पहुंचा सक्ता है लोग उसको प्रतिष्ठित और प्रमाणिक मानते हैं उसकी हर एक बातों की कदर करते हैं–मनु ने भी लिखा है " शूद्रोपिदशमीगतः " शूद्र भी ९० के ऊपर पहुंच गया हो तो अभिवादन आदि के द्वारा उसकी वैसही प्रतिष्ठा करे जैसी ब्राह्मण की होना चाहिये–पर यदि कोई दीर्घायु वाला पाप और बुरे कामों पर कमर बांधे तो उसको बुराई करने का बहुत दिनों तक पूरा मौका मिलता रहेगा–रावण ऐसे बहुत दिनों तक जी कर जब किया होगा पाप और हत्याही करता रहा होगा–इस संसार में बीती बातों का सोचना और याद करना भी बड़ी बात है जब कभी हमारे मन में आता है कि फलाने समय फलाने मौके पर हम कैसी घोर विपत्ति में पड़ गये थे, या यह स्मरण होता है कि अमुक समय हमको कैसे २ सुख मिले, तो आनन्द चित्त में होता है और ईश्वर का धन्यवाद करते हैं कि उसने हमें दीर्घजीवी कर उन २ विपत्तियों से हमारा उद्धार किया, तथा ऐसे २ श्रेय और कल्याण का भाजन हमें किया–पर जब यह याद आता है कि फलाने हमारे हितैषी प्रीति पात्र मित्र गुज़र गए तो कैसा दुःख और सन्ताप चित्त में बढ़ता है–इससे दीर्घायु की उपमा हम उस धूप छांह से देंगे जिसमें अच्छा और बुरा दोनो रंग दिखाई पड़ते हैं–जिसने जीवन को सुकर्म और भलाई करने में बिताया उसका दीर्घायु होना भी बड़े आनन्द की बात और संसार के बड़े उपकार का है—पर कलियुग का कुछ ऐसा नियम है कि "पापीचिरायुःसुकृती गतायुः" पापी बहुत दिनो जीते हैं सुकृती जल्द उठ जाते हैं—चिरायु और अल्पायु दोनों की एक हद्द है २५–३० या ४० के भीतर उठ गये अल्पायु कहलाये ८० या ९० पहुंचे चिरायु हुये–अत्यन्त अल्पायु होना नितान्त अभाग्य है—अन्धे बहिरे अपाहिज हो ८० या ९० पहुंचे

स्मरण शक्ति जाती रही अकिल या समझ न रही कहा कुछ और जाता है समझता कुछ और है—इस बुरी दशा से १०० वर्ष जिया भी तो कौन सी भाग्यमानी उसकी है हां अविकलेन्द्रिय दीर्घ जीवन अलबत्ता प्रशंसनीय है—वेदों में जहां दीर्घ जीवन की आशिष प्रार्थना की गई है वहां अविकलेन्द्रिय दीर्घ जीवन मांगा गया है—तद्यथा "शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं पश्येम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीना स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदःशतात्" मैं सौ वर्ष जीवौं सौ वर्ष तक सुनता रहूं सौ वर्ष तक देखता रहूं सौ वर्ष बोलता रहूं सौ वर्ष तक दीन न हूं, पुनः ऐसाही सौ वर्ष और कटै इत्यादि—वेदोक्त ऐसा जीवन बड़े भाग्यवानो का होता है जो अब इस समय लाख और करोड़ में कदाचित् एक भी इस तरह के नहीं मिलते जो सब भांत अविकलेन्द्रिय हो इतने दिन जिये हों—इसी से ६०—६५ या ७० तक जीवन सब तरह पर अच्छा है और उतने समय ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय दोनो प्रौढ़ और पुष्ट बनी रहती हैं—अपूर्व पुण्यशाली भाग्यवान् ऐसोंही को कहना चाहिये॥

हम ऊपर कह आये हैं मनुष्य मात्र में दीर्घ जीवन की इच्छा प्राकृतिक है इसलिये कि हम बड़ी उमर तक जीकर संसार के अनेक भोग बिलास का सुख अनुभव करें—जो शरीर से स्वस्थ और सब भांत सुखी हैं उनको यह इच्छा होना कोई अचरज नहीं है—किन्तु जो रोग से पीड़ित और बड़े २ दुख सह रहे हैं उनको भी रोग से छुटकारा पाना और सुख भोगने का समय कभी आने की आशा दीर्घायु होने की इच्छा को प्रबल करती है :—

कल्यणी बत गाथेयं लौकिकी प्रतिभाति मे।
एति जीवन्तमानन्दो नरं वर्षशतादपि ॥

लोगों की यह कहावत हमें बहुत ठीक मालूम होती है कि मनुष्य जीता रहे तो एक न एक दिन वैसा सुख उसको आ उपस्थित होता है कि उसके सुख का वह पलरा दुख के उस पलरे के बराबर हो जाता है जिसे वह तमाम ज़िन्दगी भर सहा किया–और यह आशा बड़े से बड़े दुखियाओं को जीने की ओर से निरुत्साह होने से रोकती है–लोग दुख में पड़ कहते हैं मुझ अभागे को मौत भी नहीं आती कितने तो दिन में कई बार ऐसा कह उठते हैं—ज़रासा झींझट और तरद्दुद या संकट आ पड़ा कि मौत का आवाहन करने लगते हैं–पर यदि कोई उन्हे यह निश्चय करा दे कि कल तुम मरोगे तो रंग फीका पड़ जाता है आसू बहाने लगता है–इसे आप चाहो मोह कहो, माया में पड़ना कहो, अज्ञान कहो, या जीवनाशा कहो, कड़े से कड़े आदमी का भी उस समय जी पिघल कर नरम पड़ जाता है—यद्यपि कवि सिर मौर कालिदास का कथन है "मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृति र्जीवनमुच्यते बुधैः" शरीरधारी के लिये मरण प्राकृतिक है उसका जीता रहनाही प्रकृति के विरुद्ध है पर जीवनाशाकवि के इस कथन पर कभी नहीं किसी का ध्यान जमने देती—मनुष्य एक ऐसा Socialanimal संयोग सहचारी जीव है कि जब से मा के पेट से निकल धरती में पांव रक्खा कि संयोग सुख का अनुभव करने लगता है वियोग का बिचार और चर्चा भी उसे नितान्त कष्टदायी होती है–अब थोड़ा यहां पर आप को यह दिखलाया चाहते हैं कि कौन किस लिये दीर्घायु होने की इच्छा रखते हैं ॥

बुद्धिमान् कवि कोविद Artist बिविध कला निपुण इसलिये बहुत दिनो जिया चाहते हैं कि जिस कला या हुनर को उन्हो ने सीखा है या नई ईजाद की है उसे परिणत करें अर्थात् औरों में उसे फैलाय अपने हुनर और कला को और बढ़ावें या पक्की करें–बुढ़ापे में मानसिक

या शारीरिक शक्तियों के कम हो जाने से कभी को किसी नई रचना की बुद्धि न रही तो कवि अपनी पुरानीही रचना या कृत्य को देख या याद कर अपना मन प्रसन्न करता है और उसका आत्मा जुड़ाता है–विद्वान् तथा बुद्धिमान् दीर्घ जीवन में जो उसे अनुभव हुआ है उसे और भी पुष्ट किया चाहता है–उपाधिधारी बड़ी मेहनत और बहुतसा खर्च कर जो पदवी उन्हों ने पाया है उस पदवी का फल राजा और प्रजा में मान लोगों के बीच प्रतिष्ठा और सत्कार के सुख का अनुभव किया चाहते हैं—वकील बेरिस्टर तथा जजलोग दीर्घजीवन इसलिये चाहते हैं कि कानूनो के जाल में प्रजा को फसाने के लिये हिन्दी की चिन्दी निकाल कानून की बारीकियों में शान चढ़ाते रहें—एडिटर दीर्घ जीवन इसलिये चाहते थे कि अपने कलम के ज़ोर से राजा और प्रजा दोनों की भलाई करते हुये अपनी लिखावट से पढ़ने वालों का मन अपनी ओर खींच लें पर सेडिशन की भय नें उन्हे संकुचित कर दिया तो अब उनका हौसिला पस्त हो गया–हमारे सेठ जी दीर्घजीवन की इच्छा इसलिये रखते हैं कि गंजिया पर गंजिया रुपयों से भर तहखाने सेहखानो में सैंत के रखते जांय किसी उचित काम में जिस्मे देश या जाति भलाई की आशा हो उस्मे एक पैसा खरचते मन में हज़ार तरह का आगा पीछा हो पर लड़की लड़का ब्याहने में गंजिया की गंजिया लुट जाय कुछ परवाह नहीं—इत्यादि ॥

एक ।

एकोब्रह्मद्वितीयोनास्ति–एकमेवाद्वितीयम्,——एक और एक ग्यारह होते हैं–एक मछली सारा जल गंदला कर देती है—एक वहम हज़ारों शुबहे पैदा करता है–एक चुप हज़ार बला टालती है–एक मीठी बोल हज़ारों खफ़गी दूर कर देती है—एक सुपूत कुल का दीपक होता

है "एकोगोत्रे स भवति पुमान्यः कुटुम्बं बिभर्ति"—एक कुचाल कुनबे भर को बदनाम करता है—एक घंटा सुबह को देर से उठने से दिन भर के सब काम अस्त व्यस्त रहते हैं—एकाम्न भोजन भी हिन्दुस्तान की खराबी का कारण है—एकाहारी सदा सुखी—एकेनापिसुपुत्रेण सिंही स्वपिति निर्भयम्—एका नारी सुन्दरी वा दरीवा—एकं मित्रं भूपतिर्वा यतिर्वा—एको वासः पत्तने वा वनेवा—एको देवः केशवो वा शिवो वा—एकस्य क्षणिका प्रीतिरन्यः प्राणैर्वियुज्यते ॥

दो।

रात दिन—पाप पुण्य-झूठ सच—सुख दुख-जीवन मरण—ताना बाना—स्वर्ग नरक—सुमति कुमति—संपत् विपत्—"सर्वस्य द्वे सुमित कुमती संपदापत्तिहेतू" जहां सुमति तहं संपद् नाना। जहां कुमति तहं विपति निदाना—रोग दोख—प्रकृति पुरुष—धूप छाह—अंधियारा उंजाला—नीरक्षीर—दूध का दूध पानी का पानी—दोनो दीन से गये पांड़े न रहे भात न रहे माड़े—आधा तीतर आधा बटेर—नसूत न कपास कोरियों से लठिंलठा—दैवी आसुरी—"दैवी संपद्विमोक्षाय निबद्धायासुरीमता" लोकवेद—लौकिक वैदिक—ऐहिक आमुष्मिक—यह लोक परलोक—सकाम निष्काम—गुणकर्म—गौण मुख्य—बद्ध मुक्त—जीवात्मा परमात्मा ॥

सुपर्णावेतौ सदृशौ सखायौ यदृच्छयैतौ कृतनीडौ च वृक्षे।
एकस्तयोः खादति पिप्पलान्नमन्यो निरन्नोऽपि बलेन भूयान् ॥

कहां तक दो को गिनावैं सकल संसार इस दो से है इसलिये संसार की यावत् वस्तु विना दो के हुई नहीं तब इस दो की अकथ कहानी है ॥

तीन

त्रिगुण—सत्वरजतम—सात्विकराजसतामस—त्रिदेव—ब्रह्मा विष्णु शिव—त्रिवेद—ऋग् साम यजु ॥

तीन बस्तु को सदा अपने पास रखना — धैर्य—नम्रता और प्रेम ॥
३ बस्तु की प्रशंसा करनी—बुद्धि पदवी और गुण ॥
३ बस्तु का तिरस्कार करना—क्रोध—अहंकार—और कृतघ्नता ॥
३ से अपने को बचाना—नीचपन—ढोंग—और डाह ॥
३ का सत्कार करना—धर्म न्याय और आत्म संयम ॥
३ से प्रसन्न होना—सौन्दर्य—भोलापन—स्वतंत्रता ॥
३ की चाह रखना—तनदुरुस्ती—मित्र और खुश मिज़ाजी ॥
३ की स्तुति करना—चातुरी—विवेक बुद्धि और दृढ़ता ॥
३ का भय रखना—खुशामद—दंभ—और अपने मतलब की दोस्ती ॥
३ को छोड़ना—आलस्य—बहुत बोलना—पराये की निन्दा करना ॥
३ को सदा बढ़ाते रहना—उत्तमग्रन्थ—सुमित्र और हेल मेल ॥
३ को बचाना—आबरू—पर स्त्री संसर्ग—और परापवाद "यदी च्छेद्विपुलां प्रीतिं त्रीणि तत्र नकारयेत् वाग्वादमर्थ संबंधः परोक्षे दार दर्शनम्—तीन को स्वाधीन रखना—स्वभाव—वृत्ति—और जिह्वा ॥
३ के लिये अपने को तैयार रखना ज़माने का फेर फार—गिरती दशा और मौत ॥
३ को तिलांजुली देते रहना—झूठ—लालच—और फरेब ॥

सुवर्ण पुष्पां पृथ्वीं चिन्वत्ति पुरुषा स्त्रय ः
शूरश्च कृतविंद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम् ॥

देश का पतन या अभ्युत्थान समुदाय पर निर्भर है ।

धन बल बुद्धि विना इन तीनो के कोई काम पूरी तरह निर्विघ्न नहीं समाप्त हो सक्ता—धन का अर्थ यहां केवल रुपया पैसा नहीं है वरन कार्य सिद्धि सामग्री अर्थात् एक दो या सौ दो सौ

व्यक्ति विशेष की संपत्ति वैभव या सामान नहीं किन्तु देश भरका धन अर्थात् सामान–परोपकार वा दूसरे का हित इस्के भी यही माने हैं कि दूसरे को ऐसा करदें कि वह अपना हित अपने आप कर सके तब यह समझना भूल है कि दो चार व्यक्ति विशेष के किये देश का पतन या अभ्युत्थान हित या अनहित हो सक्ता है–तो हम सबों का पहिला काम यह हुआ कि देश का धन बल और बुद्धि को बढ़ा कर इस योग्य बनादें कि हम सब लोग अपने हित अनहित को अपने आप विचारलें–किसी का मत है व्यक्ति विशेष की भलाई देश की भलाई का एक अंग है इसलिये सब लोग अलग२ अपनी भलाई सोचते और करते रहें तो देश की भलाई आपही हो जायगी–यह कथन नितान्त स्वार्थ परायण लोगों का मालूम होता है–हम तो यही कहेंगे कि इस्से बनेगा क्या बरन सब लोग अपनी २ तरक्की की खींच यहां तक करेंगे कि बाप बेटे के मुकाबिले कट मरेंगे–सहानुभूति हमदरदी और मैत्री भाव का कहीं नाम न रह जायगा—केवल अपने फ़ाइदे की दृष्टि से लोग ऐसे २ अन्याय और कुकार्य में तत्पर हो जांयगे और बुराई यहां तक बढ़ जायगी कि उस देश या जाति में जिस्में ऐसों की संख्या अधिक होगी उस्का समूल उच्छेद होना जल्द संभव होगा ईश्वर का ग़ज़ब और कहर एक बारगी उसी जाति या देश पर आय सक्ता है—महाभारत के समय में हिन्दुस्तान का यही हाल होगया था पक्षपात और दलिंदला यहां तक बढ़ गया था कि परस्पर की मैत्री बिल्कुल बाकी न रही तब तो भाई भाई के मुक़ाबिले भतीजा चचा के मुक़ा-बिले दादा पोता के मुकाबिले कट मरे–इसी से उस समय के क्षत्रियों में असम साहस और लोकोत्तर बीरता के होते भी भारत सर्वथा अस्त व्यस्त होगया और चुने २ वीर योद्धाओं के कट मरने से जो कमज़ोरी इसपर आई उस्की मरम्मत आज तक न होसकी—बल्कि महाभारत के

समय जिस परायापन और स्वार्थ बुद्धि का अंकुर पड़ा वह बराबर बढ़ताही गया यहां तक कि जयचन्द ने चिट्ठी लिख शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी को बुलवाया और जयचन्द तथा पृथ्वी राज दोनो आपस की खींच में नष्ट हो गये—असिल और सच्चा क्षत्री अपने देश और धर्म के लिये प्राण दे देता है सो एक दो आदमियों के प्राण और धर्म की रक्षा के लिये नहीं बरन देश भर की स्वतन्त्रता और धर्म को बचा रखने के लिये—देश की भलाई मानो मोती का एक माला है जो हित की इच्छा के सूत में पिरोया हुआ है—उस डोरे को अलग२ एक२ मोती की भलाई से कोई सरोकार नहीं है किन्तु एक साथ सब मोतियों का जो उस हार में पिरोये हुये हैं हित कर रहा है॥

अब हम पहले देश के धन का विचार करते हैं क्योंकि बलवान् और बुद्धिमान् को भी पहले प्राण रक्षा के लिये थोड़ा धन अवश्य चाहिये—बहुधा देखा जाता है कि प्रत्येक समाज में बड़े२ बलवान् पुरुष विद्यमान् हैं पर विना धन के कुछ नहीं कर सक्ते—बल और बुद्धि एक पुरुष का भी संपूर्ण समाज को अपनी मूठी में कर सक्ता है पर धन एक पुरुष का कभी कुल समाज का यथावत् हित नहीं कर सक्ता चाहो कुवेर कासा धनी क्यों न हो—अपना सर्वस्व किसी सर्व साधारण सामाजिक काम में दे दिवाय आप महानिष्किंचन सुदामा पा० परम दरिद्र बन बैठे यह किसी को गवारा न होगा तो निश्चय हुआ कि धन वही जो जातीय संपत्ति के नाम से समझा जाय या कहा जाय जिसपर देश भर का स्वत्व हो और किसी का भी नहीं—इसी तरह बुद्धि और बल भी जातीयत्वावच्छिन्न हो समुदाय और सर्व साधारण के कहे जा सक्ते हैं—पर इन तीनो का हमारे बीच कहां तक अभाव है पाठक इसे स्वयं विचार लेंगे हमारा इसपर विशेष लेख निरा पिष्ट पेषण होगा इससे इसकी समाप्ति यहीं पर किये देते हैं॥

खगोल निरूपण।

(पहले के आगे से)

यूरानस।

आखिरी सदी के अन्त तक यही निश्चय था कि शनि सूर्य से सब से दूरी पर है और अन्त का ग्रह है किन्तु जब यह ग्रह प्रगट किया गया तब से हमारे सैार जगत Solar Syotem का व्यास द्विगुण कर दिया गया—सन् ईस्वी १८८१ में विलाइत के नामी ज्योतिषी हरषल ने इसे पहले पहल बड़ी तेज़ दूरबीन से देखा तब उसे निश्चय हुआ यह कोई केतुग्रह है किन्तु पीछे से इसे पता लगा कि यह केतु नहीं बरन एक नया ग्रह है-जिस्के लिये हरषल को गवर्नमेंट की ओर से तग़मा और सनद मिली और इस्की बड़ी इज्ज़त की गई—बहुत दिनो तक इस ग्रह का नाम भी इस्के ईजाद करने वाले के नाम से रहा उपरान्त फिर इस्का यूरानस नाम पड़ा—बिना दूरबीन के तो यह कभी दिखाई नहीं देगा दूरबीन में भी साधारण दूरबीन से नहीं—कद में यह हमारी पृथ्वी से २० गुना बड़ा है इस्की दूरी सूर्य से शनि की दूरी की दुगनी है—हमारी पृथ्वी से एक गोला उस ओर छोड़ा जाय जो ५०० मील एक घण्टे में जाता हो तो वहां तक ३९० वर्ष में पहुंचेगा—१५००० मील एक घंटे में चलता हुआ ८४ वर्ष में सूर्य के चारो ओर यह घूम आता है—३६० गुना हमारी पृथ्वी से कम इसपर सूर्य का प्रकाश पहुंचता होगा तौभी ३६० पूर्ण चन्द्रमा के प्रकाश में जितनी रोशनी होना चाहिये उतनी रोशनी सूर्य की इसपर रहती है—अत्यन्त दूरी के कारण और कोई बात इस ग्रह की नहीं प्रगट की गई ॥

नेपृचून।

कैंब्रिज के प्रसिद्ध प्रोफ़ेसर मिस्टर आदम के मन में पहले पहल यह आया था कि यूरानस के उपरान्त भी एक और ग्रह है—जिसे प्रान्त के

एक गणितज्ञ ने अनुमोदन कर १८४५ ईस्वी के अक्तूबर महीने में प्रबल दूरबीन के द्वारा इसे देख मि० आदम और बरलिन नगर के ज्योतिषी मि० गेली को लिख भेजा जिसने इसकी ओर बिशेष ध्यान दे इसके समन्ध में और बहुत से अनुमान किये और वह अनुमान यह है—कि इसकी दूरी सूर्य से २,८५०,०००,००० मील की है और १६६ बर्ष में यह सूर्य के चारो ओर बारहो राशि पर घूम आता है और शनि के समान इसके साथ भी बहुत से उपग्रह लगे हैं जो बराबर प्रगट होते जाते हैं दो तीन अब तक ज़ाहिर हुये हैं॥

विलाइत के नामी खगोलज्ञ ज्योतिषियों का मत है कि अभी सब ग्रह उपग्रह नहीं प्रगट हुये बरन अभी और हैं जो हमारे नेत्रों से छिपे हैं या इतनी दूर हैं कि दूरबीनों से भी उन्हे हम नहीं देख सक्ते-यह भी खयाल करने लाइक है कि इस सौर जगत् के इतना वृहत् होने पर भी एक प्रकार का क्रम मेल Order and Harmony सबों में पाया जाता है जिससे मालूम होता है कि उस बड़े कर्तार ने ऐसी बुद्धिमानी से उन्हे अपने २ मार्ग में रक्खा है कि एक दूसरे के साथ टकरा कर अस्त व्यस्त नहीं हो सक्के॥

एक ग्रह दूसरे ग्रह की रास्ता को रोक नहीं सक्के न एक का उपग्रह अपना ग्रह छोड़ दूसरे का हो सक्ता है जो गति और वेग इन ग्रहों का आरंभ में रक्खा गया है वैसही लाखों बर्ष बीतने पर भी जैसे का तैसा बना हैं—इनमे जो सूर्य के सब से नज़दीक है उसकी दूरी भी सूर्य से ३५ करोड़ मील से कम नही है—इनमे छोटे से छोटा ग्रह जैसा बुध ८८ दिन में सूर्य के चारो ओर घूम आता है और बड़े से बड़ा जैसा नेपचून १६६ बर्ष में बारहो राशि पर की गति को पूरा करता है—किसी के साथ केवल एक चन्द्रमा है जैसा हमारी पृथ्वी, किसी के साथ ४ चन्द्रमा लगे हैं, किसी के सात सात जैसा शनि में, और कितने

ग्रह ऐसे भी हैं कि जिनके साथ एक उपग्रह भी नहीं है—इनमें कोई बिलकुल गोल हैं कोई अण्डे कीसी आकृति के हैं ये सब अपनी २ धुरी पर वैसाही घूमते हैं जैसा उस बड़े प्रकाश के पुंज सूर्य के चारो ओर जिससे ये सब प्रकाश और गरमी पाते हैं—बुध को राई के दाने के बराबर मानो तो उसके मुकाबिले पृथ्वी और शुक्र को मटर की बराबर मानों, और मंगल को सुई की नोक के बराबर, जूनोवेस्टा आदि ग्रहों को बालू के एक दाने के बराबर, बृहस्पति को बड़ी नारंगी की बराबर समझो और शनि को एक छोटी नारंगी के बराबर॥

	सूर्य से मील की दूरी	सूर्य के चारो ओर या १२ राशिपर घूमने का समय	प्रति मिनिट में गति मील
बुध	३७,०००,०००	८८ दिन २४ घंटा ६ मिनिट	१८३०
शुक्र	६८,०००,०००	२२४ ,, २३ ,, २० ,,	१३३३
पृथ्वी	९५,०००,०००	३६५ ,, ६ ,, ५६ ,,	११३३
चन्द्रमा	९५,०००,०००	२७ ,, ८ ,,	•
मंगल	१४५,०००,०००	६८६ ,, २४ ,, ४० ,,	८३३
बृहस्पति	४९५,०००,०००	११ वर्ष ९ ,, ५६ ,,	५००
शनि	९०६,०००,०००	२९ वर्ष ६ म०—१०—१६	३६६
यूरानस	१,८२०,०००,०००	८४ वर्ष	२५०

रूपवानों में रूप का रहस्य।

वाह आप की भी क्याही भोंड़ी समझ है—रूपवानों में रूप क्या है इस छिपे रहस्य का पता लग गया तो छैल चिकनियाओं के चित्त में रूपवान होने की सब हवसही गई गुज़री हुई —अगर यह लटका हाथ

लग गया तो बाकी क्या रहा मानो ज़िन्दगी का सब हौसिला पूरा हो गया—इसलिये कि कौन ऐसा होगा जो रूपवान होना न चाहता हो अथवा अपने शरीर में जो कुछ कज या ऐब हो उसे दूर करना न चाहेगा—अजी दिन का दिन न सही तो पहर भर घंटा दो घंटा कम से कम घड़ी दो घड़ी तो इसके लिये ज़रूरही चाहिये—इस रूप की कसावट की हम कई मद्द कायम करते हैं पढ़नेवाले मिलालें कि किस मद्द के वे हैं—सच तो यों है कि निपट फेशन की खाक छानने की ख़ाहिश से चेहरे की सफ़ाई कपड़े और बालों की दुरुस्ती में कौन ऐसा होगा जो थोड़ा समय अपना न लगाता हो—कौन ऐसा होगा जो कुरूप से कुरूप हो कर भी औरों से इसमे अपने को हेठा मानता हो—वही कहावत ठीक ठहरती है कि लोग अपने को उन आंखों से नहीं देखते जिनसे कि और दूसरे उन्हे देखते हैं—जिससे सिद्ध होता है कि मनुष्य के लालची चित्त में जहां नाम की पदवी की, औलाद की, धन की लालसाये हैं वहां रूपवान् होने की हवस भी होती है—किन्तु यह पिछली हवस किसी की पूरी हुई है या पूरा होना संभव है सो रूपवानों की जुदी २ मद्द जो हम यहां पर कायम करते हैं उससे निश्चय हो जायगा ॥

रूपवानों की एक मद्द उनकी है कि खाने को चाहो एक टुकड़ा रोटी भी घर में नहो पर गोरे गालों पर तेलफुलिया और छल्लेदार बालों में कंघी दातों में मिस्सी की धज कुल्लामत्ते पहरों और घंटों लगे खैर किसी तरह सिंगार कर कराय फ़ारिग हुये पान की बीड़ियों से गाल फुलाये बाहर निकले तो इस फिराक में लगे कि कहां से ऐसे को तलाश करना चाहिये जो हमारी छबि की कदर करनेवाला हो और कोटि कन्दर्प लजावन उनके रूप पर मोहित हो नैावाबज़ादों की लिस्ट

में उसका नाम दर्ज करले—कहने का तात्पर्य यह कि रूपवान् होने का अभिमान यद्यपि बहुतों को है किन्तु सौन्दर्य या रूप कोई ऐसी चीज़ नहीं है कि उसके फिराक में पड़े रहने से वह हाथ लग जाय—अब रूपवानो की दूसरी मद्द पर ज़रा मुलाहज़ा फ़रमाइये अस्तु बढ़ती उमर में तो कोई अपने को बदसूरत और कुरूप मानताही नहीं प्रकृति का नियम भी कुछ एसाही है "प्राप्ते तु षोड़से वर्षे शूकरीप्यप्सरायते" किन्तु उमर ढलने के समय आखों को दांतों को मज़बूत खूबसूरत और वज़ेदार बनाये रखने को लोग क्या २ नहीं करते क्योंकि जिस्को जो बात हासिल नहीं है वह यदि यह मान ले कि यत्न किये से कुछ नहीं होता तो मानो वह अपने जीवन का बड़ा भारी सहारा खो बैठा—खैर बड़ी कष्ट कल्पना से सींग कटाय बछरों में दाखिल होने की भांत चुचके गाल और निचोड़े कपड़े की तरह जर्जरित कलेवर में तेलपनिया कर कराय रूपवानो में दाखिल भये भी तो लोग यह कभी न कहेंगे कि फलाने के बाल अच्छे हैं जब स्वभाव सुन्दर बालों का मुकाबिला आ पड़ेगा— तात्पर्य यह कि हम हज़ार बन ठन अपने कृत्रिम सौन्दर्य से प्राकृतिक रूप की तुलना यदि किया चाहें तो इससे बढ़ कर बेहूदगी और क्या होगी— प्राकृतिक सौन्दर्य जैसा शकुन्तला के सम्बन्ध में कालिदास ने लिखा है— "इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी। किमिवहि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्" आप के बाल दांत आंख मुह हाथ पांव यद्यपि स्वभावही से बड़े खूबसूरत सुडौल और रूप की पताका हैं तब भी उनने नित्य संस्कार की आवश्यकता है—एक दिन भी आप बालों में कंघी न करें दांतों को न मांजें चेहरे को न धोवैं तो दूसरेही दिन उस प्राकृतिक सौन्दर्य में खराबी पैदा हो जाय—सारांश यह कि रूप पाने पर भी नित्य संस्कार की आवश्यकताही रहती है—कुरूप को रूपवान् होने का यदि खेद है तो रूपवान् को अपना रूप सम्भाले रहने के पीछे पूरी मौत है

तो जब खुबसूरती और रूप ऐसी नाज़ुक चीज है तो इसका मर्म और रहस्य जान लेना सहज नहीं है॥

तीजरी कद्द रूपवानों की प्राकृतिक सौंदर्य है जो अलबत्तपुण्यवान् कोईऐसे भाग्यवान् हैं जिनको ऐसा रूप मिलता है जिसमे बनावट और संस्कार की कभी अवश्यकताही नहीं पड़ती—जिनकी रूपमाधुरी देखते ही चित्त उधर खिंच जाता है ऐसों को अपना बाहरी रूप बनाने और सजाने में ऐसा यत्न और फिकिर नहीं रहती जैसा आभ्यन्तरिक चरित्र निर्दोष और बेदाग रखने में होती है॥

प्रिय पाठक सौन्दर्य से हमारा प्रयोजन बाहरी रूप रंग के बनाने से नहीं है जिस्की दुर्दशा हमने आप को कह सुनाया—बरन सौदर्य और रूप से हमारा प्रयोजन चरित्र अथवा शील पालन से है—क्योंकि शारीरिक सौन्दर्य पहले तो सब को मिलता नहीं और न यत्न किये पर भी कोई उसे पा सक्ता है तो हम दूसरेही प्रकार के सौन्दर्य के लिये प्रयत्न और चेष्टा क्यों न करें जो थोड़ी सावधानी और फिकिर करने से सुलभ है—और न इस सौन्दर्य के बढ़ाने की कोई अवधि है कहां तक बढ़ाते जाइये कभी आप यह नहीं कह सक्त कि हमारे और अधिक अच्छे होने की अब और गुञ्जाइश नहीं है—एक अद्भुत बात इस्मे और है कि जो इस सौन्दर्य में बढ़े हुये हैं वे अपने को कुरूपही मानते हैं अर्थात् जो शील पालन में भरे पूरे हैं और सकल सद्गुणालंकृत हैं वे यही मानते हैं कि मेरे में लाखों ऐगुण हैं इसी से दूसरों का ऐगुण देखने या कहने में वे सदा संकुचित रहते हैं—एक अनोखी बात इस्मे और भी है कि हम अपना बाहरी सौन्दर्य या रूप दूसरों के लुभाने को बनाते हैं जब हमारे रूपवान होने की दूसरा मनुष्य प्रशंसा करे तब मानो हमारे सौन्दर्य का सार्टीफिकेट हमे मिला—पर इस अभ्यन्तरिक सौन्दर्य को किसी की सार्टीफिकेट की कोई जरूरत नहीं

रहती यह भी हम दिखा चुके हैं कि बाहरी सौन्दर्य बढ़ाने या उसे कायम रखने के कितने खटराग हैं पर आभ्यन्तरिक सौन्दर्य के बढ़ाने में किसी तरह का खटराग नहीं है न इसका दृढ़ और यावज्जीव चिरस्थायी रखना बड़ा दुष्कर है—बल्कि कठिन से कठिन तपस्या इसी चित्त वृत्ति के निमल और स्वच्छ रखने की एक रास्ता है—तब हे हमारे रसिक पाठक वृन्द निष्फल शारीरिक सौन्दर्य के पीछे यत्न करना छोड़ सुलभ चित्त वृत्ति को सुन्दर करने में तत्पर हो इसी से आप संसार भर को प्रसन्न रख सकोगे और अखण्ड आनन्द से पूर्ण रह प्राणीमात्र के बड़े उपकार के होगे॥

नल दमयन्ती नाटक।

(पहले के आगे से)

स्थान

(चेदिनगर का राजमार्ग)

दमयन्ती को साथ लिये कई एक सौदागरों का प्रवेश।

सौदागरों का मुखिया—का हो पितई ननकू रमई-भाय अब तुम सबन की का राय है-अपने सौदागरी का सब माल अब यहीं उतारा चाहत हो कि कोई दूसरे शहर मा चलें—भाई समझ लेव माल का परता इहां लग सक्ता है कि नहीं-भाई हमार इरादा तो इहां उतरने का नहीं है जहां तक हम हिसाब लगाते हैं हमारे पास जो जिन्स है उस्का परता इहाँ नहीं लगता॥

दूसरे सौदागर लोग—भाई तुम हमार मुखिया हौ हम लोग तुम्हारेही आसरे से घर बार सब छोड़ निकले हैं—हमे निश्चय है तुम बड़ मनई हौ जो तुम्हारा राय वही बात पक्की हमइन सब लोग तो तुम्हार पिछलगुआ अहन॥

मुखिया सौदागर—अच्छा तो अब इस सुन्दरी को जिसे मुनिराय ने साथ कर दिया था और कहा था चेदिनगर में इसे पहुंचाय तुम चले जाना सो यहां तो पहुंच गये अब इसे विसर्जन करैं—मुनि जी के आश्रम में हम लोग टिक रात को बड़े आराम से रहे तब उनकी आज्ञा मानना मुनासिब था—(दमयन्ती से) सुन्दरी यही चेदिनगर है मुनि महाराज की आज्ञा अनुसार तुम यहां पहुंच गई हो अब हम सब लोग विदा होते हैं तुम्हें जहां जाना हो जाव—(सौदागर सब जाते हैं) ॥

दम—हाय हमारे लिलार में अभी और कौन२ दुःख सहना बदा है मुनिराय की कृपा से सौदागरों के साथ हो उस भयंकर बन को किसी तरह पार कर यहां आई हैं अब यहां किसकी शरण गहैं—परदेश में यहां हमे कोई जानता पहचानता भी नहीं तो कहां जांय किस्का सहारा लें—(रोती हुई इधर उधर घूमती है ॥

(नेपथ्य में) सुमति देख वह जो मैला कपड़ा पहने परम सुन्दरी नारी रोती हुई घूम रही है उसे यहां बुला ला—यह किसी अच्छे कुल की मालूम होती है इसे देख हमे न जानिये क्यों बड़ी दया होती है यहां इसे लेआ तो पूछैं यह कौन है ॥

(सुमति का प्रवेश)

सुमति–भद्रे तुम कौन हो क्यों अकेली अनाथिनी सी इस भांति घूम रही हो चलो तुम्हें राजमाता ने बुलाया है ॥

दम—(स्वगत) मालूम होता हैं राजमाता अपने महल से हमे इस तरह भटकते रोते देखा है कुछ दया मन में आई है—इन मैले कपड़ों से उन के पास जाते संकोच होता है पर कौन चारा है जांयगी—कदाचित् वहां जाने से कुछ भलाई हो (प्रकाश) महाशय मुझे आपकी आज्ञा सब भांत माननीय है चलती हूं (गमन) ॥

द्वितीय गर्भांक (स्थान—दुर्गमबन)।

(नल का प्रवेश)।

नल—हाय हमसा निठुर दुराचारी नृशंसक्रूर संसार में दूसरा कौन होगा स्नेह और दया का लेश भी हमारे में नहीं है—हाय अर्द्ध बसना पति परायणा गोद में सिर धरे सोती हुई भोली भाली सात भांवर की भार्या को ऐसे भयंकर बन में अकेले छोड़ते दया का लेश भी हमारे मन में न आया—हाय दमयन्ती सोते से उठ हमे न पाय क्या कहेगी और उसकी क्या दशा होगी—हा हम ऐसे नराधम को नरक की कौनसी यातना भोगना पड़ेगा (रोता है)॥

नेपथ्य में—हे पुण्य श्लोक महाराज नल दौड़ो२ हमारी रक्षा करो॥

नल (चकित हो चारो ओर देख) तुम कौन हो हम तो यहां किसी को नहीं देखते (नेपथ्य में फिर वही शब्द) इस बन में हमारा नाम ले कौन हमे पुकार रहा है—यहां तो किसी को नहीं देखतें केवल बन के एक ओर धुआं अलबत्ता उठ रहा है मालूम होता दावाग्नि से बन जल रहा है—उसी दवाग्नि में कोई भयंकर अग्नि में पड़ा हुआ जल रहा है (गमन और एक बड़ा साँप गोद में लिये फिर प्रवेश)॥

नेपथ्य में—महाराज! दैवयोनि विशेष नागों के कुल में उत्पन्न यह कर्कोटक नामक सर्प है—इसने एक बार झूठ बोल नारद मुनि को धोखा दिया तब उन्हों ने इसे सराप दिया—आज से तुझे इसी बन में स्थावर भाव प्राप्त हो शक्ति हीन हो रहना पड़ेगा राजा नल जब तुझे अपने हाथ से छुवैंगे तो फिर अपना पहिला शरीर पाय हमारे सराप से छुटकारा पावेगा—नागवंशियों में यह प्रधान है इसके द्वारा तुम्हारा बड़ा कल्याण होगा—(नल उसे गोद में लिये चलते हैं और कर्कोटक उन्हे काटता है—)॥

नल—नाग राज यह क्या—तुझे ऐसाही उचित था॥

मनुष्य रूप धरे कर्कोटक

कर्कोटक—महाराज आप घबड़ाय नहीं हमने जो आप को डसा है इससे तुम्हारा उपकारही होगा—उस से आप का रूप कुरूप हो जायगा तब तुम्हें कोई चीन्हैगा नहीं और दुष्ट कलि जो तुम्हारे शरीर में प्रवेश कर क्लेश दे रहा है सो हमारे विष के प्रभाव से जड़ भाव को प्राप्त होगा—इस समय उसको उचित दण्ड दे हमने तुम्हारा बड़ा उपकार किया और हमारे विष का कुछ असर तुम्हारे शरीर में न होगा—अब आप अयोध्या नगर में जाय ऋतु पर्ण राजा से मिलो और उसके सारथी बनो—राजा ऋतु पर्ण पाशा खेलने की विद्या में विशेष निपुण है उससे वह विद्या सीख तुम फिर अपना राजपाट पुत्र कलत्र सब पाय जाओगे—अब दुःख शोक सब त्याग करो यह बस्त्र हम तुम्हे देते हैं इसे पहनो (वस्त्र देता है) इसे पहिन तुम अपना पहला रूप फिर पा जाओगे—महाराज अब आज्ञा दो हम जांय (कर्कोटक राजा को प्रणाम कर जाता है)

नल—कर्कोटक ने अच्छा कहा अवश्य ऋतु पर्ण के पास जाने से हमारा उपकार है (प्रास्थान)॥

तीसरा गर्भांक

(स्थान राजमहल)।

(राजमाता और दमयन्ती बैठी हुई)।

राजमाता—बेटी हम तुम पर बड़ी प्रसन्न हैं तुम्हे दुखी देख हमे अत्यन्त करूणा होती है तुम यहां हमारे पास रहो—हम तुम्हारे पति की भी खोज करावेंगी—कदाचित् तुम्हारा पति घूमते २ आपही यहां आजाय॥

दम—मा हम सब भांत तुम्हारे पास रहने को उद्यत हैं किन्तु

हमारे दो एक नियम हैं उसे हम अवश्य पालन किया चाहती हैं॥

राजमाता–वे कौन नियम हैं॥

दम–यह कि हम किसी का जूठा न खांयगी किसी का पांव न धोवैंगी किसी पर पुरुष से बोलैंगी नहीं–यदि कोई पुरुष हमारे साथ किसी तरह का बलात्कार करेगा तो उसे आप को उचित दण्ड देना होगा–और जो हमारे पति की खोज को जायगा उस्से हम खुद पति का सब हाल पूछैंगी॥

राजमाता–जिस्से तुम्हारे ये नियम अच्छी तरह प्रतिपालित होंगे हम वही करने में कहीं से किसी भाँत न चूकैंगी–तुम स्वच्छन्द यहां वास करो॥

सुनन्दा का प्रवेश

सुनन्दा–मा प्रणाम करती हैं आज हमे आपने किस लिये बुलाया है॥

रा–मा–बेटी इस सैरन्ध्री को तुम्हारे सिपुर्द करती हैं यह तुम्हारी हम उमर है इस्से तुम्हारी भली भांत पटैगी–देखो इसे अच्छी तरह रखना इसपर किसी तरह का अन्याय न होने पावे॥

सुनन्दा–जो आज्ञा–मा आप जो आज्ञा देती हैं उसके विरुद्ध कोई बात न होगी–(दमयन्ती का हाथ पकड़) सैरन्ध्री आओ तुम हमारे साथ चलो (दोनो गईं)॥

चौथा गर्भांक

(स्थान—राजमहल के बहिर्भाग में क्रीड़ासर)।

सुनन्दा और दमयन्ती बैठी हुई।

सुनन्दा–बहिन देखो यह स्थान कैसा रमणीय है वृक्षों की एक २ शाखा प्रशाखा की हरियाली मन हरेलेती है—जिसे देख आंख को

कैसी ठंढक पहुंचती है-क्रीड़ावर में इन वृक्षों की छाया और अधिक सोहावनी मालूम होती है॥

दम-राजनन्दिनी जगदीश्वर की सृष्टि का निर्माण बड़ी चतुराई और बुद्धि के साथ किया गया है—थके मांदे बटोहियों को आराम पहुंचाने और उनकी सब थकाहट दूर करने के ईश्वर ने इन वृक्षों का जन्म किया है-परोपकारी बदान्यों के ये वृक्ष मानों शिक्षा दे रहे हैं कि आओ और दूसरों का उपकार करना हम से सीख लो-धन्य है इन वृक्षों के॥

सुदेव का प्रवेश

सुदेव-(स्वगत) अब और कहां जांय दमयन्ती का कहां पता लगावें-कितने देश बन उपबन पर्वत गर्त गुफा सब ठौर उस्की खोज में घूमते२ थक गये और कहीं उसे न पाया-लैाटकर राजाभीम के क्या मुह दिखावेंगे—अस्तु इस चेदि नगर में आये हैं यहां भी उस्की खोज कर लें-राजाभीम के हमारा बड़ा विश्वास था कि सुदेव अवश्य दमयन्ती के खोज लावेगा—(आगे देख) यह दो स्त्री कौन बैठी हैं—इनमें एक की सूरत तो ठीक दमयन्ती से मिलती है किन्तु पहले से अब यह कुछ दुर्बल होगई है बोध होता है पति शोक से इस्की यह दशा होगई है अवश्य यह भीमनन्दिनी दमयन्ती है (पास जाय) वैदर्भी हमको तुम पहचान सक्ती हो ॥

दमयन्ती (विश्वास भाव से) आप कौन हैं ?

सुदेव—हम तुम्हारे पिता भीम के मित्र सुदेव हैं-उनकी आज्ञा से हम तुम्हें ढूढ़ने निकले हैं देश देशान्तर ढूंढ़ आये तुम्हारा पता कहीं न पाया-आज हमारे बड़े सुदिन हैं जो तुम्हें हमने देखा ॥

दम-(रोती हुई) हाविधाता-हाय नसीब—हा महाराज नल तुम्हारी धर्मपत्नी हो आज हम सैरन्ध्री और दासी बनी हैं—हाय२

हमारे ये दिन कभी हम से दूर भी होंगे—मुझ अभागिनी को महाराज के मुखचन्द्र का फिर कभी दर्शन होगा (सुदेव दमयन्ती को समझाता है—सुनन्दा जाती है और राजमाता के साथ फिर आती) ॥

रा—मा—(सुदेव से) महामति आप कौन हैं और यह सैरन्ध्री कौन है—मालूम होता है आप इससे अच्छी तरह परिचित हैं नहीं तो तुझे देख सैरन्ध्री क्यों इतना धीरज छोड़ रोई—कृपा कर कहिये आप कौन हैं और यह सैरन्ध्री कौन है ॥

सुदेव—राजमहिषी इसके दुःख की कहानी बहुत बड़ी है कहां तक कहैं—जिसे आप सैरन्ध्री कहती हैं यह विदर्भ देश के राजाभीम की कन्या और पुण्यश्लोक निषधाधिपति राजर्षि नल की पाणिग्रहीती भार्या दमयन्ती है—महाराज नल अपने भाई पुष्कर के साथ जुआ में राज पाट सब हार दमयन्ती सहित कहां चले गये सो कुछ पता नहीं—हम राजाभीम की आज्ञा से उन दोनो के खोज में निकले हैं देश देशान्तर में घूमते२ आज दमयन्ती को तुम्हारे यहां पाया ॥

रा—मा—(अचरज में आय) ऐं क्या यह दमयन्ती है—हम कभी स्वप्न में भी यह न जाना कि यह महाराज नल की प्राण प्यारी है—(दमयन्ती से भेटती हुई रोती हैं) बेटी तुम तो हमारा प्राण हो हमारा अपराध क्षमा करो कि हमने तुझे दासी बना के रक्खा—प्यारी हमारा जो कुछ धन संपत्ति है उसे तुम अपना समझो—हम तुम्हारी हमारा राजपाट सब तुम्हारा हम से बड़ा अपराध बन पड़ा जो तुझे न पहचाना—दमयन्ती तुम हमारी बहन की बेटी हो—तुम्हारी मा और हम दोनो दशार्ण देश के राजा सुदामा की कन्या हैं—हमारे पिता तुम्हारी मा को विदर्भ के राजाभीम को व्याह दिया और हमको चेदी के राजा बीरबाहु के हाथ सौंपा—बेटी जिस समय तुम पैदा हुई

हो उस समय हम वहीं रहीं—हमारा घर तुम अपनेही पिता का घर समझो ॥

दम-(प्रणाम कर) मा अब तक आपने हम को न जाना और न हम तुम्हे पहचान सकीं तौ भी हम इतने दिनो आप के यहाँ बड़े सुख से रहीं—सदा आप हमें निज कन्या समान मानती रहीं—मा हमें परदेश में रहते बहुत दिन बीत गये अब आज्ञा दो घर जाय पिता माता का दर्शन करें—आप की दया से हमारे एक कन्या और एक पुत्र है वे दोनो बहुत छोटे रहे तभी नन्हियाल में भेज दिये गये हैं आज्ञा देव तो हम उन से फिर जा मिलें—जननि यदि हमारा प्रिय और हित आप को वाँछित है तो शीघ्र हमें बाप के घर जाने की आज्ञा देव ॥

रा-मा-बेटी हमें कोई उजर नहीं है किन्तु इतने दिनो तुम ने हमारे घर में वास किया और हमने तुम्हें न चीन्हा इस्का हमें बड़ा पछतावा है ॥

दम —(सुनन्दा से) बहन तुम ने हमें बड़े यत्न से रक्खा और हम पर तुम को बहुतही बहुत छोह है —बहन अब हमें जाने की आज्ञा दो ॥

सुनन्दा-दमयन्ती हमको तुम्हारे साथ से कितना सुख मिला उसे हम कहाँ तक कहें बहन हमें भूल न जाना ॥

दम-(प्रणाम पूर्वक) जननी आप हमें आशीर्वाद दें जिस में जल्द हमारे पति नल हमें मिलें ॥

रा-मा-बेटी ईश्वर करे तुम्हारे मन की इच्छा जल्द पूरी हो ॥

दम—(सुनन्दा से) दी दी हमारा कहा सुना माफ़ करना (प्रस्थान)

पुस्तक प्राप्ति।

शिवराज भूषण काव्य।

भाषा के प्रसिद्ध कवि भूषण को कौन न जानता होगा—भूषण की कविता वीर रस के लिये प्रसिद्ध है-इस ग्रन्थ में मैं कवि की जीविनी और उन के बंश का हाल समेत दिया गया है-रा-रा-काशीनाथ पाण्डुरंग द्वारा संपादित—जिसे गोवर्द्धन दास लक्ष्मी दास ने बम्बई निर्णय सागर प्रेस में छपवाया है—ग्रन्थ अपूर्व और संग्रह के योग्य है मूल्य १) :—

बासुदेव रसानन्द।

शिवशर्म सूरि विरचित।

जिसे महा महोपाध्याय पं० श्री आदित्य राम भट्टाचार्य ने निज-व्यय से मुद्रित कराय बासुदेव की भक्ति के प्रेमी रसिकों को बिना मूल्य बितरण किया "प्रकाशकेन ग्रन्थोयं वासुदेवस्य प्रीतये। कीर्तये ग्रन्थकर्तुश्च विना मूल्यं वितीर्यते,,—इसमें विष्णु के नाम का महात्म्य श्रुति स्मृति पुराण इतिहास उपनिषद् इत्यादि से ले संग्रह किया गया है—उसी के प्रसंग में अनेक सदुपदेश में कलियुग में हम सबों का मुख्य कर्तव्य क्या है इत्यादि का बर्णन बड़े उत्तम ढंग से किया गया है—बीच२ ग्रन्थ की प्रौढ़ संस्कृत से ग्रन्थकर्ता का पाण्डित्य और हार्दिक्य सरल भाव अच्छी तरह प्रगट होता है—पं० शिवराम वैद्य के सिटी एलबियन यंत्रालय में यह ग्रन्थ मुद्रित किया गया है॥

हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सेनह पूरित प्रगट है आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २१ सं० ११-१२ { प्रयाग { जूलाई अगस्त १८९८ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज १।=)
५ साल की पूरी जिल्द लेने से मै पोस्टेज ३)
नमूने की कापी =)॥

हिन्दीप्रदीप

जिल्द २१
संख्या ११।१२।

प्रयाग

जुलाई । अगस्त
सन् १८९८ ईसवी ॥

नहीं ।

यह भी क्याही बिचित्र दो अक्षर का शब्द है जिसे कोई कभी नहीं पसन्द करता—बहुतेरों का तो यह खयाल है कि संसार रूपी पुस्तक से ये दो हर्फ़ छील दिये जाते तो अच्छा होता—जो कोई किसी से कुछ कहता है, पूछता है, मांगता है, तो उसके मन में यह शंका कांटा सी चुभती रहती है कि उत्तर में उसे ये दो हर्फ़ कहीं न मिल जांय—इतिहास और पुराणों में देवताओं का एवमस्तु सुना जाता है और उस एवमस्तु से जो २ अद्भुत बातें देखने में आई हैं वह भी किसी से छिपी नहीं हैं—वर प्रदान रूप एवमस्तु से संसार में जो २ सुख लोगों को मिले हैं वह भी सब लोग जानते हैं—पर नहीं इन दो अक्षरों से भी किसी को कुछ सुख मिला है कभी सुनने में नहीं आया—गौरांगों में बिवाह की जड़ इन्हीं दो अक्षरों का उलटा है अर्थात् पुरुष स्त्री से "ईश्वरीय भवन" गिरजा घर में पूछता है तू मुझको अपना पति होना स्वीकार करेगी? तब दोनो का जन्म पर्यन्त एक मन दो तन होने का और आजन्म साथ

रहने का द्वार मदार इन्ही दो अक्षरों का उलटा उत्तर अर्थात् हां है–कहीं ये दो अक्षर उस समय स्त्री के श्रीमुख से निकल जांय तो जिनमें यह व्यौहार प्रचलित है उनमें स्त्री और पुरुष का नाताही न पैदा हो सृष्टि की रचनाही रुक जाय–डूब कर देखिये तो संसार में इस नहीं की नहीं होनाही भलाई है ॥

किम्बदन्ती है कि एक धर्मिष्ट न्याय परायण राजा भेस बदल एक रात को नगर देखने निकला––घूमते २ एक पेड़ के नीचे दबके खड़े हुये उसे चार आदमी मिले, राजा को देख वे चारो भयभीत हो बोले अरे तू कौन है? राजा ने जवाब दिया जो तुम हो सो हम हैं–राजा का ध्यान उस समय ज्ञान काण्ड के मार्ग में था जिसका तात्पर्य यह हुआ कि मनुष्य मात्र सब एक हैं–पर वे चारो जो वास्तव में चोर थे राजा के कहने को अपने मतलब में झुका लाये और बोले आज भादों की १४ है नन्हीं २ झीसियां पड़ रही हैं शीतल मन्द समीरण बह रहा है चलो किसी बड़े घर को मूसैं–एक ने कहा चलो आज इस नगर के राजा के यहां सेंध दें–रनवास में जड़ाऊ सोने चांदी के भूषण बसन बहुत हाथ लगैंगे–एकही बार की चोरी में अमीर बन बैठेंगे–राजा ने कहा अच्छा हम भी साथ चलैंगे पर बतलाओ आप लोगों में क्या २ गुण हैं–एक ने कहा हमे रुत ज्ञान है अर्थात् हम चरिन्द परिन्द सबों की बोली पहचान सक्ते हैं कि वे क्या कह रहे हैं–दूसरे ने कहा हमें ऐसी स्मरण शक्ति है कि जिसे एक बार देख लेते हैं उसे फिर कभी नहीं भूलते–तीसरे ने कहा हम गड़ा धन बतला सक्ते हैं–चौथे ने कहा जहां कहीं धन हो हम निकाल देंगे–उपरान्त चारों ने राजा से पूछा तुम्हारे में क्या गुण है? राजा घबड़ा गया और बोला मेरी नहीं संकट मोचन है आदमी को फांसी होती हो हम नहीं कहैं वह फांसी से छुट जाय–पाठक याद रहे

ऐसी "नहीं" संसार में अत्यन्त बिरली है—अस्तु चारो चोरों ने पांचवें राजा समेत राजमन्दिर के ओर जाय रनवास में सेंध दिया—राजा ने उन चारों से कहा इस अपरिचित घर में मैं भटकता फिरूंगा इसलिये मैं सेंध के बाहर रहूंगा तुम लोग जो भीतर से लाय मुझे दोगे उसे मैं इकट्ठा करता जाऊंगा—जिस समय वे पांचो राजमन्दिर की ओर जा रहे थे कुत्ता भूकने लगा—उन चारों में से तीनो ने उस रुतज्ञानी से पूछा कुत्ता क्या कह रहा है—रुतज्ञानी ने उत्तर दिया कुत्ता यह पुकार रहा है ये पांचो चोर नहीं है किन्तु एक उन में से इसी शहर का राजा है—इस पर सब लोग हंस पड़े कि कुत्ता बावला है चलो चलैं अपना काम करैं—राज मन्दिर में पांचो जब गये तो वहां सब लोग सो रहे थे—वह मनुष्य जो जान लेता था कि धन कहां है बताने लगा और लोग ढो २ कर राजा के पास लाय रखने लगे—इसी औसर में राजा ने कोतवाल को खबर दी कोतवाल ने आय उन सबों को पकड़ लिया चोरों को अचरज भया कि वह पांचवां कहां गया फिर समझा दौड़ आते देख भाग गया होगा—दूसरे दिन कचहरी में चारो लाये गये—प्राड्विवाक अर्थात् जज ने हुक्म दिया चारो का सिर काट लिया जाय—चारो राजा की ओर देख विस्मित हो गये—जिसे स्मरण शक्ति थी वह राजा को सिंहासन पर बैठा देख बोला यह जो सिंहासन पर बैठा है उसे हम ने कहीं देखा है रुतज्ञान वाले ने भी कहा ठीक है कुत्ते ने भी ऐसी कहा था—जब गारद के सिपाही उन्हें बध्य स्थान में ले चले तो उन सबों ने कहा हम लोगों ने अपना २ गुण प्रगट कर दिखाया आप अपने संकट मोचन वाले गुण नहीं को कब प्रगट कर दिखावेंगे—यह सुन कोतवाल ने राजा की ओर अचरज में आय देखने लगा राजा ने कहा "नहीं" सारांश यह कि अन्त में सब छूट गये—पाठक इस बिरली "नहीं" का दृष्टान्त हमने आप से कह सुनाया बिचार कर देखिये तो संसार में एकही "नहीं" ऐसी है जो बड़ी मीठी और प्यारी है

जिसे आदमी यावज्जीव नहीं भूलता अर्थात् नवोढ़ा के प्रथम समागम में जहां "हां" किसी को कम भावती है ॥

असंमुखालोकनमाभिमुख्यं निषेध एवानुमतिप्रकारः ।
प्रत्युत्तरं मुद्रणमेव वाचो नवांगनानां नव एव पन्थाः ॥

लक्ष्मी ।

पुराणों में लक्ष्मी का स्वरूप चतुर्भुज कमलासन पर सुशोभित उल्लू पक्षी को अपना बाहन किये हुये माना है—इनके बल और शक्ति का वारापार नहीं है-यद्यपि कई एक महात्माओं ने लिखा है कि लक्ष्मी और सरस्वती का बिरला साथ होता है अर्थात् जो सरस्वती के कृपा-पात्र होते हैं वे बहुत कम लक्ष्मी के भी कृपापात्र होते हैं-बहुधा सर-स्वती के पूर्ण कृपापात्र लक्ष्मी की परवाह नहीं करते-उनको इच्छा तो इनके आने की अवश्य होती है पर कठिनाई यह है कि हर तरह की लक्ष्मी को वे स्वीकार नहीं किया चाहते और शुद्ध रीत पर जैसा वे चाहते हैं उनके मन के माफिक इनका आगमन होना दुस्तर सा रहता है-यदि महारानी ने कृपा भी किया तो वह उनको वैसा प्यार नहीं करते जैसा उनके मुख्य कृपापात्र एक मात्र भक्त उनका आदर करते हैं—उनका कथन तो यह है माता तुम्हारे रहनेही मात्र से कुछ उपकार और फाइदा नहीं है बरन "मेरे कर पैंड़ा करो जित चाहो तित जाव" अर्थात् मेरे हाथ में पहले आओ जिस्से मैं जो चाहूं सो मुझे मिल जाय मेरे हाथ से गुज़र कर तब आप जहां चाहो वहां जाय मैं तुम्हें कैद कर नहीं रक्खा चाहता संसार के कौन से पदार्थ हैं जो तुम्हारे द्वारा नहीं मिल सक्ते तब तुम्हे कैद कर रखने में कौनसा बड़ा लाभ है हां उन मनहूसों की तो बातही निराली है जिन्हे तुम्हे कैद कर रखनेही

में मज़ा मिलता है—संसार में जितनी बातों से कष्ट मिलता है—भय होता है—वह सब इनके आने से ऐसा दूर होते हैं जैसा बर्षा काल में मेघ को पवन उड़ा ले जाती है - सच पूंछो तो ऐसा कोई न होगा जिस को इनकी आकांक्षा न हो - जितना उद्यम मनुष्य करता है सब इन्हीं के लिये—जब यह महारागी आती हैं तो इतनी जल्दी और इतने प्रकार तथा भिन्न२ द्वार से आती हैं कि इनके कृपापात्र को इनके रखने का ठौर नहीं मिलता—ऐसाही जब ये रूठ कर जाने लगती हैं तो इतनी जल्द चली जाती हैं कि कितनाही थांबो और गहि के पकड़ो फिर उस भाग्यहीन के पास किसी तरह पर नहीं रहतीं गजभुक्त कपित्थ की भांत ऊपर का आडम्बर मात्र रह जाता है और भीतर २ सब ओर से पोला पड़ जाता है॥

समायाति यदा लक्ष्मीर्नारिकेलफलाम्बुवत्।
विनिर्जाति यदा लक्ष्मीर्गजभुक्तकपित्थवत्॥

लक्ष्मी जब आती हैं तो ऊपर से कुछ नहीं मालूम होता पर भीतर २ मनुष्य अन्तःसारवान् होता जाता है जैसा नारियल के फल में डाव ऊपर से कुछ नहीं मालूम होता पर भीतर उसके दूधसा पानी भरा रहता है—ऐसाही जब ये जाती हैं तब हाथी का निगला हुआ कैथे की भांत हो जाता है—हाथी को कैथा दो तो वह सहिंगे का सहिंगा निगल जाता है और वैसाही समूचा लीद कर देता है पर भीतर उसके गूधा बिल्कुल नहीं रहता—लक्ष्मी की कृपा होतेही यावत् काम सब आरंभ हो जाते हैं—मकान भी छेड़ दिया—ज़मीदारी भी खरीदने लगे—लड़की लड़कों के व्याह में भी ऊंचीसी ऊंची करतूत करने लगे—एक की जगह चार ख़र्च होने लगा, खान पान लेन देन सब

में खुले हाथ मुक्त हस्त दिल और हाथ दोनो में कुशादगी आ गई अच्छा कहा है ॥

अर्थेभ्यो हि विवृद्धेभ्यः संभृतेभ्यस्ततस्ततः।
क्रियाः सर्वाः प्रवर्तन्ते पर्वतेभ्य इवापगाः॥

घराने में कोई ऐसा भाग्यवान् लक्ष्मी का कृपापात्र पुण्यशील जन्मा कि उसके भाग्य और अच्छी कमाई से वंश और घराने भर की प्रतिष्ठा और नाम हो गया—ईश्वर की कृपा रही बंधी मूठी चली गई सैकड़ों वर्ष वैसही आन शान के साथ घराने की प्रतिष्ठा और बात निभती गई—कोप हुआ तो घर का वह मणि कुल का दीपक निकल गया कूड़ा ककर्ट मटियाफूस बच रहे वह तेज़ी और ऐंठन तथा गर्मी चली गई—लोना लगी दीवाल की भांत घराने का घराना भसभसाय के बैठ गया—एक२ आदमी तितर बितर हो जूती चटखाने लगे "कौड़ी नहीं तो कौड़ी के फिर तीन तीन हैं"।

अर्थेनहि विहीनस्य पुरुषस्याल्पमेधसः।
विच्छिद्यन्ते क्रियाः सर्वाः ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥

निर्बुद्धी धनहीन का धन जातेही उसके सब काम ऐसाही अधकचढ़े पड़े रह जाते हैं जैसा गरमी के दिनों में क्षुद्र नदियां ठौरही सूख के रह जाती हैं—बहुधा देखा गया है लक्ष्मी के आने के साथ खूबसूरती तरहदारी और कुल का ऊंचा होना बढ़ता जाता है और लक्ष्मी के जाने के साथही ये तीनों घट जाते हैं॥

"अर्थोष्मणाविरहितःपुरुषः स एव ह्यन्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत्" "यस्यास्ति वित्तं सनरः कुलीनः सपण्डितः सः श्रुतिमान्गुणज्ञः। स एव वक्ता सचदर्शनीयः सर्वे गुणाः कांचन माश्रयन्ति"॥

बहुधा देखने में आया है लक्ष्मी का एकान्त भक्त चित्त का उदार नहीं होता उसको इनसे ऐसा प्रेम होता है कि वह इनको किसी तरह पर अपने पास से नहीं हटने देता—मसल है "मरजैहौं तोहि न भुजैहौं" यहां तक आंखों के ओट नहीं किया चाहता कि चाहो सब कुछ चला जाय जीवन से बढ़ कर अमूल्य वस्तु और क्या होगी उसका भी वियोग हो जाय किन्तु धन का वियोग न होने पावै ॥

जातिर्यातु रसातलं गुणगणस्तस्याप्यधो गच्छताम् शीलं शैलतटात्पतत्वभिजनः सन्दह्यतां वन्हिना। शौर्ये वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोस्तु नः केवलं येनैकेन विना गुणास्तृणलवप्रायाः समस्ता इमे ॥

उमदे से उमदे कपड़े उमदे २ ज़ेवर पहन सक्ता है सत खण्डा महल भी उसको अपने रहने के लिये कुछ बड़ी बात नहीं है पर उस मक्खी-चूस कदर्य को रुपया ख़र्च होने के मुकाबिले यह कुछ नहीं सुहाता फूटा टूटा मैला कुचैला कपड़ा पहन, मोटा झोटा। रूखा सूखा अन्न खाय, लोना चाटी दिवाल वाली टूटी झोपड़ी में रह, न पेट भर आप खाता है न अपने असरइत स्त्री और लड़कों को खिलाता है और रुपया जमा करता जाता है—लक्ष्मी कहती हैं ॥

शूरं त्यजामि वैधव्यादुदारं लज्जया पुनः।
सापत्न्यात्पण्डितमपि तस्मात्कृपणमाश्रये ॥

शूर वीर के पास मैं इसलिये नहीं जाना चाहती कि वह जब अपनी जान पत्ते पर रक्खे हुये लड़ाई में प्राण खोने को उद्यत है तो उसके जीने का कौन ठिकाना तब मुझे वैधव्य का दुःख सहना होगा—उदार के पास भी जाते लज्जा होती कि उदार मुझे सब के सामने

फेका करता है—पण्डित के पास इसलिये नहीं जाती कि वहां मेरी सौत सरस्वती गाज रही है—इसी से मैं कृपण का सहारा लेती हूं कि यह मुझे सौत से रक्खेगा ॥

दूसरी बात यह भी देखी जाती है कि धनी बहुधा मूर्ख होते हैं सो क्यों—इसको भी किसी कवि ने बड़ी उत्तम उक्ति युक्ति से दर्साया है॥

पद्मे मूढजने ददासि द्रविणं विद्वत्सु किं मत्सरो।
नाहं मत्सरिणी नचापि चपला नैवास्मि मूर्खे रता॥
मूर्खेभ्यो द्रविणं ददामि नितरां तत्कारणं श्रूयतां।
विद्वान्सर्वजनेषु पूजिततनु मूर्खस्य नान्यागतिः॥

कवि कहता है लक्ष्मी तुम मूर्ख के पास जाती हो पढ़े लिखे विद्वानों से तुम्हें क्या ईर्षा है जो वहां नहीं जाती हो तब लक्ष्मी जवाब देती हैं—हमें विद्वानों से कोई ईर्षा नहीं है न हम चंचला हैं—मूर्ख को जो हम धनाढ्य कर देती हैं उसका कारण सुनो कि विद्वानों का तो सब लोग मान और प्रतिष्ठा करते हैं मूर्ख को कौन पूछता जो वहां हम न जातीं ॥

ऐसाही लक्ष्मी और सरस्वती के सम्बाद में अनेक कल्पनायें कवियों ने गढ़ी हैं उन में यह एक बड़ी उत्तम है ॥

विद्वांसः कृतबुद्धयः सखि मम द्वारिस्थिता नित्यशः श्रीमन्तो पि मया विना पशुसमा स्तस्मादहं श्रेयसी॥श्रीवाग् देवतयो रमूनि बचनान्याकर्ण्य वेधाश्चिरादूचे श्रेयतरे उभे यदि भेवदेको विवेको गुणः॥

लक्ष्मी सरस्वती से कहती हैं सखि विद्वान् पढ़े लिखे मेरे कृपापात्रों के द्वार पर नित्य हांथ पसारे खड़े रहते हैं—तब सरस्वती ने कहा हां

ठीक है पर श्रीमन्त भी मेरे न रहने से पशु तुल्य देखे जाते हैं तब हमी न अच्छी हुई—इस तरह पर विवाद के उपरान्त दोनों ब्रह्मा को पंच बदा तब ब्रह्मा दोनों की बात सुन देर तक सोचने के उपरान्त बोले तुम दोनों अच्छी हो यदि बिवेक रहे तो—अर्थात् विवेक शून्य न तो लक्ष्मी का कृपापात्र अच्छा न सरस्वतीही का—बुरा से बुरा काम जिसका करने वाला राजा के यहां से दण्ड पाने योग्य है और समाज में अत्यन्त घृणित हो उसे भी धन के लिये करते लोग ज़रा नहीं संकुचाते—इसी से उर्दू के नामी शायर सौदा का कौल है "मादर पिदर बिरादर जो२ कहो सो ज़र है" फ़ारसी के एक दूसरे शायर का भी ऐसाही कौल है "धन तू ईश्वर नहीं है पर जितने दोष सबों का ढांपने वाला है और मनुष्य के जीवन में जितनी आवश्यकतायें हैं सबों का पहुंचाने वाला है" सच तो यों है कि इसी के लिये मैं आप की सेवा करता हूं आप को प्रसन्न रखने की भरसक चेष्टा करता हूं पर कितने तो बिना मांगेही दे देते हैं कितने याद दिलाने पर चेत जाते हैं कितने ऐसे मनहूस हैं कि तकाज़े पर तकाज़ा भेजते जाव निगलते जाते हैं पैसा पास से निकाला चाहतेही नहीं ॥

अवध पंच के चुटकुले।

सुनते हैं महाराणी के भविष्य उत्तराधिकारी राजकुमार प्रिन्स आफ़वेल्स के घुटने में चोट लग गई थी चोट तो अच्छी हो गई पर डाक्टर महाशयों ने कहा है आप की टांग अच्छी न होगी लंगड़े रहेंगे—इस पर अ० पं० पूछते हैं क्या सलतनत तैमूरी फिर आवेगी ॥

भाषा में क्रिया का चिन्ह अन्त में ना का लगाना है जैसा आना, जाना, खाना, पीना, सोना आदि—नमूना, कोना, लोना, टोना, दोना, आदि, कई शब्द इस कायदे से बरी हैं—१८७७ ईस्वी से जब से राणी

महाराणी इम्प्रेस कैसर हिन्द हुई हैं हिन्दुस्तान के वाइसराय की पहचान यह है उनके नाम के अन्त में न हो जैसा लिटन, रिपन, लैन्सडौन, डफरिन, इलगिन, कुरजन ॥

हिसाब लगाने वाले डींग मार रहे हैं कि इन दिनों विलायत में पागलों की संख्या बहुत बढ़ गई है—इस वर्ष के प्रारंभ में १०,७७२ दीवाने पागलखानों में मौजूद थे हमारे भाई हिन्दुस्तानियों को अचरज होता होगा कि इङ्गलैण्ड में इतने पागल हैं—खयाल रहे कि वहां के पागल भी यहां के सरेखों से अच्छे हैं—खुशी की बात होती कि हम पागल हो कर भी ब्रिटिन सी विजयी कौम में गिने जाते ॥

❀ काशी नागरी प्रचारिणी सभा ❀

के

॥ प्रश्नों के उत्तर ॥

* मिरज़ापुर निवासी *

॥ बाबू काशी प्रसाद लिखित ॥

(१) अपनी सम्मति प्रगट करने के पूर्व हम भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी के " हिन्दी भाषा " से कुछ उध्रित करते हैं ॥

"नं० २ जिस्में संस्कृत के शब्द थोड़े हैं"

(क) "सब विदेशी लोग घर फिर आये और व्यापारियों ने नौका लादना छोड़ दिया, पुल टूट गये, बांध खुल गए, पंक से पृथ्वी भर गई, पहाड़ी नदियों ने अपने बल दिखाए बहुत वृक्ष समेत कूल तोड़ गिराए, सर्प बिलों से बाहर निकले, महानदियों ने मर्य्यादा भङ्ग कर दी और स्वतंत्र स्त्रियों की भांति उमड़ चलीं " ॥

"नं ३ जो शुद्ध हिन्दी है"

(ख) "पर मेरे प्रीतम अब तक घर न आए क्या उस देश में बरसात नहीं होती या इधर की सुधही भूल गए कहां तो वह प्यार की बातें कहां एक संग ऐसा भूल जाना कि चिट्ठी भी न भिजवाया"॥

उसी पुस्तक के स्थानान्तर में बाबू साहब कहते हैं "हम इस बारे में बाद नहीं किया चाहते कि कौन भाषा उत्तम है और यही लिखनी चाहिए पर हां मुझ से कोई अनुमति पूंछै तो मैं यह कहूंगा कि नम्बर २ और ३ की भाषा लिखने योग्य है"॥

भारतेन्दु जी ने (क) और (ख) की हिन्दी पसन्द की है उनमें से (क) तो साधु भाषा का उदाहरण है और (ख) प्रचलित भाषा का। दोनों में से किसी में फ़ारसी शब्दों का नाम नहीं है अतः फ़ारसी मिश्रित हिन्दी न लिखनी चाहिए। अब इन बातों का निर्णय करना रह गया कि किस २ बिषय के ग्रन्थ साधु भाषा में लिखे जाने चाहिए और प्रचलित भाषा में किस२ बिषय की पुस्तकें लिखी जानी चाहिए॥

उपन्यास, जीवन चरित्र, दर्शन, विशेष विषयों पर लेख इत्यादि, साहित्य विषयक ग्रन्थों की भाषा, साधु होनी चाहिए—उदाहरण (क) चन्द्रप्रभा, चारितावली—इत्यादि—साधारण इतिहास, समाचार पत्र इत्यादि के लिये प्रचलित भाषा उपयुक्त होगी उदाहरण (ख) रामायण का समय, इत्यादि॥

(२) संज्ञा सर्वनाम दोनों में विभक्ति एक साथ मिला कर लिखनी चाहिए, बोलने में विभक्ति अलग नहीं बोली जाती। समस्यमान पदों को अलग २ न लिखना चाहिए क्योंकि उन्हें पृथक् २ लिखने से किस शब्द के साथ किसका संबन्ध है यह समझने में बड़ी गड़बड़ी पड़ती है॥

यथा—'द्वादश दर्शना चार्य्य' 'जगद् विदित कीर्ति' "श्रीयुत दामोदर शास्त्री, समस्यमान पदों के लिखने में बहुत से लोग बीच २ में हाइफ़न

रेखा देकर लिखते हैं किन्तु यह भला नहीं मालूम होता, हिन्दी शब्दों के साथ विदेशी शब्दों के जोड़ने में हाइफ़न देना अच्छा है। जैसे—अंगरेज़–चरित्र॥

(३) हुआ, हुई, हुए, गया, गई, गए, इत्यादि का प्रयोग करना चाहिये क्योंकि इन शब्दों का उच्चारण ऐसाही होता है भारतेन्दु जी तथा हिन्दी प्रदीप प्रभृति के लेखों में भी इन्हीं का प्रयोग मिलता है॥

(४) साधु भाषा में संस्कृत शब्द और प्रचलित में अपभ्रंश हुये शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए। उदाहरण–प्रथम प्रश्न के उत्तर में (क) और (ख) संस्कृत के योग में अपभ्रंशित और अपभ्रंशित के योग में संस्कृत नहीं लिख सक्ते जैसे–मदान्ध हांथी या मतवाला हस्ती। वरन मतवाला हाथी और मदान्ध हस्ती। यदि अपभ्रंशित शब्दों को संस्कृत बनाने में बहुत रूपान्तर हो जाय तो अपभ्रंशितही रहने दें॥

(५) हिन्दी कविता में बहुधा अपभ्रंशित शब्दों का प्रयोग करते हैं और अन्य भाषा के शब्दों को भी ऐसा बिगाड़ कर लिखते हैं कि सुनने और समझने में बड़ा कष्ट होता है। (य) (श) को सर्वदा (ज) (स) न लिखना चाहिये, जहां पर (श) को (स) और (य) को (ज) किए बिना छन्द ठीक न हो सके वहां पर (स) और (ज) लिख सक्ते हैं–पढ़ने में जैसा चाहै वैसा पढ़े किन्तु लिखने में शुद्धही लिखना चाहिए। (श) को (स), (ष) को (ख), (क्ष) को (च्छ) लिखना बड़ी भूल है क्योंकि (स) (ख) और (च्छ) शुद्ध अक्षरों की अपेक्षा मधुरतर नहीं हैं। (क्+ष) को, (च्+छ) की अपेक्षा, (क्+ख) लिखना अच्छा है॥ (ण) को (न) बोलना मधुर मालुम होता है इससे यदि (ण) को (न) लिखा जाय तो कोई बुराई नहीं है किन्तु यदि लिखने में शुद्ध लिखा जाय और बोलने में ब्रज भाषा की

भांति (न) उच्चारण किया जाय तो और भी अच्छा हो गद्य में बिल्कुल शुद्ध लिखना चाहिए ॥

((५) प्रश्न के उत्तर की पूर्ति)

बहुत लोगों की सम्मति है कि हिन्दी गद्य तथा पद्य की भाषा एकही होनी चाहिये। यहां मैं स्वयम् कुछ न लिख कर भारतेन्दु जी की सम्मति प्रकाशित करता हूं, क्यों कि इन सब बातों का जितना ध्यान उक्त महानुभाव को था और जैसा वे कविता के गुण दोष को समझते थे प्रायः सभी लोगों पर प्रगट है ॥

इस उद्धृत वाक्य से यह स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा में गद्य और पद्य की भाषा एक नहीं हो सक्ती ॥

"पश्चिमोत्तर देश के कविता की भाषा ब्रजभाषा है यह निर्णीत हो चुका है और प्राचीन काल से लोग इसी भाषा में कविता करते आते हैं" ॥

जो हो मैंने आप कई बेर परिश्रम किया कि खड़ी बोली में कुछ कविता बनाऊं पर वह मेरे चित्तानुसार नहीं बनी। इस्से यह निश्चय होता है कि ब्रजभाषाही में कविता करना उत्तम होता है और इसी से सब कविता ब्रजभाषा में ही उत्तम होती हैं ॥

नई भाषा की कविता।

* भजन करो श्री कृष्ण का मिल करके सब लोग।
सिद्ध होयगा काम औ छूटैगा सब सोग ॥

अब देखिये यह कैसी भोंडी कविता है ॥

* यह दोहा हिन्दी गद्य की भाषा में है (का० प्र०)

(६) 'औ' का प्रयोग तो साधु भाषा में विरलाही देख पड़ता है 'और' को शीघ्रता में बोलने से 'औ' बन जाता है बहुत लोग और के अर्थ में (व) लिखते हैं यदि वे लोग (व) के स्थान (औ) (ओ) लिखें तो अच्छा होगा नहीं—न—गौरवोक्ति में, पूर्ण क्रिया के सङ्ग, और साधारण वाक्यों में 'नहीं' का प्रयोग बहुत होता है—उदा०—'नहीं! चुप रहे';'वह नहीं जाता,' 'हिन्दू लोग मुद्रण विद्या नहीं जानते थे' और असमापिका क्रिया के योग में, आज्ञा, विधि, जिज्ञासा करने में (न) का प्रयोग किया जाता है । उदा० 'भोजन न कर उस ने शरीर त्याग किया' 'वहां न जाना'—'आप को ऐसा न करना चाहिये' 'आप न चलेंगे' ?

(७) अङ्क, अङ्ग, अर्जुन, इत्यादि लिखनाहीं ठीक है । भाषा में अनुस्वार लिखने से बहुत से लोग चन्द्रबिन्दु का उच्चारण कर बैठते हैं, तुमारा, सक्के, उसने, सभी, (व+ह=भ) कभी, आपहीने, देखें, ('देखैं') का यदि शुद्ध उच्चारण किया जाय तो बहुत बुरा मालूम होता है । सोचें, पाएं, आएं, होएं, कोषाध्यक्ष और कोशाध्यक्ष, (सन्धि में हाइफ़न नहीं लगा सक्के) उनने, इनने (यद्यपि बोलने में इनका कम प्रयोग होता है किन्तु शुद्ध यही हैं)। जो अक्षर सानुनासिक स्वयम् हैं उन पर अनुस्वार लगाने की क्या अवश्यकता । सानुनासिक अक्षरों को शुद्ध उच्चरित न करनेही से लोग उन पर बिन्दु देने लगे ॥

जहां पर चन्द्रबिन्दु का उच्चारण हो वहां पर चन्द्रबिन्दु देना चाहिये बिन्दु नहीं । यथा, नहीँ, माहीँ, वहाँ,

(८) मैं फ़ारसी अक्षर नहीं जानता इससे उनके विषय में कुछ नहीं कह सक्का, अंगरेज़ी के बिश्राम चिन्हों से भाषा में बड़ी सुगमता पड़ती है अब बिना इनके काम नहीं चलता ॥

(God) (All) इत्यादि में आ के ऊपर एक अर्ध सून्य चिन्ह देकर लिखा जाय (गॉड) (ऑल) या कोई अन्य सुगम चिन्ह नियत किया जाय ॥

हिन्दी, संस्कृत में 'ए' (A) ई (E) का उच्चारण दीर्घही है परन्तु अंगरेज़ी में ह्रस्व भी है जैसे (account) (get) (एकाउंट) (गेट) (get) और (gate) (गेट) का उच्चारण एकही लिखा जाता है (गेट) ही लिखने से अर्थ में भ्रान्ति होती है। ऐसे स्थल पर अक्षरों के नीचे 'हल्' चिन्ह के समान एक छोटीसी रेखा देदे। जैसे—गे्ट—ए्कोन्ट ॥

हिन्दी में गौण क्रिया के पश्चात् कोई दूसरी क्रिया भी लिखते हैं जैसे—अमुक प्रेस में मुद्रित हुई—यहां पर 'हुई' लगाने की कोई अवश्यकता नहीं है। यह नियम संस्कृत में या बङ्ग भाषा में नहीं है। प्रथम बङ्ग भाषा में भी हिन्दी की भांति लिखते थे किन्तु अब छोड़ दिया। आशा है कि हमारे हिन्दी के लेखक गण महाशय भी इस पर ध्यान देंगे ॥

हिन्दी में बहुत से अप्राणि वाचक शब्दों का, जो बिदेशी भाषाओं तथा संस्कृत से लिए गए हैं और जो उन भाषाओं में नपुन्सकलिङ्ग और पुलिङ्ग माने जाते हैं (स्त्रीलिङ्ग) बना कर प्रयुक्त कर देते हैं—हमारे मति में यह नहीं आता कि वे लोग पुलिङ्ग नपुन्सकलिङ्ग को स्त्रीलिङ्ग बनाकर उर्दू वालों की भांति अपनी भाषा को क्यों (जारिणी) बना रहे हैं। कुछ उदाहरण लीजिये—'वायु बहती है' (क्या हवा का अनुबाद है ?)

'रबर बनाई जाती है' (हि० शिक्षावली) 'गवर्नमेंट कहती है' इत्यादि ॥

कर्म के योग में क्रिया का लिङ्ग कर्म्म के अनुसार लिखने की भी एक बुरी प्रथा है

——: :*: :——

श्री काशी प्रसाद जून-३०-९८

शेख़ सादी के अनमोल बोल।

शेख़ सादी फ़ारस के शीराज़ नगर में सन् १३३३ ईस्वी में पैदा हुये फ़ारस देश के कवि और ग्रन्थकारों में यह सब से अधिक प्रसिद्ध हैं-इनके ग्रन्थों में करीमा गुलिस्तां बोस्तां बहुत प्रचलित हैं-करीमा से लोग शुरू करते हैं और गुलिस्तां तक पहुंचते २ फ़ारसी के समझने की ताकत हो जाती है बड़े होने पर वेही सब सादी के कौल जिसे लड़काई में उन्हों ने पढ़ रक्खा है उनके प्रति दिन के व्यौहार में काम आता है-उन में कोई २ शेख़ सादी के कौल तो ऐसे हैं कि तत्काल मन में चुभ जाते हैं जिसका कारण यही मालूम होता है कि जो प्रकृति से सम्बन्ध रखने वाली स्वभाविक बातें हैं वह चाहो जिस विषय की हों बहुधा एक ही तरह की होंगी-चाहो शेक्सपियर हों चाहो कालिदास हों चाहो तुलसी हों चाहो कबीर हों चाहो शेख़ सादी हों सबों के कथन एक दूसरे से बहुधा मेल खांयगे और वे लोगों को सदा याद रहते हैं-बहुधा काम पड़ने पर कहे भी जाते हैं-सादी के उन कथनों का जो औरों के कथन से बहुत मिलते हैं हम यहां पर अपने पढ़ने वालों के लिये कुछ थोड़ा सा संग्रह करते हैं॥

जिस दोष या ऐब को राजा पसन्द करै वह गुण है-जो आया उसने एक नई इमारत खड़ी की-सौन्दर्य को सिंगारिये की अवश्यकता नहीं है-शकुन्तला के सौन्दर्य के बारे में कालिदास ने भी ऐसाही कहा है "किमिवहि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्"। प्रायः जो वस्तु छोटी होती है उस का मूल्य अधिक होता है-जो जीने से हाथ धो बैठा है वह जो चाहे सो कह डाले-दस फकीर एक कम्बल में सो सक्ते हैं पर दो राजा एक देश में नहीं रह सक्ते-नये सोते को एक पतली सलाई की डांट लगा बन्द कर सक्ते हो वही पड़ा रह जाय तो हाथी का डुबाव हो

सक्ता है—जिस्की पैदाइश में गड़बड़ी है वह अच्छे लोगों की चाल पर नहीं चल सक्ता—सांप को मारना उसके बच्चों को छोड़ देना बुद्धिमानों का काम नहीं है—बैरी को निर्बल और छोटा कभी नहीं मानना—भेड़िये का बच्चा कितनाही करो भेड़ियाही बना रहेगा "नीम न मीठी होय सींच गुड़ घी से"—बाग में गुलेलाला पैदा होता है ऊसर में घास—अमीरी दिल से होती है रुपये से नहीं—मित्र अनुकूल हो तो बैरी क्या कर सक्ते हैं—ईर्षी को हम क्या करैं वह आप दुःख में पड़ा रहता है—संपत्ति की कदर उसी को हो सक्ती है जो बिपद झेल चुका है जितनाही जिसके पास धन है उतनाही उसके चित्त को चैन या स्वास्थ्य नहीं है—शरीर के किसी एक अंग में पीड़ा होने से सब अंग पीड़ित मालूम होते हैं—जो साड़ी नहीं पहने है वह आंचर क्योंकर निचोड़ सकती है—यह कहावत ठीक इसके जोड़ की है—"नंगी नहाय क्या निचोड़ै" नौकर खुश रहा तो मालिक का काम अच्छा करता है—बड़ों की बातही निराली है कभी सलाम करने से क्रोध करते हैं कभी गाली देने से पारितोषिक देते हैं—जहां मीठा होता है वहां आदमी चीटी और मक्खी जाती हैं—सचाई से सब प्रसन्न रहते हैं हमने नहीं देखा कि सच पर कायम रहने से कोई गुमराह हुआ हो—जिसका हिसाब ठीक है उसको हिसाब देने से क्या डर है—सच है "कर नहीं तो डर क्या"—भीतर बाहर से जो शुद्ध और साफ़ हैं उन्हे क्या डर है धोबी मैलेही कपड़े को पत्थर पर पटकता है—अगर दिन को राजा कहे रात है तो कहना चाहिये हां देख रहे हैं आसमान में बराबर तारे छिटके हुये हैं—जो मुल्कों २ बहुत घूमा है वह झूठ भी बहुत बोलता है—जो दूसरों का दोष तुम्हारे सामने कहे तो जान रक्खो वह तुम्हारे दोष भी दूसरों से वैसही कहता होगा—बटलोही में का एक चावल टटोलने की भांत जब किसी जाति या समाज का एक आदमी कोई बुरा काम

करता है तो उस जाति या समाज भर की प्रतिष्ठा में बट्टा लगता है—किसी भले घर की स्त्री जो कुलटा हुई तो उस घराने भर के लिये यह संसार जीतेही नरक है—भिखारी सांझ को जहां पहुंचा वहीं उसको टिकने के लिये सराय है—बिल्ली के जो पर होता तो चिड़िये मात्र का बीज न कहीं रह जाता—जो भाग्य में है वह मिलैहीगा पर द्वार २ उसको खोजते फिरना बुद्धिमानी है—शिकार हर दफा शिकार नहीं लाता बल्कि आप खुद कभी को शिकार बन जाता है—कभी को छोटा बालक भी भूल कर निशानेहीं पर तीर मार देता है—"काकतालीय या-घुणाक्षरन्यायका" भी यही प्रयोजन है—भलाई को तो मुझे आप से आशाही नहीं है जो बुराई न करो—मसल है "बकस बिलाई मैं लुंडाही हो कर जीता रहूं" उस पर हठला जो तेरा खरीदार हो—बड़ों का दोष निकालनाही एक दोष है—ताज़ी घोड़ा तेज़ दौड़ता है जल्द थक जाता है ऊंट धीरे २ चलता है रातो दिन चला जाता है—बाप के बपौती का हिस्सा लिया चाहो तो उसके गुण भी लो—ईसा का गदहा मक्के की ज़ारत से लौट कर भी गदहाही रहैगा—कुत्ते को ढेला लगे तो उसे वह हड्डी ही मान लेता है—मुश्क वही जो महक से जान ली जाय न कि अत्तार के कहने से "नहिकस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते" चित्त के मैलापन का बरसों साफ करने पर भी पता नहीं लगता—जो बहुत पूछता है वह बुद्धिमान् नहीं है उसका पढ़ना लिखना वैसही है जैसा जानवर पर किताब लदी हो—अपना कपड़ा पुराना अच्छा दूसरे के नये कपड़े से—अपनी गुदड़ी अच्छी दूसरे के दुशाले से इत्यादि॥

भर्तृहरि।

संस्कृत पढ़ने वालों में नीति बैराग्य और शृङ्गार इन तीन शतकों

को कौन न जानता होगा—भर्तृहरि का नीति शतक तो इतना प्रचलित है कि अक्षराभ्यास के साथही उसके श्लोक लड़कों को घुखा दिये जाते हैं—वैसाही वैराग्य शतक भी विरक्त के लिये विरक्ति साधन का मानो एक औज़ार है विरक्त हो कर जो गीता और वैराग्य शतक न जानता हो उसे कच्चा विरक्त कहैंगे—शृङ्गार शतक में भी जिसे और कवियों ने १० श्लोक में दरसाया है उसे भर्तृहरि ने एक श्लोक में दिखला दिया है-शतक में शृङ्गार का वर्णन एक उपलक्षण मात्र है वास्तव में लक्ष्य विषय बासना या शृङ्गार से घिन पैदा करा देने का है-क्योंकि ५ श्लोक उसके शृङ्गार के वर्णन के हैं तो छठवां एक ऐसा लिखा गया है कि पूर्वोक्त सब वर्णन फीका पड़ जाता है और ऐसी घिन मन में आजाती है कि स्त्री या तत्सम्बन्धी बातों के पास कभी न जाय जिससे निश्चय होता है कि भर्तृहरि ने शृङ्गार शतक भी विरक्तही की दशा में लिखा है जैसा यह श्लोक हैं ॥

"आवर्तः संशयानामविनयभवनं पत्तनं साहसनां दोषाणां सन्निधानं कपटशतमयं क्षेत्रमप्रत्ययानाम्। स्वर्गद्वारस्य विघ्नं नरकपुरमुखं सर्वमायाकरण्डं स्त्रीयंत्रं केन सृष्टं विषममृतमयं प्राणिलोकस्य पाशः"

ऐसाही नीति शतक भी भर्तृहरि ने तब लिखा है जब राज पाट सब छोड़ विरक्त हो गये थे—आक्षेप और व्यंगोक्ति के शब्द जो नीति शतक के श्लोकों में प्रयोग किये गये हैं उससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि वैराग्य होने पर इन्हों ने अपनी पहिली दशा का स्मरण कर जब यह राजसिंहासन पर सुशोभित रहे और राज्य करने के समय धन मद से मदान्ध हो जैसे २ बुरे काम अविवेक के वश में पड़ लोग कर गुज़रते हैं उन्हीं को इन्होंने दिखलाया है-इसी से ओज और प्रसाद गुण इनकी कविता

के प्रत्येक श्लोक में झलक रहा है—सिवा इन शतकों के भर्तृहरि की वाक्य पदीय नामक पाणिन के व्याकरण सूत्रों पर कारिका है जो अष्टाध्यायी के सूत्रों की मानो टीका या बिवरण है—जिसमें पतंजलि के महाभाष्य का तात्पर्य सहज और थोड़े अक्षरों में लिखा गया है—तीसरा ग्रन्थ भर्तृहरि का बनाया हुआ भट्टि काव्य है जिसमें पाणिनि की अष्टाध्यायी के क्रम पर एक२ अधिकार सूत्रों के प्रयोग सिलसिलेवार अलग२ दिये गये हैं—जिसके पढ़ने से काव्य और व्याकरण दोनो का स्वाद एक साथ मिलता जाता है—भर्तृहरि को जिस तरह पर वैराग्य हुआ है राज पाट सब छोड़ विरक्त हो गये उस क़िस्से का इशारा भी नीति शतक के पहिले श्लोक में दिया गया है॥

"यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता सा चान्य मिच्छति जनः स जनोऽन्यसक्तः। अस्मत्कृते च परितुष्याति काचिदन्या धिक् तं च तांच मदनंच इमां च मांच"

क़िस्सा पूरा२ बैताल पचीसी के प्रारम्भ में दिया गया है—उज्जैन के पास पर्वत में एक गुफा है जिसको भर्तरी की गुफा कहते हैं उसके भीतर एक वेदी बनी है जिस पर भर्तृहरि बैठ कर योग साधन करते रहे या उस वेदी में होम करते थे—कहते हैं इस गुफा में एक छेद है जिसके छेद में डाट दी हुई है इसी रास्ते से भर्तरी नित्य काशी जाया करते थे इसी तरह की एक गुफा अर्बुदगिरि "मौंटआबू" पर भी है कोई कोई कहते हैं कि भर्तरी ने यहीं योग साधन किया है—१४ बर्ष राज्य कर अपने छोटे भाई विक्रम को उसे सौंप आप बिरक्त हो गये—बैताल पचीसी में जो क़िस्सा है वह तो कुछ गढ़न्त सी मालूम देती है वास्तव में जिसका मन वैराग्य की ओर आरंभही से रुजू रहा तो राज काज के उलझाव में कैसे उसकी तबियत जम

सच्ची है-अब यह निश्चय करना बाकी रह गया कि यह किस समय में हुये और विक्रम इस नाम के कई राजा हुये हैं उनमें किस विक्रम के भर्तरी भाई थे-इंगलैंड के कई एक संस्कृत के पण्डितों ने भर्तरी को कालिदास के उपरान्त विक्रमाब्द की पांचवीं शताब्दी में माना है—जो हो जब कालिदासही का निश्चय नहीं है कि कब हुये तो भर्तृहरि के ठीक समय का पता लगाना दुष्कर है—यद्यपि भर्तृहरि के परतो पर कई एक और कवियों ने ऐसेही शतक बनाये हैं जैसा जगन्नाथ पण्डित राज का भामिनी बिलास है पर भर्तृहरि के तीनो शतकों में जो कुछ निरालापन और Originality नयापन है वैसा पण्डित राज के शतकों में नहीं आया न और किसी कवि के काव्य में देखा जाता है—इन शतकों में और लोगों ने अपनी गढ़न्त इतनी मिला दी है कि भर्तृहरि की असिल कविता कौन है निश्चय करना कठिन है—कितने लोगों का मत है कि भट्टि काव्य किसी दूसरे का बनाया है भर्तृहरि का नहीं है हमें भी कुछ ऐसीही खटक होती है क्योंकि शतक की कविता भट्टि काव्य के साथ जोड़ नहीं खाती ॥

वकील ।

यह जानवर ब्रिटिश राज्य के साथही साथ हिन्दुस्तान में आया है-पुराने आर्यों के समय इनका कहीं पता भी नहीं लगता मुसल्मानों की सलतनत में वकील वही कहलाते थे जो छोटे राजा या रईसों की ओर से किसी चक्रवर्ती बड़े राजा के दरबार में रहा करते थे पर किसी न्यायकर्ता के सामने बादी प्रतिबादी की ओर से अब के समान बादानुबाद से उस वकील को कोई सरोकार न था—बास्तव में अंगरेज़ी शासन ने इस पेशे को बड़ी उन्नति दिया-सच पूछो तो यह एक परम

स्वच्छन्द व्यवसाय है और बड़ी बुद्धि का काम है—कोई ऐसा विषय नहीं है जिसको कभी न कभी वकील को अच्छी तरह जान लेना नहीं पड़ता कभी इसे राजकीय विषयों में घुसना पड़ता है कभी को वाणिज्य और तिजारत को ऐसा जनना पड़ता है जैसा किसी ने जन्म भर वही काम किया हो—कभी ज़िमीदारी का रस बिना अंगुल भर ज़मीन अपने अधिकार में रखने के भी उसको चखना या अनुभव करना पड़ता है—इस पेशे की आमदनी का कुछ ठिकाना नहीं है जिस्की दूकान चल गई लक्ष्मी उसके सामने हाथ जोड़े खड़ी रहती हैं—जिस्की न चली उस्को रोज़ रोज़ा रखना पड़ता है रोज़ी उसको दुर्लभ हो जाती है—जिसका काम चलता है नहीं भी चलता उसका वह हाल रहता है जैसा जुआरी का—दांव पड़ता गया गहना पाती खाना कपड़ा सवी कुछ बढ़िये से बढ़िया तैयार हो गया न पड़ा तो पेट में चूहे उछला किये किसी को मुह दिखाने में शरम होती है—बहुतों की समझ है कि इस काम में पुलिस की नाईं झूठ ज़रूर बोलना पड़ता है पर यह किसी तरह सच नहीं है—हमने अच्छे२ तजरिबाकार वकीलों से सुना है कि वकीलों का विजय नामवरी और प्रतिष्ठा सत्यही से होती है—बहुत लोग कहते हैं इस पेशे में मेहनत नहीं करना पड़ता है यह भी मिथ्या है—मन और मस्तिष्क दोनो को बड़ा परिश्रम पड़ता है दूसरे का दुःख अपना समझ उसको दूर करने के लिये भिड़जाना पड़ता है—मसल है एक गरड़िये के ऊपर भेड़ चुराने का अभियोग लगाया गया गड़रिये के वकील साहब ने जज के सामने बहस कर उसे छुटा लिया गड़रिया और उसका मित्र दोनो घर लौटे आते थे मित्र ने पूछा भाई सच बतलाओ तुम ने भेड़ चुराया था या नहीं—कहा भाई चुराया तो था पर जब से वकील साहब की बात सुना तब से मन में सन्देह है कि हमने सचच मूच चुराया था या नहीं—वैद्यों ने निश्चय किया है वीर्य

के क्षय से भी बाखों का क्षय अधिक निर्बल करता है सो वकालत के पेशे में कितना बकना पड़ता है इस्की कोई हद्द नहीं है तब वकीलों के परिश्रम का क्या कहना—सच तो यों है कि जिन लोगों ने अदालत की सैर की है वे जान सक्ते हैं कि वकील कितनी मेहनत करते हैं और कितना मुअक्किल का उपकार अदालत में इन से होता है—जब दो वकील तीतर बटेर से लड़ते हैं तब जो सुनने वाले होते हैं वे प्रायः दो तरह के होते हैं या तो बादी से उनका संबन्ध रहता है या निरे तमाशबीन होते हैं जो केवल दिल बहलाव और शैर के लिये अदालत गये थे—जो दो फरीक में किसी एक के संबन्धी होते हैं वह अपने वकील की तकरीर सुन प्रसन्न हो जाते हैं उसके प्रत्येक शब्द को वेद वाक्य मानते हैं और प्रतिबादी के वकील की तकरीर बड़े क्रोध से सुनते हैं यहां तक कि बस चले तो मार बैठें—जो शैर सपाटे के लिये गये हैं वे अचंभे में आजाते हैं कि दोनो देखने में प्रतिष्ठित हैं पर सच्चा दो में कौन है—फौजदारी हो चाहे दिवानी हो अपने मुअक्किल की बात पुष्ट कर देना और सत्य को चमका देना वकीलही का काम है—इंगलैंड में एक राज वधू ने एक राजकुमार पर अभियोग किया राजवधू के वकील ने अपनी वक्तृता में कहा हम लोगों का काम शुद्ध और पवित्र है हमको केवल अपने मुआक्किला की बात सिद्ध करना है—यद्यपि मैं इस समय इस देश के राज कुमार पर अधिक्षेप कर रहा हूं इसका मुझे कुछ भी चित्त में संकोच नहीं है जिसका मैं वकील हूं उसके फ़ाइदे पर मेरी दृष्टि है चाहो देश का देश मेरे विरुद्ध हो जाय तो मैं उसे कुछ खयाल न करूंगा—सच तो यों है देश के उद्धारक इस समय ये वकीलही देखे जाते हैं—बड़े राजकीय विषयों के समझने और उसपर तर्क वितर्क ऊहा पोह करनेवाले यही तो देखे जाते हैं वैसही इनका स्वच्छन्द व्यवसाय भी है कि औरों के समान ये गवर्नमेंट

या कर्मचारियों के बाधित नहीं हो सकते – धैर्य हिम्मत साहस ये तीन बातें इस पेशे की जान हैं अच्छा लायक वकील चलता पुरज़ा वही होगा जिसमें ये तीनों बातें होंगी–गवर्नमेंट कानून में हिन्दी की चिन्दी निकालते हुये मुल्क की तरक्की में मानों ज़हरसा घोल रही है उसका "ऐंटीडोट" प्रतीकार ये वकीलही हैं—बड़े२ शहरों की शोभा हैं जो चलते बने तो औवल दरजे की प्रतिष्ठा का द्वार है—पर सोच होता है जब खयाल करो कि बन्दर के हाथ में मणि के समान कितने इस पेशे को ऐसा बिगाड़ रहे हैं कि वकील झूठ को सच सच को झूठ कर देने के लिये बदनाम हो रहे हैं सो न किया जाय तो वकालत आदमी को अपनी इज्जत बनाने के लिये बड़ा उमदा ज़रीया है—वह ज़माना गया जब वकीलों की तवायफ़ के साथ तुलना दी जाती थी अब इस समय सभ्य सुशिक्षित जिन्होंने अंगरेज़ी की उमदा तालीम पाई है उनको अपने उत्तम गुण सौशील्य सैाजन्य सचाइट ईमानदारी के प्रगट करने को यह काम एकमात्र सहारा है और इस अंगरेज़ी राज्य में बड़ी उत्तम जीविका है चलते बन पड़े तो—इत्यादि ॥

नल दमयन्ती नाटक–(पाचवां अंक)

[पहिले के आगे से]

(स्थान अयोध्यापुर में ऋतुपर्ण की सभा–ऋतुपर्ण और बाहुक बैठे हुये)

ऋतु०—बाहुक तुम ने भी ब्राह्मण के मुख से सुना होगा रूप और सौन्दर्य की खान दमयन्ती का पुनः स्वयम्बर हो रहा है—सब लोग जा रहे हैं हम भी वहां जाया चाहते हैं पर समय बहुत थोड़ा रह गया है केवल एक दिन बाकी है तुम्हारी रथ हांकने में बड़ी प्रशंसा है और बेगगामी घोड़ों की मेरे यहां कमी नहीं है तब बाहुक तुम मन करो तो

मैं कल स्वयम्वर में पहुंच सक्ता हूं ॥

बाहुक–(स्वगत) यह कैसा दमयन्ती सी पति प्राणा बधू स्वयम्वर में नल के अतिरिक्त दूसरा पति चुनै यह तो कभी होही नहीं सक्ता बरन मुख से कभी ऐसी बात निकाला यह भी सर्वथा असंभव है–कदाचित् इसी बहाने नल स्वयम्वर में आय सुशोभित हों उन के मिलने का अच्छा उपाय सोंच स्वयम्वर के लिये राज़ी हो गई हो–दूसरे यह कि स्त्रियों का स्वभाव जैसा चंचल होता है और मैं ने जैसी निर्दयता दमयन्ती के साथ की है उस से अचरज क्या दमयन्ती मुझ से रूठ दूसरा पति करने को मन में ठाना हो–अस्तु वहां जाने से इस का निश्चय हो जा-यगा राजा ऋतुपर्ण पर एहसान होगा बास्तव में इस मे लाभ हमाराही है (प्रकाश) महाराज घोड़ा अच्छा मेरे मन के माफिक हो एक दिन में वहां आप को पहुंचा देने का ज़िम्मा मैं लेता हूं ॥

ऋतु०–अच्छा तो अश्वशाला में आय अपने मन के माफिक घोड़े रथ में जोतने को चुन लो–(दोनो गये)

पर्णाद एक ब्राह्मण का प्रवेश।

पर्णाद–हाय इस दैमारे पेट के कारन न जानिये कौन २ कदर्थना भुगतना पड़ता है–देश २ नल की खोज में घूमते२ चूर ढीला हो गया ऊंची नीची पृथ्वी ऊंचे २ टीले पहाड़ झाड़ झंखाड़ में फिरते २ तलुये खियाय गये कांटों के चुभने से बड़े२ घाव हो गये हैं–अस्तु मालूम होता है कि कदाचित् मेरा परिश्रम सफल होने का समय आ पहुंचा है क्योंकि दम-यन्ती ने जो २ चिन्ह नल के बतलाये वे सब इस बाहुक में पाए गए–हम से जब बाहुक मिला तो दमयन्ती का नाम सुन देर तक बार२ लंबी सांसे भरता रहा आंसू आंख से टपकने लगा लज्जित सा हो सिर नीचा कर लिया धीमे स्वर से इतना कहा भी "कुलवती स्त्रियां कैसी

ही कष्ट और बिषम दशा में पड़ें अपने चरित्र की रक्षा अवश्य करती हैं और दमयन्ती ने तो अपने पतिव्रत से स्वर्ग को जीत लिया—सामान्य स्त्री मात्र के लिये जब "चरित्राबर्णास्त्रियः" लिखा है तब दमयन्ती का क्या कहना जो कुलवती नारियों की अगुआ और सिर मौर है" अब कोई संदेह न रह गया यह बाहुक नलही है तो अब चलैं दमयन्ती को यह सुसमाचार दे राजा भीम से मन मानता इनाम लें—दूसरे यह कि घर से निकले मुझे महीनो बीत गये मेरी ब्राह्मणी की न जानिये क्या गति भई होगी क्या सबी स्त्रियां दमयन्ती सी होती हैं जो अपने निज पति के नाम का माला जपती बैठी रहैं— इसी से उसका मुह जोहता हुआ दिन रात सेवा टहल में लगा रहता हूं कि कहीं बहक न जाय—अच्छा तो अब चलना चाहिये (जाता है)

द्वितीय गर्भांक ।

स्थान—कुण्डिनपुर में राज मार्ग ।

(दमयन्ती की दासी केशिनी का प्रवेश)

केशिनी (स्वगत) इन बाम्हनो को मैं क्या कहूं जिस में देखो उस में इन की पूंछ इन का अधिकार जहां देखो तहां ये टांग अड़ाये हुये हैं (हंस कर) सच है अच्छा किसी ने कहा है "लाओ ऐसा नर, पीर बवर्ची बिहिश्ती खर" तिस में हमारे महाराज के यहां तो इन की बहुतही बहुत चलती है—जौन काम होता है उस में यही अगुआ बनाये जाते हैं—पांव ये पुजावें, लड़की के ब्याह के लिये बर ये खोज लावें, रसोइंदार ये हैं, पानी ये भरलावें, हम शूद्र जाति की हैं तब इस लायक भी नहीं समझी गई कि हमारा कुआ पानी भी पिया जाय—एक टहल का काम हमारे लिये बच रहा है देखैं जो वह भी बचा रह जाय कहीं देउता जी महाराज उस में भी न घुस पड़ैं—बड़े घर की बात कौन कहे न जानिये कहां का मरा बिलाना निगोड़ा पर्याद नाम

का एक बाम्हन ने हमारी राजकुमारी दमयन्ती से आय के कहा है कि हम राजा नल का पता लगा आये—बरन अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण जहां नल ने इन दिनो रथ हाकने की नौकरी करली है दोनो को फिर से दमयन्ती के स्वयम्बर के बहाने कुण्डिनपुर में खींच लाया है—सो राजकुमारी ने हम से कहा है कि केशनी तू जा देख रथ से उतरे हुये दो आदमी चले आते हैं उन से पूछ वे कौन हैं और कहां से आये हैं कई दिनो से दमयन्ती ने खाया भी नहीं उपवास किये पड़ी है और प्रतिज्ञा कर चुकी है कि जो इस बाम्हन का कहना सच हुआ और नल का ठीक २ पता लगा तो मैं जिऔंगी नहीं तन छोड़ देऊंगी—बुढ़ापे के कारन मुझे चितै भी कम पड़ता है अब मैं उन्हें कहां पाऊं कैसे पहचानूं सैकड़ों आदमी सड़क पर चल फिर रहे हैं कैसे पहचानूं कि वे दोनों यही हैं—नई २ आंख दमयन्ती महल की छत पर से देख पहचान गई मुझे तो पास का आदमी भी नहीं चितै पड़ता—ये दो आदमी आरहे हैं क्या जानिये येही हों चल कर पूछैं तो (पास जाय) के भैया तुम कौन हो ॥

बाहुक—हम बाहुक हैं और ये राजा ऋतुपर्ण हैं दमयन्ती का स्वयम्बर सुन अयोध्या से कुण्डिनपुर सौ योजन है उसे हम एक दिन में तै कर यहां आये हैं ॥

केशिनी (स्वगत) जान पड़ता है यही नल है क्यों कि जो २ चिन्ह दमयन्ती ने कहे नाटासा डील छोटे २ हांथ पांव आदि बातें सब इस में पाई जाती हैं घोड़े की परख और उसे हांकने आदि में बड़े चतुर दमयन्ती ने हम से नल को बतलाया था सो भी इस में हैं तब इस के नल होने में तो अब कोई सन्देह न रहा (प्रकाश) भला भैया तुम राजा नल को भी जानते हो कहां हैं ॥

बाहुक—(स्वगत) जान पड़ता है दमयन्ती को हमारी कुछ टोह

मिल गई है उसी ने इसे भेजा है—हृदय तुम कायरपन छोड़ धीरज धरो अब जल्द तुम्हारा मनोरथ सिद्ध हुआ चाहता है (ठंढी सांसे भर प्रकाश, महा भागे नल का हाल हम से क्या पूछती हो दमयन्ती सी पतिव्रता का पुण्य सहायक है तो नल का पता लग जाना कोई दुष्कर नहीं है (आंसू आंख में भर सिसकने लगता है)

केशिनी—जान पड़ता है तुम नल को अच्छी तरह जानते हो तुम से पता लग जा सक्ता है चलो तुम्हे राज माता ने बुलाया है दिन भर के थके हो तुम्हें वहां सब तरह का आराम भी मिलैगा॥

बाहुक (ऋतुपर्ण से) महाराज की आज्ञा हो तो जांय देखें क्यों हमें बुलाया है॥

ऋतुपर्ण—यहां तो स्वयम्बर की हम कोई बात नहीं देखते मालूम होता है उस चालाक ब्राह्मण के जुल में आय ठगे गये अच्छा तो तुम जाय मिल आओ तब तक हम भी कहीं रात को टिक रहने का आयोजन करते हैं कल यहां से चल देंगे (सब गये)

हमारी अन्त की भेट।

हाय हम संसार से क्यों उठे जाते हैं इसे याद कर छाती दरकती है—जिस पौधे को हम बड़ा परिश्रम और बड़े २ क्लेश सहकर बनाये रहे सो सींचने वालों की अनपेक्षा से बराबर मुरझाता हुआ आज जड़ पेड़ से निर्मूल हुआ चाहता है—हाय हमारे लिये दसो दिशा शून्य हो गई सब ओर अन्धकार छागया कोई इतना पूछने वाला न रहा कि तुम क्यों और कैसे अब तक रहे और क्यों अब उठे जाते हो—क्या हमसे देश का कुछ उपकार साधन नहीं बन पड़ा? क्या हिन्दी के भंडार गृह में हमने एक तिनका भी कभी नहीं भरा? अफसोस इने गिने हिन्दी के रसिकों का मनोरंजन करने वाला उन्हें प्रसन्न बदन रख उनकी दन्तावली का विकाश करादेने वाला अब कोई न रहा और हो

भी तो हमे क्या हमे तो यह जगत् जीर्णारण्य सब ओर से अन्धकार पूरित होगया—कोने अंतरे हिन्दी के हितू कहीं कोई हों तो हमे क्या हमारे काम तो न आये—इस्के पीछे हमने जोर२क्लेश सहा उन सब गाई गीत के गाने से लाभ क्या—सब से बड़ा क्लेश अर्थ कृच्छता है इसी लिये बहुत दिनो से इसे कई महीने का एक साथ निकालना हम ने आरंभ किया कि नहीं कुछ तो पोस्टेज की किफायत तो होगी जिसपर बंगबासी ने हमारी भीतरी बातों को न जान कई बार आक्षेप किया वह भी क्या करें लाचार हो सहनाही पड़ा—अब हमको अर्थ कृच्छ यहां तक आगया कि दांतों पसीने के परिश्रम के उपरान्त भी जो कुछ हमे मिलता है वह बढ़े हुये कुटुम्ब के पोषण में खर्च हो जाने के बाद इतना नहीं उबरता कि हम इसे भी ठेलते जांय जैसा अब तक करते रहे—अस्तु अब अपने प्रेमियों से अंत समय में मिल भेंट उनसे प्रार्थना करते हैं कि हमारा कहा सुना हमे माफ करें और जिनका हम से जो कुछ बाकी हो लिख भेजें चुकता करने की फिकिर में लगें—हमारा जिनसे से जो कुछ चाहिये उस्के मिलने की अब क्या उम्मैद रही मसल है "मा होती तो मौसी को झीखते" हमारी कद्र करने वाले और समय से चुकता कर होने वाले जितने लोग चाहिये उतने होते तो हमारी यह दशा क्यों होती कि २१ वर्ष तक रहे अब उच्छिन्न हुये जाते हैं—यदि अब भी हमारा यह बिलाप किसी के मन में असर करता और हमारे सहायक कोई खड़े हो जाते तो कुछ दिनों चलने की हम फिर हिम्मत बांधते पर काहे को ऐसा होना है इस्से अब हमारी इति है॥

समालोचना के लिये कई पुस्तकें आई हैं उन्हें भी जो दूसरा अंक निकलेगा तो समालोचना कर देंगे नहीं तो लाचारी है॥
